CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

m; 5
152
२५६६
कहानिकार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक २२६८

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

कर्मानीकार पत्रिका संग्रह		
पु०सं०	१२४८	

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हंस

प्रेमचन्द स्मृति अं

वर्ष : १३ पूर्णाङ्क : ७५

(जुलाई '८० संयुक्तांक)

१ रुपया

एक निहायत ज़रूरी ऐलान

प्रेमचंद की विरासत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
वाराणसी।

भारत देश
और
देशवासियों
के
हितों
के
प्रति समर्पित
एवं
जागरूक कथाशिल्पी
स्व० प्रेमचन्द की स्मृति
को
जन्मशती के अवसर
पर
प्रणाम है

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक.....
दिनांक.....

राजकुमार साहू
सिन्नी पंखा उद्योग, टु-इन-वन पंप उद्योग,
वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मुझे बहुत से नवजवान हैं,
जो मेरी अपेक्षा अधिक वृद्ध
और मेरे वृद्ध भी हैं, जो
मेरी अपेक्षा अधिक नौजवान
हैं, लेकिन मुझे विश्वास होता जा
रहा है कि मैं दिन प्रतिदिन
अधिक नौजवान होता जा रहा
हूँ. मुझे किसी दूसरे संसार या
परलोक में विश्वास नहीं है
और इसलिए परलोकत्व का
वह भाव मेरे पास भटकने भी
नहीं आता जो युद्धावस्था
का सबसे बड़ा संहारक
है.....'

—प्रेमचन्द

●

श्री वेद प्रकाश धींगरा
एशिया साइकिल्स प्रा० लि० सिगरा,
वाराणसी, के सौजन्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'साहित्य राजनीति के पीछे
नहीं चलता, वरन वह अग्रदूत
होता है; जिसका स्थान पहले
है. प्रभुत्व, अन्याय और आत्म
सर्वस्वता के विरुद्ध मनुष्य के
मन में जो विद्रोह जल
उठता है, वही साहित्य है.
लेखक का काम तो केवल
इतना है कि वह विद्रोह
को भाषा में रूपान्तरित
कर दे.....'

—प्रेमचन्द

श्री नरेन्द्र भार्गव एवं श्री गुरेन्द्र भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, त्रिलोचन घाट
वाराणसी के सौजन्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'रा जीवन सपाट

समतल मैदान है.

जिसमें कहीं-कहीं तो

गढ़े हैं, पर टीलों,

पर्वतों, घने जंगलों,

शहरी घाटियों और

खण्डहरों का स्थान नहीं

हैं. जो सज्जन पहाड़ों

की सैर के शौकीन

हैं, उन्हें तो यहाँ निराशा

ही होगी.....'

—प्रेमचन्द

●

श्री राम प्रकाश कपूर
सत्यनारायण एण्ड कम्पनी
बाँसफाटक, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश के
स्वातन्त्र्य आंदोलन
के लिए
वैचारिक
और
साहित्यिक स्तर पर
अपनी लेखनी
से
सबल
और सार्थक
पृष्ठभूमि
तैयार करने वाले
कहानीकार प्रेमचन्द
को
प्रणाम

राजकृष्ण दास
(उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल)
(संरक्षक काशी व्यापार प्रतिनिधि मण्डल)
एच. के. दास अग्रवाल, राजादरवाजा, वाराणसी
फोन. कार्यालय, ५३२५७, आवास, ६४५२९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पादक की ओर से

प्रेमचन्द के साहित्य को पढ़ने का सुख अभूतपूर्व है पर उससे भी कहीं अधिक, कहीं बड़ा सुख है, साहित्य के बारे में प्रेमचन्द की मान्यताओं और आस्थाओं को पढ़ना—उस दृष्टि को पहचानना, उस अन्तरदृष्टि को आत्मसात करना, उस दूर-दृष्टि को पकड़ना जिसने एक निहायत मामूली आदमी को, मुफलिसी की मुश्किलों से जूझते हुए एक अदना आदमी को, धनपतराय को प्रेमचन्द बनाया. उनकी निम्न-लिखित पंक्तियां स्वयम् में उसी बात की आत्म साक्ष्य हैं, आत्मस्वीकृतियां हैं—

■ 'जिन्हें धन-वैभव प्यारा है, साहित्य-मंदिर में उसके लिए स्थान नहीं है. यहां तो उन उपासकों की जरूरत है जिन्होंने सेवा को ही अपने जीवन की सार्थकता मान लिया हो, जिनके दिल में दर्द की तड़प हो और मुहब्बत का जोश हो. अपनी इज्जत तो अपने हाथ है. अगर हम सच्चे दिल से समाज की सेवा करेंगे तो मान, प्रतिष्ठा और प्रसिद्धी, सभी हमारे पांव चूमेंगी. फिर मान प्रतिष्ठा की चिन्ता हमें क्यों सताये ? और उसके न मिलने से हम निराश क्यों हों ? सेवा में जो आध्यात्मिक आनन्द है, वही हमारा पुरस्कार है—हमें समाज पर अपना बड़कपन जमाने, उस पर रोब जमाने की हवस क्यों हो ? दूसरों से ज्यादा आराम के साथ रहने की इच्छा भी हमें क्यों सतावे ? हम अमीरों की श्रेणी में अपनी गिनती क्यों करायें. हम तो समाज का झण्डा लेकर चलने वाले सिपाही हैं.....

■ 'साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफिल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है—उसका दरजा इतना न गिराइए. वह देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है.....

■ 'साहित्य की बहुत सी परिभाषाएं दी गयी हैं, पर मेरे विचार से उसकी सर्वोत्तम परिभाषा 'जीवन की आलोचना' है चाहे वह निबन्ध के रूप में हो, चाहे कहानियों के या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए....

■ 'जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे.... मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और भक्ति न पैदा हो, हमारा सौन्दर्य-प्रेम न जाग्रत हो—जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहाने का अधिकारी नहीं है....■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द स्मृति अंक
(जन्मशती १८८०-१९८० ई०)

कहानीकार

(जु०-अग० '८० संयुक्तांक)
वर्ष १३ : पूर्णाङ्क ७५

सम्पादक—
कमल गुप्त

वार्षिक : छः रुपये
विदेश में : पन्द्रह रुपये
प्रति अंक : एक रुपया

कार्यालय—
के.३०/३७ अरविन्द कुटीर
(निकट भैरवनाथ)
वाराणसी-१.फोन २२६६५

ब्लाकसज्जा—श्री अन्नपूर्णा
ब्लाक वर्क्स, वाराणसी

वार्ताएं

पद्मभूषण स्व० रायकृष्णदास के साथ ८
डा० शिवप्रसाद सिंह के साथ १३
श्री राजेन्द्र यादव के साथ ५०

लेख

प्रेमचन्द : कथा-यात्रा—डा० त्रिभुवन सिंह ५१
प्रेमचन्द कुछ संस्मरण
—पं० जगन्नारायणदेव 'पुष्कर' ६४
प्रेमचन्द के यथार्थवाद के कुछ आयाम
—प्रो० चन्द्रबली सिंह ६९
प्रेमचन्द कुछ तथ्य—डा० कौशलकुमार राय ७६
प्रेमचन्द सम्बन्धी कुछ उल्लेख्य बातें
—श्री गगनेन्द्र केडिया ८१
प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट की संज्ञा....
—श्री मुरारीलाल केडिया ८४

नाटक

कफ़न का नाट्य रूपान्तर/स्व० डा० रसीद जहाँ ८५

अन्य स्तम्भ

वाराणसी में प्रेमचन्द कला प्रदर्शनी ९८
कविता ४४

'कहानीकार' के आगामी प्रकाश्य आकर्षण

- लघुकहानी अंक
- फैण्टेसी कहानियों का अंक
- भारतीय/विदेशी लोककथा अंक

(स्तरीय रचनाएं आमंत्रित हैं.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

● तीन वार्ताएं

प्रेमचन्द व्यक्ति और साहित्य पर यहाँ तीन वार्ताएं दी जा रही हैं जिन्हें क्रमशः पद्मभूषण स्व० रायकृष्ण दास, प्रख्यात कहानीकार डा० शिवप्रसाद सिंह और स्थापित कहानीकार और कथा-समीक्षक श्री राजेन्द्र यादव से मैंने पिछले दिनों रेकार्ड किया था। वे वार्ताएं अविकल रूप में यहां प्रस्तुत की जा रही हैं—सं०

●

पहली वार्ता राय साहब के साथ

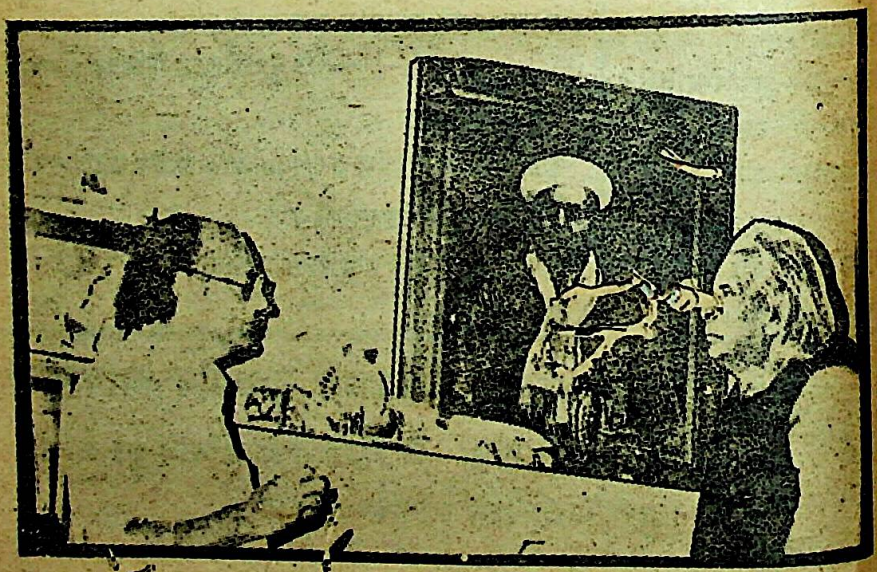

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द :
कुछ अंतरङ्ग बातें और यादें

साहित्य, संस्कृति और कला के मनीषी
पद्म विभूषण रायकृष्ण दास जी से उनकी मृत्यु (२१ अगस्त '८०) के
चार-पाँच दिन पूर्व उनके निवास स्थान पर
स्व० प्रेमचन्द पर हुई अन्तरंग संस्मरणात्मक वार्ता.
यह वार्ता प्रेमचन्द जी की पावन स्मृति
के साथ-साथ स्व० राय साहब की भी पुण्य स्मृति को
श्रद्धांजलि स्वरूप समर्पित है—सं०

उम्र की एक लम्बी डोर नाप कर, लगभग ९ दशकों की जीवन-यात्रा के साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों के भी अनुभवों के एक विस्तृत आकाश को अपने में समेटे हुए राय साहब (रायकृष्ण दास जी) से स्व० प्रेमचन्द जी के बारे में बातचीत करने के लिए मैं जब उनके घर पर उनसे मुखातिब हुआ तो वे कुछ अस्वस्थ से थे, किन्तु प्रेमचन्द की स्मृतियों से उन्हें ताजगी मिलेगी, उस आन्तरिक लगाव के कारण वे मुझसे बोले—आप एक-एक कर प्रश्न पूछते जांय.

कमल गुप्त—हां, यही मैं भी सोच रहा था. अब जैसे पहले मैंने सोचा कि एक परिचय की पूरी यात्रा जो है उनके साथ में आपकी. बहुत से अनुभव, बहुत से संस्मरण, बहुत सी बातें याद होंगी आपको. तो पहले आप ये बताएं कि पहला परिचय आप से और प्रेमचन्द जी से कब हुआ था और कैसे हुआ था ?

रा. सा.—देखिये गुप्त जी, ये इतनी पुरानी बात हुई कि ठीक-ठीक कह नहीं सकते. जहां तक हमको याद है, जब ये दुलारे लाल भार्गव के चंगुल में थे तब लखनऊ में उनसे पहली मुलाकात हुई थी. उसके बाद यहां जब राष्ट्रकवि मैथिलीशरण जी आए,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बार, तो उन्होंने कहा कि हम लोगों को चल कर के प्रेमचन्द से मिलना चाहिए और हम लोग उनके घर पर गए. वे वहीं कहीं रहते थे जहां अब नाट्यशाला बनी है, उसी के आस-पास.

क. गु.—राम कटोरा के आस-पास ?

रा. सा.—रामकटोरा से ओर इधर, म्यूनिसिपल आफिस की बिल्डिंग है, नाम नहीं याद है मुहल्ले का. हां वहां हम लोग गये उनसे मिलने के लिए तो पता चला कि वो गये हैं हमारे यहां मिलने. तो फिर ऐसा हुआ कि जब वे आए तो फिर रास्ते में उनसे मुलाकात वहां हुई. जैसा कि हमने आपको कहा कि उनसे हमारी पहली मुलाकात दुलारे लाल जी....

क. गु.—दुलारे लाल जी के चंगुल से आपका क्या मतलब है ?

रा. सा.—दुलारे लाल जी के वक्त की कोई बात याद नहीं. पहले-पहल इनकी कहानी निकली 'पंचपरमेश्वर'. वो सरस्वती में निकली. सरस्वती की पुरानी फाइल यहां मुरारी लाल जी बेडिया के पास है. देखिए जहां तक हमको याद आ रहा है 'पंचपरमेश्वर' और गुलेरी जी की अमर कहानी 'उसने कहा था', ये दोनों सरस्वती के एक ही अंक में निकली थीं.

क. गु —अच्छा ये बताएं कैसे लगे थे वे जब आप उनसे पहली बार मिले...उस समय की कोई खास घटना.

रा. सा.—एक बड़ा झगड़ा चला था, वह उसका नाम हम लोगों ने रखा था हेमचन्द जोशी बनाम प्रेमचन्द.

क. गु.—हेमचन्द जोशी कौन ?

रा. सा.—इलाचन्द जोशी हैं न, इनके बड़े भाई, तो वो प्रेमचन्द जी के किसी उपन्यास के बारे में इन्होंने ये लिखा कि 'वैनिटी फेयर' अंग्रेजी में जो उपन्यास है, उसकी ये छाया है. इसका बहुत दिनों तक झगड़ा चला और अन्त में निर्णय ये हुआ कि उसका कोई सम्बन्ध नहीं है. प्रेमचन्द जी की एक बड़ी अच्छी आदत थी की विदेशी कहानियों को खूब पढ़ते थे. वे कहते थे कि हम इनको चुराने के लिए नहीं पढ़ रहे हैं. हम पढ़ते हैं तो नए-नए विचार हमारे मन में उत्पन्न होते हैं. कहानियां लिखने के लिए बहुत मसाला मिलता है.

क. गु.—वैसे जब आप उनसे पहली बार मिले तो उनकी किस बात ने आपको प्रभावित किया ?

रा. सा.—ये तो बताना मुश्किल है. इतना हमको याद है, जब मिले हैं लखनऊ में. वह जब हंसते थे तो ऐसा ठठा कर हंसते थे कि मालूम होता था कि इसी का नाम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हंसी है. इसके भी बहुत पहले की आपको बताते हैं. उस समय यह जानते भी नहीं थे कि प्रेमचन्द क्या हैं ? कौन हैं ? इनके एक उपन्यास का, शायद वह उर्दू में लिखा था इन्होंने,इण्डियन प्रेस से अनुवाद छपा था,उसका नाम था—प्रेमा.बहुत ही मर्मस्पर्शी उपन्यास है वह. हमारी एक छोटी बहन थी, उसका स्वर्गवास हो गया.वो अक्सर पढ़ती, हम भी बैठे रहते थे. वह पढ़ के सुनाती थी तो बहुत रोते थे हम लोग. बहुत अच्छा उपन्यास लगा था वह. पहले पहल प्रेमचन्द को हमने वहीं जाना और यह वहीं जाना कि इनका नाम धनपत राय है.

क. गु.—वो तो दयानारायण निगम थे कानपुर के उन्होंने ही प्रेमचन्द नाम दिया था उनका.

रा. सा.—वो जो 'जमाना' निकालते थे ?

क. गु.—जी हाँ,अच्छा ये बताएँ कि उस समय का साहित्यक माहौल कैसा था ? साहित्यिक वातावरण जिसमें वो थे, प्रसाद जी थे और लोग भी थे, वो कैसा था ? काशी का वह अपना माहौल कैसा था ?

रा. सा.—देखिए प्रेमचन्द उपन्यास के सम्राट तो थे ही. प्रसाद जी ने दो उपन्यास लिखे, देवकीनंदन खत्री के तिलस्मी उपन्यासों का जमाना खत्म हो चुका था. हमारी याद से कई लोगों ने उपन्यास लिखे हैं लेकिन उनमें हमें रुचि नहीं लगी.

क. गु.—उस समय साहित्यिक गोष्ठियों का वातावरण कैसा था ?

रा. सा.—देखिए, साहित्यिक गोष्ठी में तो कभी हम गए नहीं. हाँ, यह है कि प्रसाद जी और प्रेमचंद टहलने जाते थे रोज. उन दिनों वहीं रहते थे बेनिया पार्क के पास. यहाँ मकान तो बेचारे बना नहीं सके, टहलने जाते थे. दोनों का साथ-साथ का एक फोटो है, भारत कला भवन में. बड़ा ही दुर्लभ चित्र है. प्रसाद जी से प्रेमचंद जी बराबर कहा करते थे कि तुम गड़ी हड्डियां निकालते हो, गुप्तकाल की कहानी और नाटक तुम लिखते हो कुछ ऐसा लिखो जो जीवंत हो, वर्तमान समाज का चित्रण हो. उन्हीं के कहने से प्रसाद जी ने उपन्यास लिखे, कंकाल और तितली.

क. गु.—और एक तीसरा लिखा इरावती जो अधूरा ही रह गया.

रा. सा.—वो तो बहुत पीछे लिखा उन्होंने, उस समम तक शायद प्रेमचंद जी जा चुके थे.

क. गु.—प्रेमचंद जी ने साहित्य के माध्यम से देश की आजादी की लड़ाई को भी लड़ा, एक जनजागरण, जन-चेतना की शुरुआत उन्होंने की. अधिकांश कहानियों में देखने में आता है कि कहीं-न-कहीं वे ऐसा पुट अवश्य देते हैं जिससे देश के प्रति आजादी की भावना, देशभक्ति की भावना पैदा हो. आप और क्या देखते हैं उनमें ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रा. सा.—हमारा ख्याल देखिए यह है कि प्रेमचन्द ने दो काम बहुत बड़ा किया. एक तो देहाती जीवन से शहर के लोग खुद ही नहीं परिचित थे. देहात की कथाएं लिख कर के उन्होंने शहर के लोगों की सहानुभूति देहात के प्रति जागृत की और दूसरी बात यह है कि उन कहानियों में उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बड़ा जोर दिया. देखिए हमको उनकी कहानियों में तीन कहानियां बहुत पसन्द हैं. एक तो 'पंचपरमेश्वर' और एक 'कफन' और एक कहानी है, अभी याद आ जाती है (दिमाग पर जोर देकर उन्होंने याद किया) हां 'शतरंज के खिलाड़ी' (रुक कर उन्होंने फिर कहा) दुलारे लाल को एक खब्त था कि किसी लेखक की रचना में 'ओवर एडिटिंग' करते थे. बहुत काट-छांट कर अपने मन का बनाते थे. एक दिन में कोई सज्जन हैं मारवाड़ी, वे रिसर्च कर रहे हैं, प्रेमचंद जी पर.

क. गु.—कमल कुमार गोयनका तो नहीं ?

रा. सा.—हां....हां, उन्होंने काफी काम किया है, प्रेमचंद पर. दुलारे लाल ने देखिए कैसी भद्दी बात की. वो 'शतरंज के खिलाड़ी' आपस में लड़ मरे और उधर से वाजिद अली शाह को गिरफ़्तार करके अंग्रेज लोग ले जा रहे थे तो ये लिखा कि इसके लिए तो उन्होंने जान दे दी लेकिन अपने बादशाह के लिए कुछ उनको ख्याल हुआ. उनकी लाश पड़ी थी. उसके लिए प्रेमचंद जी ने लिखा था कि दोनों बादशाह के मोहरे उन दोनों शतरंज के खिलाड़ियों की लाश देख कर हंस रहे थे. इसमें देखिए बहुत ऊंची बात है. लेकिन दुलारे लाल ने उसे काट करके यह किया कि दोनों बादशाह उनकी हालत पर रो रहे थे. अब इसमें वो बात ही नहीं है.

क. गु.—ऐसा करके तो कहानी के व्यंग्य की तीक्ष्णता ही खत्म कर दी उन्होंने.

रा. सा.—हां, यह ठीक नहीं किया उन्होंने. (रुक कर फिर कहा) दुलारे लाल से अलग किस्म के एक और आदमी थे, प्रेमचंद जी के साथ. वे थे प्रवासी लाल मालवीय. जब सरस्वती प्रेस की इन्होंने स्थापना की और 'हंस' पत्रिका निकाली तो उसके कवर इत्यादि का सारा कार्य प्रवासी लाल मालवीय करते थे. बड़ा सुन्दर कवर बनाते थे. बड़े ठाट-बाट से निकाला.

क. गु.—अच्छा, आपको याद होगा उस समय 'सोजे वतन' नामक उनका कहानी संग्रह जब्त कर लिया गया था. वह संग्रह आजादी की उद्भावनाओं से भरा हुआ था. परिणाम स्वरूप तत्कालीन कलेक्टर ने उस संग्रह की जब्ती का आदेश दिया था और उसके लेखक नवाब राय (प्रेमचंद का पूर्ववर्ती नाम) से कहा था कि तुम किसी और देश में होते तो तुम्हारे दोनों हाथ काट लिये जाते. कुछ उस जमाने की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें याद हों तो बतायें.

रा. सा.—अब इस तरह के डिटेल्स हमें याद नहीं हैं.

क. गु.—कुछ और रोचक बातें उस समय की जो आपको याद हों.

रा. सा.—बातें तो बहुत कुछ हैं (रुक कर) प्रेमचंद जी जब अपने प्रेस से, जो वहीं पास में नागरी प्रचारिणी सभा के पीछे कहीं था, वहां सभा में नाश्ता-वास्ता करने आ जाते थे तो प्रसाद जी और हम और कई-कई लोग होते थे. वहां तरह-तरह की बातें होती थीं. शान्तिप्रिय द्विवेदी भी वहां थे, बिलकुल सिकिया पहलवान की तरह. उस समय एक बहुत ही अच्छे चित्रकार थे केदार जी, उन्होंने प्रेम-विवाह कर लिया था किसी अपनी जाति की ही स्त्री से. उससे दो लड़कियां भी थीं. केदार जी ने एक का विवाह शान्तिप्रिय जी से तय किया. फिर ये सवाल पैदा हुआ कि रुपया कहां से आये तो प्रसाद जी थे, मैं था, और लोग थे. यह सोचा गया कि अगर सौ-सौ रुपये चन्दा करके एक हजार कर लेंगे तो गहने इत्यादि बन जायेंगे. उस समय सोना तो पानी के भाव था. प्रेमचंद जी भी वहीं बैठे थे, हम लोगों के साथ. शान्ति प्रिय जी शरीर से ढुलढुल थे ही. उन्हें देख कर प्रेमचन्द जी ने कहा कि ये शादी जरूर कर लें अगर इनके कमर में ताकत हो.कमर के ताकत में तीनों माने हैं—शारीरिक ताकत, सामाजिक ताकत और पैसे की ताकत. (इसी समय श्री मुरारी लाल केडिया और डा० आनन्द कृष्ण भी आ गये. बात का सिलसिला जारी रहा) फिर एक आदमी ने कहा कि अरे भई, अपनी जाति छोड़कर दूसरी जाति में शादी करोगे ? विधर्मी कहाओगे.

आनन्द कृष्ण—वो केशव जी थे जिन्होंने ऐसा कहा था और अंजाम ये रहा कि वे जिन्दगी भर कुंआरे ही रहे.

रा. सा.—फिर शादी छूट गयी शान्ति प्रिय ने मुंशी अजमेरी लाल (जो अत्यन्त गुणी पुरुष थे और उनकी बातों को लेकर लिखा जाय तो एक हजार पृष्ठ की किताब तैयार हो जायेगी) को अपने साथ लिया और केदार जी के पास गये तो उन्होंने कहा कि भई तुमने तो शादी मंजूर नहीं की तो मैंने उसकी शादी दूसरी जगह तय कर दी है. फिर तो शान्तिप्रिय बड़े दुखी हुए और रोते रहे, पर शादी कहीं नहीं हुई.

क. गु.—अच्छा रहा, शादी कर लेते तो भी रोते (फिर जोर का ठहाका लगा. रुक कर फिर पूछा) अच्छा कुछ बातें प्रेमचंद जी के निजी जीवन की याद हों तो बतायें. यह कि कैसा स्वभाव था उनका, पारिवारिक जीवन कैसा था इत्यादि. ऐसा भी कहा जाता है कि वे कलम में तो बड़े आदर्शवादी थे लेकिन जहां तक उनका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन था, उतने आदर्शवादी नहीं थे.

रा. सा.—देखिये गुप्त जी, जहाँ तक उनके पारिवारिक जीवन को मैं जानता हूँ, उससे वे दुखी नहीं थे, मगर शिवरानी देवी हमेशा उन पर हावी रहती थीं और वे जैसा चाहती थीं, उनसे काम करवा लेती थीं, पर कहीं भी कलह नहीं था. एक और बात याद आ रही है. उन्हीं दिनों ये तय किया गया कि इलाहाबाद के भारती प्रकाशन के साथ प्रेमचंद जी के प्रकाशन को मिला दिया जाय. प्रसाद जी ने दोनों का मिला हुआ नाम सुझाया—साहित्य संघ. प्रेमचन्द जी ने मंजूर कर लिया. पर दूसरे दिन दोपहर में जब आये तो बोले—भई हम दोनों प्रकाशनों को मिलायेंगे नहीं क्योंकि ऐसा करने से हमारे प्रेस के जितने भी कर्मचारी हैं, सभी बेकार हो जायेंगे. और दूसरी बात ये है कि हमारे दोनों लड़के भी तैयार हो रहे हैं, इनके लिए भी हमें रोजी का ठिकाना करना होगा.

क. गु.—भाई से उनके कैसे सम्बन्ध थे ?

रा. सा.—अच्छे थे !

क. गु.—मैं यह सवाल इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इधर बीच कुछ लेख और किताबें ऐसी आ रही हैं जिनमें ये लिखा गया है कि प्रेमचन्द का निजी जीवन अच्छा नहीं था. भाई से भी उनके सम्बन्ध अच्छे नहीं थे. उन्होंने अपने भाई का हक मार लिया आदि तरह-तरह के आक्षेप उन पर लगाये जा रहे हैं. उनके बारे में आप....

रा. सा.—ये सब वाहियात बातें हैं, बकवास की बातें हैं. प्रेमचन्द जी के अपने भाई महताब राय से काफी अच्छे सम्बन्ध थे. वे निजी जीवन में भी अच्छे थे. सीधे-साधे जैसे बाहर वैसे ही भीतर. ये सब जो झूठे आरोप हैं, गलत लोगों के आरोप हैं, प्रेमचन्द को नीचा दिखाने के लिए.

क. गु.—आप सही कह रहे हैं, आजकल कैरियर एसेसिनेशन का जैसे एक दौर ही आ गया है. जैसे राजनीति में हो रहा है, उसी तरह साहित्य में भी (रुक कर फिर पूछा) अच्छा एक बात और जो मुझे याद आ गयी है, वह ये कि उनकी रचना-प्रक्रिया क्या थी ? वे लिखते कैसे थे....कब लिखते थे ? कथानक को कहाँ से कैसे पकड़ते थे ? इत्यादि.

रा. सा.—उसके बारे में मैं कुछ नहीं कह पाऊँगा....

क. गु.—प्रेमचन्द जी को लेकर कोई और सन्दर्भ याद आता हो तो बतायें.

रा. सा.—एक बार मैं प्रेमचन्द जी के यहाँ उस समय गया हुआ था जब उनको जलोदर हो गया था. हम देखने गये थे ? उन्होंने अपनी नब्ज पर हाथ रख कर कहा था—बड़ी तेज चल रही है नब्ज. जीवन की धारा बड़ी तेजी से खत्म हो रही है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिर जब उनका देहान्त हो गया तब जैनेन्द्र जी आये और उन्होंने कहा कि इसका ट्रस्ट बना दिया जाय. उस पर प्रसाद जी और मैथिली शरण गुप्त (यद्यपि दोनों में लेखन के स्तर पर मतभेद था, पर इस बात पर एक हो गये) ने कहा कि अगर यह ट्रस्ट हो जायेगा तो दोनों लड़कों का क्या होगा. दोनों ने मिल कर जैनेन्द्र जी के प्रस्ताव का विरोध किया.

क. गु —अब थोड़ी बात उनके लेखन को लेकर भी आप से सुनना चाहूंगा. आप रचना के स्तर पर उन्हें क्या मानते हैं—एक आदर्शवादी लेखक या मानवतावादी या राष्ट्रवादी ? या कि साम्यवादी और फिर बाद का चला यथार्थवादी आदि. कौन-सी धारा आप उनके समुचे साहित्य में सर्वोपरि महत्व का पाते हैं ?

आ. कृ.—मैं समझता हूं ये सब वाद उस समय थे नहीं.

मुरारीलाल केडिया—और न उस तरह पूछने वाले थे (सभी हँस देते हैं).

क. गु.—और न हों, आदर्शवाद और राष्ट्रीयता की धाराएं तो अत्यन्त प्रखर थीं.

रा. सा.—देखिये, मैं तो यही कहूंगा कि उनकी रचनाओं की प्रधान धारा राष्ट्रीयतावाद ही है. वे आदर्शवादी थे और राष्ट्रीयतावादी भी.

क. गु.—जब वे उपन्यास सम्राट कहलाने लगे, उस समय की कुछ बात बताएं.

मु ला. के.—उपन्यास सम्राट तो उन्हें शरच्चन्द्र ने कहा था. 'आज' में एक लेख भी शायद इसी शीर्षक से प्रकाशित कराया था.

रा. सा.—राजा (आनन्द कृष्ण) कुछ इस बारे में बताओ.

आ. कृ —मैं तो बहुत छोटा था उस समय पर ये याद है कि आपके यहां पर जब साहित्यकार जुटते थे तो उस शब्द को लेकर बड़ा विवाद होता था. सभी लोगों का मत था कि उपन्यास सम्राट शब्द गलत है. उपन्यासकार सम्राट होना चाहिए. प्रसाद जी का भी यही मत था.

रा सा.—प्रसाद जी की बात पर एक बात और याद आ गयी. प्रसाद जी और प्रेमचन्द्र जी में लिखने में भले ही मतभेद हो पर बड़ी मित्रता थी दोनों में. वे रोज बेनिया बाग में टहलने जाते थे. उस जमाने की बात है, जापान के एक बड़े भारी उपन्यासकार रवि बाबू से मिलने कलकत्ता पहुँचे. उनका नाम याद नहीं आ रहा रहा है, हां सेंगर जी को याद होगा, आप पूछ सकते हैं. प्रेमचन्द जी ने उस समय प्रसाद जी से कहा—हमें शान्ति निकेतन जाना है. प्रसाद जी ने पूछा—क्यों ? प्रेमचन्द जी ने कहा—शान्ति निकेतन से हजारी प्रसाद जी ने लिखा है कि आकर उस जापानी उपन्यासकार से मिल लीजिए. प्रसाद जी ने कहा—जब वे जापानी उपन्यासकार रवि बाबू से मिलने इतनी दूर से आ सकते हैं तो क्या हमारे उपन्यास-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्रूर सम्राट से मिलने नहीं आ सकते ? बस फिर तो प्रेमचन्द जी ने अपना बिस्तरबन्द खोल दिया.

(फिर बातों का सिलसिला प्रयासीलाल, मालवीय तथा अन्य व्यक्तियों से जुड़ गया जो प्रेमचन्द जी के काफी निकट रहे हैं और जिनके पास काफी सामग्री निश्चित ही सुचित है. जरूरत है मालवीय जी से मिलकर उसे प्राप्त करने की और यथा सम्भव उनके दुखों में भागीदार होने की.)अन्त में बातों का सिलसिला प्रेमचन्द जी से जोड़ते हुए मैंने पूछा—एक बात और जानना चाहूंगा, आपके सुझावों के रूप में. जैसा कि अपने परिपत्र में जिसे आपको पहले ही दे दिया था, मैंने दो बातें भारत सरकार के लिए विचारार्थ उठाई हैं. एक तो ये कि जन्मशती के इस पुण्य अवसर पर प्रेमचन्द की स्मृति में डाक टिकट निकाला जाय और दूसरी ये कि लमही ग्राम के प्रेमचन्दगृह को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में निर्मित किया जाय. आपके क्या सुझाव हैं ?

रा. सा.—ये दोनों ही बातें बड़ी जरूरी हैं. डाक टिकट तो निकलना ही चाहिए और स्मारक यह तो सर्वोपरि है. विदेशों में तो साहित्यकारों के जन्मस्थल को अत्यन्त सुरक्षित रूप में रखते हैं.

क. गु —जी हां बिलकुल तीर्थ या ऐतिहासिक स्थलों की तरह. यही सोचकर तो ये दो संकलनाएं मैंने रखी हैं.

रा. सा.—मैं पूरी तरह सहमत हूं आपसे.

बातें करते देर काफी हो चुकी थी. राय साहब अस्वस्थ चल ही रहे थे. मैंने बातों को वहीं रोक लिया. फिर जब वे भीतर जाने को हुए तो मैंने हल्का सहारा उठने में दिया. एक दूसरे आदमी के कन्धे के सहारे से मैं उन्हें भीतर की ओर जाते हुए देखता हूं, देखता रहता हूं. उस वक्त यह नहीं जानता था, यह नहीं सोचा था कि यह देखना दोबारा नहीं हो पायेगा.

एक रोज श्री देवनारायण द्विवेदी ज्ञानमण्डल कार्यालय से सायंकाल मंदागिन पहुंचे तो देखा कि प्रेमचन्द जी अपने सीधे-सादे लिबास में वहाँ खड़े थे. द्विवेदी जी ने उन्हें देखते ही पूछा—घर जाने की तैयारी में हैं क्या ?

—हाँ.

—तो कोई एक्का-वक्का कर लीजिए.

प्रेमचन्द जी ने अपने कुर्ते की दोनों जेबों में अपने दोनों हाथ डाल कर जेबें बाहर को उलट दीं और कहा—खाली जेबवाले को एक्केवाले भी फूटी आँखों नहीं देखते. अपने दोनों पैर सलामत हैं, घर पहुंचा ही देंगे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

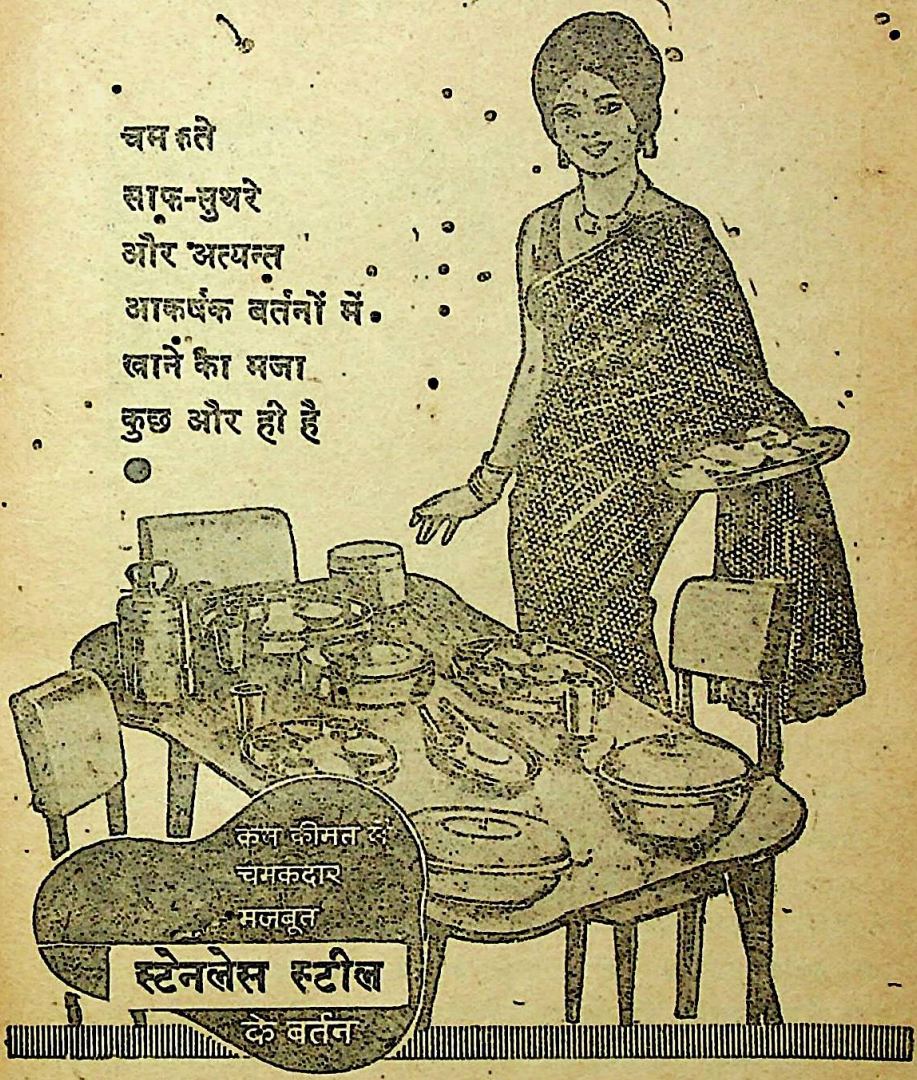

स्टेनलेस स्टील पैलेस

डी.११/२५ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी

फोन: ६३६५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथाकार प्रेमचन्द की आंतरिक छवि

(दूसरी वार्ता डा० शिवप्रसाद सिंह के साथ)

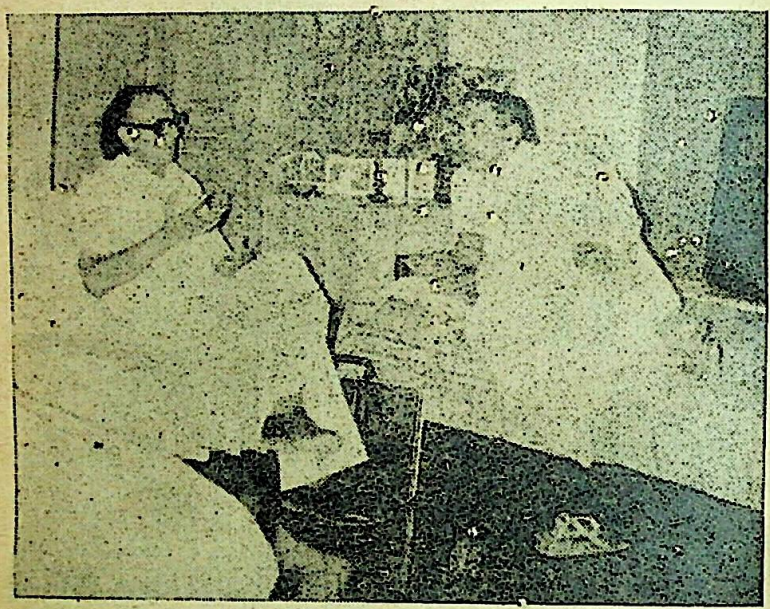

(चित्र में कमल गुप्त और डा० शिवप्रसाद सिंह वार्ता करते हुए)

उस शाम जब मैं भाई शिवप्रसाद जी के यहाँ कुछ अन्तरंग बातें प्रेमचन्द जी के सम्बन्ध में करने पहुँचा तो बारिश जैसे ताक में थी. खूब जम कर बारिश हुई. बाहर का सारा माहौल वर्षा में नहा कर तरोताजा हो रहा था और भीतर हम दोनों प्रेमचन्द की बातों को याद कर तरोताजा हो रहे थे. मैंने उनसे बात शुरू में कहा— दरअसल आपको देखने के बाद, खास तौर से जब आपकी कलम की याद आती है तो जेहन में कहीं-न-कहीं प्रेमचन्द उभरने लगते हैं. आप के लेखन के तौर-तरीके, कुछ तथ्य, कुछ कथ्य, शिल्प और अंदाजेबयानी सब काफी हद तक प्रेमचन्द जैसे लगते हैं. इसलिए पहली बात इस नजरिये से मैं यह कहना चाहूँगा कि प्रेमचन्द एक लेखक के रूप में आपको कैसे लगते हैं ? आप उनमें क्या खास बात देखते हैं ?

= ऐसा है कमलगुप्त जी कि इसे मैं अपना दुर्भाग्य ही कहूँगा कि शुरू-शुरू में मैं प्रेमचन्द से प्रभावित न हो सका. तब मुझे शरच्चन्द्र, जयशंकर प्रसाद आदि की कहानियाँ ज्यादा अच्छी लगती थीं लेकिन इसके बाद अचानक करीब '५०'५१ के आस-पास एक झटका लगा. क्योंकि साहित्य के अन्तर्गत जो नयी गतिविधि उभर रही थी, उसका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सम्पर्क गांव की जमीन से था और चूंकि मैं गांव से आ रहा था, इसलिए मैं यह सोचने लगा कि जिस साहित्य की ओर मैं आकृष्ट हूं, वह सत्य है या कि जिस गांवमें मैं रहा हूं, जिया हूं, जिसे भोगा है, वह सत्य है ? यहां पर मैं अपने मित्र त्रिलोचन शास्त्री का नाम लूंगा जिन्होंने मेरा मोहभंग किया और मुझे गांव की जमीन की ओर मोड़ा. उन्हीं दिनों १९५१ में मेरी पहली कहानी दादी मां 'प्रतीक' में छपी थी. तब प्रेमचन्द को मैंने पढ़ा नहीं था. उन्हें मैंने बाद में उस समय पढ़ा जब मैं अधिक परिपक्व हो चुका था और औरों को मैं पहचान चुका था इस तरह प्रेमचन्द मेरे जेहन में उस वक्त आये जब मैं और लोगों को पहचान चुका था. मेरे लिए प्रेमचन्द कहानीकार के रूप में (अन्तिम कहानियों को छोड़कर, जो कफन संग्रह में हैं) हमें उतना प्रभावित नहीं करते और उसी प्रकार उपन्यासों में भी गोदान को छोड़कर जो प्रेमचन्द हैं वे बड़े ही सुधारवादी किस्म के पुराने आदमी हैं. और जब उनका भी मोहभंग होता है तो एक ऐसा कलाकार हमारे सामने खड़ा होता है जो अपनी ही जमीन से जैसे चिढ़ा हुआ हो.

—चिढ़ा हुआ कहने के पीछे आपका क्या मतलब है ?

=मतलब यह कि किसान का लड़का खेत में जाकर रोज अपनी फसल की निगरानी करता है और जाड़े की रात में वह पत्ती जला-जलाकर अपने को शीत से बचाता है. कम्बल उसके पास नहीं है लेकिन जब सुबह उठता है और देखता है कि खेत को गायें चर गई हैं तो कहता है, चलो अच्छा हुआ. अब अगोरना नहीं पड़ेगा. 'पूस की रात' कहानी का यह कथन है. मतलब यह है कि कोई भी किसान का लड़का अपनी फसल के प्रति इतना निर्मम नहीं हो सकता. यह एक तरह से उनके भीतर की खीझ और मोहभंग का परिचायक है कुछ यही बात कफन कहानी में भी है.

—क्या यह मोहभंग गांधीवाद और आदर्शवाद की असफलता की वजह से नहीं था ? उस रास्ते पर चलते चलते जैसे थक गये हों.

=हां आप उसे यूं भी कह सकते हैं लेकिन उस मोहभंग को थकान की परिणति नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनकी कहानियां बड़ी ताजा हैं. उनकी जो किस्सागो शैली की कहानियां हैं, उनसे अलग जमीन की कहानियां हैं. गांधीवादी आदर्शवाद को लेकर वे चले थे किन्तु उसके असफल हो जाने पर उन्होंने ऐसी रचनाएं लिखीं.

—मैं समझता हूं ऐसे ही मुकाम पर आने के बाद वे मार्क्सवाद की ओर मुड़े होंगे एक बेहतर विकल्प के रूप में ?

=हां, लेकिन ये भी सच है कि मार्क्सवादी साहित्यकार खीझ करके निम्न वर्ग को नहीं तोड़ना जब कि प्रेमचन्द ने किसान को तोड़कर मजदूर बना दिया. यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात प्रेमचन्द के मार्क्सवाद से प्रभावित होने का प्रमाण तो बन सकता है, उनके मार्क्सवादी होने का नहीं. यही नहीं, वे जब भी जिसकी विचारधारा से प्रभावित हुए उस प्रभाव की रचनाएँ उन्होंने लिखीं. चाहे गोखले की विचारधारा हो या गांधी की, वे उस राजनीतिक विचारधारा को, चिन्तन को जनता तक पहुँचाना चाहते थे. इस प्रकार प्रेमचन्द उस जमाने में जनता और राजनीति के बीच सेतु का काम कर रहे थे. वस्तुतः यह उनका एक उद्देश्य था. वे जब भी सुनते थे कि कोई बड़ा राजनीतिज्ञ आ रहा है, वे पैसे की तंगी के बावजूद उसके पास पहुँचते थे. उस समय की राजनीतिक गतिविधि में हिस्सा लेते हैं.

—ये बातें तो इस तथ्य का सबूत हैं कि वे एक अत्यन्त जागरूक लेखक थे और देश की आजादी और जनता की खुशहाली का एक जबर्दस्त मकसद सामने रख कर विविध विचारधाराओं का इस्तेमाल साहित्य में कर रहे थे.

=बेशक यही बात है लेकिन वे कहीं भी किसी एक विचारधारा से चिपके हुए नहीं रहते. किसी विधारधारा की असफलता सिद्ध होने पर उसे छोड़ते और दूसरे को अपनाते रहते दीख पड़ते हैं.

—हाँ एक चीज नहीं छोड़ते और वह है उनका आदर्शवादी और राष्ट्रवादी दृष्टिकोण.

=हाँ ये तो है.

—अच्छा इसी सन्दर्भ में आप ये बतायें कि क्या प्रेमचन्द का आदर्शवाद कहानियों में अतिआदर्शवाद जैसा नहीं लगता ?

=नहीं ये तो नहीं लगता क्योंकि प्रेमचन्द जो भी लिखते हैं, उसको यथार्थ की जमीन से हमेशा जोड़े रखते हैं. वे सिर्फ आदर्शवाद की बात नहीं करते, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की बात करते हैं. उनके पात्र आदर्शवाद की खोल नहीं ढोते बल्कि जीवन्त पात्र लगते हैं. दरअसल प्रतिबद्धता जहाँ होगी, एक मतवाद और आदर्शवाद जैसी चीज तो वहाँ होगी ही.

—पर ये बातें तो प्रेमचन्द के कन्फर्मिस्ट होने, पुराने मूल्यों और मतों को ढोने की उनकी मनोवृत्ति की पुष्टि करते हैं.

=नहीं, ऐसी बात नहीं है. वह युग पुनर्जागरण का युग था, जन-जागरण का युग था. प्रेमचन्द ने भारतीय संस्कृति और समाज के वास्तविक मूल्यों को संरक्षित करते हुए साहित्य की सर्जना की, अपनी तरफ से उन्होंने कुछ थोपा नहीं. जो देखा, जो यथार्थ जिया, उसी को उन्होंने लिखा. हाँ, यह जरूर है कि उन्होंने सिर्फ यथार्थ का चिन्तन नहीं किया है बल्कि आदर्शवाद के साथ यथार्थवाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को समेटा है. इसीलिए उनका यथार्थवाद आदर्शोन्मुख यथार्थवाद है.

—अच्छा ये बताएँ, जो आदमी लेखन के स्तर पर इतना अधिक आदर्शवादी हो, उम्मीद ये होती है कि व्यक्तिगत जीवन में, यानी कि अपने आन्तरिक सम्बन्धों में, आचरण में, ईमान आदि के मामले में भी वह वैसा ही होगा ! प्रेमचन्द के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

=प्रेमचंद की निजी जिन्दगी कैसी थी, उसके बारे में कुछ बताना तो मुश्किल होगा. हां, जिन्होंने उनकी जिन्दगी को नजदीक से देखा होगा, वे ही साधिकार रूप से कुछ कह सकते हैं, जैसे उनकी पत्नी, उनके परिवार के लोग, पुत्र, मित्र आदि.

—बात तो आप ठीक कहते हैं पर मेरा संकेत ऐसे लोगों के तथाकथित साधिकार-वक्तव्यों से है जो ऊपर के रिश्तों में कहीं नहीं आते. आपने शैलेश जैदी की किताब देखी होगी ?

=हां देखी है.

—मैं समझता हूं जिस साधिकार ढंग से वह आदमी प्रेमचंद के व्यक्तित्व पर कीचड़ उछाल रहा है, वह शर्मनाक है. कितना पूर्वग्रही, आपत्तिजनक और दूषित लहजा है उस आदमी का जब वह लिखता है—यूं तो प्रेमचंद झूठ बोलने के फन में माहिर थे पर ये मैं दावे से कह सकता हूँ कि वे यहां झूठ नहीं बोल रहे हैं. उसी तरह एक और जगह पर उस किताब में लिखा है—बातें बनाना, झूठ बोलना, चकमे देना, तिकड़म से काम निकालना, चोरी करना, अवारा फिरना, पट्टी पढ़ाना आदि धनपत के स्वभाव का अभिन्न अंग था. १३ वर्ष की अवस्था में ही बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू का चक्कर, फिर स्त्री-पुरुष सम्बन्धी ऐसी-वैसी बातों का ज्ञान जो बच्चों के लिए घातक होता है. अमृत राय भले ही प्रेमचंद : कलम का सिपाही लिखकर धनपत को देवता बना दें, पर इतनी दुर्बलता के साथ जो व्यक्ति बढ़ कर जवान हुआ है, वह देवता कैसे हो सकता है ? धनपत में वह सभी मानवीय दुर्बलताएं थीं जो एक साधारण मनुष्य में होती हैं.

इन बातों के सन्दर्भ में आप क्या सोचते हैं ? क्या ये सब एक षड़यन्त्र नहीं है प्रेमचंद के धवल व्यक्तित्व पर कालिख पोतने का ?

=बिल्कुल है. इस किताब का जो प्रेमचंद के व्यक्तित्व वाला हिस्सा है वह निहायत गैरसाहित्यिक ढंग से लिखा गया है. बड़ा ही गैर जिम्मेदाराना ढंग लगा मुझे. ये तो एक तरह से मूर्तिभंजन का रूप है.

—बहुत ही वाजिब बात कही आपने. दरअसल जब प्रेमचंद की ऊँचाई की मूरत नहीं खड़ा कर सकते तो उसे तोड़ कर छोटा करने की कोशिश है यह, जिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह राजनीति में इधर बीच कैरेक्टर एसेसिनेशन का दौर चल रहा है वैसे ही साहित्य में भी.

—हाँ वही बात है. साहित्य में तो और भी गर्हित ढंग से उठाई जाती है. उसी का यह एक बड़ा नमूना है.

—मैं समझता हूँ, प्रेमचंद के बारे में इस तरह की दूषित मनोवृत्ति का जम कर विरोध करना अत्यन्त आवश्यक है.

=विरोध तो होना ही चाहिए, हो भी रहा है पर यह जान लीजिए कि ऐसी बातों से प्रेमचंद का कुछ भी बिगड़ने वाला नहीं है. हाँ यह जरूर है कि वह किताब एक बेईमान ढंग से लिखी किताब है.

—अच्छा अब कुछ बातें प्रेमचंद के लेखन को लेकर भी हो जाँय तो बेहतर होगा. आप यह बताएँ की प्रेमचंद ने आपको कहाँ तक प्रभावित किया है ? उनके भाषा को, शिल्प और कथ्य को लेकर आप क्या सोचते हैं ?

=जहाँ तक उनके कथ्य का प्रश्न है उनका कथ्य शहर से सटा गाँव है. इसका परिणाम यह हुआ कि प्रेमचंद की कहानियों में और उपन्यासों में नगरीय जीवन की काफी लम्बी छाया पड़ती रही—नगर का गांव में हस्तक्षेप, जैसा गोदान में है, दिखाई पड़ता है. मैं जिस प्रकार के गांव से आता हूँ या मैंने जिस गांव का विचार किया है, उसमें मेरी कोशिश रही है कि नगर और गाँव एक में घुलमिल कर न आएँ. बल्कि जो सचमुच के गांव हैं—एक तरह से मुखापेक्षी गांव हैं, खाटी गाँव, शहर से दूर का गाँव जिसमें गोदान की मालती की तरह शहर से कोई गांव में नहीं जाता, मैंने ऐसे गाँव की जो अपनी जकड़बन्दी है और उनके तोड़ने की जो उनके स्तर पर कशमकश चल रही है, उनको चित्रित किया है. जहाँ तक प्रेमचंद की भाषा का प्रश्न है, उससे मैंने बहुत कुछ सीखा लेकिन प्रेमचंद का कथ्य, जहाँ तक मैं समझता हूँ, मेरे कथा-लेखन के जमाने तक के गांव के लेखक के लिए प्रायः पुराना हो चुका था. उससे उसको प्रेरणा मिल सकती है, उसे वह अपनी जमीन नहीं बना सकता.

—क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि जब प्रेमचंद गाँव की और गाँव के मूल्यों की बात करते हैं तो कहीं-न-कहीं उनके जेहन में नगर के प्रति नकार और नजर-अन्दाज का भाव रहता है. शायद इसलिए कि नगर यदि गांवों में घुस पड़ेंगे तो गांव का अपना स्वरूप भ्रष्ट हो जायेगा. क्या उस तरह की कोई मानसिकता थी ?

=नहीं इस तरह की मानसिकता तो नहीं थी क्योंकि प्रेमचंद यह जानते हैं कि जो युवक गांव का शहर में जाता है और जब वहाँ से प्रशिक्षित होकर, वहाँ के वातावरण से परिचित होकर लौटता है तो जिस लड़ाई को वह जमींदार और सामंत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के खिलाफ लड़ता है, उसमें एक तेवर दिखाई पड़ता है. जैसे गोबर जब लौटता है तो उसकी लड़ाई का जो ढंग है, तेवर है वह बदला हुआ लगता है, इस तरह का तेवर प्रेमचंद की कहानियों में और खास कर गोदान में हमें देखने को मिलता है.

—क्या ये तेवर पैदा करने के लिए यह जरूरी था कि लोगों को शहर में ही भेजा जाय ? ये बात तो गांव में भी पैदा की जा सकती थी.

=जरूर पैदा की जा सकती थी पर राजनीतिक चेतना की जो एक लहर गांवों में होती है, वह क्षीण होती है. इसलिए जो आदमी गांव से शहर आता है तो वहां से जुझारू होकर लौटता है. अपनी समस्याओं के खिलाफ लड़ने के लिए उसकी चेतना कुछ ज्यादा विस्तृत हो जाती है. तो उस तरह की मानसिकता को पैदा करने के लिए ही प्रेमचंद गांव के किसान को मजदूर के रूप में शहर की ओर ले जाते हैं और इस प्रकार जो मजदूर के भीतर का वर्ग-संघर्ष, वर्ग-चेतना है, उसको वह समझ पाता है. इस तरह उस किसान का मजदूर के रूप में वापस लौटाना एक सार्थक प्रयोग के रूप में दिखलाई पड़ता है.

—तो क्या आप समझते हैं, इतनी व्यापक क्रांति के लिए, रद्दोबदल के लिए, सुधार के लिए इस तरह के प्रयोग पर्याप्त थे ?

=नहीं, वे और भी ढंग से जनचेतना को पैदा करते हैं. युवकों को सन्नद्ध करते हैं. कहीं गांधीवादी अहिंसात्मक प्रयोग करते हैं तो कहीं विरोध का तेवर प्रखर करते हुए दीखते हैं.

—हां, लेकिन कहीं भी क्रांति के लिए, क्रांतिकारी सुधारों और शोषण की दीर्घकालिक व्यवस्था को खत्म करने के लिए साम्यवादी ढंग के कठोर बारूदी कदम उठाने के लिए अपने पात्रों को आगे लाते हुए नहीं दीखते.

=हां ऐसी कोई घोषणा तो नहीं करते.

—तो इसका मतलब तो ये हुआ कि वे एक कमजोर लड़ाई लड़ रहे थे और इसलिए बार-बार असफल होते हैं—आदर्शवाद में भी, गांधीवाद में भी और अन्त में साम्यवाद के साथ भी.

=हां, लड़ाई में वे असफल जरूर हुए पर लड़ना उन्होंने अन्त तक नहीं छोड़ा. वे नए-नए रास्ते और राजनीतिक धाराएँ अपनाते रहे. गांधीवादी ढंग की अहिंसात्मक लड़ाई से उनका मोहभंग हुआ तो वे साम्यवाद की ओर मुड़े.

—लेकिन काफी कमजोर ढंग से मुड़े क्योंकि क्रांति के लिए, सुधार के लिए, उनके पात्र जमीदारों के खिलाफ बगावत नहीं करते, बारूद का इस्तेमाल नहीं करते,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कत्लेआम नहीं करते. क्यों ?

=यह इसलिए था क्योंकि प्रेमचंद के सामने जो गांव था, उसमें ऐसी बात उन्होंने देखी नहीं होगी. उन्होंने परिवर्तन के लिए माइल्ड किस्म के विद्रोह का तरीका अपनाया है, जहां बारूदी चेतना उभरी हुई दिखाई नहीं पड़ती.

—आइए. अब कुछ और बातें उनके कहानी और उपन्यास लेखन को लेकर भी करना चाहूंगा. अच्छा आप ये बतायें कि आप उन्हें बड़ा कहानीकार मानते हैं या बड़ा उपन्यासकार ?

=दोनों ही रूपों में वे समान ढंग से सफल कथाकार रहे हैं. लेकिन उनका जो उपन्यासकार का रूप है, वह ज्यादा प्रामाणिक और जीवन्त रूप में उभरा है. कहानियां तो जब उन्होंने शुरू कीं तो वे एक तरह से जातक कथाओं और एक था राजा पैटर्न की किस्सागो शैली की थीं जो कहानी की वास्तविक जमीन से काफी पुरानी लगती हैं. वैसे उनकी १ दर्जन कहानियां जो बाद की लिखी हैं, ऐसी जरूर हैं जो मन पर अमिट आप छोड़ती हैं.

—किन कहानियों का उल्लेख आप करना चाहेंगे ?

=जैसे पूस की रात है, कफन है, ईदगाह है, जुलूस है. शतरंज के खिलाड़ी है...

—उपन्यासों में आप किसको श्रेष्ठ मानते हैं.

=उनके उपन्यास तो वस्तुतः एक ऐतिहासिक दस्तावेज ही हैं. अपने जमाने की राजनीतिक चेतना और सामाजिक यथार्थ और आदर्श,(जिस पर अभी काफी बात हम लोग कर चुके है) उसको लेकर चलने वाले करीब-करीब सभी उपन्यास हैं लेकिन उन सब में जो एक जबर्दस्त कृति जिसमें प्रेमचंद के अन्दर के आरोहण की स्पष्ट स्थिति दीखती है और जब वे शिखर पर शिखर पार करते जाते हैं तो उस दौर में गोदान उनकी सर्वोत्कृष्ट कृति दिखाई पड़ती है.

—अच्छा एक बात. प्रेमचंद का अध्ययन हम देखते हैं कि काफी विस्तृत रहा है. सैकड़ों उपन्यास पढ़ डाले थे. क्या आप बतायेंगे कि उन पर विदेशी उपन्यासकारों में किसका प्रभाव ज्यादा पड़ा. विदेशी लेखक जैसे गोर्की, टाल्सटाय, मोपासा, लू शुन वगैरह.

=प्रभाव तो उन पर कई का रहा है. उन्होंने मोपासा को बड़ी गहराई से पढ़ा था, टाल्सटाय उनके बहुत ही प्रिय लेखक रहे हैं. प्रभावित तो वे बहुतों से रहे हैं लेकिन सबसे जबर्दस्त विशेषता प्रेमचंद की ये थी कि उन्होंने जहां से जो भी प्रभाव लिया हो लेकिन उसे भारतीय जमीन पर कसा है, उतारा है.

—आपका मतलब भारतीयकरण से है ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

समर्थ

साहित्यकार

और

कुशल

संम्पादक

स्व० प्रेमचन्द

के

युगांतकारी

कृतित्वों

के लिए

शत शत बार

हमारा

प्रणाम है

●

श्री पुरुषोत्तम दास मोदी

मेससं विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धर्मान्धता

और

सामाजिक

कुरीतियों

का

दृढ़ता पूर्वक विरोध

करने वाले

सशक्त कथाकार

स्व० प्रेमचन्द

को

उनकी जन्मशती पर

शत शत

नमन है

श्री उमेश टण्डन
मेसर्स फोर्ड एण्ड मेकडोनाल्ड प्रा० लि०
(लैम्बी १.५ तथा श्री ह्वीलर के वितरक)
रामकटोरा, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

= भारतीयकरण की जगह मैं तो ये कहूंगा कि प्रेमचंद ने प्रेरणा भले ही वहाँ से ली पर जमीन यहाँ की लो और जो कुछ लिखा उसे अपना बना कर. यह उनकी विशेषता थी इसीलिए वे जनता के अधिक प्रिय बन गये.

—कुछ बातें प्रेमचन्द के लेखन की रचना प्रक्रिया से जो जुड़ी हुई आपने सुनी और पढ़ी हों, बताएं—यह कि वे कैसे, किन लमहों में लिखते थे, कथ्य को उठाते कैसे थे ? कहां से, किस तरह....?

= ये सवालात तो पूरी तौर पर उनके निजी जीवन से जुड़े हुए हैं, फिर भी मुझे लगता है कि प्रेमचंद के लेखन को अगर कुछ शब्दों में कहना हो तो कहा जायगा कि जिस तरह किसान अपनी खेती करता है, उसी तरह रचनाकार के रूप में वे कथा-साहित्य का निर्माण करते हैं. इस प्रकार एक खेतिहर लेखक के रूप में उनको हम देखते हैं. अपनी खेती को जिस तरह से किसान उगाता है वे अपनी फसल बोते हैं, निराते हैं, सींचते हैं, खड़ी करते हैं. वैसे अपनी प्रक्रिया के बारे में उन्होंने भी कहीं लिखा तो नहीं है. हाँ, जैनेन्द्र आदि के पत्रों से कुछ संकेत मिलता है. रचना प्रक्रिया की बात विदेशों में ज्यादा होती है.

—उपन्यास के बारे में तो उनकी पाण्डुलिपियों को देखने से पता चलता है कि वे पूरे उपन्यास को पहले अंग्रेजी में सिनाप्सिस बना लेते थे और फिर उसी के अनुरूप लिखते थे.

= हाँ, ये तो है पर इससे ज्यादा वे और कुछ नहीं कहते.

—अब कुछ बातें राजेन्द्र यादव की जानिब से कहना चाहूँगा. शरच्चन्द को ध्यान में रखते हुए वे एक जगह कहते हैं कि प्रेमचन्द एक विन्दु के बाद अपने को एक विचित्र अन्धी गली में पाते हैं वैसे ही जैसे गांधीवाद से टूटे हुए लोग मार्क्सवादी हुए थे, कुछ अरविन्द के पास गये तो कुछ गोलवाकर के पास. और कुछ जो अधिक जोर-शोर से आगे बढ़े वो व्यवस्था की ओर. इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे ?

= प्रेमचन्द एक विन्दु के बाद अन्धी गली में चले जाते हैं—यह तो मैं नहीं सोचता. मैं तो ये मानता हूँ कि मोहभंग होना कोई बहुत बुरी चीज नहीं है और जो एक जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था चल रही है, इस राजनीति से जब प्रेमचंद देखते हैं कि कल्याण नहीं होगी तो वे एक बड़े तेवर के साथ अपने को बदल कर सामने ले आते हैं.

—मतलब ये कि वे कहीं से अपने को खत्म हुआ महसूस नहीं करते. उन्होंने देखा कि जो रास्ता उन्होंने अख्तियार किया, वह कमजोर साबित हो रहा है तो एक तीसरा और फिर चौथा विकल्प सामने रखा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

=हाँ, यही बात और सबसे बड़ी बात तो ये है कि अन्त तक उन्होंने जो विकल्प लिये उसमें वे ऊँचाई की ओर ही उठते जाते हैं. उनकी रचना में कहीं गिरावट नहीं दिखाई देती.

—आपकी इस बात से राजेन्द्र यादव की ऊपर की बात के मुगालते तो साफ हो जाते हैं पर बातें यहीं खत्म नहीं हो जातीं, आगे राजेन्द्र यादव फिर कहते हैं कि शरच्चंद्र के सारे नायक जब-जब वास्तविकता से टकराते है, तभी हारने लगते हैं या भागने लगते, टूटने लगते हैं या प्रतिहिंसक उत्तेजना में अपने को तोड़ने लगते हैं. सारी करुणा भावुकता और मानवीयता के बावजूद उनकी नारी जहाँ भी है, वहीं घुट-घुट कर मरने के लिए अभिशप्त है—पत्नी, वेश्या, विधवा सभी यथास्थिति से ठुकी हैं. प्यार, मुक्ति, करुणा—सब ऐसे झूठे आकाश हैं जिनकी सिर्फ झलक दिखाकर उन्हें हटा लिया जाता है—घुटन की और गहरी होती पीड़ा के बीच. और ठीक शरच्चन्द्र जैसी ही स्थिति में प्रेमचन्द आदर्श का मार्फिया इंजेक्शन देते हैं और जब उस इन्जेक्शन से विकास उठ जाता है तो स्तब्ध सम्वेदना (स्टूपिफिकेशन) या हिस्टिरिक ऐंठन वो पैदा करते हैं. इन बातों के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

=ये सब लफ्फाजी है. वैसे मैं ये मानता हूं कि शरच्चंद्र कैशोर बुद्धि के पाठकों को ज्यादा प्रिय लगते हैं. उनके पात्र कमजोर भी हैं, लेकिन ये भी सत्य है कि उन पात्रों का टूटन, उत्पीड़न उनकी बाधाएं ही उन्हें जीवन्त भी बनाती हैं.

—मसलन ?

=मसलन शरच्चन्द के पात्र श्रीकांत को ही ले लीजिए, तो श्रीकांत का जो टूटना है या उसका जो बीसियों नायिकाओं के सम्पर्क में आकर के जो मोहभंग होता है, उससे यह साफ दिखलाई पड़ता है कि उसके व्यक्तित्व का एक विस्तार हो रहा है.

—क्या संघर्षशील विस्तार भी होता है ?

=नहीं, मेरा मतलब अनुभव के विस्तार से है. शरच्चन्द्र में संघर्षशील व्यक्तित्व पात्रों का अभाव है. प्रेमचंद में ऐसा नहीं है. और रही स्टूपिफिकेशन की बात सो वह एक गलत आरोप है प्रेमचंद पर. क्योंकि प्रेमचंद में कला और शिल्प की ताजगी की जमीन हम देखते हैं जब कि शरच्चंद्र में अपनी कला में घुलने की क्रिया का जो एक बोध है, वह कैशोर मन को करुणार्द्र और सम्मोहित कर देता है और इसीलिए वे काफी लोकप्रिय रहे हैं. हिन्दी में भी प्रेमचंद की अपेक्षा वह कम नहीं पढ़े जाते.

—अच्छा आजकल एक सवाल बड़े जोर-शोर से उठाया जा रहा है. प्रेमचंद की प्रासंगिकता को लेकर, उनके शिल्प को लेकर, कथ्य को लेकर, उनकी समस्याओं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनको दृष्टि को लेकर, ऐसे सवालों के बारे में आप क्या सोचते हैं ?

वैसे मुझे तो ये लगता है कि ये सारे सवाल उठाने वाले प्रेमचंद को गया-बीता, पुराना और अभी ही आब्सोलीट मान कर एक बौद्धिक फतवाबाजी के लिए बेवजह मुद्दा खड़ा कर रहे हैं.

= इस सवाल का जवाब तो आपने खुद ही दे दिया है. वैसे ये सवाल स्वयम् में अप्रासांगिक हैं.

—वाजिब कहा आपने. प्रेमचंद की प्रासांगिकता का सवाल ही अप्रासांगिक है.

= बिलकुल वही बात. दरअसल प्रेमचन्द जैसा जीवन्त कथाकार कभी भी अप्रासांगिक नहीं हो सकता.

—बहुत-बहुत धन्यवाद भाई शिवप्रसाद जी आपको, इन सारी आज की बातों के लिए ! पर उसके पहले कि हम विदा लें, एक आखिरी बात कहना चाहूँगा—अन्त में एकान्त की बात. और वह ये कि जब आप बिलकुल एकांत क्षणों में चिन्तन की मुद्रा में होते हैं और उस समय यदि प्रेमचन्द याद आ जाते हैं तो कैसे लगते हैं वे, उनकी याद, उनकी छवि ?

= हमको तो उनकी एक सफल किसान, जैसे देहात का होता है, और मुरेठा-उरेठा बांधे, और खैनी पीटता हुआ, बड़े रंग में, अपने किये हुए पर सन्तुष्ट हो इस प्रकार की एक प्रेरणा दायक किसान की छवि हमारे सामने खड़ी होती है.

—और ये छवि शायद दुर्लभ है. पूरे इस संस्कृत वांगमय को लेते हुए और आज के पूरे हिन्दी साहित्य में भी ऐसी मोहक प्रेरक छवि अब तो दुर्लभ है.

= रोटी दाल और तोले भर घी से सन्तुष्ट रहने वाले प्रेमचन्द खुद अपनी मिसाल थे.

—वाकई बेमिसाल थे.

मटर की फलियाँ

— प्रेमचन्द जी प्रातःकाल जब खेतों में शौच के लिए जाते थे तो काफी दूर निकल जाते थे. लौटते वक्त अंगल-बगल के जौ-गेहूं के खेतों में मटर की फलियों को जब देखते तो खेत में भीतर तक जाकर उसे तोड़ लाते क्योंकि उन्हें मटर की घुघरी बेहद पसन्द थी. खेत के किसान देखते तो कहते—चचा तू त मटर के चक्कर में कुल खेत खराब कर डालल.

प्रेमचन्द इस उलाहना का जवाब देते—देखा भाई, इ बात फलियन से कहा कि हमके इ काहे के दिखाई पड़ेलिन. न इ दिखायें न हम तोड़ी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथा-साहित्य और प्रेमचन्द का संदर्भ

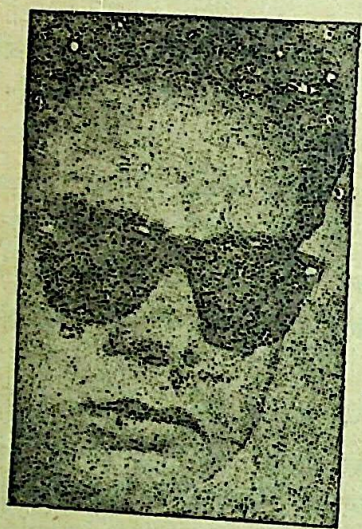

राजेन्द्र यादव
और
कमल गुप्त
के बीच
एक लम्बी बातचीत

साल-दो-साल पहले तीन-चार दिन के लिए राजेन्द्र यादव ने वाराणसी में पड़ाव किया. चक्कर यह था कि आखिर देवकीनन्दन खत्री के तिलस्मी लेखन के पीछे कौन-कौन-सी बातें और शर्तें काम कर रही थीं? उस जमाने का माहौल कैसा था, क्या था? वे इलाके, किले और जंगलों के बीहड़ बीरान रास्ते और पगडंडियां कौन-सी थीं? और इन सारे सवालात के हुजूम के साथ यादव, मैं, कमलापति खत्री (देवकीनन्दन खत्री के पौत्र) और केदार नाथ खत्री (देवकीनन्दन खत्री के दामाद) साथ-साथ चुनार, चुनार के किले और आस-पास के इलाके में धूल फांकते रहे. फिर हम और यादव उस जमाने के संस्मरणों और बीती बातों की खोज में दिन-दिन भर बहुत सारी जगहों के चक्कर मारे. अत्यन्त उपयोगी भेंट श्री राय कृष्ण दासजी से हुई. उस सम्बन्ध में काफी उपयोगी बातें हुईं. लगा कि दौड़-धूप बेकार नहीं हुई बल्कि पूरी तरह सार्थक हो गई है. शाम हो चुकी थी. हम दोनों ही काफी थक भी चुके थे पर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी से अब तक मिल न पाने के कारण बेचैन भी थे. फलतः उसी समय मिलने का निश्चय किया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्विवेदी जी से मिलते ही एक ताजगी का अनुभव हुआ, दोनों ही तरोताजा हो उठे.कुछ बातें इधर-उधर की हुईं फिर उन्होंने राजेन्द्र यादव से पूछा—? बनारस किस लिए आना हुआ ?

राजेन्द्र यादव—ऐसा है पण्डित जी, उधर मेरे द्रिमाग में एक कीड़ा रेंगने लगा है.

आचार्य द्विवेदी जी—भई, मैंने अब तक सुना तो यह है कि तुम्हारे दिमाग में बहुत से कीड़े रेंगते हैं, तुम एक कहते हो तो चली, मान लेते हैं.

कमल गुप्त—आप ठीक कहते हैं, पण्डित जी. कीड़े हैं तो बहुत, पर काट एक रहा है.

राजेन्द्र यादव—इस एक कीड़े की काटने की बात को नामवर से आप मत जोड़ लीजियेगा पंडित जी.

फिर तो जोर का ठहाका पंडित जी के निवास स्थान पर लगा था—काफी देर तक फिर और बातें होती रहीं. वापस लौटने पर जब हम दोनों लॉज में पहुँचे तो काफी देर हो चुकी थी. हम थक भी गये थे, पर दोनों ही का मूड जमा हुआ था. मैंने सोचा जमाने बाद की मुलाकात है, आज तो धर दबोचूँ वर्ना हाथ में आकर निकल गई मछली का पछतावा फिर होगा. मैंने कहानी-चर्चा छेड़ने की बात कही तो यादव ने कहा—यार थक गया हूँ. अब तू हलाल मत कर.

सामने प्लेट में रखे नमकीन के एक टुकड़े को हाथ में लेकर मैंने कहा—लो यह मेरा नमक खा लो फिर नमक हलाली में तुम्हें मजा आयेगा.

मुस्कराते हुए राजेन्द्र ने नमकीन हाथ में ले लिया और कहा—चलो आज तुम भी देख लो कि मैं कितना नमक हलाल हूँ.

—नमक हलाल तो तुम तीनों ही थे, वर्ना नई कहानी आन्दोलन के बृहत्त्रयी कैसे कहलाते ?

—फिर मुस्कराहटों का आदान प्रदान हुआ, मैंने बात आगे बढ़ाते हुए पूछा—अच्छा यह बताओ अभी जो कुछ दिमाग में कीड़ों के काटने की बात कह रहे थे. नयी कहानी को लेकर भी मुझे तो यही लगता है कि तुम्हारे दिमाग में उस समय भी कुछ कीड़े रेंगने लगे होंगे,काटने भी लगे होंगे और जब उन्हें दिमाग के बाहर निकाला होगा तो औरों को काटने लगे होंगे. बताओगे वे कौन-कौन से कीड़े थे जिन्होंने तुम्हें इस कदर परेशान किया था कि तुमने नयी कहानी की बात शुरू की थी.

—उसका जवाब जैनेन्द्र जी की भाषा में यानी कि मुद्रा में देना हो तो ये कहूंगा कि मैं तो उन कीड़ों को जानता भी नहीं. मैंने तो देखा भी नहीं और जो जब लिख

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

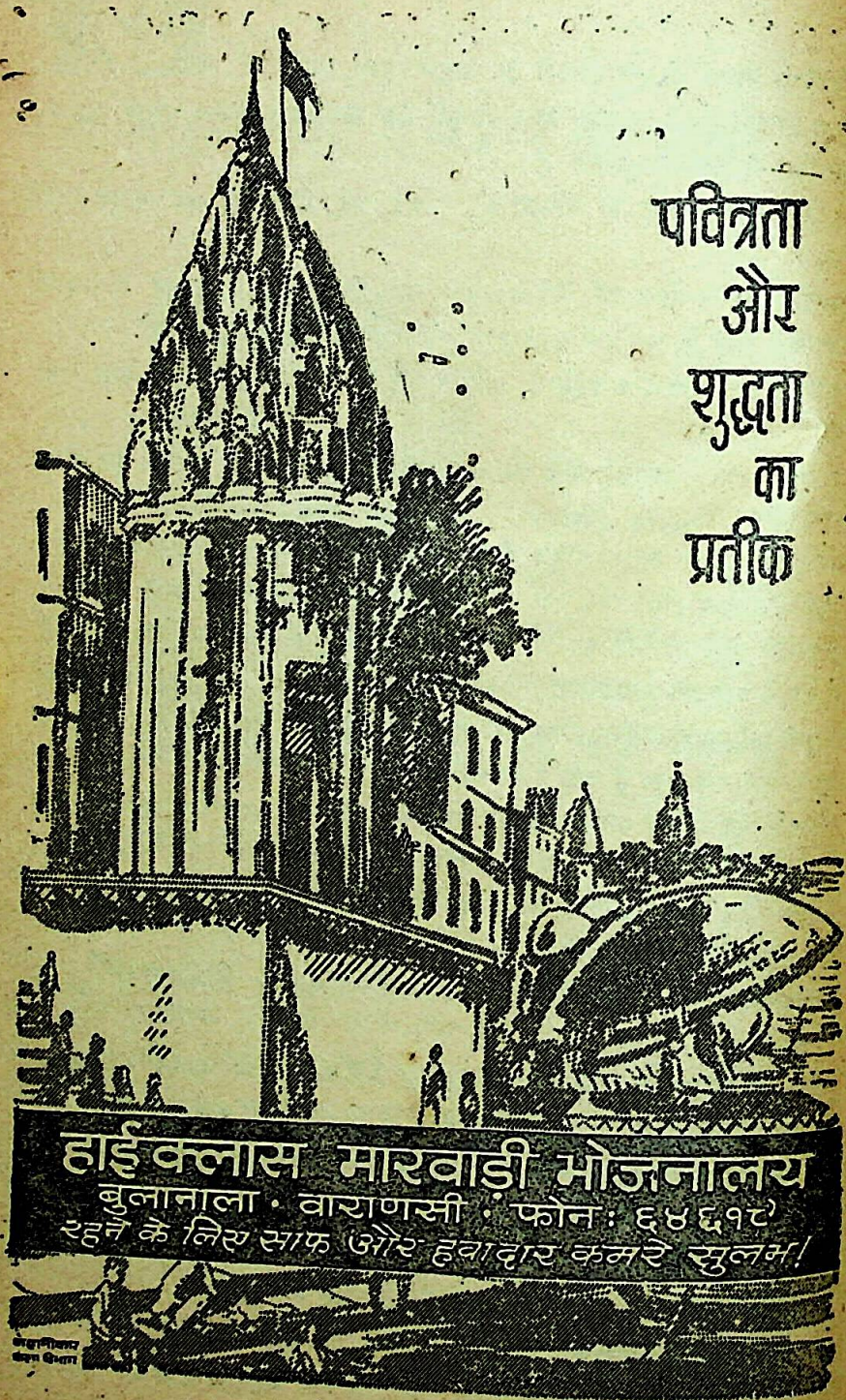

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया तब लोग कहने लगे कि कीड़ा खत्म हो गया. शिल्प को लेकर इसी तरह से वे बोलते हैं कि शिल्प क्या है, मैं तो ये शब्द ही नहीं जानता. मुझे पता नहीं शिल्प क्या है ? कैसे होता है ? कहानी लिख दी तो लोग उसमें शिल्प तलाशने लगे. लोग कहते हैं कि मैं बड़ा सचेत शिल्पी हूं.

—क्या कहा ? सचेत शिल्पी ? कहीं सचेत से ही सचेतन कहानी वाली बात तो नहीं लिख ली गयी ?

—ऐसा कोई प्रयोजन नहीं था, ईमानदारी से अपनी कहानियां लिखना चाहते थे.

—अपनी से क्या मतलब ?

—अपनी से मतलब है, अपने प्राब्लम्स, अपने अनुभव, अपने ड्रीम्स—वही, जो आदमी अपने मन में सोचता है. हर लेखक कहीं-न-कहीं पर दिवास्वप्नी होता है कुछ स्वप्न देखता है, तस्वीरें खींचता है और उन्हीं को लिखता है, पर चूंकि प्रगतिशील लेखक का बैकग्राउण्ड बहुत जबर्दस्त था, इसलिए उसकी पेशकश बहुत नई ढंग की हुई. जैसे ख्वाजा अहमद अब्बास, रांगेय राघव, कभी राहुल, कभी यशपाल.

—किसकी कहानियों ने तुम्हें सबसे ज्यादा प्रभावित किया है या जिससे तुम्हें डायरेक्शनल थिंकिंग ज्यादा मिली हो ?

—हिन्दी में तो जो मेरा बचपन का बैकग्राउण्ड रहा है, वह तो मुख्य रूप से यशपाल और रांगेय का है लेकिन बहुत जल्दी एक जानवर मेरी जान को लग गया था.

—प्रेमचन्द ने क्या तुम्हें प्रभावित नहीं किया ? मेरा मतलब है उनकी राइटिंग्स से तुम्हें दिशा निर्देशन क्या नहीं मिला ?

—इस बारे में तुम्हें साफ-साफ बताऊं कि प्रेमचन्द का क्षेत्र था गांव जब कि सही बात यह है कि गांव से मेरा परिचय नहीं रहा. यों यह बात अलग है कि कभी गांव चले गये लेकिन उस तरह से कभी-कभार गांव चले जाने को आधार मानकर जिन्होंने कहानियां लिखीं वे सही कहानियां नहीं थीं.

—इसका मतलब है कि तुम्हारे भीतर गांव कभी जिन्दा ही नहीं हुआ. तुम आगरे और दिल्ली के बीच—शहर से शहर की यात्रा करते रहे.

—आगरे से दिल्ली नहीं, बल्कि कलकत्ता, कलकत्ता में दस-ग्यारह साल रहा, उसके बाद दिल्ली.

—तो शहर की आबोहवा से घिरे रहने के कारण प्रेमचन्द से तुम प्रभावित नहीं हो सके ?

—प्रेमचन्द ने मुझे उस रूप में प्रभावित नहीं किया जिस रूप में यशपाल ने. और जैसा मैंने अभी बताया, एक व्यक्ति मेरी जान को लग गया था. और वह व्यक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था चेखव. उस वर्ष मैंने आगरा युनिवर्सिटी में टॉप किया था, लेक्चररशिप का आफर भी मिला पर चूंकि पिता जी जिन्दा थे और मेरे सिर पर लेखकी का भूत सवार था इसलिए मैंने सोचा, मुझे क्या करना नौकरी-वौकरी, मैं लेखक बनूंगा. फलतः नौकरी करने के बदले मैंने बड़े शहरों की राह पकड़ी. सोचा, आगरा एक छोटा शहर है, घुटन भरी जिन्दगी है. लेखक को अनुभव की जरूरत होती है, ट्रेनिंग की जरूरत होती है. जिसके लिए बड़े नगरों का माहौल काफी उपयोगी प्रतीत हुआ, दिल्ली का चक्कर-वक्कर लगाया. रह गया दसेक साल कलकत्ता में. वहीं मन्नू से भेंट हुई, परिचय हुआ, शादी हुई.

—इसके पहले भी वे कहानियां लिखती थीं ?

—हां, लिखती थीं, उनके दो कहानी-संग्रह भी आ चुके थे.

—और तुम्हारे ?

—मेरे भी तीन या चार कहानी-संग्रह प्रकाशित हो चुके थे.

—कहानी में और कहानी के भीतर जो अभिव्यक्ति के अन्तर्यामी सूत्र रहे हैं, विशेष ढंग के, क्या वे जिम्मेदार रहे हैं दोनों को उतना करीब लाने में ?

—नहीं...अभी भी नहीं है. मतलब कि लोग कहते हैं कि कहानियों में मेरा अप्रोच कुछ इण्टेलेक्चुअल ज्यादा है और मन्नू की कहानियों में इम्मोशनल. ये अन्तर दोनों में शुरू से ही बना रहा.

—पर शायद इण्टेलेक्चुअल बनाने की दिशा में, जैसा कि मन्नू जी भी कुबूल करती हैं, वे अपनी कहानी को जब तुम्हें दिखाती हैं तो तुम कुछ रद्दोबदल भी करते हो.

—नहीं, मैं करता नहीं हूं, वो मानती भी नहीं हैं यदि मैं करूं भी, उल्टे वे मेरे इण्टेलेक्चुअल अप्रोच को लेकर लिखी गयी कहानियों को बहुत पसन्द नहीं करतीं बल्कि उनका मजाक भी उड़ाती रहती हैं.

—कहानियों में इण्टेलेक्चुअल अप्रोच को तुम किस रूप में लेते हो ?

—तुम्हारी इस बात को स्पष्ट करते हुए मैं यह कहना चाहूंगा कि मैंने जो कुछ भी पढ़ा है, उनमें चेखव मेरी जान को लग गया है. मैं योग दर्शन और हिन्दी कविता पर रिसर्च करने कलकत्ते गया हुआ था पर वह एक बहाना ही था. वहां नेशनल लाइब्रेरी जाता था, पढ़ता था पर उन पांच-छः वर्षों में जो भी पढ़ाई हुई वह चेखव को लेकर हुई. चेखव का अपनी वाइफ को लिखे पत्र, चेखव पर लिखा हुआ साहित्य, चेखव का लिखा वह सारा साहित्य जो भी वहां उस समय था—पूरे रूसी साहित्यकारों के संदर्भ के साथ, उसे पढ़ डाला और तब मुझे लगा कि जो एक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मानवीयता है, एक हार्दिकता है, वह चेखव में बहुत गहरी है.

—गोर्की के बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?

—गोर्की की शक्ति ने मुझे बहुत प्रभावित किया है. चेखव की अपेक्षा गोर्की मुझे झिझोड़ता अधिक है, ही इज डिस्टर्बिंग, चेखव इज सूदिंग और उसकी वजह है, चेखव की हार्दिकता. वैसे अन्य जो भी कहानीकार हैं—मोपासाँ हो, दास्तावेस्की हो, सबने आठ-दस कहानियाँ बेहद अच्छी लिखी हैं, ए-वन कहानियां लिखी हैं, बाकी सब उस ऊँचाई तक पहुँचने की आशाएं भर दीं, पर चेखव ही ऐसा कहानीकार मुझे मिला जिसकी दर्जनों कहानियाँ ए-वन कहानियां हैं, एक-से-एक बढ़ कर लिखी हैं. साले ने ६ सौ कहानियाँ लिख डाली हैं और अजीब-अजीब विषय को लेकर. ऐसी-ऐसी बातों को लेकर कि कम-से-कम मैं तो उसकी कल्पना हीं नहीं कर सकता.

—इस जगह एक बात मैं यह कहना चाहूँगा कि चेखव की राइटिंग्स जब मानवीय संवेदनाओं को इतने अछूते धरातल पर पकड़ती हैं तो क्या कान्कोक्शन की शिकार नहीं बनतीं ?

—बिल्कुल नहीं, वैसे कान्कोक्शन का अगर कहीं थोड़ा बहुत आरोप लगा सकते हैं, जहाँ पर कहानी के साथ खींच-तान की गयी है, तो वह गोर्की में है, चेखव में नहीं, बिल्कुल नहीं है. ही इज प्योरली नेचुरल !

—ठीक, पर मिसाल के तौर पर यदि चेखव की 'क्लर्क की मौत' कहानी को लो जिसमें एक क्लर्क थियेटर में अपने सामने बैठे बॉस की गंजी खोपड़ी पर छींक के आवेश में थूक के छींटे छिटका देता है. पर इस गलती का उसमें इतना गहरा भय घर कर जाता है कि वह बार-बार बॉस से माफी मांगता है. अन्त में बॉस उस पर बुरी तरह बिगड़ जाता है. वह क्लर्क भय की, हॉरर की यातना से इतना आतंकित होता है कि घर पहुँचते ही सोफे पर गिर कर मर जाता है. क्या यह कहानी तुम्हें नेचुरल लगती है ?

—देखो, अब उस कहानी को, थोड़ा-सा बैकग्राउण्ड को लेते हुए पढ़ना होगा. बैकग्राउण्ड से मेरा मतलब है, इस कहानी के पीछे देखना होगा. रूसी परम्परा को बिना ध्यान में रखे अगर इस कहानी को पढ़ा जायेगा तो यह कहानी एक अतिशयोक्ति लगेगी कि आदमी अपने अफसर की चाँद पर छींकने की गलती के कारण मर कैसे सकता है ! दरअसल उस आदमी के भीतर एक अपराधबोध घर कर जाता है और उस अपराध के भय को वह झेल नहीं पाता और मर जाता है.

—पर यह तो एक मामूली-सी अशिष्टता कही जायेगी. इसे अपराध की संज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय आंदोलन
के लिए
जन जागरण
में
अपनी लेखनी
के द्वारा
प्राण फूँकने वाले
यशस्वी कथाकार—
स्व० प्रेमचन्द
की पुण्य स्मृति को
उनके जन्मशती के अवसर
पर सादर नमन
है.

●

श्री मार्कण्डेय सिंह
होटल अशोक
सिगरा, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्यों दे रहे हो ?

—इसलिए कि ब्यूरेक्रेसी की यही मानसिकता सामान्य आदमी को भयंकर रूप से निचोड़ कर रख देती है. इस कहानी का सूत्र तुम्हें 'ओवरकोट' में भी दिखाई पड़ेगा. दास्तावेस्की की प्रारम्भिक रचनाओं में भी दिखाई पड़ेगा, जहाँ गरीबी पर ब्यूरोक्रेसी इतनी ज्यादा छाई हुई हो, इतनी ज्यादा हावी हो, वहाँ के आम आदमी की जिन्दगी की परिणति कुछ इसी तरह की होगी. क्लर्क कहानी में वस्तुतः उस क्लर्क का मरना सिम्बॉलिक है. यह आदमी के तिल-तिल कर मरने का साक्षी है. दरअसल वह आदमी के मानसिक रूप से मर जाने को उद्घाटित करना चाहता है और उसके लिए लेखक ने फैण्टेसी का थोड़े अंशों में आश्रय लिया है और आदमी की मानसिक मौत को फिजिकल मौत के माध्यम से व्यक्त करता है. पर इस तरह का एक्जेजरेशन लेखक की कुछेक इस तरह की कहानियों में ही है.

—मेरा यही कहना था कि कहानी को इस ढंग से तोड़ने-मरोड़ने की प्रक्रिया क्या कान्क्वेश्चन की ताइद नहीं करती ? यह फैब्रिकेशन नहीं तो और क्या है ?

—देखो, हमें यहां यह देखना होगा कि यह फैब्रिकेशन किस धरातल पर है—सम्वेदना के धरातल पर है या रूप के धरातल पर कफ्का में सारा फैब्रिकेशन है. फैण्टेसी है.

—देखो, फैण्टेसी में तो इतनी लिबर्टी रूप के धरातल पर होती ही है.

—हाँ, पर फिर भी सम्वेदना के धरातल पर वह पूरी तरह से रियलिस्टिक है.

—हाँ, सम्वेदना के धरातल पर भी हो सकता है, पर फैंटेसी में रूप और टेक्स-चर के फैब्रिकेशन की पूरी लिबर्टी होती है. क्या चेखव ने भी इस लिबर्टी का फायदा नहीं उठाया है ?

—हो सकता है, पर ऐसा भी होता है कि कहानी आधे में पूरे तौर पर रियलि-स्टिक हो और आधे में वह फैण्टेसी में जम्प कर जाय. चेखव में ये बात खास तौर से मिलती है, लेकिन कुछ ही कहानियों में. क्लर्क कहानी में भी यही बात है. वहां पर आदमी की मौत को फैण्टेसी के माध्यम से प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है. आदमी के घुटन को उसकी जीवित मृत्यु को इस तरह से दिखाने की कोशिश है.

—दास्तावेस्की में भी तो यही बात है ?

—हाँ, करीब-करीब ऐसा ही है. फर्क इस बात को लेकर है कि दास्तावेस्की जहाँ पर आदमी की घुटन को एक्सप्लोड करता है, वहां पर चेखव उसे एग्रेवेट करता है और गहराई में जाकर एक्सेंचुएट करता है.

—मतलब और पेनीट्रेटिंग इफेक्ट देने की कोशिश करता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—हाँ यही....

—तो क्या यशपाल ने कुछ इसी ढंग से अपनी बातें नहीं कही हैं ?

—यशपाल असल में मोपासा के ज्यादा पास हैं. जैसे सामरसेट माम को ले लो. वह चेखव के करीब दीखता ज्यादा है पर राइटिंग के स्तर पर वह कहीं ज्यादा नज़दीक है ओ हेनरी और मोपासा के. यही बात यशपाल के साथ है. यशपाल के लेखन की बुनावट मोपासा के ज्यादा निकट है. वह जो शोसल क्रिटिसिज़्म है, तीखापन है, पैनापन है, वह चेखव में नहीं है, मोपासा में अधिक दीखता है. इसी तरह स्टीफन ज्वायक है, जो मेरा बहुत ही प्रिय लेखक रहा है. मतलब ये ही सारे लेखक हैं, सबने मिल कर मुझे प्रभावित किया है और इन लोगों से ही सीखा है.

—रांगेय राघव का भी तो अभी उल्लेख किया था !

—रांगेय राघव की भी कहानियों में उनका वो जो ओज है, उर्जा, उससे प्रभावित हूं. रांगेय राघव के भी आगरे का ही होने के नाते परिचित तो हम दोनों एक-दूसरे से लेखन के नाते और व्यक्तिगत तौर पर भी थे.

—रांगेय राघव के लेखन से किस माने में खास तौर से प्रभावित हुए ?

—भाषा से खास तौर पर. उनकी भाषा—बस यूँ समझो कि पिघले हुए लोहे की तरह से, गरम फौलाद की तरह से भाषा का इस्तेमाल उन्होंने किया है. उनकी ऊर्जा, वही सम्वेदनात्मक प्रभाव पैदा करने वाली तीक्ष्णता ने मुझे प्रभावित किया.

—ये सारी बातें कामोवेश रूप में प्रेमचन्द के लेखन में भी तो रही हैं. फिर उन्होंने तुमको प्रभावित क्यों नहीं किया ?

—देखो प्रमचन्द मुझे कन्वेंशनल लगते हैं. वे अपने अप्रोच में कंजर्वेटिव हैं—अब प्रेमचन्द के खत का जिक्र करूँ जो उन्होंने कमल किशोर गोयनका को अपने एक उपन्यास को लेकर लिखा है, कि उसमें उन्होंने एक विधवा का विवाह करा दिया है और यह गलत किया. उसी तरह 'बड़े घर की बेटी' कहानी को लो. अब यह भी निहायत गलत धारणा है कि बड़े घर से आई हुई बेटी अच्छी ही हो.

—मान लो, इस तरह की दो-चार मिसालें तुम पेश कर दो पर उसी आधार पर तुम प्रेमचन्द को कंजर्वेटिव और कन्वेंशनल मान लो तो यह तो ज्यादती हुई. उन्होंने कहानी की थीम को जिस जमीन से लिया है, वहां के अनुसार ही, वहां की मान्यताओं के हिसाब से ही कहानी को बुना है. हां, बात अपनी कही है और प्रेमचन्द में यह अपनी बात कहने की कुव्वत को तुम इन्कार नहीं कर सकते.

—मैं जानता हूं कि प्रेमचन्द ने अपनी बात कही, पर उस अपनी बात कहने में मुझे तो यही लगा है कि उन्होंने प्रचलित मान्यताओं को कनफर्म ही किया है, इस-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए मैं उन्हें कन्फर्मिस्ट अधिक मानता हूं.

—'कफन' और 'पूस की रात' जैसी कहानियों के सन्दर्भ में भी क्या तुम्हारा यही खयाल हो ?

—नहीं, 'कफन' और 'पूस की रात' जैसी कुछ ही कहानियों को छोड़कर बाकी अधिकांश रचनाओं में, ये जो शरच्चन्द्र-के-से कथानकों का आदर्शवादी ताना-बाना है, बुनावट है, वह मुझे प्रभावित नहीं करता. वो जो आदर्शवाद के तहत यथार्थ को तोड़ा-मोड़ा जाता है मुझे अच्छा नहीं लगता,

—पर यह तो एकतरफा बात हुई. मैं तो कहता हूं कि अपने पहले के रचनाकारों से प्रेमचन्द ने जितने पुख्ता ढग से,जिसने प्रभावशाली ढंग से, डिस्टिंटिवली अलग किया है, पुराने लीक को छोड़ा है,तिलस्म, भावुकता और प्रेमप्रलाप को अलग रख कर पेनीट्रेटिंग ढंग से उस जमाने के जिन्दा सवाल को लेकर हल करने की कोशिश की है, उसे हम यह कह कर कि वह बहुत कंजरवेटिव हैं, ट्रेडिशनल हैं, उन्हें नकार दें, तो क्या यह ठीक है ?

—नहीं, नहीं....मेरा मतलब उनको नकारने से नहीं है. यह सच है कि उनका अपना अप्रोच है, वस्तुस्थितियों को देखने की अपनी जो पेनीट्रेटिंग दृष्टि है, मैं उनको इनकार नहीं करता. बहरहाल यह बात जरूर है कि उनकी रचनाओं ने शुरू के दिनों में मुझे प्रभावित नहीं किया.

—मैं शुरू के दिनों की बात नहीं कर रहा हूं. मैं तो मैच्योर्ड स्थिति की बात पूछना चाह रहा हूँ.

—मैच्यार्ड स्थिति ने तो निश्चय ही मुझे प्रभावित किया है. हो सकता हैं शुरू के दिनों में मैं एडालिसेण्ट में था और इतना प्रभावित न हो सका.

—मैच्योर्ड की मसला तो दोनों से है, वैसे मेरा मतलब मैच्यार्ड प्रेमचन्द से है. मैं समझता हूँ कि उस मैच्यार्ड प्रेमचन्द ने ही तुम्हें प्रभावित किया है और उन प्रभावों को समेटने के लिए ही तुमने 'प्रेमचन्द की विरासत' किताब लिखी है. बताओगे ऐसी कौन-कौन-सी बातें हैं जिन्हें उनकी विरासत के रूप में मानते हो ?

—प्रेमचन्द की विरासत से मेरा मतलब है यथार्थ को यथार्थ दृष्टि से देखना और शब्द देना. जैसा मैं महसूस करता हूँ और जैसा मैं यथार्थ को देखता रहा हूँ, उसी रूप में उसे कहने की कोशिश ही किसी बड़े लेखक की विरासत होती है. सच को सच कहने, यथावत प्रस्तुत कर देने और झूठ को झूठ.

—पर ये तो एक फोटोग्राफी हो गयी. महज रिपोर्ताज.

—नहीं, ये फोटोग्राफी नहीं हुई, फोटोग्राफी वाली बात इसलिए इसमें लागू नहीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होगी, क्योंकि ये वैचारिक लेखन है, रिपोर्ताज नहीं. अगर मैं यह कहूं कि हिन्दी के लेखन का बहुत सारा हिस्सा बकवास है तो कोई गलत बात नहीं होगी, आज हिन्दी का कोई उपन्यास विश्व उपन्यास की ऊँचाई को नहीं छु पाया तो उसका बहुत बड़ा कारण हमारा धर्म है, हमारा आध्यात्मिक दृष्टिकोण है, दार्शनिक दृष्टिकोण है जो जीवन के सारे परिवेश को माया कहता है, मिथ्या कहता है, अर्थहीन कहता है, जिसमें आस-पास की चीजों को हम नहीं देख पाते. हम अपने किये की पुनर्जन्म-वाद का कारण मानते हैं. हम जो करते हैं, उसकी जिम्मेदारी मुझ पर नहीं है. उसका सीधा असर यह होगा कि जो हम कहते हैं, कुछ गलत करते हैं, उसकी जिम्मेदारी मुझ पर नहीं होगी और न ही उसका गिल्ट हमें होगा. यह बात व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, सामाजिक स्तर पर भी होगी, और जब गिल्ट का अहसास हमें नहीं होगा तो बेचैनी नहीं होगी. और जब बेचैनी नहीं होगी तो लेखन कैसे होगा, क्योंकि गिल्ट का अहसास रचना के लिए पहली शर्त है.

—तुम्हारा मतलब इस सारे संस्कृत वांगमय से है ?

—हाँ सारा भारतीय साहित्य भारतीय दृष्टिकोण जो जन्म-जन्मान्तर के सिद्धान्त की आड़ में व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी की भावना से बच निकलने के रास्ते बताता है.

—पर प्रेमचन्द में तो ऐसी बात नहीं है.

—हाँ, प्रेमचन्द के साथ तो नहीं है पर यह जरूर है कि प्रेमचन्द में वह डेप्थ नहीं है जो परसनल गिल्ट से, सोशल गिल्ट से पैदा होती है और उससे जो बेचैनी होती है. अब जैसे 'गोदान' की बहुत तारीफ की जाती है. दरअसल 'गोदान' की जो शक्ति है, वह उसका कंजरवेटिज़्म है. होरी को ही लो, वह शुरू से आखीर तक रुढ़ियों से चिपका हुआ है, धार्मिक परम्पराओं से घिरा हुआ है, स्थितियां उसे दूसरी ओर ढकेलती हैं और वह चिपका हुआ है उन रुढ़ियों से.

—लेकिन प्रेमचन्द तो चिपके हुए नहीं हैं उन्होंने तो उन्हें कण्डेम भी किया है.

—हाँ किया है, पर बहुत इनडायरेक्ट ढंग से. 'गोदान' की शक्ति रूढ़ियों को कण्डेम किया जाना नहीं है, वह तो उसकी रूढ़ियों की शक्ति है.

—पर यह तो लेखक की अपनी ईमानदारी है कि वह जिस युग और जमीन की कथावस्तु को ले, उसे पूरी निष्ठा से, तत्परता से, डिपिक्ट करे, इन्टरप्रेट करे और ऐसा करते हुए अपनी बात कहे. मैं तो समझता हूँ कि प्रेमचन्द ने यही किया है और उनकी यह अपनी बात कहना ही 'गोदान' की शक्ति है, न कि रुढ़ियाँ. रूढ़ियाँ तथ्य हैं प्रेमचन्द का कथ्य नहीं, उनका कथ्य तो कुछ और है. इतना ही नहीं अपने युग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के प्रति, उस युग के व्यक्ति के जीवन के प्रति, उसकी समस्याओं और मान्यताओं के प्रति, पूरे युग-बोध के प्रति प्रेमचन्द जितने जागरूक हैं, सजग हैं, ईमानदार हैं, जिस पैनी दृष्टि के वे धनी हैं, उन सबको कुबूल करने के बदले, जरूरी नहीं कि उन्हें हम इसलिए अस्वीकार कर दें क्योंकि वह आज के तकाजों को पूरा नहीं करतीं. और यदि हम अस्वीकार नहीं कर सकते तो फिर इस बात को भी हम अस्वीकार नहीं कर सकते कि प्रेमचन्द की कुछ रचनाएँ विश्व-स्तर के लेखन के बराबर ठहरने की कूव्वत रखती हैं.

—नहीं उस स्तर पर तो प्रेमचन्द नहीं आते.

—अपने समकालीन लेखकों में तो आये ही हैं ?

—नहीं, समकालीन की बात में भी नहीं. भारतीय उपन्यासों में जिसे मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ—सर्वश्रेष्ठ चाहे न मानूँ, वह है—वह गोरा है. भारतीय साहित्य में इतने जबर्दस्त उपन्यास बहुत कम हैं. ये सन् १९२० से पहले लिखा गया है. यह भारतीय धार्मिक रूढ़ियों को, दार्शनिक रूढ़ियों को इतनी तीक्ष्णता से एक्सपोज करता है, मेरा खयाल है वह बहुत ही जबर्दस्त चीज है. उस नाते वह आज भी उतना ही रिलायबुल है.

—तुम क्या यह समझते हो कि प्रेमचन्द्र में उस तरह से धार्मिक और सामाजिक रुढ़ियों को एक्सपोज करने की ताकत नहीं थी ? मैं तो समझता हूँ कि वह कुव्वत उनमें भरपूर थी, पर उनके सामने कुछ मजबूरियां थीं, समझौतों की मजबूरियां. हालात को बेहद एक्स्पोज कर देने की स्थिति में पाठक सम्भवतः उसे एक्सेप्टेबुल नहीं कर पाता. जैसे कि 'कफन' कहानी को लो. उसके तेज एक्स्पोजिशन को पाठक स्वीकार नहीं कर पाता है. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी कुबूल नहीं कर पाये थे और उन्होंने प्रेमचन्द से कहा कि आदमी इतना गिरा हुआ नहीं है जितना कि आप दिखाते हो. प्रेमचन्द खामोश हो गये थे. कहा जाता है कि कुछ समय बाद एक बार प्रेमचन्द और शुक्ल जी कलकत्ता गये हुए थे. सुबह के वक्त प्रेमचन्द बारजे पर थे कि एक औरत को अपने बच्चे की दुहाई दे-देकर, भीख मांगते हुए देखा. उन्होंने उस औरत को पास बुलाया और कहा—देखो, मैं तुम्हें यह एक रुपया दूँगा यदि जो मैं पूछूँ. तुम उसे सच-सच बताओगी. इधर-उधर के और सवाल पूछने के बाद प्रेमचन्द ने जब यह पूछा कि तुम्हारा यह सीने से लगा बच्चा कब मरा तो वह औरत बेहद सकपका गयी और डरते-डरते कहा—मैं क्या करूं बाबूजी, इसे ही दिखा-दिखा कर मैं भीख मांगती थी. पर यह कल शाम जब मर गया तो मैंने सोचा एक-आध दिन और उसे ही दिखा कर भीख मांग लूं, फिर तो इसे गंगा में बहा ही देना है. प्रेमचन्द ने उसे रोक लिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैशाली ट्रांसपोर्ट
एण्ड फारवार्डिंग एजेन्सी (रजि०)

जी. टी. रोड, महेशपुर, वाराणसी.

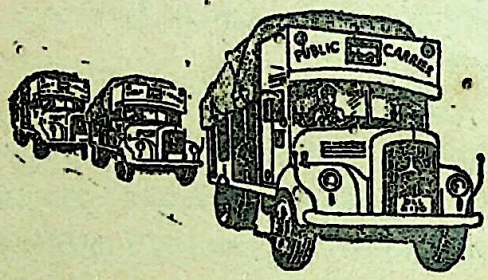

वाराणसी बुकिंग—रामकटोरा, वाराणसी. फोन : ६५२२३, ६३३८२

रजिस्टर्ड आफिस—जी. टी. रोड, महेशपुर, वाराणसी. फोन : ६५२२३

एजेंसियाँ—सैदपुर, गाजीपुर, रसड़ा, बलिया, दोहरी घाट, बड़हलगंज, कोपा, मऊ, आजमगढ़, जौनपुर, शाहगंज, फूलपुर, गोपीगंज, भदोही, मिरज़ापुर, गोरखपुर, देवरिया, बस्ती, बालोतरा, पाली, जोधपुर (राज०) अलीगढ़, अहमदाबाद, बम्बई.

विशेषताएं :—

- उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ भार-वाहन ट्रान्सपोर्ट-स्वामी
- इन्श्योरेंस कराने पर माल की पूरी ज़िम्मेदारी हमारी होगी.
- आपका क्लेम एक माह के भीतर चुकता कर दिया जायगा.

हमारी सेवाएं देश भर के सभी प्रमुख शहरों में फुल ट्रक के लिए सुलभ हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भीतर से शुक्ल जी को बुला लाये और सारा किस्सा जो बयान किया तो वे प्रेमचन्द की कल्पना की दूरदर्शिता और यथार्थ की नग्नता को नंगा करने, एक्स्पोज करने की इस अद्भुत क्षमता पर चकित हो उठे थे. प्रेमचन्द ने आदमी के उस घिनौने रूप को, इस गिरावट को जिस तीव्रता के साथ 'कफन' में यों उस तरह की कुछेक अन्य कहानियों में एक्स्पोज किया है, पर्दाफाश किया है, वह सबसे उल्लेख्य है, ऊपर है.

—देखो जो कहानी तुमने अभी सुनाई है, मेरी जानकारी में यह नहीं है. लेकिन हो सकता है ऐसा घटित हुआ हो.

—हो सकता है मत कहो, बल्कि उसे हुआ कहो. मैं तुम्हें एक और किस्सा बताता हूं. मेरे एक दोस्त हैं अलीम मसरूर, बहुचर्चित उर्दू उपन्यास 'बहुत देर कर दी' के लेखक. उन्होंने एक बार मुझे बताया था कि उन्हीं की आंख के सामने एक लड़का अपने बाप के कफन के लिए इकट्ठा किये गये कुछ रुपयों को जुए में हार गया और बाकी का शराब पी गया था. इसलिए प्रेमचंद की आंखों देखी घटना कोई असम्भव घटना नहीं थी जिसको 'कफन' कहानी में उन्होंने अपनी अन्तरदृष्टि से विजुअलाइज कर लिया था. अब सोचो, ऐसी क्षमता रखने वाले रचनाकार के लेखन को 'वह गोरा है' के बराबर नहीं रखना चाहते ?

—नहीं बात यह नहीं है. दरअसल जहां तक 'कफन' कहानी का सवाल है मैं उसे दूसरे अर्थ में लेता हूं. यह कफन आदमी की लाश पर पड़ा हुआ कफन नहीं है, बल्कि उस सिम्बालिज्म के द्वारा मानवीय संवेदनाओं पर मानवीय भावनाओं और सम्बन्धों पर पड़ा हुआ कफन मानता हूं जिसके नीचे आदमी मर चुका है.

—तुम उसे जिस भी ढंग से व्याख्यायित करो पर एक बात तय है कि इस तरह की तल्ख और एक्सेप्टेबिलिटी की परवाह किये बगैर रचना देने की प्रेमचन्द की अपनी कुव्वत, उनकी अपनी विशिष्टता थी.

—देखो एक्सेप्टेबिलिटी का सवाल लेखक के सामने कभी भी बड़ा सवाल नहीं बनना चाहिए. निराला को ही लो. मैं तो समझता हूं कि उसी दौर में निराला एक से एक बढ़ कर अनएक्सेप्टेबुल रचनाएँ दे चुके थे. मतलब यह कि यह नहीं कहा जा सकता कि लेखक के लिए एक्सेप्टेबिलिटी ही पहली शर्त होनी चाहिए.

—प्रेमचन्द को भी नहीं कहा जा सकता कि उन्हें उसी की चिन्ता दिन रात खाये जा रही थी वर्ना 'कफन' जैसी कहानी पैदा ही न होती. हां यह बात जरूर है जिस दौर की कहानियां वे लिख रहे थे, उस आबोहवा से जुड़ा रहना, प्रतिबद्ध रहना, उसके प्रति ईमानदार रहना प्रेमचन्द ने लेखकीय जिम्मेदारी मानी थी.

—हां, इसे मैं मानता हूं कि प्रेमचन्द इस लेखकीय जिम्मेदारी के प्रति हमेशा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द मैं बोल रहा हूँ

सीवानो से प्रेमचन्द मैं,
बोल रहा हूं.

एक बार तुम कमर कसो तो
हरियाली की तरह हंसो तो,
देखो पूरब की लाली है
पश्चिम को जाने वाली है,

उठो विहानों प्रेमचन्द मैं,
बोल रहा हूं.

धर लें बाहें आओ मिल कर
चल कर उस साहू के घर पर,
वह सूदखोर है, शोषक है,
जो अनाचार का पोषक है,

उठो जवानों प्रेमचन्द मैं,
बोल रहा हूं.

तुमने हँसना कभी न सीखा
तुमने पढ़ना कभी न सीखा,
डरो नहीं हम साथ तुम्हारे
तुम संग माटी, गन्ध पुकारे

उठो किसानों प्रेमचन्द मैं,
बोल रहा हूं.

—सुरेन्द्र बाजपेयी

जागरूक रहे हैं, प्रतिबद्ध रहे हैं. प्रेमच
की विरासत में मैंने लेखक की प्रा
गिकता का प्रश्न, उस समाज से जुड़े र
की बात उठाई है. लेखक का अपने आ
पास से जुड़े रहने की वृत्ति को मैं स
परि मानता हूँ इस तरह के कमिटमेंट
जुड़ी लेखन एक तरह की मानसिक या
हैं, भौगोलिक यात्राएं हैं, इस तरह
कहना चाहिये कि वो यात्राएँ जरूर
उनमें विखराव भी जरूर है पर एक
तय है कि उनकी जो थीम है वह अ
सम्पूर्ण प्रासंगिकता को समेटे हुए है
जिन्दगी के सवालों से पूरी तरह जुड़ी
हैं. उन पर रिएक्ट करती हैं, हो सकता
मेरा तरीका उन सवालों पर बहुत क
रिएक्ट करने का रहा हो....

—क्या इस हद तक कि उससे प
प्रेमचन्द ने उस तरह से रिएक्ट
किया हो.

—हाँ उस हद तक तो प्रेमचंद
भी नहीं किया. हो सकता है मेरा
तरीका औरों को ऐसा लगता रहा
कि मैंने चौंकाने के लिए लिखा है,
बात ऐसी नहीं थी.

—और किन लेखकों में ऐसी
तुमने देखी है या कि जिन्हें उस स्तर
लेते हो ?

—आज के लेखकों में कुछ से सहमत हूँ और कुछ से मैं सहमत नहीं हूं, एक
मुझे लगता है कि निर्मल बहुत शार्प हैं, हालांकि वो जो कहते हैं, मैं उनसे टोटल
डिफर करता हूँ. लेकिन दूसरा व्यक्ति जिसके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है,
है शैलेश मटियानी. उसके सोचने का ढंग, बात करने का ढंग मुझे बेहद पसन्द है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाषा में उसमें वह प्रीसीशन नहीं है. आलोचनात्मक मार नहीं है, उसका अपनी इस शैली का अपना कारण होगा, देखने-कहने का अपना तरीका होगा, वह अलग बात है.

—और किसे मानते हो ?

—और तो बड़ा मुश्किल है कहना कुछ सामने वाले को देख कर कुछ आगे-पीछे का हिसाब लगा कर, बड़े कैल्कुलेशन से चलना पड़ता है. पालिटिक्स सिर्फ दिल्ली में ही नहीं है, राजधानियों में ही नहीं है बल्कि धीरे-धीरे वह जिन्दगी में व्यक्तिगत व्यवहार में उतर आई है.

—अपने ग्रेड के बारे में अपनी इस शार्पनेस को लेकर क्या खयाल है ? मतलब जैसे कमलेश्वर के बारे में, मोहन राकेश के बारे में.

—अब कमलेश्वर और मोहन राकेश...

—क्या कुछ कहने की अपेक्षा खामोश रहने की बात सोचने लगे हो.

मुस्कराते हुए राजेन्द्र यादव ने कहा—नहीं, यह बात उतनी नहीं है पर पूछते हो तो मैं तो यही कहूंगा कि उन दोनों की शुरू की रचनाओं में इस तरह शार्प रिएक्शन तो पाते हैं पर बाद में शायद....

—उतने नहीं रह गये, यही न, और इसी से सब अलग रास्तों के हो गये.

—हाँ कुछ यही, दरअसल इसकी एक बहुत बड़ी वजह है. हम लोगों को जो चीज मारती है वो रेस्पेक्टेबिलिटी मारती है, एक्सेप्टेबिलिटी नहीं मारती और रेस्पेक्टेबिलिटी का मोह इतना जबर्दस्त होता है कि आप उसे खोना नहीं चाहते.....

—उससे चिपक जाते हैं चाहे लेखन और दोस्ती दोनों ही चिटक जाय.

—हाँ, हर कीमत पर उससे चिपके रहना चाहते हैं और यही मोकाम खतरनाक साबित होता है. वे बहुत-सी सही, पर कटु और अप्रिय बातें सुनना नापसन्द करने लगते हैं. जैसे-जैसे हम लोग रेस्पेक्टेबुल पोजीशन पर पहुँचते गये, चीजों को और शब्दों को शायद मिस करते गये. हमारा वो तीखापन, पैनापन जाता रहा. उसकी जगह एक अदा रह गई, उसके भीतर की वह कम्पैक्टनेस जाती रही.

—तुम्हारा मतलब है कि दोनों ही 'अदा' के शिकार हो गये.

—नहीं इसे अदा का शिकार होना न कहो बल्कि यूँ समझो कि जिन बातों को उन्हें कहना चाहिए था उसको कहना उन्होंने पसन्द नहीं किया.

—सातवें दशक में किसे मानते हो जिसने ऐसी बातों को जम कर, खुलकर कहना पसन्द किया.

—सातवें दशक में....बड़ा मुश्किल है बताना. चुप रहना ही चाहूँगा यहाँ पर.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देशोत्थान

समाजोत्थान

और

व्यक्ति-उत्थान

को

लक्ष्य-साधन

मान कर

विपुल साहित्य

का निर्माण करने वाले

स्व० प्रेमन्द

को

शत शत बार

प्रणाम

●

लायन रामेश्वर प्रसाद, अध्यक्ष
लायन राय ऋषिकुमार, मन्त्री
लायन रमाकांत केडिया, कोषाध्यक्ष
लायन्स क्लब, काशी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—अच्छा एक दूसरी बात. सातवें दशक को लेकर जो सामने आती है उसे पूछता हूँ. क्या सोचते हो इन कहानी आन्दोलनों के बारे में, जो इधर काफी ताम-झाम से सामने आयी हैं ? क्या ऐसा मानते हो कि लेखकों में जेनुइन राइटिंग के निर्माण में इन आन्दोलनों का कोई हाथ रहा है ?

—नहीं, मुझे तो यह लगता है कि इनसे लेखकों की क्रिएटिविटी थोड़ी डैमेज ही हुई है. और यूंही वजह है कि महिलाएं जो उस तरह की दन्द-फन्दों में नहीं रहतीं और उनके लिए लिखना ज्यादा निष्ठा की चीज है उनमें इधर जो हिन्दी की महिला लेखिकाएं हैं, चाहे वो मृणाल पाण्डेय हैं, मृदुला गर्ग हैं, या मालती जोशी हैं, कृष्णा सोबती हैं और ममता है ये सब जो लेखिकाएं हैं....

—एक नाम छोड़े जा रहे हो. मन्नू जी का नाम क्यों नहीं ले रहे ?

—बस यूं ही कि वो मेरे साथ हैं अन्यथा उनके साथ उषा प्रियम्बदा का नाम लेना चाहूंगा. मेरा मतलब तो बस इतना है कि महिलाएं ज्यादा ईमानदारी से लिख रहीं हैं. ज्यादा निष्ठा से लिख रही हैं और उनकी राइटिंग के साथ वो कैनकुलेशन्स नहीं हैं जो प्रायः पुरुष लेखकों के आस-पास दिखाई देती हैं. पुरुष लेखक लिखने के साथ उसके इस्तेमाल की चिन्ता ज्यादा करता है, इसमें बहुत सारे हिसाब लगाता है और हिसाब चुकाता है. दोनों काम करता है.

—तुम्हारा मतलब है आन्दोलनों के रूप में या किसी पुरस्कार वगैरह के रूप में अपने लेखन को भुनाना चाहता है.

—हाँ आन्दोलनों में झण्डा गाड़ने या पुरस्कार हासिल करने, अभिनन्दन कराने के जरिये यानी कि वह इसके तरीके अख्तियार करके अपने लेखन को भुनाना चाहता है, जब कि महिलाओं में इस मामले में एक खास तरह का रिजर्वेशन कहो, शालीनता कहो या फिर अपने में सिमट जाना कहो, चूंकि ये सारी चीजें उनमें हैं, इसलिए वो ज्यादा जिम्मेदारी से लिख रही हैं—अच्छा लिख रही हैं. वैसे ये बात अलग है कि वे किस सीमा तक जाती हैं, क्योंकि उसका सीधा सम्बन्ध उनकी अनुभव-सीमा से है पर उसके भी सामाजिक कारण हैं, बन्धन हैं, दायरे हैं. यहाँ वे यूरोपीय लेखिकाओं की तरह सीमाओं से ऊपर भी नहीं हैं.

—दरअसल उनके लेखन का थीमैटिक कैनवास ही बड़ा नहीं हो पाता. उनके संस्कार ही ऐसे हैं कि बड़ा हो भी नहीं सकता.

—हाँ वो बड़ा नहीं है, बड़ा हो भी नहीं पायेगा क्योंकि उनके उतने विस्तृत अनुभव भी नहीं हैं, जितने कि होने चाहिए. उसकी वजह यह भी है कि लेखन कहीं बहुत अधिक सुरक्षित दायरों में नहीं लिखा जाता. उसके लिए बहुत सारे खतरे लेने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पड़ते हैं. सही लेखन के लिए डेंजरसली लिव करने की जिसमें हिम्मत नहीं है, वह सशक्त लेखन कर ही नहीं सकता. सशक्त लेखन के लिए तो अनकन्फर्मिस्ट होना जैसे जरूरी हो गया है. ऐसा लेखन अपने व्यवहार में रहन-सहन में भी किसी खास हद तक नानकन्फर्मिस्ट होता है. मुझे तो ऐसा एक भी लेखक नजर नहीं आता जो सशक्त भी हो और कन्फर्मिस्ट ढंग से लिखता और जीता रहा हो. कन्फर्मिस्ट लेखक सशक्त लेखक हो ही नहीं सकता, हाँ आलोचक जरूर हो सकता है. कन्फर्मिस्ट तो अपने सुविधाभोगी जीवन के लिए सुविधावादी ढंग से लिखता है.

—तुम्हारा मतलब है लेखक कन्फर्मिस्ट इसलिए होता है ताकि उसे रिस्क कम उठाने पड़े और उसे रिस्पेक्टेबिलिटी की खुराक बदस्तूर मिलती रहे.

—हाँ बिल्कुल यही बात है और शायद यही वजह है कि हम सही लेखन के दौर से नहीं गुजर रहे हैं या फिर ये कि सही लेखन की पहचान ही हमसे दूर हो गयी है.

—क्या ये बात आठवें दशक को मद्दे नजर रखते हुए शिकायत के तौर पर कह रहे हो ?

—शिकायत नहीं, वस्तुस्थिति है. फिर यदि शिकायत करूँ भी तो किससे करूँ. किसी को नहीं पड़ी, तो मुझे भी नहीं पड़ी है, हाँ तुमने बात उठा दी तो कह दी.

—एक बात और उठा दूँ ?

—अब बस भी कर यार कि फौजदारी करायेगा.

—जब रिस्क उठाने की इतनी पैरवी कर रहे हो तो फौजदारी का रिस्क कौन उठायेगा ?

—चलो तय रहा. फौजदारी मैं करूंगा, तरफदारी तुम करना.

—तरफदारी करने के खयाल से ही यह सवाल उठाना चाह रहा हूँ कि आखिर यह अपने रचना संसार को 'चोरी का माल' कह कर क्या पर्दाफाश करना चाहते हो ?

—पर्दाफाश तो कुछ भी नहीं, हाँ आत्मस्वीकृति कहो जिसके द्वारा मैं यह बताना चाह रहा हूँ कि मेरा रचना संसार चोरी के माल की नुमाइश है. मेरा मतलब है कि मैंने जो कुछ भी लिखा है, वह सब दूसरों का है, दूसरों की भावनाएं हैं, जिन्हें मैंने उन्हें बिना बताये उन सब के भीतर घुस कर ले लीं और अपना बना लिया. उसे घर में नहीं रखा बल्कि उसको नुमाया कर दिया, उसकी नुमाइश लगा दी, उसे प्रदर्शित कर दिया है, एक किताब के रूप में, एक उपन्यास की शक्ल में, कहानी की शक्ल में और फिर लोगों को आमन्त्रित किया कि वे आयें और इस नुमाइश को देखें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—इसका मतलब है कि इस चोरी की प्रक्रिया में जो जितना ही सफल हो उसे उतना ही अच्छा लेखक माना जाना चाहिए ?

—हाँ, मेरा खयाल तो यही है कि जो लेखक जितनी बड़ी चोरी कर सकता है और जितने कलात्मक ढंग से अपने उस चोरी के माल की नुमाइश लगा सकता है, वह उतना ही बड़ा लेखक है, सफल लेखक है.

—तब तो तुम्हारे साथ मेरी शुभकामनाएं हैं कि तुम इस चोरी के फ़न और फितरत में और तरक्की करो, और....और ज्यादा तरक्की करते जाओ.

फिर तो इस बात पर हम दोनों के ही ठहाके कमरे में देर तक गूंजते रहे. ■■

स्वतन्त्रता दिवस के पुनीत अवसर पर
उत्तर प्रदेश जल निगम एवम् समस्त जल संस्थान
आपका अभिनंदन करते हैं.

हमारा लक्ष्य
- आपको पेयजल सुलभ करना.
- ऐसा पेयजल, जो रोग रहित हो.
- जिससे आपको जल-वाही कीट-व्याधियों से छुटकारा मिले.
- ऐसी बीमारियों के इलाज पर होने वाले धन की बचत हो.
- आपको पानी घर पर मिल सके.
- आप सुखी रहें और आपके समय व मेहनत में बचत हो.

बशर्ते कि आप
- नियमित रूप से जल-कर और जल-मूल्य का भुगतान करें.
- पानी का अपव्यय न करें.
- पेयजल योजनाओं की सुरक्षा में योग दें, और
- असामाजिक तत्वों को उनकी तोड़-फोड़ न करने दें.

उत्तर प्रदेश जल निगम
सर्वे सन्तु निरामया

उत्तर प्रदेश जल निगम

उत्तर प्रदेश जन की सेवा में सन्नद्ध

६, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपन्यासकार प्रेमचन्द : एक कथा-यात्रा

डा० त्रिभुवन सिंह

उपन्यासकार मुं० प्रेमचन्द का उदय हिन्दी साहित्य में एक ऐतिहासिक महत्त्व रखता है. समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक आन्दोलनों को उन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों द्वारा न केवल अगुवाई ही की, बल्कि नये भारत के निर्माण की दिशा का दिग्दर्शन भी उनकी रचनाओं द्वारा हुआ. उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा हिन्दी कथा साहित्य को गम्भीर साहित्य के रूप में न केवल प्रतिष्ठित ही किया, बल्कि अपनी अद्भुत बोली द्वारा हिन्दी कथा के पाठकों की रुचियों का संस्कार कर असंख्य हिन्दी पाठकों का निर्माण भी किया. हिन्दी-गद्य-भाषा को प्रेमचन्द ने जो शक्ति और क्षमता प्रदान की, उसके निश्चित रूप में हिन्दी का उज्वल भविष्य निर्मित हुआ. भारती अन्तर्दृष्टि के धनी मुन्शी प्रेमचन्द ने दलितों एवं पीड़ितों के प्रति अपने कथा साहित्य में जो करुणा एवं संवेदना प्रदान की उससे पहली बार हिन्दी साहित्य क्षेत्रीय संकीर्णता, साम्प्रदायिकता, रुढ़िग्रस्त धार्मिकता एवं राष्ट्रीय सीमाओं को पार कर मानवता के हित में अन्तर्राष्ट्रीय जगत में प्रविष्ट हुआ. अतः मुंशी प्रेमचन्द ने हिन्दी एवं भारतीय साहित्य को जो गौरव प्रदान किया है, उसे दृष्टि में रखते हुए उनके उपन्यास- साहित्य का मूल्यांकन अभी बहुत कम हुआ है. प्रायः ऐसा देखा जाता है कि लोग अपनी निजी मान्यताओं से आधार पर प्रेमचन्द के साहित्य का मूल्यांकन अपेक्षाकृत अधिक करते हैं और इस प्रकार जो समीक्षात्मक कृतियाँ प्रकाश में आयीं हैं. उनमें प्रेमचन्द की व्यापक दृष्टि को प्रस्तुत करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयत्न नहीं दीखता, बल्कि पूरे सन्दर्भ से काटकर अपनी रुचि के अनुसार समीक्षकों ने उनके खण्डित सत्य को ही प्रस्तुत किया है. इस प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यास साहित्यपर काम तो बहुत हुआ है,पर उनकी अन्तर्दृष्टि और रचना प्रक्रिया के क्रमिक विकास और उसे प्रभावित करने वाली परिस्थितियों तथा तत्वों को स्पष्ट करने वाले मूल्यांकन की दिशा में कार्य करने की अभी पर्याप्त संभावना है इसमें सन्देह नहीं कि प्रेमचन्द एक प्रतिबद्ध उपन्यासकार थे. पर उनकी प्रतिबद्धता आयातित नहीं बल्कि स्वदेशी थी और अपने सम्पूर्ण लेखकीय जीवन में वे युगीन संवेदनाओं के साथ जुड़े रहे. वे युग की नाड़ी पहचानने वाले साहित्यकार थे और उन्होंने उसके स्पन्दन के साथ निज की आत्मानुभूति को केवल जोड़ा ही नहीं था बल्कि उसका आत्मसाक्षात्कार भी किया था. उनका और उनके आसपास का भोगा हुआ सत्य ही कला एवं कल्पना के बल पर उपन्यासों में व्याख्यायित हुआ है. वे युग के सच्चे सहयात्री थे और आँख खोल कर यात्रा कर रहे थे जिससे यात्रा में आने वाली सभी समस्याओं से उनका सहज ही परिचय हो गया था. अपने अनुभव की विशालता और दूरगामी अन्तर्दृष्टि के कारण ही प्रेमचन्द अपने उपन्यासों की विषयगत विविधता एवं जीवन दृष्टि प्रदान कर सके हैं जिसके कारण उनकी रचनाओं में उत्तरोत्तर परिवर्तन लक्षित होता है.

'कला कला के लिए नहीं, बल्कि मानवता के हित साधन के लिए है.' मु० प्रेमचन्द के उपन्यासों का यही मूल स्वर रहा है जिसके कारण न तो उनके विषय चयन की प्रक्रिया में कहीं रूढ़िगत जड़ता है और न तो शिल्पगत अवधारणा में. विषय और शिल्प का अद्भुत सामंजस्य प्रेमचन्द के उपन्यासों में देखने को मिलता है और वे परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं. विषय परिवर्तन के साथ-साथ उनके उपन्यासों का शिल्प भी परिवर्तित होता रहा है और वे परस्पर एक-दूसरे के पूरक होकर सामने आए हैं. अतः विषय और शिल्प का जो सहज विकास उनके उपन्यासों में देखने को मिलता है, उसके आधार पर हम प्रेमचन्द की कठिनाइयों का अनुमान लगाते हुए तद्युगीन साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों के इतिहास को रेखांकित कर सकते हैं.

विषय, शिल्प एवं प्रतिपाद्य सभी दृष्टियों से हिन्दी का आरम्भिक उपन्यास साहित्य अपनी कोई पहचान नहीं बना सका था. हिन्दी कविता जिस जड़ता का शिकार हो चुकी थी. उसे तोड़ने के लिए माध्यम की तलाश थी और वैज्ञानिक युग की सामाजिक विषमताओं की अभिव्यक्ति में उसकी अक्षमता ने हिन्दी गद्य का मार्ग प्रशस्त किया. विषय, स्वरूप एवं शिल्प की दृष्टि से हिन्दी गद्य को दाय के रूप में कुछ मिला नहीं था और जो गद्य-साहित्य सुलभ भी था टीकाओं आदि के रूप में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय कृषकों

और

मजदूरों की

दीर्घकालिक

शोषणतांत्रिक

व्यवस्था के

खिलाफ

साहित्य के माध्यम से

संघर्ष करने वाले

दृढ़ संकल्पी साहित्यकार

स्व० प्रेमचन्द

को

प्रणाम

●

श्री विष्णु भाई

मेसर्स गिरनार प्रा० लि०

हौजकटोरा, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह भी खड़ी बोली में न होकर ब्रजभाषा के रूप में था. हिन्दी खड़ी बोली के आन्दोलन ने अपनी प्राणवत्ता एवं सार्थकता प्रमाणित कर दिया था जिससे हिन्दी गद्य को अपनी पठनीयता एवं लोकप्रियता के लिए एक ऐसे साहित्य रूप की आवश्यकता थी जो उसे सीधे सर्व साधारण तक पहुँचा सके और यह कार्य हिन्दी उपन्यास के उद्भव द्वारा सम्भव हुआ. अतः आरम्भ में हिन्दी उपन्यासकारों के सामने पाठक की अभिरुचि सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही जो उनकी रचना की दिशा का नियमन करती थी. पाठकों की रुचिभेद एवं स्वरूभेद के कारण हिन्दी उपन्यास के विषय एवं शिल्प में वैविध्य आया और उसकी कोई एक निश्चित रूपरेखा का निर्माण नहीं हो पाया. शास्त्रीय भाषा में कहना चाहें तो कह सकते है कि उन आरम्भिक उपन्यासों को 'उपन्यास' की संज्ञा नहीं दी जा सकती. तिलस्मी, जासूसी, खूनी, अस्वाभाविक कल्पना-श्रवण एवं उपदेशपरक कहानी-किस्से ही लिपिबद्ध रूप में सामने आए, जिनके लिए छापेखानों की लोकप्रियता भी एक हद तक जिम्मेदार है. ऐसे किस्से-कहानियों के कहने-सुनने का चाव यहां के लोगों में बहुत पहले से था, चाहे वे सामन्तों के दरबार और उनमें पलने वाले किस्सागो रहे हों अथवा गांवों में अलावों को घेर कर बैठने वाले दिनभर के थके-मांदे ग्रामीण किसान मजदूर या बच्चों को सुलाने के लिए कहानी कहने वाली बुढ़िया दादी रही हो. सभी लोगों में इनके प्रति आकर्षण था जिसे उत्तर मध्यकालीन हिन्दी कविता ग्रहण नहीं कर पायी थी और समानान्तर लोकजीवन में किसी-न-किसी प्रकार जीवित रह बराबर लोकप्रिय रहे. उपयुक्त अवसर पाकर यही प्रवृत्ति पुनः आरम्भिक हिन्दी उपन्यासों में उजागर हुई और आगे चल कर इसने समूचे हिन्दी साहित्य पर अपनी वरीयता की मुहर लगा दी. इस प्रकार यह सब कुछ कच्चा माल था, जिसको शक्ल देना बाकी था और उसे मु० प्रेमचन्द जी ने ही स्वरूप प्रदान किया इसमें सन्देह नहीं. इतिहास के एक ऐसे बिन्दु पर आकर वे खड़े हैं कि पूर्ववर्ती उपन्यासों को अलग से देख पाने की ठोस जमीन मिलती है. अतः रुचियों का परिष्कार कर बिगड़े दिल पाठकों को गम्भीर विषय तक लाने और अव्यवस्थित हिन्दी उपन्यास-साहित्य को विषय एवं शिल्प की दृष्टि से साहित्यिकता प्रदान करने की एक बहुत बड़ी चुनौती मु० प्रेमचन्द के सम्मुख थी, जिसको उन्होंने स्वीकार किया. इतिहास साक्षी है, मु० प्रेमचन्द ने हिन्दी में वास्तविक हिन्दी उपन्यास साहित्य का प्रणयन एवं विकास किया.

देशवासियों में स्वतंत्रता प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा जग चुकी थी और उसके लिए असफल प्रयत्न भी किए जा चुके थे. सन् १८५७ ई० की क्रान्ति कम महत्त्वपूर्ण नहीं थी, पर वह असफल रही. असफलता का मुख्य कारण था पूरे देश के नागरिकों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की साझेदारी का न होना क्योंकि वह क्रान्ति राजे-महाराजे तक सीमित रह गयी. इतिहास साक्षी है. थोड़े से आक्रमणकारियों ने जब कभी दिल्ली पर कब्जा कर लिया, तो समूचे देश ने उन्हें अपना भाग्यविधाता स्वीकार कर लिया है. उसने कभी भी राष्ट्रीय समस्याओं के साथ जुड़ने का नाम नहीं लिया और न तो शासक वर्ग की ओर से उन्हें जोड़ने का प्रयत्न ही किया गया. सन् १८५७ ई० की क्रान्ति उसी की अगली कड़ी बन कर रह गयी. राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व करने वाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का भी आरम्भ में यही फल रहा. वह भी थोड़े से चुने-चुनाये पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित रही और तब तक स्वरूप नहीं ग्रहण कर सकी जब तक कि सर्व साधारण से उसे जोड़ा नहीं गया. जोड़ने का यह कार्य महात्मा गांधी के द्वारा सम्भव हुआ और उन्होंने उस सम्पूर्ण भारतीय सामाजिक चेतना के परिवर्तन की आवश्यकता को पहचाना जिसके अभाव में राष्ट्रीय आन्दोलन में सर्वसाधारण की साझेदारी सम्भव नहीं थी. परिणाम यह हुआ कि सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक सभी स्तरों पर सुधारवादी परिवर्तनों के महत्त्व को स्वीकारा गया और आन्दोलन की गति तेज हुई. इस प्रकार व्यापक परिप्रेक्ष्य में सभी प्रकार के आन्दोलनों को राष्ट्रीय आन्दोलन की संज्ञा मिली. इस दृष्टि से यदि हम देखें तो मुं० प्रेमचन्द के उपन्यासों में दो विश्व महायुद्धों के बीच चलने वाले राष्ट्रीय आन्दोलन की गतिविधियों की झांकी मिल जायगी. दलित, पीड़ित, दुर्बल एवं उपेक्षित नागरिकों में आत्म-विश्वास उत्पन्न कराने का कार्य यथा समय राष्ट्रीय आन्दोलन के क्रम में जिस प्रकार और जिस ऐतिहासिक क्रम से हुआ है, प्रेमचन्द के उपन्यासों की घटनाओं, पात्रों एवं प्रतिपाद्यों में हमें वही क्रम मिल जायगा. कहना असंगत न होगा कि हिन्दी भाषा-भाषी जनता में सम्पूर्ण सामाजिक चेतना के उदय एवं विकास का कार्य मुख्यतः प्रेमचन्द के उपन्यासों के माध्यम से हुआ और यही क्षेत्र आगे चल कर राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र बिन्दु बना. पुलिस के आतंक से भयभीत न होने, कारागार की भयंकरता से न डरने, लाठी-डण्डा और गोली तक खा लेने की क्षमता अर्जित करने की स्थिति तक प्रेमचन्द के उपन्यासों ने जन-मानस को पहुँचाया. अतः उनके उपन्यासों में राष्ट्रीय आन्दोलन की सही सीधी-टेढ़ी रेखाएँ देखी जा सकती हैं, इस प्रकार प्रेमचन्द के उपन्यासों के विषय में ही नहीं बल्कि शिल्प में भी समयानुसार यथा क्रम विकास अथवा परिवर्तन हुआ है. 'सेवा सदन' के एकहरे कथानक से लेकर 'गोदान' के दोहरे कथानक तक शिल्प परिवर्तन की यह प्रक्रिया चलती रही है जिसे विषय एवं तत्कालीन परिस्थितियों को सामने रख कर मूल्यांकित किया जा सकता है.

साहित्य को सामन्ती कटघरे से निकाल कर प्रेमचन्द ने उसे जनता का विषय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी कथा साहित्य
में
रचनाओं का
एक
विपुल संसार
निर्मित करने वाले
शीर्ष कथा शिल्पी
स्व० प्रेमचन्द
को
उनकी जन्मशती के
अवसर पर
शत शत बार
प्रणाम है

श्री कृष्णचन्द्र बेरी
हिन्दी प्रचारक संस्थान
पिशाचमोचन, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनाया. उन्होंने साहित्य के सिंहासन से देवी देवताओं तथा सम्राट एवं साम्राज्ञियों को उतार कर समाज में पतित कही जाने वाली बहनों, भिखारियों, किसानों एवं साधारण कामगर स्त्रियों को प्रतिष्ठित किया. शहर गाँव की ओर बढ़े और गावों ने शहरों का स्वागत किया. इस प्रकार समूचा राष्ट्र चट्टान की भाँति स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए खड़ा हो गया और परिणामस्वरूप हमें स्वतंत्रता मिली. यदि हम ध्यानपूर्वक देखें तो स्पष्ट हो जायगा कि विषय चयन के अनुरूप ही प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों का शिल्प भी निर्मित किया है. इनके महत्त्वपूर्ण प्रमुख उपन्यासों को सुधारवादी सामाजिक, राजनैतिक तथा समस्या प्रधान चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है. 'सेवासदन' सुधारवादी, 'निर्मला' सामाजिक कुरीतियों के चित्रण, 'कर्मभूमि' एवं 'रंगभूमि' राजनैतिक स्थिति और 'गबन' तथा 'गोदान' क्रम से मध्यवर्गीय आर्थिक समस्या और महाजनी सभ्यता की शोषण कृति को केन्द्र में रख कर लिखे गये हैं. शीर्षकों के चुनाव तक में हमें प्रेमचन्द की प्रासंगिक शिल्प दृष्टि का परिचय मिलता है. वेश्या समस्या के समाधान के लिए 'सेवासदन', सामाजिक कुरीतियों की शिकार चरित्र रचना के लिए लिए 'निर्मला', राष्ट्रीय संघर्ष में उतरने के लिए 'कर्मभूमि' और 'रंगभूमि' से अधिक उपयुक्त शीर्षक और क्या हो सकते हैं. आर्थिक प्रश्नों को लेकर लिखे जाने वाले उपन्यासों से आश्रम, व्यक्ति परक नाम और क्षेत्र गायब हो गये. उनके स्थान पर 'गबन' और 'गोदान' जैसे शीर्षकों को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया जो आर्थिक विषमता और उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समाहित करते हैं. इस प्रकार प्रेमचन्द एक सचेतन कलाकार थे और उन्होंने अपने उपन्यासों में विषय और शिल्प का संतुलन बराबर बनाए रखा है. उपन्यासों के आकार-प्रकार और कथाओं की बुनावट भी प्रेमचन्द की इस प्रवृत्ति के कारण प्रभावित हुई है. सुधारवादी उपन्यास 'सेवासदन' एक समस्या के ईर्द-गिर्द घूमने के कारण अपनी कथात्मक एकता बनाए रखता है और चरित्र प्रधान उपन्यास 'निर्मला' की सभी घटनाएँ पात्र विशेष से ही जुड़ी रहने के कारण बिखरने से बच जाती हैं. कर्मभूमि और रंगभूमि में सुखान्त लाना कठिन था क्योंकि राष्ट्रीय आन्दोलन को उनमें मुख्य रूप से विषय बनाया गया जिसका फैलाव अत्यधिक हो गया था. हिन्दू-मुस्लिम समस्या के समावेश और मध्य वर्गीय आर्थिक समस्या को महत्व देने के कारण 'गबन' में स्थान और कालगत फैलाव तो आया पर कथा की बुनावट के बन्द ढीले नहीं होने पाये जो 'गोदान' में आकर शिथिल हो गये. शहर और गांव को समानांतर रखने के कारण 'गोदान' दोहरे कथानक का शिकार हुआ जो उसकी दुर्बलता भी है और शिल्पगत उपलब्धि भी. इसी प्रकार यदि हम चाहें तो सभी औपन्यासिक तत्त्वों को सामने रख कर प्रेमचन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के उपन्यासों की इस विकास परम्परा को स्पष्ट कर सकते हैं.

औपन्यासिक पात्रों को स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करने का सर्वप्रथम कार्य प्रेमचन्द के उपन्यासों के माध्यम से हुआ. वे उपन्यासकार के हाथों की कठपुतली न होकर समस्याओं एवं परिस्थितियों के बीच स्वतंत्र आचरण करते जान पड़ते हैं. इस प्रकार उनके उपन्यासों में ग्रामीण भारत अपनी धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, साम्प्रदायिक, राजनैतिक एवं आर्थिक विषमताओं के साथ उभर कर सामने आया है. सत के प्रति श्रद्धा और असत् के प्रति घृणा भाव उत्पन्न करने की दृष्टि प्रेमचन्द के उपन्यासों में सर्वत्र विद्यमान है. उन्होंने अपने ग्रामीण पात्रों को जो मानवीय मूल्य प्रदान किए, आगे चलकर उन्हीं मूल्यों के द्वारा नवीन भारत की कल्पना को साकार करने में सहायता मिली. इस प्रकार सामयिक समस्याओं से जुड़े रहने के कारण प्रेमचन्द के उपन्यासों के कुछ प्रसंग भले ही अपनी प्रसांगिकता समाप्त कर चुके हों, पर उनके द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण और मूल्यों की अर्थवत्ता अभी तब तक समाप्त नहीं हो सकती जब तक कि स्वतंत्रता संग्राम के सेनानियों के सपनों के भारत का वास्तविक निर्माण नहीं हो जाता.

किसी भी साहित्यकार अथवा उसके साहित्य की प्रासंगिकता का निर्णायक काल होता है. प्रेमचन्द साहित्य अपनी प्रासंगिकता अथवा सार्थकता और लोकप्रियता खोकर आज केवल पाठ्यक्रमीय महत्ता और उपयोगिता ही नहीं रखता, इसका प्रमाण आज भी शेष प्रेमचन्द साहित्य की लोकप्रियता है. हिन्दी कथाकारों में प्रेमचन्द सामान्य पाठक, सभी श्रेणी के छात्रों, शोधार्थियों एवं देश-विदेश में हिन्दी के प्रति रुचि रखने वाले अध्येताओं में आज भी अपेक्षाकृत अधिक लोकप्रिय हैं. यह दूसरी बात है कि उनका समूचा कथासाहित्य आज उतना सार्थक नहीं रह गया है जितना कि वह पहले था. युग के साथ चलने वाले प्रत्येक साहित्यकार के साहित्य के साथ ऐसा ही होता है. प्रेमचन्द जी ने अपनी रचनाएँ युग के साथ कीं और वे अपने को निरंतर नये संदर्भों के साथ जोड़ते रहे. उनके रचनाकाल में भारतीय जीवन अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा था क्योंकि सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों की गति बड़ी तेज थी. समग्र भारतीय जीवन को नव निर्माण की ओर ले चलने का जो उनका संकल्प था, उसके लिए वे सामयिक विषमताओं एवं कुरीतियों को सामने रखते हुए अपने कथा साहित्य में विकल्प की तलाश में लगे रहे. समय के साथ जो कुछ पीछे छूट जाता है, वह वर्तमान सन्दर्भ में निरर्थक एवं अप्रासंगिक होता है और जो अगली पीढ़ी के लिए बच रहता है, वह नया और सार्थक होता है. प्रेमचन्द की अधिकांश सामाजिक कहानियां तथा सेवा सदन और रंगभूमि,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर्मभूमि, निर्मला और गबन जैसे उपन्यास जो पहले अत्यन्त लोकप्रिय एवं सार्थक थे निश्चित रूप से उनकी अब पाठ्यक्रमत्वमहत्ता रह गई है क्योंकि समय के साथ वे अब पीछे छूट गई हैं. पर 'पूस की रात', और 'कफन' जैसी कहानियाँ तथा 'गोदान' जैसा उपन्यास प्रतिपाद्य के धरातल पर आज की पीढ़ी के लिए भी प्रासंगिक एवं सार्थक है. अतः वह पुराना नहीं, नया है.

प्रत्येक युग का साहित्यकार समसामयिक परिस्थितियों से प्रभावित होता है और कथाकार प्रेमचन्द भी प्रभावित हुए थे. समसामयिक जीवन की जटिलताओं एवं परिस्थितियों को जाग्रत करने के कारण वे अपने रचनाकाल में पूर्णतः आधुनिक थे. उनकी वे कृतियाँ जो पूर्णतः जीवन की जटिलताओं और सामयिक परिस्थितियों को चित्रित करने के लिए अस्तित्व में आई. वे इसलिए अल्पजीवी रहीं कि वे सामयिक बोध पर आधारित थीं. सामयिक बोध, युग-बोध की अपेक्षा अल्पजीवी होता है. समस्याओं की समाप्ति के साथ वह अपनी अर्थवत्ता समाप्त कर देता है पर चेतना पर बल देने के कारण युगबोध युग के समग्रतः पकड़ने की शक्ति रखने के कारण एक लम्बे अर्से तक अपनी प्रासंगिकता बनाए रखता है. राष्ट्रीय आन्दोलन काल में लिखी प्रेमचन्द की प्रचारवादी तथा सुधारवादी संस्थाओं के उद्देश्यों को उद्घोषित करने वाली रचनाएं सामयिक बोध के अन्तर्गत ही आती हैं जिनकी लोकप्रियता समाप्त हो गई है. पर रचनाएं जो युगीन-चेतना एवं युगीन मानव मूल्यों के साथ जुड़ी रहकर उनका मूल्यांकन प्रस्तुत करती हैं, युगबोध के अन्तर्गत आती है और आज भी लोकप्रिय है, 'पूस की रात' की मानसिकता, 'कफन' का आर्थिक परिवेश और 'गोदान' की करुणा अब पुरानी नहीं पड़ पायी है, उसमें आज भी ताजगी है जिससे वह प्रासंगिक है. प्रेमचन्द साहित्य की अगली पीढ़ी को यही देन है जो उन्हें आज भी प्रासंगिकता प्रदान करने में सक्षम है.

प्रेमचन्द इस अर्थ में प्रगतिवादी लेखक थे कि वे पारम्परित साहित्य के जड़ीभूत सिद्धान्तों में विश्वास नहीं रखते थे. वे मूलतः मानवतावादी लेखक थे जिससे उन्होंने अपने साहित्य में परम्परा से स्वीकृत विषयों एवं व्यक्तियों की उपेक्षा कर उपेक्षित विषयों एवं व्यक्तियों को प्रतिष्ठित किया और दूषित व्यवस्था के कारण शोषित एवं प्रताड़ित नर-नारी के हितों की वकालत की.

प्रेमचन्द अपनी मानवतावादी कल्पना को साकार देखना चाहते थे और देवत्व को किसी व्यक्ति विशेष की धरोहर न मानने के कारण वे उसकी तलाश सामाजिक प्राणी में करने को तत्पर थे. यही कारण है कि यथार्थ और आदर्श चित्र समान रूप से उनकी अधिकांश कृतियों में मिल जाते हैं. वे देवत्व की कल्पना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपनी लेखनी
के द्वारा
राष्ट्र के युवकों
में
चारित्रिक और
वैचारिक आधारशिला
को
निर्मित करने वाले
युगस्रष्टा
स्व० प्रेमचन्द की
स्मृति को
शत शत बार
नमन है

श्री जय कृष्ण जैन
इण्डियन वाच कम्पनी
चौक, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करते हैं और उसमें प्राण प्रतिष्ठा भी करना चाहते हैं. नीच, नराधम और पंकिल व्यक्ति को भी जब वे अनुकूल परिस्थितियों में डालकर उसके भीतर छिपे देवत्वका जयघोष करा बैठते हैं तो समीक्षकों को परेशानी हो जाती है कि वे उन के दर्शन को यथार्थवाद के अन्तर्गत रखें अथवा आदर्शवाद के अन्तर्गत. लोगों ने बीच का रास्ता निकाल कर उन्हें आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के अन्तर्गत रखा है. आदर्शोन्मुख यथार्थवाद शीर्षक पर अब कुछ लोगों को आपत्ति होने लगी है. यथार्थवाद उसी क्षण यथार्थ का स्वरूप खो देगा जिस क्षण वह आदर्श की ओर उन्मुख हो जाएगा. 'गोदान' को छोड़कर उनके प्रायः सभी उपन्यासों की यही स्थिति है कि उनका पूर्वार्द्ध तो यथार्थवादी है और उत्तरार्द्ध आदर्शवादी. अतः प्रेमचन्द न यथार्थवादी रह जाते हैं न तो आदर्शवादी. और वे रह भी कैसे सकते हैं, वे तो मूलतः मानवतावादी हैं, पर जब तक उनके साहित्य को लिए किसी स्वीकृत शब्दावली का प्रचलन समीक्षकों के बीच नहीं हो जाता जब तक उन्हें आदर्शोन्मुख यथार्थवादी मान लेने में कोई हर्ज नहीं है. इस शब्दावली को नया अर्थ देकर हम प्रेमचन्द साहित्य की प्रकृति के अनुरूप शब्दावली को संज्ञा दे सकते हैं. जहाँ तक आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के शाब्दिक अर्थ का प्रश्न है, वह प्रेमचन्द के साहित्य के सन्दर्भ में कोई मानी नहीं रखता. इसे विचार सारणी के रूप में ही स्वीकार करना उचित होगा.

हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास में प्रेमचन्द के आगमन के साथ पहली बार भारतीय जीवन की वास्तविकता को निकट से झाँक कर देखने का प्रयत्न किया गया. दीन, दुखी, दुर्बल, प्राचीन रूढ़ियों एवं परम्पराओं से जर्जरित तथा नवयुग के जन-जागरण से अपरिचित समाज ही भारत का वास्तविक समाज था जिसे प्रेमचन्द ने अपने कथा साहित्य में स्थान दे उसका यथार्थ चित्रण किया. यथार्थ को प्रस्तुत करने की प्रेमचन्द की अपनी दृष्टि थी. उन्होंने भारतीय जीवन तथा उसके दलित समाज को देखकर उसका यथा-तथ्य चित्रण मात्र नहीं कर दिया, बल्कि इस हीन स्थिति के लिए जिम्मेदार मूल कारणों को जानने के लिए गम्भीर चिन्तन को भी उन्होंने अपनी कृतियों में स्थान दिया है. कथा साहित्य के माध्यम से वे मानव समाज के सामने एक ऐसा हल प्रस्तुत करने के लिए निरन्तर संघर्षशील रहे जिससे कि समाज दम घुटने वाले वातावरण से किसी प्रकार हट कर पवित्र स्वच्छ वायु में स्वांस ले सके. वे जीवन को उसके रूप में केवल देखना ही नहीं चाहते थे, बल्कि जीवन का एक सुनिश्चित रूप उनकी आँखों के सामने नाचता रहता था, जिस आदर्श रूप तक वर्तमान समाज को पहुँचा देने की प्रेरणा अपने कथा साहित्य द्वारा वे प्रदान करना चाहते थे. प्रेमचन्द की दृष्टि महलों की ओर न जाकर सबसे पहले झोपड़ियों की ओर गयी. उन्होंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूटी-फूटी और झोपड़ियों में पुवालों पर पड़ी तड़पती भारतीय आत्माएं देखीं. फटे चिथड़ों में सरल और स्वाभाविक यौवन के सौष्ठव का अनुभव किया और दरिद्रता की चक्की में पिसने वाले दीन-जनों में भी मुहलों-सी प्रेम की पीर पाई. प्रेमचंद ने अपने जीवन से एक दीक्षा ली थी, जो उनके कथासाहित्य में सचित्र उभर आयी है. सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक और नैतिक विषमताओं की मार को उनका सहिष्णु हृदय सह नहीं पाया और वह आकुल होकर सहानुभूति के स्वर में बोल उठा जिससे तत्कालीन जीवन और युग का यथार्थ चित्र उनकी रचनाओं में उतर आया है. मानवता के पक्के हिमायती होते हुए भी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में मानव की स्वाभाविक दुर्बलताओं को खुलकर चित्रित किया है पर इतना अवश्य था कि वे मानवता की विजय की कामना करने वाले महापुरुषों में से एक थे. इसीलिए समाज के किसी वर्ग के प्रति उनके मन में न तो घृणा थी और न वे किसी वर्ग के विनाश के लिए आन्दोलन करना चाहते थे, बल्कि वे सब में सुधार लाने के पक्ष में थे. यहीं जाकर प्रेमचन्द समाजवादी यथार्थ के सीमित कटघरे से निकलकर अलग खड़े हो जाते हैं. समाजवादी यथार्थवाद की यदि उदार व्याख्या की जाय तो हम यह कह सकते हैं कि प्रेमचन्द का झुकाव समाजवादी यथार्थवाद की ओर था, पर यदि उसके रूढ़ स्वरूप को स्वीकार किया जाय जिसके अनुसार साहित्य को मार्क्सवादी संकेतों पर चलने के लिए विवश होना पड़े तो प्रेमचंद समाजवादी यथार्थवाद से बिलकुल दूर थे. इस वाद के मूल में यदि जीवन को गतिशील रूप में चित्रित करने की अभिलाषा निहित है तो प्रेमचंद के कथा साहित्य में इसके स्पष्ट संकेत मिल जायेंगे. यदि इसके अनुसार सामाजिक विषमताओं के मूल कारणों की पहचान कर उन्हें विनष्ट करने का प्रतिक्रियात्मक हल आवश्यक है, तो यह प्रेमचन्द के साहित्य की प्रकृति के प्रतिकूल है. प्रेमचन्द निम्न वर्ग की भयंकर यातनाओं से भरी स्थितियों का चित्रण तो करते हैं तथा उनकी दयनीय बस्तियों, उनकी क्षुधातुरता और उनकी कष्टगाथाओं का ओ चित्र उरेहते हैं, पर इतने से ही उन्हें समाजवादी यथार्थवाद के घेरे में नहीं गिना जा सकता. लखनऊ में हुए सन् १९३६ ई० में प्रगतिशील लेखक संघ के अध्यक्ष-रूप में वे इस विचारधारा के स्पष्टतः निकट आए पर इस समय तक उनकी अधिकांश रचनाएँ सामने आ चुकी थीं और वे एक प्रकार से जीवन के करार पर खड़े थे. इसके बाद यदि उन्हें आगे लम्बा जीवन मिला होता तो सम्भव था कि वे समाजवादी यथार्थवाद को अपने कथा साहित्य में अपनाते जिसके संकेत 'कफन' जैसी कहानी में मिलते भी हैं. अतः उनमें मार्क्सवादी दुराग्रह से मुक्त समाजवादी यथार्थवाद के संकेत मिलते हैं.

प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य का निर्माण न तो केवल मनोरंजन के लिए किया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था और न तो मात्र व्यावसायिक बुद्धि से. वे सरकारी नौकरी छोड़ने का साह
दिखला चुके थे और कम से कम खर्च में जीवन यापन करने का अभ्यास कर चुके
सामान्य आर्थिक स्तर के व्यक्ति के लिए ऐसा त्याग तभी सम्भव होता है जब उस
पीछे कोई न कोई महान संकल्प होता है. संकल्प ही रचनाकार की रचनात्मक दृ
का निर्माण करता है. जिस लेखक का संकल्प जितना महान होता है,उसकी रचना
दृष्टि भी उतनी ही उर्वर एवं पैनी होती है. प्रेमचन्द थके, हारे शोषित एवं उपे
मानवता के वकील थे. उनके अनुभव का क्षेत्र विशाल था और वे ऐसे युग में लि
रहे थे जबकि देश में आन्दोलन की दिशा बहुमुखी थी. अतः यह स्वाभाविक था
उनकी लेखकीय प्रतिबद्धता के आयाम भी त्रिविध हों जिनका निर्धारण गृहीत लि
के आधार पर ही किया जा सकता है. सुधारवादी आन्दोलनों में वे आर्य समाज
सर्वाधिक प्रभावित थे जिससे अपने आरम्भिक उपन्यासों और कहानियों में उन्हों
हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों का भण्डाफोड़ किया है. ऐसी कुरीतियों के माध्यम
वे पाठकों को वास्तविक स्थिति से परिचित कराना चाहते थे और साथ ही वे
ऐसे विकल्प की ओर इशारा भी करना चाहते थे जिस पर चलकर समाज स्वस्थ
तेजस्वी बन सके. सेवासदन, निर्मला और गबन उपन्यास को इसके लिए देखा
सकता है. महात्मा गांधी के नेतृत्व में चल रहे स्वाधीनता संग्राम के प्रति प्रेम
पूर्ण आस्थावान थे. उन्होंने गांधी द्वारा चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन में
भाग भी लिया था. सरकारी नौकरी भी छोड़ दी थी और अपने कथा साहित्य
धरातल पर तो बराबर गांधीवादी आदर्शों की प्रतिष्ठा एक लम्बे लेखन-काल
करते रहे. प्रेमाश्रम, कर्मभूमि और रंगभूमि जैसी उनकी कृतियों को उदाहरण
लिए सामने रखा जा सकता है. 'रंगभूमि' का नायक सूरदास तो गांधीवादी सिद्ध
का सच्चा प्रतिनिधि है. ऐसा अकिंचन योद्धा और धीरोदात्त नायक समस्त हि
उपन्यास साहित्य में भी दुर्लभ है. एक लम्बी कालावधि तक प्रेमचन्द की जो
नैतिक मान्यताएँ रहीं, उसका प्रतिफलन 'सूरदास' के रूप में हुआ है. यदि आप
तो कह सकते हैं कि उस काल की यही उसकी राजनैतिक प्रतिबद्धता थी. बाद
दिनों में वे प्रगतिवादी आन्दोलन के समर्थक बने. यद्यपि उनका यह समर्थन अपने
का था, पर सर्वहारा वर्ग की आर्थिक कठिनाइयों एवं उसके शोषण के मूल कारणों
ओर उनका ध्यान गया. उनका सर्वहारा मिलों में कार्य करने वाला मजदूर
बल्कि खेतों में मशक्कत करने वाला किसान और बेगार करने वाला अथवा अ
बदले में मामूली मजदूरी पाने वाला मजदूर था. अपनी प्रसिद्ध कहानी "पूस की
उपन्यास 'गोदान' और 'कफन' में इन्हीं प्रश्नों को प्रेमचंद ने उठाया है. 'पूस
रात' का हलकू किसान कहलाने के गौरव का त्याग करके मजदूर ही बने रहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्णय कर लेता है. 'गोदान' का हीरो जीवन भर लोगों के तलवे सहला कर भी किसान नहीं रह पाता और मजदूर बन कर मरता है तथा 'कफन' की बुधिया की मृत्यु के साथ ही साथ घीसू और माधव कुछ करने का निर्णय लेते हैं. वे न तो किसान बनना चाहते हैं और न तो मजदूरी करने में ही उनकी किसी प्रकार की आस्था है.वे गांठबांध बैठे हैं कि वर्तमान व्यवस्था में जीवन के लिए सभी प्रयत्न बेकार हैं और जिन्दगी को यों ही किसी अज्ञात के हवाले कर देना ही बेहतर है. इस प्रकार सामयिक परिवर्तनों के क्रम में प्रेमचंद के कथा साहित्य में स्पष्ट परिवर्तन हुए हैं जिससे उनकी प्रतिबद्धता के लिए हमें उनके संकल्पों तक पहुँचना होगा जिसके कई स्तर हैं.

इतिहास-दर्शन और दृष्टि की अपेक्षा प्रेमचन्द साहित्य में समसामयिकता अधिक थी इसमें सन्देह नहीं. यही कारण है कि उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य में चाहे वे उपन्यास हों अथवा कहानियाँ, सामाजिक चेतना को प्रस्तुत करने का आग्रह मिलता है. प्रेमचन्द के भोगे हुए जीवन का आधार-फलक विस्तृत होने के कारण और युगीन चेतना को उसकी समग्रता में पकड़ने के कारण प्रेमचन्द के उपन्यास कला की दृष्टि से चुस्त नहीं बन पाये हैं जबकि कहानियों में विषय एवं शिल्पगत वैविध्य भी आ पाया है और वे कलात्मकता की दृष्टि से भी अपेक्षाकृत अच्छी बन पड़ी हैं. यदि कहना ही है तो मुंशी प्रेमचन्द को उपन्यास सम्राट न कहकर कहानी सम्राट कहना चाहिए.

ग्रामीण जीवन की भूमि प्रेमचन्द को प्यारी थी जिसके प्रति उनकी अटूट आस्था थी और उसके चित्रण में ही उनके कथा साहित्य का अधिकांश भाग समाप्त हुआ है. नगर-जीवन से स्वयं जुड़े रहते हुए भी उनके प्रति वे बहुत आस्थावान नहीं थे जबकि अधिकांश उपन्यासों में नागरिक जीवन उनके वस्तु शिल्प और चरित्र प्रतिपादन में सहायक हुआ है. उसे सामने रखकर वे ग्रामीण जीवन का सौन्दर्य और उसकी महत्ता प्रतिपादित करना चाहते थे. उनके इस मोह ने 'गोदान' के शिल्प को अत्यन्त शिथिल एवं अकलात्मक बना दिया है. 'गोदान' का जनपदीय जीवन उसके नगर-जीवन से अपेक्षाकृत अधिक जीवन्त है. जनपदीय समस्याओं को उखाड़ कर तो वे सामने रख सके हैं, पर उस समय तक उनकी मानसिक स्थिति ऐसी नहीं बन पायी थी कि उनमें जनवादी भावनाओं का आरोप करते. वे मात्र उसके लिए भूमि तैयार कर रहे थे अतः उनका ऐतिहासिक महत्व है.

इस प्रकार कथाकार प्रेमचंद का जितना कुछ अप्रासंगिक है, वह इतिहास का विषय है और जितना कुछ प्रासंगिक एवं लोकप्रिय है. वह पुराना नहीं, नया है. इस प्रकार उपन्यासकार प्रेमचन्द की कथा यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा है जिसमें हिन्दी उपन्यास के इतिहास की दिशाएँ स्पष्ट दीखती है और तत्कालीन भारतीय इतिहास की झलक मिलती है. ■■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द : कुछ संस्मरण

●

जगन्नारायणदेव शर्मा 'पुष्कर'

सन् १९१० में मालवीय जी के ओजस्वी भाषण से प्रेरित होकर मैंने आजीवन हिन्दी की सेवा का व्रत लिया. इसके पूर्व ही मेरे किशोर मानस में हिन्दी साहित्य की अन्यान्य पुस्तकों के पढ़ने की उत्कण्ठा जग पड़ी थी. मात्र अपनी इस ज्ञानपिपासा की संतुष्टि के लिए मैं काशी नागरी प्रचारिणी सभा (आर्य भाषा पुस्तकालय) आया करता था.

सन् १९१५ में मैंने सरस्वती में सबसे पहले प्रेमचंद की 'सौत' नामक कहानी पढ़ी. उस कहानी का मेरे मन पर बहुत असर हुआ. उनकी भाषा शैली ने मेरे अन्तःकरण को छू लिया. मैं अनायास उनके दर्शन के लिए उत्कण्ठित हो उठा क्योंकि साहित्यकारों का दर्शन और साहचर्यलाभ मेरी साहित्य सर्जना का मूल मंत्र बन चुका था. पर यह सम्भव न हो सका क्योंकि उन दिनों प्रेमचंद जी सुदूर कहीं लखनऊ या इलाहाबाद रहते थे. ऐसा मुझे पता लगा. फलतः मुझे मन मार बैठना पड़ा.

इसके बाद मैंने 'इन्दु' 'मर्यादा' जैसी पत्रिकाओं में प्रेमचंद जी की अनेक कहानियाँ पढ़ीं. उनकी कथा शैली का मेरे मन पर प्रभाव बढ़ता ही गया. सन् १९२०-२१ में जब मैं माहेश्वरी पुस्तकालय ४ शोभाराम स्ट्रीट कलकत्ता का पुस्तकालयाध्यक्ष था. तब मुझे प्रेमचंद की नव प्रकाशित कहानी संग्रह और उपन्यास पढ़ने का अवसर मिला. उस समय उन उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद जी द्वारा भारतीय ग्रामवासियों के दुःखदर्द की सच्ची कहानी इतनी प्रभावपूर्ण बन पड़ी कि एक बार उस सफल उपन्यासकार एवं युग द्रष्टा के दर्शन को मन उमड़ पड़ा. पर कलकत्ता और वाराणसी के बीच की दूरी दुःसाध्य थी.

सन् १९२७-२८ में जब मैं 'राम' सचित्र मासिक का सम्पादक था जो राममण्डल ढिगवसकोठी गुरुधाम कालोनी दुर्गाकुण्ड से प्रकाशित होता था. इसकी मुद्रण व्यवस्था मुझे बाबू बजरंगबली गुप्त के सीताराम प्रेस विश्वेश्वर गंज से करानी पड़ती थी मुझे भी उस समय इस सम्पादन के लिए दुर्गाकुण्ड और विश्वेश्वर गंज एक करना द्रविण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्राणायाम लगता था किन्तु लाचारी थी.

सन् १९२८ में जब मैं 'राम' के होलिकांक को समेटे अपने घर से प्रेस जा रहा था. मार्ग में मेरे मित्र विनोदशंकर व्यास मिले. उन्होंने बताया इस पत्र की मुद्रण व्यवस्था आप प्रेमचंद जी के सरस्वती प्रेस मध्यमेश्वर से कराएं तो अति उत्तम होगा. मैंने तुरंत अपने मित्रवर की मंत्रणा मान ली और उनके साथ दूसरे दिन ही प्रेमचंद जी के दर्शन का निश्चय कर लिया.

मैं तो अवसर की प्रतीक्षा में था कि कैसे उस महान युग स्रष्टा कथा शिल्पी के दर्शन पाऊं. अपने मित्र के साथ उच्च भाव-तरंगों में डूबता-उतराता मैं कितनी जल्दी मध्यमेश्वर में सरस्वती प्रेस पहुँचा मुझे पता न लगा. प्रेस के अन्दर प्रवेश करते ही मैंने सामने के कमरे में सामने टेबुल पर रक्खे कागजों में खोये महापुरुष को देखा वस्त्र खादी के धुले झुर्रियाँ पड़ा मुखमण्डल घनी मूछें गम्भीरता की प्रतिमूर्ति.

हमारे प्रविष्ट होते ही वे अपनी कुर्सी से उठे. स्वागत अभिवादन की मुद्रा में उनके हाथ जुटे और बोले—'आइये व्यास जी कैसे चले'.

अब हम उनके कमरे में थे, अपूर्व सादगी थी. वहाँ लगता था कि अभी-अभी आप आये थे. कागजों के ढेर टेबुल पर लगे थे. बड़ी सौम्यता विनम्रता भरी वाणी फूट रही थी. मेरा मानस अन्तःतृप्त था. व्यास जी से कुशलवार्ता के बाद प्रेमचंद जी ने पूछा.

—और आपका परिचय....

व्यास जी मुस्कुराते बोले—

—ये आपके ग्राहक हैं.

अब मुझसे न रहा गया मैंने तुरंत व्यास जी की गलती सुधारी

—मैं ग्राहक नहीं गुणग्राहक अवश्य हूँ. मैंने जब से सरस्वती में आपकी 'सौत' कहानी पढ़ी सन् '१५ से मैं आपकी प्रतिभा से प्रभावित हूँ. अब तक आपकी अनेक कहानियाँ, उपन्यास पढ़ चुका हूं, एक अमिट प्रभाव मेरे मन पर पड़ चुका है. अनेक बार आपसे मिलने की उत्कण्ठा हुई पर कोई ऐसा सुअवसर न मिल सका.

मेरी वाणी मुखर थी. आप हाथ जोड़े सिर झुकाये विनम्रता की प्रतिमूर्ति बने रहे. यह थी उनकी गुण ग्राहकता, शालीनता और अहंकार रहित सरल विनम्र स्वभाव.

बाद में एक-एक कर उनके प्रेस के दोनों सहायक आये. प्रूफ रीडर गुरुराम जी विशारद ने आते ही कहा कवि पुष्कर जी प्रणाम!

पूछने पर उन्होंने बताया—कवि पुष्कर जी मेरे गुरु हैं जिनकी कृपा से मैं विशारद कर सका.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उनके प्रबन्धक प्रवासीलाल मालवीय आये, उन्होंने कहा—कवि पुष्कर को प्रणाम, आप आज इधर कैसे.

प्रेमचन्द जी के पूछने पर उन्होंने बताया—

—भला कवि पुष्कर जी को कौन नहीं जानता, आप प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार हैं।

कुछ ही देर न बीता था कि प्रसाद जी भी आते दिखाई पड़े, उन्होंने दूर से ही कहा—

रामजी ! महराज !! प्रणाम !!!

मैंने तपाक से उत्तर दिया.

साव जी ! महराज ! आशीर्वाद !!!

उन्होंने पूछा आपसे इनका कैसे परिचय ? प्रसाद जी ने कहा—आप 'राम' हैं सर्वव्यापक, भला आपको कौन नहीं जानता.

मैं भी बोल उठा—और आप हमारे साव जी हैं, सुंघनी साव के वंश उजागर आपका यश सुंघनी की सुगन्धि से देश का कोना-कोना महक उठा है.

एक अपूर्व ठहाका लगा. व्यास जी, प्रसाद जी खिलखिला उठे. मैं गम्भीर बना प्रेमचन्द जी के गम्भीर मुखमण्डल पर हास्य रेखा खेल गई. मुस्कराहट फूट पड़ी।

किसानों
और
मजदूरों के
मसीहा
स्व० प्रेमचन्द को
प्रणाम
•

श्री अनिल कुमार
मेसर्स बदल राम लक्ष्मी नारायण
कोदई चौकी, वाराणसी के सौजन्य से.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पंजाब यूनिवर्सिटी

कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

पुस्तक का नाम	लेखक का नाम	मूल्य
१. रीतिकालीन हिन्दी-साहित्य में उल्लिखित वस्त्राभरणों का अध्ययन	डॉ० लल्लन राय	५०-००
२. मध्यकालीन बोध का स्वरूप	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	१०-००
३. आधुनिकता के सन्दर्भ में आज का हिन्दी उपन्यास	डॉ० अतुलवीर अरोड़ा	३६-००
४. गोसटि गुरू मिहरिवानु (हरिजीकृत)	डॉ० गोविंदनाथ राजगुरु(सं०)	४०-००
५. गुरु प्रताप सूरज (संक्षिप्त)	डॉ० जय भगवान गोयल(सं०)	२५-००
६. गुरु शोभा	डॉ० जय भगवान गोयल (सं०)	५-४०
७. जंगनामा गुरुगोविंद सिंह	डॉ० जय भगवान गोयल (सं०)	२-००
८. गुरु गोविंद सिंह विचार और चिंतन	डॉ० जय भगवान गोयल (सं०)	२-४०
९. वीर कवि दशमेश	डॉ० जय भगवान गोयल (सं०)	१-८०
१०. भक्ति कल्पद्रुम	डॉ० नरेश (सं०)	१०-००
११. स्तवन मंजरी (चन्दूलालकृत)	डॉ० नरेश (सं०)	८-००

सम्पर्क— सेक्रेट्री

पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाब यूनिवर्सिटी

चण्डीगढ़--१६००१४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द के यथार्थवाद के कुछ आयाम

चन्द्रबली सिंह

हमारे देश के राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के तूफानी दौर में प्रेमचन्द के व्यक्तित्व एवं कृतियों का अभ्युदय हुआ और इसलिए उनकी रचनाओं में हम उस युग की दुर्बलताओं एवं शक्तियों के सभी रूपों को प्रतिबिम्बित पाते हैं. यद्यपि यह सत्य है कि उनके साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ एक सुधारवादी के रूप में हुआ, तथापि जैसे-जैसे हमारा राष्ट्रीय संघर्ष उग्र होता गया, वैसे-वैसे हमारी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं के सम्बन्ध में उनकी समझ गहरी होती गई. हमारे देश के राजनीतिक मंच पर जब से महात्मा गांधी का उदय हुआ, तब से राष्ट्रीय संघर्ष में एक नये दौर का प्रारम्भ होता है, अर्थात् तब से उसमें हमारे देश का समस्त जनता ने भाग लेना प्रारम्भ कर दिया. यद्यपि प्रेमचन्द बहुत लम्बे समय तक महात्मा गांधी के राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोणों से गहरे रूप में प्रभावित रहे, तथापि बाद की उनकी कृतियों में स्पष्टतः एवं निर्विवाद ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिनके आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारे राष्ट्रीय संघर्ष में सक्रिय विभिन्न शक्तियों एवं उनके परस्पर विरोधी और कभी न मिल सकने वाले स्वार्थों के बारे में उनकी धारणा और समझ धीरे-धीरे स्पष्ट होती गई है. हमारे मुक्ति आंदोलन के बुर्जुवा नेतृत्व से उनका मोह पूर्णरूपेण भंग हो गया था, क्योंकि वे यह अच्छी प्रकार जान गये थे कि बुर्जुवा नेतृत्व जन संघर्षों का उपयोग मात्र अपनी स्थिति को मजबूत बनाने में कर रहा था और उसके माध्यम से वह अपने राजनीतिक तथा आर्थिक स्वार्थों की पूर्ति और रक्षा कर रहा था. एक ऐसे समाज में, जिसमें मुट्ठी भर शोषक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने अभियानों या स्वार्थों पर थोड़ा भी आघात लगने पर जनता के विरुद्ध बिना किसी हिचकिचाहट के हिंसा और दमन का प्रयोग कर रहे हों, महात्मा गांधी के अहिंसा के सिद्धान्त तथा उसके साथ उनके मोहपूर्ण चिपकाव के प्रति प्रेमचन्द की आस्था भी डगमगाने लगी थी तथा उनकी बादवाली कृतियों में अहिंसा के प्रति उनका व्यामोह समाप्त प्राय हो गया था. प्राचीन भारतीय संस्कृति को अलंकृत या पुनर्जीवित करने की जो उनके मन में लगन थी, उसके व्यामोह से भी वे मुक्त हो गये थे एक समय था जब कि वे उदार मन तथा दानी राजाओं और व्यापारियों की खोज करने में लगे थे, किन्तु अपने जीवन के उत्तर काल में जीवन के प्रति इस मिथ्याधारित दृष्टिकोण के ऐसे सभी तत्वों को उखाड़ फेंकने में उन्हें तनिक भी हिचकिचाहट न थी. अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि प्रेमचन्द एक ऐसे लेखक की महान् बौद्धिक तथा रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो वास्तविकता की पकड़ में आने के लिए निरन्तर प्रयास करता रहा हो.

उनके दृष्टिकोण तथा उनकी तकनीक में जो क्रमिक सुधार हुआ है, निश्चित रूप से वह उनकी अन्तरात्मा में वास्तविकता के बोध की विकलता का प्रतिफल है. अपने प्रारम्भिक उपन्यासों तथा कहानियों में, जिनकी रचना उन्होंने सुधारवादी दृष्टिकोण से की थी, उन्होंने स्थापित समस्याओं के समाधानों को प्रस्तुत करने की चेष्टा की थी, लेकिन उनके वे सभी समाधान बिना किसी अपवाद के प्रकृति में काल्पनिक तथा कृत्रिम थे. स्वाभाविक है कि वे समाधान उनकी कृतियों में जीवन के वास्तविक चित्रण के सर्वथा प्रतिकूल दीखते हैं. लेकिन 'गोदान' जैसी उनकी बाद-वाली कृतियों में वे इस प्रकार की मनःसृष्ट कल्पनाओं एवं कृत्रिम समाधानों से पूर्णतः मुक्त हैं. उन्होंने इस बात की भी चिंता छोड़ दी थी कि समाधान न प्रस्तुत करने पर पाठक दयनीय एवं अवसादपूर्ण स्थिति में पड़ जाता है. उन्होंने जीवन को स्वयं सत्य स्थापित करने के लिए मुक्त कर दिया.

यह तथ्य अधिकार पूर्वक घोषित किया जाना चाहिये कि अपने दृष्टिकोण में अनेक अन्तर्द्वन्दों तथा कमियों के बावजूद प्रेमचन्द हमारे राष्ट्रीय संघर्ष के उस दारुण किन्तु आंदोलित युग के भारतीय जीवन के सफल एवं ईमानदार चित्रकार थे, उन्होंने सामन्तवादी-साम्राज्यवादी गठबन्धन के द्वारा हमारे किसानों के शोषण तथा दमन का निरीक्षण मात्र नहीं किया, प्रत्युत उस संघर्ष को भी प्रतिबिम्बित किया, जो हमारे समाज के गर्भ में विकसित हो रहा था. कभी-कभी उन्होंने इस संघर्ष की प्रकृति तथा उसके अर्थ को गलत समझा, लेकिन इस तथ्य के प्रति उनके मन में कोई शंका न थी कि बिना संघर्ष के मुक्ति असम्भव है. एक साहित्यकार तथा पत्रकार के रूप में उन्होंने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमर

कथाकार

स्व० प्रेमचन्द

की

स्मृति को

प्रणाम

•

श्री श्याम लाल

मेसर्स श्याम पोलेथिन

बड़ा गणेश, वाराणसी के सौजन्य से

स्वर्ण पदक

★ स्वर्ण-पदक विजेता ★

स्थापित १९६१

फोन : ५३८१७ / ५२५५१

किशोर ज़र्दा फैक्टरी

सूरज कुण्ड, वाराणसी

सुगन्ध साम्राज्य के लोकप्रिय ज़र्दा ज़ाफ़रानी पत्ती और पान मसालाके उत्कृष्ट निर्माण के लिए १९७८-७९ का ट्रान्सवर्ल्ड ट्रेड फेयर सेलेक्शन अवार्ड प्राप्त

किशोर ज़र्दा फैक्टरी, ५ स्टार, संस्थान : सूरज कुण्ड, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारत की उस शोषित तथा दलित जनता के भाग्य के साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर लिया था, जो विद्रोह के लिए कृत संकल्प थी. परिणाम-स्वरूप उनकी कृतियों में सैनिक क्रान्तिकारिता का दर्शन होता है. उन्होंने साम्राज्यवादियों, सामन्तों तथा पूँजीवादियों के द्वारा जनता के मुख्यतः किसानों एवं मजदूरों के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक शोषण एवं दमन का पर्दाफाश किया तथा उनके विरुद्ध तीव्र प्रहार किया. अत्यन्त तीक्ष्ण घृणा या नफरत का भाव व्यक्त करने के लिए उन्होंने भारतीय राजकुमारों तथा जमीनदारों को साम्राज्यवादियों के 'हरम' में रखैलों की संज्ञा दी. क्रोध और पीड़ा में उन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा साम्प्रदायिकता, धार्मिक, हठधर्मिता, सभी प्रकार के अंधविश्वासों, जातिवाद, अछूतों और स्त्रियों के शारीरिक शोषण के विरुद्ध बार-बार तीव्र प्रहार किया. इस क्रांतिकारी दृष्टिकोण के कारण वे धुन्धवादी उनसे अप्रसन्न हो गये थे, जिन्होंने 'उन्हें' घृणा और द्वेष के उपदेशक के रूप में चित्रित किया. उनके आक्रमणों से वे अपने पथ से विचलित नहीं हुए तथा उन्होंने समुचित प्रत्योत्तर के द्वारा उनकी जबान बंद कर दी.

प्रेमचंद का यह विश्वास था कि साहित्य मनुष्य में निहित उन सभी प्रवृत्तियों का प्रतिबिम्ब है, जो उसे सुन्दरता, उच्चतर प्रतिष्ठा तथा आनंद की ओर सदा प्रेरित करती हैं तथा साहित्य को सभी असहायों, दलितों तथा सम्मान रहितों के हितों का प्रतिनिधित्व करना चाहिये. उनकी रचनाएं स्वयं अपने में उनके इस विश्वास की जीवित स्मारक हैं.

यथार्थ को व्याख्या करते हुए ऐंजिल ने लिखा है कि प्रारूपिक या सामान्य चरित्रों की सृष्टि करके साहित्यकार यथार्थवाद की वास्तविक स्थापना कर सकता है. 'सामान्य चरित्र' का अर्थ प्रायः ठीक-ठीक नहीं समझा जाता. 'सामान्य चरित्र' एक निष्क्रिय मध्यमान या मंद औसत की ओर संकेत नहीं करता, बल्कि किसी युग के जीवन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का बोध कराता है. प्रेमचन्द की कृतियों से पाये जाने वाले चरित्र सही अर्थ में प्रारूपिक या सामान्य हैं. यद्यपि उनके चरित्र निर्धन, शोषित तथा दलित हैं, तथापि भारतीय जनता के सभी उत्तम गुणों से वे सम्पन्न हैं. जब वे हारते हैं या उनका दुखपूर्ण अंत होता है, तब भी वे अपने शोषकों तथा दमन कर्त्ताओं की अपेक्षा ऊँचे और महान दीखते हैं. एक युवा लेखक को लिखे गये पत्र में प्रेमचंद लिखते हैं—एक नौजवान को सदा आशावादी मुद्रा या दृष्टिकोण रखकर लिखना चाहिए, उसकी आशावादिता को संक्रामक होना चाहिये अर्थात् दूसरों के भीतर भी उसी आशावादिता के भाव का संचार करना चाहिये. मेरी समझ में साहित्य का सबसे महान लक्ष्य यह है कि वह उत्थान करे, उदय के लिए प्रेरित करे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे यथार्थवाद को भी यह लक्ष्य कभी भी भूलना नहीं चाहिए. चाहूँगा कि आप ऐसे मनुष्य की सृष्टि करें जो साहसी, ईमानदार, स्वावलम्बी तथा कठोर से कठोर परिस्थितियों में संघर्षशील एवं प्राणवान रहें और जिनके महानतम आदर्श हों, यही इस युग की पुकार है. उनकी सभी कृतियों उपन्यासों तथा अनेक लघु कहानियों में— इस प्रकार के प्रारूपिक तथा विधेयात्मक गुणों से सम्पन्न चरित्र विद्यमान हैं. साहित्यकार के रूप में प्रेमचंद की महानता उनकी इस योग्यता पर निर्भर करती है, जिसके द्वारा उन्होंने यथार्थवाद को अपने भविष्य के प्रति स्वप्नों के साथ जोड़ दिया.

एक दिसम्बर, १९३५ को विख्यात हिन्दी पत्रकार श्री बनारसी दास को लिखे गये पत्र में प्रेमचंद ने कहा है—ऐसे बहुत से नौजवान हैं, जो मेरी अपेक्षा अधिक वृद्ध और ऐसे वृद्ध भी हैं, जो मेरी अपेक्षा अधिक नौजवान हैं, लेकिन मुझे विश्वास होता जा रहा है कि मैं दिन प्रतिदिन अधिक नौजवान होता जा रहा हूँ मुझे किसी दूसरे संसार या परलोक में कोई विश्वास नहीं है और इसलिए परलोकत्व का वह भाव मेरे पास भटकने भी नहीं आता जो युवावस्था का सबसे बड़ा संहारक है.' प्रेमचंद का यह कथन उतना अद्भुत या आश्चर्यजनक नहीं है, जितना वह सुनने में लगता है. इससे केवल यही प्रकट होता है कि जैसे-जैसे वर्ष बीतते गये, प्रेमचंद की धारणा संसार और समाज के प्रति अधिक स्पष्ट होती गई. रूस की अक्टूबर क्रांति का प्रेमचंद पर व्यापक प्रभाव पड़ा. पहले तो उन्होंने रूस में घटने वाली इन महान और तूफानी घटनाओं का धुँधला प्रशंसात्मक आकलन किया, क्योंकि उन घटनाओं के साथ जो हिंसा जुड़ी हुई थी, उसे वे नफरत की निगाह से देखते थे. सर्वहारा की अधिनायकशाही के बारे में उनकी धारणा सर्वथा गलत थी और वे उसे हिटलर तथा मुसोलिनी की अधिनायकशाही के समान समझते थे लेकिन धीरे-धीरे धुंध साफ होता गया और रूस के जीवंत सामाजिक परिवर्तनों का उन पर गहरा और नियामक प्रभाव पड़ा. रूस में उसी सर्वहारा वर्ग के साहसी और बहादुर संघर्षों को देखकर वे प्रसन्न होने लगे थे, जिसे पहले समाज का कोढ़ समझा जाता था. रूस में सर्वहारा अपने आर्थिक पुन निर्माण तथा संस्कृति के क्षेत्रों में आश्चर्यजनक सफलताएं अर्जित करने लगा था. उन्होंने भारत तथा विश्व के अन्य देशों के किसानों और मजदूरों के लिए भी उसी प्रकार के भविष्य का स्वप्न देखा. अपने दृष्टिकोण के क्षितिज के इस विस्तार के कारण वे हमारे राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के प्रगतिशील तत्वों तथा प्रवृत्तियों के समीप होते गये. उन्होंने देश के सम्मुख प्रस्तुत समस्याओं के समाधान के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण की सीमाओं का अनुभव किया तथा साथ ही स्वयं अपने बुनुवा मानववादी दृष्टिकोण की सीमाओं का भी. यद्यपि वे मार्क्सवादी नहीं थे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तथापि मार्क्सवाद के अधिकांश महत्वपूर्ण सिद्धांत जीवन के माध्यम से उनकी धारणाओं में उतरते गये. राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की प्रगतिशील शक्तियों के साथ उनका सक्रिय सहयोग निश्चित रूप से उनके दृष्टिकोण के इस नये बदलाव का परिणाम था. उन्होंने १९३६ में लखनऊ में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम सम्मेलन की अध्यक्षता की और वे अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक साहित्य में एक ऐसी नई प्रवृत्ति को स्थापित करने के लिए संघर्ष करते रहे—जो वैज्ञानिक दृष्टिकोण, यथार्थवाद और पुनर्निर्मित समाज की कल्पना पर आधारित है.

एक साहित्यकार के रूप में टालस्टाय के सम्बन्ध में अपना विचार व्यक्त करते हुए लेनिन ने कहा था कि अपने धार्मिक धुंधवाद के बावजूद वे रूसी किसान क्रांति के दर्पण थे. ठीक उसी शुद्धता के साथ हम यह कह सकते हैं कि प्रेमचन्द साहित्यकार के रूप में भारतीय मुक्ति आंदोलन के दर्पण थे. गोर्की तथा लुसुन की भूमिकाएं भी उन्होंने उस सीमा तक अदा की है, जहाँ तक उन्होंने हमारे समाज के सर्वाधिक शोषित और दलित जनता के हितों के लिए संघर्ष किया है. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा उनके कुछ समकालीनों की रचनाओं में भारतीय जनतांत्रिक आंदोलन के जो कुछ धुंधले या दूरस्थ गर्जन सुने जाते हैं, वे प्रेमचन्द की कहानियां, उपन्यासों तथा पत्रकारीय निबन्धों के पृष्ठों में एक गम्भीर नाद के रूप में विकसित हो गये हैं.

प्रेमचन्द ने जिस कार्य को करने का बीड़ा उठाया था, वह अभी भी अधूरा है. वे चुनौती से भरे कार्य हैं और उनके लिए हमारे लेखकों की संयुक्त इच्छा शक्ति तथा क्रिया की आवश्यकता है. उनके लिए प्रेमचन्द के द्वारा छोड़ी गई विरासत अमूल्य है. वह विरासत यह है कि हम जनता के हितों के साथ अपनापूर्ण तादात्म्य कर दें. उन सभी देशों के लेखकों के लिए भी वह मूल्यवान हैं, जहां पर जनता राष्ट्रीय संस्कृतियों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रही हों. प्रेमचन्द अपने देश तथा अपनी जनता को प्यार करते थे किन्तु वे किसी भी राष्ट्रीय अर्थवाद के विरुद्ध थे. उन उपनिवेशिक देशों की राष्ट्रीयता की प्रगतिशील प्रकृति को समझते हुए जो साम्राज्यवाद से संघर्ष कर रहे थे, उन्होने अनेकानेक बार पश्चिम के पूंजीवादी देशों के आक्रामक राष्ट्रवाद के द्वारा उत्पन्न होने वाले खतरों से विश्व को चेतावनी दी थी. एक साहित्यकार के रूप में उनकी महानता का रहस्य यह है कि जहां एक ओर वे समकालीन विश्व की घटनाओं के प्रति विशेष रूप से रूस के क्रांतिकारी परिवर्तनों के प्रति पूर्णतः सजीव और जागरूक थे, वहीं पर दूसरी ओर उन्होंने अपनी रचनात्मक क्रिया के केन्द्र में सदा अपनी जनता को रखा. उनकी कृतियां उस बहुराष्ट्रवाद की एण्टथीसिस हैं जिसकी आड़ में साम्राज्यवादी देश आजकल नये आजाद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खरीफ कार्यक्रम में अधिक अन्न उपजाओ

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किसानों के लिए.

बीज की सुविधा

खरीफ की फसल के लिए १,६८,७०७ कुन्तल बीज वितरित किया जा रहा है जिसमें धान के लिए १.२८ लाख कुन्तल बीज है.

उर्वरक की सुविधा

सभी संस्थाओं के माध्यम से ४.१३ लाख टन उर्वरक वितरित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है जिसमें ३.५० लाख टन नत्रजन ४२ हजार टन फास्फेट तथा २१ हजार टन पोटाश सम्मिलित है तथा

ऋणों की सुविधा

विभिन्न संस्थाओं से ऋण उपलब्ध कराये जा रहे हैं और २६ जिलों में लघु कृषक विकास योजना चल रही है.

हमारा लक्ष्य : ९० लाख टन खरीफ खाद्यान्नों का उत्पादन खरीफ कार्यक्रम की सफलता किसानों की सफलता है.

उ.प्र. सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रसारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और पिछड़े देशों की राष्ट्रीय संस्कृतियों को उखाड़ फेंकते हैं और उनमें घुस कर अपना प्रभुत्व कायम करते हैं. इन देशों को आधारहीन और विघटनशील बनाने के लिए बहुराष्ट्रवाद इन देशों में अनेक आकर्षक रूपों में प्रवेश करता है, जिनमें से एक रूप आधुनिकतावाद है. तुर्गनेव के प्रसिद्ध उपन्यास 'रूदिन' में लेभ्नेव के नायक के बारे में कथन को उद्धृत करना यहां पर उक्तिसंगत होगा—रूदिन दार्शनिक जादूगरी में सिद्धहस्त है, किन्तु यद्यपि वह रूसी है, पर, रूस को नहीं जानता. वह सही अर्थ में एक बहुराष्ट्रवादी है.' अपने दुखान्त भावों को लेभ्नेव इन शब्दों में व्यक्त करता है—बहुराष्ट्रवाद एक अर्थहीन धारणा है. बहुराष्ट्रवादी का कोई अस्तित्व ही नहीं होता है अस्तित्वहीन से भी बहुराष्ट्रवादी की स्थिति अधिक दयनीय है. राष्ट्रीयता से परे न तो कला है, न सत्य है, न जीवन—वास्तव में कुछ नहीं है. यहां तक कि एक व्यक्ति के चेहरे को भी अपनी आकृति होती है, केवल नीरस चेहरे का कोई लक्षण नहीं होता.' हमारे राष्ट्र के लेखकों में इन 'रूदिनों' के लिए प्रेमचन्द की कृतियां शिक्षा भी हैं और चेतावनी भी, जो आधुनिकतावाद और आधुनिकतम तरंगों के बारे में पागल हैं.

उन्होंने फ्रांसिसी, अंग्रेजी और रूसी यथार्थवादी आलोचना साहित्य के प्रवर्त्तकों और समाजवादी यथार्थवाद के प्रवर्त्तक गोर्की से अनेकानेक शिक्षाएं ग्रहण कीं, किन्तु उन्होंने अपने पांव मजबूती से अपने देश की जमीन में जमाये रखा-वे भारतीय किसान को जितना जानते थे, हमारे कम लेखक जानते हैं और वे उनकी भाषा के साधारण, गतिशील, शक्तिशाली चित्रवत मुहावरों को भी जानते थे जिनका प्रयोग वे बोलचाल में किया करते थे. इन स्रोतों से वे अपनी कृतियों के लिए विषयवस्तु और रूप दोनों को समृद्ध किया. प्रेमचन्द उन महान रचनाकारों में से हैं. जिन्हें न तो देव प्रतिमा की तरह स्थापित किया जा सकता है और न ममी बनाकर अजायबघर में रखा जा सकता है. वे हमेशा अपनी जनता के बीच जीवित रहेंगे और उसी के साथ विकसित होते रहेंगे.■■

अनुवाद—कृष्ण मोहन गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द : कुछ तथ्य

●

श्रीमती श्याम कुमारी देवी

(प्रस्तुतकर्ता—डा० कौशल कुमार राय)

(प्रेमचन्द जी के निजी जीवन के संदर्भों को लेकर इधर बीच अनाप-शनाप लिखने और चर्चित होने की बीमारी जोर पकड़ रही है। बीमार जहनियत वालों के लिए बतौर इलाज कुछ तथ्य प्रेमचन्द जी के भाई श्री महताब राय की पत्नी श्रीमती श्याम कुमारी देवी के हवाले से (प्रेमचन्द जी के) भतीजे डा० कौशल कुमार राय यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं—

विगत कुछ वर्षों के दौरान कई प्रतिष्ठित लोगों ने मुझसे पूछा है कि प्रेमचंद जी को लोग अपने घर नहीं बुलाते थे ? जब मैंने इसका कारण जानना तो उन्होंने बताया कि वह जिसके घर जाते थे, उसी के बारे में कहानी लिख थे और इस प्रकार उस घर की प्रतिष्ठा धूल में मिला डालते थे. लेकिन कितनी धारणा है भाई जी के प्रति लोगों की. मैंने सबसे इस बात का खंडन किया. लगाये जाने वाले इस आरोप की कोई बुनियाद नहीं है. यह सब कपोल-कल्पित उनके व्यक्तित्व को खंडित करने वाली बातें हैं. सच तो यह है कि भाई जी और गम्भीर किस्म के व्यक्ति थे. वह खुद भी किसी के घर ज़्यादा आते-जाते उन्हें बस अपने काम से मतलब रहता था. जब तक नौकरी करते रहे, ड्यूटी थे. ड्यूटी से आने के बाद घर में ही बाल-बच्चों के बीच मनन-मनोरंजन करते कुछ लोग आ जाते, उनसे गपशप कर लेते फिर लिखने-पढ़ने बैठ जाते. उनका इतना विशाल और व्यापक था, अनुभव इतना गहन था कि उसी के आधार जो चाहते थे, लिख लेते थे. उनकी कहानी, उपन्यास का कथानक अथवा पात्र जीवन्त होता था. जो घटनाएं अगल-बगल घटती थीं, उन्हें ही वे अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बांध डालते थे. समाज के जो चलते-फिरते पात्र थे, उन्हें ही अपने कथानक का पात्र बना लेते थे इन सब वजहों से लगता था कि वह जो कुछ लिख-कह रहे हैं, वह हर घर और समाज की कहानी है और शायद इसी कारण लोग उन पर उपर्युक्त मिथ्या आरोप लगाते हैं.

मैंने (कौ.कु रा) गत वर्ष 'कादम्बिनी' मासिक पत्रिका (जुलाई, १९७९ अंक) में प्रकाशित 'प्रेमचंद के दो रूप' लेख के बारे में जिसमें श्री मदनगोपाल ने प्रेमचंद जी के व्यक्तित्व पर छींटाकशी की है, जब उनसे पूछा तो उन्होंने गहरी वेदना के साथ कहा कि इस दुनिया में हर तरह के लोग हैं. कोई किसी के बारे में कब क्या कह दे, कोई नहीं जानता. जब मदनगोपाल जी पत्र लेने के सिलसिले में घर आये थे तो मुझे अच्छी तरह याद है कि बाबू जी (महताब राय) पत्र देने में काफी हीला-हवाली कर रहे थे. वह कतई नहीं चाहते थे कि पारिवारिक विवादों को, यदि कोई हो, सार्वजनिक चर्चा का विषय बनाया जाय. फिर अपने सरल स्वभाव के कारण उन्होंने पत्र दे दिया. बाबू जी भाई जी (प्रेमचंद) को न केवल बड़ा भाई ही समझते थे, वरन् उन्हें देवता की तरह पूजते थे. मुझे कभी होश नहीं है जबकि बाबू जी ने उनसे आंख से आंख मिलाकर बातचीत की हो या उनके सामने बराबरी पर बैठे रहे हों. भाई जी की वाणी उनके लिए अमृतवाणी थी, उनके आदेश उनके लिए देव वाक्य होते थे. मैंने भी काफी दुनिया देखी है लेकिन ऐसा भातृ प्रेम बहुत कम देखा है. गांव में तो लोग इन दोनों भाइयों को राम-लक्ष्मण की जोड़ी कहते थे. ऐसी स्थिति में मदनगोपाल जी की इस उक्ति को सर्वथा गलत मानती हूं कि बाबू जी (महताब राय) ने उन्हें पत्र देते समय यह बात कही होगी कि जिन्हें मैंने देवता के रूप में ऊंचे स्थान पर बैठा रखा है, वह कुछ गिर गये हैं.

विवाह के बाद मैं बाबू जी के साथ लगभग ४०-४५ वर्ष रही. लेकिन इतने लम्बे समय में मैंने कभी भी उनके मुख से भाई जी के बारे में एक भी अपशब्द नहीं सुना. फिर मैं यह कैसे मान लूं कि बाबू जी ने अपनी भाभी (प्रेमचंद जी की पहली पत्नी) के बारे में यह कहा होगा कि 'वह हट्टी-हट्टी थीं और प्रेमचन्द से लम्बी थीं. एक टांग बड़ी थी और दूसरी छोटी'. हां, एक बार बाबू जी और मेरी सास ने (काफी वर्षों के बाद) मुझे इतना जरूर बताया था कि भाभी जी कुरूप थीं, चेहरे पर चेचक के दाग थे. लेकिन उनकी टांग छोटी-बड़ी थी, गलत है. अब न तो भाई जी हमारे बीच हैं और न बाबू जी. अतः उनके बारे में कुछ भी अनर्गल प्रलाप किया जाय, यह मेरी दृष्टि में कभी भी उचित नहीं है.

जहां तक भाई जी के दो रूप का प्रश्न है, हो सकता है, रहा हो. यह कोई नई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

☎ ५४८८८
६६९८१

नागेन्द्र ब्रदर्स

महमूरगंज • वाराणसी

—: स्टाकिस्ट :—

पैरी सैनिटरीवेयर, उड़ीसा सैनिटरीवेयर,

बी. पी. टी. टाइल्स, जेम, रूबी एवं प्रेमको

सी. पी. बाथरूम फिटिंग्स

सी. आई. पाईप, एस. डब्लू. पाईप, सिस्टर्न इत्या

न्यू आइको ऑप्टिशियन्स

रतन कटरा (निकट पेट्रोल पम्प) गोदौलिया • वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चीज नहीं है. हर मनुष्य का दो रूप होता है—बाह्य और आन्तरिक. बाह्य जीवन तो अत्यन्त आदर्शवादी और यथार्थवादी होता है और आन्तरिक जीवन में ठीक इसके विपरीत. महात्मा गांधी के बारे में कहा जाता है कि 'कथनी और करनी में समन्वय का नाम गांधी है.' क्या यह सत्य है ? क्या उन्होंने अपने सम्पूर्ण आदर्शमय जीवन में अक्षरशः इस युक्ति का पालन किया ? मैं तो ऐसा नहीं समझती. उसके भी प्रारम्भिक और उत्तरार्द्ध के जीवन में बड़ा फर्क था. ठीक यही बात भाई जी के बारे में भी हो सकती है. उनका एक रूप लेखक का था, तो दूसरा रूप नितान्त वैयक्तिक. वैयक्तिक जीवन के कार्य-कलापों को लेखकीय जीवन से संबन्धित करना न्यायसंगत नहीं प्रतीत होता. जहाँ तक मेरी जानकारी है, उनके दोनों रूपों में साम्य था. वह सीधे, सरल, सादे और सपाट व्यक्तित्व के आदमी थे. छल-छद्म, कपट, धोखा-धड़ी से कोसों दूर थे कितने ही चालाक लोगों ने उन्हें चूसा, धोखा दिया. परन्तु बड़े धैर्य के साथ उहोंने सब कुछ सह लिया. एक नहीं सैकड़ों ऐसे उदाहरण हैं जिनसे पता चलता है कि भाई जी और बाबू जी, दोनों भाइयों को उनके इष्ट-मित्रों, परिचितों और निकटवर्ती सम्बन्धियों ने जम कर चूना लगाया लेकिन दोनों लोगों ने 'ऊफ्' तक नहीं किया.

यह मैं मानती हूँ कि आदर्श और यथार्थ दो अलग-अलग चीजें हैं. भाई जी यदि आदर्शवादी थे तो दूसरी ओर यथार्थवादी भी यह अलग बात है कि परिस्थितियों के चक्कर में पड़कर उन्होंने कुछ ऐसी बातें भी कर दी हों जिनके वे मानसिक रूप से विरोधी रहे हों इसमें उनका क्या दोष है ? परिस्थितियों का तो हर व्यक्ति दास होता है. बड़े लोगों को मैंने परिस्थितियों के सामने टूटते और झुकते देखा है. इसका यह तात्पर्य तो हुआ नहीं कि उनके व्यक्तित्व के दो रूप थे. व्यक्तित्व का निर्माण ही परिस्थितियों पर निर्भर करता है. लेकिन इसके बावजूद उनका व्यक्तित्व और जीवन बड़ा संतुलित था. वह बाहर और अन्दर के जीवन में हमेशा संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते थे. मेरे लिए तो वे पूज्य थे मैंने आजीवन उनका आदर्शमय जीवन ही देखा और विपत्ति के समय भी चट्टान की तरह अडिग पाया. कभी लड़खड़ाते नहीं देखा. आज उनकी मृत्यु के ४४ वर्ष बाद उनके व्यक्तित्व पर चाहे कितना कीचड़ उछालने का प्रयास किया जाय, उनके उज्ज्वल और बेदाग चरित्र पर उसका एक भी धब्बा पड़ने वाला नहीं है. वह एक महान कथाकार, महान आत्मा थे और भविष्य में भी रहेंगे...

सम्पादक—उत्तर प्रदेश मासिक—
उत्तर प्रदेश सूचना भवन, लखनऊ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द सम्बन्धी कुछ उल्लेख्य बातें

●

गगनेन्द्र कुमार केडिया

श्री मुरारीलाल केडिया द्वारा स्थापित वाराणसी के श्री रामरत्न पुस्तक भवन में हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तथा अन्य कई भाषाओं के अनेकानेक दुर्लभ ग्रन्थों का संग्रह है. इस पुस्तकालय की सबसे बड़ी विशेषता है इसका संग्रहालय, जिसमें हिन्दी के साहित्यकारों की हस्तलिपियों, हस्ताक्षरों, पत्रों, चित्रों तथा उनके निजी उपयोग की वस्तुओं का अनूठा संकलन है जो इस पुस्तक-भवन को सामान्य पुस्तकालयों की अपेक्षा कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध करता है. इस प्रकार के संग्रह की उपादेयता और महत्ता का ज्ञान 'भवन' में संगृहीत स्वर्गीय प्रेमचन्द जी सम्बन्धी संग्रह से सरलतापूर्वक हो जाता है.

'भवन' में प्रेमचन्द जी के हस्ताक्षर, उनके परीक्षा-सम्बन्धी कुछ प्रमाणपत्र, उनके अनेक ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ, उनके वस्त्र, चश्मा तथा कुछ अन्य सामग्री संगृहीत है. ये सब वस्तुएँ उनकी पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी ने उनके निधन के अनन्तर अनुग्रहपूर्वक 'भवन' को अर्पित की है. 'भवन' में प्रेमचन्द जी के 'प्रेमचन्द' नाम के ही नहीं, 'धनपतराय' नाम के भी हस्ताक्षर हैं.

प्रमाणपत्रों से प्रकाश

इनसे विदित होता है कि प्रेमचन्द जी ने 'परमानेण्ट जूनियर इंगलिश टीचर्स' परीक्षा सन् १९०४ में गवर्नमेंट सेन्ट्रल ट्रेनिंग कालेज.' इलाहाबाद से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी. एतत्सम्बन्धी इनका सरकारी प्रमाणपत्र दर्शनीय है. इसमें गणित सम्बन्धी इनकी कमजोरी का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—'नाट क्वालिफाइड टु टीच मैथमेटिक्स' (गणित पढ़ाने के अयोग्य).' प्रधानाचार्य के 'जेनरल रिमार्क्स' (सामान्य टिप्पणी) के अन्तर्गत लिखा है—'ही वर्क्ड अर्नेस्टली एण्ड वेल' (इन्होंने परिश्रमपूर्वक एवं भलीभाँति कार्य किया). इस प्रमाणपत्र पर इनका नाम केवल 'धनपतराय' लिखा है.

सन् १९०४ में ही प्रेमचन्द जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय की 'स्पेशल वर्नाक्यूलर' परीक्षा भी उत्तीर्ण की, जिसमें इनके विषय थे—हिन्दी और उर्दू. इसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रमाणपत्र में इनका पूरा नाम 'धनपतराय श्रीवास्तव' लिखा है. यह परीक्षा इन्होंने इलाहाबाद ट्रेनिंग कालेज से दी थी.

इण्टरमीडिएट की परीक्षा 'धनपतराय' नाम से इन्होंने १९१६ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की. उस समय ये बस्ती में अध्यापक भी थे, जैसा कि इनके प्रमाणपत्र में उल्लिखित है. इस परीक्षा में इनके विषय थे—अंग्रेजी साहित्य, तर्कशास्त्र (आगमन और निगमन), फारसी एवं आधुनिक इतिहास.

बी० ए० की परीक्षा भी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ही इन्होंने 'धनपतराय श्रीवास्तव' के नाम से १९१९ ने द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की. इनके परीक्षा-विषय थे—अंग्रेजी साहित्य, फारसी और इतिहास. उन दिनों भी ये अध्यापकी करते थे.

इनके १० जून, १९०९ के एक नियुक्तिपत्र की शुद्ध प्रतिलिपि भी है जिसमें इलाहाबाद डिवीजन के इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स, श्री जे० डब्लू० बेकन ने कानपुर के डिस्ट्रिक्ट स्कूल के प्रधानाध्यापक को लिखा है—'हैज दि आनर टु इन्फार्म हिम दैट दि चेयरमैन, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, हमीरपुर हैज अप्वाइण्टेड मिस्टर धनपतराय नाइन्थ मास्टर डिस्ट्रिक्ट स्कूल कानपुर ऐज सब डेपुटी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स हमीरपुर आन प्रोबेशन. दि मुन्शी शुड बी आस्कड टु रिपोर्ट हिमसेल्फ टु दि चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हमीरपुर एट ए वेरी अर्ली डेट' (ससम्मान सूचित करता हूँ कि हमीरपुर के जिला बोर्ड के अध्यक्ष ने कानपुर जिला स्कूल के नाइंथ अध्यापक धनपतराय को परीक्षण पर हमीरपुर के स्कूलों का सह-उपनिरीक्षक नियुक्त किया है. मुन्शी से कहा जाय कि वे अति आसन्न तिथि पर हमीरपुर के जिला बोर्ड के अध्यक्ष से स्वयं मिलें.)

इसके पृष्ठ भाग पर गवर्नमेंट हाईस्कूल कानपुर के प्रधानाध्यापक का १६ जून, १९०९ का 'फारवर्डिङ्ग नोट' (अग्रेसारक टिप्पणी) भी है.

वस्त्र

प्रेमचंद जी के अनेक वस्त्र—कुरते, पायजामे, कोट, टोपी, शेरवानी आदि भी 'भवन' में हैं. खद्दर के इन वस्त्रों से उनकी सादगी, आर्थिक स्थिति एवं आकार का ज्ञान होता है. रूस के लेनिनग्राद विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्राध्यापक श्री विक्टर बालिन तो इन वस्त्रों की नाप तक लिख कर ले गये हैं. वे श्री प्रेमचंद पर अनुसंधान कर रहे हैं और शीघ्र इनके सम्बन्ध में एक पुस्तक भी लिखने वाले हैं.

पाण्डुलिपियों से नवीन प्रकाश

'भवन' में प्रेमचन्द जी की अनेक पुस्तकों, कहानियों, लेखों आदि की हिन्दी तथा उर्दू की पाण्डुलिपियाँ संकलित हैं जिनसे अनेक नवीन तथ्यों का उद्घाटन होता है. प्रेमचंद जी के अक्षर छोटे हैं. अनेक स्थलों पर लिपि अस्पष्ट भी है, पढ़ने में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आयास पड़ता है, अतः इनकी लिपि सुपाठ्य नहीं कही जा सकती.

आर्यसमाज के किसी वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर लाहौर में इन्होंने भाषण किया था. उसकी पांडुलिपि भी 'भवन' में है. यह भाषण 'कुछ विचार' प्रकाशित हो चुका है. इनकी तीन कहानियों की पांडुलिपियां भी 'भवन' में हैं, जिनके नाम हैं—'रहस्य', 'शतरंज के खिलाड़ी' तथा 'कश्मीरी सेव'. कश्मीरी सेव इनकी अन्तिम कहानी है, 'रहस्य' की पांडुलिपि तो प्रेस कापी है, परन्तु, शतरंज के खिलाड़ी की मूल पांडुलिपि है, जिसके साथ उसका सार-संकेत (सिनाप्सिस) भी है. यहां उल्लेख्य है कि अपनी हिन्दी एवं उर्दू की समस्त रचनाओं का सार-संकेत प्रेमचन्द जी अंग्रेजी में ही बनाया करते थे. जिससे स्पष्ट है कि वे कहानी, उपन्यास की मूल वस्तु की कल्पना अंग्रेजी माध्यम से ही किया करते थे. हिन्दी और उर्दू में लिखने वाले इस महान् लेखक के विचार का माध्यम न हिन्दी थी, न उर्दू. इस युग के अन्य से लेखक अंग्रेजी माध्यम से कार्य करते थे. हिन्दी के सर्वप्रधान समीक्षक स्व० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी अंग्रेजी में सार-संकेत लिखा करते थे. उनकी 'रस मीमांसा' पुस्तक से यह प्रमाणित है.

कर्मभूमि और कर्बला

इनके उपन्यास 'कर्मभूमि' के प्रथम भाग के अन्तिम अंश एवं द्वितीय भाग के प्रारम्भिक अंश की पांडुलिपि भी 'भवन' में है इसके प्रथम पृष्ठ पर 'कर्मभूमि १९ अप्रैल १९३१ प्रेमचन्द' लिखा हुआ है. यह उपन्यास सन् १९३२ में प्रकाशित हुआ. इस पांडुलिपि में बीच-बीच में कई पृष्ठों पर अंग्रेजी में सार-संकेत (सिनाप्सिस) भी है. इसमें एक अन्य मनोरंजक बात यह दिखाई देती है कि प्रकाशित उपन्यास में नायक एवं उसके पिता का नाम अमरकांत एवं समरकांत है. परन्तु प्रस्तुत पांडुलिपि के दूसरे भाग के दूसरे अध्याय के अन्तिम अनुच्छेद के पूर्व सर्वत्र अमरनाथ एवं समरनाथ नामों का व्यवहार है. अन्तिम अनुच्छेद में तथा उसके आनेवाले अध्याय में अमरकान्त नाम का प्रयोग दिखाई देता है. यह अनुच्छेद दूसरी बैठक में लिखा हुआ प्रतीत होता है जैसे कि लिखावट से स्पष्ट है. नामों का ऐसा ही परिवर्तन 'डिप्टी कैदी' शीर्षक कहानी की पांडुलिपि में भी है जिसका उल्लेख आगे किया जायगा.

कर्मभूमि के इन अंशों के आगे ही एक नये उपन्यास की रूपरेखा भी अंग्रेजी में लिखी हुई है. इसे पढ़ने से ज्ञात होता है कि यह उपन्यास प्रेमचन्द जी के मस्तिष्क में ही रह गया और वे इसे लेखबद्ध नहीं कर सके. यह रूपरेखा भी अपूर्ण है. अध्यायों की रूपरेखा बनाने के बाद नवें अध्याय की संख्यामात्र लिखी हुई है. मूलरूप में उद्धृत की जा रही है—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'टू आस्पेक्ट्स—ऐन अनहैपी मैरिड लाइफ ड्यू टू डिफरेन्स इन आउटलुक एन्ड मेंटेलिटी, देयर इज एंथूजिएज्म, सैक्रीफाइस, डिवोशन बट आल्सो ए लांगिंग, ए यर्निंग फार लव. दि हार्ट इज नाट अवेकेंड. देयर इज नो स्पिरिचुअल अवेकेनिंग. वाइफ्स सैक्रीफाइसेंज क्रिएट लव. स्पिरिचुआल अवेकनिंग आल्सो कम्स. देन होल आउटलुक चेंज्ड. दि होल एटमास्फियर इज प्यूरीफाइड.

ए यूथ पनिश्ड फार ट्रांसपोर्टेशन इन ए पोलिटिकल मर्डर ट्रायल. हिज विट्राथेड एन्ड फादर बोथ आर ट्रांसफार्म्ड. ह्वेन सी, रिटर्न्स ही फाइएन्ड्स देम रेडी टु वेलकम हिम. आल फियर वैनिश्ड.

दि डिटेल्स शुड बी वर्क्ड आउट—१६० पेजेज—फर्स्ट चैप्टर—दि ट्रायल एण्ड पनिशमेंट. प्राइस—।१२।—

सेकेण्ड—दि विट्राथेड गर्ल वाज प्रेजेण्ट ऐट दि कोर्ट. शी प्रपोजेज टु रिमेन विद दि फादर आव् हर फाएन्सी. हर फाएन्सीज फेयरवेल लेटर.

थर्ड—दि फादर सब्स्क्राइब्स सीक्रेटली टु दि फण्ड आव् दि पोलिटिकल पार्टी ऐण्ड इज रेडो टू हेल्फ इन एवरी वे.

फोर्थ—दि सीक्रेट इज डाइवल्ज्ड बाई वन आव् दि पार्टी. दि पुलिस थ्रेटेन दि फादर बट ही इज ऐडमण्ट. हिज-डाटर इन-ला इनकरेजेज हिम.

फिफ्थ—दि डाटर-इन-ला अटेण्ड्स ए पोलिटिकल मीटिङ्ग ऐण्ड इज वोसीफेर-सलो वियर्ड शी इज इलेक्टेड प्रेसीडेण्ट आव् दि कांग्रेस कमिटी.

सिक्स्थ—लाहौर कांग्रेस—शी अटेंड्स ऐण्ड डेलिवर्स ए स्पीच ऐट लाहौर. दि रेजोल्यूशन फ र इण्डिपेंडेंस. शो सपोर्ट्स इट इन ऐन एक्सेलेंट स्पीच,

सेवेंथ—दि रैटीफिकेशन. हर एफर्ट्स टु फार्म ए लेडी वर्क्र्स यूनियन सक्सेसफुल.

एर्थ—पिकेटिंग बाई दि लेडी. एण्ड अरेस्ट.

नाइंथ—

—नन्दन साहू लेन, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द को 'उपन्यास सम्राट' की संज्ञा किसने दी

●

मुरारीलाल केडिया

यह तो बहुत से लोग जानते होंगे कि हिन्दी पुस्तक एजेन्सी (कलकत्ता) के संचालक श्री बैजनाथजी केडिया ने ही सबसे पहले प्रेमचन्द जी की कहानियां एवं उपन्यास हिन्दी में प्रकाशित किये. श्री बैजनाथ जी केडिया प्रेमचन्द जी से मिलने के लिए वाराणसी पधारे थे और वाराणसी के नीलकंठ मुहल्ले में श्री लाल-विहारी सेठ के यहां उस कमरे में ठहरे हुए थे जिसमें कभी भारत जीवन प्रेस चलता था. प्रेमचन्द जी उस समय वाराणसी के पिसनहरिया मुहल्ले में रहा करते थे. उन्हें प्रेमचन्द जी से मिलाने हिन्दी के वयोवृद्ध एवं सुप्रसिद्ध समीक्षक आचार्य विश्वनाथप्रसाद जी मिश्र ले गये थे. बातचीत हो जाने के अनंतर पंचपरमेश्वर, सप्तसरोज, नवनिधि कहानियों के संग्रह, सेवासदन, प्रेमाश्रय आदि उपन्यास यहां से प्रकाशित हुए. हिन्दी पुस्तक एजेन्सी का एक प्रेस भी कलकत्ते में था जिसका नाम वणिक प्रेस था. उसके मुद्रक थे श्री महावीर प्रसाद जी पोद्दार. पोद्दार जी प्रेमचन्द जी की ये रचनाएँ बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरद्बाबू को पढ़ने के लिए दिया करते थे. एक दिन शरद् बाबू से मिलने के लिए श्री पोद्दार जी उनके घर गये तो शरद् बाबू अपनी बैठक से घर के भीतर गये हुए थे. इस अन्तराल में श्री पोद्दार जी ने देखा कि बैठक में जो पुस्तक वे पढ़ रहे थे, वह प्रेमचंद जी का कोई उपन्यास था और बीच से खुला हुआ था. कुतूहलवश जो उसे उठाकर उन्होंने देखा तो उन्हें दिखाई पड़ा कि खुले हुए पृष्ठ के एक पार्श्व पर शरद् बाबू ने 'उपन्यास सम्राट' लिख रखा है. इसे देखकर वे बड़े आनन्दित हुए और वहां से लौटने के अनन्तर अपने यहां से प्रकाशित होनेवाली प्रेमचंद की कृतियों में एवं उनके विज्ञापनों में प्रेमचंद जी को वे उपन्यास सम्राट लिखने लगे.

इस वार्ता से यह स्पष्ट हो जाता है कि बंगला के महान उपन्यासकार शरद् बाबू की दृष्टि में प्रेमचंद जी का क्या स्थान था और वे कितने बड़े उपन्यासकार थे. यह संदर्भ श्री महाबीर प्रसाद जी पोद्दार के सुपुत्र एवं प्रसिद्ध समाजसेवी श्री सीताराम सेकसरिया के जामाता श्री परमानंद पोद्दार ने बतायी है. प्रेमचंद जन्म शताब्दी के अवसर पर इस महत्वपूर्ण तथ्य को साहित्य जगत के समक्ष उपस्थित करते हुए प्रसन्नता हो रही है.

—नंदन साहू लेन, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

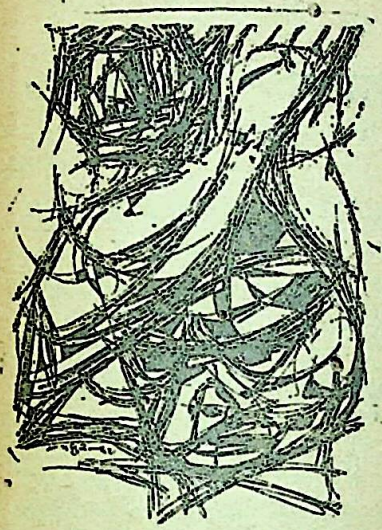

चित्र : मधुर

कफ़न

प्रेमचन्द

(नाट्य रूपान्तर—
स्व० डा० रसीद जहाँ)

[प्रेमचन्दजी की कहानी 'कफ़न' का यह नाटक मैंने विद्यार्थी-संघ की 'कल्चरल कान्फ्रेन्स' के लिए लिखा था. इसमें कोई ख्याल अपनी तरफ से नहीं बढ़ाया और न घटाया. जहाँ-जहाँ कहानी में बातचीत थी वह ज्यों की त्यों रहने देने की कोशिश की, और जहाँ कहीं प्रेमचन्द ने बयान की सूरत दे दी थी, उसको मैंने नाटक की सूरत दे दी. यह नाटक ९ फरवरी १९४२ को लखनऊ में विद्यार्थी-संघ की 'कल्चरल कान्फ्रेन्स' में खेला गया. यह पूरा नाटक जिसके तीन सीन हैं, खुले रंगमंच पर (ओपेन एयर थियेटर) खेला गया था, यानी एक आदमी आकर स्टेज पर अलाव रख गया. फिर दोनों चमार आकर अपनी-अपनी जगह पर बैठ गये और अपना पार्ट अदा करने लगे. जब वह अपना पार्ट कर चुके तो चले गये. फिर स्टेज ठीक करने वाला आदमी एक कुरसी लाकर रखा और अलाव उठाकर ले गया. जब जमींदार अपना पार्ट अदा कर चला गया तो वही आदमी कुरसी उठाकर ले गया. —लेखिका]

पहला दृश्य

(गाँव से बाहर एक चमार की टूटी कोठरी के सामने अलाव है. घीसू चमार और उसका लड़का माधो वहाँ पर बैठे चिलम पी रहे हैं और आलू भून-भून कर खा रहे हैं. एक औरत के दर्द से चीखने की आवाज कोठरी के अन्दर से आती है.)

घीसू—जा ! जाकर बहू को देख. सारा दिन चीखते तड़पते गुजर गया, जा. उठ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देश की आज़ादी
की लड़ाई
के लिए
वैचारिक
युगान्तकारी
भूमिका
अदा
करने वाले
उपन्यासकार सम्राट
स्व० प्रेमचन्द
की
पावन स्मृति
को
प्रणाम है

●

श्री नरेन्द्र अग्रवाल
अग्रवाल आर्नामेण्ट हाउस
ठठेरीबाजार, वाराणसी के सौजन्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माधो—जाकर क्या करूँ ? क्या मेरे पास जादू रखा है, जो जाकर उसको अच्छा कर दूँ ? कल्लू की माँ की बड़ी खुशामद की. वह चार आने माँगती हैं.

घीसू—चार आने कहाँ से आये ? बड़े जुल्मी हैं ये लोग. अब मेहतरानियों को भी सान लगी है. ला आलू इधर दे.

माधो—तुमने बहुत खाया है दादा. मेरे लिए भी कुछ छोड़ोगे ?

घीसू—चल बे. किसने स्यामू को बातों में लगाया था ?

माधो—मैं तो वैसे ही खोद लाता. सुबह उठकर स्यामू ने बहुत गाली-गलौज दी होगी. आधा खेत उखाड़ लाया था.

घीसू—तू इसे आधा खेत कहता है ! दो दिन भी तो ना चले आलू.

माधो—चलें भी तो कैसे चलें, तुम खाते भी तो अनगिनत हो.

(दर्द से चीखने की आवाज)

घीसू—जा बे, उठ न देख. तेरी जोरू दरद में चीख रही है, तू बैठा यहाँ आलू खा रहा है. इस बहू ने बड़ा सुख दिया. साल भर से घर में आई, एक दिन भी भूखे न रहे. कहीं न कहीं मेहनत-मजूरी से सबका पेट ही पाला. और तू जवान आदमी किसी काम का नहीं. पड़ा-ऐंड़ा करता है.

माधो—दादा काम तो तुमने भी कभी नहीं किया.

घीसू—नहीं किया तो क्या हुआ ? हम तो हमेसा गाँव के खेतों से पेट पालते रहे. यह साले तो जब सारा दिन मेहनत मारो तो सेर भर नाज दिखलाते हैं. और जो बगैर मेहनत के इन सालों के खेत उजाड़ने को मिल जायँ तो क्यों हम मेहनत करें ?

(एक और चीख)

माधो—तो दादा हम भी तो तुम्हारे ही लड़के हैं . हम क्यों दो पैसे की मजूरी करें ?

घीसू—बनियाँ हरामजादा भी अब करज नहीं देता. देगा एक रुपया तो लिखेगा दस रुपया. आज साम को मैं गया था, साले ने साफ मना कर दिया.

माधो—कल्लू की माँ भी नहीं आई.

घीसू—अरे कोई आये तो कहाँ से. कुछ पैसे दो पैसे की उम्मीद हो तो कोई आये भी.

(चीख)

घीसू—जा बे ! जाता क्यों नहीं ? वह तो मर रही है, तू यहाँ मजे में बैठा है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माधो—देखकर क्या करूँ ? जो मरना होगा मर जायगा.

घीसू—तू बड़ा बेदर्द है, पापी. साल भर जिस औरत के साथ जिन्दगी का भोगा उसके साथ इतनी बेवफ़ाई ?

माधो—मुझसे उसका तड़पना नहीं देखा जाता, ऐसे हाथ पाँव पटकती है.

घीसू—(गर्म आलू छीलते हुए और गर्म हाल में ही मुँह में रखकर) जा, देख तो ले, पानी ही माँगती हो. उस पूर चुड़ैल का फिसाद होगा. यहाँ तो सयाना एक रुपया माँगता है.

माधो—मैं ना जाता, मुझे तो डर लगता है.

घीसू—डर किस बात का, मैं तो यहाँ हूँ ही.

माधो—तो तुम ही जाकर देख लो दादा.

घीसू—मेरी औरत जब मरी थी तो मैं तीन दिन उसके पास से हिला भी था. और यह मुझपे लजायगी कि नहीं. कभी जिसका मूँह नहीं देखा, आज उसका अकड़ा हुआ बदन देखूँ ? उसे तन की सुध भी तो ना होगी. मुझे देख लेगी तो कर हाथ पाँव भी तो ना पटक सकेगी.

माधो—जो कोई बाल-बच्चा हो गया तो क्या होगा दादा ? सोंठ, गुड़, तेल भी तो नहीं है घर में.

घीसू—सब कुछ आ जायगा, भगवान बच्चा तो दे. और बहू के हाथ-पाँव देख लीजियो जो अभी एक पैसा नहीं दे रहे हैं, वही तब बुलाकर देंगे. मेरे तो हुए, घर में कुछ नहीं था. इसी तरह काम चल गया.

माधो—जो दादा किसी ने ना दिया ?

घीसू—ऐ देख लीजियो जो बच्चा हो गया तो कल ही बनिये की बीवी लल्लू का पुराना कुरता लाकर देगी और ठकुरायन जो आज घर में घुसने नहीं देती, और तेल दे जायगी. अरे हमारी उमर साठ बरस की है, हम इन सबको जानते, आज दो गाली देते हैं, तो क्यों गाली भी खायें और साथ ही मजूरी भी करें. भइया पहले बहू के बच्चा भी तो हो. बाकी का इन्तजाम तो सब भगवान कर देंगे.

(आलू खाते रहते हैं)

घीसू—यह आलू खाते-खाते तो मन भर गया. अरे माधो, वह भोज नहीं भूला. कोई बीस बरस की बात है, ठाकुर की सादी थी. तब से इस किसम का खाना पेट भर नहीं मिला. लड़की वालों ने सबको पूरियाँ खिलाई थीं ! सबको ! छोटे सबने पूरियाँ खाईं और असली घी की. चटनी. रायता. तीन तरह के सूखे साग. रसेदार तरकारी. दही. मिठाई. अब क्या बतलावें उस भोज में कितना सुवाद मि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

कोई रोक नहीं थी, जो चाहो माँगो, और जितना चाहे खाओ. लोगों ने ऐसा खाया कि किसी से पानी ना पिया गया. मगर परोसने वाले भी अच्छे थे. सामने गरम-गरम महकती हुई पूरियाँ डालते जाते हैं. मना करते हैं कि बस नहीं चाहिए. पत्तल को हाथ से रोके हुए हैं, मगर वह है कि अड़े जाते हैं. और जब सबने कुल्ला कर लिया तो एक बीड़ा पान भी मिला. मगर मुझे पान लेने की सुध कहाँ थी. खड़ा भी नहीं हुआ जाता था, चटपट जा कर अपने कम्बल पर लेट रहा. ऐसा फैयाज था वह ठाकुर.

माधो—अब हमें कोई ऐसा भोज खिलाता !

घीसू—अब कोई क्या खिलायेगा. वह जमाना दूसरा था. अब तो सबको किफायत सूझती है. सादी-ब्रियाह में मत खरच करो. क्रिया-करम में मत खरच करो. पूछो, गरीबों का माल बटोर-बटोर कर कहाँ रखोगे ? मगर बटोरने में तो कमी नहीं है, हाँ खरच में किफायत सूझती है.

माधो—तुमने बीस पूरियाँ तो खाई होंगी दादा ?

घीसू—बीस से ज्यादा खाई थीं.

माधो—जो मैं होता तो पचास खाता.

घीसू—पचास से कम तो मैंने भी नहीं खाई होगी. अच्छा अच्छा पटठा था. तू तो उसका आधा भी नहीं है.

माधो— (माधो अंगड़ाई लेकर लेट जाता है) तो दादा ऐसा भोज....

(घीसू चिलम पीता रहा और फिर लेट गया)

(दूसरे दिन सुबह)

माधो—उठो दादा, सबेरा हो गया.

घीसू—(घबराकर उठ बैठता है) बहू कैसी है ?

माधो— मैं तो अभी अन्दर गया नहीं.

घीसू—अब तो जाकर देख. अब डर काहे का है, अब तो सबेरा है.

(माधो उठता है, कम्बल ओढ़कर अन्दर जाता है और वहीं से चीख-चीखकर रोना शुरू कर देता है.)

माधो—हाय रे दादा, बहू मर गई .

(दोनों चीखते हैं. एक दो पास-पड़ोस आ जाते हैं)

घीसू—हे राम क्या करूँ ? घर में कौड़ी नहीं. बहू का कफन कहाँ से लाऊँ. जलाने को लकड़ी कहाँ से लाऊँ.

(माधो बैठकर रोता है.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द जन्मशती
के अवसर पर
उनकी
पावन
स्मृति को
नमन है।

•

मोतीलाल अग्रवाल
मेसर्स अग्रवाल रेडियो
शिवाला, वाराणसी

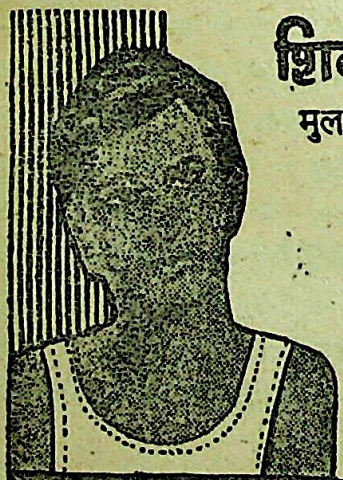

शिव हौजरी की
मुलायम, टिकाऊ और
सुखप्रद परिधान
दरबार
स्नोयी
गोल्डन लोटस
इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता: शिवचरन दास खन्ना
१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घीसू—(बिसूरते हुए) तू यहीं बैठ मैं जमींदार के घर जाता हूँ. कफन के लिए कुछ माँगने.

(आँसू पोंछता हुआ चल देता है.)

माधो—दादा, ठहरो मैं भी चलता हूँ.

(घीसू कुंडी लगाने को कोठरी में जाता है.)

दूसरा दृश्य

(जमींदार का घर. कुरसी पर जमींदार बैठा है. नीचे मुंशी बैठा है. घीसू के रोने की आवाज आती है.)

घीसू—दुहाई है सरकार की ! दुहाई है सरकार की.

जमींदार—मुंशीजी यह कौन है ?

मुंशी—मालूम नहीं हुजूर, बुला लूँ सरकार ?

(जमींदार सिर हिला देता है.)

मुंशी—इधर आ बे, वहाँ क्यों शोर मचा रहा है ?

(घीसू घुसते ही सिर ज़मीन पर टेक देता है. माधो हाथ बाँधकर खड़ा रहता है.)

जमींदार—अच्छा तू है बे घीसू, रोता क्यों है ? अब तो सूरत ही नजर नहीं आती. ऐसा मालूम होता है, तुम इस गांव में रहना नहीं चाहते. न तुझ पर मार का असर, न प्यार का, चोर कहीं का. सारा गाँव बेगार करे और तू गायब रहता है. अब आया है शोर मचाता हुआ.

घीसू—(सर जमीन पर से उठाकर) सरकार बड़ी बिपत में हूँ. माधो की घरवाली रात गुजर गई. दिन भर तड़पती रही सरकार. आधी रात तक हम दोनों उसके सरहाने बैठे रहे. दवा-दारू जो कुछ हो सका, सब किया, पर वह हमें दगा दे गई. अब कोई रोटी देनेवाला भी नहीं रहा. मालिक, हम तो तबाह हो गये. घर उजड़ गया. आपका गुलाम हूं. अब आपके सिवा मिट्टी को कौन पार लगायेगा.

जमींदार—चल दूर हो यहाँ से. लाश घर में गले या सड़े. यूं तो बुलाने से भी नहीं आता. आज जब गरज पड़ी तो आकर खुशामद कर रहा है, हरामखोर कहीं का. बदमाश !

घीसू—मालिक कहाँ जाऊँ ? हमारे हाथ में जो कुछ था वह सब दवादारू में उठा दिया. सरकार ही की दया होगी तो उसकी मिट्टी उठेगी. अब आपके सिवाय और किसके द्वार पर जाऊँ ?

जमींदार—चल दूर हो यहाँ से ! (दो रुपया निकालकर फेंकता है, जिसे घीसू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विश्व-साहित्य को
अपनी कृतियों से
संवर्धित करने वाले
शीर्ष कथा-शिल्पी
स्व० प्रेमचन्द को
प्रणाम है

•

सुरारीलाल केडिया
नन्दन साहुलेन, वाराणसी

शादी जन्मदिन या अन्य
शुभ अवसरों पर

Velvet ®

सुपर स्मूथ
आइसक्रीम

निर्माता:-
वेलवेट आइसक्रीम
गुलाबबाग वाराणसी उ.प्र.
फोन: ६६६४४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठाकर चल देता है.)

तीसरा दृश्य

(बाजार)

घीसू—बाजार गाँव से कितनी दूर है माधो ?

माधो—हाँ दादा.

घीसू—जमींदार साहब ने जो दो रुपये दिये तो औरों ने भी थोड़ा-थोड़ा दिया. पाँच रुपये जमा हो गये. लकड़ी तो गाँव वालों ने जमा कर दी है. जलाने भर को तो मिल ही गई है. क्यों माधो ?

माधो—हाँ, लकड़ी तो बहुत है, अब कफ़न चाहिए.

घीसू—तो कोई हलका-सा कफन लेलें.

माधो—हाँ दादा और क्या. मिट्टी उठते-उठते रात हो जायगी. रात को कफ़न कौन देखता है ?

घीसू—कैसा बुरा रिवाज है कि जीते जी तो तन ढाँकने को कपड़ा ना मिले, उसे मरने पर नया कफन चाहिए.

माधो—कफन तो लाश के साथ जल ही जाता है.

घीसू—और क्या ? क्या रखा रहता है ? यही पाँच रुपये पहले मिल जाते तो....

माधो—दादा, अब तो बहुत देर हो गई. बाजार में घूमते-घूमते थक गये. देखो दादा, वह सामने क्या है ?

घीसू—चलोगे ?

माधो—चलें.

घीसू—पाँच रुपये तो बहुत होते हैं, सबका कफन थोड़े ही खरीदना है.

(माधो और घीसू अन्दर जाते हैं, वहाँ से शराब और कबाब लेकर निकलते हैं.)

घीसू—कफन लाने से क्या मिलता ? आखिर जल ही तो जाता. कुछ बहू के साथ तो ना जाता.

माधो—(आसमान की तरफ देखकर) दुनिया का दस्तूर है. यही लोग ब्राह्मनों को हजारों रुपया क्यों देते हैं ? कौन देखता है कि परलोक में मिलता है या नहीं ?

घीसू—बड़े आदमियों के पास धन है, फूँकें, हमारे पास फूँकने को क्या है ?

माधो—लेकिन लोगों को जवाब क्या दोगे ? लोग पूछेंगे कि कफन कहाँ है ?

घीसू—(हँसता है) कह देंगे कि रुपया कमर से खिसक गया. बहुत ढूढ़ने पर नहीं मिला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अमर कथा-शिल्पी

प्रेमचन्द

को

उनकी जन्मशती के

अवसर पर

हमारी श्रद्धांजलि

•

केवल कृष्ण सेठ

पंजाब प्रेस

पशुपतेश्वर, वाराणसी

राष्ट्रीय बचत योजना के अन्तर्गत नियुक्त महिला प्रधान क्षेत्रीय बचत योजना अभिकर्ता से निम्नांकित प्रतिभूतियों में धन जमा करने में सहायता लीजिए

प्रतिभूति	गुणकों की धनराशि	ब्याज दर	अन्य लाभ
५ वर्षीय डाकघर आवर्ती जमा खाता (रिकरिंग डिपाजिट)	५ रुपये वर्ष के गुणकों में	१०.५ प्रतिशत चक्रवृद्धि परिपक्व होने पर देय	२० रुपये तक के ह में २४ महीने किस्तें जमा होने बीमा का लाभ.
१० वर्षीय संचयी सावधि जमा खाता (सी०टी०डी०)	५ रुपये के गुणकों में कम से कम १० रुपये	५.७५ प्रतिशत चक्रवृद्धि कर मुक्त ब्याज	जमा राशि, जिस आश्रित पत्नी बच्चों के नाम राशि शामिल है. आयकर से छूट मिलत

अधिक जानकारी के लिए जिला राष्ट्रीय बचत कार्यालय सम्पर्क करें अथवा निदेशक, राष्ट्रीय बचत, उ० प्र०, आर. ए बहादुर जी मार्ग (मीरा बाई मार्ग) लखनऊ को लिखें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माधो— (हँसता है) बड़ी अच्छी थी बेचारी बहू. मरी भी तो खूब खिला-पिला के.

घीसू— जा माधो: जाकर दो सेर पूरी तो ले आ. और देख गोस भी लायो. और उधर पीछे तली हुई मछली भी बिकती है, चटपटी. ले एक रुपया, देर ना लगाना. (बोतल में से निकाल कर पीता रहता है फिर उठ कर दो बोतलें लाता है. इतने में माधो भी पत्ते पर रख कर सब चीजें लाता है)

(घीसू और माधो खाते रहते हैं और शराब पीते रहते हैं)

घीसू—हमारी आत्मा परसन हो रही है तो क्या उसे पुन ना होगा ?

माधो—(सिर हिला कर) जरूर से जरूर होगा. भगवान तुम अन्तरयामी हो उसे वैकुण्ठ में ले जाना. वैकुण्ठ में. हम दोनों के हिरदय भरने वाली को दुआ दे रहे हैं. (ठहर कर और मुँह फेर कर) दादा ! ऐसा भोजन तो मुझे उम्र भर ना मिला था.

(घीसू सिर हिला देता है और खाता जाता है)

माधो— क्यों दादा, हम लोग भी तो एक दिन परलोक जाएँगे, क्यों ?

(घीसू खाता रहता है)

माधो— जो वहाँ हम लोगों से वह पूछेगी कि तुमने हमें कफन क्यों नहीं दिया, तो क्या कहोगे ?

घीसू—कहेंगे तुम्हारा सिर ?

माधो—पूछेगी तो जरूर.

घीसू—तू कैसे जानता है कि उसे कफन ना मिलेगा ? तू मुझे अब गधा समझता है ? मैं साठ साल दुनिया में घास खोदता रहा हूँ ? उसे कफन मिलेगा और वह बहुत अच्छा मिलेगा, जो हम देंगे.

माधो—कौन देगा ? रुपया तो तुम चट कर गये.

घीसू—(बिगड़ कर) मैं कहता हूँ उसे कफन मिलेगा. तू मानता क्यों नहीं ?

माधो—कौन देगा, बताते क्यों नहीं ?

घीसू—देगा कौन ! वही लोग जिन्होंने अबकी दिया. हाँ अबकी बार वह रुपये हमारे हाथ ना आएंगे. और अगर किसी तरह आ जाएँ तो फिर हम इसी तरह बैठ कर पीएंगे और कफन तीसरी बार मिलेगा.

(खाते रहते हैं और पीते रहते हैं.)

माधो—दादा यह बोतल सब दुख भुला देती है. देखो उधर वह लोग क्या तमासा कर रहे हैं ?

घीसू—यही बोतल है जो सब कुछ भुला देती है. याद नहीं पड़ता कि हम जिन्दा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वाराणसी विकास प्राधिकरण, वाराणसी

स्वतन्त्रतादिवस के अवसर पर नागरिकों का हार्दिक अभिनन्दन करता है.

प्राधिकरण नागरिकों की आवासीय एवं व्यवसायिक समस्याओं के समाधान हेतु सतत् प्रयत्नशील है.

नागरिकों के सूचनार्थ

१—आवासीय भूखण्डों को क्रय करने के पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि भूखण्ड कि अनधिकृत कालोनी में तो नहीं है. प्रायः कुछ व्यक्ति एक बड़े भूखण्ड अनधिकृत रूप से विभाजन कर विक्रय करते हैं और उसमें निर्धारित खुले एवं सड़कों का प्राविधान नहीं करते. यह आवश्यक है कि भूखण्डों को योजना और विकास अधिनियम के प्राविधानों के अन्तर्गत वाराणसी विकास प्राधिकरण, वाराणसी से विन्यास अथवा सबडिवीजन स्वीकृत करा लें. कोई व्यक्ति बिना विन्यास अथवा सबडिवीजन स्वीकृत कराये कोई भूख बेचता है अथवा खरीदता है तो भूखण्ड का मानचित्र स्वीकार नहीं हो पायेगा.

२—वाराणसी विकास प्राधिकरण से बिना पूर्व स्वीकृति के किसी भी प्रकार निर्माण कार्य न करायें. यह दण्डनीय अपराध है. अनधिकृत भवनों को गिरा जा सकता है जिसपे आर्थिक क्षति होगी.

३—भूमि खरीदने से पूर्व यह अवश्य देख लें कि उक्त भूमि वाराणसी महायोजना या अन्य योजनाओं से प्रभावित तो नहीं है तथा अवाप्ति में तो नहीं है नक्शा स्वीकृति के समय अनावश्यक कठिनाई न हो. यह जानकारी प्राधिकरण कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है.

४—जिन लोगों ने प्राधिकरण से मकान हेतु ऋण लिया है या हायर परचेज मकान लिया है या किराये पर दूकानें/कार्यालय/भवन लिया है या उनके कि अन्य किसी प्रकार का बकाया है, उसका नियमित भुगतान करें अन्यथा कि धिकारी के माध्यम से वसूली कराने पर दस प्रतिशत और देना पड़ेगा.

(जे० एन० द्विवेदी)
सचिव

(वृजमोहन बोहरा)
उपाध्यक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी हैं कि मर गये. खाने को है भी या नहीं.

माधो—अब नहीं खाया जाता दादा. खूब खाया. (जूठी पत्तल उठा कर एक भिखारी के सामने फेंक देता है) ले यह तू भी खा ले.

घीसू—ले जा खूब खा ले, और आसीरबाद दे. जिसकी कमाई है वह तो मर गई मगर तेरा आसीरबाद उसे जरूर पहुँचेगा. रोयें रोयें से आसीरबाद दे, बड़ी गाढ़ी कमाई के पैसे हैं.

माधो—(आसमान की तरफ देख कर) वह बैकुण्ठ में जायगी दादा, वह बैकुण्ठ की रानी बनेगी !

घीसू—हाँ माधो, वह बैकुण्ठ में ना जायगी तो क्या वह मोटे-मोटे लोग जाएंगे जो दोनों हाथों से गरीबों को लूटते हैं और फिर अपने पाप धोने के लिए गंगा में नहाते हैं, मन्दिर में जल चढ़ाते हैं ?

माधो—दादा ! बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दुख भोगा. मरी भी तो कितना झेल के. (रोने लगता है)

घीसू—क्यों रोता है ? खुश हो खुश कि वह माया जाल से मुक्त हो गई, जंजाल से छूट गई. बड़ी भागवान थी कि इतनी जल्दी माया के बन्धन तोड़ डाले. उठो उठ !

(माधो खड़ा हो जाता है, और बाद में घीसू भी खड़ा हो जाता है. दोनों एकदम हंसने लगते हैं और गाना शुरू कर देते हैं.)

ठगनी क्यों नैना झमकाते,
ठगनी————
(फिर गाते-गाते गिर जाते हैं.)

'हंस' वर्ष १२ अंक ७, अप्रैल १९४२
प्रस्तुत०—डा० भानुशंकर मेहता

प्रेमचन्द की कथा-विरासत को लेकर झगड़ा हिन्दी में दो धरातलों पर चलता रहा है. प्रेमचन्द का कथा-क्षेत्र, पात्र, और प्रेमचन्द की संवेदना-दृष्टि. मैं नहीं मानता कि किसी भी लेखक के विषय, क्षेत्र, पात्र या व्यक्तिगत रचना-संसार बाद वालों के लिए अनुकरणीय होते हैं जो चीज परम्परा और विरासत के रूप में विकसित होती है, वह है कथाकार की संवेदना और दृष्टि—उसके सरोकार और अपने कथन के साथ उसकी सम्बद्धताएं. यही वह कारण है, जो एक ही थीम, पात्र या कथन पर लिखने वाले दो लेखकों को अलग कर देता है.

—राजेन्द्र यादव
(प्रेमचन्द की विरासत पृष्ठ ८५)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द जन्मशती के अवसर पर

वाराणसी में प्रेमचन्द कला प्रदर्शनी

●

उद्घाटन

प्रेमचन्द जन्मशती के अवसर पर 'कहानीकार संस्थान', वाराणसी के तत्वाधान में प्रेमचन्द प्रदर्शनी का उद्घाटन दिनांक २१ अगस्त को सायंकाल दीप आलोकित करके, पश्चिमी बंगाल के राज्यपाल श्री त्रिभुवन नारायण सिंह ने, इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन में सम्पन्न किया. उन्होंने प्रेमचन्द के संस्मरणों की चर्चा की और कहा कि वे देश की समस्याओं के प्रति जागरूक साहित्यकार थे. आज देश को प्रेमचन्द की परम्परा के रचनाकारों की जरूरत है जो एक मानवतावादी समाज के निर्माण में जुट कर कार्य करें अध्यक्ष पद से डा० शिव प्रसाद सिंह ने कहा कि प्रेमचन्द का व्यक्तित्व अपराजेय था. उन्होंने देश के लिए एक योद्धा की भांति संघर्ष किया. श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने कहा कि प्रेमचन्द, सर्जक प्रेमचन्द को गतिमान और जीवित रखने के लिए स्वयं हर तरह की मुसीबतें झेलते रहे. उनका नश्वर शरीर आज नहीं है पर सर्जक यशः शरीर हमेशा जिन्दा रहेगा. प्रदर्शनी के संयोजक और स्वागताध्यक्ष प्रो० कमल गुप्त ने कहा कि प्रेमचन्द अपनी लेखनी की पैनी धार से देश की आजादी की लड़ाई अन्तिम क्षण तक लड़ते रहे. हम जो भी कर रहे हैं, वह महज एक फर्ज के नाते नहीं बल्कि एक कर्ज के नाते कर रहे हैं, चुनौतियों का सामना करने वाले प्रेमचन्द का व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणादायी है. श्रीकृष्ण चन्द बेरी ने प्रेमचन्द के गुणों की चर्चा की.

चित्रों और कलाकृतियों में प्रेमचंद

●

इस प्रदर्शनी में सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग द्वारा प्रेमचन्द के जीवन से जुड़े सन्दर्भों के छायाचित्र प्रदर्शित किये गये, जिनमें लमही ग्राम, वाराणसी, गोरखपुर, कानपुर आदि नगर के सन्दर्भित छाया-चित्रों के साथ तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं के चित्र, प्रेमचन्द के कुछ हस्तलेखों और 'ईदगाह' कहानी के विविध दृश्यों के छायांकन प्रदर्शित किये गये. भारत कला भवन के पास से सुलभ प्रेमचन्द के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

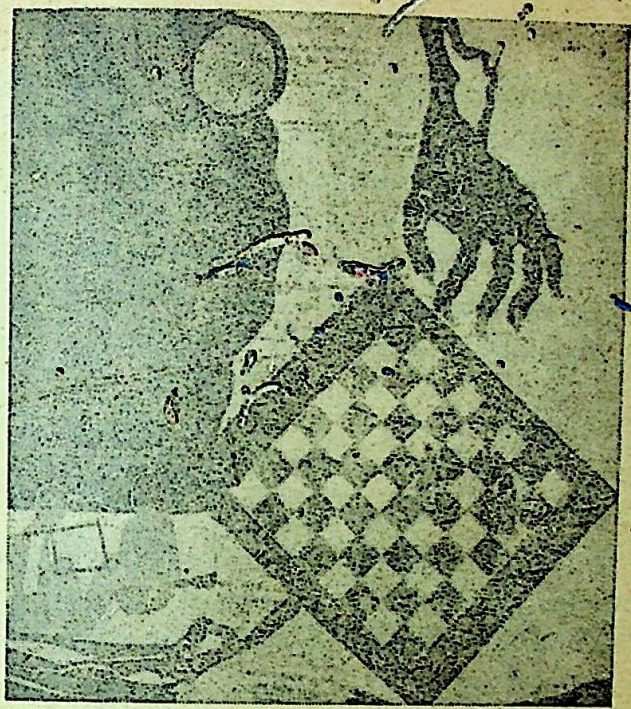

शतरंज के खिलाड़ी (कलाकृति 'अंजान')

कालीन साहित्यकारों के चित्रों के साथ, 'गोदान', 'काश्मीरी सेब' और 'जुर्माना' की पाण्डुलिपियों के छायाचित्र प्रदर्शित किये गये. श्री मुरारीलाल केडिया के संग्रहालय में सुरक्षित प्रेमचन्द के वस्त्रों, चश्मा, जूता आदि को प्रदर्शित किया गया. प्रदर्शनी में अमृत राय के पास से सुलभ प्रेमचन्द के पत्रों के छाया-चित्र भी प्रदर्शित किये गये. प्रेमचन्द का सम्पूर्ण प्रकाशित साहित्य श्री कृष्ण चन्द्र बेरी की ओर से प्रदर्शित किए गए.

प्रदर्शनी की इस धारा से अलग अपनी स्वतन्त्र अस्मिता और निजता को आकार देती हुई कृतियों में श्री कुमार राजेन्द्र द्वारा ७" × ९" के आकार में चटक भारतीय रंगों से बनाये गये लगभग ८० चित्रों में सम्पूर्ण 'गोदान' का आकलन अत्यन्त आकर्षक था. इसी प्रकार श्री कुमार जितेन्द्र द्वारा प्रेमचन्द और उनके संघर्षों की अन्तहीन यात्राओं को और उनके व्यक्तित्व के सम्पूर्ण बाह्यान्तर विस्तार को प्रयोगधर्मी छायाचित्रों से प्रदर्शित करने की अपनी अलग मौलिकता मानी जायेगी.

प्रदर्शनी में उपर्युक्त दर्शनीय सामग्रियों के अतिरिक्त जो दर्शकों के अत्यधिक आकर्षण के केन्द्र थे, वे थे. श्री आर. एम. अन्जान द्वारा प्रेमचन्द की नौ कहानियों पर बाजार से खरीदे गये साधारण पुड़िया वाले रंगों से बनाये गये भाववादी, अभिव्यक्ति प्रवण, सम्वेदनापूर्ण और जीवन्त प्रयोगधर्मिता के मौलिक उपादानों से संयुक्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी की आत्मा को सम्प्रेषित करने वाली प्रभावशाली कलाकृतियाँ. प्रदर्शनी के हुसने के पूर्व भवन की सीढ़ी पर ही छोटे-बड़े कैनवास बोर्ड पर बनाई गयी दो कला-कृतियां—'पूस की रात' और 'कफन' कहानी पर आधारित थीं. 'पूस की रात' कहानी के भीतर किसान की जो आर्थिक और परिवेशगत स्थिति है, कशमकश है और खेत के मोह को तोड़ कर मजदूर बनने की अनाहूत नियति है, उसे साधारण पुड़िया बनाने रंगों और डोरे की टेढ़ी-मेढ़ी आवृत्तियों से कलाकार ने बड़ी प्रखरता के साथ सम्प्रेषित किया है. इस चित्र के बगल में थोड़े बड़े कैनवास पर बनायी गयी कलाकृति 'कफन' कहानी को पारिभाषित करती हुई-सी प्रतीत होती है. 'कफन' वस्तुतः मानवीय सम्बन्धों पर पड़े हुए कफन की प्रतीकार्थी अभिव्यंजना है जहां सारे सम्बन्ध अपनी सार्थकता और परिभाषा खो चुके हैं. चित्र में प्रसव-पीड़ित बुधया की यातना और भयानक निरीहता को अत्यन्त तीक्ष्णता के साथ मर्मस्पर्शी भावोद्दीप्त रंगों में चित्रकार ने अत्यन्त सफलता के साथ चित्रित किया है. यह चित्र अपनी इस प्रतीकाभिव्यक्ति के नाते भी सर्वथा विशिष्ट है कि बुधिया के गर्भ में पलने के नाम छटपटा रही जिन्दगी और अलाव में भुनते आलू में कहीं कोई फर्क नहीं है. इसी तरह तेज आग प्रभाव छोड़ने वाले काले भूरे रंगों के साथ-साथ अखबार की कतरन के इस्तेमाल से बनाई गई 'नमक का दरोगा' कहानी पर कलाकृति का प्रभाव और संकेत दोनों ही महत्वपूर्ण हैं. कलाकृति में दरोगा की आकृति अपनी गुमान और दर्पभरी मुखमुद्रा और दृढ़संकल्पी मनःस्थिति से यह बात भी सम्प्रेषित करती प्रतीत होती है कि नमक का दरोगा कोई और नहीं, बल्कि स्वयम् प्रेमचन्द के जीवन की ही वह प्रतीति है, जिसने पूरी निष्ठा के साथ जिन्दगी भर साहित्य के उद्देश्यों और संकल्पों के साथ ईमानदारी बरती, नमक का हक अदा कर दिया. वह कभी झुके नहीं, किसी नहीं किसी कीमत पर भी—तब भी नहीं जब बरतानियाँ सरकार की ओर से प्रस्तावित राय साहबी का खिताब प्रेमचन्द ने यह कह कर वापस कर दिया था कि यह जनता द्वारा दी गयी रायसाहबी ही कुबूल है.

अन्य कलाकृतियों में 'जुलूस' कहानी की बहुत दूर तक फैली लकीर बँधी अनुशासित भीड़ के कन्धे पर उठे शहीद के शव के साथ युग की जनचेतना और जागरूकता जैसे पर्याय बन गयी है. मजबूत कदमों के सहारे, अपने ऊपर साम्राज्यवाद की क्रूरता के प्रतीक स्वरूप उभरे हुए घोड़े की टाप की भयानकता की परवाह किये बगैर जुलूस का आगे को बढ़ते जाने की सरगर्मी को लाल और गहरे भूरे रंगों के माध्यम से भली प्रकार उभारा गया है. अंजान की अन्य कलाकृतियों में 'शतरंज के खिलाड़ी' अपनी कोलाज शैली में, अखबार, शतरंज के बोर्ड और मुहरों के प्रयोग के साथ, ऊंचाई पर साम्राज्यवाद के प्रतीक स्वरूप रक्ताभ सूर्य का चित्रण अच्छा बन पड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

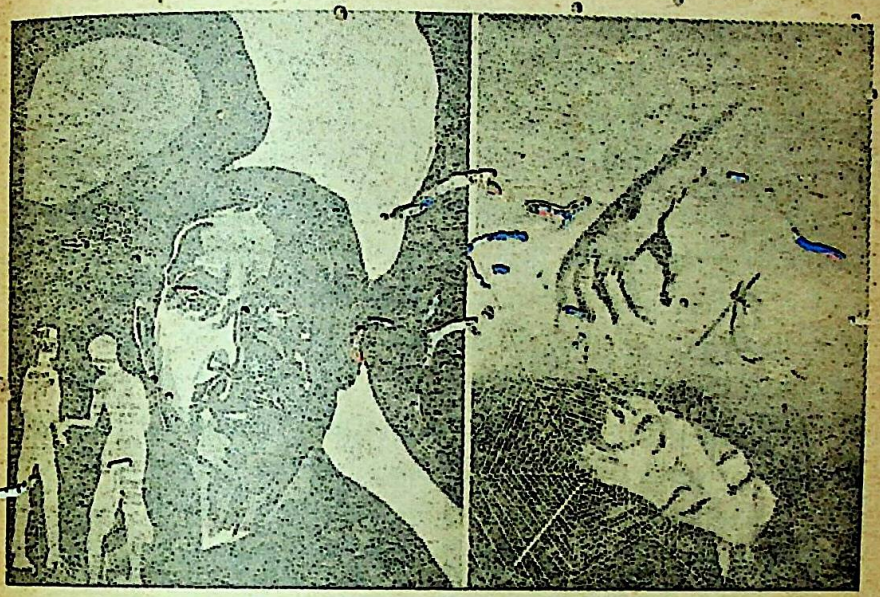

'नमक का दरोगा' और 'सवा सेर गेहूँ' कहानियों पर आधारित कलाकृतियाँ (अंजान)

है. शोषण प्रक्रिया ही शतरंज का खिलाड़ी है—यह बात चित्र के खूंखार पंजे से व्यक्त हो जाती है. 'सवा सेर गेहूँ' कहानी पर बनाई गई कलाकृति में ठंडे रंगों की संयोजना शोषण की दानवी गिरफ्त (जिसे मकड़ी के जाले से दिखायी गयी है) की परिणति की परिचायक बन गयी है. इसी प्रकार 'आत्माराम' कहानी पर बनी कलाकृति अपनी सघन गहन रंगलेपन से बनाई गयी पृष्ठभूमि पर चित्रित पिंजरे, तोते और जिज्ञासु लोलुप दृष्टि के कारण एक दार्शनिक प्रभाव छोड़ जाती है—पिंजरा सिर्फ लोहे का ही नहीं होता, आदमी खुद भी एक पिंजरा है जो तोते (आत्मा) के उड़ जाने पर खाली-खाली शेष बच रहता है. इसी प्रकार 'ईदगाह' कहानी के लड़के के भीतर उमड़ रही करुणाकी आन्तरिक व्यथा को एक आँख को अदृश्य करके शांत रंगों की संयोजना के द्वारा दिखाया गया है. 'ईदगाह' कहानी पर बनी कलाकृति की ही भाँति 'बड़े भाई साहब' कहानी की आक्रान्त मुखाकृति का ट्रीटमेण्ट और अप्रोच, दोनों कथानकों की मार्मिक सहृदया का सहयात्री और समान सम्प्रेषणीयता का संवाहक तथा सहभागी है.

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि प्रेमचन्द की उपर्युक्त कहानियों को रंग संधान के द्वारा पढ़ने की कोशिश एक कामयाब कोशिश थी. अलबता सभी चित्रों को कहानी के कथ्य को सम्प्रेषित करने का माध्यम मान कर बनाने की कलाकार की विवशता, उसे कलात्मक अभिव्यक्ति और कला की वास्तविक दृष्टि से दूर भी करती है, किन्तु जहाँ तक कहानी की आत्मा के प्रति रंगों के माध्यम से ईमानदार रहने की बात है 'अंजान' निश्चय ही बधाई के पात्र हैं. ■■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रदर्शनी समापन

प्रेमचन्द प्रदर्शनी का समापन, वि०वि० संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति पं० करुणापति त्रिपाठी के मुख्यातिथ्य तथा पं० लक्ष्मीशंकर व्यास के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ. इस अवसर पर त्रिपाठी जी ने प्रेमचन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा कि उनका दोनों पक्ष अत्यन्त व्यापक था. वे प्रेरणादायी साहित्यकारों की शृंखला में अगली कड़ी हैं. उन्होंने समाजोत्थान, व्यक्तित्व और राष्ट्रोत्थान के लिए निरन्तर संघर्ष किया. वस्तुतः वे मानवतावादी थे पर उससे भी अधिक वे मानववादी साहित्यकार थे. अध्यक्ष पद से बोलते हुए पं० लक्ष्मीशंकर व्यास ने प्रेमचन्द के व्यक्तित्व के विविध पक्षों की विस्तृत चर्चा की. आपने कहा कि प्रेमचन्द सतत रूप से एक संघर्षशील, विचारशील और मननशील व्यक्तित्व का नाम है. वे एक पूर्ण व्यक्ति, एक सफल सम्पादक और एक युगसर्जक रचनाकार थे. उनका व्यक्तित्व और साहित्य समाज और देश के लिए समर्पित था. उप सूचना निदेशक श्री ठाकुर प्रसाद सिंह ने कहा कि प्रेमचन्द काशी की उस गरिमा मंडित परम्परा के रचनाकार थे जिसका सूत्र भारतेन्दु से आरम्भ होता है. ऐसे साहित्यकार विरले हैं जो देश के लिए जीते हैं, औरों के लिए ही खुद को निछावर करते रहते हैं. प्रेमचन्द का साहित्य अपने वैविध्य के कारण हर वय और वर्ग तथा काल के लिए सार्थक और महत्त्वपूर्ण है. समापन गोष्ठी के आयोजक प्रो० कमल गुप्त ने कहा कि प्रेमचन्द का महत्व इसलिए है कि उन्होंने संस्कृत वांगमय और हिन्दी की कृष्ण पूर्ववर्ती वीर, भक्ति और शृंगारकालीन साहित्यधारा से अलग हट कर अपने साहित्य में आम आदमी को केन्द्रबिन्दु के रूप में प्रतिष्ठित किया. दूसरी बात यह कि वे एक बड़े मकसद के साहित्यकार थे और वह मकसद था देश की आजादी. उनका लेखन एक कमजोर आदमी की एक मजबूत लड़ाई का परिचायक है. श्री कृष्ण प्रसाद अवस्थी 'अशोक', श्री लालधर 'प्रवासी', डा० भानुशंकर मेहता तथा श्री राजशेखर ने प्रेमचन्द के जुझारु और मानवतावादी गुणों की चर्चा की. अन्त में 'कहानीकार संस्थान' की ओर से प्रो० कमल गुप्त ने प्रदर्शनी के आयोजन में विशेष सहयोग के लिए उत्तर प्रदेश सूचना विभाग, भारत कला भवन, श्री मुरारीलाल केडिया, श्री अमृत राय, चित्रकार श्री आर. एम. अन्जान, कुमार राजेन्द्र, कुमार जितेन्द्र तथा इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन के पदाधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द प्रदर्शनी की समापन गोष्ठी

प्रेमचन्द जन्मशताब्दी पर 'कहानीकार संस्थान' वाराणसी के तत्वावधान में आयोजित प्रेमचन्द प्रदर्शनी की समापन गोष्ठी में प्रेमचन्द के कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कमल गुप्त. सामने की ओर अंजान की कलाकृति 'शतरंज के खिलाड़ी' के आगे बैठे हुए संस्कृत विश्वविद्यालय के भू० पू० कुलपति पं० करुणापति त्रिपाठी (मुख्य अतिथि), पं० लक्ष्मीशंकर व्यास (अध्यक्ष), उ० प्र० सूचना उपनिदेशक श्री ठाकुर प्रसाद सिंह एवं श्री कमला प्रसाद अवस्थी 'अशोक'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्माण और
दीर्घकालीन सेवा
में
प्रख्यात
आनसाल !

ओम वाटर पम्प (ए. सी.)

के बाद
अब
प्रस्तुत है—
शानदार और
टिकाऊ

ओम टेबुल फैन

निर्माता—
मेसर्स श्रीयोगिनी इलेक्ट्रानिक्स
शिवाला • वाराणसी
फोन—६५६९८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द

की

पुण्य स्मृति

को

सादर नमन

●

राधेश्याम वाजपेयी

मेसर्स अनिल इंजीनियरिंग

मलदहिया, वाराणसी

कहानीकार सदस्यता कूपन

व्यवस्थापक दिनांक.....

के ३०/३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) वाराणसी-१

महोदय

मैं 'कहानीकार' द्वैमासिक पत्रिका का सदस्य बनना स्वीकार करता/करती हूं. इस हेतु मैंने वार्षिक सदस्यता शुल्क ६) धनादेश (एम० ओ०) द्वारा, जिसकी पोस्ट रसीद संख्या.....है, दिनांक.....को भेज दिया है.

नाम.....

पूरा पता.....

.....हस्ताक्षर.....

- इस कूपन के द्वारा सदस्य बनने पर पत्रिका का एक पूर्व प्रकाशित अंक आप को अतिरिक्त (निःशुल्क) भेजा जायेगा.
- पत्रिका की नमूने की प्रति प्राप्त करने के लिए ३० पैसे का टिकट भेजें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस युगद्रष्टा
की
पुण्य स्मृति
को
प्रणाम है,
जिसने
देशवासियों में
देशभक्ति
और
राष्ट्राभिमान
की
उदात्त भावनाओं
को
अभिसिंचित किया

●

श्यामलदास साहु
हिन्दुस्तान टैक्स मैन्यू० कम्पनी
साहु गोपाल दास लेन, वाराणसी
फोन—६३६२६, ५५७५७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारतीय स्वतन्त्रता
आंदोलन में
अपनी लेखनी से
जनजागरण का मंत्र
फूंकने वाले कथा-शिल्पी
प्रेमचन्द को
प्रणाम

●

अमर दत्त —

अनूप प्रिण्टर्स, रामापुरा, वाराणसी

स्थापित वर्ष १९४९-५० ● तार—गन्ना संघ ● दूरभाष—४५६३४,४४२९७(पीबीएक्स)

उत्तर प्रदेश की १३५ सहकारी गन्ना समितियों की सर्वोच्च संस्था

सदस्य गन्ना समितियाँ व उनके लगभग २३ लाख सदस्य गन्ना किसानों के हितों की सुरक्षा एवं उनके संगठनात्मक मामलों में आवश्यक सहायता करने, उर्वरकों एवं अन्य खादों, कीटनाशकों, उन्नतिशील बीजों तथा अन्य आवश्यक उपकरणों के प्रबन्ध, वितरण व्यवस्था कर, विकास कार्यों को बढ़ावा देने में सतत् यत्नशील हैं.

प्रेस यूनियन फेडरेशन प्रेस, गन्ना समितियों तथा सहकारी चीनी मिलों की मुद्रण आवश्यकताओं की पूर्ति करता है.

किसानों में वैज्ञानिक ढंग से उन्नतशील कृषि एवं ज्ञान प्रसार हेतु 'गन्ना मासिक' पत्रिका का प्रकाशन करता है. ● उपलब्धियां [वर्ष '७८-७९]

अंश पूँजी	१४.७८ लाख रुपया	कार्यरत पूँजी	१७७२.४० लाख रुपया
निजी पूँजी	९७.६८ लाख रुपया	शुद्ध लाभ	४६.५४ लाख रुपया

उत्तर प्रदेश सहकारी गन्ना समिति संघ लि०
१२, राणा प्रताप मार्ग, लखनऊ.

बी० पी० मिश्र
प्रबन्धक निदेशक

भोलानाथ तिवारी
आई० ए० एस०
गन्ना अयुक्त, उ० प्र० एवं प्रशासक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेमचन्द जन्मशती

हिन्दी साहित्य

और

समस्त राष्ट्र के लिए

एक

पुण्य पर्व है

●

शंकर लाल मेहरोत्रा

चित्रा, चौक, वाराणसी

नकली माल से सावधान

प्रत्येक जिले में

यू० पी० कोआपरेटिव फेडरेशन लि०

की दुकान से

जी० ई० सी०, सीमेन्स, क्राम्पटन, बाटली ब्वाय, ज्योति

एन० जी० ई० एफ०, हिन्दुस्तान ब्राउन बोबरी

किर्लोस्कर के

असली गारन्टी शुदा बिजली मोटर

निर्धारित मूल्य एवं बैंक ऋण के चेक पर

क्रय कर लाभ उठायें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दलित

पीड़ित

और

शोषित

वर्गों

के

उत्थान के लिए

समर्पित

रचनाकारों

में

अग्रणी

स्व० प्रेमचन्द की स्मृति

को

प्रणाम

●

राज कुमार मेहरा

मेसर्स श्रीसिल्क मिल्स

इण्डस्ट्रियल इस्टेट, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हम कहानियों में उपदेश नहीं चाहते लेकिन विचारों को उत्तेजित करने के लिए, मन के सुन्दर भावों को जागृत करने के लिए, कुछ न कुछ अवश्य चाहते हैं. कहानी वही सफल होती है जिनमें इन दोनों में से—मनोरंजन और मानसिक तृप्ति में से एक अवश्य उपलब्ध हो.....'

—प्रेमचन्द

●

श्री सन्तोष कुमार केजरीवाल
प्रकाश कम्पनी, सिगरा, वाराणसी
के सौजन्य से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

भारतीय जनता

की

विपन्नता, दारिद्र्य

अन्धविश्वास

दासत्व

और

शोषण की

भयंकर प्रक्रिया

और

मानसिकता पर

तीखा प्रहार करने वाले

स्व० प्रेमचन्द

की

पुण्य स्मृति को

प्रणाम

●

ताराचंद मल्होत्रा
मेसर्स [illegible] सारीज
[illegible] सुखलाल साहु, [illegible]
फोन कार्यालय-५२५९४, ५२९०४. आवास-६४६[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यक्तिगत

सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में

नैतिक, प्रगतिवादी

और राष्ट्रवादी मूल्यों की

स्थापना के लिए

जीवन पर्यन्त

सतत संघर्षरत

और

सचेष्ट रहने वाले

यशस्वी साहित्यकार

युगचिन्तक मनीषी

एवं कल्पनाशील युगस्रष्टा

स्व० मुंशी प्रेमचन्द

की

जन्मशती हमारे लिए

पुण्य पर्व है.

●

नगर महापालिका, वाराणसी, द्वारा प्रसारित

कमल गुप्त द्वारा कहानीकार प्रकाशन के लिए, कहानीकार मुद्रण संस्थान, के. ३०/
अरविन्द कुटीर (निकट भैरोनाथ) वाराणसी से सम्पादित, प्रकाशित एवं मुद्रित.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौधरी ब्रदर्स
ठठेरी बाजार • वाराणसी • फोन
चौधरी साड़ी सेन्टर ८५ बी मेघदूत • मेरीनड्राईव • बम्बई-२
सहेली ६ महालक्ष्मी चैम्बर्स • २२ वार्डन रोड • बम्बई-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शुभ कामना

साड़ियों
में
सौन्दर्यमयी
गरिमा
का
वैभव और
आकर्षण

चित्रकला

चौक • वाराणसी-२२१००१ • फोन ५२[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ौर अप्रेम की कहानियाँ

ज्ञानोदय

शिष्ट कहानियों
पत्रिका

अंक :—

रातों का एक सम्पूर्ण
मक, मनोवैज्ञानिक उपन्यास
अन्य कहानियाँ

र्चित उर्दू उपन्यास
त देर कर दो' का
रावाहिक
हवां अंश

स्थायी
छ स्याह : कुछ सफ़ेद
रिहास पृष्ठ
आपने लिखा है
ई-किताबें
स्पूलाएड पर लिखा साहित्य
कविताएं

वर्ष : १० ■ पूर्णांक : ५७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चौधरी ब्रदर्स
ठठेरी बाजार • वाराणसी • फोन
चौधरी साड़ी सेन्टर ८२ बी मेघदूत • मेरीन ड्राइव • बम्बई-२ • फोन
दिल्ली : महालक्ष्मी चेम्बर्स • २२ वार्डन रोड • बम्बई-२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अनोखी नई विभिन्न प्रकार की पालिसियों
की जानकारी के लिए क्या आप
अपने बीमा एजेन्ट से मिले हैं?

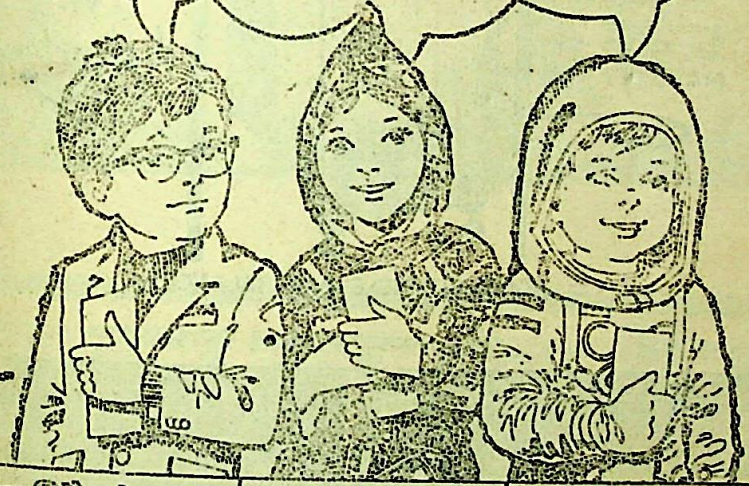

'मनी बैक' पालिसी

पालिसी की अवधि से पहले निश्चित समयों पर अन्य लाभों से शीघ्र तथा अधिक रकम मिलती है, और पूरी बीमा राशि के लिए जीवन सुरक्षा अन्त तक रहती है।

'कैश एड कम' पालिसी

हर पांचवे साल बीमा राशि के एक भाग मिलने की गारन्टी– और बोनस पूरी बीमा राशि पर– साथ ही जीवन भर आपकी सुरक्षा।

'प्रोग्रेसिव प्रोटेक्शन' पालिसी

निश्चित समयों पर पालिसी की रकम बढ़ जाती है। इसके लिए फिर से प्रस्ताव पत्र भरने या डाक्टरी कराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

बदलते समय के साथ साथ...
बदलती आवश्यकताएं

लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन आफ इण्डिया

decunha/LIC/38 HIN

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FAST

ACCURATE

Easy MANIPULATION

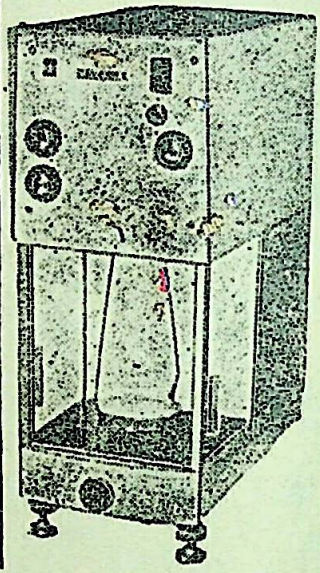

a balance of distinction

POPULAR SINGLE-PAN-BALANCE

MODEL NO. SB-1

PERFORMANCE DATA		DESIGN DATA	
Capacity	100 gms	Damping	
Range of Optical Scale	100 mgm	Knife edges and planes	Fine Agate
Sensitivity 1 Vernier Graduation	= 0.1 mg	Pan	Non-magnetic chrome-nickel
Readability 1 Vernier Graduation	= 0.05 mgm	Weights	Non-magnetic Stainless
Accuracy of set of weights	± 1 mg	Projection Lamp	
Accuracy in optical range for differential weighing	± 0.5 mg	Housing	
System	Substitution	Base Plate	

GRAM. POPULAR

POPULAR BALANCE WORKS

PHONE

यस. ८।२२३–सी–१ खजुरी पाण्डेयपुर, वाराणसी. फोन : ५२९६७

सोल सेलिंग एजेण्ट

दी साइण्टिफिक इंस्ट्रूमेण्ट कम्पनी

हेड आफिस–६ तेज बहादुर सप्रू रोड, इलाहाबाद • शाखायें–बम्बई, दिल्ली, कलकत्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

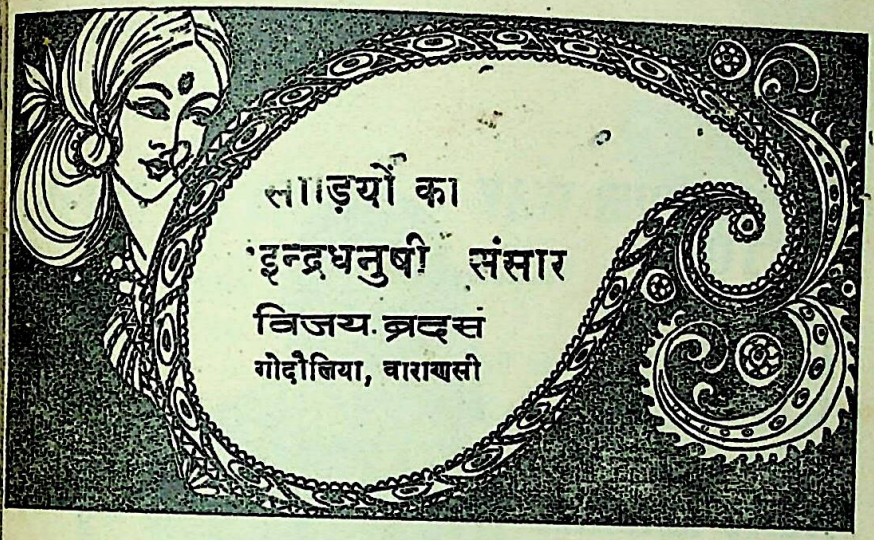

ताक़त का नया दौर

अपनी ताक़त को बनाए रखने के लिए ओकासा की चांदी चढ़ी टॉनिक टिकियाँ लीजिए। शक्ति और स्फूर्ति के लिए मशहूर टॉनिक ओकासा। तंदुरुस्ती की एक निशानी ओकासा।

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चांदी वाली
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलती हैं।

OKASA CO. PVT. LTD.,
12A Gunbow Street,
P. B. No. 396, Bombay 400001.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

COOK YOUR WAY TO YOUR HUSBAND'S HEART... WITH PURE AND TASTY AGRO MASALA

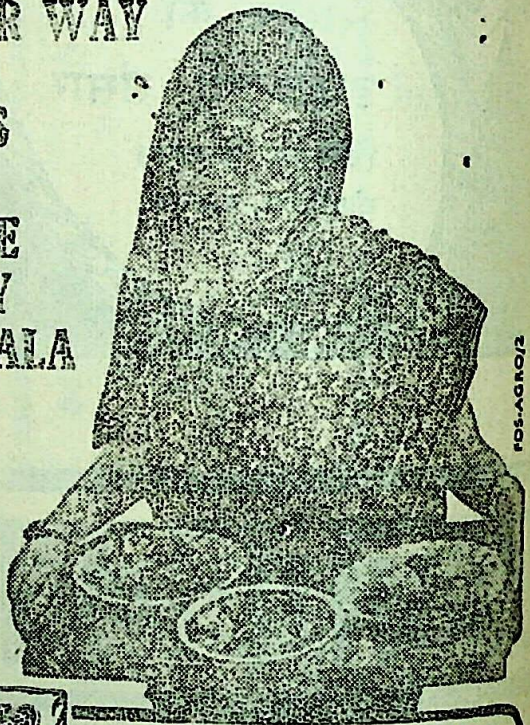

REASONS:
- ★ Agro Masala offers a wide variety.
- ★ Purity in every grain of Agro Masala
- ★ Agro Masala suits all tastes
- ★ The mouth-watering aroma of Agro Masala
- ★ Agro Masala made from the finest hand-picked Spices

Even Grand Mother would use Pure Agro Masala if she could

U.P. STATE AGRO INDUSTRIAL CORPORATION LTD. (P.E.D.)
24, VIDHAN SABHA MARG, LUCKNOW (U.P.)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेम और अप्रेम कहानियों
का अङ्क

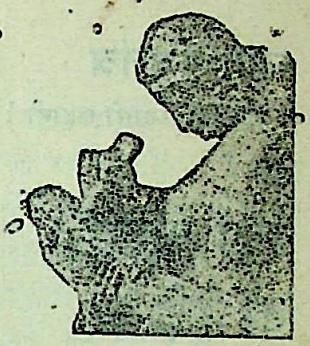

कहानीकार

(न०-फ०'७७ संयुक्तांक)
वर्ष १० : पूर्णाङ्क ५७

सम्पादक—
कमल गुप्त

वार्षिक : छः रुपये
विदेश में : पन्द्रह रुपये
प्रति अंक : एक रुपया

कार्यालय—
के.३०।३७ अरविन्द कुटीर
(निकट भैरवनाथ)
वाराणसी-१.फोन६६६६५

कहानियाँ

नया पंचतन्त्र	६	विनायक
प्रेयसी (गुजराती उपन्यास)	८	ईवाडेव
सफ़र खत्म नहीं होते	६०	ओम प्रकाश
अस्वीकृतियाँ	७८	सुभाष सिन्हा
परिणति	८६	राकेश श्रीवास्तव

धारावाहिक उपन्यास

बहुत देर कर दी (उर्दू)	७१	अज़ीम मसरूर

अन्य स्तम्भ

कुछ स्याह : कुछ सफ़ेद	९०	कमल गुप्त
परिहास पृष्ठ	९८	'मधुर'
सेलुलाएड पर लिखा...	९९	क०गु०
नई किताबें	१००	डा० युगेश्वर
आपने लिखा है	१०१	

॥ श्रद्धांजलि ॥

हिन्दी साहित्य के यशी और यशस्वी उपन्यासकार यशपाल जी नहीं रहे. शरीर से थके पर मन से सशक्त यशपाल जी अपनी आगे की रचना के बारे में सोचते रहते थे. पिछले दिनों उनके निवास स्थान पर भेंट की और 'कहानीकार' के स्तंभ 'मैं अपनी नज़र में' के लिए लिखने का आग्रह किया तो वे बोले, 'खुद को सही ढंग से पकड़ पाना बड़ा मुश्किल होता है भई. बढ़ा-चढ़ा कर लिखना तो सबसे ज्यादा आसान बात है.'

मैंने कहा, 'इसीलिये तो उन सबसे नहीं कहता जिन्हें ऐसा रोग होता है.'

वे हँसने लगे. बोले, 'ठीक है, कोशिश करूँगा कि खुद को पहचानूं, पूरे तौर पर पहचानूं और उसे पकड़ कर सामने लाऊँ, पर अभी तो इस बीमारी ने जकड़ रखा है. ज़रा इससे मुक्त हो लूँ तो ज़रूर लिखूंगा.'

लेकिन वे नहीं रहे. लेकिन नहीं, वे हमारे बीच हमेशा हैं, हमेशा रहेंगे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया पंचतंत्र

(चौदहवीं फंतासी कहानी)

मरा आदमी दो टके का

लखपति से करोड़पति बनने में तो देर नहीं लगी लेकिन करोड़पति हो जाने के बाद जब गाड़ी धीरे खिसकने लगी तो सेठ जी को लगा कि अरबपति बनने का उनका स्वप्न, मात्र स्वप्न ही रह जायेगा. अब यदि उन्हें अरबपति बनना ही था तो उनके लिए अविलम्ब कोई नया व्यापार आरम्भ करना बहुत ही आवश्यक था क्योंकि वर्तमान मिलें लाभ के चरम बिन्दु पर पहुँच चुकी थीं और उनसे अब अधिक आशा करना व्यर्थ था.

मिल का ध्यान आते ही हज़ारों मज़दूर कीड़े मकोड़ों ऐसे सेठ जी के मस्तिष्क में रेंगने लगे जो लाखों रुपये की मज़दूरी रोज टिड्डी ऐसे चट कर जाते हैं और सेठ जी के बैंक के आँकड़े पर चर्बी चढ़ने ही नहीं पाती.

युद्ध के भी कोई आसार निकट भविष्य में दिखलाई नहीं पड़ रहे थे. ऐसी स्थिति में यदि व्यापार में लाभ उठाया जा सकता है तो किसी वस्तु के आयात लाइसेन्स मिल जाने पर या किसी निर्यातिक वस्तु के बने-बनाए बाज़ार उपलब्ध हो जाने पर परन्तु निर्यात की कोई ऐसी वस्तु सेठ जी की समझ में नहीं आ रही थी जिसके उत्पादन में कठिनाई न हो और दिन-दूनी रात-चौगुनी उस वस्तु की माँग भी बनी रहे.

सोचते-सोचते सेठ जी का ध्यान सामने रखे अपने नरम काले जूतों की तरफ़ गया. जानवर की खाल से भी आदमी ने क्या-क्या चीज़ बना डाली. शेर की खाल, चीते की खाल, हिरण की खाल—कितनी कीमती वस्तुएँ हैं ये पर अब तो जानवर भी कम होते जा रहे हैं और उधर सोचना भी व्यर्थ है.

खाल से मुनाफ़े की बात जुड़ी तो सेठ जी कल्पना लोक में उतर गये और सोचने लगे—काश आदमी के भी जानवरों ऐसी खाल होती जिस पर सुन्दर फर होता तो उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निर्यात में कोई बाधा न थी क्यों कि अविकसित व विकासशील देशों में आदमी की पैदावार भी खूब होती है और मरते भी खूब हैं. फिर तो वह अपनी फैक्ट्री में नियम बना देते कि जो मरने के बाद फैक्ट्री को अपनी खाल बेचेगा उसी को फैक्ट्री में नौकरी मिलेगी. इस तरह मरियल से मरियल मज़दूर भी मरते-मराने कुछ न कुछ दे जाता.

कल्पना लोक से स्वप्न लोक की यात्रा सरल व सुखद होती है. देखते-देखते सेठ जी की नाक बोलनी शुरू हुई और वह स्वप्न लोक में पहुँच गये. वहाँ उन्होंने देखा, तमाम आदमी लाइन लगाये खड़े हैं जिनके जिस्म पर सफ़ेद फरदार खाल हैं और वह एक-एक करके उन आदमियों की खाल उतरवा रहे हैं. इस क्रिया में एक मज़दूर सेठ जी से हुज्जत कर रहा था और कह रहा था, 'सेठ जी मांस तो आप हम सब का पहले ही ले गये अब ठठरी पर केवल खाल बची है,उसे तुम उतरवाये ले रहे हो ?' मगर मज़दूर का हरामीपन सेठ जी को कभी बर्दाश्त नहीं हुआ. आज भी स्वप्न में वह एक दम चीख पड़े, 'मैं किसी को छोड़ नहीं सकता—खाल का व्यापार किया है, मज़ाक नहीं किया है.'

■

जंगल के जंगल समाप्त होते जा रहे थे और उनकी जगह शहर और फैक्ट्रियाँ उगती आ रही थीं. जंगल के जानवर सब बड़े व्याकुल थे. आदमियों ने हर तरह से उन्हें मिटा कर ही दम लेने की ठान रखी थी. जानवर सचमुच पृथ्वी से समाप्त हो जाने की स्थिति में पहुँच चुके थे. बाज़ारों में उनका मांस बिकता, विदेशों में उनकी खाल.

उस दिन सारे जानवरों की सभा का आयोजन इसी समस्या पर विचार हेतु किया गया था. बड़े विचार-विमर्ष व वाद-विवाद के सब जानवर इस बात पर एक मत थे कि अब दुम दबा कर रहने से कुछ नहीं होने का और उन्हें स्थिति का मुक़ाबला करने के लिये सीना तान कर खड़ा हो जाना चाहिये.

अब क्यों कि आदमियों से न तो सीधा मोर्चा लिया जा सकता है और न इस तरह उनसे सीधे संघर्ष में जीता जा सकता है. इस कारण तय यह हुआ कि जानावरों को गुरिल्ला युद्ध ऐसा कुछ छेड़ देना चाहिये. इस युद्ध की रूप रेखा जो बनाई उसमें मुख्य बात यह रखी गई कि ऐसे आदमियों को जो अन्य जीवों को मारने या नष्ट करने का विचार भी रखते हों, उन्हें पकड़ कर जानवरों की सभा में लाया जाय और मृत्यु दण्ड दिया जाय.

सब जानवरों ने वाह-वाह करके तुमुल हर्षनाद के बीच इस प्रस्ताव का समर्थन किया. देखते ही देखते तमाम युवा जानवरों को अपने अन्दर एक नयी स्फूर्ति व बिजली की सी तेजी महसूस होने लगी. कुछ युवा भेड़िये व चीते आदि इतने उत्साहित हो उठे

(शेष पृष्ठ ९४ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गुजराती का एक सम्पूर्ण
मार्मिक और मनोवैज्ञानिक उपन्यास

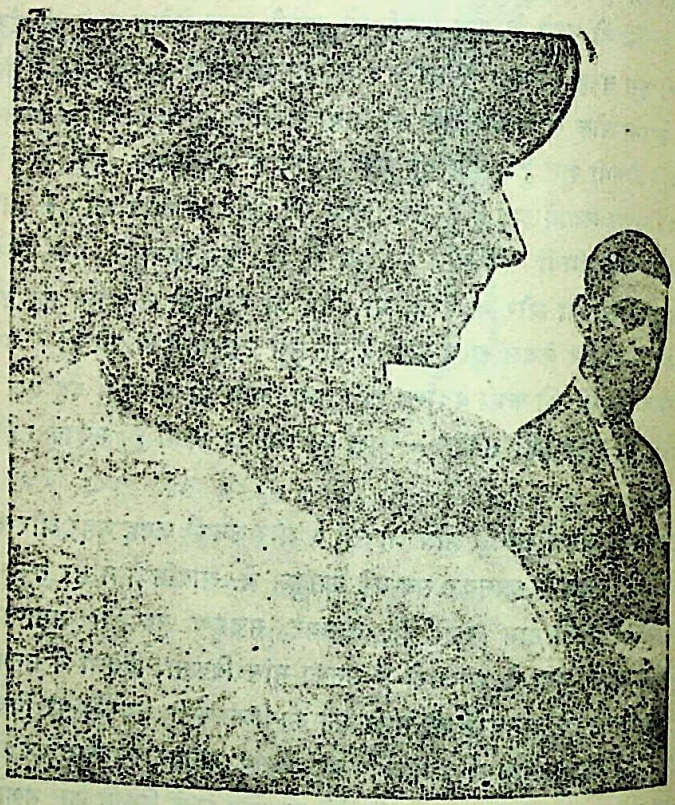

हर शनिवार की शाम की तरह मैंने ठीक छः बजे से स्टेशन टेलीफ़ोन करने की शुरुआत की. मेरी धारणा के अनुसार फ़ोन घनघना रहा. एक एक छोटी घंटी पूरी होते ऐसा लगता कि यह उसने लिया उठाया, यह उसकी मधुर-मधुर आवाज़ सुनाई दी और यह 'हाय, डिंग ऐसा उद्बोधन जैसे मुझे प्यार करता-सा फ़ोन में से गिर पड़ा! कैसा विचित्र ! पछले छ महीने से मुझे केवल यही अनुभव होता है कि हर शनिवार को इस ऑडबॉन ड्राइव और बटनी ऐवन्यू के क्रॉसरोड अधीरता से, चिंतित मन से चक्कर लगाता, हर दस-पन्द्रह मिनट पर को फ़ोन करने की मैं शुरुआत करता हूं. यों उसके लिए इंतज़ार करने का क्रम दो-एक घंटे तो ज़रूर चलता है. किसी-किसी समय संयोग उससे जल्दी मिलना भी हो सकता है, परन्तु अधिकतर निराशा ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ईवा डेव रचित

प्रेयसी

होती है. कुछ न कुछ अप्रत्याशित परेशानी या आफ़त आ ही पड़ती है. उसका सामना करना या हल निकालना लगभग असंभव हो उठता है. इन विघ्नों ने मुझ में एक प्रकार की नर्वसनेस का विकास किया है. स्टेला से मिलना हो पायेगा कि नहीं, यह मेरे लिए हमेशा एक भयंकर चिन्ता का प्रश्न रहता है—दहशत भरी मरणांतक प्रतीति, अत्यन्त चिन्तापूर्ण. सप्ताह में केवल एक रात ! उस रात ही उससे मिलने का मौक़ा मिलता. वह भी सुख से न बिताया जा सकता. कुछ न कुछ विघ्न हमेशा आया ही करते. ऐसे समय असाधारण रूप से अधीर हो उठूँ तो इसमें क्या आश्चर्य ! इन क्षणों में मुझे बहुत ही क्रोध आता है, आकुल-व्याकुल हो जाता हूँ.

फ़ोन की घंटी घनघना रही थी. मैंने उकता कर फ़ोन वापस रख दिया. दस सेंट का सिक्का खनखनाता मेरे हाथ में वापस आ गिरा. टेलिफ़ोन बूथ में ही जम कर बैठ जाने की इच्छा थी पर तभी दरवाज़े पर हुई ठकठक की आवाज़ सुनाई दी. मैंने उधर देखा. एक राक्षसी क़द का नीग्रो रोषपूर्ण मुद्रा में मुझे बूथ से बाहर निकल आने के लिए कह रहा था. इच्छा न होते हुए भी कुछ भय से और कुछ शिष्टतावश मैंने बूथ का दरवाज़ा खोला. वह मुझे धकेलता हुआ-सा भीतर घुसा. दरवाज़ा बन्द कर वह भी मेरी ही तरह फ़ोन पर झपटा. मुझे लगा कि उसका फ़ोन जुड़ने पर वह भी फ़ोन पर चिपट जायेगा. वहाँ खड़े रहना व्यर्थ था. इसलिए मैंने लम्बा चक्कर लगाना शुरू किया.

मौसम अत्यन्त सुन्दर था. बसंत के शुरू के दिन थे. क़रीब तीन महीने के सख्त जाड़े के दिनों के छोटे-बड़े तूफ़ानों और बर्फ़ के ढेर के बाद यह महकती बसंत ऋतु आई थी. यहाँ वहाँ हरी घास फूट रही थी. बैकयार्ड में पौधों पर कोमल-कोमल हलके हरे रंग की कोंपलें हँस रही थीं, हां, वह बसंत का आगमन था. किशोरियां, युवतियाँ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और प्रौढ़ाएँ भी रंग-बिरंगे वेश में संध्या के इस समय का आनंदानुभव कर रही युवक-युवतियों के जोड़े हाथों में हाथ पिरो कर बसंत के पहले स्पर्श का स्फुरण कर कर रहे थे.

दो-तीन चक्कर लगा कर मैं अपने बूथ के सामने वापिस आया. नीग्रो अभी बूथ में ही था. 'हो-हो' करती उसके हँसने की आवाज़ मेरे कानों से टकराई. चाहे भी कारण रहा हो, मुझे एकाएक उस पर बहुत गुस्सा बढ़ आया. 'जं....ग....' उसके साथ ही मुझे कुछ ईर्ष्या भी हो आई. वह अपनी प्रेयसी के साथ बातें सकता था लेकिन नीग्रो बूथ के फ़ोन से चिपका हुआ था.

फिर उसके खिलखिला कर हँसने की वीभत्स आवाज़ मेरे कानों में पड़ी. पन्द्रह मिनट हो गए थे, इसलिए मैंने बूथ के दरवाज़े के सामने जा कर दो बार की. उसने कुछ सुना हो, ऐसा लगा नहीं. फिर से खटखटाने की तीव्र इच्छा होने भी मैंने कुछ देर और इंतज़ार करना उचित समझा.

ज्यों-ज्यों समय बीत रहा था त्यों-त्यों मेरी अधीरता बढ़ती जा रही थी. समझ में यह नहीं आ रहा था कि उस फ़ोन को थोड़ी-थोड़ी देर बाद घनघनाए मुझसे क्यों नहीं रहा जाता था ! शत प्रतिशत मैं जानता था कि स्टेला काम घर वापस आई न थी और मुझे घंटी की बेकार घनघनाहट के सिवा अन्य कुछ को मिलने का नहीं था, फिर भी मुझे उस फ़ोन की घनघनाती घंटी सुने बिना नहीं पड़ता. फ़ोन करने के बाद दस-पन्द्रह मिनट तक एक प्रकार की शांति घेर यह जैसे एक प्रकार का आटोमैटिक रिस्पान्स हो गया था, जैसे पलकें खुलती हों वैसे. मैं फ़ोन उठाता, एम....आई....५-८८८९ डायल के नम्बर घूमते और क्षण में घंटी की निश्चित घनघनाहट सुनाई देती. देर तक उसे सुनता मैं खड़ा प्रत्येक घंटी की घनघनाहट के बीच ऐसा लगता कि किसी ने अभी रिसीवर लेकिन व्यर्थ. परन्तु इससे जैसे स्टेला के निकट जा-आया होऊँ, ऐसा संतोष करता. कोई नहीं बोलता....खैर ! न जाने क्यों ? फिर भी थोड़ी राहत जरूर

मैंने बूथ में दृष्टि डाली. नीग्रो की बूथ में से निकलने की तनिक भी इच्छा ऐसा उसके व्यवहार से लगा नहीं. मेरे धैर्य का अंत आ गया. अकुलाहट और बूथ के पास तेज़ी से जा कर मैंने दरवाज़े पर खटखटाहट की. बातें करते-करते नीग्रो ने घूम कर मेरी ओर देखा. जैसे मेरा कुछ भी अस्तित्व हो, इस तरह उसने की परवाह किये बिना मुंह फेर कर उसने बातें करना चालू रखा. इस उपेक्षा मुझे क्रोध से लाल-पीला बना दिया था. जैसे हमला करता होऊँ, ऐसे दरवाज़ा कर मैं स्वगत बड़बड़ाया, 'सूअर की औलाद, क्या तेरे बाप का फ़ोन है ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मेरी भाषा समझता न था, नहीं तो सचमुच दुर्दशा हो जाती मेरी. एकाएक दरवाज़ा खोल कर वह उपहास करता चीखा—'ऐ ठिंगूजी, रास्ता नाप, नहीं तो अभी ठिकाने लगा दूँगा. दूसरा फ़ोन ढूंढ ले,' और खटाक् से उसने दरवाज़ा बंद कर लिया.

रोष व्याप्त हो गया, मेरे अंग-अंग में. कई असंख्य गालियाँ चढ़ आईं मेरी जीभ पर, लेकिन एक शब्द भी बोलने की मुझमें हिम्मत न थी. छः फुट से भी अधिक ऊँचा, काला भूत वह राक्षस मुझे चुटकी में मसल डाले, ऐसा था. उसके सारे ही शरीर पर उभरी हुई फ़ौलाद जैसी मांसपेशियां देख कर मेरा लहू तक जम गया था. झुंझलाते-कुढ़ते हुए मैं दूसरे फ़ोन-बूथ की ओर चलने लगा निगरा....निगरो...सूअर का बच्चा सालों को गोलियों से भून देना चाहिए. इसके बाप की मिलकियत हो गयी है यह सारी. अनपढ़, स्टुपिड....जंगली....पशु....! ये गोरे आदमी भी संकीर्ण दिल के हैं. साउथ में जैसे लिंचिंग करते थे न, वैसे ही इन्हें मार-मार कर सीधा कर देना चाहिए. मुझे रिवाल्वर रखना चाहिये. इस फ़ोन पर इस तरह चिपके रहने का इसे अधिकार ही नहीं है और मेरा इस तरह अपमान करने का तो इसे ज़रा भी हक नहीं. सेल्फ़ डिफेंस में मैं इसे परलोक में पहुँचा सकता हूँ, भले ही फ़ौलाद जैसी उसकी देह हो. एक गोली और खेल खत्म ! ठिंगूजी....उफ्....ठिंगूजी कहने का इसका दिल हुआ ही कैसे ? बूथ का दरवाज़ा आहिस्ते से खोल कर एक गोली मार दो सिर के पीछे ! कौन जानने वाला है कि गोली किसने चलाई है ? स्टेला वाले ह्वाइट ग्लोव्ज पहने हुए हों तो मेरी अंगुलियों के निशानों का भी किसी को शक तक नहीं होगा.'

मैं दूसरे बूथ के पास आ पहुँचा. सौभाग्य से वह खाली था. जैसे कोई मुझ से पहले उसमें घुस जाने वाला हो, वैसी अधीरता से मैं झटपट भीतर घुस गया. विचारों में दौड़ता नीग्रो होने पर भी स्टेला का फ़ोन नम्बर स्वतः ही लग गया. एम.... आई....५....८....८....८....९ हर बार की तरह फ़ोन की घंटियाँ बजनी शुरू हुईं. मैं जानता था कि ये घंटियां इसी तरह बजती रहेंगी, उससे पहले नीग्रो को कैसे ठिकाने लगाया जा सकता है. उसके विचारों में मैं डूबा हुआ था. ऐंठ से कहा हुआ शब्द 'ठिंगूजी' मेरे कानों में रेंग-रेंग रहा था. 'ह....लो....कौन हैं ?' अचानक स्टेला की आवाज़ सुन कर मैं घबरा गया था. इसके लिए मैं तैयार न था. कुछ देर मैं केवल हकलाने की-सी आवाज़ करता रहा. 'ह....लो...मैं जान सकती हूँ कि आप कौन हैं ?' स्टेला के मधुर स्वर ने मुझे स्वस्थ कर दिया. इतनी जल्दी वह घर आ गई थी, यह जान कर मेरा हृदय हर्ष से नाच उठा था.

'ओह ! तुम घर आ गई हो स्वीटी ? मुझे बहुत राहत मिली.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढहता हुआ आदमी

■

मेरे अन्तर का हर कोना
मकड़े के जालों से भरा है
कई तिनके झूल रहे हैं.
मक्खियों के पर, टांगे और सफेद पंख
अटके हैं उन पर
चिपके हैं अनेक अभावों के जोंक
जिसके प्रहार से
अन्तर की दीवार का प्लास्टर
झड़ गया है,
जैसे, किसी पुरानी खण्डहर बनी इमारत
की दीवार हो
मेरे इर्द-गिर्द
और यह प्रश्न चक्कर काटता है
कि आज हर आदमी
दीवारों की झड़ती हुई प्लास्टर के बीच
छिपकली की तरह
क्यों चिपका है ?

—प्रमोद कुमार भदानी

'हाँ, प्रिटी बेबी, मैं तेरे लिए जल्दी घर दौड़ आई हूं ! वह इडा मार्सेला जुटे थे नाइट-क्लब जाने जैसे-तैसे उन्हें टाल कर मैं अपने बेबली के लिए घर आ गई हूं. तू ने कहा कि 'राहत मिली कुछ हुआ नहीं ?'

'साल्ला, बदमाश, वह नीग्रो टिंगूजी कह कर मेरा अपमान कर गोली मार दी जाय उसे तो भी पाप लगेगा '

वह ज़ोर से हँसने लगी, मुझे गुस्सा आ गया. मैं ज़ोर से बोला: ऐसे हँसती है ? तुझे भी मैं टिंगूजी लगता हूँ क्या ? हँसी का पात्र क्यों ? 'तो फिर तुममें और नीग्रो में अन्तर ? तू मुझे झूठमूठ कहती है तुझे प्यारा हूं. मुझ पर तुझे ढेरों प्यार 'ऐसा अपमान कौन सहन करे ?'

'ओ....बेबली, ऐसे गुस्से में क्यों जा रहा है ? तू मुझे प्यारा है. मैं हज़ार बार कहा है कि तू छोटा है, छोटे क़द का है फिर भी जैसा तू है वैसा ही प्रिय है. तुझमें एक सूत मात्र का अन्तर होता तो मैं तेरी ओर आकर्षित नहीं तुझे पता है न गुवेरा कितना ऊँचा है ?'

मैं चिढ़ से मन-ही-मन बड़बड़ाया—'हां; हां, तू भी लंबी है और वह तो का तीसरा भाग है. मुझे अपना बेटा गिनो तो भी आश्चर्य नहीं.'

'बता न मुझे, क्या हुआ तुझे ?'

मैं चुप रहा.

'चल, यों समय क्यों नष्ट कर रहा है ? चल, बता न.'

मैं सोचता था, 'हाँ, यह तो अवश्य कहेगी कि वह मुझ पर फ़िदा है सांवला शरीर, मेरा नाक, कलर और मेरे नाजुक अवयव ! ये ही मेरे आकर्षण

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारण हैं. पर मैं उसकी छाती तक भी मुश्किल से आता हूँ. कद्दावर, मज़बूत और सुन्दर गुवेरा को छोड़ कर यह मेरे प्यार में कैसे पड़ी होगी ?

'देख फिर मैं भी रूठ जाऊँगी, हाँ ?'

उसके दुलार से कहने के तरीक़े पर मैं न्योछावर हो गया.

'तुझे फ़ोन कर रहा था, एक दूसरे बूथ में से. एक जायंट साइज नीग्रो आया. तू न थी, इसलिये मैंने उसे फ़ोन करने दिया तो उसने पूरे बूथ पर ही कब्ज़ा कर लिया. मैंने बहुत देर तक इंतज़ार किया. वह तो फ़ोन पर चिपक ही गया था. हटने का नाम ही नहीं लेता था. मैंने दरवाज़ा खटखटाया तो सूअर की औलाद ने मुझे 'ठिंगूजी' कह कर मार डालने की धमकी दी.' न जाने क्यों, मैं बता नहीं सकता पर स्टेला की सहानुभूति प्राप्त करने में बहुत बार मैं बात को बढ़ा कर कहता. कई-कई बार बिलकुल झूठी बात कहते हुए भी हिचकिचाता नहीं था. आश्चर्य की बात यह है. कि जहां तक हमारे सम्बन्ध का प्रश्न है, वहाँ तक असत्य ही हमारे प्यार की गाँठ को वैसी-की-वैसी रखने में अधिक सहायक सिद्ध हुआ है. इस बात को स्पष्ट करने के लिए यह उदाहरण काफ़ी होगा : स्टेला अद्भुत सुन्दरी है परन्तु उसकी आंखों के आसपास झुर्रियाँ पड़ी हुई हैं और स्ट्रॉबेरी के रंग जैसा गहरा जामुनी रंग उन पर एक इंच के घेरे में छाया हुआ है. ये दोनों उसकी अधिक उम्र की चुगली खा जाते हैं. पर यह सत्य भूल से भी कहने की मैं सोच नहीं सकता. मुझे विश्वास है कि दस मिनिट में ही स्टेला हमारा सम्बन्ध तोड़ डालने जितनी क्रोधित हो सकती है, यदि यह सत्य कहने की मैं हिम्मत करूँ तो ! प्रेम को फूलने-फलने में शायद झूठ की खाद की काफ़ी अधिक ज़रूरत पड़ती होगी.

'बेबी, मैंने तुझे कितनी बार कहा कि भगवान के लिए तू ऐसी गालियाँ न बोल ! और तू किसलिए नीग्रो के साथ लड़ाई-झगड़ा मोल लेता है ?'

'वह काला बिलाव !'

'देख, फिर तू—'

'तुझे पता है, मैं क्या करने वाला हूँ ? मैं एक छोटी पावरफुल गन लाने वाला हूँ. उसे मैं अपनी पैंट में हर समय रखने वाला हूँ. यदि कोई मुझे सताने का प्रयत्न करेगा तो उसके चिथड़े उड़ा देने वाला हूँ. पानी तक नहीं मांगेगा. हां, पानी भी नहीं माँगेगा !'

'तेरे दिमाग़ में ऐसे खूनी विचार कैसे आते हैं, यही मेरी समझ में नहीं आता. बहुत गरममिजाज़ है 'तू ऐसा तीसमारखां कैसे बनने लगा है ?'

'उसका 'सर्मन आन दी माउटेन' शुरू हुआ. कौन जाने कब बन्द होगा !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'देख मेरी स्वीट-स्वीट बेबली, नहीं ? भूल जा यह सब और दौड़ आ जल्दी जल्दी यहाँ.'

मेरा पैशन एक छोटे-से संकेत मात्र से सुलग उठा, जैसे दियासलाई से रुई की बत्ती जल उठे वैसे ही क्षण भर में स्टेला की अखंड गुलाब के फूलों-सी भरी-भरी देह मेरे सामने खुल-खुल गई. एक प्रकार की मीठी उत्तेजना मेरे शरीर में झनझनाने लगी, जैसे वीणा के तार छेड़ने पर झन्नन्न हो वैसे ही मुझे अनुभव हुआ कि मैं स्टेला की ऊष्म बाहों में भिच रहा हूँ.

'गुबेरा कहाँ है ?' मैंने पूछा.

'गुड न्यूज़. उसके कारखाने में हड़ताल हो गयी है. वह फ्लोरिडा जाने को रात को निकल गया है. आज मिलने वाले थे ही. इसी कारण तुझे यह बात लिखी नहीं. इसीलिये तो मैं काम पर से जल्दी-जल्दी भाग आई हूँ. इडा को कुछ शक हो गया है. तेरा फ़ोन वहाँ आता है तब वह कितनी अधीर हो जाती है. वह फ़ोन लेती है और तेरी आवाज़ सुनती है तो अनेक नखरे करके मुझे फ़ोन देती है ! आज मुझे साथ में जाने के लिए उसने ज़मीन आसमान एक कर दिया. मुझे क़सम भी दिलाई. जो नाराज़ करके मैं चली आई हूँ.'

'वाह, मेरी प्रिये, तो फिर आज आधी रात को मुझे वहाँ से चोर की तरह भागना नहीं पड़ेगा, क्यों ? चल, गरम-गरम, तीखा, चरपरा खाने के लिए बना दे. मैं पंद्रह बीस मिनट में वहाँ आ पहुँचता हूं.' फ़ोन रख कर मैं झटपट बाहर निकल गया.

वह तैयार है. बसन्त की मज़े की रात घिरने लगी है. मस्त पवन, और फूलों की मिश्रित सुगंध हवा में फैल रही है. वह तैयार है. मैं उत्तेजित हो गया हूँ. इस रात में कहां भय है ? निश्चिन्तता से भोजन करेंगे. स्वादिष्ट व्यंजनों से पेट भरेंगे. संगीत छेड़ेंगे और रात सारी मज़ेदार प्यार के नशे में बह जायेगी. भरे हुए पेट, निश्चिन्त मन से प्यार भोगने का और ही मज़ा है.'

मौ बी नम्बर की बस में से मैं उतरा. ग्रोसरी स्टोर के बाहर के बड़े टॉवर क्लॉक में देखा तो पैंतालीस से अधिक मिनिट बस में आने में बीत गये थे. अंधेरा भी काफ़ी घिर आया था. मेन स्ट्रीट इलेक्ट्रिक रोशनियों से जगमग-जगमग कर रही थी. लोगों के झुंड के झुंड इस बासंती संध्या का आनन्द लेने घरों से बाहर उमड़ पड़े थे. छोटे बड़े, वृद्ध जैसे ठंडक की मार से उकता गये हों, मुक्त मन से बसंत के पहले दिन का आनन्द लूट रहे थे.

स्टेला के घर की ओर क़दम बढ़ाया तो जाने क्यों, विचित्र भावनाओं से मैं घबराने लगा. मुझे स्वयं को ही अनुभव हुआ कि मैं चोर की तरह इस घर की तरफ़ ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहा था. जब-जब भी इस रास्ते में चलता तब-तब केवल यही अनुभव मुझे होता. गिल्टी फीलिंग्स, नर्वसनेस, भय आदि विभिन्न भावनाओं से मन का कोना-कोना छलनी हो जाता. चार-पाँच ब्लाक दूर स्थित स्टेला के घर की ओर चलते-चलते ऐसा अनुभव होता मानो युग बीत गया हो. आज यह मुहल्ला स्लम बनने की तैयारी कर रहा था. जब भूतकाल में क़रीब बीस वर्ष पहले यहाँ धनी लोगों का निवास था तब किसी नीग्रो की हिम्मत नहीं थी कि यहाँ से गुज़र जाय. आज भी उनके कई पुराने किन्तु पक्के मकान उस वक्त की साक्षी दे रहे थे. समय बदला. धरती, घर और मुहल्ले के साथ जिनको प्रीति थी, उस गत पीढ़ी के आदमियों के समाप्त हो जाने पर उनके वारिसदारों ने दूसरे नये मुहल्लों में अपनी नई दुनिया बसा ली और इन विशाल मकानों और मुहल्ले में जात-जात के और भाँति-भाँति के मनुष्य रहने के लिए आ बसे. किसी दशक में नये एपार्टमेंट हाउस भी बने. यहाँ नये आदमियों के अव्यवस्थित समूहों का जमाव हो गया. गरीब अंग्रेज, धनी नीग्रो, मध्यम वर्ग के लेटिन वंशज इन घरों में बस गये. अभी तक इस मुहल्ले में कुछ रौनक थी; अभी तक यह कुछ सभ्य लगता था, पर जैसे अमेरिका के शहर-शहर में हुआ है, वैसा ही यहाँ भी होगा. भद्र श्वेत जन इच्छा-अनिच्छा से अपने मकान बड़े मालदार नीग्रो लोगों को देंगे. एपार्टमेंट हाउस मध्यम आय वाले ह्वाइट और धनी बनते जाते नीग्रो लेंगे. जरा जीर्ण हो रहे मकानों को रीअल एस्टेट वाले खरीद कर उनमें छोटे पार्टिशन बना कर गरीब नीग्रो और लेटिन लोगों को देंगे. थोड़े वर्षों में मकानों की क़ीमत घटने लगेगी. धनी नीग्रो, कई मध्यवर्गी आदमी भी अब मुहल्ला छोड़ कर जाना ही हितकर समझेंगे. रीअल एस्टेट वालों की ओर अधिक पार्टिशन लगे मकान किराए पर देने के लिए मिलेंगे. गरीब लोगों के झुंड लहाँ आ बसेंगे. एक दशक भी मुश्किल से बीतेगा जबकि यहाँ स्लम खड़ा हो जायेगा. खून, छल-कपट, नारकीय हमले, रंडियाँ, जगत का एक-एक पाप यहां उतर जायेगा. नंगे-भूखे बच्चे गटर का पानी पीते नज़र आयेंगे. मिट्टी की पिपिहरियाँ बजाते होंगे और खूंरेजी के दृश्य देख कर जंगली नृत्य कर उठेंगे. यह मुहल्ला बदल जायेगा. मुहल्ले में पुलिस भी क़दम रखते हुए घबरायेगी, क्योंकि यहाँ गुंडों-बवालियों के अड्डे जमने लगेंगे.

मैं दबे क़दमों से चलता तो मेरा जी लगातार धक्-धक् करता. एक-एक आदमी को मैं शंका की दृष्टि से देखता. कोई दो-तीन या चार नीग्रो की टोली गुज़रती कि मेरा जी अधर में टँग जाता. उनको सामने से आते देख कर मेरा हृदय धड़क-धड़क उठता. मन-ही-मन भगवान से प्रार्थना करता-करता मैं प्रार्थना की रट लगा देता ताकि वह टोली मुझे परेशान किए बिना गुज़र जाय. जैसे-जैसे वे नज़दीक आते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

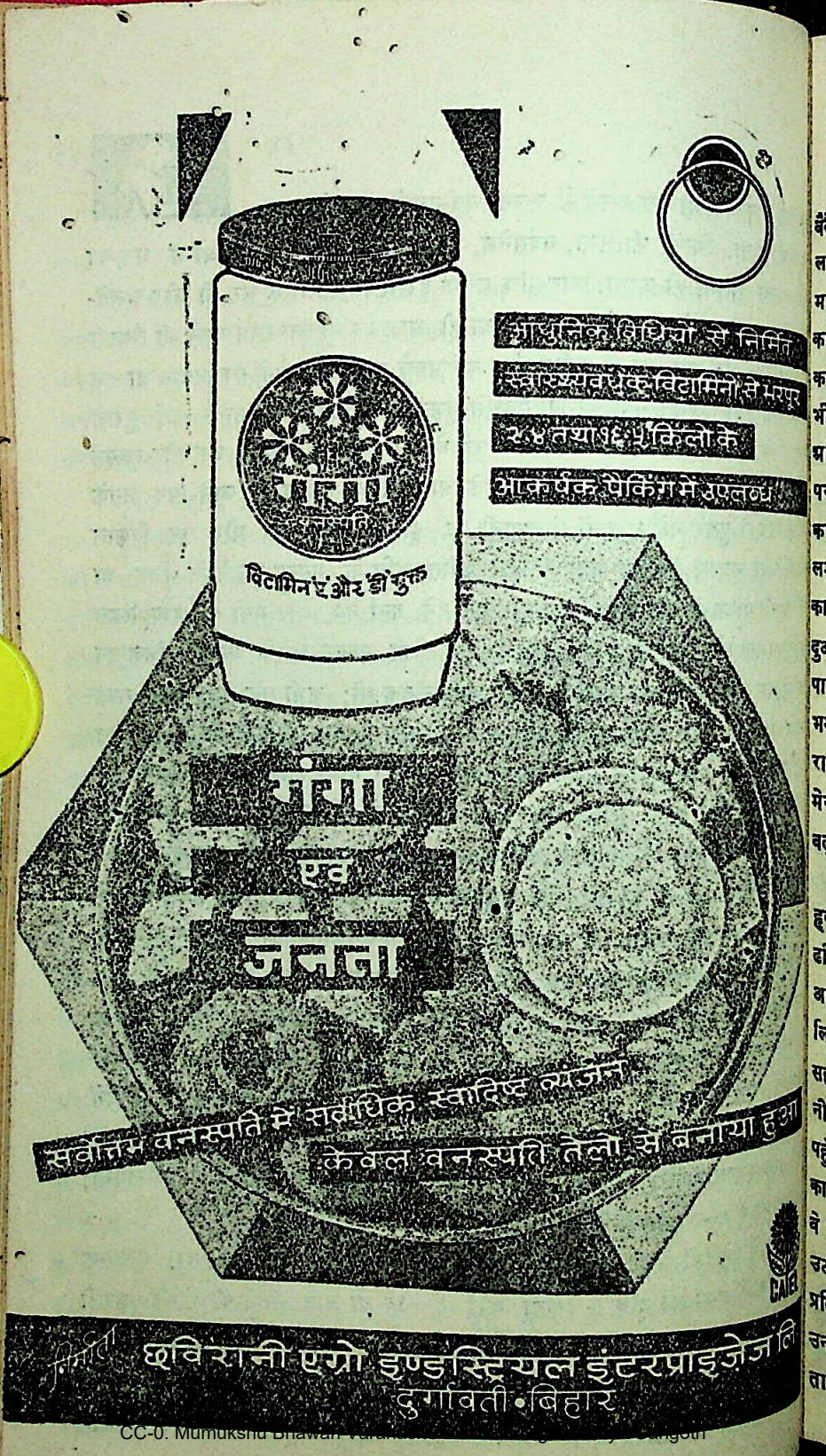

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसे-वैसे मेरे हृदय की धड़कन बहुत तेज़ी से बढ़ती जाती. मुझे भय लगता कि शायद वे मेरी धड़कन सुन लेंगे. दूसरा भय मुझे यह लगता कि वे मज़ाक उड़ायेंगे, मेरे ठिगने शरीर का. मसखरी मेरे नाज़ुक बदन की, या मेरी दिखती कमज़ोरी की ठिठोली उड़ाएंगे. शायद इसका लाभ उठा कर वे मुझसे छेड़खानी करेंगे. बारह वर्ष से ऊपर की आयु के लगभग सारे ही लड़के और लड़कियां भी, बिना किसी अपवाद के मुझसे तीन से बारह इंच ऊँचे थे. अधिकतर सभी मुझसे अधिक मज़बूत शरीर के और कद्दावर आकार के लगते. मैं कमज़ोर अवश्य नहीं था, परन्तु मेरे छोटे-से कलेवर में गुंडों की टोलियों का और इन राक्षसों का मुकाबला करने की ताक़त नहीं थी. मेरे अभिमान को तेज़ चोट लगती, खास कर जब नीग्रो लड़कियाँ मुझे सताना शुरू करतीं. जैसे तब मेरी जान ही निकली जा रही हो, ऐसी वेदना का मैं अनुभव करता. जब भी वे मेरी ओर ध्यान दिये बिना चली जातीं तो मैं उन्हें दुआएँ देता. ऐसे कमेन्ट्स तो मेरे लिए कामन हो गए थे, 'यह टिंगूजी चला !' 'टिंगूजी पावली !' 'एक झापड़ में मैं इसे जमीन चटा दूँ.' तो किसी समय कोई बोल्ड लेकिन भयंकर कुरूप नीग्रेस आ कर सामने खड़ी हो कर मुझसे पूछती 'क्यों हैंडसम, आज रात को डेटिंग पर आना है ?' 'अरे ! कीरा, टिंगूजी में ताक़त ही नहीं.' यह सुन कर मेरी अतड़ियाँ पीड़ा की ऐंठन अनुभव करती रहतीं. मैं लाचार हो कर त्वरा से आगे बढ़ जाता. इतने बड़े अपमान का सामना करने का जोश और हिम्मत मुझमें न थी.

दुःखी-दुःखी हो जाता मैं ऐसे क्षणों में. एक आश्चर्य की बात होती : अपने हृदय में नीग्रो के प्रति अच्छा-खासा लगाव होने पर भी (जिसे मैं बहुत कुशलतापूर्वक ढांके रहता हूँ, क्योंकि ह्वाइट मित्रों के साथ की चर्चा में मैं नीग्रो के अधिकारों की आवाज़ उठाता हुआ एक विद्रोही हो जाता हूँ.) मैं उस भय के समय कुछ क्षणों के लिए सच्चे हृदय से चाहता था कि ये नीग्रो मुझे मेरी श्याम चमड़ी के कारण भूल से ही सही, पर मुझे भी उन्हीं में से कोई नीग्रो गिनें. न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता कि मैं यदि नीग्रो जैसा नज़र आऊँ तो वे मुझे हैरान न करेंगे, मुझे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाएँ. सम्भवतः यदि वे मुझे नीग्रो न गिन सकें तो आखिर किसी रेड इण्डियन का वंशज, किसी मेक्सिकन या लेटिन अमेरिकन की औलाद गिन लें तो भी काफ़ी है. वे मुझे एक ह्वाइट के रूप में न ले लें इसके लिए मैं दृढ़तापूर्वक प्रभु से प्रार्थना कर उठता हूँ फिर भी यह चाकू की धार जैसी सच्ची हक़ीकत थी कि मुझे इस जाति के प्रति एक प्रकार की, ऐसी घृणा थी जो समझ में नह आ सकती थी. मैं अपने आपको उनकी अपेक्षा कुछ श्रेष्ठ मानता, इसीलिए ही शायद मैं दलीलों में उतरता और उनका तारनहार होऊँ, इस तरह उनके अधिकार की बातें करता. इतना ही काफ़ी न था,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं मुहल्ले का ही एक निवासी था, ऐसी छाप अपने व्यवहार से मैं स्पष्ट डालना चाहता था. मुझे उन्हें बताना था कि मैं किसी भी तरह से वहाँ आगंतुक न था. यह इसलिए था ताकि मैं वहाँ के लोगों के मन में उत्पन्न संशयों से बच सकूं. इन चार ब्लाकों का रास्ता पार करते हुए तो जैसे मेरा यह रूप दूसरे रूप में परिवर्तित हो जाता था. असीम पाप-शरम के भाव से मैं पीड़ित होता. इस सारी बात का मूलभूत तंतु यह था कि मेरे और स्टेला के नाजायज़ शरीर-संबंध की बात, जिसे हम दोनों सुन्दर भाषा में स्नेह, प्रेम, प्यार, मुहब्बत आदि शब्दों से पहचानते थे, कोई जान जायेगा तो ! दरअसल उसकी व्याख्या-परिभाषा तो बदक़िस्मती से आज तक भी मैं खोज नहीं सका. परन्तु यह बात निश्चित है कि उस 'कोई' के होने ने तो मुझ पर विपरीत असर पैदा कर दिया था. मुझे इस मुहल्ले में स्टेला के घर में जाते हुए युनिवर्सिटी का कोई विद्यार्थी देख लेगा तो ! मेरी जान-पहचान वाले ह्लाइट परिचितों में से कोई टकरा जायेगा तो ! (वैसे मेरी बहुत कम विद्यार्थियों से पहचान थी. मित्र कहा जा सके, ऐसा तो स्टेला के सिवा अन्य कोई न था. परिचित भी अंगुलियों के पोरों पर गिने जा सकें, इतने ही थे.) किसी न किसी रास्ते से यदि मेरे डिपार्टमेंट में बात पहुँच जायेगी तो ! मेरे प्रोफेसर का मेरे बारे में कितना ऊँचा मत है वहाँ फ़िर तो मैं हँसी का पात्र बनूँगा. मेरे देश के विद्यार्थी यह बात जान जायेंगे तो भयंकर परिहास का पात्र बनूँगा. कोई यह बात मेरे घर भी लिख देगा....आदि-आदि कई निराधार सैकड़ों सम्भव-असम्भव विचार मुझे अपनी कुंडली में ले लेते. उनकी कुंडली इन रास्ते की थोड़ी-सी दूरी में इतनी सख्त हो जाती कि मेरा संतुलन खो जाता.

वैसे यह अजीब 'बात' थी ! मेरी पापवृत्ति, हृदय के गर्भ में दबी हुई थी. सही बात तो यह थी कि अन्य कोई 'देखे' 'स्वीकार करे' या 'चर्चा करे' यह प्रश्न अस्तित्व में था ही नहीं. था भी तो अत्यन्त नगण्य था. मैंने स्वयं यह बात, अपना यह अत्यन्त आत्मीय अफेयर, अपनी शक्ल-सूरत जैसी नैसर्गिक हक़ीकत की भाँति ही स्वीकारा न था. भयभीत करती परछाइयाँ, हृदय में, रह रह कर उठती आशंकाएं मुझे कभी-कभी चौंका देतीं. बाह्य आवरण, आवाज़, आकार, सुगंध, स्पर्श और स्वाद मेरे कलंकित 'मैं' के उद्घोष थे. मेरे अहम् के प्रति यह अनुभव इतना असामाजिक अस्वाभाविक और असंभावित था कि क्षण भर भी मेरी आत्मा चैन नहीं ले पाती थी. चड्डी में पेशाब कर देने वाले किशोर जैसी मेरी स्थिति थी. हज़ारों गावों की हवा पर हायर स्टडी के लिए आया हुआ मैं, सैकड़ों मील दूर का देश छोड़ कर आया हुआ स्टेला के साथ जीवन बिताने के लिए तैयार हुआ क्यूबन गुवेरा, लेकिन फिर गुवेरा के साथ कानूनन विवाह सम्बन्ध से जुड़ी हो कर भी पिछले आठ-दस महीनों से एक बिल्ला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोने पर भी पत्नी-सा व्यवहार न रखती हुई स्टेला—इन तीनों का उलझी हुई सूत की लच्छी जैसा प्रणय त्रिकोण ! हम तीनों में सबसे कम डिस्टर्ब्ड थी स्टेला उसकी कॉन्शेन्स क्लियर थी. उसके मन में गुवेरा उसका पति न था और मुझे प्रेमी के रूप में उसने स्वीकार लिया था. गुवेरा को इस बारे में भयंकर संदेह था. यह उसे कचोटता था. पर स्टेला की अजब होशियारी के फलस्वरूप वह हमारी घटना से बिलकुल अनजान था. परन्तु मेरी बुरी हालत थी. कोई जान जाएगा, कोई मेरी गुपचुप बात करेगा या मेरी खूब हँसी उड़ाएगा, यह भय तो सामान्य रूप में था ही, इससे भी भयंकर डर तो इस बात का था कि मुझसे दस वर्ष बड़ी, मुझसे सात से दस इंच ऊंची (ऊंची ऐड़ी के बूट पहने तब) परिणीता स्टेला को मैं प्रेमिका के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता था. फिर भी समझ में न आए ऐसी, तप्तमुद्रा से दागने का डाम-चिह्न उभर उठे, ऐसी हकीकत थी यह कि लगभग चौबीसो घंटे (शायद नींद में भी) क्षण-क्षण किसी भयंकर एषणा से मैं उसमें खो जाने को बिलख उठता था. मैं अपने वश में रह नहीं सकता था. कस्तूरी-मृग मृत्यु को भेंटने दौड़े, यों मुझे उसके पास जाना ही पड़ता. गये बगैर चैन न था. इसमें रुकावट पड़ने पर प्रत्येक अंग और लहू का बिन्दु-बिन्दु सुलगते विप्लव का आह्वान कर उठता, ऐसी असह्य परिस्थिति थी मेरी !

इस रास्ते चलते हुए, इतने अधिक आदमियों को रास्ते पर उमड़े हुए देखने पर, चारों ओर सब कुछ खुला-खुला और प्रवाहपूर्ण देख कर मुझे बसंत का आगमन अत्यन्त अप्रिय लगने लगा. कुछ क़दम चला और ग्रोसरी स्टोर के दरवाज़े में से दिखते काउंटर पर दृष्टि डाली. हृदय को शांति मिली. बाज जैसी तीक्ष्ण दृष्टि से मुझे देखते रहने वाला यहूदी वहाँ न था. उससे मैं डरता था. मुझे ऐसा लगता कि वह मुझे संशय भरी नज़र से देखता था. जब भी मैं डरता-डरता पीछे दृष्टि घुमाता तो वह सिगार का धुंआँ छोड़ता मेरी पीठ पर ताकता हुआ दिखता. ऐसा करने में उसका क्या हेतु होगा, मुझे पता नहीं था. मुझे वहम होता कि शायद गुवेरा ने इसे मेरी जासूसी करने के लिए कहा होगा. ग्रोसरी स्टोर जल्दी पार कर जाने के लिए मैंने जल्दी-जल्दी क़दम उठाए. अभी तो मुझे साढ़े तीन ब्लाक पार करने थे. किसी भी तरह दीखे बिना स्टेला के एपार्टमेंट में पहुँच सकूं तो कितना अच्छा हो. क़दम-क़दम पर मेरी कठिनाई बढ़ती हो, ऐसा लगा. स्टेला से पहचान हुई तब से अब तक अधिकांशतः सर्दी का मौसम रहा था. इस रास्ते पर चलते हुए खास कर आधी रात को वापस लौटते हुए, मुझे अधिक कठिनाई नहीं हुई थी. अधिकतर लोग असह्य ठंडक के कारण घरों में रहते. युवक-युवतियाँ घूमते थे परन्तु इतनी सारी आँखें मुझे देख रही हों और मैं स्टेला के यहाँ गया होऊँ, ऐसा तो यह पहली बार ही हो रहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था. इससे मेरी नर्वसनेस बहुत ही बढ़ गई थी. रह-रह कर वापस लौट जाने की वृत्ति हो आती थी. टैक्सी के पैसे कहीं और खर्च डाले होते तो अच्छा होता, ऐसा लगने लगा था.

मैंने ऊपर देखा, ऐसा महसूस हुआ कि चलते हुए लोग मुझे आगंतुक समझ कर कुतूहल से देख रहे थे. पहला ब्लाक पार करना बहुत मुश्किल न था. मैंने अपनी गति बढ़ाई. सामने से दस-बारह नीग्रो लड़के-लड़कियों का समूह हँसी-मज़ाक़ की बातें करता आ रहा था. मेरा हृदय धक-धक होने लगा. मुझे ऐसा लगा कि वे मेरे चारों ओर घिर आयेंगे और मेरा मज़ाक़ उड़ाना शुरू करेंगे. थैंक गॉड ! मेरी ओर दृष्टि तक डाले बिना वे चले गये ऐसे समय एक विचित्र मनोभाव मैं अनुभव करता. धारणा थी कि वे मुझे सतायेंगे और यदि वे सताए बिना चले जायें तो मुझे जैसे किसी ने मेरा अपमान किया हो, ऐसा लगता कई-कई बार तो मैं चिढ़ जाता और थोड़ी गालियाँ भी निकाल देता, अलबत्ता, मन-ही-मन में. तीसरा ब्लाक पार करने के लिए तीस-चालिस फुट बाक़ी रहे होंगे और मेरी दृष्टि स्टेला के घर के सामने के विशाल एपार्टमेंट के फ्रंटयार्ड पर पड़ी. मेरी घबराहट बढ़ गई. छोटे परिवार-समूह यहां-वहां कुर्सियाँ डाल कर बैठे थे. जोर-ज़ोर से बातें करते, बियर-सोडा पीते, स्नेक खाते वे मौज उड़ा रहे थे. हथेलियाँ पसीने से भींग रही थीं. वहाँ से गुज़रे बिना छुटकारा न था. अंधेरा हो जाने पर भी मैंने गागल्स वापिस चढ़ा लिये. चलने की गति तेज़ कर दी. आगे-पीछे का पूरा खयाल किये बिना मैं स्टेला के एपार्टमेंट के आगे आ खड़ा हुआ. बड़ा दरवाज़ा खोल कर मैं भीतर घुस गया. यदि कोई मुझे सूक्ष्मता से देखता होता तो यही मानता कि मेरे पीछे या तो गुंडे लगे हैं या तो पुलिस. तीन-तीन, चार-चार सीढ़ियाँ चढ़ता मैं एक सांस में दूसरी मंजिल के दायें एपार्टमेंट के दरवाज़े के सामने रुक गया. कुछ देर खड़ा रहा तो ध्यान आया कि मेरी छाती धौंकनी की तरह ऊपर-नीचे हो रही थी. मैं कांप रहा था और अधीरता से मेरा हाथ स्टेला की डोर-बेल को दबा रहा था. झटपट स्टेला दरवाज़ा खोल कर मुझे भीतर ले ले, इसके सिवाय अन्य सारे विचार गौण हो गये थे.

'आ रही हूँ. एक ही मिनट में !'

स्टेला की आवाज़ सुन कर मुझमें हिम्मत आई. इसकी आवाज़ में और इसके हाथ में एक प्रकार का जादू था. उसका मधुर स्वर सुन कर सूखा हुआ दिल खिल उठता; इसका हाथ फिरते ही थका हुआ शरीर क्या गज़ब की ताज़गी अनुभव कर उठता. आह, हाँ, स्टेला एक अद्भुत स्त्री थी.

कुछ विलम्ब हुआ. मुझे भय लगता था कि आसपास के ऊपर के एपार्टमेंट में से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई निकलेगा, और मुझे देख लेगा. मैंने फिर बटन दबाया.

'आई....आई....'

दरवाज़े की ओर स्टेला के आने की आवाज़ सुनाई दी.

'कौन ?'

'मैं !'

'मैं कौन ?'

'खोल न अब !' मैं खीझ कर बोला. उसने धीरे से दरवाज़ा खोला; दरवाज़े की आड़ में से मुझे देखा, दरवाज़ा पूरा खोल दिया और मेरे प्रवेश करने के बाद तुरन्त ही उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया.

मेरा एक नियम था. जब भी मैं इस एपार्टमेंट में प्रवेश करता तब उसका अचूक पालन करता. मैं दरवाज़ा बन्द होते ही उससे सट कर खड़ा हो जाता. स्टेला से दीवार के सहारे चिपक कर खड़े रहने की विनती करता. शरम से आनाकानी करती स्टेला को जबरदस्ती मैं वहाँ खड़े रहने के लिए विवश करता. उसको गहराई से निरखता, नखशिख. फिर मुग्ध भाव से बोल उठता—'ओह ! तू अत्यन्त रूपवती है.' फिर मैं उसे बांहों में भर लेता. हम एक-दूसरे को चुंबन लेते-देते कुछ मिनटों के लिए रसमग्न हो जाते.

उसका भी एक नियम था. वह काम पर से घर आती, स्नान करती, शरीर पर सुगन्ध लगाती, बाल सँवारती, सावधानी से मेकअप करती, नये वस्त्र पहनती और फिर मुसकराते हुए मेरा स्वागत करती, इन सबमें कौशल की झलक आए बिना नहीं रहती. ये सब मेरे प्रति उसके प्रेम के संकेत थे.

उस रात भी स्टेला अपना नियम चूकी न थी, परन्तु हक्का-बक्का बना हुआ मैं अपना नियम चूक गया. मुझे अपना नियम चूकना न था पर मुझे खिड़की में से नीचे बैठे हुए नीग्रो क्या कर रहे थे, वह देखना था, जानना था.

'एक मिनट, स्वीटी !' कहता मैं सामने की ओर बढ़ गया. झटपट परदा ऊँचा कर स्टेला के एपार्टमेंट के सामने बैठे हुए दो-तीन समूहों पर मैंने त्वरित दृष्टि डाली. मुझे लगा कि एक समूह हो-हो कर हँस रहा था. एक ठिगना नीग्रो हमारी खिड़की की ओर देखता हो, ऐसा भी आभास हुआ. मैंने कान सतर्क कर उनके शब्दों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन व्यर्थ. मेरा हृदय फिर फड़फड़ा उठा. असंतोष अनुभव करता मैं वापिस घूमा तो स्टेला जैसे अदृश्य हो गई थी. तुरन्त मुझे ध्यान आ गया कि स्टेला नाराज़ हो गई थी, क्योंकि मैंने अपना नियम तोड़ा था.

रूठी हुई स्टेला को रिझाना बहुत ही मुश्किल था. वह अत्यन्त ईमानदार स्त्री थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसी से वह अन्य से भी बड़ी अपेक्षाएँ रखती थी. इसके साथ ही साथ खूब भावुक स्त्री थी. उसके हृदय को जैसे मुरझाते देर नहीं लगती वैसे हर्षित भी थोड़ी ही देर लगती, बशर्ते, चतुराई से कोई उसे मनाए तब. उसका बहुत कोमल था. ऐसी विकट परिस्थिति में मैं झूठी बातें गढ़ डालता. अधिकतर बनावटी बातें मुझे उसके गुस्से के अंगारों से बचा लेतीं. मुझे बहुत बार लगता होता कि ऐसी मेच्योर स्त्री किस तरह मेरी ऐसी बातों से भ्रमित हो जाती चाहे जो भी हो, मेरी यह चतुराई मुझे सहायक होती.

मैं जानता था कि वह बेडरूम में चली गई थी. शुरू-शुरू में मुझसे बेडरूम क़दम रखना किसी भी तरह संभव नहीं होता. दूर न की जा सके, ऐसी कुण्ठा पीड़ित होता. जैसे उस बेडरूम और शय्या का उपयोग करने में कोई महापाप रहा होऊँ, ऐसी भावनाओं से मैं अकुला उठता. मेरे प्राकृतिक आवेगों को भी वे नाएँ रोकतीं. चूल्हे में डाली हुई लकड़ियों की खपचियां धुआं देती रहें पर सुलग सकें, ऐसी स्थिति हो जाती. इच्छा होती, पूरे ज़ोर से सुलग उठने की, पर स्थिति होती रुक-रुक कर निकलते धुएं जैसी.

ढेर सारी नई बातें सोचता-सोचता मैं उसके बेडरूम के पास आया. प्रवेश उससे पहले तो मैं लकड़ी के पुतले जैसा स्तब्ध हो कर खड़ा हो गया. मुझे लगा कि जीवन में पहली बार मैंने हाड़चाम से बनी हुई मानवीय देह में ऐसा बेजोड़ लावण्य देखा. मानवीय शरीर इतना आकर्षक हो सकता है, उसका मुझे उस दिन पहली ही खयाल आया. स्त्री को कैसे बनाया गया होगा ? उसे इतना सुन्दर किसने बनाया गया होगा, इसका जवाब मुझे उस दिन मिल गया. युग-युग से किसलिए के कारण युद्ध हुए होंगे, किसलिये कई सम्राज्य ध्वस्त हुए होंगे, किसलिये कला केन्द्र वह बनी होगी—संक्षेप में क्यों यह जगत उसकी अंगुलियों पर नाच रहा इसका जैसे स्पष्ट उत्तर मिल गया.

मैं पागल हो गया, इस मार्दव भरे मांस-पिंड को देख कर. असंख्य रंग-बिरंगी के बिम्ब-वस्त्रों में, अर्धनग्न-नग्न स्थिति में स्मृति-पटल पर चलचित्र की तरह गये. परन्तु अपने डबलबेड में अंगभंग मुद्रा में लेटी स्टेला की तुलना में वे व्यर्थ और ऐसी अद्भुत सुन्दरी स्टेला मेरी थी, ऐसा मान कर मैं गौरव अनुभव करता

वह लेटी थी; लंबी कमनीय और रूपवती. वह सर्पाकार आकृति इकधारा बिखेरती मेरे हृदय में बस गई; सदा-सदा के लिए. अधिक निरीक्षण करते हुए स्टेला के रूठने का कारण स्वयंमेव समझ में आ गया. स्टेला ने मेरे भेंट दिये कपड़ों में से अफ़लातून स्कर्ट और गुलाबी ब्लाउज बनाए थे. एक लेडिस पोशाक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डिजाइनर के तौर पर सारा कौशल उसमें उसमें लगाया था. वह घेरदार स्कर्ट यहाँ-वहाँ नायलॉन के सफ़ेद पेटीकोट के साथ सारे ही बेड पर फैल गया था. जाने-अनजाने वह घुटनों से भी ऊँचा चढ़ कर बेपरवाही से उसकी श्वेत-भूरी जांघे काफ़ी-काफ़ी दीखें, ऐसे छाया हुआ था. उसमें से आरपार निकल पड़े थे उसके लम्बे, सुघड़,मांसल श्वेत पैर,दाहिना पैर सीधा बेड पर से ठेठ ज़मीन पर लटक रहा था. मेरी दृष्टि उसके पैरों के तलवों पर गई. गुलाबी-गुलाबी एड़ियों को चूम लेने का मन मैंने ज्यों-त्यों दबा लिया. उसने बायाँ घुटना मोड़ कर पैर बेड पर रखा था. दोनों भरावदार जांघें, उसके पूरे ढके हुए नितंब कितने पुष्ट और सुन्दर होंगे, उसका ठीक-ठीक ध्यान दिलाती थी. वह अंगभंगी मुद्रा में सोयी थी जो उसकी कमर को और भी अधिक पतली दिखा रही थी. जबकि उसका वक्षःस्थल परिमाण में छोटा था, फिर भी सुगठित था. वह मुद्रा उभरा हुआ सौन्दर्य और उसकी विशाल प्रतीति कराने में सहज ही चूकती न थी. कस कर बाँधे हुए वक्षयुगल मेरे अंग-अंग को झकझोर रहे थे. दोनों हाथों को उसने मुह को आवृत करते हुए सिर के पीछे बांध रखा था, नए तरीके से. संवारे हुए जूड़े को तनिक भी हानि न पहुँचे, इस तरह. ओह !

यह गुस्सा हो ही गई न ! यह रूठना न स्वीकार करें तो और करें भी क्या ! इसने मुझे यहाँ से भगा नहीं दिया, यही आश्चर्य की बात है. सोचते-सोचते मुझमें एक हलचल मच गई थी. मेरा शरीर एकाएक जैसे ज्वर तप्त हो गया हो, हव इस तरह धीरे-धीरे गरम हो रहा था, जैसे मन्द ज्वर आ रहा ही ! बेचैनी बढ़ रही थी. अंगड़ाई-जम्हाई लेने की बार-बार इच्छा हो रही थी. हृदय फड़कने लगा था. शरीर थोड़ा-थोड़ा कंपन अनुभव कर रहा था. एक मधुर आवेग से नस-नस जैसे तनने लगी थी. इन क्षणों में यदि इसे छाती से लगा कर चूमने का अवसर तुरत न मिला तो सारा शरीर फट पड़ेगा, ऐसी भीति मुझे होने लगी थी.

उसे किस तरह मनाया जाय ? झूठी बनावटी बात की रचना पूरी हुई न थी. ऐसे समय मुझे मेरी पुरुष-सुलभ-सहज-वृत्ति खूब काम देती. मैं सहज ज्ञान के अनुसार आगे क़दम उठाता. इसमें मुझे कदाचित् ही असफलता मिलती. शायद यह प्रेरणा आदम के ज़माने से पुरुष के स्वभाव में उतरी होगी. एक स्फूरण होते ही मैं उसे पशु की तरह अमल में ले आता. इससे मेरा काम सुगम हो जाता. कोई शब्द, या किसी प्रकार के एक्सप्लेनेशन इतने क़ारगर सिद्ध होते नहीं. इस समय भी ऐसा ही एक स्फूरण फूट निकला.

मैंने उसके लगभग गुलाबी लगते तलुवों की ओर देखा. नितान्त धीमे क़दमों से मैं उसके निकट गया, नीचे झुका. उसकी चिकनी एड़ियों को दोनों हाथों में ले कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उन्हें धीरे से होंठों से पोंछते हुए, मैं चूमने लगा.

बिजली के कौंधने जैसा तीव्र असर स्टेला पर हुआ. एक झटके के साथ वह पर उठ बैठी. कुछ भी खयाल आए, उससे पहले मैं उसकी गुदगुदी-गुदगुदी सुगंधित सुन्दर-सुन्दर छाती में सटा गया था, जैसे कि मैं नन्हा-सा बच्चा बन गया होऊं.

करुण स्वर में वह रो पड़ी. 'ओ, स्वीटहार्ट, तू मुझे क्यों तिरस्कृत कर रहा मैंने तेरा कुछ बिगाड़ा नहीं. तुझे मुझसे प्यार न हो, मैं तुझे पसंद न होऊं चला जा. मुझे छोड़ दे. ऐसा लगता है, मुझे जलाने में तुझे आनन्द आता है. मैं नन्ही बच्ची हूं ? ओह ! कितने-कितने अरमानों से तेरे भेंट दिये हुए कपड़े मैंने तुझसे चोरी-चोरी यह ड्रेस तैयार की थी. पर....'

मैं उसके वक्ष के साथ और अधिक जकड़ गया. गढ़ी हुई कोई बात कहने की शुरुआत करने ही वाला था कि तभी मेरे गाल पर गरम धधकते आंसुओं की टपकने लगीं. मुझे अपने आप से घिन हो आई. साथ ही मेरा हृदय भीग उठा. असत्य बात गढ़ लेने के बदले मुझे बहुत पश्चाताप होने लगा.

मैंने माफ़ी मांगी : 'मुझे माफ़ करो स्टेला. मैं बहुत शर्मिन्दा हूं. मैं निरा आज तक इस जीवन में मैं स्त्री के तनिक भी सम्पर्क में आया नहीं, इसीलिए हृदय की कोमल भावनाओं को मैं कई बार समझ नहीं पाता.' वह आवाज करना चाहते हुए बोली : 'तू चाहे तब इतना स्वीट बन सकता है ! इतनी रीति से मुझे ऊष्मा देता है कि मेरा रोम-रोम आनन्द से नाच उठता है. अपने जीवन अनुभूत ऐसा प्रेम पा लेती हूं ! तेरे सम्पर्क से मेरे बचपन में देखे हुए जैसे सच्चे हो गये हों, ऐसा लगता है. जब मैं यों आनन्द विभोर हो उठती हूं तब साफ़ लगता है कि तू जैसे कोई पाप कर रहा हो, इस तरह अपसेट रहता है. जैसे किसी ने तेरा पीछा कर रखा हो, ऐसे तू व्यवहार करता है. मुझे यह बुरा तरह चुभता है. याद है न तुझे कि तू ने मेरे पीछे घूमना शुरू किया था ! तू ने मुझे प्रयत्न कर के अपने स्नेह में बांधा है.'

यह बात सही थी—शब्दशः. इंटरनेशनल डिनर में कुछ बोलना था. संयोग हम एक ही टेबल पर थे. बात में से बात निकली. तब तक अकेला, मित्रविहीन पहली ही बार किसी के, खास करके किसी सुन्दर स्त्री के ध्यान का पात्र बना ऊंचे ब्लोंड सुन्दर पुरुषों के इस देश में मेरे जैसे नाटे, अकिंचन और किशोर लगते परदेशी को कौन पूछे. मैं इस विदेश में अकेला था, नितान्त अकेला, एकाकी दो-ढाई वर्ष के समय में स्टेला पहली स्त्री थी, अत्यन्त ही सुन्दर अमेरिकन स्त्री जिसने मेरी ओर इतना ध्यान दिया हो. मैं बंधनमुक्त बैल की भांति नाच उठा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डिनर के बाद उसकी अनुमति मांग कर मैं उसके साथ काफ़ी दूर तक गया था. उसकी मधुर आवाज़, उसकी शिष्ट और संस्कारपूर्ण वाणी ने और उसके मनमोहक व्यवहार ने मेरे छोटे-से कोटर में से मुझे बाहर खींच निकाला था. ऐसी सुन्दर स्त्री ने मेरे साथ ऐसा स्नेहिल व्यवहार कैसे किया था, यह किसी भी तरह मेरी समझ में नहीं आया था. दुर्भाग्य से उसी रात को ही उस नीग्रो टोली ने मेरा मज़ाक़ उड़ाया था : 'ऐ; तुम मां-बेटे हो क्या ?' ऐ हनी, हमारे साथ चल.

शायद ऐसे अनुभवों ने मुझमें यह भयंकर खींचतान करने वाले कीड़ों को खुला छोड़ दिया था. स्टेला सच कह रही थी, पर सत्य को मैंने कभी भी स्वीकारा न था.

उसके वक्ष पर लेप किये हुए मोगरे के इत्र की खुशबू से मेरे नथुने फूलने लगे. उसकी मधुर आवाज़, उसके मुलायम वक्ष का स्पर्श, और उसकी भरावदार गोद की ऊष्मा मुझमें धीरे-धीरे आग सुलगाने लगी. मेरे मुह में और गले से शुष्कता आने लगी. धीरे से मुंह ऊंचा कर मैंने अपने कांपते होंठ उसके शीतल अधरों पर दबा दिये. हमेशा की तरह वे भींगे हुए और मृदु थे. गुलाब की पंखुड़ी को जैसे होंठों पर लगाए, ऐसा मधुर अनुभव हुआ मुझे. (मुझे यह स्पर्श खुब भाता.) उसके चारों ओर मैंने अपनी बांहें लपेटीं. तब मुझे ख़याल आया कि वह भी मेरी तरह गहरी भावनाओं से उत्तेजित हो रही थी, उसका हृदय भी कबूतर की तरह फड़फड़ाता रहा था, शरीर कांप रहा था, सांस धौंकनी की तरह चल रही थी और वह पागल की तरह ऐसे मिलन के क्षणों का इंतज़ार कर रही थी.

उसे किस तरह उत्तेजना से शिथिल करना है यह करामात मैं जान गया था. होंठों से मैं उसके सारे मुख को छोटे-छोटे चुंबनों से भिगोने लगा. साथ ही साथ झूठे-झूठे शब्दों में उसकी प्रसंशा करने लगा : 'तुझे पता है स्टेला ! इस दरवाजे के बीच खड़ा-खड़ा मैं कितनी देर तक तुझे देखता रहा था ? तुम्हारा बखान नहीं करता. जीवन में पहली बार मैंने तुझमें सुन्दर स्त्री देखी. मुझे स्वप्न में भी ख़याल न था कि स्त्री इतनी नाज़ुक हो सकती है, उसमें रूप इतना कूट-कूट कर भरा होता है, उसकी भंगिमा में से इतना लालित्य बह सकता है; संक्षेप में स्त्री इतनी सुहावनी हो सकती है.'

वह हँस उठी; जैसे मुर्झा गया पौधा पानी मिलते ही खिल उठता हो. मैं उसके चेहरे की ओर देखते हुए समझ गया कि एक-एक शब्द सुन कर वह एकदम दीवानी हो गई थी. उसका हर्ष वह झेल नहीं सकती थी.

लज्जा अनुभव करती वह बोली : 'मुझे बताओ मत ! अपनी चालाकी दूसरी गुड़ियों के सामने चलाना. मैंने बहुत दुनिया देखी है, सब समझती हूं.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'भगवान की क़सम खा कर कहता हूँ कि मैंने एक शब्द भी ग़लत नहीं कहा न ही मैंने इसमें कोई अतिशयोक्ति की. स्टेला ! तू लंबी है, नाजुक है, तू साक्षात् काष्ठ-खण्ड-सी चिकनी और सुन्दर है. तुझे प्राप्त करके मैं अपने आपको बहुत भाग्य मानता हूं. चाहे तू न मान, पर ये मेरे हृदय से निकले हुए सच्चे शब्द हैं. मेरे केश संवारती हुई वह छलक-छलक जाते स्नेह से बोली, 'और तुम मेरी जान-पहचान के व्यक्तियों में से सबसे मधुर और प्रिय बेबी हो ! मधुर और प्रेमिल बेबी ! ' विशाल बाहों में जकड़ कर उसने मुझे आर्द्र चुम्बन दिया. दम घुटने लगे तब तक मुझे दबाए रखा. वह तरंगित हो उठी थी.

'चल दोस्त, अपनी इंडियन डिशें बना. तीखी चरपरी. भूख लगी है मुझे.'

'चल डार्लिंग !' हम दोनों ड्रॉइंग-रूम में आए. ड्रॉइंग-रूम में से गुज़रते समय दृष्टि सिलाई-टेबिल पर रखे एक सुन्दर कपड़े के टुकड़ों पर पड़ी. स्टेला नई ड्रेस तैयार कर रही थी, उसका खयाल मुझे आ गया. मुझे वह कपड़ा बहुत अच्छा लगा. वहां जाकर मैं कपड़े का पोत देखने लगा. अचानक एक बड़ी स्टील की चमकती कैंची गिर पड़ी जैसी प्रायः दर्जियों के यहां होती है. कारण का पता नहीं, पर मुझे लगा वैसी बड़ी और धारदार फलवाली कैंची जीवन में पहली बार देखी थी. नीचे झुक स्टेला ने कैंची उठाई और फिर टेबिल पर रख दी.

'कपड़ा सचमुच बहुत सुन्दर है स्टेला ! इस ड्रेस में तुझे देखने का न जाने मेरा बहुत मन हो आया है.'

कपड़े का पीस मुझेसे झपट कर, मुझे हल्के-से दूर धकेल कर, उस कपड़े को शरीर पर लगाती हुयी बोली : 'ओ. के. स्वीटी, यह कटिंग मुझ पर कैसी लगती है ?' स्टेला डिजाइनर न थी, आर्टिस्ट थी. उसने कपड़े को इतनी सिफ़त से अपने शरीर पर रखा कि मैं चकित हो गया. उसने जैसे साड़ी पहनी हो, ऐसा आभास मुझे हुआ. लाइट ब्ल्यू कपड़े में मिश्रित रंग की मॉडर्न डिजाईनें थीं. हूबहू किसी ने इंडियन साड़ी की साड़ी पहनी हो, ऐसा पुनः मुझे लगा.

'अफलातून, तू किसलिये डिजाइनर बनी है यह मेरी समझ में नहीं आता ! तो मॉडलिंग करनी चाहिये थी कम काम अधिक पैसे और—'

'पैसे ! शरीर के काम के ?' उसने प्रश्न किया.

मैं स्तब्ध हो गया. हमारे संबंध को स्टेला ने नैसर्गिक माना था, जिसे मैं अभी तक भी स्वीकार न कर सका था. लेकिन वही स्टेला दूसरे से ऐसे सूज सकती है, टॉलरेट नहीं कर सकती है. यकीन नहीं आता, किसी-किसी समय ऐसे छोटे से वाक्य कह कर स्टेला अपने जीवन की अद्भुत झलक दिखा जाती. वह मुझे उलझा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डाल देती. मैं यह समझने में बिलकुल समर्थ न था.

घंटे भर में भोजन निपट गया. उसके निपटते ही मेरी समग्र देह में मानुषेतर चेतना शक्ति आ गई. समग्र देह स्टेला को चाह रही थी. स्टेला रसोई में कुछ इधर-उधर कर रही थी. मैं सोफ़े पर लेटा अपने पास उसके आने के समय की प्रतीक्षा कर रहा था. उन क्षणों में मैं कुछ नहीं सोच सकता था. स्टेला....स्टेला की कोमल देह, स्टेला के अंग, स्टेला की चिकनी छाती, फूल की पंखुड़ी जैसे होंठ और मेरे शरीर पर रुके बिना, फिरते रहते ऊष्मा भरे हाथ. यदि वह आने में देर करती—मुझे कई बार ऐसा लगा था कि वह जान-बूझ कर करती है, तो मैं चिढ़ता. मुझे उस समय बचपन में छप्पर पर सेक्स का खेल करती देखी हुई गिलहरियों का विचार आता, तो किसी-किसी समय, दीवार पर प्रणयक्रीड़ा कर रही छिपकलियाँ दिखाई देतीं. ऐसा लगता कि स्त्री-जात आदमी को तरसाने में एक प्रकार का आनन्द प्राप्त करती है. संभवतः ऐसा हो कि स्त्री-जात पशु-मनुष्य या पक्षी-पुरुष की मूलभूत कमज़ोरी से क़ुदरती तौर पर वाकिफ़ होती है और शायद उस कमज़ोरी का पूरा-पूरा लाभ उठाने में उसे विश्वास है और ऐसा लाभ उठाने का एक भी मौक़ा वह खोती नहीं. स्टेला का व्यवहार मुझे बार-बार चोंचें मार कर आवेशित चिड़ों को दूर रखतीं चिड़ियों जैसा लगता.

मैंने खीझ दबाते हुए आवाज़ दी : 'स्टेला !'

'आई, अधीर न बनो.'

कुछ मिनट बीत गये. वह बाथरूम गई. वह अपनी मुखाकृति देख रही थी. आखिर वह आई. कुछ दूर सोफ़े पर वह बैठी. स्टेला को न जाने किसने क्या भरमाया था. उसकी दृढ़ मान्यता थी कि इंडियन पुरुष को, स्त्री अग्रेसिव हो, यह बिलकुल पसन्द नहीं. इस मान्यतानुसार अपने प्यार के खेल का श्रीगणेश मुझे ही करना पड़ता और खेल के पूरे दांव भी मुझे ही खेलने पड़ते.

मैं उसके पास खिसका. मुझमें प्रविष्ट हुए चैतन्य का एक प्रकार के केफ में परिवर्तन हो रहा था, जैसे शराब एक प्रकार की स्फूर्ति के साथ शिथिलता भी प्रदान करती है, वैसे ही मैंने उसकी दोनों हथेलियों के बीच अपना मुंह रखा. उसके हाथ ठंडे थे. मधुर-मधुर लगा मुझे ! मैं उन हाथों को दबाता रहा, चूमता रहा. मोगरे के इत्र की तीव्र गन्ध के साथ उसके शरीर में से आती एक अन्य गन्ध मैं अनुभव करता रहा. उस गन्ध ने मुझ पर अधिक प्रभाव डाला. खड़ा हो कर उसकी गोद में बैठ कर मैं जैसे ही खेल करने लगा, तभी उसने धीमी आवाज़ में मुझे कहा : प्रिटी, रेकार्ड रख न प्लेयर पर.'

वह संगीत की मजब शौकीन थी. अब से उसे आता है तब से उसके कमरे में संगीत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

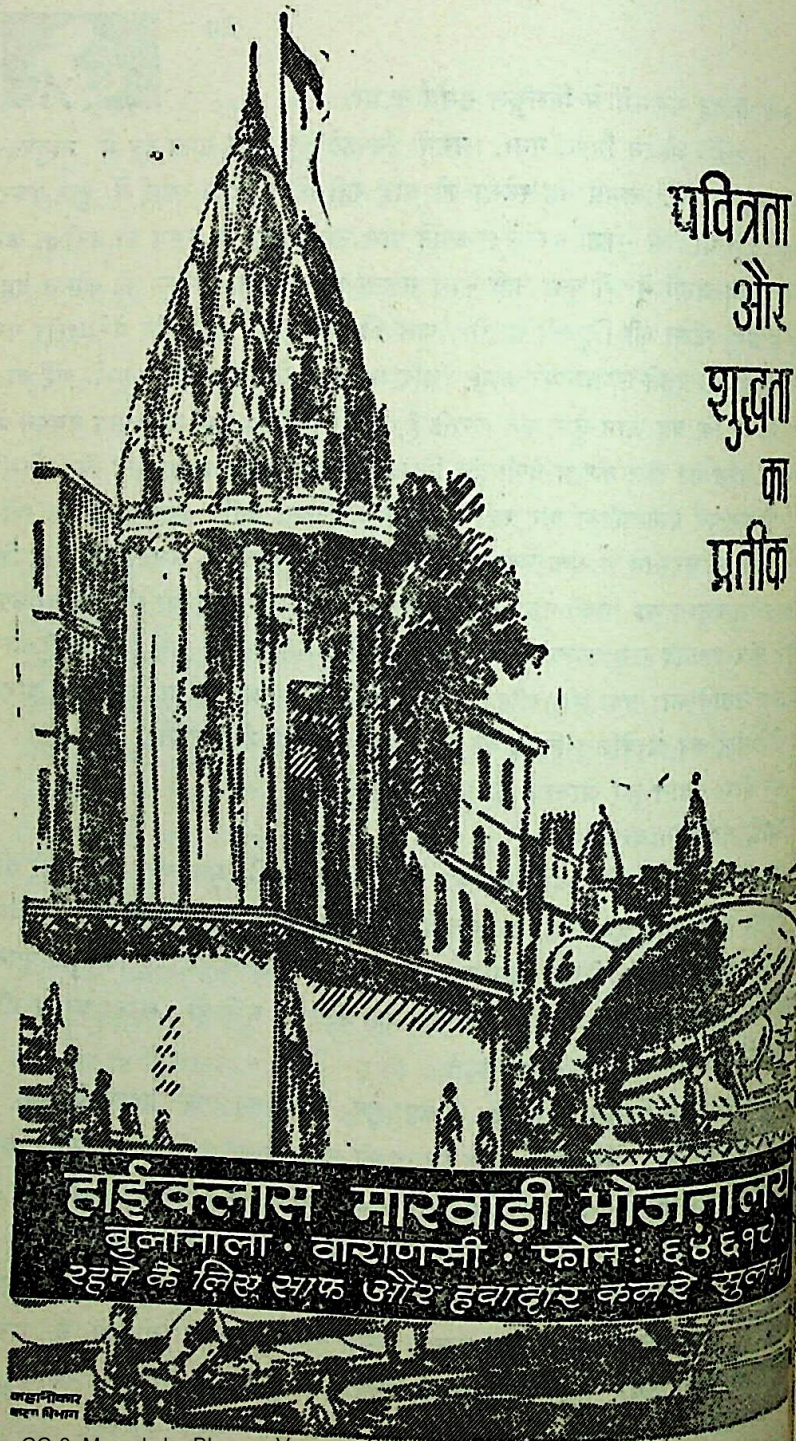

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ा शौक पैदा करने का बहुत ही प्रयत्न किया था. मैं भी पाश्चात्य, लासिकल, जैज फोक संगीत से कुछ-कुछ परिचित हो गया था. मुझे भी वह संगीत च्छा लगने लगा था. पर संगीत उस स्टेला का जीवन था. संगीत की धुनें पार्श्व हों तो स्टेला प्रेम कर नहीं पाती, उसे अधूरा–अधूरा सा लगता. एक बार संयोग-शात् हमें बाहर होटल में एक रात मिलना पड़ा था तब स्टेला मुक्तता से उपभोग न र सकी थी. बार-बार उसने अपने प्रिय कंपोजरों की याद किया था.

अनिच्छा से खड़े हो कर मुझे स्टेला के पसन्द के रिकार्ड 'प्लेयर' पर रखने पड़े. धिकतर रिकार्ड रोमांटिक थे. मैं हँसी में स्टेला को कहता कि भले ही स्टेला शराब हीं पीती थी पर संगीत उसकी शराब की गरज़ पूरी करता था. संगीत शुरू होने र वह किसी अद्भुत आनन्द में डूबी हुई लगती. उस संगीत का प्रभाव उस पर तना मादक होता कि उसका व्यक्तित्व तक बदल गया हो, ऐसा भ्रम मुझे बार-बार ो आता था.

मैं सोफ़े के पास वापिस आया. वह अब आँखें बन्द कर लेट गई थी. प्लेयर से ोर्ट की अनफिनिश्ड सिम्फ़नी के धीमे स्वर हवा में थिरक रहे थे. मुझे संगीत की कनीक का कोई अधिक ज्ञान नहीं था, पर जब भ यह रिकार्ड सुनता, उसकी मूल य का आरोह-अवरोह मेरे कानों में पड़ता, तब दृष्टि के समक्ष कई अलग-अलग न्तु आत्मीय घटनाओं की यादें हृदय में उठतीं. मधुर फिर भी दुःखद संस्मरण ाजा-ताज़ा हो उठते. स्टेला भी किन्हीं ऐसी, स्मृतियों में भटकती हो ही ऐसा मुझे उसके वहार से लगने लगता.

बिलकुल पास से उसके मुख को निरखते हुए मैंने एक रहस्यमय मुसकान वहाँ रकती देखी. घुटनों के बल हो कर, ज़मीन पर बैठ उसके वक्ष पर सिर ढाल कर मैं ड़ रहा. संगीत बह रहा था.

जैसे स्वप्न में बोलती हो, स्वगत बड़बड़ाती हो, एसे वह बोलने लगी, 'यह शूबर्ट ी सिम्फ़नी मुझे हमेशा मेरे अधूरे सपने की, जीवन की मधुर वेदनाओं की, भुला गई टनाओं की याद दिलाती है. कहीं दूर-दूर एकान्त में बिताए हुए कई घंटों की ृतियों को यह हृदय की अतल गहराई से बाहर खींच लाती है. पता है बेबली तुझे, र्जिया के एक खलानों वाले प्रदेश में मेरा जन्म हुआ था ? वहां हम एक भाई और वहनें पले-बढ़े थे. कुछ ग़रीब थे. पिता बचपन में ही चल बसे थे. माँ सिलाई का ाम जानती थी. उस सिलाई के काम से उसने हमारा भरण-पोषण चलाया था. ता होते तो शायद हमारी परिस्थिति भिन्न ही होती. यह संगीत खींच लाता है रे समक्ष वह चारों ओर से पहाड़ों से घिरी, वैनरोंजि से आच्छादित, नन्हे-नन्हें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झरनों से खचाखच भरी वादी ! थोड़े से ही परिवार थे वहाँ. कुछ धनिक
अधिकतर हमारे जैसे और ग़रीब, बहुत ही ग़रीब, तिरस्कृत, ठुकराए हुए नीग्रो लोगों
के घर. स्वीटी, उस जीवन में भोगे हुए आनन्द के क्षणों की तुलना में
सारे सुखों की कुछ भी बिसात नहीं. बचपन वापिस मिल सकता हो तो मैं
आज भी किसी ऐसी ही बस्ती में जा कर रहना पसंद करूं जैसी वह मेरी बस्ती थी.

जब भी वह ऐसे मूड में डूबती तब मैं डर उठता. पहला कारण—हमेशा
भयभीत स्थिति में रहता. यों ही समय का गुज़रना मैं देख सकता नहीं. दूसरा कारण—
ये स्मृतियां उसे इतना अधिक विभोर बना जातीं कि उसको सेक्स्युअली उत्तेजित करना
असंभव हो जाता. तीसरा कारण यदि मैं उसे सेक्स की ओर उन्मुख करने के लिए
तनिक भी प्रयत्न करता तो वह चिढ़ उठती और मुझे घर से निकाल बाहर करने को
तैयार हो जाती. चौथा कारण—मैं अपने सेक्स को प्रोलांग नहीं कर सकता था.
रोकने का कोई उपाय मैं खोज नहीं सका. रात को वहाँ से भाग निकलना भी ठीक
था, इस कारण मैंने उसे उस मूड में खो जाने दिया. मुझे तो उसे चूमना था, उसे
में भरना था, उसे जकड़ कर पड़ा रहना था, पर विवश. मेरे होंठ गरम और सूखे
लगे थे. साँस गरम-गरम निकल रही थी. यों शरीर काफ़ी ढीला होने लगा था.
उसे डिस्टर्ब्ड करने की हिम्मत मेरे पास न थी.

'....वहाँ एक छोटा-सा चर्च था. पता नहीं कि उस पुराने चर्च को तोड़ कर
बनाया गया है कि नहीं. उसके साथ ही बड़ा चर्चयार्ड था. हज़ारों क़ब्रें वहाँ थीं.
सोए हैं मेरे स्वजन—पिता, माँ और इकलौता भाई. हां, भाई एकाएक चला गया.
घटना ने हम सब की पीठ तोड़ डाली. जोध जवान भाई ! दुर्घटना में चल बसा.
पर पास के जमींदार की गायें चराने जाता था. उस संध्या के समय मोटर की
चमका हुआ घोड़ा पवनवेगी-तूफानी हो गया, किसी भी तरह क़ाबू में नहीं आया
भाई को उछाल कर ज़मीन पर फेंक कर उसे चारों पैरों से रौंदता हुआ वहाँ से
गया. दूसरे दिन सुबह उसका शव रास्ते पर मिला. मां ने, बड़ी बहन ने और मैंने
कर भाई को पिता के पास की ज़मीन में सुला दिया, सदा के लिए ! हम तब से
असहाय स्थिति में हो गए. घर का स्तंभ ही टूट पड़ा, छोटी बल्लियों की क्या
मां का हृदय टूट गया. घर का कार्यभार मुझे संभालना पड़ा. एक विचित्र बात
हनी ! मेरी मां लम्बी थी, मेरे पिता छोटे थे. मैं घर में सबसे ऊंची और भाई
नाटा ! आज भी मुझे याद है. वह ऐसा चिढ़ता, अकुलाता ! उस समय भी मैं
चार-पांच इंच ऊंची लगती. लोग कहते कि स्टेला को बेटा समझो और ज्यादा
बेटी. ऐसा होने पर भी उसे मुझ पर और मुझे उस पर अपार स्नेह था. मेरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिना वह एक क़दम चलता नहीं आ. डियर, उस चर्चयार्ड में
ये हुए स्वजनों की याद शुबर्ट की यह सिम्फ़नी ले आती है.

'मां चल बसी, उससे पहले बहन की सगाई और शादी हो गयी थी. भाग्य कैसा बहन के लड़का नहीं. तीन लड़कियां हैं बस. मैंने मां के पास से सिलाई का काम सीख लिया था. मां चली गई. मैं जवान थी. शादी करनी थी पर....' वह रुक गई. सिम्फ़नी की सबसे उत्तम गतें चल रही थीं.

'ये स्वर ! ये स्वर मुझे पागल बना डालते हैं. जैसे मैं उस चर्चयार्ड में घूमती होऊं, मां की क़ब्र के आगे जा कर रुक जाऊं, नीचे झुक कर वहां फूल चढ़ाऊं, उसे याद करूं, कहूं कि मां तेरी याद मेरे हृदय में वैसी की वैसी है, मां तेरी आत्मा को शान्ति मिले, दो आंसू बहाऊं, कुछ मिनट रुकूं, अपने खंडहर जैसे घर में जाऊं, देखूं क्या हुआ हमारी बस्ती का ? अभी तक उस धरती का मोह और आकर्षण ज्यों-का-त्यों है. इस ज़मीन की मुहब्बत तनिक भी कम नहीं हुई.'

मेरे कानों में शब्द पड़ रहे थे. मेरा मन अधीरता से उसके मूड में फेर-बदल होने की राह देखता रहा. मैं डर के मारे कुछ बोल नहीं सका. मेरे हाथ उसके शरीर पर चल रहे थे. पर वह कुछ भी उत्तेजना अनुभव करती हो, ऐसा मुझे लगा न था. मैंने उसके वक्ष का अपनी अंगुलियों के पोरों से स्पर्श किया. उसने मुझे रोका नहीं. मैंने उसको उसके ऊपरी भाग को निवस्त्र करने की चेष्टा की उसके चिकने-चिकने वक्ष-विन्दु कुछ ऊपर को ओर बढ़ आए. उन्हें मैंने अपने होंठ और गाल का स्पर्श दिया. रिकार्ड चेंज हो गई थी. अब रशियन कंपोजर राहमानीनोफ़ का पियानो कंचेरटो बज रहा था. वह मूवमेंट धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था.

'अब ये स्वर मुझे हमेशा गर्मियों की रात के समय मेरे देश में बिताए हुए प्रसंगों की याद दिलाते हैं. वह गरम-गरम लुएं, निग्रो लोगों के गीत और तब आधी-रात को बेचैन दिल में उठते हुए दुःस्वप्न !!'

मैंने उसके सारे बटन खोल डाले. उसे जैसे इसकी खबर ही न थी. ऐसा बहुत बार होता था. मेरी वृत्तियाँ इतनी तप उठतीं कि मेरा शरीर अत्यन्त बेचैन हो उठता. मैं उसे चूमने, सीने से लगाने, उसे झकझोर कर जकड़ डालने को तड़प उठता, तब उस समय वह भूतकाल को उखाड़ने बैठती. असंगत विचित्र बातें बिना संदर्भ वह किया करती. ऐसे समय मैं जब भी उसे टोकता तो वह अत्यधिक क्रोधित हो उठती. मुझे दूर धकेल कर वह कहती, 'होह ! तुझे केवल तेरा सेक्स ही संतुष्ट करना है ? क्या हम में मात्र ये ही संबंध हैं ? तू समझ सका मुझे ? शायद तू समझ सकता भी नहीं. मुझ में भी सेक्स्युअल डिजायर्स हैं, पर मेरा हृदय कविता भी साथ चाहता है, उसे फूलों की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोन : ५३३२८

कोणार्क

रेस्टुरेन्ट
और
आइसक्रीमबार

दीपक सिनेमा • वाराणसी

मनोरम एयर कण्डीशंड
कक्ष में सपरिवार
सुस्वाद
सामिष या निरामिष
डिनर, लंच, जलपान
आइसक्रीम एवं
कॉफी का
आनन्द उठायें •

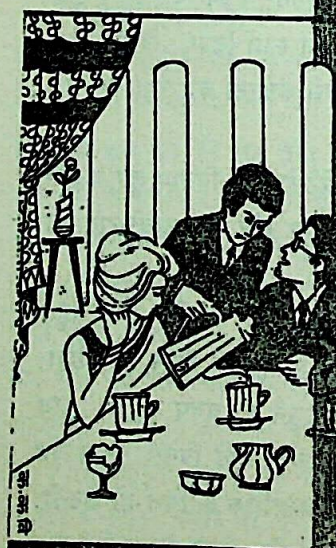

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी कामना है, समझा. कविता न करनी हो, फूल न देने हों, मीठी-मीठी बातें नहीं सुनानी हों तो चलता बन. यह सब देना चाहता है तो रास्ता पकड़, मेरे दोस्त. इस रीति से तो मैं तुझे कदापि मिलने की नहीं.

उफ्, मैं उसे किस तरह समझाऊँ कि जब मेरे शरीर में इस प्रकार की आग लगती थी तब मेरी कविता, मेरी मीठी बातें, मेरे फूल–ये सब भस्म हो जाते थे. संगीत के स्वर, मात्र एक शोर बन जाते थे. वास्तव में मेरी दृष्टि के समक्ष तिरती रहती स्त्रियाँ, विविध स्त्रियों के आकर्षक मॉडल्स, उनके नग्न अवयव, किसी रूपवती स्त्री का सुनहरी लटों से छाया हुआ आह्वान करता चेहरा, ऐसे चेहरे पर चमकती पैनी भूरी-भूरी आखें, गुलाबी टाइट्स में भिंची हुई नाजुक कमर, चिकने-चिकने लंबे पैर, सुडौल, बर्फ-से चिकने स्तन, पुष्ट, सुघड़, भिन्न-भिन्न आकारों के नितंब, रंगे हुए नाखूनों वाली लंबी अंगुलियाँ, ऐसे पतले हाथ, तरह-तरह की पोशाकों में सज्जित भिन्न-भिन्न केशोंवाली अलग-अलग रंग की लड़कियाँ, युवतियाँ, प्रौढ़ाएं—क्षणोंके लिए कहीं देखी हुई, मिली हुई, बातों में लगी हुई असंख्य स्त्रियों की एक कतार जम जाती मेरी आंखों के सामने. किसी भी तरह उनको दूर कर सकना मेरे वश में न होता. उस वक्त स्टेला के प्रत्येक अंग पर हाथ फेरते हुए एक कुदरती, वायोलेंट, पाशविक आनन्द का अनुभव होता मुझे.

उन क्षणों में मैं पाप-पुण्य की, सत्-असत् की व्याख्याएं भूल जाता; सम्पूर्ण रूप से एक प्रकार की पार्थिव उत्तेजना में, एक अगम्य प्रकार के नशे में, एक अपूर्व आतशबाजी की दाह में, एक प्रकार की इररेजिस्टिबल वृत्तियों के आवेगों में मेरा सम्पूर्ण स्वरूप परिवर्तित हो जाता.

'तू मेरी बात नहीं सुनता ?'

'तुझे मुझमें विश्वास नहीं ?'

'तब बता तो मुझे, मैं क्या कह रही थी.'

'कहता हूँ न कि तुझे मुझमें इतना भी विश्वास नहीं. पर यह संशय दूर करने के लिए अब तुझे मैं ब्योरेवार, तूने जो बातें कहीं हैं, कहूंगा. क्षण-क्षण मैं तेरे साथ था. इतना ही नहीं, एक ही साथ दो अजीब वृत्तियाँ मैं अनुभव कर रहा था. ठीक जब मैं ज्योर्जिया की वादियों में तेरे साथ घूम रहा था, तभी मैं तुझे अपने साथ अपने देश में विशाल नदी की खोहों में घुमा रहा था, जब तू नीग्रो के गानों की बात कर रही थी, तब मैं एक छोटी खाट पर तेरी गोद में सिर रख कर ढोलक की थाप पर गाते और नाचते आदिवासियों को देख रहा था, जब तूने अपने जोघजवान भाई की मृत्यु की बात कही थी तब अकाल मृत्यु प्राप्त अपने बहनोई को चिता पर सुलाया था, उसका दुःखद स्मरण मेरे हृदय में ताजा हो उठा था. खैर ! तुझे मुझमें श्रद्धा ही कहाँ है ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ओह, बेबली, मेरी स्वीट बेबली, सॉरी, सचमुच मेरी सॉरी ! तू अद्भुत है! इसीलिए ही तो मुझे तुझ पर इतना अधिक प्यार है. तू जीवन में पहला व्यक्ति मुझे मिला है जिसके विचार मेरे साथ बराबर मिलते हों.'

मैंने ऊपर की बात बनावटी कही थी. यदि उसका इसे पता चल जाय तो ! कुछ देर वह मौन लेटी रही. फिर वह बोली, 'हमारे विचार बहुत समांतर हैं और फिर भी तू मेरी प्रीत को कभी भी समझ सकता नहीं.'

'मैं कहता हूं न तुझे....'

मुझे बीच में अटका कर वह बोली— 'तू ही नहीं कोई पुरुष स्त्री के प्रेम को समझ सके, ऐसा होता नहीं. वह अपने काम में इतना व्यस्त होता है, सेक्सप्ले में वह इतना विह्वल बन जाता है कि स्त्री की भावनाओं को समझने जितना धैर्य ही उसमें नहीं रहता.'

'पर मैं तुझे अवश्य समझ सकता हूं.'

'नहीं, दोस्त, मुझे समझने जितना धैर्य सीखते हुए तुझे शायद वर्षों लग जायेंगे.

आश्चर्य की बात तो यह है कि मैं तुझे ठीक समझ सकती हूं फिर भी तेरे साथ के इस संबंध को सहेज रखती हूँ. मैं तेरा सहारा बन गई हूँ. मेरे सहारे बिना तू चले, ऐसा नहीं. तू अकेला, एकाकी, मित्रविहीन, स्वजनविहीन इस अनजान देश में है. तू इस एकाकीपन से उकता गया है. तुझे किसी का सहारा चाहिए, तेरा शरीर कुदरती आवेगों की संतुष्टि चाहता है, तुझे किसी मित्र की भी आवश्यकता है; यह सब तुझे मेरे सहवास से मिलता रहा है. तेरा अध्ययन समाप्त होगा, तब तू मुक्त हो मुझे झुक कर सलाम करेगा. तू ऐसा कर सकेगा, क्योंकि तेरा मेरे प्रति प्रेम....खैर ! जाने दे यह बात. कुछ क्षणों के लिए मिले हुए व्यक्तियों से ऐसी निराशा की बातें करना उचित नहीं. हम दोनों ने कई अमूल्य दिन साथ बिताए हैं. मुझे तुमसे एक बात पूछनी है. जब बात को छेड़ा है तो पूरी ही छेड़ निकालूं. हां, बेबली, दो-तीन वर्ष में तू अपने देश वापिस लौटेगा—'

उसे वहीं अटका देने की भयंकर इच्छा को मैंने रोका एक ओर उसके मुंह पर हाथ रख कर उसे बोलने से रोकना चाहता था, दूसरी ओर वह क्या कहेगी यह जानने की उतनी ही प्रबल जिज्ञासा भी हो रही थी. वह कह रही थी—

'तू अपने देश वापिस लौटेगा. बहुत वर्षों बाद अपने सगे-संबंधियों से तू मिलेगा. तेरी माँ हर्षाश्रुओं से तुझे नहलायेगी; तेरे पिता की छाती गज-गज फूलेगी; भाई बहन आनन्द से नाच उठेंगे. किसी सुन्दर, रूपवती, कम उम्र की लड़की की मंगनी ले कर कोई आएगा. अमेरिका से वापस लौटे वर को मुह मांगा दहेज देने को हर कोई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तैयार होगा. मजे की उस बांसुरी के साथ तू सम्बद्ध हो जाएगा. तीन-चार वर्षों में दो-तीन बच्चे घर को किलकारियों से भर देंगे. जीवन में जो कुछ भी तू चाहेगा ऐसा सुख तुझे मिलेगा. उन सुख के क्षणों में, सच कहना बेवली, उन सुख के क्षणों में तुझे याद आएगा यह सब—यह स्टेला, अकेली, एकाकी, यह छोटा एपार्टमेंट, यह संगीत, यह साथ बिताए हुए सुखद क्षण, ये रातें, यह भोजन, यह अल्पजीवन ? कह तो दे दोस्त, किसी-किसी समय तू इनमें से कुछ तो याद करेगा न ?'

मैं हिमवत् हो गया. जैसे एकाएक बर्फ़ की शिलाओं की वर्षा हुई हो और से घुटता, अकुलाता उनमें कुचल गया होऊँ. मेरी लोलुपता कहीं अदृश्य हो गई, नशा उतर गया. मेरा हृदय धड़कना बन्द हो गया. यह स्त्री जैसे मेरी रग-रग जानने लग गई थी. मेरे स्वार्थी स्नेह की इतनी स्पष्ट जानकारी होते हुए भी यह मुझे सत्कार दे रही थी. भविष्य में काले बादलों के सिवा कुछ न होने पर भी यह इस वर्तमान में परिवर्तन चाहती न थी. मुझे निरा पश्चाताप होने लगा. मैं क्षुद्र हो गया. उस शांत वातावरण में मुझे लगा कि स्टेला की आंखों से आँसुओं की धारा बह रही थी. मैंने आहिस्ता से उसकी आँखों पर हाथ रखा. वह सिसक उठी. गरम-गरम आंसू मेरे हाथ पर झरते रहे. मैं मूक बन गया. पहली बार मैंने स्टेला को इतना विवश देखा. वेदना की ऐसी आग उसके अन्तर में सुलगती होगी, इसका मुझे तभी पता चला.

'रो मत, स्टेला ! तू सोचती है उतना बदतमीज आदमी मैं नहीं हूं. तेरे साथ बिताए हुए इन क्षणों की स्मृति मेरे हृदय में अंकित हो गई है. यह कोई प्रयत्न करने जैसी बात नहीं. यह मेरा दूसरा स्वभाव बन गया है. तू रो मत. मेरा हृदय कटा जा रहा है.'

स्टेला ने फिर शुरू किया, 'तुझे किस तरह समझाऊँ अपने इस निष्फल जीवन की कहानी ! जीवन में जो कुछ चाहा था' उसमें से कुछ भी हाथ नहीं लगा. बहुत छोटी थी तब एक के बाद एक आफतें हम पर आई थीं. उससे पहले, मैंने एक स्वप्न संजोया था—बड़ी होऊँगी, ब्याह के योग्य होऊँगी, तब जान-पहचान वाले लड़कों में से कोई खूबसूरत युवक मुझे प्रपोज करेगा. रीयल सदर्न जेंटलमेन की तरह वह मुझसे पूछेगा—हनी अपने हाथों को इस नालायक के हाथों में सौंपने को तैयार होओगी ? मैं शरमा जाऊँगी पर अन्तर में तो आनन्द से पागल-पागल हो जाऊँगी ही. वह मेरे माता पिता के पास जाएगा. सगाई की रस्म अदा होगी. बिरादरी की लड़कियाँ मुझसे ईर्ष्या करेंगी. एक दिन उस छोटे चर्च में हम वर-वधू बनेंगे. वह सब के बीच मुझे चूमेगा. सफ़ेद गाउन में मैं कैसी खिल उठूंगी ! छोटा-सुन्दर घर बसाएंगे. नन्हें बच्चों से हमारा घर-संसार खिल उठेगा. पर यह सपना ही रह गया. वह कल्पित सदर्न जेंटल-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

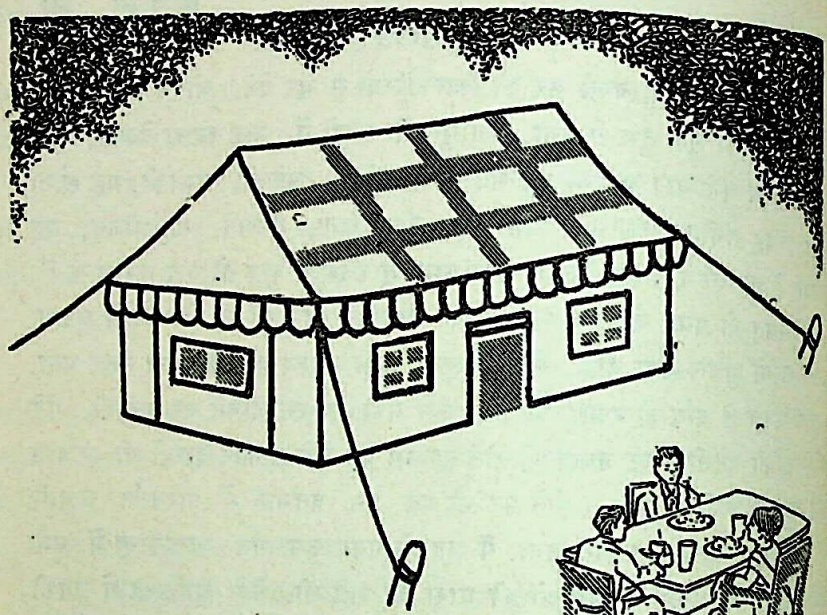

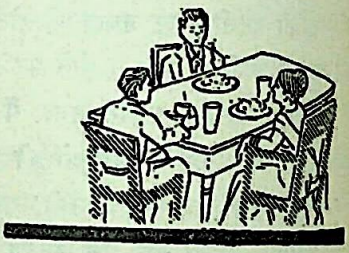

समारोह
डिनर
पार्टियों की
खूबसूरती
और प्रतिष्ठा
के लिए

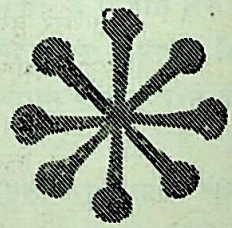

डायमण्ड डेकोरेटर्स

जंगमबाड़ी • वाराणसी

फोन: ऑफिस: ६६९०३, ५३३२० ■ आवास: ५३४२४

• भव्य टेन्ट • फर्निचर • क्रॉकरी • कॉफी मशीन
प्राप्त करने हेतु हमें आदेश दें •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेन कभी भी इस ग़रीब लड़की के पास आया नहीं. न घर बसाने का सपना सम्भव हुआ, न संसार बना. और बच्चे ! पता है तुझे स्त्री के जीवन की बड़ी से बड़ी एषणा ? उसके हाड़-मांस-चाम-लहू का बालक ! उसकी गोद को हरा करने वाला बच्चा ! जिसका यह भाग्य भगवान ने लूट लिया, उसका सर्वस्व लुट गया. उसके जैसा दुर्भाग्य स्त्री के लिए और कोई नहीं, मैं ऐसी ही दुर्भाग्यवती स्त्री हूं.'

'वंध्यत्व ?' एकाएक मेरे मुंह से शब्द निकल गया था

वह भी मेरे चीख से चौक गई. गुस्सा हो कर झगड़ने के बदले वह निराश स्वर में बोली, 'आश्चर्य हुआ तुझे क्यों ? खैर ! अब तो क्या खोने को है मेरे पास ? मैं अपने आपको धिक्कारती हूं कई-कई बार, तो फिर दूसरे धिक्कारें इसमें आश्चर्य नहीं. मेरा तन-मन, मेरी आत्मा, मेरा रोम-रोम उस नन्हें से बालक को चाह उठता है, पर वह मुझे अब कभी भी मिलने का नहीं. मम्मी कह कर बुलाने वाले बालक को मैं पाने वाली नहीं....'

एक विचार आया और ओझल हो गया. मेरे मन में एक वहम था; मेरे साथ इतनी छूट से शारीरिक संबंध रखती यह स्त्री किस तरह अपने आपको प्रेग्नेंट होने से रोक सकती होगी ? कभी-कभी इस फन्दे में फंस जाने के, घोटाले में पड़ जाने के विचार मुझे चिंतित कर डालते. दूसरी ओर मन दलीलें दे कर मुझे बचा लेता, आखिर यह परिणीता स्त्री थी. विवाहित स्त्री को बालक होने में क्या आश्चर्यजनक है ? गुवेरा क्यूबन था इससे बालक का रंग-रूप भिन्न हो तो भी किसी को खास संशय पड़ने वाला न था, पर गुवेरा तो जान ही जाता. देखा जाएगा....आदि-आदि. जो भी हो पर उस कलंकित परिणाम की दृष्टि से ओझल रहना मेरे लिए संभव न था. स्टेला के इस खुलासा ने मेरे पौरुष को फिर जगा दिया. वेगवती वृत्तियां बढ़ने लगी थीं और मेरी नसें तनाव महसूस करने लगीं.

मैंने यों ही कह दिया, 'बोल लगानी है शर्त तुझे, मुझ से थोड़े समय में बालक पाने की. तू जानती है न पॉप्युलेशन प्रोब्लेम इंडिया की ? हम से कोई टक्कर नहीं लेता. इस तरह यदि हम माता-पिता बन जायें तो...तो फिर मैं यहीं रह जाऊं...क्यों ?'

मैं आगे बोलना जारी रखता पर उसकी एकदम गूंजती हुई खिलखिलाहट ने मुझे खिसिया दिया. मुझे जरा अपमान जैसा अनुभव हुआ. मैं कुछ बोलूं उससे पहले उसने मुझे प्यार से अपनी छाती से लगाने के लिए मुझे खींच लिया. छलकते प्रेम से वह बोली, 'तू तो सचमुच छोटा बेबली है. मैं जानती हूं कि तू खूब ही फर्टाइल है पर करोड़ों उपायों से भी मुझे कोई बालक दे सकेगा, ऐसा संभव नहीं. सब कुछ कर चुकी हूं. अब तो जीवन यों ही बिता देना है.' उसने दीर्घ निःश्वास छोड़ा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब मेरे सेक्स आवेग यथावथ हो गये थे. मुझमें थोड़ी हिम्मत भी आई। मैंने मौका देख कर कहा.

'स्टेला, कपड़े मसल जायेंगे, खोल डाल इन्हें.'

एक चुम्बन भर कर वह उठ खड़ी हुई जिसमे मुझे लगा कि वह उस ब्रिज के मूड से बाहर आ गई थी.

उसने मज़ाक़ किया, 'फर्टिलिटी का प्रूफ देने की धुन सवार हुई है क्या ?'

मुझे हंसी आ गई. सीधी बेडरूम में चली गई. कपड़े बदलने की ध्वनी से बाथरूम में वह कुछ देर रुकी. मैं वहाँ भूल कर भी अपने कपड़े नहीं उतारता। सदियों में जाकेट के सिवा दूसरी कोई भी चीज स्टेला के घर मैं लाता नहीं. कुछ भी पास नहीं रखता. खुले डॉलर जेब में रखता था. मेरा भय इतना बढ़ गया था कोई भी निशानी पकड़ में न आए, इसका मैं पूरा ध्यान रखता था. पिछले दरवाज़े भाग निकलना पड़े तो उसकी तैयारी भी हमेशा रहती. रिकार्ड का वाल्यूम काफ़ी रखता. जिससे बाहर के आदमियों को हमारी आवाज़ या बातें सुनाई न दें.

वह वापिस आई. अब अंधेरे में देखने को मेरी आंखें अभ्यस्त हो गई थीं. चिपके हुए नायलॉन के पेटीकोट में से उसकी धवल-गुलाबी देह सुडौल दिखती मेरे रोम-रोम में पलीते सुलगने लगे.

वह मेरे साथ लेट गई. हम आलिंगन में जकड़ गये. उसके हाथ मेरे गालों, पर, पीठ पर फिरने लगे. मैंने अपना हाथ उसकी जांघों पर रखा. वे केले के तने चिकनी थीं. वैसे तो उसका सारा शरीर फिसलनवाला था. मैं उसे अधिक दबाव में लगा कि तभी एपार्टमेंट के मुख्य द्वार के खुलने की आवाज़ मेरे कानों से टकराई। मिनिट में उसके बन्द होने की आवाज़ थरथराई. मेरा भय उमड़ आया. सोफ़े में लगभग आधा बैठा हो गया. किसी के सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ आई.

'वह आ गया क्या ?' मैंने स्टेला से पूछा.

'पागल है तू ? वह तो चार-पांच सौ मील दूर निकल गया होगा, अब तो.'

'फिर किसी के सीढ़ियाँ चढ़ने की आवाज़ कैसे आई ?'

'पेपर बॉय होगा. ऊपर कोई पेपर लेता होगा.'

कारण या अकारण मेरा हृदय यकायक कांप उठा. मुझे लगा कि कोई दबे से सीढ़ियाँ चढ़ रहा था. एकाएक प्रश्न हुआ कि स्टेला ने हमेशा की तरह मेरे बाद दरवाज़े पर सांकल या स्टॉपर लगाया था या नहीं ?

'तू ने सांकल या स्टॉपर आज लगाया है ?'

'ओ बेबली, तू ऐसा डरपोक कैसे है ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुझे लगा कि किसी के दबे क़दम दरवाज़े के आगे रुके. दरवाज़े के फिक्स्ड ताले में चाबी डाली है. मेरे मन में फिर प्रश्न उठा कि सचमुच गुवेरा छाती पर आ खड़ा हुआ तो मैं करूँगा क्या ? वह तो मुझे चुटकी में मसल डालेगा. भागूंगा कहाँ ? वह मुझे मार डालेगा. नहीं, मुझे वह छोड़ेगा नहीं. ओ ! भगवान ! इस बन्दरिया की भूल ने....अपना बचाव मैं कैसे करूँगा वह बड़ी कैंची....कैंची के धारदार फलक चमकने लगे मेरे समक्ष. हाँ, वही मेरा सहारा होगा

जैसे दरवाज़े के ताले में चाबी पूरी घूम गई. एक जोरदार लात का दरवाज़े पर प्रहार हुआ. यह स्वप्न न था. प्रचंड धमाका करता दरवाज़ा खुल कर दीवार के साथ टकराया. एक लंबी विशाल आकृति भीतर बढ़ आई. उसके हाथ लाइट का स्विच टटोलने लगे. कुछ अजीब चपलता से मैं और स्टेला एक दूसरे को धकियाते ड्राइंग रूम के सामने के कोने में सिलाई-टेबिल के पास जा कर खड़े हुए ही थे कि लाइट हो गई.

अब तक जिसके बारे में सुना ही था उस क्यूबन को, स्टेला के पति को, मैंने ठीक अपने सामने देखा. उसे देख कर मेरे हाथ-पांव फूल गये. छः फुट से भी अधिक ऊंचा, ऊंचे और मांसल कंधों वाला, लाल सुर्ख, भयानक चेहरे वाला, धारदार काली मूंछोंवाला और खुन्नस-भरी धिक्कार-झरती-आँखों वाला गुवेरा मुझे साक्षात् यम जैसा लगा.

मैं थरथर कांप रहा था. वास्तव में मैं कापुरुष की तरह अपनी छोटी-सी जान को स्टेला के पीछे छिपाने का प्रयत्न कर रहा था. मन-ही-मन भगवान को याद करता मैं फुसफुसा रहा था.

अब बचने का कोई उपाय नहीं. यह मुझे अवश्य मार डालेगा. शायद हम दोनों को मार कर यह भाग जाएगा. किसी को गंध तक नहीं आएगी. यह मुझे जिन्दा जी तो नहीं ही जाने देगा.

वह इतना अधिक क्रोध के आवेश में था कि उससे बोला नहीं जा रहा था. उसके मुंह में से शब्द टूटते हुए निकले थे. वे मेरी समझ में नहीं आ रहे थे. वह भी कांप रहा था.

'साल्ली, कुत्ती, बे....वफ़ा...., कु....त्ती..... इस....इस....ठिगने के साथ आखिर ? इस की....कीड़े के साथ.... ? मेरा ऐसा घोर अपमान ! नरक में सड़ती जीवात्मा ! इस ओरांग-उटांग ठिंगूजी के साथ तू ने प्यार किया ? तुम दोनों भगवान का स्मरण कर लो.... !'

स्टेला गिड़गिड़ाने लगी. इतनी अवश स्टेला को मैंने कभी देखा न था. दोनों हाथों से मुझे अच्छी तरह पकड़ कर वह मेरा बचाव करती खड़ी थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'गुवेरा, तेरे पैरों पड़ती हूं. तुझसे मांफी मांगती हूं. तू इस लड़के को जाने
तेरी गाय हो कर रहूंगी. गुवेरा ! यह एक भूल माफ़ कर. मैं तेरी दासी हो कर रहूं
वह मुझसे भी अधिक थरथरा रही थी. मैं पिल्ले की तरह उसके पीछे छिपता
पीछे हो रहा था. गुवेरा मुझे पकड़ने की कोशिश कर रहा था.

यहाँ कहाँ फंस गया भगवान ! ऐसी कुमौत, घर से इतनी दूर मरना पड़ेगा.
मुझे नहीं छोड़ेगा. मैं इसके हाथों में पकड़ गया तो यह मुझे नोच डालेगा. कुत्ते
नोच-नोच कर बिखेर डाली गयी कबूतरों की पांखें मेरे चारो ओर उड़ने लगीं.

गुवेरा दांत किटकिटाता और हाथों को मलता स्टेला से कहने लगा,' 'तू मुझे
दे इस नाटे को. इन दो हाथों से मार-मार कर मैं इसे खत्म करूंगा. तेरे देखते
इसे यही दारुड़ यातना दे-दे कर मारूंगा. रां....ड....तुझे बाद में हाथ लगाऊंगा.
सैकिंड में वहाँ से हट जा, नहीं तो.... ?'

स्टेला एकाएक बदल गई. वह सख्त स्वर में बोली, 'इसका तू बाल भी बांका
कर सकता, जब तक मैं यहाँ हूँ तब तक तो नहीं ही. गुवेरा, मैं तुझे धिक्कारती
तू ने इसे ओरांग-उटांग कहा ? तू मत्त गेंडे जैसा है. तुझे प्रेम करने आता नहीं
उद्धत और बेफ़िक्र है. तेरा और मेरा कोई संबंध नहीं. मैं तुझे धिक्कारती
चल निकल.'

'चल निकल ? तुम दोनों की लाशें बिछा कर ही निकलूंगा.'

मुझे स्टेला के शब्दों ने बहुत हिम्मत दी. उन कुछ क्षणों में मैंने मशीन पर
कैंची खोज निकाली थी. आवाज़ न हो इसलिए मैंने कपड़े सहित अपने दाएं हाथ
उसे उठा ली थी. मेरी नज़र गुवेरा के हाथ पर पड़ी. वह अपनी जेब में हाथ डाल
था. चाकू....मेरा कांटा निकल गया. एक क्षण में निर्णय कर लिया मैंने. समस्त
लगा कर मैंने कैंची अपने दांतों में पकड़ी झटके से स्टेला को धकेल कर मैंने
हनुमान जैसी लंबी छलांग लगाई. क्षण मात्र में मैं गुवेरा के बायें पार्श्व पर
अपनी सम्पूर्ण ताक़त से मैंने कैंची की नोक उसकी छाती में भोंक दी. वह
सन्नाटे से मैं खुले दरवाज़े में से बाहर निकल गया. सीढ़ियाँ उतरते हुए मैंने गुवेरा
कराहती अशक्त आवाज़ सुनी 'ओ....मे....रे...ईशु....उसने मुझे मार डाला....
मैं सरपट भाग रहा था, अपने कमरे की ओर. कुछ भी सुनाई देता न था. कुछ
न था. क्या हो रहा है, इसकी सुध न थी. जान बचा कर हवा की तरह भाग रहा

■

मैं जाग गया. किसी ने मुझे अनंत निद्रा में से, स्वप्न में से बल पूर्वक
किया हो, ऐसा अनुभव हुआ, सिर पर जैसे हथौड़ा ठोका जा रहा हो ऐसी भ्रांति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जागने के बाद भी होती रही. ऐसा लगा, कोई जोर-जोर से दरवाज़ा खटखटा रहा था. मेरे नाम की पुकार के साथ 'पकड़ो....पकड़ो' की पुकारें हो रही थीं. मैं अभी तक गाढ़ी तंद्रा में था. कहाँ था, कैसे वहाँ था और किस तरह इसदशा में था उसका भान न था मुझे. यह याद करने के लिए बहुत प्रयत्न किया तो भी इसमें सफलता नहीं

ईवा डेव ❀ एक परिचय

गुजराती कहानी क्षेत्र में प्रयोगशील कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में ईवा-डेव के नाम से प्रख्यात डा० प्रफुल्ल एन. दवे का जन्म ५ मार्च, १९३१ को नडियाद में हुआ. बी०एड नडियाद में व एम. ए. वल्लभ विद्या नगर के शारदा मंदिर में अध्यापन करते हुए किया अमेरिका में ६ वर्ष रह कर वहाँ की वाशिंगटन यूनिवर्सिटी से शिक्षा-मनोविज्ञान में डाक्टरेड की. वहाँ से लौट कर एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा सचालित क्षेत्रीय महाविद्यालय मैसूर में रीडर बने और सम्प्रति क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर में प्रोफेसर (शिक्षा) के रूप में कार्य कर रहे हैं.

इनकी अधिकांश कहानियाँ जीवन से आती हैं. मानव जीवन और मानव मन के व्यवहार, व्यापार, आघात और प्रत्याघात, संघर्ष, संवेदन, स्वजनी और परजनी अनुभव, अनुभूति, चिंतन-बिन्दु व मानवशास्त्रीय सूक्ष को शब्दों में व्यक्त करने वाले ईवा डेव मनोवैज्ञानिक विविध भावनाओं के माध्यम से वैविध्य भरे मानव जीवन के गहन प्रश्नों और समस्याओं को अभिव्यक्त करते हैं. गहनतम सूक्ष के साथ आंचलिक कहानियों के माध्यम से इन्होंने परिवर्तन को भारतीय ग्रामीण और पाश्चात्य परिवेश में भी रूपायित किया है. गहन यथार्थवादी दृष्टिकोण के प्रबल समर्थक ईवा डेव नारी मन की संवेदना को व्यक्त करने में भी नहीं चूके.

'आगन्तुक' और 'तरंगिणी का स्वप्न' दो कहानी-संग्रह प्रकाशित हुए हैं और दोनों ही गुजरात सरकार द्वारा पुरस्कृत भी. 'प्रेयसी' और 'यीशु के चरणों में' दो लघु उपन्यास भी प्रकाशित हुए हैं. 'तहोमतदार' कहानी-संग्रह प्रकाशनाधीन है.

शिक्षा के क्षेत्र में रिसर्च-स्टडीज़ प्रस्तुत कर शिक्षा जगत में भी आपने ख्याति अर्जित की है. शैक्षिक-यात्रा पर पिछले दिनों रूस-भ्रमण कर आए हैं. इनकी कहानियों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हुए हैं. फलतः हिन्दी साहित्य में भी इनका नाम सुपरिचित है.

मिली. आँखें खुलती न थीं, अंग हिलते न थे, प्रयत्न करने पर भी स्मृति ताज़ा होती न थी. जहाँ पड़ा था, चारों ओर अंधेरा था, कुछ शोर-गुल हो रही था और सिर में अपार वेदनाहो रही थी. कुछ देर बाद आँखें खोलने में सफलता मिली.

तुरन्त ही उन्हें मूंद लेनी पड़ी. तेज़ आग जलने लगीथी, इसलिए जो कुछ भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इण्डस्ट्रीज
की प्राणवायु
इण्डस्ट्रियल गैसेज
का प्राप्ति केन्द्र—

अनिल इन्जीनियरिंग कम्पनी
३५, लाजपत नगर, वाराणसी
एजेन्ट :
दी इण्डस्ट्रियल गैसेज लिमिटेड
कलकत्ता—१

आपका हर दिन
एक त्यौहार हो
और
हर त्यौहार और उत्सव के लिए
हमारी मंगल कामनाएं

बतरा टेन्ट हाउस
डिनर व पार्टियों एवं
समारोहों की प्रतिष्ठा के लिए
भव्य टेंट ❀ फर्निचर ❀ क्रॉकरी ❀ कॉफी मशीन
प्राप्त करने हेतु हमें आदेश दें.
आफिस : जंगमबाड़ी, वाराणसी. फोन ६४४०१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिया वह धुंधला था. थोड़ी देर बाद मैंने फिर आँखें
का प्रयास किया. इस बार आँखें ज़रा अधिक स्थिर की जा सकीं. आग फिर जलने
सफ़ेद छत दिखाई दी. फिर वापिस आँखें मुंद गई. फिर ज़बरदस्ती खोलीं. सिर
ं भाग में तीखा शूल उठा. मैंने हाथ सिर पर रखने का प्रयत्न किया. हाथ
में अटका, तब ख़याल आया कि मैं अपने बिस्तर पर था. सिर से हाथ छू गया
न आया कि एक बड़ी गाँठ उठ आई थी, वहाँ दूसरा शूल उठा. एकाएक
धुंधली स्मृतियाँ एक के बाद एक उभरने लगीं. स्टेला! स्टेला की अर्धनग्न
! उसका ड्राइंग-रूम....गुवेरा, गुवेरा की विकराल देह, खून की प्यासी उसकी
उसका खूनी चेहरा. गुस्से से काँपती उसकी आवाज़, स्टेला की चिरौरियाँ और
धिक्कार के शब्द, कैंची....वह धारदार लम्बी नोकवाली बड़ी कैंची....खूब बड़ी
हट करती कैंची...हनुमान छलाँग, कैंची का घुस जाना, गुवेरा का गिरना,
और खू...न...! मेरी सरपट दौड़ और अब मैं अपने कमरे में पड़ा था.
त शोर-गुल करता रॉकेट जैसे गगन में चढ़ता है, उसी तरह ये दृश्य निरी
हट करते मेरी दृष्टि में चढ़े. पहला प्रश्न उठा, तीव्र शूल के साथ-कितने दिन
इस सब को हुए? हां, कितने दिन गुज़र गये? गरदन इधर-उधर घुमाई.
पिल्स की शीशी पर दृष्टि पड़ते ही याद आ गया कि आ कर चार-पाँच गोलियाँ
क मैंने ले ली थी, उस रात को. यह भी धुंधला-धुंधला याद आया कि होश
मैंने पुनः पुनः कुछ गोलियां चालू रखी थीं. तो फिर इस समय कैसे जागा?
स बात को कितने दिन हुए होंगे? दो? नहीं, इससे तो अधिक. दस? नहीं,
धिक संभावना नहीं. उफ़, कितने दिन बीत गये होंगे? तभी दूसरा विचार
आगे बढ़ आया कि उसका, गुवेरा का क्या हुआ होगा? मर गया होगा? जीवित
होगा? हे, भगवान, यदि वह जीवित रह गया होगा तो? फिर मुझे वह
नहीं छोड़ेगा. कदापि नहीं! वह मुझे ज़रूर खोज निकालेगा और मेरा लहू पी
विचार मात्र से मेरे छक्के छूट गये और शरीर ढीला हो गया. ऑटोमैटिकली
स्लीपिंग पिल्स की शीशी लेने को लंबा हो गया. खैर! सारी ही गोलियाँ
हो गई थीं. मेरी स्मरण-शक्ति पूरी वापिस आ गई थी. विचार तेज़ी से उठते
लें फिर होती थीं. सोच ले! यदि वह जीवित होता तो तू यहाँ इस तरह
टा रह सकता था क्या? बात सच्ची थी. उसने ज़रूर पुलिस को खबर दी
र उन्होंने मेरा पीछा किया होता, परन्तु उसे मेरे पते की जानकारी न थी.
पिटाई करके वे लोग मेरा पता प्राप्त कर सकते थे. यद्यपि स्टेला को वश में
सान न था. जब वह अड़ जाती तब उसे टस से मस करना असंभव ही था. स्टेला

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो ठहरी सिर फिरी औरत ! वह कोई यों रहस्य न देगी, पर कानून के सा
कहां तक चलेगी ? हाँ; पुलिसवाले चाहे जैसे-तैसे करके पता प्राप्त कर सकते
सकते हैं, मुझे खोज निकाल कर पकड़ सकते हैं. वह जीवित होता तो मैं
लिया गया होता. मैं पकड़ लिया गया होता तो....! और...मृत्यु से बचने
खून ! सिर में जैसे फिर हथौड़े बजने लगे. किस तरह छूटूंगा इस आफ़त से !

जहाँ गांठे उठी थीं, वहाँ फिर मैंने हाथ रखा. कपाल पर कोई खुर
चिपका हो ऐसा लगा. लहू निकला था वहाँ. वहाँ सूख कर उसकी पपड़ि
थीं. मैंने पास के लैंप का स्विच दबाया. जगमग हो गया चारों ओर.
चौंधियाँ गईं, कुछ देर के लिए. कुछ देर बाद आंखें खोल कर मैंने हाथ में
देखीं, यह लहू ही था.

'ल....हू ?' मैं भौंचक्का-सा हो कर पलंग से नीचे कूद पड़ा. ल....हू ! ल
की फुहारें उड़ी होंगी मुझ पर. मेरे हाथ, मेरे कपड़े, मेरे शरीर पर पुत गया
रुधिर. लोगों ने देखा होगा. हे भगवान ! जिस मृत्यु से बचने के लिए
लोमहर्षक खून किया वह तो वापिस मुंह बाकर मेरे पास आ कर खड़ी थी.
हाथों की ओर, कपड़ों पर, शरीर पर जल्दी-जल्दी दृष्टि डाली. मैं दंग रह
कर मैंने दृष्टि दौड़ाई पर व्यर्थ. लहू की बूँद मात्र भी कहीं लगी न थी.
आता न था. मैंने पागलों की तरह नीचे झुक कर बार-बार खोज की. नहीं,
क़सम खाने के लिए एक बूँद तक मुझ पर लगी न थी. मैंने गहरी
खींची. नंगा हो कर कूद-कूद कर नाचने की वृत्ति हो आई. मन में केवल
लगी. मैं बच गया. प्यारे भगवान ! मैं बाल-बाल बच गया, अब ठिकाने

'पर लहू कैसे छूटा नहीं ?' सिर में फिर पीड़ा उठी. सिर यों फटा क्यों
कुछ टकराया होगा ? ओह ! मेरा सिर यों फट कैसे रहा है ? ज़रूर कुछ
दौड़ते-दौड़ते. पागल की तरह दौड़ रहा था तभी कहीं गिर गया होऊं, ऐसा
है. इस तरह पागल की तरह दौड़ते ज़रूर किसी न किसी ने तो मुझे देख ही
ऐसे लोग ही ऐविडेन्स दे कर खूनियों को जेल में डलवा देते हैं. मेरा शरीर
मुझे याद आया, बेसमेंट से नीचे उतरते हुए मैं जीने की पहली ही सीढ़ी
सारी सीढ़ियां लुढ़कता-लुढ़कता मैं फ्लोर पर ज़ोर से गिरा था. इससे मेरे
दूसरी-जगहों पर सख्त चोटें लगी थीं. परन्तु भयंकर डर के कारण मुझे
भी खयाल शेष न था. झटपट, उठ कर कमरे का दरवाज़ा खोल, कमरे
भीतर ताला लगा, स्लीपिंग पिल्स ले, सिर से पैरों तक ओढ़ कर पलंग
गया था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहू फुहारे की तरह उड़ना चाहिए. वे छींटे उड़े कैसे नहीं ?

सवाल उठा. मैं सब कुछ फिर स्मृति में लाने का प्रयत्न करने लगा. छोटी से छोटी ना इकट्ठी कर सारा दृश्य पुनः उभारने का प्रयास आरम्भ किया. दांत किटकिटाते, लियाँ मलते-मलते, स्टेला को गालियां निकालते हुए गुवेरा का आहिस्ते-आहिस्ते आगे ना, स्टेला का गिड़गिड़ाना और फिर क्रोधाविष्ट होना, मेरा कपड़े सहित कैंची को ाना, उस कपड़े सहित कैंची का अपने दोनों हाथों में जोर से जकड़ जाना....उत्तर ल गया. स्टेला का सुन्दर कपड़ा ! कपड़ा बचा गया. उस कपड़े को चूमने का, मुंह , शरीर पर लपेट लेने का मन हो आया. उस कपड़े ने मुझे बचा लिया था.

'यदि गुवेरा सचमुच परलोक पहुँच गया हो तो फिर इस मृत्यु के लिए उत्तरदायी न ? तू बच गया. सच्ची बात. तो फिर....तो फिर....' मैं सहम गया. दूसरा कौन, स्त ! स्टेला ! स्टेला ? क्षण भर के लिए लगा कि खैर मैं तो बिल्कुल बच गया. दि स्टेला के प्रति शक बिना अड़चन साबित हो तो, ऐसे ऐविडेन्स तो वहां गगें पड़े होंगे. मेरा नामो निशान तक वहां नहीं. किसी को शक भी न होगा. रे ! स्टेला मुझ पर आरोप लगाने लगे तो भी कोई मानेगा नहीं. एक छोटी निशानी मैंने वहां नहीं छोड़ी थी. केस बहुत बेबुनियाद होगा. यदि वह ऐसा ट्राइ करे तो . खूब बच गया. मुझ पर किसी को शक नहीं होगा. मैं सही सलामत, निष्कलंक देश ंच सकूंगा, पडोसियों को खबर नहीं पड़ेगी यूनिवर्सिटी में पता नहीं चलेगा, जान-हचान वालों में साख वैसी की वैसी रहेगी. खैर ! लकी हूँ.'

'परन्तु मान लो कि स्टेला ने अपने को निर्दोष ही साबित कर दिया हो और रा नाम भी क़ातिल के रूप में पुलिस के सामने रख दिया हो तो ?' मेरी घबराहट र बढ़ने लगी. बुखार आया हो, ऐसी शिथिलता अंगों में आने लगी. सोने की, गोली ने की वृत्तियां जागने लगीं. सिर में शूल उठने की शुरुआत भी होने लगी.

'स्टेला क्या करेगी ? तू क्या करता स्टेला की जगह पर होता तो ? स्वयं निर्दोष तो भी कोई सूली पर चढ़ने को इस दुनिया में तैयार होता है ? सूली ! सूली कैसे ाद आई इस समय ? सूली पर बैठ कर मरना जरूर दोजख जैसा होगा. धीरे-धीरे ाण कैसे निकलते होंगे ? खूब ही दुःखदायक होता होगा. सूली पर जबरदस्ती कोई झे चढ़ा रहा हो. ऐसी व्यथा हो आई फांसी इसकी अपेक्षा हजार गुना अच्छा है. एक टका, बस एक झटका औ खेल खत्म ! मैंने फांसी लगते केवल सिनेमा में देखा है. यह मेरिका है. सूली, फांसी की बात यहाँ कहाँ ? इलेट्रिक चेयर ! एक क्षण भी नहीं गने का. भयंकर करेन्ट का प्रवाह. पहुँच गये नरक में. कभी-कभी आदमी जीवित भी रह जाता है. कैसे होता होगा ऐसा ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं थरथराने लगा. स्टेला स्वयं पर आफ़त ले ले, ऐसी प्रार्थना मेरा मन
इस समय क्रुद्ध, झगड़ती स्टेला का चेहरा मेरे सामने तैर रहा था. वह चेहरा
करते हुए किंचित भी अचकचाए, ऐसा न था. वह चेहरा मुझे इलेक्ट्रिक शॉ
हुए देख कर खिलखिला कर हंसे, ऐसा था. शरीर जैसे लटक पड़ा हो और कमरे
में लग गया कैसे करना चाहिए, इसी तैयारी में लगा तभी एकाएक प्रकाश
'यदि स्टेला ने खरी-खरी बात की होती तो मैं यहाँ 'सेफ़' होता ही
अरे ! शायद दस दिन भी बीत गये हों. देख न स्लीपिंग पिल्स की शीशी
गई है. नितान्त असंभव ! उसने मुंह बन्द ही रखा होगा. नहीं तो मैं
होता नहीं, मुक्त नहीं रह पाता. पुलिस ने कभी का मुझे अपने कब्जे में ले
आश्वस्ति और आनन्द के झरने कलकला उठे. एक ही बात रह-रह कर
झख मारता है ! मैं बच गया. बाल-बाल बच गया. पाई भर भी कलंकित
निशानियों की बात फिर मेरे मन में आई. मन फड़कने लगा. कि
शायद नीचे पड़ोसियों ने मुझे भागते देखा हो ! स्टेला ने किसी को बुलाया
की चीख किसी ने सुनी हो ! स्टेला गुवेरा को छोड़ कर भाग गई हो
कोर्ट में किस तरह दाखिल हुआ होगा ? हो सकता है कि दो-चार दिन से
न गया हो. स्टेला मेरी तरह कहीं भाग निकली हो और गुवेरा की लाश
सड़ती हो ! तो भी उस पर शक होने की गुंजाइश मेरी अपेक्षा अधिक
शक आने के लिए आवश्यक है कि किसी ने मुझे दौड़ते हुए देखा हो.
चीख किसी को सुनाई देनी चाहिए. पर वह चीख तो मार ही न सका
कहाँ लगा होगा ? बायी ओर. उफ् ! हृदय के ठेठ तल तक कैंची की
गई होगी. वह तुरन्त मर गया होगा. चीख तो निकली ही न होगी. चलो
'तो वह मर गया, स्टेला ने अधिकांश मौन रखा या शायद
और मैं मौत के मुंह में जाते हुए दो बार बच गया. बाल-बाल भाग
लिया. तो फिर खूनी कौन ? यदि स्टेला भाग निकली हो, पर भाग कर
कहां ? उस्ताद चोरों को और खूनियों को भी एफ. बी. आई.
तो बेचारी स्टेला की क्या बिसात ? तो स्टे....ला....! सचमुच स्टेला
का आरोप लगेगा.' होश में आने के बाद यह पहली बार मुझे सारी घटना
समझ में आई. अब तक स्व-रक्षण में इतना डूब गया था कि दूसरी ओर
की ओर मेरा बिल्कुल ध्यान ही नहीं गया था. भय ने ऐसी जोरदार दाब
मनुष्य, मानवीय संबंध, भावनाएं जैसे अस्तित्व में हों ही नहीं, ऐसा
पर अभियुक्त होने का झूठा आक्षेप लगेगा, ग़लत सरकमस्टेंशियल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसे गिरफ़तार किया जाएगा, उसे क़ातिल के रूप में कोर्ट में हाज़िर किया जएगा, खूब विज्ञापन होगा, ज्युरी प्रेज्युडिस्ड हो जाएगा. सच्चे सन्देहों के अभाव में उसे शायद गैस चेम्बर में, नहीं तो जेल में लंबी मुद्दत के लिए डाल दिया जाएगा और मैं असली खूनी, असली हत्यारा यहाँ सही सलामत रहूँगा. खून मैंने किया है, एक आदमी की जान मैंने ली है, इस नारकीय कृत्य का ज़िम्मेदार मैं यहाँ मुक्त रहूँगा. एक खून किया, अब दूसरा खून हो रहा था. और मैं उसमें सहारा दे रहा था. दूसरी स्त्री मेरे बदले अभियुक्त करार दी जाए, यह चुपचाप देखने में मुझे पाप जैसा कुछ लगता न था, बल्कि एक प्रकार के पाशविक आनन्द से मेरा हृदय धड़क रहा था. 'ओह ! स्टेला का क्या होगा ? स्टेला ! वह कुछ समय से मेरी स्टेला थी, मेरी प्रेयसी थी, मेरे जीवन में संपूर्णतः समा गयी थी. उस स्टेला से मैं सदा के लिए अलग हो जाऊँगा. इसके लिए कारण भी मैं ही बनूंगा. स्टेला का क्या होगा ? क्या वह अपराधी साबित होगी ? हे भगवान ! स्टेला को तू बचा ले. तू जो कहे वह मनौती मानने को मैं तैयार हूँ. जैसे भी हो उस तरह स्टेला को बचा ले तो मेरी आजीवन श्रद्धा तुझ में बैठ जाएगी. कोई मेरी सहायता करो रे.'

कितने दिन हो गए होंगे, इस प्रश्न के जवाब में एकाएक अखबार की बात याद आई. निश्चय था कि कुछ न कुछ चर्चा सुबह के अखबार में जरूर आई होगी. मैं अखबार पढ़ने के लिए बहुत ही उत्सुक हो उठा. कम्बल शरीर पर से उतार कर मैं खड़ा हुआ. मेरे पैर डगमगा रहे थे. जैसे ही मैंने चलने का प्रयत्न किया कि तुरन्त मुझे खयाल आया कि मैं निर्बल हो गया था. कितने दिन यों बीत गए थे इसका ध्यान न था, पर इस अशक्ति से सहज कल्पना की जा सकती थी कि चारेक दिन तो कम से कम हुए ही होंगे. तहखाने के पूर्वी कोने पर बनाए हुए मेरे इस कमरे में सूर्य का प्रकाश भाग्य से ही दिखाई देता था. रात-दिन मुझे बिजली की रोशनी से काम चलाना पड़ता था. दूसरा क़दम बढ़ाने की मैंने कोशिश की और मैं लड़खड़ा कर वहीं ढेर हो गया. सिर घूमता-सा लगा. कै होती हो ऐसी सेंसेशन महसूस की. कुछ देर सुस्ता कर घुटनों के बल घिसटता मैं दरवाज़े तक गया, दरवाज़ा आधा खोला और बाहर चोर-दृष्टि डाली. सेफ़. जंने और रोशनदानों में से कुछ-कुछ उजाला आ रहा था. दोपहर का समय होगा ऐसा लगा. चार अखबार बिखरे हुए पड़े थे. मेरा अनुमान सही था. आज चार दिन हो गए थे. झपट्टा मार कर अखबार कमरे में खींच कर मैंने दरवाज़ा फिर बन्द कर लिया. अखबार देखने लगा. तारीखें देखी. तीन दिन पहले का अखबार झटपट निकाला. पहले पन्ने पर दृष्टि दौड़ाई. कुछ भी नहीं दिखाई दिया. दूसरा पन्ना खोला. दाएं कोने में मध्यम साइज के अक्षरों में खबर थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे आप देश-दर्शन पर निकले हों,
मेले मे हों, समारोह मे हों,
पिकनिक मे हों, जहाँ भी हों,
आपका मनोरंजन करने के लिए

गंगा और तूफान जर्दा

आपका सर्वप्रिय

सभी जगह सुलभ है

सलगूराम काशीनाथ परफ्यूमर्स-वाराणसी. फोन.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेपलवुड के ऐपार्टमेंट में हुआ रोमांचकारी खून.

छोटे अक्षरों में नीचे कहानी थी.

स्टेला ब्राउन लम्बी, आकर्षक और तेज़ ब्रुनेट, जो लोकलड्रेस बनाने वाली इंडस्ट्रीज़ में डिज़ाइनर के रूप में काम करती है, सरकमस्टेंशियल सन्देह पर अपने पति का खून करने के अभियोग में गिरफ्तार कर ली गई है.

अब तक जो मात्र विचार थे, कल्पनाएं थीं, सन्देह थे. वे अब सच्ची हक़ीक़त बन गए थे. स्टेला भागी न थी, वह जेल के सींखचों के पीछे थी. उस पर आरोप लगाया गया था. हृदय में एक निश्चिन्तता की भावना उठी, दूसरी दुःख और हमदर्दी की.. भूखा आदमी जैसे भुक्खड़ की तरह खाने पर टूट पड़े, वैसे मैं अखबार में प्रकाशित ब्योरे पढ़ने लगा.

कल रात को, मेपलवुड स्थित पचरंगी मुहल्ले में चार सौ छब्बीस नम्बर के एपार्टमेंट के दूसरे तल्ले पर रोमांचकारी खून की घटना घटित हो गई. पुलिस इंसपेक्टर चान्सी खून के ब्योरे इकट्ठे कर रहे हैं. घटनास्थल की जाँच कर पड़ोसियों, मित्रों के पास से जानकारी प्राप्त कर हमारे संवाददाता ने निम्नलिखित रिपोर्ट तैयार की है.

रात को साढ़े बारह बजे के लगभग स्टेला ने पुलिस इंसपेक्टर को अपने पति गुवेरा के खून की खबर दी. इंसपेक्टर तत्काल घटनास्थल पर आ पहुँचे. जांच करने पर पता लगा कि रात को साढ़े ग्यारह-बारह बजे गुवेरा घर आ पहुँचा था. पति-पत्नी में बोल-चाल हुई. उसमें गुवेरा ने स्टेला को मार डालने की धमकी दी. जब उसने सचमुच आक्रमण किया तब स्टेला ने सेल्फ-डिफ़ेंस में कैंची का आघात गुवेरा पर किया. बदनसीबी से यह आघात हृदय पर हुआ और गुवेरा की तत्काल मृत्यु हो गई. उपरोक्त बात स्टेला ब्राउन ने इंसपेक्टर चान्सी से कही थी.

आसपास के लोग इस दम्पति के बारे में खास जानकारी रखते हों, ऐसा नहीं लगता. कदाचित् ही किसी ने दोनों पति-पत्नी को साथ जाते देखा हो ! किन्हीं मित्रों का आनाजाना भी वहाँ रहा हो, ऐसा नहीं लगता आश्चर्य की बात यह है कि किसी ने गुवेरा की चीख भी सुनी न थी. स्टेला द्वारा दी हुई जानकारी ही केवल इस केस का आधार है.

यह भी मालूम हुआ है कि दो वर्ष पहले स्टेला ने गुवेरा के साथ विवाह किया था. पिछले दसेक महीने से उनमें बनती न थी और कोई न कोई झगड़ा चलता ही रहता था. स्टेला उसे तलाक़ देने की धमकी दिया करती थी. गुवेरा कैथलिक होने के कारण तलाक़ के विरुद्ध था. यही बात उनके झगड़े के मूल में थी. चार महीने पहले स्टेला ने डायवोर्स पेटिशन फ़ाइल किया था. ऐसा माना जाता है कि इसमें सफलता न मिल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकने का अनुमान लगा कर ही स्टेला ने उसका ख़ून करने का विचार अमल में ला
हो. अधिक जानकारी कल इसी पन्ने पर प्रस्तुत की जाएगी.

दूसरे दिन.

मेपलवुड में हुए सनसनीखेज़ ख़ून की विस्तृत जानकारी.

स्टेला ब्राउन के विपक्ष में केस ख़ूब सशक्त होता जा रहा है. पुलिस इंसपेक्ट
और डिस्ट्रिक्ट एटर्नी द्वारा इकट्ठा किये हुए सबूत स्टेला के विपक्ष का केस मज़बूत क
हैं. स्टेला के पेटीकोट पर मिले हुए दाग़ गुवेरा के लहू के हैं, यह जांच से साबित हु
है. कैंची पर केवल स्टेला की अंगुलियों के निशान प्राप्त हुए हैं. उन्हें मिटा डालने
निष्फल प्रयास भी किया गया लगता है.

आश्चर्यजनक डेवलपमेंट यह है कि स्टेला ब्राउन ने गज़ब का मौन धारण
लिया है. एक ही बात वह कहा करती है—

'उसने मुझ पर निर्दय हमला किया और सेल्फ-डिफेंस में मुझसे उस पर
का आघात हो गया. उसकी हत्या करने का मेरा इरादा स्वप्न में भी न था. मेरी
सही लगे तो ठीक, न लगे तो ठीक. मुझे वकील-फकील कोई नहीं चाहिए. इससे
मुझे कुछ पता नहीं. उसके सिवा मेरे पास कुछ कहने को भी नहीं है. मुझे अकेली
तो आपका ख़ूब आभार.'

तीसरे दिन कोई ख़बर न थी.

चौथे दिन—

प्रिमेडिटेटेड मर्डर का चार्ज स्टेला पर लगाने के निर्णय का आदेश डिस्ट्रि
एटर्नी ने दिया है. डिफेंस के वकील की परिस्थिति अत्यन्त विषम है. स्टेला ने
झक छोड़ी नहीं. इतना ही नहीं, अपने वकील से अत्यन्त अभद्र व्यवहार करने
भी उसने शुरुआत की है. उसका यह व्यवहार उस पर लगे अपराध को अधिक
जनक बनाता है. संदेह बढ़ने का दूसरा कारण है—घाव की गहराई. विशेषज्ञों
कहना है कि झपटा-झपटी में लगा घाव इतना गहरा नहीं जा सकता. साथ ही
दूसरी दलील भी दी गई है—आघात करने वाला व्यक्ति या तो कमजोर पुरुष, कि
या स्त्री ही होने की संभावना अधिक है. नार्मल पुरुष का जो आघात होता है
अपेक्षा घाव गहरा, बहुत गहरा जा सकता है. छीना-झपटी होने के निशान कहीं
नहीं. इस कारण स्टेला द्वारा खून किया जाना साबित हो तो आश्चर्य नहीं. केस
सुनवाई अगले सप्ताह चालू होगी .

मेरे पेट में ऐंठन उठी. कै होने की सेंसेशन एकदम से बहुत बढ़ गई. सिर घूमने
गला रुंधा गया. छाती में अत्यन्त बेचैनी होने लगी. स्टेला को अपराधी ठहराने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बात तो मैंने विचारी थी. पर उसे चालबाज़ठ हरा कर मुक़दमा चलाया जाएगा, यह मेरी कल्पना में भी कभी न था. यदि वह चालबाज़ साबित हो तो लम्बी जेल की सज़ा या शायद मौत के सिवा दूसरी सज़ा मिलेगी ही नहीं. मैं होश खोता हुआ अशक्त हो कर वहीं ढेर हो गया.

कोर्ट में से बाहर निकला तो चक्की के दो पाटों के बीच शरीर पिसता हो ऐसे विरोधी विचारों के मरणांतक झूले में मैं फँसा हुआ था. एक दलील, एक वाक्य एक आदमी, एक भी चीज़ स्टेला के पक्ष में न थी. कोर्ट की दीवारों तक ने भी उसके विपक्ष में साजिश रची हो, ऐसा महसूस होता था. एक-एक मिनट में उसके विरुद्ध के सबूतों का ढेर और बड़ा होता जाता था. सर्वाधिक कष्टदायक बात जो थी वह स्टेला की विरक्तता थी. वह जैसे साध्वी बन गई हो ! कोर्ट में जो कुछ हो रहा था. उसके साथ जैसे उसका कोई संबंध ही न था. पाषाण में से तराशी हुई प्रतिमा की तरह वह वहाँ बैठी रहती. उसकी दृष्टि जमीन में गड़ी रहती. क्वचित् ही वह ऊपर दृष्टि करती या किसी के भी सामने देखती या दूसरी कुछ खोज-खबर लेती. उसकी बला से यह केस चले या न चले, लोग उसके विरुद्ध बोलें या पक्ष में बोलें, ज्यूरी उसे गुनहगार घोषित करे या निर्दोष, इसकी उसे जैसे तनिक भी फ़िक्र न थी. क्या हो गया था उसे !

मेरे अहं को असह्य झटका लगा था, मेरे प्रति के उसके लापरवाह व्यवहार से उसे वापिस ले जाया जा रहा था. मैं आखिरी बेंच पर बैठा था. मैंने उसका ध्यान खींचने को खड़े हो कर खांसा था. मुझ पर उसने दृष्टि डाली ही न थी तो डाली भी तिरस्कार से बिजली की-सी त्वरा से उसने उसे हटा ली. मेरे प्रति स्नेह की बात तो दूर किनार पर उसके हृदय में इतना असीम धिक्कार भर जाएगा, यह मेरे स्वार्थी मन ने कभी कल्पना भी न की थी.

कैसे झटके से, कंधे उछाल कर उसने मुँह फेर लिया ! मेरे प्रति उसकी राय बिल्कुल हेय हो गई होगी. वह मुझे नपुंसक, नामर्द, हिजड़ा समझती होगी. उसके हृदय में ऐसा धिक्कार न उपजे तो दूसरा और क्या हो ? मुझ पापी ने जब उस पर दोष उड़ेलते हुए तनिक भी संकोच नहीं किया तो उसके हृदय में मेरे प्रति लानत न हो तो और क्या हो ? अभी भी मैं क्या कर रहा हूँ ? ग़लत सबूतों के ढेर इकट्ठा हो रहे हैं. केस उसके विरोध में जा रहा है, तब भी मैं नामर्द चुप पड़ा हूं. इतने दिन कमरा बंद करके छिपा रहा हूँ. मैं इन गिद्धों को इसे नोंचते हुए ठंडे कलेजे से देख रहा हूं. वह मुँह फेर न ले तो और क्या करे ? तू पापी, हत्यारा, ठग, दो निर्दोष आदमियों की जान ले कर उनका लहू पीकर, एक साहूकार की तरह मैं घूम रहा है.....छी....छी....वह डायवोर्स की बात उसके बहुत ही विपक्ष में पड़ी है. उसने पेटिशन किया कब और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रिजेक्ट भी कब हुआ ? रिजेक्शन हुआ अतः अन्य रास्ता न था. इससे उसने खून का आश्रय लिया. बिल्कुल सीधी बात. उसने मेरे पास से क्या आशा रखी होगी ? क्या उसे ऐसा लगा होगा कि मैं बहादुर बन कर सच्ची बात स्वीकार करने आऊँगा ? क्या वह मेरे स्थान पर होती तो ऐसा करती ? ऐसी स्वीकृति इस दुनिया में कौन करे ? जीवन गंवाने की इच्छा किसे हो ? मैं डर जाऊं, भाग जाऊं, मरना न चाहूं, अपना बचाव करूँ, यह अब क्या स्वाभाविक नहीं ? तो फिर उसे मुझ पर इतना ग़ुस्सा क्यों है ?

यों सरकारी वकील अधिकतर मूर्ख होते हैं. यह बेटा बड़ा होशियार है. खूब चतुराई से केस चलाता है. उस हड्डा को उसने खूब धमकाया पर जब उसने जाना कि लाख चाहने पर भी वह उसके मुँह से कही गई बात को सबूत के रूप में अपनी दलील के समर्थन हेतु कहलवा नहीं सका है तो वह उस पर ग़ुस्सा होने लगा.

उसे एक ही बात निकलवानी थी. स्टेला और गुवेरा के बीच बनती न थी और कभी-कभी 'वह मर जाय' ऐसी इच्छा स्टेला ने बात-बात में उसके सामने प्रदर्शित की थी. पुलिस इंस्पेक्टर, डाक्टर, अलग-अलग विशेषज्ञ सबका एक ही स्वर था—स्टेला के सिवा अन्य किसी ने खून नहीं ही किया है. ये सब स्टेला को दण्ड देने के लिए किसलिए इतने आतुर बने होंगे, यह मुझे किसी भी तरह समझ में आता न था. स्टेला ने उन लोगों का कुछ बिगाड़ा न था. उस नापाक नीग्रो, दुष्ट ने, सभी से मिल कर कहा, उन दोनों में बनती हो ऐसा लगता न था. दिन में एक बाहर रहता, रात में दूसरा. उन्हें शादी-शुदा कैसे कहा जाय ? सभी खी-खी हंसने लगे थे, यह सुन कर. इनमें से किसी ने चीख सुनी थी ? नहीं. बहरे हो गये थे ये सब. कहीं छीनाझपटी की आवाज़ आई थी ? नहीं. किसी को रात में उस एपार्टमेंट में से बाहर दौड़ जाते हुए देखा था ? नहीं. साल्ले पी कर पड़े होंगे कि कहाँ से जानें ! कोई आदमी स्टेला से मिला करता था ? नहीं. कोई एपार्टमेंट में गया था ? वह प्रश्न वकील कैसे खा गया होगा ? डिफेंस लायर ने क्रॉस एक्जामिनेशन में यह प्रश्न पूछा तब कितना हो-हल्ला हुआ ! तीन-चार छोकरे बच्चे वहाँ जाते हुए देखे गए थे. किसी ने अखबार वाला माना था, तो किसी ने पान के स्टोर का डिलीवरी बॉय माना था, तो किसी ने ड्रग स्टोर का लड़का ही माना था. समय बताने में सबने ऐसी भूलें की कि महत्त्व का मुद्दा ही उड़ गया. जब कैंची हाथ में की गई तब मेरा मन डांवाडोल हो गया था. उस पर लगा हुआ लहू ज्यों का त्यों था. सरकारी वकील साल्ला कहता है कि स्टेला ने कैंची पर के फिंगर प्रिन्ट्स पोछ डालने का निष्फल प्रयास किया था. सिर्फ़ तभी स्टेला ने ऊपर देखा था और विचित्र तरीके से वह हंसी थी. फीकी-फीकी ! महिला-पुलिस उसे भीतर लाई तब मैं आश्चर्य में पड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गया था. स्टेला बदल गई थी. मैं मुश्किल से उसे पहचान सका था. ओह ! वह कैसी दुबली लगती थी. सफ़ेद रूई की पूनी जैसी उसकी मुखाकृति हो गई थी. उसके बाल बिखरे हुए थे. उन्हें संवारने की भी उसने परवाह न की थी. उसकी आंखें लाल सुर्ख हो कर सूज गई थीं. फैशनेबल स्टेला के शरीर पर तब सलवटों भरी ड्रेस झूल रही थी. मेरा हृदय बैठ गया. दौड़ कर उसके पैरों में पड़ कर कोर्ट में सब कुछ क़बूल कर लेने की इच्छा हो आई थी. यह जिगर होता तो इस समय तक यों चोर की तरह छिप कर बैठा ही न रहता. उस सरकारी वकील ने आख़िर में कैसी बात की ! इंसपेक्टर और डाक्टर द्वारा दी हुई घाव संबंधी जानकारी से उसने यह सिद्ध किया कि स्टेला ने सोफ़े पर सोए हुए गुवेरा को चोट पहुँचा कर, घसीट कर, नीचे फ़र्श पर सुलाया था. छीना-झपटी हुई थी, यह दिखलाने के लिए सारी वस्तुएं तितर-बितर कर डाली थीं. रिकार्ड प्लेयर की ध्वनि तेज़ कर दी थी. (बायीं ओर के एपार्टमेंट में रहने वाले पड़ोसी ने साक्षी दी थी.) सबसे अधिक आश्चर्य की बात तो यह थी कि स्टेला ने स्वयं ही आध घण्टे के समय में पुलिस को बुला कर यह केस नोट करवा दिया था. उफ् स्टेला की डाली हुई क़ातिल, ठण्डी, बेधक दृष्टि ! अथाह तिरस्कार था उसमें ! क्या सज़ा होगी उसे ? कल सरकारी वकील अपना फ़ाइनल स्टेटमेंट देने खड़ा होगा. बेचारे डिफेंस वकील ने क्रॉस एक्ज़ामिनेशन में काफ़ी प्रयत्न किये पर वह और करे भी क्या ? उसने स्टेला से अभियुक्त के रूप में सच्ची बात कहने के लिए विनती की. स्टेला एक से दो न हुई. इस रूप में वह ज्युरी से अपील करना चाहता था. स्टेला जैसे सारे समाज की दुश्मन हो, ऐसा व्यवहार कर रही थी. आत्महत्या करने का जैसे उसने फ़ैसला कर लिया था. सज़ाएं मौत तो उसे शायद न हो पर उसकी सारी ज़िन्दगी उन सींख़चों के पीछे कैसे गुज़रेगी ? यह सब मेरे कारण ! मैं हत्यारा था. मैं डबल हत्यारा था. मैं समाज में ऊंचा मुंह करके घूम रहा था, जब कि उस पर दुनिया थूक रही थी. उसने आत्महत्या करने का निर्णय खून होने के बाद के आध घण्टे में कर लिया था. (शायद !) उसके द्वारा धारण किया हुआ मौन यही सूचित करता है. उसे लगा होगा कि सच्ची बात कहेगी तो भी समाज उसे कुलटा कह कर थूकेगा. झूठी बात कहेगी अथवा बात छिपा कर रखेगी तो भी अभियुक्त कह कर वैसा ही करेगा. तो फिर मौन क्यों न रखा जाय ? शायद उसे यह भय हुआ होगा कि सत्य कहने पर हम दोनों को आरोप में जेल में डाल दिया जाएगा. जो भी हो ! मेरी स्टेला ! कल तक जिसने मुझे प्रेम, आश्वासन, आर्थिक सहायता और सब से बड़ा जीवन का सहारा दिया था, वह सदा के लिए मुझ से विलग हो जायेगी. यह विचार आने पर कैसी तो वेदना उठती है, इस हृदय के गर्भ में ! स्टेला को खोने की, मृत्यु से भी अधिक दुःख-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नायक विदा लेने की. यह कैसे होगा ? स्टेला, स्टेला, मुझ से सहन नहीं होता. सुन्दर मोहक, प्रेयसी स्टेला के जीवन का ऐसा क्रूर अन्त होगा. यह अन्याय मैं देखता रहूँगा. नहीं, मैं इसमें पूरा भागीदार बनूंगा. नहीं, स्टेला बिना नहीं ही जिया जा सकता, स्टेला से विलग नहीं ही हुआ जा सकता. उसकी घृणा, उसका तिरस्कार, उसका ज़हर, इसकी अपेक्षा तो मृत्यु अच्छी. शायद मेरे इस पाप कृत्य के लिए वह क्षमा कर देगी, पर ऊपर बैठा हुआ हज़ार हाथ वाला किन्हीं भी संयोगों में क्षमा नहीं करेगा. उसके हाथों से कोई छूटा है जो मैं छूट सकूंगा ? आज नहीं तो कल, कल नहीं तो अगले माह, भविष्य में किसी दिन ब्याज सहित इस कृत का बदला चुकाए बिना छुटकारा नहीं. कैसा घातक कार्य ! एक आदमी का खून करना, बाद में भाग छूटना और फिर जिससे झुक-झुक कर प्रेम की बातें की हैं, जिसकी ऊष्मा से जिया हूँ, जिसे अपना सर्वस्व कहा है. उस निरीह कलेजे को अभियुक्त रूप में धकेल देना ! यही वह स्त्री थी कि जिसके सुन्दर वक्ष पर गात्र घिसते-घिसते तू ने उसे जीवन में कभी भी न भूलने के वचन दिए थे. यही वह स्त्री थी जिसे तू संसार में अपना एक मात्र और सर्वाधिक उत्तम मित्र गिना रहा था. यही वह स्त्री थी जिसकी सुन्दरता का वर्णन करते तू कभी भी अघाता नहीं था. ओ, हिपोक्रिट !'

विचार, विचार, विचार ! एक पल भी उस रात विचारों ने मुझे मुक्त नहीं रहने दिया. सारी रात कनपटियाँ फटतीं रहीं.

मैं कोर्ट में बैठा था. मेरा दिमाग़ गरम-गरम था, मेरी नसें खिंचती थीं और मेरे शरीर में तनाव भरता आ रहा था. ऐसा लगता था मुझे कि सब फट पड़ेगा और खोपड़ी बाहर छलक पड़ेगी, नसें गुच्छे बन कर जम जाँयगी, लहू की नालियाँ बहने लगेंगी. जज आया. बिल्कुल मकड़े जैसा लगता था. नहीं वह कोर्ट न था, वह मेरा अंधेरा कमरा था. कोर्ट वहीं लगा था. इतनी कुर्सियाँ और बेंचे किस तरह यहाँ रखी जा सकी थीं, यह समझ में आता न था. शायद कोर्ट में भी होऊं ! स्टेला के सिवा सभी विचित्र मास्क पहन कर आये हों, ऐसा लगता था. कुछ देर आदमियों के चेहरे ठीक दीखते, तो कुछ देर बाद कबूतर गला फुला कर बैठे हों, ऐसे दीखते थे डिफेंस वकील ने दो-चार आदमियों को स्टैंड पर बुलाया. वह स्त्री इडा जैसी लगी. उसका नाम ठीक सुनाई नहीं दिया. पहले आवाज़ स्पष्ट लगती, फिर वह भी गूंजती-गूंजती लगती और फिर अस्पष्ट हो जाती थी. मुझे विश्वास था कि ये सब लोग कुछ देर में मेरे मुंह से हक़ीकत जानने वाले थे और फिर निरा पश्चाताप करने वाले थे. मेरी स्टेला निर्दोष थी, यह प्रमाणित करने का काम मुझे अपने सिर लेना पड़ा था. मूर्ख सीधी तरह बातें ऐसे न थे, तब ऐसा उल्टा रास्ता लेना पड़ा. मुझे स्टेला ने पीछे की ओर देखा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चेहरे पर कोई मुसकराहट न थी पर वह आक्रोश भरी हो, ऐसा लगता न था. उसे भी पता चलेगा कि मैं कोई, ऐसा वद्तमीज़ आदमी नहीं, जैसा कि वह सोचती है. कुछ ही देर में उसे पता चल जायेगा कि मेरे हृदय में उसके प्रति कैसा अगाध स्नेह है. फिर उसे भी दमित करने के वदले में वहुत-वहुत अफ़सोस होगा. यह दांवपेच ही है. कल सीधी वात करने के लिए कहा तो टेढ़ी हो गई और मुझे यह वेढंगा रास्ता लेना ही पड़ा. थोड़ी-थोड़ी देर पर इन लोगों के चेहरे स्पष्ट दीखते हैं. ठीक तभी छलांग मार कर वीच में पहुँच जाऊँगा. पूरी वात ज़ोर-ज़ोर से मैं सब से कहूँगा. वचाव पक्ष का वकील वैठ गया. मैंने उससे कहा था कि वचाने की ज़िम्मेदारी मुझ पर छोड़ दो वह टट्टू यों ही माने, ऐसा है वह. सबने झिड़क-झिड़क कर उसे वैठा दिया, तव माना था. सरकारी वकील उठ खड़ा हुआ है. होने दो. उसे भी वक-वक करने दो. सब वृथा है. कुछ ही मिनिट में मैं सब सेट किए देता हूँ. वाह, वह तो उछल-उछल कर केस प्रस्तुत कर रहा है. व्यर्थ....व्यर्थ. मेम्बरान ज्युरी के निष्पक्ष सज्जनो ! गर्दन फुला कर फुदकते मुर्गे जैसा मैं कहता हूँ—मैं साबित कर सकता हूँ कि स्टेला ब्राऊन ने वहुत सफ़ाई से यह साज़िश रची थी. मौन रह कर, निर्दोष होने के दिखावे का डोल करती इस स्त्री के भ्रम में कृपया न पड़ें....! यह तो बहुत हो गया. एक छलांग मार कर मैं जज के सामने की खुली जगह में आ कर खड़ा हो गया. मैं चीख कर बोला—सरासर झूठ, सद्गृहस्थों ! सच्चा खूनी तो मैं हूँ !' मैंने विजयी मुसकान फेंकी. चोरों ओर, कुछ हो-हा मच गई. पुलिस और वकील मेरी ओर दौड़ने लगे, जज ने रोक दिया सब को, मैंने स्टेला की ओर दृष्टि की. उसका मुंह देखने क़ाबिल हो गया था. वह गर्दन हिला रही थी. मैं बोला—'स्टेला ! तनिक भी फ़िक्र मत कर. मैं सच्ची-सच्ची बात बता दूँगा. हे ज्युरी के सद्-गृहस्थों ! असली खूनी मैं हूं. सुनिए ! उस रात मैं स्टेला के यहाँ था....' सरकारी वकील ज़ोर की आवाज़ से कुछ कह रहा था. जज पुलिस से कुछ कह रहा था. मुझे शीघ्रता करनी आवश्यक थी. 'तभी मैंने स्टेला को बोलते सुना,' इसको....इसको....! इस ठिगूजी को मैंने यहीं पहली बार जीवन में देखा है.' मेरा पित्त मर गया. क्रोध में मैंने उसे भी गाली दी, यह रांड सरासर झूठ बोलती है. यह सरासर निर्दोष है. मैंने—ही उस कैंची को मज़बूती से जकड़ा था. मुझे मार डालने को बढ़ते हुए गुवेरा को मैंने यों कूद कर...' मैंने छलांग लगाई. दो पुलिस वाले तेज़ी से आ रहे थे. ज़मीन पर गिरते हुए मेरा पैर रपट गया. मेरा सिर पत्थर पर ज़ोर से टकराया. 'कोई पागल आदमी लगता है. जिन्दगी से हारा हुआ लगता है, बेचारा !' मेरा सिर दर्द से भन्ना गया था.

दो एक महीने बाद मुझे मेंटल हॉस्पिटल में से मुक्त किया गया. हॉस्पिटल में से बाहर निकला तब कब्र में से खुद कर बाहर आए हुए मनुष्य जैसी मेरी स्थिति थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

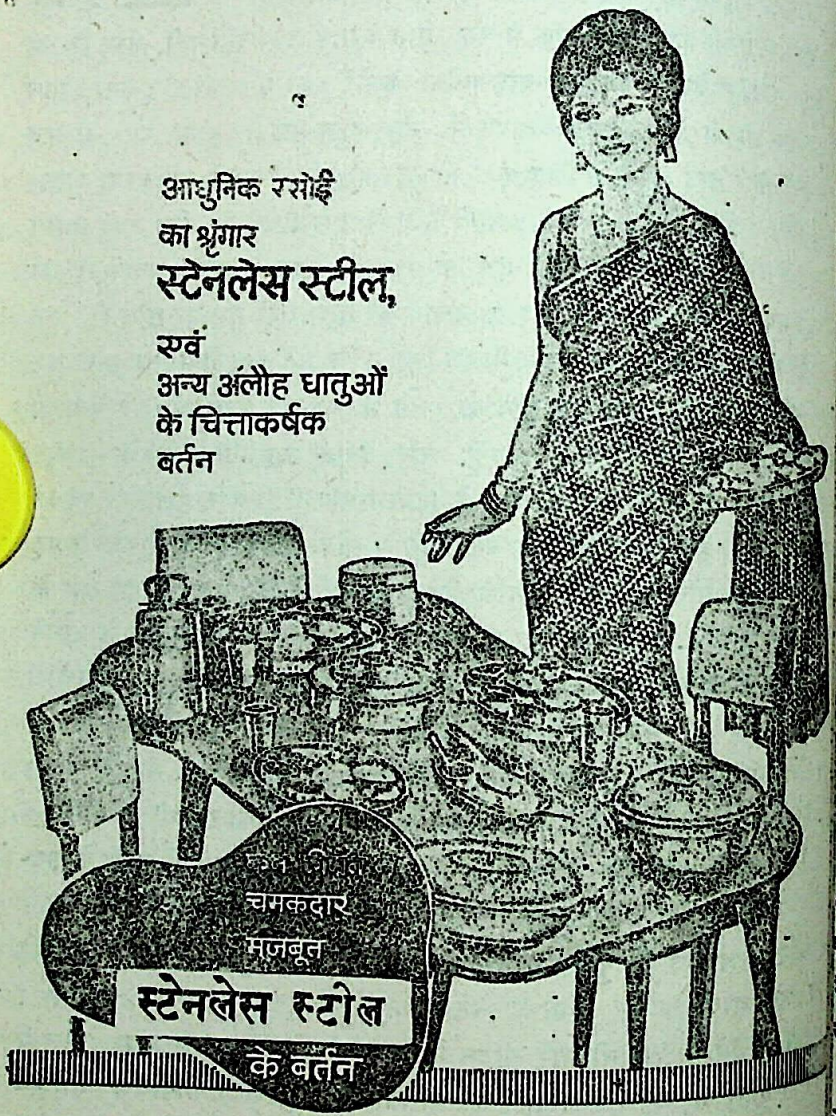

स्टेनलेस स्टील पैलेस

डी.११/२५ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी

फोन: ६३६५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताज़ा हवा फेफड़ों में जाने पर मैं चेतन हो गया था. पहला ही काम मैंने स्टेला से जेल में मिलने जाने का तय किया था. स्टेला को सेंट्रल जेल में भेज दिया गया था. जैसे भी हो मुझे उससे मिलना था. पता चला था कि ज्युरी ने उसे अभियुक्त करार कर दिया था, परन्तु जज ने उसकी सज़ा बहुत कम कर दी थी, क्योंकि जज को सारा केस सरकमस्टेन्शियल-संदेहों पर आधारित लगा था. सब से आश्चर्य की बात यह थी कि मेरा साहस किसी पागल आदमी का ही था, ऐसा सब ने मान लिया था, और मेरे साइक्याट्रिस्ट ने मुझे यह मनवाने के लिए पिछले दो महीने से प्रयत्न किया था. अलबत्ता मन का संतुलन मैं खो बैठा था, इसका अंदाज मुझे हो गया था. दो महीने के उस समय में मुझे यह कैसे हुआ था उसके वास्तविक कारणों की जानकारी भी हॉस्पिटल की कड़वी कार्यवाही से हो गई थी. जब भी खून संबंधी मैं बात कहता कि तुरन्त घबरा कर वे मुझे डायवर्ट करने में जुट पड़ते थे. क्योर हो गया हूँ, यह उन पर थोपने के लिए मुझे डायवर्ट होना ही पड़ता. स्वस्थ हूँ, यह मानने के लिए मुझे खून संबंधी बातें आखिरकार बंद ही कर देनी पड़ी. मैंने दिमाग़ का संतुलन खो दिया था, बात का शत प्रतिशत निश्चय मुझे हो गया और हॉस्पिटल की सेवा से मुझे, मेरे जीवन को लाभ हुआ था, यह भी उतनी ही पक्की बात थी.

पूछ-ताछ करता, भटकता, बसें बदलता मैं सेंट्रल जेल तक आ पहुँचा. स्टेला मुझ से मिलना नहीं चाहेगी, यह स्वाभाविक था पर उसको देखे बिना मुझसे रहा जा सके, ऐसा नहीं था. मैंने स्टेला से मिलने का निवेदन किया. सेक्रेटरी मुझे संशय से देखती रही. फिर नाम लिखने के लिए कहा. मैंने ऐसा ही कुछ नाम लिख दिया, यह समझ-कर कि एक बार स्टेला देख लेने को भी मिले तो माफ़ी मांग लूंगा.

इजाज़त मिल गई. शायद दो माह में लोग इस बात को भूल ही गये हों. वस्तुतः स्मृति तो दो जनों के हृदय में ही अंकित थी, स्टेला के और मेरे. दुनिया तो यूँ ही चला करेगी. दिवार पर लटकाए हुए बोर्ड पर दृष्टि डालने पर पता चला कि सौभाग्य से मैं सही दिन और सही समय पर स्टेला से मिलने आ पहुँचा था. मैंने भगवान का उपकार माना.

बहुत-से स्नेही अपने-अपने प्रियजन कैदियों से मिलने आये हुए थे. एक बड़े हॉल में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सभी बातें कर रहे थे. किसी की आंखों में आंसू भी थे. मुझे रुकने के लिए कह कर मेरे साथ आई हुई पुष्ट अंगों वाली स्त्री चली गई.

'स्टेला क्या कहेगी ?' आज फिर मेरा हृदय स्टेला को चाहता हुआ धड़क रहा था. मैं उत्सुकता से इधर-उधर नज़र डाल रहा था, तभी मैंने दूर से स्टेला को दरवाज़े में प्रविष्ट होते देखा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वही स्टेला ! जिस स्टेला को मेरा तन-मन और आत्मा जानती थी. वह थी, अपनी विशिष्ट और आकर्षक चाल में. वह मेरी स्टेला थी ! लम्बी बहुत ही और बेजोड़ ! उसने मुझे देखा. हमारी आंखें मिलीं. गुस्से से वापस लौट जाने उस स्त्री को बिदा कर वह धीमे क़दमों से मेरी ओर आने लगी. दसेक फुट थी वह. मैंने जी भर कर उसे उसके चेहरे पर कहीं घृणा या था. मैं थरथर कांप रहा था. मैं कुर्सी पर चढ़ गया. निर्निमेष मैं रहा था. उसके चेहरे पर मुसकान उसकी आंखों में चमक के बदले थी, पर अभी भी वे स्नेह से रही थीं. वह पास आई. मैं फिर गया. उससे लिपट जाने की आकांक्षा मुझमें भर आई.

विगत और आगत

■

सदियों से मैं द्वार पर खड़ा
एक ही प्रश्न का उत्तर खोज रहा हूँ
कि, कौन बड़ा है और कौन छोटा
मेरा अतीत
मेरे घर में विश्राम कर रहा है
और मेरा भविष्य
मुझे राहों में खोज रहा है !

—सी. एल. गिरधर 'आर्टिको' ?

'बेबली ! तू आया ? मैं राह देख रही थी. मुझे विश्वास था कि तू आए ठीक है न ? हॉस्पिटल में तक़लीफ़ तो नहीं उठानी पड़ी, बेबली को ?'

मुझसे ये अनुकंपा भरे शब्द नहीं सुने गये. लाख प्रयत्न करने पर भी से ज़ोर दे कर आते हुए आंसू मुझ से नहीं रोके गए. इतनी सहानुभूति से भरे मैंने जीवन में आखिरी बार सुने.

'स्टेला, किसलिए....!'

'छी....छी....बेबली. गई गुज़री हुई....बातें....याद नहीं करनी चाहिए. बात कर. वह बहुत उज्जवल है. तुझे डॉक्टर की उपाधि मिलेगी. तू घर जाएगा

वह चुप हुई.

'स्टेला ! सहन नहीं हो सकता....'

मेरी बात पूरी सुने बगैर वह कहने लगी. 'हाँ, कुछ महीने में तेरी पढ़ाई हो जाएगी. तू तुरन्त अपने देश रवाना हो जाना. तेरी ज़िन्दगी बहुत लम्बी यौवन काल है, तेरी कई आकांक्षाएं हैं. तेरे स्वजनों को तुझसे कई मेरी तो बहुत कुछ बीत गई, थोड़ी बाकी रही. मैं रहूँ, न रहूँ, इससे कोई नहीं पड़ने वाला है. पर तेरी ज़िन्दगी लम्बी है. तेरे माता-पिता तेरा इन्तज़ार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं. उनकी अभिलाषा है कि तू सुन्दर लड़की ब्याह कर घर लाए, तेरे बाल-बच्चे हों. उनका मन तृप्त हो. तुझे अभी बहुत देखना है, जीना है, भोगना है. मैं यहां होऊं या बाहर होऊं, जीवित होऊं या मरी हुई, इससे खास फ़र्क नहीं पड़ने वाला. बड़ी बहन के सिवा कोई मेरे लिए रोने वाला भी नहीं शायद. अब तो वह भी शर्म की मारी रोना छोड़ देगी. हां, बेबली, मेरा तो अपना कहने के लिए कोई नहीं....'

मैं रो पड़ा, 'मैं, स्टेला ! स्वीट हार्ट, मैं हूँ ! तुझे याद करने वाला और तेरे लिए आंसू बहाने वाला !'

उसकी आंखें चमक उठीं, शुक्र कणिका की तरह. 'सच बेबली, तू मुझे याद करेगा ! तू मेरे लिए आंसू बहायेगा ? जब तेरी बगल में कोई सजी संवरी, साड़ी पहने लड़की होगी, जब तू अपने छोटे बच्चों से घिरा हुआ होगा, जब तू सुखी होगा, तब इस दुनिया के एक अंधेरे कोने में दुबकी हुई स्त्री को तू याद करेगा. तब तो सचमुच ही यह स्त्री तेरा मरण कभी नहीं भूलेगी. अवश्य प्रयत्न करना अन्य किसी खातिर नहीं तो जो कुछ थोड़े क्षण तूने इसके साथ सुख में बिताएँ हैं. उसके लिए ही इतना जरूर करना. बेबली, वे बातें, वह संगीत और....' उसकी आंखें छल-छल छलक रही थीं. अचानक मुलाक़ातियों को बाहर जाने का संकेत देती हुई घंटी सतत बजने लगी. ■ ■

मूल गुजराती से अनूदित

(अनु०—जेठमल जेल सदर के पास, बीकानेर, राजस्थान)

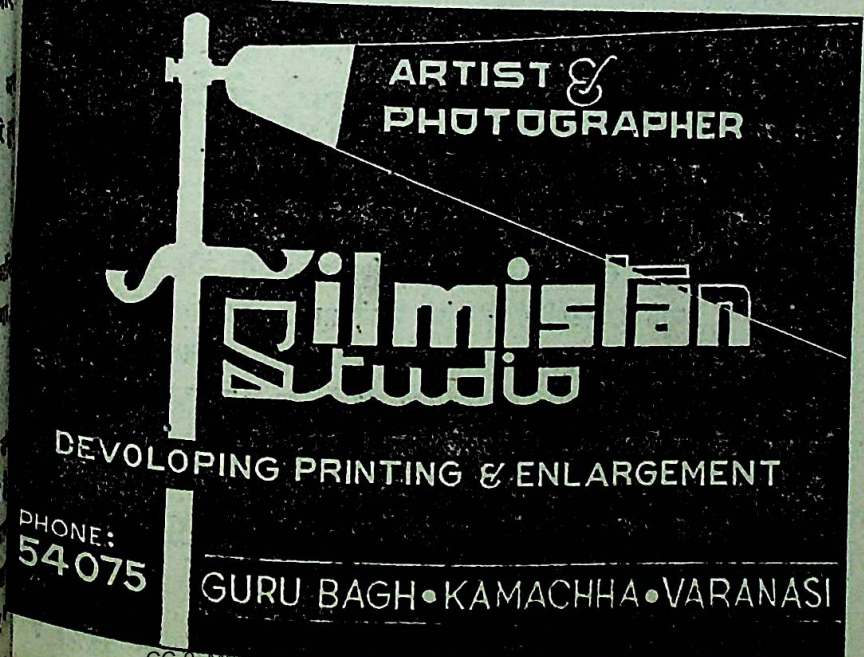

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सफ़र ख़त्म नहीं होते

ओम

तेज़....और तेज़....एक्सीलरेटर पर पैर और दब जाते हैं. जाते हैं. स्टेयरिंग व्हील पर उसके हाथ.....माइलोमीटर की सुई खिसक जाती है.....अंधकार में डूबे हुए बांस-वन के सड़क वाले हिस्से कार की तेज़ हेडलाइट से दिप-दिप कर उठते हैं....

'तिन्नी.'

'हूं!' पीछे वाली सीट पर से उसका अलसाया हुआ सा भीतर घिरी हुई निचाह चुप्पी को बेधता हुआ उतरता है.

'एक बात कहूं ?

'कहो.'

इसके बावजूद वह कुछ भी नहीं कहता. अनकहे को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह झिझक रहा है. शायद इस असमंजस में हैकि बात कहां से शुरू करे....आज दुपहर वकील से हुई बातचीत से (जिसे कह डालने पर उन दोनों के बीच कह जाने लायक शायद कुछ बचेगा ही नहीं....) या फिर अचानक हाथ लग गए उस छोटे से पत्र से जिसने उसके और तिन्नी के बीच के सारे सम्बन्धों को एक पिघले हुए ज्वालामुखी पर ला कर खड़ा कर दिया.....

कार के भीतर एक बार फिर मौन घिर आता है. एक्सीलरेटर पर पैरों के दबाव का बढ़ना और कार के हेडलाइट्स से टूट-टूट कर बिखरता अंधकार. कार के भीतर मद्धम-सी रोशनी है जिसमें उन दोनों के चेहरे बेहद पीले-पीले से नज़र आते हैं. तिन्नी यानी तंद्रा के हाथों में सलाइयाँ और ज़ोर से चल उठती हैं.....

'इतना तेज़ क्यों चला रहे हो ? सलाइयों पर घर डालती हूं, मिट-मिट जाते हैं.'

तन्मय दांत पर दांत भींच लेता है. कड़वी-सी बात कहीं मुंह से निकल ही न जाए.....शायद वह कहना चाहता था.....

बस ? ऊन के फंदों से बने हुए घरों का इतना दर्द ? और जो यह जागता घर.... उसके भीतर से खौलता हुआ-सा कुछ बाहर आ जाना चाहता है....स्टेयरिंग को खुब ज़ोर से भींच लेता है वह और पैरों का दबाव एक्सीलरेटर पर एक झटके से बढ़ जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

maharaja hotel

JANGAMBARI ROAD
VARANASI • 221001
PHONE : 53320

FOR PLEASANT BOARDING & LODGING
CLOSE TO VISHVANATH TEMPLE AND THE GANGES

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक बीता हुआ दृश्य उसकी आँखों के आगे से अपने को हराता हुआ गुज़र जाता है....

वह एक गंधडूबी, उन्मादक रात. तन्द्रा उसके कमरे में होले-होले आई है, उसकी यलों के संगीत से वातावरण रच गया है और तन्द्रा को अपनी बाहों में समेट कर ह फुसफुसा उठा है आत्मविभोर-सा....' घर की लक्ष्मी का स्वागत है. अब मुझे भगवान कुछ और नहीं मांगना....मेरा भटकावों वाला सफ़र खत्म हो गया, मेरी मंजिल मुझे ल गई....'

तन्द्रा उसकी बांहों में और भी दुबक गई है....'ना, सफर खत्म नहीं होते और भी जिलें होती हैं. तुम्हें ऊपर, बहुत ऊपर उठना है...मुझ तक ही सीमित रहोगे तो माज तुम जैसे उज्जवल तारे को खो देने का अपराध मेरे सिर पर रख देगा....'

ठीक ही तो कहा था तन्द्रा ने. सफ़र खत्म नहीं होते....मंज़िलें कभी नहीं मिलतीं... ह ओठों में मुस्कराता है....आज तो वह इस बात की गाँठ ही बाँध कर निकला है. ह साबित कर देगा कि सफ़र खत्म भी हो जाते हैं....सिर्फ़ इरादे मज़बूत होने चाहिए.

सामने एकाएक एक मोड़ आ जाता है.

तन्मय एक्सीलरेटर से पैर हटा लेता है. ब्रेक पर एकदम से कस उठते हैं उसके र. गाड़ी को झटका लगता है..... क्षण भर तो लगता है शायद तन्मय न संभाल ाए..... पीछे की सीट पर तन्द्रा जरा-सा चौंकती भर है. इसके अलावा कुछ नहीं. ोड़ के बाद फिर सीधी सड़क आ जाती है..... क्षण भर के लिए डर-सी गई तन्द्रा फिर आश्वस्त हो कर बैठ जाती है....

'देखो तन्मय. आखिर पता तो चले हम लोग कहाँ चल रहे हैं.'

'अभी देख लोगी. इतना विश्वास रखो तुम्हारा अनिष्ट नहीं करूँगा. जी तो हुआ कि यह भी कह दे कि तुम्हारा अनिष्ट कर के क्या निरुपम का यह लांछन अपने सिर लूँगा कि मैंने उसके 'बकुल फूल' को नष्ट कर दिया....? जी कड़ा करके इस अप्रिय व्यंग्य को कहे जाने से रोक लिया. इस आखिरी सफ़र में क्यों कटुता बढ़े ?

दुपहर में वकील ने सारी बातें साफ-साफ रख दी थी, उसके सामने. 'तलाक़' लेना हो तो बाक़ायदा काररवाई करनी पड़ेगी, कारण बताने होंगे. उसने मन ही मन सोचा था कि क्या विवाह के पहिले के निरुपम और तन्द्रा के संबंधों की बात को अदालत में असीट कर ले जा सकेगा वह ? ज़रूरत पड़ी तो शादी के बाद उन दोनों के बीच खतों के आदान-प्रदान की बात भी तो बतानी पड़ेगी. यह नहीं कि वह डर गया हो, हाँ यह सब करना-धरना और इसके लिए दौड़ धूप करना ज़रूर नागवार लगा उसे. यही होता कि उधर अदालत में मामला चलता रहता और इधर वे दोनों, जो अदालत में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक दूसरे के विरुद्ध खड़े होते घर में इकट्ठे रहने के लिए बाध्य होते....

एक दूसरे के प्रति शंकित और एक दूसरे से कटे हुए. क्या यह कोई स्थिति होती ?

'नहीं भई. यह सब तो बड़ा झंझट वाला काम है...., कोई और रास्ता सुझाओ'

'सेपरेशन ! तुम दोनों अपनी 'विलिगनेस' कोर्ट के सामने टेस्टिफाई कर दो फिर आपसी तौर पर तय कर लो. उसे 'मेन्टेनेन्स' देते जाना, बस कोई नहीं होगा.....

वकील की यह बात उसे पसंद आई थी और वह थोड़ा उत्साहित-सा हो गया

वकील के यहाँ से लौट कर पूरे दो तीन घण्टे उसने इसी बात को सोचते गुज़ारे थे. सोचता रहता था कि तन्द्रा से कैसे कहें ? वह तो शर्तिया उन को ग़लत बताएगी. कुछ ऐसा ही हुआ है हमेशा ! हर मसले में उसने पाया है कि ने अपनी ग़लती कभी स्वीकार नहीं की....उसका मन रखने के लिए भी नहीं. वक्त तो ज़रा-ज़रा-सी बातों को ले कर शुरू हुई बहस ऐसी सीमाओं तक जा पहुँ जहाँ से उन दोनों ने समझौते की तरफ़ लौटना बेहद मुश्किल पाया है और तीन चार-चार दिनों तक वे अपने आप में ही सुलगते रहे हैं लेकिन समझौते के लि नहीं कर सके हैं. अपने कमरे की ईजीचेयर पर पड़े-पड़े वह यही सब कुछ सोचता था. तन्द्रा दो एक बार झांक कर देख गई थी लेकिन बोली कुछ नहीं थी. धूप की रंगत बड़ी प्यारी थी और आसमान का साफ़ नीलापन बहुत मोहक था और दिनों की तरह वह इन चीजों की शांत मोहकता में अपने उलझनों को भूल सका था. बहुत देर बाद शायद मन ही मन किए गए किसी निश्चय ने उसमें उत्साह-सा भर दिया था. 'हाँ यही ठीक है.....' वह मन ही मन बुदबुदाया झटके से ईजीचेयर से उठ खड़ा हुआ था.

बहुत ही आकस्मिक रूप से उसने किचन में चाय की तैयारी करती हुई को चौंका दिया था. उसे खुश देख कर वह भी हुलस आई थी. न जाने क्यों लेकिन दिनों के बाद वह ज़रूरत से ज़्यादा खुश था.

'मैं देखने गई थी लेकिन आप अपने आप में बिलकुल डूबे हुए थे.'

'मुझे मालूम है.'

'क्या बात थी ?'

'कुछ खास नहीं. थोड़ी-सी उलझन. वह भी अब सुलझ गई है.'

'मैं जान सकती हूँ ?'

'छोड़ो भी ! अपना सिर दर्द क्यों दूँ तुम्हें ? ठीक है न...., उसने बहुत ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से कहा था जिसमें तल्खी बिलकुल नहीं थी. किसी और मौके पर किसी और ढंग से कही गई यह बात तल्ख हो कसती थी. तन्द्रा ने भी नोटिस किया कि वह हँसते-हँसते यह कह रहा था.

'थैंक गॉड ! तुम्हारा 'ब्लैक मूड' खत्म तो हुआ.'

'हाँ शायद....!' बहुत ही थोड़े देर के लिए वह जरा सा अनमना हुआ फिर बोला... फारगेट इट, तन्नी. बस तुम तैयार हो जाओ, हम लोग कहीं ड्राइव पर जाएगे.'

'कहाँ ?' तन्द्रा ने भी उल्लास से कहा था.

'कहीं भी.'

तन्द्रा को थोड़ा ताज्जुब तो जरूर था लेकिन बहुत दिनों बाद घर में फैल आई इस स्निग्ध खुशी को वह खोना भी नहीं चाहती थी.....

वह तैयार होने के लिए जाने लगी थी तो वह अचानक बोल उठा था....'आज अगर तुम वह साड़ी पहिनो तो कैसा रहे ?'

'कौन सी ? विबाह के पांच साल बाद यह प्रथम परिणय जैसी ललक कितनी अनोखी थी !

'वही जो तुमने अलका के जन्म दिन पर पहिनी थी.' क्षण भर के लिए तन्द्रा का जी धक् से हुआ था. वह साड़ी क्यों ? उस जन्म दिन की पार्टी में निरुपम भी तो आया हुआ था और दूसरे ही दिन उसने जो छोटा सा 'नोट' बकुल फूलों के साथ भिजवाया था उसमें लिखा था...., जन्म दिन की पार्टी में पूरे वक्त तुम ही दिखती रहीं. अपने पर बेहद फ़बने वाली वह 'ग्रे' साड़ी कहाँ से खरीद लाई हो ?' तो क्या तन्मय को पता चल गया है ? वह नोट तो मैंने खूब अच्छी तरह संभाल कर छिपा दिया था. फिर ?

तन्मय को टकटकी लगा कर अपनी तरफ देखते पा कर क्षण भर के लिए वह घबरा-सी गई थी फिर इस अप्रिय संभावना को उसने अपने दिमाग़ से झटक कर फेंक दिया था और संभल कर बोली थी...

'वह ?....उस साड़ी में ऐसा क्या है ?'

'भई ! वह तो देखने वालों की नज़रों से पूछो...' और वह हो....हो करके हंस पड़ा था....

वह फिर से घबराहट की गिरफ्त में आ जाती अगर वह स्वयं यह न कह देता.... 'देर मत करो भई. झटपट तैयार हो जाओ....'

वह खुद भी अपने कमरे की तरफ़ चल दिया था. ड्रेसिंग रूम में तैयार होते वक्त उसके कमरे से आती आवाज़ों की ओर उसका ध्यान चला गया था. पता नहीं क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उठा-पटक सी कर रहा था वह. मेज़ों की दराजें भी दो एक बार खोलीं उसने और एक दो बार ट्रंक भी....! वह बाहर निकली तब तक शाम झुक आई थी. तन्मय पहिले से ही तैयार हो कर ड्राइंग रूम में बैठा था और कुछ कागज़ उलट-पलट रहा था.

उसने उलाहना दिया था.... 'बस, येही तो आदत है तुम में ! जा रहे हो घूमने लेकिन काम से फुरसत नहीं.'

'लो भई !, उसने काग़ज़ जल्दी-जल्दी ब्रीफ केस में ठूंस दिए और उठ खड़ा हुआ.'

'इस ब्रीफ केस का क्या होगा ?'

'यूं ही.'

उसने आगे कुछ नहीं पूछा था. वे दोनों बाहर निकल आए थे. ब्याह के पहिले पहिले दिनों की तरह उसने उसे बड़े प्यार से पीछे की सीट पर बिठा दिया था. उसने कभी उसे साथ नहीं बिठाया....कहा करता—, तुम शान से पीछे बैठो और मैं शोफर बन कर ड्राइव करूं....इसमें जो लुत्फ है वह बगल में बैठने में कहाँ ?'

और पहिले की ही तरह उसने मज़ाक़ में कहा था....

'शोफर गाड़ी ले चलो.'

वह भी उसी तरह हँसा था और बोला था...'यस मैडम'

बंगले के बाहर की दो चार गलियों को पार करके वे हाइवे पर आ गए थे. सब कुछ कितना खूबसूरत है...तन्द्रा ने सोचा था.....सब कुछ वैसा ही खूबसूरत लेकिन नश्वर....

गाड़ी ड्राइव करते हुए. उसने महसूस किया था.

बकुल फूल ! बकुल फूल.

गाड़ी जितनी तेज़ भाग रही थी, उससे कहीं तेज़ था उसके मन में विचारों का अंधड़. यादों के सिर जुड़े और एक कहानी बनती गई. पतझर के पत्तों के एक ताल वर बगूले के बीच वह फंस गया था. उस बगूले ने मुड़े-तुड़े एक खत की शक्ल अख्तियार कर ली थी और उसमें किए हुए निरुपम के दस्तखत उसकी हालत पर हँस लगा रहे थे और वह अंधड़ बढ़ता ही चला जा रहा था. उसे लगा कि एक घर छूट चुका है और एक सफ़र खत्म होने को है. बहुत देर से सिगरेट पीने को जी हो रहा था. उसने सड़क के किनारे कार रोक ली.

'क्यों ?' पीछे से तन्द्रा ने पूछा.

'कुछ नहीं.'

वह जेब से सिगरेट का पैकिट ढूंढने लगा—'तुम आगे ही आ जाओ न तन्द्रा.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बातें करनी हैं.'

'अच्छा.'

पिछला दरवाज़ा खोल कर वह गाड़ी से उतरी और फिर सामने आ कर बैठ गई. बंद शीशे के नीचे उतारते-उतारते उसने तन्मय की ओर यूं ही देखा. वह सिगरेट जला रहा था और उसका पूरा चेहरा भीगा हुआ था.

'अरे !' शीशे को उतारते-उतारते उसके हाथ रुक गए.

'क्यों. ?'

'तुम्हारा चेहरा.....'

वह धीरे से हंसा. माचिस की तीली बुझ गई थी और गाड़ी के मध्यम रीडिंग लाइट में उसकी आकृति बेहद उदास लग रही थी.

'क्या बात है तन्मय ?'

वह कुछ देर चुप रहा.

'तन्नी तुम्हें याद है, तुमने एक बार कहा था न कि सफ़र खत्म नहीं होते.....'

'हाँ...' वह पुरानी बातों को याद कर रही थी.

'लेकिन क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मंज़िल भी न मिले और सफ़र खत्म भी हो जाएं ?'

उसकी बिखरी-बिखरी बातें उसकी समझ में नहीं आ रही थीं....

'कैसे हो तन्मय ?'

उसने कुछ जवाब नहीं दिया और झटके से गाड़ी स्टार्ट कर आगे बढ़ा दी. बात वहीं खत्म हो गई लेकिन तन्द्रा ने महसूस किया कि वह एक वज़न जैसा छोड़ गई है और वातावरण में एक अव्यक्त तल्खी को टांग गई है.

जंगल अब बिरल होने लगा है. उसी हिसाब से हवा में बसी हुई नमी और जंगल की अपनी सुगन्ध भी मद्धम पड़ने लगी है.. वे लोग कोई ३०-४० मील आ चुके हैं अब तक.

'तुमने तो कहा था कि ड्राइव पर चलेंगे.'

'हाँ ! ड्राइव ही तो है यह.'

'ये कैसी ड्राइव ? कोई चालीस मील के ड्राइव पर भी जाता है ?' वह अब कुछ सशंकित-सी होने लगी थी. तन्मय का आखिर इरादा क्या है ?

वह चुप रहा.

'मैं समझती हूं, तुम पापा के यहाँ चल रहे हो.'

'हाँ !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फैण्टेसी अंक की वापसी

'कहानीकार' ने फैण्टेसी कहानी विधा की शक्ति की पहचान को दृष्टि में रखते हु
१९६९ में हिन्दी फैण्टेसी कहानी अंक (पूर्णांक १५) की आयोजना की थी. स
अंक में प्रकाशित कहानियों और उसके पूर्व के अंकों में फैण्टेसी कहानी से संबंधि
लेखों (डा. बच्चन सिंह, कमल गुप्त, सुदर्शन नारंग) एवं गोष्ठियों के द्वारा इस वि
पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ था. इसके बाद विधि पत्रिकाओं में हिन्दी के विशि
कहानीकारों की फैण्टेसी कहानियाँ प्रकाशित और चर्चित हुई थीं. लेकिन फिर इस वि
को एक लम्बी खामोशी का शिकार होना पड़ा, यद्यपि इस बीच फैण्टेसी कहानियों
लेखन और प्रकाशन की दिशा में 'कहानीकार' सतत और सक्रिय रूप मे प्रयत्न
रहा है और उसी सूत्र को आगे बढ़ाते हुए 'कहानीकार' के प्रत्येक अंक में एक फैण्टे
लघुकहानी (नया पंचतन्त्र) प्रकाशित भी की जा रही है.

आज के बदले संदर्भ में जक कि चारो तरफ़ यह आवाज़ उठाई जा रही है
व्यंग्य लेखन पर काफ़ी बंदिशें लग गयी हैं और इस माहौल में इसके लिए गुंजा
नहीं रह गयी है, फैण्टेसी कहानियों की वापसी काफ़ी सार्थक और उपयोगी सिद्ध हो
और व्यंग्य लेखन के नये आयाम का निर्माण करेगी. इसी विश्वास के साथ लेखकों की
रीय रचनाएँ 'कहानीकार' के फैण्टेसी कहानी अंक (दूसरा खण्ड) के लिए आमंत्रित हैं

दसवें गौरवपूर्ण वर्ष में

संचेतना

अधुनातन साहित्य की पूर्ण पत्रिका

संपादक : डा० महीप सिंह

प्रत्येक अंक में—महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रश्नों पर परिचर्चा, नव्यतम साहि
प्रवृत्तियों, सुविचारित लेख, बेलाग समीक्षाएं, गोष्ठी एवं नाट्य प्रसंग सा
विशिष्ट कहानियाँ और कविताएं.

विशेषांकों की परम्परा में एक और मोलपत्थर—

'समकालीन उर्दू कहानी विशेषांक'

(भारत और पाकिस्तान) दिसम्बर १९७६ में प्रकाश

प्रति रु० २-५० वार्षिक रु० १०

संपर्क—एच.१०८, शिवाजी पार्क, नयी दिल्ली-२६ • फोन५६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पहिले बताते तो कुछ इंतज़ाम करके आती. साथ में सामान भी नहीं लिया और नौकर को भी नहीं जताया.'

वह कुछ अटक-अटक कर बोला, 'अब उसकी जरूरत क्या है ?'

'क्या ?' मन ही मन धीरे-धीरे शक्ल लेता हुआ संदेह जैसे अचानक उसके सामने सदेह आ खड़ा हुआ.'

'क्या करने जा रहे हो तुम ?

'कुछ भी तो नहीं.'

आशंका जब साथ बन कर सामने ही आ जाती है तो आशंका के कारण उपजा भय एकाएक समाप्त हो जाता है और उसका स्थान ले लेती है एक अलग निरपेक्षता. तन्द्रा भी एकदम जैसे निरपेक्ष हो उठी.....

'सेपरेशन लेना चाहते हो न. तो उसमें शाम से ही इतना नाटक करने की ज़रूरत क्या थी तन्मय ?'

वह उसके रूखेपन से विंध गया है.

'तुम नहीं समझ सकोगी तन्नी....कम से कम मैं तो तुम्हें नहीं समझा सकूंगा.'

'तुम सचमुच नहीं समझा सकोगे. दरअसल तुम शुरू से ही असमर्थ रहे....'

'हाँ ! उसी गलती को सुधारने की कोशिश कर रहा हूँ.'

'सेपरेशन लेकर ?' तन्द्रा वास्तव में हद से ज्यादा शीतल और रूखी बन गई थी.... 'तुम नहीं सुधार पाओगे....' तुम अपने लिए काल्पनिक दुःखों का जाल फिर बुनोगे और उसमें फंसते जाओगे....'

'अब कह रही हो ? पहिले कह देती....'

'तो क्या होता ? वह भी तो न सहा जाता तुमसे....'

'मेरे बारे में ऐसी धारणा कब से करती आई हो तन्नी....'

'हमेशा से...'

'ओह....! हो सकता है तुम्हीं ठीक होओ. लेकिन सच मानो तन्नी, पहिले मेरे दुःख काल्पनिक रहे होंगे, अब की बार नहीं....' बहस खत्म हो गई थी क्योंकि अब उनमें बहस के बहाने भी जुड़े रहने की इच्छा नहीं थी....,

जंगल अब पीछे छूट गया है. कार एक बड़े से घुमावदार पुल पर से गुज़र रही है. तन्मय के पैर एक्सीलरेटर पर और तेज़ हो उठे हैं. शहर की रोशनियाँ दीख पड़ने लगी हैं.

'अब तो धीमी कर लो.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'क्यों ?'

'हम आ ही तो गए. वह रहा बंगला....और उसके पहिले ही तो मोड़ है....'

'मोड़ से मत डरो. दस साल से गाड़ी चला रहा हूं.'

'वे लोग पहुँच गए हैं. गाड़ी बंगले के सामने रोक कर वह उतर आया है. तंद्रा से

'अच्छा....!' उसने जैसे विदा लेने के लिए कहा.

'क्यों ? भीतर भी नहीं चलोगे ?'

'नहीं.'

'अच्छा ! जैसी तुम्हारी मरजी.' वह भी सख्त होना जानती है, यह तन्मय समझ क्या है अपने आपको ?

'ममी, डेडी को मेरी तरफ से 'विश' कर देना.'

'श्योर.'

'वह चलने लगती है.'

'सुनो...., वह गाड़ी में से ब्रीफकेस निकाल कर थमा देता है. इसे रख लो.,

'यह क्या है....?'

'जरूरी काग़ज़ है कुछ ? काम आएंगे.'

'है आखिर क्या ?'

'कुछ खास नहीं....बीमा पालिसी और प्राविडेंट फंड के काग़ज़ हैं.'

'तो क्या....?' ओह ऐसे अनिष्ट की बात वह कैसे सोच ले ? कुछ भी हो आखि तन्मय है तो उसी का

तंद्रा के संदेह को पनपने का अवसर दिए बिना वह तेज़ी से गाड़ी मोड़ कर पड़ता है. सुनो तन्मय रुक जाओ....वह चीख कर कहना चाहती है, लेकिन शब्द उसके कंठ में अटक जाते हैं. उसके कान के पास आ कर जैसे कोई फुसफुसा उठता है....

देखो डियर ! मैं कहता था न, सफर ख़त्म हो सकते हैं, भले मंज़िल मिले न मिले

वह आँखें लौटती हुई सड़क पर फैला देती है. तन्मय की कार की रफ़्तार बढ़ तेज़ है....और वह खतरनाक मोड़ क़रीब आता जा रहा है....क़रीब....और क़रीब ...

—डी–३, ७४ बंगले, भोपाल–२ म.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुचर्चित उर्दू उपन्यास

●

धारावाहिक पन्द्रहवाँ अंश

सुबह जागने का सवाल ही कहाँ था. रात भर दाऊद को नींद नहीं आयी. तरह-तरह के ख़यालों ने उसे सोने न दिया. वह बार-बार कायनात के बारे में सोचने का प्रयास करता, पर सुलताना की अनुपस्थिति उसकी उपस्थिति से अधिक तीव्रता से उसके दिमाग़ पर छायी हुई थी. उसने अपनी तरक़्क़ी और कायनात से जूहू की मुलाक़ात के बाद अब तक उससे मुलाक़ात न होने की मजबूरी को सुलताना से छुपा कर रखा था. कायनात की किताब छप भी गयी, ख़त्म भी हो गयी; उसकी दूसरी किताब का एलान भी हो गया लेकिन उसने ये सब बातें सुलताना को नहीं बतायी थी. जब सुलताना कायनात की किताब के बारे में पूछती तो कह देता कि छपने का इन्तज़ाम हो रहा है. उससे मुलाक़ात के बारे में पूछती तो कह देता, हाँ हुई थी. उसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डर था कि यदि सुलताना को उसके और कायनात के बीच सलमान के बाधक की बात मालूम होगी तो वह उसकी बहुत हँसी उड़ायेगी. वह अपनी इस कमज़ोरी पर क़ाबू पाने में बार-बार असफल हो रहा था, इसी कारण वह सुलताना के सामने ऐसी कोई बात छेड़ना ही नहीं चाहता था. जिससे उसकी दुर्बलता के झलक की संभावना थी. वह इस इन्तज़ार में था कि वह चली जाये तो फिर जो भी हो वह देखेगा. सुलताना को स्थायी रूप से वापस जाने में अभी एक महीने की देर थी. कल शाम, जब वह उससे दो दिन के लिए बिछुड़ रही थी तो उसे उसकी जुदाई का दुख उस समय हुआ जब वह उससे दूर होने के क़रीब पहुँच गयी. वह सुलताना से अपने आँसू न छुपा सका, इस ख़याल से भी उसे पश्चाताप-सा हो रहा था, जो उसके मन में यह डर पैदा कर रहा था कि कहीं वापस आ कर सुलताना उसके आँसुओं को भी मज़ाक़ न उड़ाये. वे आँसू अब भी उसके दिल से उसकी आँख अक आ आ कर लौट रहे थे.

अपने छोटे-से कमरे में वह सुलताना के साथ रह कर भी उससे दूर रहा. उसके हुस्न के सामने उसका ज़ेहन मंत्र मुग्ध हो जाता. इस जादू का उस पर उल्टा असर

इस उपन्यास के पूर्व कथा के लिये 'कहानीकार' के पिछले अंक को देखने की कृपा करें स्थानाभाव के कारण उसे न दे पाने का खेद है—सं०

होता कि कायनात की कल्पना पहले से भी अधिक सुन्दर हो जाती. मानो सुलताना के सौंदर्य से अपनी सौंदर्यानुभूति को ज्वलन्त बना कर जब वह कायनात के बारे में सोचता तो उसे उसका आकार पहले से भी ज्यादा आकर्षक लगता. वह जितना सुलताना के पास रहता कायनात उसे उतना ही अधिक याद आती और जब वह अपने बन्द कमरे में सुलताना के पास ही सो जाता तो उसकी रूह दीवारों को पार कर कहीं दूर कायनात के आस-पास मँडराती रहती.

सुलताना अब उसके क़रीब नहीं थी, पर कायनात की कल्पना का जादू बार-बार टूट रहा था. जब वह कायनात की काल्पनिक मूर्ति अपने सामने खड़ी करता तो ही क्षणों में वह सुलताना की उस उदास आकृति में बदल जाती, जिसे वह रेल के डिब्बे के दरवाज़े पर छोड़ आया था. रात भर वह बार-बार अपने ज़ेहन को झटकता. सुलताना दाऊद के लिए न भुलाने की चीज़ थी, न दाऊद ही उसे भूलना चाहता था. लेकिन वह बार-बार कायनात के ख़याल के बीच बाधक हो रही थी, इससे वह परेशान था. उसे रह-रह कर ऐसा महसूस होता रहा कि वह अभी-अभी उसकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उठ कर चली गयी है और उसके दिल को वीरान कर गयी है.

वह अपनी तमन्नाओं के उस सफ़र के बारे में सोचने लगता, जिसकी शुरुआत सुलताना की स्थायी जुदाई के बाद होनी थी और जिसे कायनात के स्थायी मिलन पर खत्म होना था. वह सफ़र उसे बहुत लम्बा महसूस होता. सुलताना की ताज़ा और अस्थायी जुदाई से उसे जो दुख हुआ था, उससे उसने अनुभव कर लिया था कि जब वह हमेशा के लिए चली जायेगी तो उसे इस दुख पर नियंत्रण पाने में देर लगेगी. फिर उन पशबन्दियों के लिए भी वक्त की ज़रूरत थी जो उसकी और कायनात की शादी को जायज़ साबित कर सकते. बीच में सलमान भी थे, जो अभी तक अपनी ज़बान से कायनात की तमन्ना ज़ाहिर किये बिना उसके और कायनात दोनों के बीच एक ऊँची और मज़बूत दीवार बन कर खड़े थे.

इसी उधेड़-बुन में वह सो न सका और सुबह हो गयी. सुबह की रोशनी के साथ-साथ कायनात उसके सामने इतनी क़रीब नज़र आने लगी कि उसके दिल के अँधेरे भी दूर हो गये. वह जल्दी से उठा. नहानी के पास गया तो बाल्टी खाली थी. वह बाल्टी ले कर पानी लेने के उद्देश्य से कमरे से बाहर निकला तो उसे नल के पास औरतों और बच्चों की एक लम्बी लाइन नज़र आयी. उसने लौट कर बाल्टी नहानी में रख दी और सैलून में शेव कराने और वहीं नहाने के उद्देश्य से चल दिया. जल्दी ही वापस आ कर उसने कपड़े बदले और चाय पीये बिना कायनात के घर रवाना हो गया.

कायनात ने सुबह ज़ल्दी उठ कर स्नान कर लिया था. आईने में अपने को देर तक सँवार कर कपड़े बदल कर दाऊद के इन्तज़ार में बैठी हुई थी. उसकी माँ किचन में व्यस्त थी. दाऊद ने कमरे के दरवाज़े पर क़दम रखा तो उसने मुस्करा कर उसका स्वागत किया. अभी वह खड़ा ही था कि अम्माँ किचन से आ गयीं. उसे देखते ही बोली—

'दाऊद ! हम से क्या खता हुई बेटा जो तुम इस घर का रास्ता ही भूल गये.'

दाऊद ने अम्माँ को सलाम किया और कहा—

'अम्मी तक़दीर खता कर गयी. इस घर के दरवाज़े मेरे ऊपर बन्द हो गये थे.'

'खुदा जाने किस की तक़दीर खता कर रही है.. मैं तो तुम्हें देखने को तरस गयी.'

अम्माँ का स्वर बहुत उदास था. वे शायद कुछ और कहने वाली थीं कि कायनात

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने कहा—

'अम्मी, हम लोग जा रहे हैं. कहीं नाश्ता भी कर लेंगे.' यह कह कर काय ने अपना बर्मी बेग अपने कन्धे पर लटका लिया.

अम्माँ ने कोई जवाब नहीं दिया. दाऊद उनकी खामोशी को महसूस कर कायनात आगे-आगे चली लेकिन दाऊद वहीं खड़ा रहा. कायनात ने मुड़ कर देखा वह जहाँ का तहाँ था.

'आओ चलें.' कायनात ने कहा.

दाऊद ने जाने के बदले वहीं बैठते हुए कहा—

'आओ कायनात यहीं बैठें.'

इससे पहले कि कायनात कुछ समझे, अम्माँ ने कहा—

'नहीं दाउद जाओ. कायनात बुला रही है.'

कायनात ने भी कहा—

'चलिये न.'

वह झिझकता हुआ खड़ा हो गया. जब दोनों उतरते हुए आधी सीढ़ी तक तो अम्माँ की आवाज़ आयी—

'कायनात ! मेरी एक बात सुन ले.'

वह लौट आयी. दाऊद वहीं खड़ा रहा. अम्माँ कायनात को ले कर कम अन्दर चली गयीं. बोलीं—

'कायनात ! जा रही हो तो जा, लेकिन हो सके तो कोई फ़ैसला कर ले. तुझे दाऊद पसन्द है और उसे तू भी नापसन्द नहीं तो मुझे कोई ऐतराज सलमान भी हैं. कोई मुझसे कुछ नहीं कहता. मुझे दोनों पसन्द हैं. लेकिन....'

अम्माँ चुप हो गयीं. कायनात का चेहरा सुर्ख़ हो गया. उसने लाज के निगाहें झुका लीं. जब कुछ देर तक अम्माँ न बोलीं तो वह लौट कर दाऊद के घर से बाहर निकल गयी.

दोनों कुछ दूर तक पैदल ही चलते रहे. दाऊद ने पूछा—

'कहाँ चलोगी ?'

'नाज़ होटल मालाबार हिल ! आज बहुत दिनों बाद घर से निकली हूं. जी है तुम्हारे साथ आसमानों में उड़ूँ.'

दाऊद का जी चाहता था, कि वह कायनात को ले कर किसी ऐसे कोने में जाये, जहाँ दुनिया की निगाहें न पहुँच सकें. मालाबार हिल का नाम सुन कर दिन याद आ गया, जब वह सुलताना को ले कर वहाँ गया था और समुद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुलाक़ात हो गयी थी. उसका जी नहीं चाहता था कि वह वहाँ जाये, पर वह कायनात से साफ़ इनकार भी नहीं कर सकता था. कुछ सोच कर उसने कहा—

'सलमान साहब तुम्हें लिये हुए आसमानों में उड़ रहे हैं. मैं धरती का वासी हूँ. मेरा जी चाहता है कि तुम थोड़ी देर के लिए आसमानों की बुलन्दी से उतर कर मेरे पास आ जाओ.'

कायनात ने अर्थपूर्ण निगाहों से दाऊद को देखा और मुस्करा दी.

'तो फिर तुम मुझे ले चलो, जहां जी चाहे.'

'आओ, मैं तुम्हें ज़मीन के नीचे ले चलूँ. दुनिया की निगाहों से दूर.'

यह कह कर दाऊद ने हाथ से इशारा किया. सामने आती हुई टैक्सी रुक गयी. दोनों उसमें बैठ गये. दाऊद ने कहा—

'चर्चगेट !'

टैक्सी शहर की घनी बस्ती से निकलती हुई चौपाटी की ओर चली वहाँ से मुड़ कर उसने मेरीन लाइन की चौड़ी और समुद्र की ओर खुली हुई सड़क का रुख किया और एक ही जस्त में चर्चगेट पर थम गयी. दोनों उतर गये. थोड़ी दूर तक दोनों टहलते हुए आगे बढ़े फिर रुक कर दाऊद ने इधर-उधर देखा और कायनात को ले कर 'अण्डर ग्राउंड वाम्बे रेस्ट्राँ' की सीढ़ियाँ उतर कर एक बड़े और रोशन हाल में दाखिल हो गया.

कायनात के लिए यह माहौल बिल्कुल नया था. उसने हर चीज़ को बड़े विस्मय और उत्सुकता के साथ देखा. ज़मीन के नीचे चारों ओर से बन्द तहखाना ऐसा जगमगाता हुआ, सुसज्जित और शानदार था कि वह थोड़ी देर के लिए उस सुन्दर वातावरण में खो गयी. चारों ओर एक दूसरे से अलग-अलग हसीन और रंगीन जोड़े एक दूसरे के सामने बैठे हुए इतने धीमे स्वरों में बातें कर रहे थे मानो वे केवल एक दूसरे को देख रहे हों. बैरों की बातें, उनका चलना-फिरना, प्लेटें, कप और गिलासों का आना और ले जाना सब ऐसी नर्मी और ख़ामोशी से हो रहा था मानो वह ज़िन्दगी के रास्ते का कोई 'साइलेन्स ज़ोन' हो या मुहब्बत की भेद भरी वादी. कायनात को ऐसा लगा कि वह दिन की सरहद पार कर के किसी महल की जगमगाती हुई रात में आ गयी है. कायनात को यहाँ बड़ी शांति मिली. उसने सरगोशी के अन्दाज़ में दाऊद से पूछा—

'यहां बैठ कर रात और दिन का फ़र्क़ कैसे मालूम होता होगा ?'

'यह हमारे पुराने नवाबों की उस रात का नमुना है जहां सूरज कभी निकलता था.' दाऊद ने भी उसी सरगोशी के अन्दाज़ में जवाब दिया और उसे ले कर एक खूबसूरत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैशाली ट्रांसपोर्ट
एण्ड फारवार्डिंग एजेंसी (रजि०)

जी. टी. रोड, महेशपुर, वाराणसी

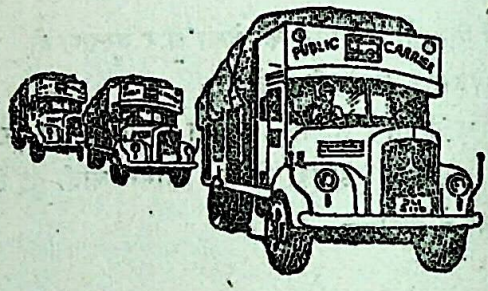

वाराणसी बुकिंग • ६५२२३, ६३३८२

एजेंसियां—सैदपुर, गाजीपुर, रसड़ा, बलिया, दोहरी घाट, बड़हलगंज, मऊ, आजमगढ़, जौनपुर, शाहगंज, फूलपुर, गोपीगंज, मिरजापुर, गोरखपुर, देवरिया, वस्ती.

● उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ भार-वाहन स्वामी ट्रांसपोर्टर्स

रजि० आफिस—जी. टी. रोड, महेशपुर, वाराणसी फोन : ६५२२३

● सुविधाएं—इन्श्योरेंस कराने पर माल की पूरी ज़िम्मेदारी हमारी होगी. आपका क्लेम भी एक माह के भीतर चुकता कर दिया जायगा.

हमारी सेवाएं देश भर के सभी प्रमुख शहरों

फुल ट्रक के लिये सुलभ हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केबिन में दाखिल हो गया. कायनात ने दाऊद के सामने की कुर्सी पर बैठते हुए सवाल किया—

'दाऊद, हम लोग यहां बातें कैसे करेंगे ?'

'निगाहों से !'

कायनात मुस्करा दी. दाऊद ने फिर कहा—

'जो लोग दिल की कहानियां ऊँची आवाज़ में बयान करते हैं. उन्हें मुहब्बत की नज़ाकत और लताफ़त का ज्ञान नहीं होता.'

दाऊद कुछ और कहना चाहता था कि बैरे ने आ कर सलाम किया. उसने सैंड विच और चाय का आर्डर दे दिया.

बैरा चला तो कायनात ने पूछा—

'तुम यहां पहले भी आ चुके हो ?'

'मैंने सिर्फ़ इसके क़िस्से सुने थे. लेकिन आने के बाद ऐसा ही लगता है जैसे

लेखकों से निवेदन

रचना भेजते समय उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास कृपया सुरक्षित रखें ■ केवल वही अस्वीकृति रचनाएं सुरक्षित रखी और लौटाई जा सकेंगी जिनके साथ लेखक का पता लिखा, टिकट लगा लिफ़ाफ़ा होगा, मात्र टिकट नहीं ■ नए लेखक रचना के साथ अपना व्यक्तिगत एवं साहित्यिक संक्षिप्त परिचय, प्रकाशित रचनाओं, वर्तमान शग़ल और शौक का उल्लेख करना न भूलें ■ 'कहानीकार' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं.—सं०

पहले भी आ चुका हूं.'

कायनात ने अपने बर्मी बेग में से 'बन्द दरवाज़ा' की एक प्रति निकाली और दाऊद को पेश करते हुए कहा—

'लो, अपनी अमानत सँभालो.'

दाऊद ने उसे लेते हुए कहा—

'शुक्रिया.'

उसने किताब खोली. पहले पृष्ठ पर लिखा हुआ था—

'दाऊद ! अगर कोई पूछे कि इस किताब का इंतसाब (समर्पण) किसके नाम है तो तुम अपना नाम बता देना.

—कायनात'

(अगले अंक में सोलहवां अंश)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्वीकृतियाँ

●

सुभाष सिन्हा

●

रोते-रोते विनीता की आँख सूज आई थीं. जान पड़ता था, उसके आँसू समाप्त हो चुके हैं. बड़ी-बड़ी काली आँखें निस्तेज-सी लग थीं और बदन का जोड़-जोड़ दुख रहा था. आनन्द को चोरों की भागना था, सो रात उसने सारी कसर निकाल ली थी. झिंझोड़ कर दिया था. विनीता ने कोई बुरा न माना था. पर अब ! अब तो उसका चाह रहा था कि बस एक पल के लिए आनन्द उसके सामने आ कर मुँह न नोच कर रख दिया तो विनीता नाम नहीं. कितना प्यार दिया विनीता ने उसे, यह प्रतिकार मिला है उसका ! विनीता स्वप्न में भी सोच सकती थी कि वह इतना गिरा भी हो सकता है. कितनी ठेस थी उसके विश्वास को. ऊपर से कितना भोला था आनन्द, पर अन्दर उतना ही कपटी. अगर उसे जाना ही था तो क्या अधिकार था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

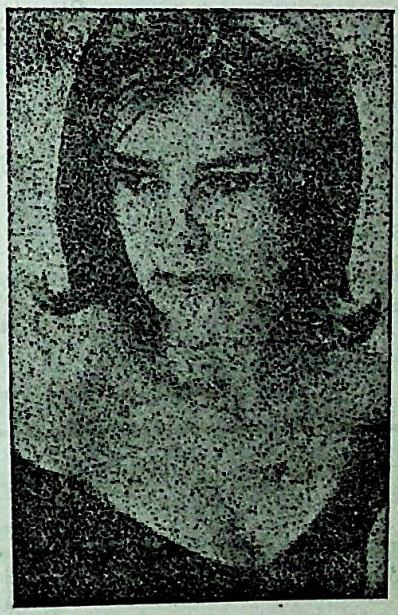

विनीता के जीवन से खेलने का. विनीता ने तो कभी पहल न की थी. हाँ, उसके बहकावे में आ जाने की भूल उसने ज़रूर की थी.

अजन्ता ने उसे और आनन्द को कई बार ऐसी-वैसी अवस्था में देखा था, सो उसने सच्ची सहेली के नाते उसे बार-बार सावधान भी किया, 'अरी पगली, कभी सोचा भी है कि इस खेल का अन्जाम क्या होगा ? मुझे पता नहीं था. विनीता कि आनन्द तुम्हारा पेन फ्रेंड से बॉडी फ्रेंड बन जायगा ? किस विश्वास पर तू उसे अपने जीवन से खेलने दे रही है. मेरी मान विनीता, उससे दूर रह. पता नहीं क्यों वह मुझे भाता नहीं है.'

परन्तु उस वक्त तो विनीता पर आनन्द के प्यार का नशा छाया हुआ था. वह तन मन से उसकी हो चुकी थी. अजन्ता की बात को भी उसने उसकी इर्ष्या माना था. सोचती ! इतने दिन प्यार न मिला मुझे तब तो कोई पूछने वाला भी न था, परन्तु अब प्यार करने वाला मिला तो जलने वाले भी आ टपके. अजन्ता ने भी देखा कि विनीता बुरा मानती है, तो उसने भी समझाना छोड़ दिया. अब विनीता सोच रही थी कि काश, उसने अजन्ता की बात पर ध्यान दिया होता तो आज इस दशा को नहीं पहुँचती आज उसे आनन्द से घृणा हो रही थी, अपने आप से भी घृणा हो रही थी. सबसे ज्यादा गुस्सा उसे भगवान पर आ रहा था. क्योंकि उसने ही यह काला रंग दिया था. यदि काला रंग दे ही दिया तो फिर इतनी बड़ी सज़ा क्यों दी उसने ? क्या एक वही थी इतना दुःख, इतना अत्याचार उठाने को इस धरती पर. अब कौन-सा मुह वह अपने माँ-बाप को दिखलाएगी. मौत के सिवा कहीं आश्रय नहीं मिलेगा. हाथ में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोन : ५३१७५

राजदूत जैसी
गरिमा और
आकर्षण वाले
फर्निचर
आपके लिए प्रस्तुत हैं

मेसर्स राजदूत फर्निचर

३५।८० जङ्गमबाड़ी, वाराणसी.

राबर्ट्सगंज में विक्रय केन्द्र

मोटर साइकिल

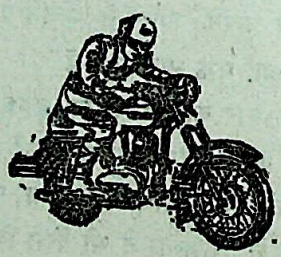

आपका शानदार दोस्त

धूल भरे रास्ते, चट्टानी, कंकरीले रास्ते, छोटे-मोटे सोते और नदियों वाले लम्बे रास्ते की लम्बी आरामदेह यात्रा के लिए मिलें

मेसर्स कलकत्ता आटोमोबाइल्स

मेन रोड, राबर्ट्सगंज (इलाहाबाद बैंक के पास) मीरजापुर.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए आनन्द के पत्र को विनीता ने गुस्से में टुकडे-टुकड़े कर डाला.

मिस्टर मैसी रेलवे के फोरमैन थे. वैसे उनकी तो ड्यूटी काठ गोदाम में हुआ करती थी, परन्तु परिवार नैनीताल में रहा करता था. परिवार के नाम पर सिर्फ़ दो पुत्रियां थीं. विनीता और सुनीता. पिछले ही वर्ष विनीता पंत नगर विश्वविद्यालय से होम साइन्स में ग्रेजुएट हो चुकी थी और सुनीता आजकल लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्रा थी. जाति के लोग क्रिश्चयन थे. आज से करीब दो वर्ष पूर्व आनन्द और विनीता की मुलाकात काश्मीर की हरी-भरी वादियों में अचानक हो गई थी. मुलाकात दोस्ती में और दोस्ती प्यार में बदली.

मिस्टर मैसी तो अच्छे भले गोरे-चिट्टे थे, परन्तु उनकी पत्नी का रंग विनीता को विरासत में मिला था. सुनीता भी सांवली ही थी. विनीता का जीवन सब के लिए और खुद स्वयं के लिए अभिशाप बन चुका था. नाकोनक्श तो ऐसा था कि आज के फ़ैशन के युग में शायद ही कहीं नज़र आता हो परन्तु रंग कुछ ज्यादा ही काला था विनीता का, उस पर छोटी चौड़ी नाक जिस पर चढ़ा हुआ ज्यादा पावर का चश्मा, भरा-भरा पुष्ट शरीर, अंग-अंग कसा हुआ और पोर-पोर में लहर मारता यौवन. स्नान करते वक्त बाथरूम में लगे दर्पण में जब वह अपने आप को निहारती तो ठगी-सी रह जाती. अपने आप पर मुग्ध हो उठती विनीता, परन्तु तुरन्त ही उसका ध्यान अपने रंग पर चला जाता और मुरझा उठती वह. उसका मन भर आता, उसके लिए ही ईश्वर इतना निर्दयी कैसे हो गया, नहीं समझ पाती वह.

उसकी मम्मी ने सोचा लड़की इतनी काली है, इसे और सभी गुणों से भर दूँ तब तो शादी करने में दिक़्क़त नहीं होगी. कुछ लोग ऐसे भी शरीफ़ होते हैं, जो रूप से ज्यादा गुणों को महत्व देते हैं. सिलाई, बुनाई में विनीता की बराबरी पूरे नैनीताल मुहल्ले में कोई न थी. खाना तो वह ऐसा बनाती कि खाने वाले हफ़्तों खाने का स्वाद न भूल पाते. आखिर थी तो वह होम साइन्स की छात्रा. स्वभाव से उसने सभी का मन जीत रखा थी. घर में आने वाले उसकी बड़ाई करते न थकते. डैडी-मम्मी खुश थे, चलो अब तो लड़की पार लग जायगी. पड़ोस में आशा मौसी का भान्जा आया था. डालमियाँ फैक्ट्री में किसी अच्छे पद पर था. देखने में अच्छा खासा जवान था वह. मिस्टर मैसी ने देखा तो बिनीता के लिए उन्हें लड़का बड़ा पसन्द आया. उन्होंने पत्नी को खुब समझा बुझा कर आशा मौसी के घर भेजा. आशा मौसी सब सुन कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बोली,'भाभी, विनीता तो मेरे घर की लड़की है. उसके गुणों की तो मैं कायल हूं जानती हो न, आजकल के लड़के लड़कियों के रंग-रूप पर ही मरते हैं. मेरा रन्जीत है तो सीधा-साधा, परन्तु मैं जानती हूं वह विनीता का रंग देख कर उसे पसन्द नहीं करेगा. मैं ज़ोर भी नहीं डाल सकती हूँ. दूसरे के लड़के पर मेरा डालना ठीक रहेगा ? मेरी मानो, उसके लिए कोई मामूली घर का, मामूली लड़का देखो. कोई भी अच्छे पद का लड़का ऐसी काली कलूटी लड़की को पत्नी नहीं चाहेगा. सभा सोसाइटी में किस मुह से साथ ले जायगा ?'

विनीता की माँ के सर तो घड़ों पानी पड़ गया. वे अपना-सा मुह ले कर चली आईं. आते ही बरस पड़ीं विनीता पर, 'कहाँ की तक़दीर ले कर यह लड़की हुई है. इसने माँ-बाप की, इज्ज़त मिट्टी में मिला दी. अब क्या मुह दिखाऊं मैं इस मुहल्ले में ! इस कलमुही के कारण पता नहीं और क्या-क्या सुनना पड़े.' विनीता बेचारी रोने के सिवा और कर भी क्या सकती थी. उस दिन उससे खाया भी न खाया गया. मिस्टर मैसी को कम ठेस न पहुँची थी, इस बात से. पर वे मर्द, अन्दर ही अन्दर इस दर्द को पी लिया उन्होंने. कुछ दिनों तक तो इस बात से दबे-बुझे से रहे वे, फिर उन्होंने कमर कस लिया बेटी का वर ढूढने को. बन जाते सभी बातें तय हो जातीं पर रंग का नाम आते ही सब बना-बनाया खेल बिगड़ जाता. फिर तो आये दिन की बात ही हो गयी यह. कई लोगों ने तो विनीता को देख कर भी नापसन्द कर दिया. कहते, गुण तो अपनी जगह पर है पर कुछ रंग-रूप भी होना चाहिए. जब बहू देखने लोग आयेंगे तो हम उन्हें क्या दिखलायेंगे. आजकल दुनिया में ऊपरी तड़क-भड़क ही सब से ज्यादा जरूरी है.

अन्त में मिस्टर मैसी ने हार मान ली और दौड़-धूप करना भी छोड़ दिया. हाँ, विनीता को माँ की जली-कटी बातें सुनने को अवश्य मिलतीं. कोई भी उससे सहानुभूति नहीं दिखलाता. बल्कि अब तो डैडी भी कटे-कटे रहने लगे.

विनीता नैनीताल की हरी-भरी वादियों में जा कर घण्टों अकेले बैठी रहा करती. गुम सुम. छिप-छिप कर रोया करती और दिन भर घर के कामों में व्यस्त रहती. से दिल टूट चुका था. किसी से भी प्रेम नहीं रह गया था उसे. दिल चाहता चली जाए, इस घर से, तोड़ दे सब से नाता. फिर सोचती, जाएगी कहाँ ? मौत तो अपने चाहे नहीं आती.

इन्हीं निराशा के क्षणों में एक दिन अचानक आनन्द आ पहुँचा. वह विनीता पेन फ्रेन्ड था. यहाँ घूमने के लिए आया हुआ था. बड़ा ही हँस-मुख नौजवान वह. आते ही सब का मन मोह लिया था उसने. विनीता तो मन ही मन उसे चाहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

करती थी. मां-बाप ने सोचा अच्छा रहेगा,अगर आनन्द ही विनीता का हाथ पकड़ ले. इन्हीं विचारों को मन में ले कर उसकी मां ने आनन्द और विनीता के बीच कोई परदा रखना ठीक नहीं समझा. पन्द्रह ही दिनों के लिए आया था वह, सो खूब आवाभगत हो रही थी. विनीता को तरह-तरह का खाना पकाना पड़ता और अपने हाथों ही परोस कर खिलाना पड़ता. वह बहुत ही चाव से करती थी यह सब. शुरू में दो-चार दिन तो आनन्द ने सबके साथ ही बैठ कर खाया, फिर बाद में वह खाना अपने ही कमरे में खाने लगा. मां विनीता को ताक़ीद करती रहीं, 'देख री, आनन्द को कोई तकलीफ़ न होने पाये.समय पर खाना नाश्ता दे आया कर और सामने बैठ कर खिलाया कर.' विनीता सारी बातें सुनती और उसका दिल एक अजीब खुशी से भर आता,परन्तु वह अच्छी प्रकार जानती थी कि मां के इतने स्वागत-सत्कार के पीछे क्या रहस्य छुपा हुआ है. कितना अच्छा लड़का है, एकदम अपना-सा हो गया है.

आनन्द के रहने के लिए एक कमरा ऊपर की मंज़िल में दिया गया था. मिस्टर मैसी तो अक्सर घर से बाहर रहते, परन्तु उनकी पत्नी हाई बल्ड प्रेशर के कारण ऊपर नहीं जा सकती थी. विनीता, आनन्द का खाना ले कर ऊपर जाती और आनन्द के खाने तक सामने कुर्सी पर बैठी रहती और उसकी ज़रूरतों को पूछती रहती. आनन्द खाता खाता और उसे चोर नज़रों से देखता भी जाता. उसने महसूस किया कि विनीता काफ़ी बुझी-बुझी-सी रहती है. इसके बाद वह हरदम टोह में रहने लगा और चार-पाँच दिन में ही उसकी सारी परिस्थिति उसके सामने आ गयी. मां किसी का ख्याल किए बिना जो जली-कटी विनीता को सुनाती रहतीं, वह सब आनन्द के कानों में भी जाने लगा. इसी अवसर का उसने खूब लाभ उठाया. विनीता से खूब मीठी-मीठी बातें करता वह. खाने के बहाने वह ज्यादा से ज्यादा उसे अपने पास बिठाये रखता. खाना परोसते समय विनीता की अंगुलियों से अपनी अंगुलियाँ टकरा देता फिर 'सारी' कह कर अंगुलियाँ हटा लेता. विनीता के सारे शरीर में एक झनझनाहट-सी होने लगती. धीरे-धीरे वे दोनों खूब खुलते गये आपस में. आनन्द कहता—विनीता, मां की बातों से तुम दुःखी रहती हो, पर उन्हें और खुद तुम्हें भी अनुमान नहीं कि तुम कितनी सुन्दर हो. काश ! कोई तुम्हें मेरी निगाहों से देख पाता..... इन बातों को सुन कर विनीता के दिल में गुदगुदी-सी होने लगती. उसका मन झूम उठता पर मां को सामने देखते ही वह अधमरी-सी हो जाती.

मिस्टर मैसी को तो दफ़्तर से फुर्सत नहीं मिलती थी, इसलिए प्रत्येक शनिवार को वे काठ गोदाम से नैनीताल आ जाते थे और रविवार बिता कर फिर अगले दिन वे अपने ड्यूटी पर चले जाते थे. मां अपने ब्लड प्रेशर से ही काफ़ी परेशान थीं. रोगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शरीर लिये अलग पड़ी रहतीं. दिन का काफ़ी समय उनका सोते ही बीतता था. में विनीता और आनन्द बिल्कुल स्वतंत्र रहते और घण्टों गप-शप किया करते. जिस खाना ले कर आनन्द के कमरे में पहुँचती तो वह झपट कर खाने की थाल टेबुल रख देता और उसे अपनी बाँहों में भर लेता, उसके कानों में मीठी-मीठी उड़ेलने लगता.

आत्म विभोर हो उठती विनीता ! इतना प्यार किसने दिया था उसे ! उसका चाहता, ये प्यार की घड़ियाँ खूब-खूब लम्बी हो जायें. इन्हीं प्यार के मधुर एक दिन विनीता ने अपने आप को समर्पित कर दिया. उसकी इस कमज़ोरी का आनन्द रोज़ उठाने लगा. विनीता इसे पाप नहीं समझती थी, क्योंकि मन ही उसने आनन्द को अपना पति मान लिया था. आनन्द ने उसे विश्वास दिलाया था वह अपने घर हाजीपुर लौटने के पहले ही उसके माता-पिता से मांग लेगा. वह बहकावे में पूरी तरह आ चुकी थी. प्यार की भूखी विनीता, आनन्द के इस झूठे को पा कर अपना तन और मन भी दे बैठी थी.

धीरे-धीरे आनन्द के जाने का दिन भी आ पहुँचा. उसके जाने के एक दिन दोपहर में खाना ले कर विनीता उसके कमरे में पहुँची, आज वह पूरी तैयारी से थी. विनीता को जैसे ही आनन्द ने अपनी बाँहों में भरना चाहा, वह उसे झटक अलग हो गयी और बोली, 'आनन्द, मैं अब और इन्तज़ार नहीं कर सकती. रोज ही वादा करते हो पिता जी से बात करने का पर अब तक तुमने कोई बात छेड़ी. कल तुम चले जाओगे तो मेरा क्या होगा ? अगर, तुमने मुझे धोखा दिया तो कहीं की भी नहीं रहूँगी. तुम्हारे आने से मेरे जीवन में जो हरियाली आई है मुरझाने मत देना, मेरे देवता.' इतना कहते-कहते विनीता रो पड़ी. आनन्द कोई खिलाड़ी तो था नहीं, झट उसे अपनी बाँहों में ले लिया और हँस कर बोला, 'रोती है मेरे होते हुए ! कौन कहता है कि तुम मेरी पत्नी नहीं हो. हम दोनों ने तो दूसरे को पति-पत्नी मान ही लिया है. अब रही विवाह की बात, तो वह भी कल ही मैं तय कर लूँगा, तुम्हारे पिता जी से. मुझे पूरा विश्वास है कि वे इन्कार करेंगे.' इतना सुन कर ही भोली विनीता के मन का मैल धुल गया.

शनिवार का दिन था. विनीता के पिता जी आज घर पर ही थे. आज बड़ा ही विचित्र था. नैनीताल की वर्फीली हवाओं ने जिस्म के रोम-रोम में सिहरन भर दी थी. वर्फ की वारिश हो रही थी. हवा काफ़ी ज़ोरों से चल रही थी.

माता-पिता के सोने पर काफ़ी रात ढले विनीता आनन्द के कमरे में पहुँची आनन्द उसी के इन्तज़ार में बैठा था. बोला, 'कितना इन्तज़ार करवाया तुमने विनीता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पता नहीं, कब मिलें हम. शादी के पहले तो नहीं ही मिलेंगे न ?आओ आज जी भर कर बातें कर लें.' रात भर आनन्द विनीता को नहीं छोड़ा. सुबह मुँह अंधेरे वह नीचे जाने लगा. तब तक आनन्द ने अच्छी तरह विश्वास दिला दिया था कि सुबह जाने से पहले पिता जी से वह अवश्य ही बात कर लेगा. खुशी से विनीता का मन झूम उठा था और वह अपने कमरे में जाते ही सो गयी थी. मां के चीखने-चिल्लाने से उसकी नींद खुली तो उसने देखा कि काफ़ी दिन निकल आया है. रात का तूफान थम चुका है. सूर्य देव अपने रथ पर चढ़ कर हल्की-हल्की लाली नैनीताल की वादियों में बिखेर रहे हैं. झटपट वह नित्य क्रिया से निवृत्त हो कर नाश्ते के तैयारी में जुट गई. नाश्ता ले कर आनन्द के कमरे में जाते ही उसके पाँव तले से जमीन खिसक गई. आँखों के सामने अन्धेरा छा गया. कमरा खाली था, आनन्द जा चुका था. टेबुल पर हवा से हो रही काग़ज़ की पड़पड़ाहट ने विनीता का ध्यान उधर आकर्षित किया. उसने झपट कर उसे उठा लिया, आनन्द का पत्र था, लिखा था—

मैं जा रहा हूं. मुझे न देख कर तुम निराश अवश्य होओगी, पर इसके लिए मैं किसी प्रकार का ज़िम्मेदार नहीं हूँ. तुम एक पढ़ी-लिखी लड़की हो कर इस प्रकार अपना सब कुछ एक पेन फ्रेंड को सौंप दोगी, इस पर शायद ही कोई विश्वास करे. तुमने जो भूल की है, उसका दण्ड भोगने की शक्ति भी तुम में अवश्य होगी. मैं ही क्या, शायद ही कोई लड़का तुम जैसी लड़की से विवाह करने को तैयार होगा. तुम्हारी खुशी के लिए दो-चार दिन और रुकता पर अपनी पत्नी सुधा और बेटे राहुल से ज्यादा दिन अलग नहीं रह सकता हूँ. मेरी पत्नी मायके चली गयी थी. इसलिए मैं नैनीताल अपनी सेहत बनाने आ गया था. अच्छा तो अब विदा दो.

पुनश्चः—जब तक तुम्हें यह पत्र मिलेगा, मैं दूर, बहुत दूर निकल जाऊँगा.

विदा. अलविदा, तुम्हारा—

आनन्द ■

—न्यू एरिया, बेलदारी टोला, महावीर स्थान, गया

ईमानदारी का सबूत

एक छोटी उम्र के लड़के को चोरी करते हुए पकड़ कर अध्यापक ने सलाह दिया, देखो ईमानदार बनोगे तो एक न एक दिन तुम जार्ज वाशिंगटन की तरह ईमानदार और महान बन जाओगे.

—यह ग़लत है. यदि जार्ज वाशिंगटन ईमानदार थे तो फिर उनके जन्म दिन पर सारे बैंक क्यों बन्द हो जाते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिणति

राकेश श्रीवास्तव

जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए जब वह पार्क के समीप पहुँचा शाम गाढ़ी हो चुकी थी. ठीक ही तो है. यह घिरता हुआ अंधेरापन, करने में भी सुविधा रहेगी और पहचाने जाने का डर भी नहीं रहेगा सोचते हुए जब वह पार्क में प्रविष्ट हुआ तो भीड़ छटने लगी थी. परन्तु तो कहीं भी नज़र नहीं आई. आज पहला वादा था और वह भी नहीं निभाया. यह लड़कियाँ भी बस ऐसी ही होती हैं. पहले तो मीठी-बातें करती हैं और बाद में इसी तरह धोखा दे जाती हैं. हुँह, वही फिकर करता है इनकी, नहीं आई, न आने दो. परन्तु उन सब बातों क्या होगा जो वह सोच कर आया था कहने के लिए या जो उसने मित्रों से सुन रखी थीं या कहीं पढ़ रखी थीं ऐसे अवसरों पर कहने लिए. ठीक है, कुछ देर तक रुक कर प्रतिक्षा करने में ही क्या नुकसान हो सकता है अभी आ रही हो. तीन ही चार दिन पहले की तो बात जब उसकी अपनी बहन शोभा की साल गिरह थी. उत्सव में शोभा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सहेलियाँ भी आयी थीं और उन्हीं में से एक बुरी तरह से गड़ गयी थी, उसकी आँखों में. कितनी शरमायी थी वह, जब शोभा ने उससे परिचय कराया था—यह मेरी सहेली....है इस समय जितना शरमा रही है न, क्लास में उतना ही अधिक चहचहाती रहती है, उसने नाम पर ध्यान नहीं दिया था. उसने यह भी ध्यान नहीं दिया था कि स्वयं उसके बारे में शोभा ने क्या परिचय दिया था. उसे सिर्फ़ इतना ध्यान रहा था कि उसके दोनों हाथ जुड़ गए थे 'नमस्ते' और प्रत्युत्तर में लड़की ने मुस्करा दिया था. कैसा-कैसा पसीने-पसीने हो गया था वह, उस मुस्कराहट से. जाते समय धड़कते हृदय से उसने फुसफुसा कर उसके कान में कहा था—सोमवार की शाम को....वाले पार्क में मिलिएगा ? लड़की की आँखों में विस्मय के डोरे खिंच आये थे, इस प्रश्न से और हल्की-सी स्मित उसके ओठों पर बिखर गया था और इस मूक स्मित को ही उसने उसकी स्वीकृति समझ लिया था.

हो सकता है एक छोटी-सी मुलाकात को उसने कोई महत्व न दिया हो. हम लड़के लोग भी कितनी जल्दी ग़लतफ़हमी के शिकार हो जाते हैं. उसने सिर्फ़ मुस्कराया ही तो था. कोई आने के लिए हामी थोड़ी भरी थी. हो सकता है, मेरी मूर्खता पर ही मुस्कराई हो. उसे रह-रह कर झुंझलाहट हो रही थी अपने ऊपर. इसी झुंझलाहट में उसे पता भी नहीं चला, कब वह उसके बगल में आ कर खड़ी हो गयी.

'नमस्ते'

'अय....नमस्ते.' वह एकदम से हड़बड़ा गया, 'मैं तो समझा था आप शायद अब नहीं आयेंगी.'

'जी मैं तो भूल ही गई थी. अचानक ध्यान आया तो बाजार जाने का बहाना बना कर किसी तरह आ पाई हूँ.'

'खैर आप आ गईं, यही क्या कम है.'

'मैं तो स्वयं आने के लिए परेशान थी, भूलने वाली बात तो झूठ-मूठ गढ़ दी है.'

उसने अपने चेहरे पर मुस्कराहट पोतने का यत्न करते हुए कहा, 'शोभा आपकी बहुत तारीफ़ करती रहती है.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कैसी तारीफ़ ?'

'यूँ ही.' उसे समझ नहीं आया, वह क्या कहे.

दोनों चुप हो गये.

'आपने कुछ कहा ?' लड़के ने पूछा.

'नहीं तो.'

'इसबार ठंड कुछ अधिक पड़ रही है.' असह्य हो गई चुप्पी को तोड़ते हुए लड़के ने

'नहीं तो, पिछले साल तो इन दिनों बग़ैर कोट पहने घर से बाहर निकला जाता था.'

दोनों फिर चुप हो गये. लड़के ने नये सिरे से वह सब कुछ सोच डाला जो आज कहने के लिए याद कर आया था. पर उसे लगा वह कुछ भी नहीं कह पा उसमें इतना साहस नहीं है.

'तो मैं अब जाऊँ, माँ इन्तज़ार कर रही होंगी ?' काफ़ी देर से व्याप्त शान्ति तोड़ने का यत्न करते हुए लड़की ने पूछा.

'जी हाँ जाइये, नहीं तो देर हो जायेगी.' उसने जल्दी से 'हाँ' तो कह दिया पर अब महसूस किया कि उसने 'हाँ' कह कर ग़लती कर दी है. यदि पहले दिन भीरु बन कर कुछ न कह पाया तो कभी भी कुछ न कह पायेगा, 'सुनिये, सामने वाले रेस्ट्राँ में बैठ कर एक कप कॉफी पी लेते हैं, यदि आपको एतराज न छोड़े हुये तीर को वापस लाने का यत्न करते हुए उसने कहा.

लड़की ने प्रस्ताव को सहज ही मान लिया. रेस्ट्राँ में जब उसके पैर फैमली की तरफ बढ़ने लगे तो उसने चोर निगाहों से चारों ओर ताक लिया कि कहीं कोई तो नहीं रहा है.

'क्या लेंगी आप ?'

'जी सिर्फ़ कॉफ़ी.' सिर झुकाये लड़की ने कहा.

वेटर को दो कॉफ़ी का आर्डर देने के पश्चात उसने सोचा इससे अधिक एकान्त अन्यत्र सुलभ नहीं होगा. अतः एक बार साहस करके सब कुछ कह देना ही उचित है.

'मैं तुम से एक बात कहना चाहता हूँ.' 'आप' से वह 'तुम' पर कैसे आ गया, स्वयं आश्चर्य हुआ.

'जी कहिए.' पहले की भाँति सिर झुकाये लड़की ने कहा

'मैं....मैं...' उसे लगा शब्द उसके गले में कहीं अटक गये हैं.

'हां, हां कहिए न जो कहना चाहते हैं.' अब की बार लड़की के चेहरे पर रहस्यमयी मुस्कान उतर आयी, जैसे वह जानती रही हो कि वह क्या कहना चाहता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'राजेश खन्ना बीच में डाउन ज़रूर हो गया था पर इधर उसकी कुछ अच्छी फ़िल्में आ रही हैं.'

'हूँ, यही बात कहने के लिए आप इतना परेशान थे ?'

लड़की की बात सुन कर वह बहुत झेंप गया. शीघ्रता से कॉफ़ी समाप्त करके जब वह रेस्ट्रा के बाहर निकला तो उसे लगा वह तो निरा बुद्धू है, बिल्कुल भी साहस नहीं है उसमें. न जाने लड़की ने क्या सोचा हो. अब वह कह देगा, नहीं तो फिर कभी भी नहीं कह पायेगा.

'आइए आपको पार्क में से होते हुए उस पार छोड़ दूँ.' लड़के ने कहा.

दोनों साथ-साथ चलने लगे. लड़के की इच्छा हुई, वह उसके साथ सारी उम्र इसी तरह चलता रहे और पार्क का दूसरा छोर कभी न आये. लड़की उसके पास सिमट आई थी और उसने जो सेन्ट लगा रक्खा था, उसकी तीखी गन्ध लड़के को परेशान किए दे रही थी.

'देखिये शोभा से कुछ मत कहिएगा, इस बारे में.' साथ-साथ चलती हुए लड़की ने कहा.

'जी नहीं, कहते हुए लड़के ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया. पार्क में अंधेरा हो जाने के कारण अब वह कुछ अधिक सुविधा महसूस कर रहा था. लड़की ने कोई भी प्रतिरोध नहीं किया. लड़के की पकड़ और भी कड़ी हो गयी. न जाने उसको क्या सूझा उसने एकाएक उसको ज़ोरों से आलिंगनबद्ध कर लिया. फिर उसके ओठों और कपालों को चूम कर उसने अस्फुट स्वर में कह दिया 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' और उसे लगा अब वह हल्का हो गया है.

परन्तु इस सारे आवेग में ऐसा तो कुछ भी असाधारण नहीं था जिसको पाने के लिए वह इतने दिनों से लालायित था. छिः वह भी कैसा नादान है जो एक क्षणिक सुख के लिए इतना परेशान था. लड़की को एक बार तो मना करना चाहिए था और उसके मुंह से भी तो पता नहीं कैसी बदबू आ रही थी. उसे अपने मुंह का स्वाद खराब होता हुआ सा लगा और मुंह में ढेर सा थूक भर आया.

'अच्छा तो अब जाऊँ ?' पार्क के उस पार पहुँचे बगैर ही किंचित शरारत भरी मुस्कान के साथ लड़की ने पूछा.

'हां' मुंह में भर आए थूक को पिच्च से नीचे गिराते हुए उसे लगा, इस बार हां कह कर उसने गलती नहीं की है■■

४९, पटेल नगर, लखनऊ–५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दृष्टि स्याह
कृष्ण चंदर

(सत्रहवीं व्यंग्य रचना)

साम्यवाद का जन्म चाहे जब भी, जहाँ भी और जैसे भी हुआ हो, पूरनमल जी को साम्यवाद के प्रति पैदायशी आस्था पैदा हो गयी है. उनके कथन साम्यवाद का सीधा संबंध उनके नाम से है. सभी पूरनमल हो जांय, यानी कि पू हो जांय तो साम्यवाद बस आया ही समझो. इस दुनिया के हर देश में वह एक दि जायगा, इस कल्पना मात्र से उनकी बांछें खिल जाती हैं. साम्यवाद आयेगा, इस ख वे मगन हैं, दीवाने हैं. मैंने एक रोज पूछा—पूरनमल जी ! साम्यवाद के आने की से आखिर आप इतना प्रफुल्ल बदन क्यों कर होते हैं, उसमें कोई आपकी ही भला होगी नहीं ?

वे बोले—न हो मेरी भलाई, औरों की भलाई तो होगी. दूसरे खुश रहें साम्यवाद आयेगा तो हर देश का नक्शा ही बदल जायेगा.बस उसके आने भर की दे

मुझे पूरनमल जी की खुशी शैलेन्द्र के उस गीत की याद दिलाती है—'देखा मैं अब्दुल्ला दीवाना.' वैसे पूरनमल जी को कोई यही बात कह दे तो वे अन्तरात्मा दुखी हो जाते हैं और उनके दुख को दूर करने के लिए ऐसा कहने वालों को अन्त तक प्रायश्चित करना पड़ता है. एक बार मुझे भी अन्तरात्मा तक प्रायश्चित क पड़ा था तब जा कर पूरनमल जी की आत्मा का दुख दूर हुआ था.

साम्यवाद के आने की प्रतीक्षा में पूरनमल जी की आंखों की ज्योति काफी हो गयी है.आंखों पर मोटे पावर वाला पावरफुल चश्मा लग चुका है.पर वे अपनी से बाज नहीं आ रहे हैं. उनके दोस्तों, उनके खैरख्वाहों ने लाख समझाया कि अब साम्यवाद की प्रतीक्षा करना छोड़ दें वर्ना आपकी सेहत पर बुरा असर पड़ेगा,पर वे एक की भी न मानी.आंख के डाक्टरों ने बार-बार समझाया और भविष्य में साम्यवाद आने की प्रतीक्षा करने से परहेज करने की सलाह भी दी,पर पूरनमल जी अपनी से लाचार साम्यवाद की प्रतीक्षा करते ही रहते हैं. प्रतीक्षा करना जैसे उनके भाग्य विधाता ने लिख दिया है. साम्यवाद के आने या उसे लाने की खबर प्रफुल्लित हो जाते और न आने की बात से उनकी मन कलिका कुम्हला जाती और फिर इन्तज़ार का चक्कर शुरू हो जाता. वैसे वे खुद भी अपने इस चक्कर से हो चुके हैं और साम्यवाद का वर्षों से इन्तज़ार करते-करते वे थक भी गये हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साम्यवाद की प्रतीक्षा

कमल गुप्त

उनकी शक्ल काफ़ी रोनी हो गयी है. उन्हें देख कर मुझे क्या किसी को भी रोना सकता है. एक दिन सुबह-सुबह मैं पूरनमल जी के घर पर हाज़िर हुआ और उनके में हिस्सेदार होने की गरज से बोला—आखिर आप इस तरह दुखी होंगे तो हम के दिल पर क्या गुज़रेगी, कभी आपने यह भी सोचा है ?

वे बोले—साम्यवाद नहीं आयेगा तो मैं कुतुबमीनार से छलांग लगा जाऊँगा.

साम्यवाद को देखने के लिए वे उसी तरह बेताब और बेचैन हो रहे हैं जिस तरह माताएं बहू देखने के लिए बेचैन रहती हैं. इस मुकाम पर उनका साम्यवाद, यवाद न रह कर कोई नई नवेली बहू बन जाती है—लजाधुर, शर्मीली, छुई मुई हन-सी. दुलहन की बात पर मुझे पूरनमल जी के वे दिन याद आते हैं जब वे जवान और अपनी आज की ही आंखों को इस्तेमाल उन्होंने अपनी माशूका की इन्तज़ारी के किया था. पड़ोस में उन्होंने एक मृगनयनी से इश्क फ़रमाया था और उसने इनके को कूबूल फ़रमाया था. बात दो कौम के बीच थी—एक ऊँची और दूसरी ची. पूरनमल जी नीची ज़मीन पर खड़े थे और उनकी मशूका ऊँची ज़मीन पर खड़ी पूरनमल जी नीची ज़मीन पर खड़े-खड़े आंखें बिछाये ही रहे पर उनकी माशूका र ही ऊपर छलांग लगा गई और किसी और के साथ उड़ गई, नीचे इनके पास र कर आई ही नहीं. पूरनमल जी अपनी आंखें बिछाये उसके आने का इन्तज़ार ते रहे. पर वह जो नहीं आई सो नहीं आई. पूरनमल जी को घोर निराशा हुई. होंने इश्क में धोखा खाया था. यह ग़म उन्हें भीतर ही भीतर खोखला कर रहा था. उन्हें लाख समझाया कि वे अपनी माशूका को भूल जाँय, पर वे भला क्यों भूलने वे आंखें बिछाते-बिछाते आंख बिछाने के अभ्यासी और आदी हो गये थे. जिस वे आंख न बिछाते, वे दिन भर छटपटाते रहते. उनका ग़म गहरे उतरता जा रहा आखिरकार उन्होंने अपना ग़म ग़लत करने का एक रास्ता अपना लिया और उसी से साम्यवाद की प्रतीक्षा करने लगे.ऐसा करने से उन्हें दो क़िस्म का फ़ायदा हुआ. यदा नम्बर एक तो यह कि उनका ग़म ग़लत होने लगा और फ़ायदा नम्बर दो यह कि आंख बिछाने की आदत के अनुसार आंख बिछाने का एक उम्दा बहाना मिल गया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अब तो हालत यह थी कि जब उन्हें कोई काम नज़र न आता, वे साम्यवाद की में आंख बिछा देते. कोई टोकता तो वे ज़ोर से चीखते हुए प्रतिवाद करते—जाओ अपना काम करो. तुम क्या जानों साम्यवाद क्या होता है और उसके लिए बिछाना क्या होता है ? बड़े आए हमें साम्यवाद पढ़ाने.

शुरू-शुरू में जब उन्होंने साम्यवाद की प्रतीक्षा करनी शुरू की तो लोगों ने जीना मुहाल कर दिया. कुछ नौजवान लड़के उन्हें पूरनमल जी के स्थान पर पू और पूराना मल कह कर चिढ़ाया करते. कुछ ऐसे पड़ोसी थे जो यह समझते कि मल जी अपनी उसी दग़ाबाज़ माशूका की प्रतीक्षा कर रहे हैं. आते-जाते लोग सलाह देने लगें—पूरनमल जी, इस उमर में छोकरी का चक्कर छोड़ कर भजन में मन लगायें तो जनम स्वारथ हो जायेगा.

पूरनमल जी भड़क जाते—अपना रास्ता नापो जी. तुम्हें क्या पता कि मैं कि प्रतीक्षा कर रहा हूँ.

—जरा मैं भी तो सुनूं कि यह प्रतीक्षा किसके लिए है ?

—मैं साम्यवाद के आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ. चलो घिसको.

एक दिन पड़ोसी का लड़का ठठा कर हँस पड़ा—आपके प्रतीक्षा करने से नहीं आयेगा श्री मान पूरनमल जी. साम्यवाद लाना है तो आओ मेरे साथ और यह फौलादी हथियार. साम्यवाद इसके इस्तेमाल से आयेगा वर्ना तुम क्या तुम करोड़ों आदमजात भी यूहीं प्रतीक्षा करते-करते बुढ़ा जायेंगे और साम्यवाद नहीं

लड़के के हाथ में भरी हुई रिवाल्वर देख कर पूरनमल जी मलिन हो उठे रोंगटे खड़े हो गये, लेकिन आदत से मजबूर वे पुनः साम्यवाद की प्रतीक्षा में

पूरनमल जी साम्यवाद की प्रतीक्षा में अहर्निश व्यस्त रहने लगे. नौकरी पर वक्त, नौकरी से वापस घर लौटते वक्त, आफिस में काम करते वक्त, जागरण में निद्रा में भी वे साम्यवाद की प्रतीक्षा करते हुए देखे जाते थे. उनकी मुद्रा देखने हो गयी थी. बढ़ी हुई दाढ़ी और मूछों के ऊपर कोटर में धँसी हुई उनकी दोनों कार प्रतीक्षारत आखें गुफा में बैठे जोंगी की सधुक्कड़ी आंखों की तरह लगतीं गात विरह वियोगिनी नारी की निर्व्यस और निर्निमेष आंखों की तरह विधवा-सी पड़तीं. उन आंखों को देख कर किसी की भी आंखों में प्रतीक्षा की तीव्र व्यथा का पैदा हो सकता है.

एक रोज़ पूरनमल जी को ऐसे ही हाल में देख कर मैंने पूछा—भाई पूरनमल क्या इस तरह साम्यवाद की प्रतीक्षा करते-करते आपकी तबीयत नहीं घबड़ाती ? तो वे चुप रहे मगर जब मैंने फिर कुरेदा तो बड़ी संजीदगी से अपने दिल की गांठें खोलते हुए वे बोले—आपसे क्या छिपाना. दरअसल मैं उस छोकरी के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में काफ़ी बदनाम हो गया था. मैंने अपनी बदनामी धोने की लाख कोशिश की, पर चन्द्रमा के दाग़ की तरह वह कभी छुटती ही न थी. मैं काफ़ी परेशान था, इस बात को ले कर. किसी तरह भी मैं बड़ा आदमी बनना चाहता था. चाहता था कि लोग मेरी चर्चा करें और मुझे बड़ा आदमी समझें. काफ़ी सोच-विचार के बाद मैंने यही फ़ैसला किया कि यदि मैं उस छोकरी की प्रतीक्षा करने के बदले साम्यवाद की प्रतीक्षा करने लगूँ तो लोग मुझे युगदृष्टा मानने लगेंगे कि यह कोई बड़ा मसीहा है, संत है जो साम्यवाद की चिन्ता में चिन्तालीन है. बस यही सोच कर मैं साम्यवाद की प्रतीक्षा करने लगा. लेकिन इसके बाद भी जब लोग मुझे पूर्ण मल और पुराना मल कह कर पुकारते हैं तो मेरी आत्मा भीतर तक आद्योपांत पीड़ित हो उठती है.

मुझे पूरनमल जी से हार्दिक सहानुभूति हो उठी, यह सोच कर कि कोई आदमी बड़ा होना चाहता है, साम्यवाद लाना चाहता है और लोग हैं कि उसे मल में घसीट रहे हैं. वाकई कितना खराब जमाना आ गया है. मैंने एक दिन एकांत में आ कर उन्हें सुझाया—

—आप मेरी बात मानें और साम्यवाद की प्रतीक्षा करना छोड़ दें. आप यह कोई नया काम नहीं कर रहे हैं. दुनिया के बहुत से प्राणी साम्यवाद की प्रतीक्षा में व्याकुल हैं अत्यन्त पीड़ित हैं. आपको वहम हो गया है कि आप कोई नया काम कर रहे हैं. दरअसल यह अब एक पुराना काम हो गया है, इसलिए भी लोग आपको पुरानामल कह कर चिढ़ाते हैं. आप इसकी जगह कोई नया चिंतन शुरू करें तो ज्यादा बेहतर होगा.

पूरनमल जी चिंतित हो उठे और बोले—कुछ आप ही सुझाएँ.

अब मेरे चिंतित होने की बारी थी. मैं नहीं समझता था कि पूरनमल जी मेरी बात से प्रभावित हो कर, साम्यवाद का गला छोड़ कर, मेरा गला और गली पकड़ लेंगे. मैंने पिण्ड छुड़ाते हुए उनसे कहा—सोचूँगा तो बताऊँगा. इस बीच आप चाहें तो साम्यवाद के प्रतीक्षा का अपना पुराना कार्यक्रम जारी रख सकते हैं.

उस दिन के बाद से मैं आज तक पूरनमल जी से आँख बचाए फिर रहा हूँ. वे मेरे पीछे पड़े हैं और मैं पीछा छुड़ाने के पीछे पड़ा हूँ. दोनों अपनी-अपनी जगह पड़े हुए हैं. पर इतना ज़रूर है कि वे आज भी दुनिया के लाखों करोड़ों लोगों की तरह साम्यवाद की प्रतीक्षा में आँखें बिछाए हुए कहीं किसी कोने में ज़रूर पड़े होंगे. यह भी हो सकता है कि इस उम्र में वे किसी प्रौढ़ा से इश्क़ फ़रमा कर उसकी इंतज़ारी में आँखें बिछाये कहीं कोने में पड़े हों. वे परम रसालिया हैं, इसलिए इसकी सौ फीसदी गुंजाइश है. पर इसकी भी कम गुंजाइश नहीं कि किसी रोज़ वे मुझसे मिलें और परम रसालिया महाकवि केशव दास का हवाला देते हुए और फूट-फूट कर रोते हुए मुझसे कहें कि केशव दास की ही तरह मेरी चन्द्रबदन मृग लोचनी भी मुझे बाबा कहि-कहि चली गयी.■■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पृष्ठ ७ का शेष)

कि उन्होंने तुरन्त प्रस्ताव रखा कि ऐसे नीच प्राणियों को यहाँ तक लाद कर ले भी क्या आवश्यकता ? यदि गुरुजन आज्ञा दें तो जहाँ भी ऐसे पतित मिलें, हम उनकी आँखें बाहर निकाल दें और सीना चीर कर लहू पी जाँय.

पर एक बन्दर जिसे कुछ दिन एक मनोवैज्ञानिक ने पाल रखा था, बीच में कूद पड़ा—अरे मूर्खों, ऐसा कभी न करना. जब तक कृत्य का परिणाम से सम्बन्ध जुड़ेगा, आदमी समझ ही नहीं पायेंगे कि आखिर किसी जानवर ने उन्हें क्यों मारा तो समझने लगेंगे कि कोई वन्य जन्तु आदमखोर हो गया है. बन्दर की विद्वत्ता जानवर पहले से ही क़ायल थे, इस कारण बिना किसी प्रतिवाद के सबने उसकी मान ली और यह भी स्वीकृत हो गया कि दण्ड देने के पहले अपराध का बतलाना नहीं, बल्कि आदमी को अपनी सफ़ाई देने का अवसर भी देना आवश्यक है, जिससे ऐसे मनुष्य का बध न हो जाय जो वन्यजीव प्रेमी हो.

जैसा कि प्रत्यक्ष है, आदमी की खुफ़ियागीरी करना और उसको पकड़ कर सब जानवरों के बूते का नहीं. इस कारण जानवरों के प्रति आदमी के विचार करने का कार्य, लोमड़ी, कौआ, बन्दर आदि को सौंपा गया और आदमी को ले आने का कार्य भेड़िया, चीता आदि तेज़ जानवरों को दिया गया.

■

उस रात जब वह लोमड़ी सेठ जी के सिरहाने खड़ी थी तो सेठ जी वहाँ अरबपति बनने का स्वप्न देख रहे थे और खाल निकलवाने में एक मजदूर से कहा-सुनी हो रही थी. सेठ जी चिल्ला रहे थे—खाल निलवाना बन्द कर दूँगा तो किसका करूँगा ?

खाल निकलवाने का धन्धा—लोमड़ी मन ही मन बुदबुदाई और उसकी फैल गई. वह एकाएक मुड़ी और कूद कर भागी, सेठ के इस कुत्सित विचार की साथियों को देने.

देखते ही देखते तीन चार भेड़िये व चीते सेठ जी के घर आ धमके और पलंग समेत उठा कर कुछ ही देर में जानवरों की इजलास में पटक दिया. झटके से जी की नींद टूट गई. पर जब उन्होंने अपने चारों ओर दृष्टि घुमाई तो एक चीख मार कर मूर्छित हो गये.

कुछ देर में जब सेठ जी को फिर होश आया तो वह थर-थर काँपने और रोने गिड़गिड़ाने लगे. जानवरों ने सेठ जी को सारी बात बड़े स्पष्ट रूप से बता दी और बता दिया कि अब रोने से काम नहीं चलेगा. केवल वह अपनी सफ़ाई में कुछ चाहें तो कह सकते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात जानवरों ने बन्दर के सुझाव पर बूढ़े भालू से अनुरोध किया कि वह सेठ जी की सारी बात अपना दाहिना हाथ उठा कर सुने और उस पर निर्णय दे ! यदि निर्णय विपरीत होता है तो भालू अपना हाथ नीचे गिरा लेगा और उसी समय अगल-बगल खड़े तेज़ तर्रार चीते और शेर सेठ जी को झपट लेंगे. पर निर्णय यदि सेठ जी के पक्ष में होगा तो जब तक सेठ जी सभा से सुरक्षित नहीं चले जायेंगे, भालू अपना हाथ उठाये रहेगा.

शेर और चीतों ने अपनी जगह ले ली. भालू भी सामने दाहिना हाथ उठा कर खड़ा हो गया. सभा में सब चुप हो गये और सब की निगाहें थर-थर काँप रहे सेठ की तरफ घूम गईं. सेठ जी रो-रो कर विनती करने लगे—आप लोग मुझे माफ़ कर दें. मैं अपने बच्चे की क़सम खा कर कहता हूँ, मैंने आप लोगों का अहित कभी नहीं सोचा. आप स्वयं बुद्धि लगा कर देखें, आप सब की संख्या दिनों-दिन इतनी कम होती जा रही है कि आपकी खाल पर कोई प्रामिजिग बिज़नेस खड़ा ही नहीं किया जा सकता. आप सच जानिये, मैं तो सोच रहा था कि आपके ऐसी सुन्दर खाल यदि आदमियों के हो तो उसका अच्छा व्यापार हो सकता था ? हर वर्ष हमारे ही मुल्क में करीब अस्सी लाख खालें निकल आतीं जो इस समय मिट्टी हो जाती हैं. यदि हमारे वैज्ञानिक आदमी के जिस्म पर किसी प्रकार फर उगा सकते तो कितने हित की बात होती. पर आप विश्वास मानें, मैंने तनिक भी जानवरों के विषय में न सोचा, न कुछ कहा. मैं सबका पैर एक तरफ़ से पकड़ सकता हूं. आप सब मेरे प्राणों को चना दान दें.

सेठ गिड़गिड़ा कर चुप हो गया तो सारे जानवरों की निगाहें भालू की तरफ घूमी जिसे सेठ के अकाट्य तर्क का उत्तर देना था.

भालू के माथे पर सिलवटें पड़ने लगीं और उसकी आँखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं. वह कुछ चाड़ चुप रहा फिर धीरे-धीरे बोला—तर्क बुद्धि से निकलते हैं, आत्मा से नहीं. मनुष्य को बुद्धि प्राप्त है, उसी का प्रयोग इसने अपनी सफ़ाई में किया है क्यों कि आदमी की अदालत में बुद्धि से ही निर्णय लिया जाता है. परन्तु हम पशु हैं. हमारी आत्मा जो कहती है, हम वह मानते हैं. मेरी आत्मा कह रही है कि जो अपने भाइयों की भलाई नहीं सोच सकता, वह कभी हमारी भी भलाई नहीं कर सकता.

कहते-कहते भालू अपना दहिना हाथ नीचे गिराने लगा. लेकिन तभी सेठ बड़ी जोर से चिल्ला उठा—महानुभावों ..महानुभावों ! एक क्षण रुकें...बस एक क्षण की मोहलत और दे दीजिये. मैं अपना अपराध स्वयं स्वीकार किये लेता हूं जिससे आप सब को अपने निर्णय पर शंका न रह जाय. वास्तव में मैं बड़ा अधम और पतित हूँ. मैंने सचमुच आप की खाल का व्यापार आरम्भ कर दिया है. वास्तव में मैं आप सब के प्राण ले कर दो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिन में अरबपति बन जाना चाहता हूँ.'

सेठ की बात सुन कर सब जानवर आश्चर्य में पड़ गये. भालू भी अपना हाथ फि गिराते थोड़ी देर रुक गया. सेठ चिल्ला कर फिर बोला—मित्रों, बड़ा गजब होने है. मैंने आज सुबह ही अपने मैनेजर को आदेश दे दिया है कि जानवरों को कल से ही पकड़वा कर उनकी खाल निकलवाना आरम्भ कर दें. अब क्यों कि शेर-चीत खाल आदमी सब से सुन्दर व कीमती मानते हैं इसलिये मेरा आदेश है कि पहले चीतों को ही पकड़वा कर खाल निकलवाई जाय. परन्तु मैंने अपने अगल-बगल खड़े और चीतों के जो सुन्दर व अद्भुत शरीर आज देखे तो अपने आदेश पर बड़ी ग्लानि हुई. प्रकृति के इतने सुन्दर खिलौने नष्ट करना ठीक नहीं है. मैं चाहता हूं, से पहले आप सब मुझे थोड़ी मोहलत दे दें, जिससे मैं अपना आदेश परिवर्तित कर मैनेजर से कह दूँ कि वह शेर-चीतों को छोड़ कर भालू-वगैरह की खाल निकल आरम्भ करे. मेरा मैनेजर बस सुबह होते ही कार्य आरम्भ करने वाला है. यदि कि हुआ तो सचमुच कल सुबह प्रकृति के ये सुन्दर जीव फिर जीवित कहां दिख पड़ेंगे.

सेठ की बातें सुनते ही शेर और चीतों की लाल-लाल आंखें पीली पड़ गई उनकी तलवार ऐसी तनी दुमें लटक गईं. वह सब विनीत हो बोलने लगे—महाराज आप ने बिल्कुल उचित सोचा है. ये जंगल तो आप का ही है और हम सब यहां शोभा बढ़ाते हैं. आप हमारा ख्याल न करियेगा तो कौन करेगा. आप मुझे जंगल राजा नहीं अपना दास समझें और आप बिना किसी खतरे के यहाँ से तशरीफ ले सकते हैं और चैन से रह सकते हैं. पर कृपा करके अपना आदेश परिवर्तित कर भूलियेगा.

भालू ने अपना हाथ झटके से नीचे गिराया और डेढ़ इंच नाक सिकोड़ कर जोर से चिल्लाया—मैं कहाँ का और कब का न्यायाधीश हूं ? मुझे इस पचड़े से मतलब ? फिर सेठ जी के पास आ कर हाथ से इशारा करते हुए बोला—महाराज आप इन शेर चीतों को खूबसूरत न समझें. ये अन्दर से बड़े खूंखार और स्वार्थी एक दिन में दूसरों को मार कर खाता है, दूसरा रात में मार कर खाता है. अपना निर्णय बदलने की भूल बिलकुल न करें और इतमिनान रखें. यह शेर, चीते यहाँ आप को कुछ भी बोलेंगे तो हम सब जान की बाजी लगा देगें.

सेठ जी सान्त्वना भरे स्वर में बोले—आप सब आपस में झगड़ें नहीं. आपस लड़ाई अच्छी नहीं होती. मैं तो अपना काम इन भेड़ियों और इन लोमड़ी आदि से चला लूंगा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सेठ जी की बात सुनते ही लोमड़ी फनफना कर सामने आई और आंख नचा कर बोली—महाशय जी, यह सब बड़े जानवरों की धूर्तता और करतूत है जो हम ऐसे तुच्छ व छोटे जानवरों को न जाने किस चक्कर में फँसा दिया. आप यक़ीन मानिये, मैं आज से कानों में तेल डाल कर बैठूंगी और किसी भी मनुष्य के बारे में न कुछ देखूंगी, न सुनूंगी. लेकिन आप इन बड़े जानवरों के बहकावे में बिल्कुल न आयें. ये निहायत कमीने और कपटी हैं. मैंने तो इनसे कहा था कि सेठ जी पूजा-पाठ वाले आदमी हैं और स्वप्न में भी कुछ-न-कुछ नियम-धर्म की ही बात कर रहे होंगे. पर ये बड़े जानवर छोटे जानवरों की सुनें तब न.

मैं-मैं-तू-तू से शुरू हो कर बात ने ऐसा रूप लिया कि जानवरों में बड़ा ज़बरदस्त हंगामा हो गया. कितने ही जानवर लहू-लुहान हो गये. जो निरीह और कमज़ोर थे मौक़ा मिलते ही जाने किधर खिसक गये. सेठ को लगा जैसे वह फैक्ट्री में मजदूरों की सभा में खड़ा हो. यह कोलाहल कुछ देर चला होगा कि तभी इस कोहराम में सबों को बन्दर की चीख सुनाई पड़ी....'चोप-चोप-चोप ?' सब जानवर जहाँ के तहाँ ठिठक गये और खामोशी छा गई. बन्दर बोला—अरे उल्लू के पट्ठों, आदमी किधर गया ?

सब जानवर आश्चर्य से एक साथ चीख पड़े—अरे आदमी कहाँ गायब हो गया ? कहाँ गायब हो गया ?

और जब उन्हें आदमी कहीं भी नहीं दिखाई पड़ा तो सब के सब प्रश्न सूचक दृष्टि से फिर बन्दर की तरफ़ देखने लगे. बन्दर खीज कर बोला—अब अपना-अपना सर पटको और एक बात और समझ लो कि आदमी कभी नहीं गायब हो सकता, हाँ हम सबका एक दिन गायब होना निश्चित है.

विनायक

कारपोरेशन फ्लैट नं० ८, फैजाबाद रोड,
निकट आकड़ाई पोस्ट, महानगर, लखनऊ.

(पृष्ठ ९८ का शेष)

'वाह रे वाह !' शास्त्रीजी ने जवाब दिया, 'खूब समझा रही हो तुम मुझे. पड़ने दो मुसीबत उस पर. क्यों रोकूं. मैं जब शादी कर रहा था तो उस समय मुझे तो ऐसी चेतावनी नहीं दी थी उसने, तो मैं उसे ऐसा क्यों करूं.'

भाभी मुझसे मुखातिब हो कर बोलीं, 'सुना आपने ?'

मैंने कहा, 'देखिये आप लोग शायद अत्यन्त गोपनीय वार्ता करने के मूड में हैं. इसलिए अब मैं चलता हूँ.' ■■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिहास-पृष्ठ

शास्त्री जी के घर गया. वे पौधों में पानी रहे थे. मैंने उनके फुलवारी-प्रेम की प्रशंसा की. हँस कर बोले, 'श्रीमन् ! यह मेरी पत्नी का बगी है. मेरा काम सर्फ़ क्यारी खोदना, पौधे लगाना, प देना और गुड़ाई करना है.'

तभी शास्त्राइन भाभी भी आ गयीं. बोलीं, 'आप बहुत खुश नज़र आ रहे बात क्या है ?'

'जी, मैं 'कहानीकार' के परिहास-पृष्ठ का लेखक हूं. शास्त्री जी के पास कहानी अंक के लिए इनसे मैटर लेने आया हूं.' मैंने कहा.

सुनते ही शास्त्री जी ने फर्माया, 'यह प्रेम भी अजीब बला है. श्रीमान् जी प्रेम बारे में मुझ से कुछ न पूछिये तो अच्छा है. क्योंकि मैं विवाहित व्यक्ति हूं. प्रेम बोलने का अधिकार सिर्फ अविवाहितों को ही है.'

शास्त्राइन भाभी ने मुझे सादर बिठाया, चाय दी, फिर बोलीं, 'इनके प्रेम के में मुझसे सुनिये. ये जब कालेज में पढ़ते थे. अपनी महिला प्रोफेसर के आशिक हो थे. इनका क्लास अकसर उस चुड़ैल के बंगले पर ही लगता था. एक दिन अचान उसका पति आ गया और उसने इन्हें पलंग के नीचे छुपा दिया. उन दिनों ये सिग पिया करते थे. उसके पति ने आते ही देखा कि टेबुल पर एस्ट्रे में सिगार है और धुआं निकल रहा है, उसने कड़क कर पूछा, 'यह सिगार कहाँ से आया ?' कई बार पूछ पर उसने तो कुछ जवाब नहीं दिया लेकिन पलंग के नीचे से जवाब मिला— 'वर्मा से.'

हँसते-हँसते मेरे पेट में बल पड़ गये. शास्त्री जी ने गंभीर स्वर में कहा—'सुन आप महाशय. आज हर चीज़ मेरे विरुद्ध ही जा रही है इसलिए आज मुझे माफ़ कर मैंने पूछा, 'क्यों ?' उन्होंने बताया कि आज १३ तारीख है और मैंने हमेशा ही पढ़ा है कि यह संख्या मेरे लिए अशुभ है. मैं पैदा हुआ १३ तारीख को, उपरोक्त घटना १३ तारीख को ही घटी और तो और आज से १३ वर्ष पूर्व १३ तारीख को ही मेरी शादी भी हुई.'

भाभी जी मुंह विचका कर चलीं गयीं. फिर आ कर उन्होंने एक खत शास्त्री जी दिया. बोलीं, 'देखो जी, तुम्हारे दोस्त का खत है यह. लिखा है कि मैं जिस लड़की प्रेम करता रहा, उसी से शादी करने जा रहा हूं. मैं व्यक्तिगत रूप से जानती हूं कि लड़की ठीक नहीं है. एक दोस्त के नाते तुम उसे लिखो कि वह लड़की अच्छी नहीं तुम उसे मना करो, नहीं तो उसकी ज़िन्दगी मुसीबत बन जायगी.'

(शेष पृष्ठ ६७ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'चितचोर' एक चितचोर फ़िल्म

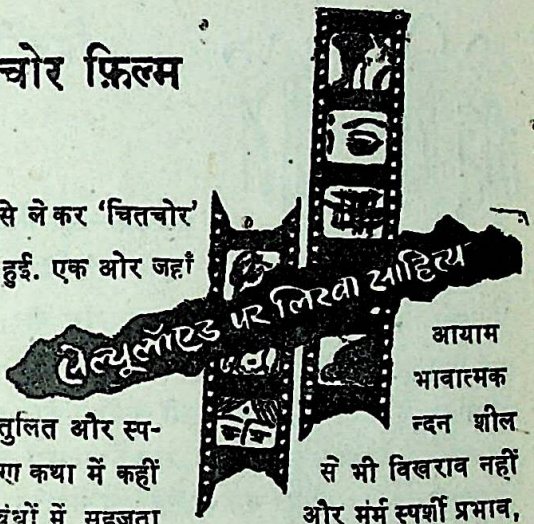

बासु चटर्जी की 'आविष्कार' से लेकर 'चितचोर' तक की एक महत्वपूर्ण यात्रा पूरी हुई. एक ओर जहाँ 'आविष्कार' में नए बौध्यिक आयाम सामने आते हैं, वहीं चितचोर में भावात्मक निर्देशन को अत्यन्त बारीकी से संतुलित और स्पन्दन शील ढंग से बांधा गया है, जिसके कारण कथा में कहीं से भी बिखराव नहीं आ पाता. नपे-तुले संवाद, दृष्यबंधों में सहजता और मर्म स्पर्शी प्रभाव, कथा प्रसंगों और वार्तालाप में विनोदात्मक प्रस्तुतियाँ, प्राकृतिक दृष्यांकन में संगीत का लय और संगीत में प्राकृतिक सहजता का-सा आबंधन और तारतम्य, गीत की पंक्तियों में एक काव्यात्मक आनन्द और मर्म स्पंदनी क्लासिकी स्वरलिपि में उस काव्यात्मक गीत की मधुर अवतारणा—इन सभी ने मिल कर 'चितचोर' की वस्तुतः चितचोर बना दिया है.

सुबोध घोष की इस कहानी में एक छोटे से नगर के पास बन रहे पुल की देख-रेख और व्यवस्था में आये ओवरसियर और स्कूल मास्टर की सीधी-साधी ग्राम्य लड़की का सरल और तरल प्रेम है, ओवरसियर को इंजीनियर समझने की ग़लती है, जिसकी जानकारी बम्बई से नायिका की बहन के पत्र से होती है. पर तब तक काफ़ी देर हो चुकी होती है. प्रेम का रंग गाढ़ा हो चुका रहता है. पर नायक बड़ी अत्मीयता से नायिका के जीवन की सुख-सुविधाओं का खयाल करके, उसे भूल जाने की सलाह देता है. इस बीच इंजीनियर पर दोनों का प्रेम प्रकट हो चुका रहता है और वह स्वयम् पहल करके नायक और नायिका को विवाह-सूत्र में बंध जाने की सहूलियतें पैदा कर देता है. निश्चय ही 'चितचोर' की कथा और उसकी पटकथा की सफल बुनावट प्रभावशाली है. छायांकन के लिए के० के० महाजन विशेष बधाई के पात्र हैं, यही बधाई रवीन्द्र जैन को भी उनकी संगीत और गीत रचना के लिए. अभिनय के लिए अमोल पालेकर का नाम इधर के साहित्यिक धरातल के फ़िल्मों में अगली कतार में गिना जाने लगा है. इसका सबूत 'चितचोर' भी है. जरीना वहाब से आशाएं बंधती हैं. हंगल हमेशा की तरह यहाँ भी सफल हैं. कुल मिला कर यह फ़िल्म शरतचन्द्र के कथानकों पर विमलराय के निर्देशन में बनी फिल्मों की याद ताज़ा कर देती है. निर्माता ताराचन्द बड़जात्या और निर्देशक बासु की यह कृति अपनी ताज़गी और सादगी के लिए अर्से तक याद रहेगी. ■

—क. गु.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नई किताबें

हिन्दी समीक्षा : स्वरूप और संदर्भ

लेखक—डा० रामदरश मिश्र

प्रकाशक—दी मैकमिलन कम्पनी प्रा० लि०, दिल्ली

पृष्ठ ३७६, मूल्य ३८ रु०, आकर्षक डिमाई आकार

डा. मिश्र हिंदी के जाने-माने प्राध्यापक और लेखक हैं. समीक्षा आरम्भ से ही उन्हें प्रिय है. अध्यापन, कविकर्म, कथा लेखन के लंबे अनुभव उनके समीक्षाकर्म में सम्मिलित हैं. इस पुस्तक में 'हिंदी समीक्षा का आरंभ, द्विवेदी युग की समीक्षा, रामचंद्र शुक्ल और उनकी परंपरा, स्वच्छंदतावादी समीक्षा, प्रगतिवादी समीक्षा, मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित समीक्षा, स्वच्छंद समीक्षा, नई समीक्षा, शुक्लोत्तर समीक्षा में सर्जकों का योगदान, गद्यसाहित्य और समीक्षा ये दस शीर्षक हैं. स्पष्ट है कि लेखक ने समीक्षा के पूरे रूप पर विचार किया है. कोई कोना खाली नहीं छोड़ा. यह भी कि समीक्षा बिल्कुल आधुनिक वस्तु है. अंग्रेजी संस्कृति से संपर्क की उपज है. इसीलिए इसकी शब्दावली पूर्णरूप में अंग्रेजी की है. स्वच्छंदतावादी और स्वच्छंद समीक्षा अलग अलग पारिभाषिक शब्द हैं. एक शब्द के कारण भ्रम हो सकता है.

रामदरश जी सहानुभूतिपूर्ण विचार करने वाले समीक्षक हैं. इसीलिए उन्होंने समीक्षा के आरम्भ में भारतेंदु काल की विशेषताओं को देखा. लेखक की दृष्टि में द्विवेदी युग भारतेंदु की प्रवृत्तियों का उत्तर विकास है. 'विकास कालीन समीक्षा की मुख्य कसौटी ही सामाजिक उपयोगिता है.' यह सिद्धांत वाक्य पूरे साहित्य पर लागू करना कठिन है. छायावाद कालीन समीक्षा भी विकासशील है किंतु वह सामाजिक उपयोगिता की कसौटी पर कसने पर खरा उतरेगा, इसमें संदेह है. नंददुलारे वाजपेयी, डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी और और डा. नगेंद्र तीनों को साथ रखना स्वच्छंदतावाद को जहाज बना देना है. 'ऐसे ही आलोचना सिद्धांतों के क्षेत्र में' मौलिक देन की चर्चा में यह बताना बड़ा कठिन है कि किसने मौलिक देन दी ? कुछ बातों को लेखक जान-बूझ कर संकेत देता हुआ छोड़ता चलता है. उदाहरण के लिये हिंदी आलोचना में आलोचना की उपेक्षा या नासमझी का गहरा आरोप है. सामाजिकता के अति आग्रह ने आलोचना को बिल्कुल सतही बना दिया था. हिंदी में केवल आचार्य रामचंद्र शुक्ल ऐसे आलोचक हैं. जिनमें भाषा समाज मनोविज्ञान, काव्य शास्त्र आदि सभी पक्षों का सम्यक समन्वय है.

डा. मिश्र की यह पुस्तक हिंदी समीक्षा की स्थिति और विकास को समझने की दृष्टि से महत्व पूर्ण है. पाठकों द्वारा इस पुस्तक का स्वागत होगा.

—युगेश्वर, काशी विद्यापीठ, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने लिखा है

'गुलजार प्रकरण' के मामले में तुमने सचमुच बहुत हिम्मत दिखायी है. मेरा खयाल है, काले को काला और सफ़ेद को सफ़ेद कहना और दमखम से कहना बहुत बड़ी बात है. मुबारक हो.

कमलेश्वर, सम्पादक—सारिका, टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, बम्बई.

कहानीकार का विश्व कथा अंक पढ़ा. एक अंक में जितना जो कुछ आप दे सकते थे, बहुत अच्छे ढंग से दिया है, विदेशीलेखकों की इतनी अच्छी कहानियाँ पाठक को एक जगह उपलब्ध हों तो १०-२० रुपये के भव्य प्रकाशन से तो बच ही सकता है. आपके व्यंग्य का आखिरी पैरा अच्छा लगा. कविताएं बस ठीक हैं. कुल इच्छा यही है कि कहानीकार नियमित रहे, शेष शुभ.

—श्रीकांत चौधरी

'कहानीकार' सित.—अक्तू. संयुक्तांक' ७६ के कथा-परिकथा स्तम्भ में 'सारिका' सित.' ७६ की कहानियों पर विचारकेतु की प्रतिक्रिया पढ़ने को मिली. यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वे प्रतिक्रियाएं लिखने से पहले कहानियों को पढ़ते भी हैं, और प्रतिक्रिया लिखते समय मात्र उस कहानी के पक्षों को दृष्टि में रखते हैं. अन्यथा आज की अधिकांश प्रतिक्रियाएं लेखकों से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिचय अथवा उनके प्रति क़ायम पूर्व-धारणाओं से प्रभावित रहती हैं. 'सारिका' सित.' ७६ में आये उन पांच नये हस्ताक्षरों की रचनाओं का सही एस्टीमेशन स्वयं 'सारिका' के अन्य पाठक नहीं कर सके. भीष्म साहनी की 'ओ हरामजादे' को छोड़ कर सुरजीत प्रकाश की 'टूटे चेहरे का आईना' और श्रीनाथ की 'दधीचि का अंत' उस अंक की बेशक सबसे अच्छी कहानियाँ हैं. विचारकेतु जी की इस ईमानदार प्रतिक्रिया के लिए उन्हें मेरी तरफ़ से धन्यवाद प्रेषित कर दें.

—मोहन माहेश्वर, योगेन्द्र प्रिया भवन, कैदूराबाद, पो०-बालबाग, दरभंगा (बिहार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कहानीकार' का भारतीय कहानियों के अनुवाद का अंक देखा. 'बोझ' और 'चूहे की मौत' इस अंक की उपलब्धि हैं. 'नया पंचतंत्र' स्तंभ भी काफ़ी दमदार है. कहानीकार को नियमित चलाने के लिए बधाई स्वीकारें.

—प्रकाश अमिताभ, हिन्दी विभाग, धर्म समाज कालेज, अलीगढ़

कोई शक नहीं कि आप अकेले ही पत्रिका को जीवित ही नहीं रखे हुए हैं, बल्कि उसे ऊँचा भी उठाये हुए हैं. आपका खुद का व्यंग्य का शिल्प अपनी अलग विशेषता लिये रहता है. शास्त्री जी संबंधी परिहास, जिसमें व्यंग्य का भी पुट होता हैं, काफी रोचक है. फिर आप बिदेशों की चुनी हुई कथाएँ भी देते रहते हैं जिससे पत्रिका की महत्ता और भी बढ़ जाती है. बड़ा कठिन है, यह सब कर सकना और आप अकेले ही कर रहे हैं.

—शंकर पुणतांबेकर १६३, जिल्हा पेठ, जलगांव महाराष्ट्र ४२५-००१.

कहानीकार का अनुवाद अंक चंडीगढ़ से री-डायरैक्ट होकर मिला. सशक्त संकलन के लिए बधाई. विनायक, दिलीप राय. दुर्गा प्रसाद श्रेष्ठ, गुरदेव रुपाणा और मुक्तानन्द राय की रचनाएँ बेहद पसंद आईं. आगामी विशेष आकर्षणों के लिए शुभकामनाएं.

—फूलचन्द मानव, हिन्दी विभाग गवर्नमेंट कालेज, भटिंडा १५१००१.

गणतन्त्र के पावन पर्व पर नगरपालिका रामनगर, वाराणसी, अपने नागरिकों को हार्दिक बधाई देती हुई उनसे निम्न अनुरोध करती है.

१—परिवार नियोजन देश की सामाजिक मांग होने से राष्ट्र का महान कार्य है. इसे सफल बनाने में सहयोग प्रदान करें.

२—देश की महान नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी के बीस सूत्रीय और देश के युवा नेता श्री संजय गांधी के पांच सूत्रीय सामाजिक कार्यक्रम को अपना कर राष्ट्र को सबल एवं समृद्धशाली बनाने में सक्रिय सहयोग दें.

३—नगर आपका है. इसे स्वच्छ एवं सुन्दर रखने में योगदान दें.

४—वृक्षारोपण के कार्य में सहयोग दें.

५—पालिका के विकास एवं निर्माण कार्यों के संपादन हेतु करों की अदायगी समय से करें.

६—लोकतन्त्र को सशक्त बनाने में सभी संभव प्रयास करें.

रामप्रसाद सिंह
अधिशासी अधिकारी
एवं कर्मचारीगण
नगरपालिका रामनगर, वाराणसी

प्रेम किशोर पांडेय
अध्यक्ष
एवं सदस्यगण
नगरपालिका रामनगर, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार नियोजन का
आसान और सफल तरीका—

नसबन्दी

प्रदेश में प्रतिदिन लगभग ४००० नसबन्दी हो रही है. सभी पात्र-दम्पतियों का अपने परिवार के हित में यह दायित्व है कि आगे आ कर अपनायें.

- शत प्रतिशत विश्वसनीय
- सभी सरकारी अस्पतालों तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में कुशल शल्यकों द्वारा आपरेशन की सुविधा है.
- आपरेशन के बाद केस की पूरी तरह देखभाल की जाती है.
- इससे कोई भी शारीरिक अथवा मानसिक हानि नहीं होती है.
- अनचाहे गर्भ के भय से मुक्त हो कर दाम्पत्य जीवन अधिक सुखी हो जाता है.
- महिला नसबन्दी के मुकाबले पुरुष नसबन्दी अधिक आसान आपरेशन है.

परिवार नियोजन अपनाइये, राष्ट्र को आगे बढ़ाइये.

राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो, उ. प्र. द्वारा प्रसारित

● छोटा परिवार सुख का आधार। परिवार नियोजन अपनाइये

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुम्भ मेले में जाने वाले यात्रियों को सूचित किया जाता है
मेला क्षेत्र में प्रवेश करने से पूर्व उनके पास हैजे के टीके
प्रमाण पत्र हो, जिसका तीन माह से अधिक पुराना न हो
आवश्यक है, अन्यथा उन्हें मेला-क्षेत्र में प्रवेश नहीं दिया जाये

●

समस्त रेलवे स्टेशनों, बस-स्टेशनों को सूचित कर दिया गया
कि वे बिना हैजे का प्रमाण पत्र देखे मेला क्षेत्र, इलाहाबाद टि
वितरित न करें.

●

कठिनाइयों से बचने के लिए मेला में आने वाले यात्रियों से अपील
की जाती है कि वे अपने निकटस्थ प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र अथवा
स्वास्थ्य विभाग के कार्यालय से हैजे का टीका लगवा कर प्रमाण
पत्र प्राप्त करें.

प्रसारित-स्वास्थ्य सेवा निदेशालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

'छोटा परिवार सुख का आधार. परिवार नियोजन अपनाइये

कमल गुप्त द्वारा कहानीकार प्रकाशन के लिए, कहानीकार मुद्रण संस्थान, के. ३/
अरविन्द कुटीर (निकट भैरोनाथ) वाराणसी से संपादित, प्रकाशित एवं मुद्रित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सभी प्रकार के

एक्स–रे

रक्त, मल-मूत्र परीक्षा

एवं

ई० सी० जी० रिपोर्ट

के लिए

●

श्री दुर्गा एक्स-रे क्लिनिक एवं निदान केन्द्र

लहुराबीर • वाराणसी • फोन–५२४४८

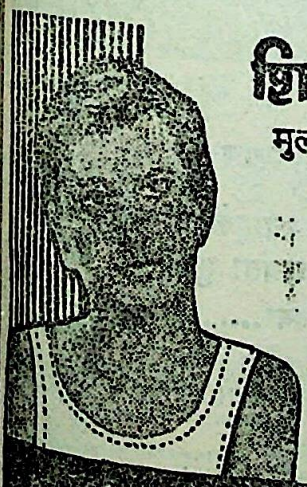

शिव होजरी की

मुलायम, टिकाऊ और

सुखप्रद परिधान

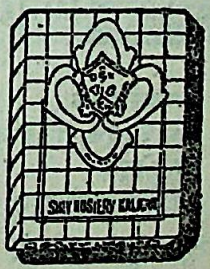

दरबार

स्नोयी

गोल्डन लोटस

इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता : **शिवचरन नानखटी**

१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-७

फोन ५४००९
५३११७

आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण !

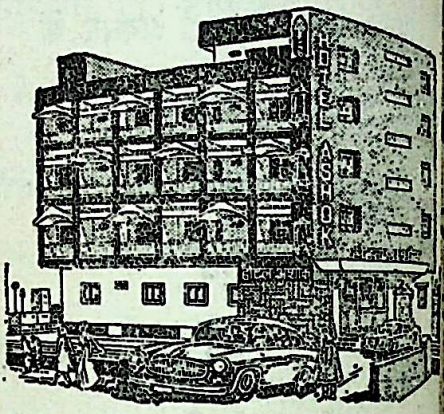

होटल अशोक

भारतीय, चाइनीज़ एवं यूरोपीय डिशेज़ में विशिष्ट

सिगरा • वाराणसी

कहानीकार सदस्यता कूपन

व्यवस्थापक दिनांक.....

के ३०३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) वाराणसी-१

महोदय

मैं 'कहानीकार' द्वैमासिक पत्रिका का ग्राहक बनना स्वीकार करता हूं/करती हूं. इस हेतु मैंने वार्षिक सदस्यता शुल्क ६) धनादेश (एम० ओ०) द्वारा, जिसकी पोस्ट रसीद संख्या..... दिनांक.....को भेज दिया है अथवा इस हेतु आप नए अंक की रु० ८)५० की व्ही० पी० पी० (वार्षिक सदस्यता शुल्क तथा डाक व्यय सहित) मेरे नाम भेज दीजिये.

नाम.....

पता.....

.....हस्ताक्षर.....

इस कूपन के द्वारा सदस्य बनने पर पत्रिका के दो पूर्व प्रकाशित अंक को मुफ्त मिलेंगे. अतः कूपन को भर कर काट लें और पोस्ट कर दें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीमेंट का उत्पादन तीन गुना

उत्तर प्रदेश
स्टेट सीमेंट कारपोरेशन लि० की
कजरहाट-चुनार सीमेंट परियोजना के
अक्तूबर, १९७९ में पूरा होने पर
प्रदेश का सीमेंट उत्पादन
तीन गुना हो जायगा.
वर्तमान ८-८० लाख टन
के स्थान पर
२४-१६ लाख टन.

प्रधानमंत्री के क्रांतिकारी आर्थिक कार्यक्रम
की सफलता की एक और उपलब्धि.

अपनी और देश की समृद्धि के लिए परिवार नियोजन.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

नयी उपलब्धियों का वर्ष !

उत्तर प्रदेश में विकास के सभी क्षेत्रों में गति की रफ़्तार तेज

- खाद्यान्न उत्पादन में लगभग २८ लाख मी. टन की वृद्धि.
- गेहूँ और चावल की लक्ष्य से अधिक वसूली.
- ६ लाख हेक्टेयर अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई करने की क्षमता का निर्माण.
- लक्ष्य से दूनी लम्बी गूलों का निर्माण (१६,००० कि. मी.)
- देश की पहली सिंचाई ग्रिड का समारम्भ.
- विद्युत उत्पादन क्षमता में ४८८ मेगा वाट की वृद्धि.
- बिजली की सभी वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति.
- औद्योगिक आस्थानों में ११०० करोड़ रुपये के पूंजी निवेश से नयी औद्योगिक इकाइयों की शीघ्र स्थापना.
- हथकरघा के बत्तीस औद्योगिक केन्द्रों का निर्माण कार्य प्रगति पर.
- खेतिहर मजदूरों की मजदूरी में वृद्धि. बढ़ी मजदूरी न देने पर कड़ी कार्यवाई.
- ग्रामीण ऋण-ग्रस्तता की समाप्ति के बाद २७.३६ लाख ग्रामीणों को सहकारिता के माध्यम से ऋण.
- भूमिहीनों को १५.८६ लाख एकड़ भूमि तथा सभी पात्र ग्रामीण परिवारों को आवास-स्थलों का आवंटन.
- समाज विरोधियों के खिलाफ़ कड़ी कार्यवाई के साथ-साथ डकैतों के अड्डे गिरोहों का सफाया.
- ४ लाख नसबन्दियों के लक्ष्य की तुलना में ७.५८ लाख नसबन्दियां.
- १० लाख वृक्षों से आरम्भ कर २.१७ करोड़ वृक्षों का लगाया जाना और विकास कार्यों में वित्तीय संस्थाओं से और अधिक सहायता प्राप्त करने में सफलता.

प्रदेश का नया संकल्प—हर नया वर्ष तेज प्रगति का वर्ष होगा.

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ. प्र. द्वारा प्रसारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिजली की सभी दुकानों पर उपलब्ध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवा वेद वेदान्त पु

पौष्टिक तत्वों से भरपूर

मोहन्ज न्यू लाइफ कार्न फ्लेक्स तथा व्हीट फ्लेक्स दिन प्रतिदिन के कार्य के लिये आपके शरीर को आवश्यक प्राकृतिक पौष्टिक तत्व प्रदान करते हैं। मोहन्ज फ्लेक्स का प्रयोग कीजिये और स्वादिष्ट नाश्ते का आनन्द लीजिये।

न्यू

मोहन्ज लाइफ फ्लेक्स

११३ वर्ष से अधिक का अनुभव विश्वास की गारन्टी है

मोहन मीकिन ब्रुअरीज लि०

स्थापित १८५५

मोहन नगर (गाजियाबाद) यू० पी०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रियाचरित्रम् : कितना सच, कितना झूठ

—सन्दर्भित कहानियों का एक खण्ड

अनीकार

विशेष आकर्षण ■ बहुचर्चित उर्दू उपन्यास

'बहुत देर कर दो'

का धारावाहिक नवाँ अंश

ष्ठ कहानियों

ासिकी

वर्ष : ९ ■ पूर्णांक : ५१

(अ०-न० '७५ संयुक्तांक)

१ रुपया

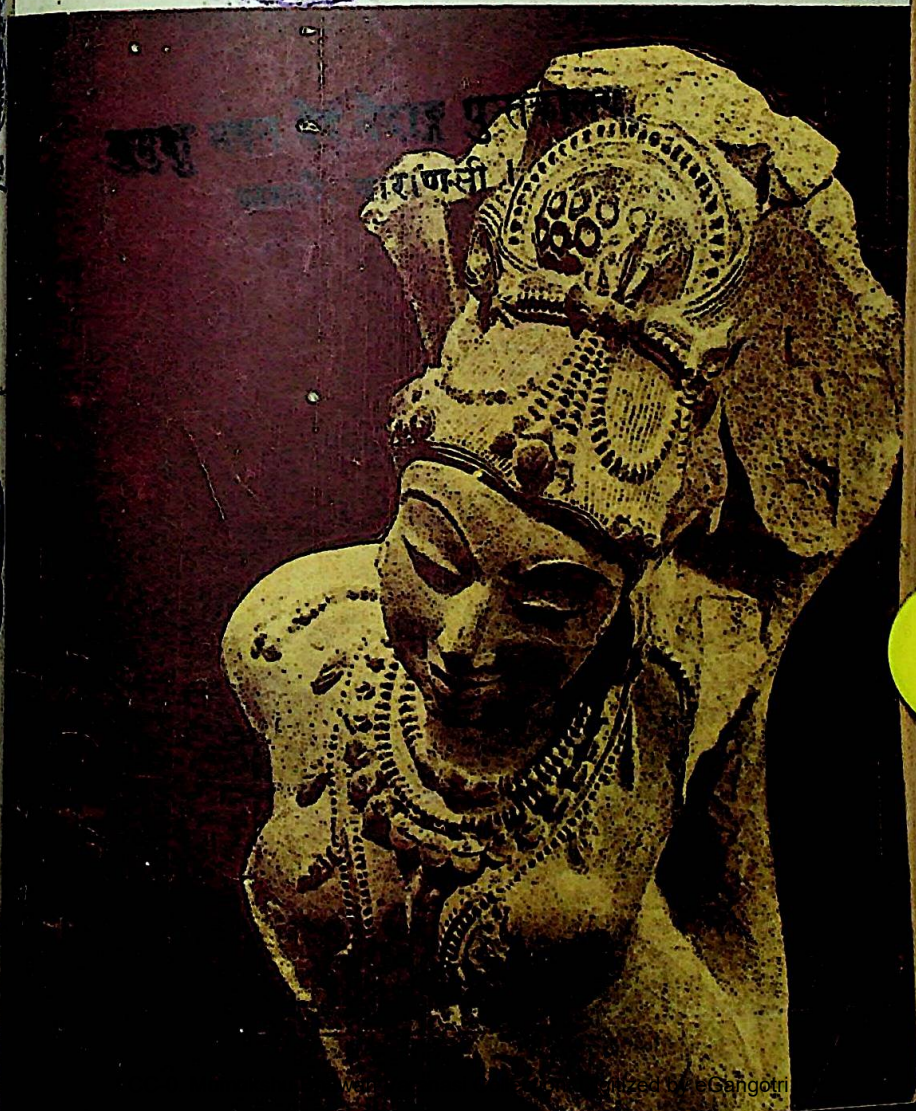

Digitized by eGangotri

सुचित्रा प्रिण्ट्स
की
साड़ियाँ
एक मनोहारी
और
इन्द्रधनुषी
आकर्षण

चित्रकला
चौक वाराणसी-221001 फोन 52215

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साड़ियों का वैभव
विजयवस्त्र
सोदानियां • वाराणसी

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय,
अस्सी, वाराणसी।

ताक़त

अपनी ताक़त को बनाए रखने के लिए ओकासा की चांदी चढ़ी टॉनिक टिकियाँ लीजिए. शक्ति और स्फूर्ति के लिए मशहूर टॉनिक ओकासा. तंदुरूस्ती की एक निशानी ओकासा

ओकासा
टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चांदी वाली
सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।
OKASA CO.PVT.LTD.,12A, Gunbow Street, P. B. No. 396,Bombay 400001.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपकी रसोई में,
हर त्योहार
और
समारोह में
स्वादिष्ट पकवान
का उपयोगी साथी—

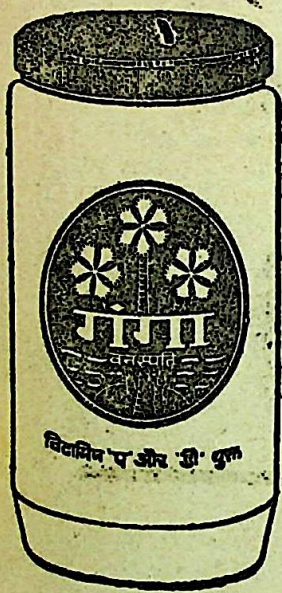

गंगा एवं जनता

सर्वोत्तम वनस्पति

●

आधुनिक विधियों से निर्मित

●

एवं स्वास्थवर्धक विटामिनों से भरपूर

●

२,४ तथा १६.५ किलो के आकर्षक पैकिंगमें उपलब्ध

GANGA JANATA
CAIEL

निर्माता :—

छविरानी एग्रो इण्डस्ट्रियल इंटरप्राइज़ेज लि

दुर्गावती (बिहार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारमा

की जाफ़रानी पत्तियाँ

डीलक्स,
सुपर, स्पेशल
और बॉबी

सैकड़ों, हजारों और अब
लाखों लोग
नित्य पान में
व्यवहार कर रहे हैं।

निर्माता - मलिक केमिकल, वाराणसी - २२१००१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मस्वीकृति

त्रियाचरित्रम्: कितना सच, कितना

औरत औ मर्द, मर्द और औरत, दोनों जमाने से एक दूसरे के लिए रहे हैं. नैसर्गिक, मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से पुरुष दोनों ही एक दूसरे के लिए महत्वपूर्ण रहे हैं पर दोनों में महत्वपूर्णता की खींचतान भी जमाने से रही है और इसी खींचतान के दौर में ही मातृ और पितृसत्तात्मक परिवार बने—विशेषतः पितृसत्तात्मक. पुरुष प्रधान समाज स्त्री परिवार की धुरी बनी, आधार बनी. विश्वास, प्रेम और तादात्म का बनी. वह सदा ऐसी बनी रहे इसके लिए धर्म बने, आचार बने, मर्यादाएं सीमाएं बनीं, बन्धन बने, लक्ष्मण रेखाएं बनीं, चहार दिवारियां बनीं, पर्दे बने. इतनी सारी मशीनरी के जरिए एक ऐसी स्त्री के निर्माण की फक्ट्री बनाने की की गयी जो पुरुष के बुरे होने पर भी, दुश्चरित्र होने पर भी, भ्रष्ट होने पर दुष्ट होने पर भी, वेश्यागामी होने पर भी उसकी अनुगामिनी, परछाई, दासी, बनी रही, पैर की जूती बनी रहे बेढंगी फैक्ट्री की बेढंगी शर्तें-फलतः इस फैक्ट्री निकलने वाले अधिकांश माल बेढंगे हुए और इन पर रिजेक्शन की मुहर लगी और इस मुहर का इस्तेमाल हर देश-काल में पुरुष वर्ग करने लगा. रिजेक्शन की मुहर में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला मुहर रहा है—त्रियाचरित्रम् दैवो न जानि हिन्दी में इसका, फूहड़ तर्जुमा कुछ इस प्रकार किया गया— त्रिया चरित्र नहिं कोई, खसम मार के सती होई. अंग्रेजी साहित्य के कवि और नाटककार शेक्सपीयर ने सारी औरत जाति को खिताब दे डाला—फ्रेलिटी दाई नेम इज वो मेन. हाल फैक्ट्री से निकले रिजेक्टेड माल की जांच की गयी और उसकी जांच-रिपोर्ट दी गयी—अवगुन आठ सदा उर बसही. इसके बाद की प्रकिया रिपेयर्स की थी. उन्हें इन्हें ताड़न का अधिकारी बताया गया. कुल मिला कर ले दे के उसे ढोल, गवार और पशु की सीमा तक घसीटा गया. नारी की इन सारी स्थितियों और अवस्थिति में कितना सच है कितना झूठ है, यह सोचना अभी बाकी है. त्रियाचरित्रम् को जब भी, जहां भी उठी, उठाई गयी, कही, कहाई और सुनाई गयी, सबने चुपचाप सुना और चुपचाप उसे सच मान लिया. क्या किसी बात को सही मान का यह तरीका सही है ? त्रियाचरित्र ही सच है. पूर्ण सच है. स्थायी सच है कि झूठ है और यदि झूठ नहीं है तो 'प्रसाद' का 'नारी तुम केवल श्रद्धा हो' लिखना क्या झूठ है ? मनु का 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते देवता' वाली बात क्या बकवास है, पंत का 'देवि मां...

(शेष पृष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रियाचरित्रम् :
कितना सच, कितना झूठ !

कहानियाँ

(अ०-सि० मंगलांक)
वर्ष ९ : पूर्णाङ्क ५१

संपादक—
कमल गुप्त

वार्षिक : बारह रुपये
विदेश में : बीस रुपये
प्रति अंक : एक रुपया

कार्यालय—
के. १०।३७ अरविंद कुटीर
(निकट भैरवनाथ)
वाराणसी-१. फोन ६६६६५

ब्लाकसज्जा—श्री अन्नपूर्णा
ब्लाक वर्क्स, वाराणसी

कहानियाँ

नया पंचतन्त्र	६	विनायक
अभिमानिनी	१८	आदर्श मोहन सारंग
प्रतीची	२४	नीर शबनम
अस्वीकार स्वीकार	३४	शशिकर
टूटना नहीं टूटना	४२	अशोक चौधरी
माध्यम	५६	पुष्कर द्विवेदी
सुजान (अतीत कथा)	६२	पद्म
झूठ के दायरे	८४	परमानंद अश्रुज

धारावाहिक उपन्यास

बहुत देर कर दी (उर्दू)	११	अलीम मसरूर

अन्य स्तम्भ

आत्मस्वीकृति	४	
कुछ स्याह : कुछ सफ़ेद	७८	कमल गुप्त
कविताएं		१४, ४४, ६६, ८९
आपने लिखा है	९५	

आगामी अङ्क दिसम्बर में पढ़ें

त्रियाचरित्रम् कथांक [दूसरा खण्ड]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नया पंचतंत्र

(दसवीं लघुकहानी)

व्योमहरण

उस गहन वन के मध्य स्थित शताब्दियों पुराने महल का एक खण्डहर अवशेष रूप में कुछ दीवारें मात्र थीं उस महल के अन्दर भी बड़े घने वृक्ष झंखाड़ उग आये थे. यह बहुत से वन्य पक्षियों व जन्तुओं का आवास स्थल गया था.

उसी स्थान पर खण्डहर के एक झरोखे में एक कपोती-कपोत आ कर रहने लगे थे. एक झाड़ में घोंसला बना कर एक बुलबुल का जोड़ा भी कपोती लता की गुफा में नन्हीं श्यामा पक्षी का भी प्यारा-सा एक युगल था. अतिरिक्त एक वृक्ष के तने में एक बड़ा दराज था. उसमें एक तोते का युग्म था और ही एक ठूठ के कोटर में एक बूढ़ा उलूक अपने दिन बिता रहा था.

कपोती-कपोत तो बाद में आये थे. शेष पक्षियों का तो जन्म-स्थान ही था. कपोती-कपोत एक दूसरे को दिन-रात प्यार करते और साथ-साथ रहते. वे साथ थे. दाना चुगने भी साथ जाते थे और झरने पर पानी पीने भी साथ एक दिन शाम होने से पहले ही अन्धेरा-सा होने लगा था क्योंकि सुबह से ही पर गहरे बादल छाये थे और रुक-रुक कर तेज वर्षा हो रही थी. बूंदा-बांदी रुकी ही नहीं थी. सुबह से ही सभी पक्षी युग्म अपने घोंसलों में बैठे आसमान ओर तक रहे थे. आज सब भूखे रह गये थे.

कपोती-कपोत सदा की भांति आपस में प्रेमालाप कर रहे थे. कपोत कपोती सुन्दरता का गुणगान कर रहा था और कपोती उसकी आखों को चूम रही थी अपना गुलाबी चोंच से कपोत के नरम पंखों को सहला रही थी. अन्य पक्षी इन दोनों के प्रणय लीला को देख कर पुलकित हो जाते थे और अपने जोड़े के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सट जाते थे. बूढ़ा उलूक भी उस प्रेम-लीला को देख कर अपनी पुरानी जीवन-गाथा याद कर रहा था.

तभी कपोती, कपोत व अन्य पक्षियों की दृष्टि आकाश पर गयी. एक सुन्दर-सा कपोत आकाश में कलाबाजियाँ खा रहा था और तीक्ष्ण वायु की गति के विपरीत उड़ कर कल्लोल कर रहा था. सारे पक्षी उस एकाकी कपोत के उल्लास व खिलवाड़ को देख रहे थे. तभी एक फड़फड़ाहट हुयी और देखते-देखते कपोत के पास बैठी कपोती तीव्र गति से उड़ी और व्योम में जा कर उस उल्लसित कपोत के संग खेलने लगी: सारे पक्षी स्तब्ध रह गये. कपोत का दिल जोरों से धड़का और उसकी आँखें फटी-की-फटी रह गयीं. वह लकवा-सा मारा अपने झरोखे में बैठा तकता रहा और कपोती कपोत के संग दूर गगन में विलीन हो गयी. तभी बुलबुल उसके पास उड़ कर आयी और विस्मय से पूछने लगी—यह सब कैसे हो गया ! बूढ़े उलूक से ले कर श्यामा पक्षी तक सभी उस कपोत के पास आ कर यही प्रश्न करने लगे कि ऐसा अनर्थ हो कैसे गया ! कपोत उदास और मूक था. सभी पक्षियों की आँखों में तीक्ष्ण वेदना व विस्मय था क्योंकि पक्षियों में तो आज तक ऐसा कभी नहीं हुआ था कि जीवित साथी को छोड़ कर एक युग्म चला जाय.

कुछ देर पश्चात निस्तब्धता को तोड़ते हुए बूढ़े उलूक ने सांत्वना भरे शब्दों में कहा—बन्धु उदास मत होओ. हम सब आज के इस अचरज का पता लगायेंगे. कपोत ने एक फीकी हंसी-हंसते हुए कहा—कारण तो मुझे पता है और यह भी पता था कि एक दिन ऐसा हो भी सकता है. सभी पक्षी विस्फारित नेत्रों से उसे देखने लगे तोते ने निकट आ कर कपोत से आँखें पसारते हुए पूछा—मित्र तुम्हारे प्यार की अवहेलना होती हो तो हमें भी ज्ञात होने दो कि प्रकृति के विपरीत यह आचरण कपोती ने कैसे किया ! कपोत कुछ संयत होते हुए अवरुद्ध कंठ से बोला—भाई, वह कुछ दिन मनुष्यों के साथ रही थी ■

विनायक (अक्षपटलिक*)
कारपोरेशन फ्लैट नं० ८ फैजाबाद रोड,
निकट ऑक्ट्राई पोस्ट, महानगर, लखनऊ.

■■

(*पाठकों की इस स्तम्भ में विशेष रुचि और इसके लेखक अक्षपटलिक के प्रति उनकी तीव्र जिज्ञासा को दृष्टि में रख कर लेखक के मूल नाम को घोषित किया जा रहा है—सं०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्व कथा

● दाऊद बनारस का एक सीधा-सादा कुंआरा जवान है जो मु[illegible] की चाल में खौफ़नाक गुण्डे करीम की मेहरबानी के नाम पर मिली उवाथफ़ सु[illegible] को नकली बीवी बना कर रहता है. किताब की दुकान में नौकर है. उसको व खू[illegible] सुलताना की जोड़ी पूरे चाल में, दोस्तों और मालिकों के बीच इसे चर्चा का वि[illegible] बना देती है. सुलताना की चुटीली बातें कभी वफ़ादार बीवी और कभी तवाय[illegible] होती हैं जिसके कारण दाऊद के मन में कभी खिचाव की कशिश तो उसका करीम [illegible] रखैल होना उसमें नफ़रत का ज्वार पैदा करता है. एक रेणु है जो वेश्यावृत्ति [illegible] थीसिस लिखना चाहती है. एक कायनात है जो सीधी-सादी, प्यारी-सी, ग़रीबी [illegible] मार सहता हुई लड़की है और जो अपने ताज़े नावेल को छपाने के लिए दाऊ[illegible] मदद मांगती है. दाऊद के मन में एक हमदर्दी, फिर प्यार का अंकुर फूटता है पर सु[illegible] ताना का क्या करे वह. बड़ी मुश्किल में दिन गुज़रते हैं. वह करीम से मिल कर [illegible] मुक्ति की बात कहता है पर वह उसकी जेबों में इज़्ज़त से 'मौज उड़ाओ' कहते हुए [illegible] रुपये भर देता है. अजीब कशमकश में वह घर लौटता है जहाँ पड़ोसियों की भी[illegible] जमी हुई है सभी सुलताना पर फ़िदा हैं. दाऊद का मन भी बेहद रीझता है [illegible] सुलताना की बेबाकी से सिटपिटाया रहता है. फिर ऊपरी धौंस के लिए वह करीम [illegible] रुपयों को अपनी कमाई बता कर उसे दे देता है. सुलताना एक हज़ार में चोर बाज़ा[illegible] ढेरों सामान ला कर गृहस्थी सजा देती है. दाऊद दुकान से हो कर कायनात के [illegible] जाता है जहाँ उसको नफ़ासत पसन्दगी, पाक़-साफ़-दिली, साहित्य की पकड़ [illegible] उसकी बातें उसमें अपनापन भर देती हैं. वह उसकी आर्थिक सहायता के बतौर [illegible] बचे तीन सौ रुपयों में उसका उपन्यास खरीद लेता है. घर लौटता है तो अपने [illegible] संवरे कमरे को देख कर दंग रह जाता है और सुलताना पर मोहित भी, जो बीवी [illegible] होते हुए भी बीवी से कहीं आगे है—ज़िम्मेदार है, खैरख्वाह है. फिर भी कायनात [illegible] बात कुछ और है. वह ज़िन्दगी है, सुलताना सिर्फ़ एक सजावटी [illegible] कायनात का उपन्यास छपवाने के लिए दाऊद चिन्तित है. अपने आफिस के [illegible] को अपनी नकली शादी की दावत के लिए घर बुलाता है, जहाँ सुलताना [illegible] खूबसूरती और बातों का जादू सबके दिलो-दिमाग़ पर असर करता है. बातों-बातों [illegible] में उपन्यास छपाने के रास्ते खुलते हैं और दाऊद के मन में उल्लास की एक [illegible] किरन फूटती है. सुबह सुलताना के साथ शेरो-शायरी और बातों का दौर चलता [illegible] शाम कायनात के घर गुज़रती है और उपन्यास छपने के मसविदे तैयार होते हैं [illegible] मन से घर लौटते दाऊद से करीम रास्ते में मिलता है और सुलताना को रात [illegible]

(शेष पृष्ठ [illegible])

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुचर्चित उर्दू उपन्यास

धारावाहिक नवाँ अंश

बहुत देर कर दी

दाऊद के चले जाने के बाद सुलताना सोचती रही कि करीम के जेल चले जाने के बाद उसे वास्तव में अब क्या करना चाहिये. यह प्रश्न विचारणीय था. यदि वह वापस चली जाये तो उसे फिर आना पड़ेगा क्योंकि करीम से यों ही छुटकारा पा जाना असम्भव था. और यदि उसे रहना पड़ा तो क्या वह उसे तीन महीने का हरजाना देगा. ये उसकी अपनी कारोबारी बातें थीं, जिनके हल करने में उसे किसी की सलाह की जरूरत नहीं थी. उसे अभी वापस चले जाने में कोई नुक़सान नहीं था क्योंकि करीम से वह एक अच्छी रकम वसूल कर चुकी थी. और जब वह दोबारा आती तो उसे दूसरी रक़म आसानी से मिल जाती. लेकिन वह जो कुछ करना चाहती थी, करीम की मरजी से करना चाहती थी, क्योंकि न तो वह अपने सिर जवाबदेही चाहती थी, न ही दाऊद के सिर कोई आँच आने देना चाहती थी. वह करीम से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिलने की फ़िक्र में थी.

उसने जुबैदा भाभी से कहा—

'भाभी, मुझे एक बुरक़ा दिला दीजिये.आज फिर एक सगे वाले के यहां

'अरे तो मेरा ले जा ना. फिर डिला डूँगी.'

'नहीं भाभी, अच्छा नहीं लगता. एक बार हो गया !'

उसने जुबैदा भाभी को साथ ले कर बाज़ार से एक बहुत ही खूबसूरत क़ीमती बुरक़ा खरीदा.जब उसे ले कर घर आयी तो उसे पहन कर बार-बार अपनी सूरत देखती. सचमुच वह बुरक़े में बड़ी भली लग रही थी. उसे करीम याद आयी जब वह उसे दोबारा नक़ाब पहना देना चाहता था. आज इसी बुरक़े करीम से मिलना था. वह चाहती थी कि जेल में करीम के सिवा कोई न उससे मिलने वाली औरत की सूरत कैसी है. वह नक़ाब में कभी अपनी खोलती, कभी आधा चेहरा और कभी पूरा और उसे देखती रहती. वह अपनी को तौल रही थी.

तीन बजे दिन को वह घर से निकल पड़ी और बहुत दूर तक पैदल ही रही. फिर उसने एक टैक्सी पकड़ी और डिस्ट्रिक जेल चल पड़ी. उसे कोई पहुचने में कोई कठिनाई नहीं हुई. जब वह कोठरी तक पहुँची जिसमें करीम तो उसने अपना नक़ाब यूँ उठाया कि सिवा करीम के कोई उसकी सूरत न देख करीम की नज़र पड़ी तो वह भाग कर जँगले के पास आ गया. बोला—

'क़सम से सुलताना तू ?'

उसने नक़ाब की आड़ से आँख के इशारे से समझाते हुए कहा—

'बीवी को छोड़ कर चले आये. कुछ सोचा, मेरा क्या होगा ?'

करीम ने बड़े मस्ताना अन्दाज़ में जवाब दिया—

'तेरा कुछ नहीं होगा मेरी जान ! तेरे लिए तो अप्पन सारी दुनिया छोड़ आया हूँ.'

यह कहते हुए करीम की नज़र निकट खड़े पहरेदार पर पड़ी. उसने उससे

'ए हवलदार, तू काए को मियाँ बीबी के बीच खड़ा है. अप्पन क्या इसमें से निकल भागेगा. अप्पन शेर है शेर, देखता नहीं, जँगले में बन्द है.'

हवलदार ने गुस्से से करीम को देखा तो उसने अपना स्वर बदलते विनम्रता से कहा—

'क़सम से हवलदार, अपनी बीवी से प्यार की दो बात कर लेने दे. तेरे बीवी की क़सम.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवलदार गुस्से से करीम को देखता हुआ कुछ दूर हट गया. करीम ने सुलताना की ओर मुखातिब होते हुए कहा—

'मेरी जान ! तूने फिर जुलुम ढाने को नक़ाब पहन लिया न !'

'देख करीम, यह तेरा घर नहीं, जेल है जेल. आहिस्ता बोल !' सुलताना ने धीरे से कहा.

'जेल है तो क्या बाँदा ! अप्पन तो हमेशा जेल ही में रहा, उधर चाहे इधर. अप्पन को पुलिस ने कभी नहीं छोड़ा.' करीम ने कहा.

'हाँ, तो बता, मेरा क्या होगा ?'

'देख सुलताना, उस रोज तू मुझे पट्टी पढ़ा कर चली गयी, अप्पन तड़प गया, क़सम से. उस दिन तेरी अदाएं देख के अजीब लफ़ड़े में पड़ गया. तू नहीं जानती कि मेरे को तेरे से इश्क हो गया. तेरे जाने के दूसरे दिन कंचन बाई ने मेरे को बहुत तंग किया. अप्पन ने उसके चूतड़ पर लात मार कर उसको बाहर कर दिया. क़सम से तेरी जुदाई में अप्पन को कोई अच्छा नहीं लगा.तू याद आती तो दारू का सारा नशा उतर जाता. अप्पन ने न जाने कितनी बोतलें तोड़ डाली पर तेरे पास नहीं आया. अप्पन तो बताने वाला था कि देख करीम ने कैसी तेरी बात मानी !'

'तू जानता है इश्क़ किसे कहते हैं. इश्क़ में तो लोग जान दे देते हैं. पन मैं तेरे से जान माँगने नहीं आयी हूं.'

'अब देख, तू मेरे को गुस्सा दिला रही है. अप्पन क्या जान नहीं दे सकता ? पन वह तेरे किस काम आयेगी, बोल ! तू फक्कड़ आशिक़ की बात मत कर. अप्पन फक्कड़ है क्या ! देख अप्पन तेरे लिए सब कुछ सह गया. अब मेरे को जेल हो गया तो तेरे को भी जेल ही में रहना है. तू बड़ौदा नहीं जायेगी. करीम ने तेरे को रात भर याद किया है, नहीं तो तू कैसे आती ?'

'मेरे को तेरे से कुछ नहीं कहना है. पन माँ को क्या कहूँगी, वह बुलायेगी तो ?'

'वह तेरे को क्या बुलायेगी. अप्पन उसे एक दिन की उगरानी दिला दे न तो वह खुद चली आवे. रानी ! करीम बन्द है, करीम का धन्दा नहीं बन्द है. तू काहे को फ़िकर करती है. पन देख, करीम के होते तेरे को कोई छू नहीं सकता. देख लफ़ - बाजी मत करना नहीं तो करीम फाँसी पर चढ़ेगा या ज़िन्दगी भर लोखन के दरवज्जे में रहेगा. बोल दे कि तू भी मेरे से प्यार करती है.'

'देख करीम, मैं दो चार दिन के लिए आयी थी. मेरे से धाँधली की बात मत कर, काम की बात कर !'

'काम की बात तो कर रहा, पन तेरे को समझ नहीं पड़ती. क़सम से तू मेरी हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बेनाम ख़तों का मजमून

चंद ख़त मुझे नत्थी मिले,
ज़िन्दगी की पर्सनल फाईल में,
अनऐड्रेस्ड—अनभेजे.
उम्र की हर दहलीज पर—
मेरे क़दमों की आहट कैसी थी,
कण-कण-सा टूटता हर क्षण !
तब मेरे मन की उजाहट कैसी थी,
शायद यही कुछ है उसमें,
बहुत कुछ लिख गया
अनायास जिसमें—
पलकें मिलीं.
सपने जगे,
पौधे से दिन पूँही लगे
पलाश के दिन—
मधुमाली प्यार भरी रातें
आशा के नीड़ पली
स्याह-श्वेत पंखों की वेगवान बातें.
रेतीली दोपहरी—
भॉप-सी उड़ गई छांव
मुरझाये अभिलाषी छंद
झुलस गये सारे आकांक्षी गांव,
गुमसुम-सी बैठ गई पंछी की टोली,
अनजाने बदल गई,
जीवन की बोली,
जमती हुई रोजमर्रा-परतें-दर-परतें,
बंधती हुई घर बनाम खंडहर की शर्तें
चंद बेनाम ख़तों के मजमून,
शायद यही कुछ है—अनभेजे हुए.

—अभिलाष दुबे

जा. मैं तेरे अक्खी दुनिया दे दूंगा.'

'अक्खी दुनिया तेरे बाप की है
तूने मेरे को कैसे लफ़ड़े में डाल दि
तेरे को मालूम नहीं तेरे दाऊद
बीवी बन कर अक्खे बम्बई में
लायक़ नहीं रही. शरीफ़ बन के
मुँह छिपाती फिरती हूं. इससे तो
था कि मेरे को भी जेल हो जाती
से रहती.'

'क़सम से क्या बात बोली है
जा किसी को चाकू मार दे और
आ क़सम से.'

'किसी को क्यों चाकू मारूंगी
तू मेरे को यों ही सतायेगा तो किसी
अपने ही को चाकू मार के मर जाऊं

'अरे तुम अपने पर जुलुम करेंगे

'किसी के जुल्म से तो अच्छा है
अपने ही जुल्म से मर जाये.'

सुलताना का चेहरा इतना उदास
गया मानो वह सचमुच जीवन से वि
हो. करीम ने उसकी उदासी को
करते हुए कहा—

'क़सम से तू तो जालिम है ही
कर न पर अपने पर नहीं, मेरे पर क
अप्पन सब सह जायेगा. क़सम से मेरे
कुछ नहीं बोलेगा तूने मेरे को
लफ़ड़े में डाल दिया है. तू भी मेरे
प्यार कर क़सम से करीम की माशूक
के अक्खे बम्बई में नाम चीन हो जाये

सुलताना ने कोई जवाब नहीं दि
वह इतनी उदास दिख रही थी कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ती ही देगी.

करीम ने कहा—

'बस तू खफ़ा हो गयी न. अच्छा बोल, तेरे को क्या चाहिये. पन समझ के बोलना. तेरे को बड़ौदा नहीं जाना है. तू मेरा कलेजा ठंडा नहीं करेगी तो क़सम से अप्पन एकदम ठंडा हो जायेगा.'

सुलताना ने फिर कोई जवाब नहीं दिया. वह सिर झुकाये हुए चुप खड़ी रही. करीम ही ने फिर से कहा—

'फ़िकर काहे को करती है. सामने हफ़्ता तेरा इन्तजाम कर देगा तो खुश हो जायेगी. पर बोल, हफ़्ता-हफ़्ता आयेगी न ?'

सुलताना ने सिर उठाया और करीम पर एक मुहब्बत भरी नज़र डालते हुए पूछा—

'मैं रहूँगी कहाँ ?'

'दाउद भाई के पास. सामने हफ़्ता उसे लेती आना. अप्पन समझा देगा.'

'वह नहीं आयेगा. तू काएको उसे घसीटता है. एक बार बोल दिया न, वह शरीफ़ है, उसे छोड़ दे.'

'तो अप्पन नहीं जानता क्या ! अच्छा तू ही उसको बोल देना कि करीम भाई ने कहा है. अपना दाऊद भाई बहोत शरीफ़ है. है न सुलताना ?'

सुलताना ने स्वीकृति में सिर हिलाया और पूछा—

'अब जाऊँ ?'

करीम ने सुलताना का जवाब देने के बदले पूछा—

'किसका नक़ाब लायी है. अपनी भाभी का ?'

'नहीं मेरा है.'

करीम ते जंगले में से हाथ बढ़ा कर उसे पकड़ लेना चाहा, लेकिन वह पीछे हट गयी और मुसकरा कर बोली—

'सामने हफ़्ता आऊँगी !'

फिर वह वापस हो गयी.

शाम को दाऊद लौटा तो बहुत थका हुआ था. सुलताना ने आज भोजन नहीं बनाया था इसलिए खाना होटल ही से आया. जब दोनों खाने के लिए बैठे तो सुलताना ने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

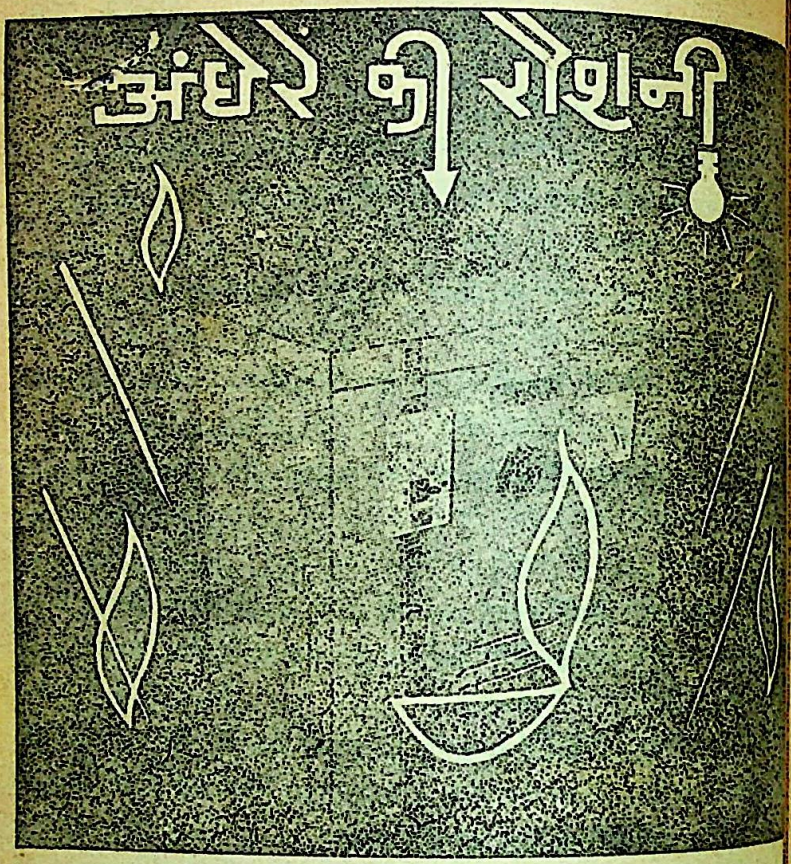

अंधेरे से छुटकारा पाइए
आज ही
'नेशनल इमरजेन्सी लाइट' लगवाइये

विशेषता :—

१. ४० वाट के ५ बल्ब
२. ३ बड़े ट्यूब, १ सीलिंग फैन
३. ८" के २ पंखे (२००० आर० पी० एम०)
४. सम्पूर्ण कार्य प्रणाली स्वचालित
५. १ वर्ष की गारंटी

फोन नं० १२७६० ५४५०९

अमिताभ इलेक्ट्रानिक्स

१४।१ नन्दनसाहूलेन वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मैं आज करीम से मिल आयी.'

'क्या बात हुई ?'

'उस पर मेरे इश्क़ का भूत सवार हो गया है. कहता है मुझे बम्बई में रहना होगा.'

दाऊद ने चिन्तित स्वर में पूछा—

'फिर क्या होगा ?'

'कुछ नहीं होगा. जब तक वह जेल में है, मैं बम्बई में रहूँगी. इसके बाद चली जाऊँगी.'

'उसने न जाने दिया तो ?'

'न कैसे जाने देगा.'

'आशिक़ जो हो गया है.'

सुलताना हँसने लगी. बोली—

'वह लफंगा कि ी पर क्या आशिक़ होगा. जरा जुदाई के दिन लम्बे हो गये हैं न, इसलिए उस पर इश्क़ का भूत सवार हो गया है. और भूत उतरते क्या देर लगती है.'

दाऊद चुप हो गया. कुछ देर बाद सुलताना ने पूछा—

'मैं यहीं रहूं या चली जाऊं ?'

'कहाँ जाओगी ?'

'किसी होटल में.'

'करीम ने कहा है क्या ?'

'नहीं, उसने तो तुम्हारे साथ ही रहने के लिए कहा है.'

'अगर वह कहीं और रहने के लिए कहता तो भी मैं तुम्हें न जाने देता.'

'क्यों ?'

'जब तक तुम बम्बई में हो, मेरी इज्ज़त हो.

[अगले अङ्क में दसवीं किस्त]

पहचान

एक विदेशी भारत में पाये जाने वाले जानवरों और फलों पर रीसर्च कर रहा था. इत्तिफ़ाक़ कि उसे सब कुछ देखने का मौक़ा मिला सिर्फ़ हाथी और आम को वह नहीं देख सका.

एक रोज उसके एक दोस्त ने एक टोकरी आम ला कर उसे भेंट में देते हुए कहा—यह मैंने भारत से मंगाया है. जानते हो इसे क्या कहते हैं ?

अपने ज्ञान का प्रदर्शन करते हुए विदेशी शोध छात्र ने छूटते ही कहा—यह या तो आम होगा या फिर हाथी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिक लीव ओ. के. करते-करते मिस वी. खन्ना का हाथ रुक गया. उसने अप्लीकेशन को दो-तीन बार पढ़ा और फिर हेडक्लर्क से बोली—यह... वी. के. क्या बीमार....

—जरूर होंगे, मैडम. वर्ना विकास बाबू ने कभी सिक लीव अप्लाई नहीं किया—चश्मे के मोटे-मोटे लेंस में से झांकते हुए इत्मीनान से क्लर्क ने उत्तर दिया और अपनी चाँद खुजलाने लगा.

मिस वी. खन्ना ने अप्लीकेशन ओ. के. कर दिया.

उसके बाद जाने कितने कागजात साइन कर दिये, उसे ध्यान न रहा. उसके मस्तिष्क में वी. के. की सिक लीव अप्लीकेशन घूम रही थी. विकास सही ही में बीमार है.

उसे याद आया—बहुत पहले वी. के. यानि विकास कुमार ने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अभिमानिनी

आदर्श मोहन 'सारंग'

दिन की सिक लीव अप्लाई की थी...और साथ मेडिकल सर्टिफिकेट न होने के कारण रद्द कर दी गई थी, पर आज... आज...तो विकास को सिक लीव के साथ मिस वी. खन्ना का कुछ जुड़ गया था...विकास बीमार है ? विकास बीमार है.

उसने बिना ड्राइवर की प्रतीक्षा—परवाह किये स्वयं गैरेज से गाड़ी निकाली. ३१ आर्य समाज रोड, मन में दोहराया और गाड़ी स्टार्ट कर दी....जाने आज उसके अन्दर का कोई कोना उदास-उदास क्यों हो रहा है...जैसे कोई मनीप्लाएट कुम्हला गया हो...मिस वी. खन्ना ने अपने बेडरूम में रखे टेबल पर एक कांच की बोतल में जो मनीप्लान्ट रखा हुआ था, कुछ रोज से उसे लग रहा है कि उसके पत्ते कुम्हलाने लगे हैं...

...जब वह इस आफिस में नई-नई एडमिनिस्ट्रेटिव आफिसर बन कर आई थी तो यह मनीप्लाएट कितना खुश था. उसके अन्दर प्रसन्नता की उमंग थी...आते ही उसने जो पहले नोटिस किया वह था विकास. विकास...आफिस के अन्य बाबू लोगों से भिन्न, सर्वथा भिन्न, गम्भीर और शान्त. बाबू लोग लंच-टी-ब्रेक आदि में परस्पर चुहलबाजी करते पर विकास अकेला बैठा कोई पत्र-पत्रिका पढ़ता रहता था, फिर किसी फाइल में खोया रहता...मिस वी. खन्ना ने उसे अपने केबिन में बुला कर बातचीत की तो उसे विकास की बातों में जीवन की गहराई दीख पड़ी, एक दृष्टिकोण मिला...एक बात जो उसे साल गयी वह थी विकास का सदा गम्भीर बना रहना, विकास का सदा एक ही मुलम्मा चढ़ाये रखना. उसे लगा विकास मानो कभी हंसा ही नहीं है. यही विकास का रीतापन मिस वी. खन्ना के लिए कसक बन गया. क्या ऐसा व्यक्ति भी जीवन जीता है, जो कभी मुसकराया ही न हो ! और एक बार जब मिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बी. खन्ना ने रोमांटिक बात कह दी, वह हल्का-सा मुसकरा दिया. मिस बी. ख
लगा कि कितनी मनमोहक अदा है ! कितना सजीला चेहरा है. काश यह चेहरा
ऐसे ही खिला मुस्कराता रहे.

विकास की वह मुस्कान मिस बी. खन्ना के मस्तिष्क में मानो एक किर
गई, उसे पता तभी लगा जब उसका चित्र डेवेलप ही हो गया. विकास जैसे
कमज़ोरी बन गया.

अपने विषय में विकास से क्या कहे, कैसे कहे, वह निर्णय नहीं कर पाती.
लगता जैसे यह एक सनक मात्र है...वह विकास को कभी अपने कैबिन में बुला
देती, छोटी सी गलती पर लम्बा चौड़ा लेक्चर पिला देती. कई बार वह सोचती
उसे विकास के कार्य की प्रशंसा भी करनी चाहिए, कभी थैंक्स भी कहना च
फिर दूसरे ही क्षण वह डर जाती, उसके अन्दर का कोई मासूम कभी कांप
मानो वह प्रशंसा के शब्द कहते-कहते शर्मा जाएगी, उसके ओंठ थिरक उठेंगे
शुष्क हो जाएगा...

डपट देने के बाद वह अपनी तेज चलती धड़कन को काबू करने का यत्न
जैसे बहुत ज्यादा थक गई हो, वह निढाल-सी कुर्सी पर पड़ जाती—एक ओर
कैनटीन का बैयरा झट ह्विस्की वाले गिलास में आइसचिप्स डाल कर कोक ले
जाने कितनी ज्यादा बर्फ होगी उसमें उसे पता नहीं ही लगता. अच्छी ही लगती

आखिर उसका भी उसने समाधान निकाल लिया.विकास को असिस्टेण्ट प्र
अ फिसर प्रमोट कर दिया.

वह पहले की तरह डांट पिलाने लगती तो उसे ध्यान आता, अब वह
केडर का व्यक्ति है, उसको क्लर्क-सा व्यवहार तो नहीं मिलना चाहिए.... अ
उसको कभी-कभी बी. के. साहब या बिकास बाबू भी कह लेती. मिस्टर
संबोधन से तो शायद ही बुलाती. विकास कहते हुए उसे एक विशेष सुख की
होती मानो वह किसी गुलाब के ताज़ा फूल से अपने गालों को सहला रही हो,
ओठों पर शबनम की बूंदे फिसल रही हों...और उस रोज जब वह विकास
'पिया का घर' देख कर आयी तो उसे लगा,जैसे उसे अपना सपनकुमार मिल गया
—विकास मैं अब तुम्हारे बिना नहीं रह सकती.

—रह तो शायद मैं भी नहीं सकता....पर क्या करूं मिस बी. खन्ना...

—बी खन्ना नहीं....वर्षा...केवल वर्षा तुम्ह री वर्षा...वह विकास से
गयी—मुझे यह पर-पर का कवच नहीं चाहिए विकास.

—भावुकता में...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—भावुकता ? विकास यह कोरी भावुकता नहीं, मेरा निर्णय है...मेरा विवाह होगा तो विकास से.

—विवाह के विषय में मैं अभी सोच नहीं सकता. मेरे पर बहुत-सी घरेलू जिम्मेदारियां हैं.

—मैं उनमें तुम्हारा साथ दूंगी, तुम्हारी राह बनूंगी—उसने विकास के बालों में अंगुलियां फिराते हुए कहा था.

—तुम्हारा साथ पा कर जीवन एक सुखद अनुभूति बन जाएगी.विकास ने उसकी अंगुलियों को चूम लिया....

कालबेल का बटन दबाते ही वर्षा का हाथ कांपने लगा.उसकी भावी ससुराल.

—विकास बाबू इधर ही रहते हैं ?

—क्यों कहिए ? जैसे पत्थर मारा एक आवारा छोकरे ने.

सिक लीव.

—उसकी तबीयत नासाज है न.

—तो ?

कैसा बदतमीज छोकरा है. उसका मन हुआ कि उसे डांट दे, सिल्ली फैलो. पर चुप ही रह गई. संयत स्वर में बोली—मुझे उनसे मिलना है...मैं उनकी कुलीग हूं—अपना यह झूठ उसे अच्छा लगा.

—अम्मा...आप भैया से मिलना चाहती हैं, उसने बड़ी लापरवाही से घोषित किया और स्वयं बालों में कंघा करते हुए बाहर निकल गया.

तो यह उसका देवर है. वर्षा के ओठों पर मुस्कान खेल गई. बड़ा नटखट है. लाड-प्यार से पला मालूम होता है.

—अन्दर आ जाओ मुन्ना, ममता ने वर्षा को अपने में बांध लिया.

वर्षा एकदम सकुचा गयी. उसने पहली बार महसूस किया कि वह एक जवान लड़की है, जिसे जल्दी ही बहू बनना है.

और उसकी यह अनुभूति और भी गहरी हो गयी जब उस ४०-४५ की महिला ने उसके सिर पर प्यार देते हुए सोफे पर बिठलाया और पंखा छोड़ते हुए बोली—

—विकास डाकदर से दवा लेने गया है, आता ही होगा...तो बेटा तुम विकास के दफ्तर में काम करती हो ?

—हां, मांजी. वर्षा ने स्वर को सहेज कर उत्तर दिया.

और फिर उसने वर्षा से कितने सारे प्रश्न पूछने शुरू कर दिये. मानो वह किसी इन्टरव्यू में बैठी हुई हो. वही नपी-तुली भाषा में वह नम्रता पूर्वक उत्तर देती गयी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उसके अन्दर से जैसे कोई खीझने लगा था, वर्षा ने खुद को समझाया, उसे एक बहू भी तो बनना है—बहू, जिसे सास के सामने नम्र रहना है, सास का करना है, सास का प्यार लेना है.

कटलेट्स, काफ़ी का प्याला—रखते हुए वह थोड़ी झिझक गयी. वर्षा ने देखती ही रह गयी. इतनी विपुल रूप राशि. किसी कवि की कल्पना से भी एलोरा अजन्ता की गुफ़ाओं की मूर्तियाँ भी इसके सामने शर्माने लगेंगी. पतली गोरी-गोरी अंगुलियां....और फिर वर्षा ने अपनी अंगुलियों की ओर देखा, पर बनाई गई हों. उसमें (वर्षा में) कुछ भी तो ऐसा नहीं है जिसमें उसके का बाध हो. और रही-सही कसर उसने स्वयं यह जीन्स और कुर्ता पहन कर दी है—पहली बार उसे अपने इस पहनावे पर खीझ आयी. आज से यह पहना करेगी, कितनी फब रही है यह उस पर.

—बेटा, यह विकास की बहन है मोना—मेरी बेटी.

अर्थात् उसकी ननद. शुक्र है भगवान का कि यह उसकी देवरानी नहीं है. इस घर में मोना के सामने वह एक नौकरानी लगती.

नौकरानी. वर्षा के अन्दर एक हीनता की भावना उभर आई. उसे लगा, और मोना को आमने-सामने रख कर उसका निरीक्षण किया जा रहा है. करके उसने एक गिलास पानी मांगा.

पानी पी कर वह कुछ संयत हुई तो उसे अपना प्रसंग याद आया, वह इस बहू है, मीना इस घर की बेटी और उसकी ननद है.

मीना की मां बोली—बेटा देखा, भाई बहन में कितना अन्तर है. एक एकदम आवारा. और एक मोना है—बिलकुल देवी...विकास को इन चिन्ता रहती है.

वर्षा इस प्रसंग से बोर हो रही थी. पर वह सुन रही थी क्योंकि इस घर बहू होने के नाते उसको सुनना चाहिए.

—पर माँ जी, मीना दीदी के लिए तो आपको चिन्ता होनी ही नहीं चाहिए. लिये तो आपको अच्छे से अच्छा घर-वर मिल सकता है, वर्षा को लगा, वह सहज में इस घर में अपना स्थान बना लिया है.

मोना की मां ने एक गहरी स्वांस ली और बोली—बेटा, इसी की तो है—गूंगा होना कितना बड़ा अभिशाप है, यह मेरे दिल से पूछो.

—तो मोना गूंगी है.

—हाँ बेटा. स्वर क्षीण और भीगा हुआ था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मोना जो क्षण भर पहले वर्षा को किसी कवि की कल्पना से परे, विधाता की अनुपम रचना लग रही थी, अब शो केस में रखी हुई एक गुड़िया लगने लगी.

बेटा तुम अपना मन क्यों भारी करती हो.

इतने में विकेश ने आ कर घोषणा की—मां भैंया आ गए.

विकास.

सारा घर विकास के लिए उमड़ पड़ा—बेटा, इतनी देर क्यों लगा कर आये हो ? क्या कहा डाकदार ने ? जैसे प्रश्नों की झड़ी लगा दी मां-बेटे ने. वर्षा सोच रही थी—वह इस घर की बहू बन कर आएगी. उसे देवर विकेश, ननद मोना, मां जी, पापा जी का ध्यान रखना होगा, सबको सुनना होगा, और इन सबसे बढ़ कर विकास को. वह इन सबकी उत्तरदायी होगी. वर्षा को अपने अन्दर कोई कचोटता हुआ महसूस हुआ. उसे अपनी आफिस वाली स्वतंत्रता छोड़नी होगी. वहां सब लोग उसके मूड का ध्यान रखते हैं, यहां उसे सभी के मूड का ध्यान रखना होगा, और सबसे बढ़ कर विकास के मूड का. उसे अपनी महत्वाकांक्षा का त्याग करना होगा.

क्या वह यह कर पायेगी ? यह प्रश्न उसके मस्तिष्क में वातचक्र की भांति घूमने लगा, उसकी नसें तन गयीं, सिर जैसे फटने लगा.

इससे पहले कि वे लोग विकास को ले कर उसके पास आते, उसने बैठक का दरवाजा खोला और जीप पर आ बैठी.

आफिस पहुँचते ही उसने दो काम किये—पहला, विकास का दिल्ली डिवीजन से ट्रान्सफर, दूसरा अपने लिए कल की सिक लीव.

—३ जी-३८ न्यू इण्डस्ट्रियल टाउन फरीदाबाद (हरियाणा)

नौजवान ने प्रेमिका के पास चुपके से आ कर उसकी आँख बन्द कर दी, एक चीख लगायी और उसे चूमते हुए पूछा.

—क्या तुम इन तीन संकेतों के आधार पर यह बता सकती हो कि मैं कौन हूँ ?

—सतीश कुमार बन्ना, चोपड़ा, श्रीवास्तव या फिर माथुर.

✕ ✕

यदि मैं तुम्हारी बीवी बनना कबूल न करूँ तो क्या तुम सचमुच में आत्महत्या कर लोगे

—बिलकुल यह तो मैं कई बार कर चुका हूँ.

✕ ✕

लड़की ने प्यार से मचलते हुए कहा—क्या मैं तुम्हें अच्छी लगती हूँ ?

—इस समय तुम किसी भी और लड़की से ज्यादा अच्छी लग रही हो.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एहसास

नीर शबनम

ऋतु ने कॉरिडार में खड़े हो कर आने वाले प्रोफेसरों का
मनीषा को देना शुरू किया. अचानक दूर से ही मिस्टर दास को
ऋतु की आवाज फट गई, 'देख, देख मिठा, ये हैं इस
सर्वाधिक हैंडसम, इंटेलिजेंट-मोस्ट और सबसे ज्यादा
प्रोफेसर.'

'क्या मतलब ?'

'तू अभी नई है, जल्द सब कुछ समझ जायेगी. तूने
प्रोफेसर की बात पूछी थी न, वे ही हैं ये मिस्टर दास.
में जितने फेमस, उतने ही कालेज में डीफेम्ड. इनका
काना है, प्यार इनका मज़ा है और फिर ऐसे सुन्दर
क्यों न फंसें ?'

'दीदी बात को मिर्च-मसाला लगाने की तुम्हें बड़ी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

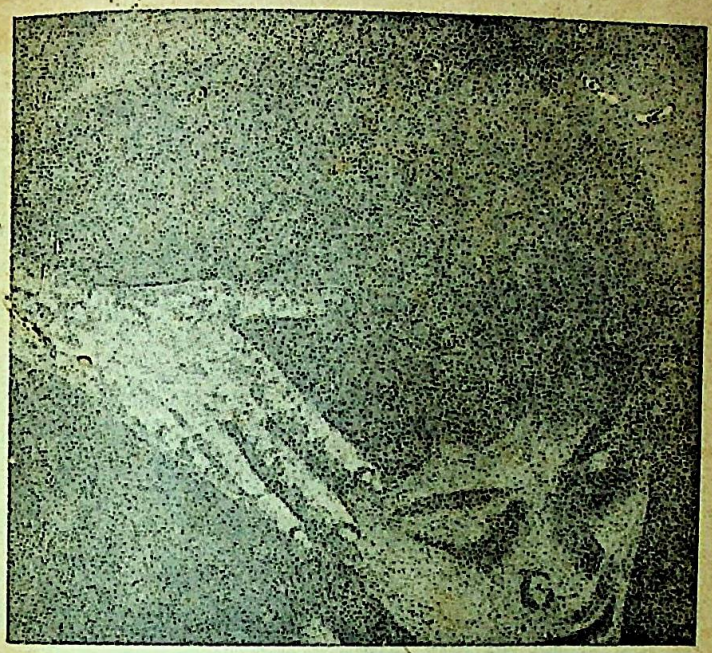

'चाहे जो समझो पर इनसे बच कर रहना मनी.'

'कोई हौवा है क्या ?' मनीषा ने साश्चर्य पूछा.

'हां, हौवा ही हैं. कालेज कॉरीडर में कोई लड़की इनसे एक बार भी बात-चीत करते पाई गई कि दूसरे दिन लोग उसे मिसेस दास कह कर पुकारना शुरू कर देते हैं.'

'ज़रा तुमने आंख मारी नहीं कि हो जायेंगे तुम्हारे पीछे.' ज्योतिका ने हंसी उड़ाई.

'इतना उथला आदमी तो नज़र नहीं आता यह.'

'हां. क्योंकि उसका व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा है प्रभावशाली और रोबीला.'

'जो इसकी हो गई वही युनिवरसिटी में टाप कर गई समझो. तीन वर्षों से यही हो रहा है यहां, क्या युनिवरसिटी में कोई लड़का इतना इंटेलिजेंट नहीं रहा जो...' मनु कहती जा रही थी.

'यह सब इन्हीं महाशय की मेहरबानी है.' ज्योतिका बोली.

'ऐसे प्रोफेसर को युनिवरसिटी निकाल क्यों नहीं देती ? ऐसी सड़ी मछली से तालाब गन्दा तो होगा ही. पर लड़कियां भी कैसी हैं जो अपने चरित्र का ज़रा भी लिहाज नहीं रखतीं ?' मनी को आश्चर्य हो रहा था पर क्या ताली एक हाथ से बजती है, वह सोचने लगी.

'पर मनीषा, इस कालेज का सर्वाधिक विद्वान भी यही व्यक्ति है. ये चले जायें तो युनिवरसिटी कंगाल हो जाये.'

'गज़ब का 'काम्बिनेशन' है.' मनीषा को कौतूहल हुआ.

'हां, तुम्हारा ही सब्जेक्ट पढ़ाते हैं ये.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

● दीपावली अभिनन्दन

PEACOCK BRAND

आपके
कागज़ और बोर्ड
की हर
ज़रूरत की
पूर्ति के लिए
हम
तत्पर हैं.

महेश ट्रेडिंग कम्पनी

मैप लिथो, उड फ्री प्रिंटिंग पेपर, सभी प्रकार के पोस्टर
क्राफ्ट एवं बोर्ड के स्टाकिस्ट.

बुलानाला, वाराणसी—फोन : ६४८१६

वितरक—

● ओरिएंट पेपर मिल्स लि० ब्रजराज नगर (उ
● दी सिरपुर पेपर मिल्स लि० सिरपुर (आंध्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ओह !'

'अब तुम्हीं सोचो मार दिया जाये या छोड़ दिया जाये, हम तो चलीं.' ज्योतिका ने अपना आखिरी बाण चला ही दिया.

'देखा मनीषा इस दास के बच्चे को ? अब तक मेरे साथ रोज़ क्लब में टेबल-टेनिस खेला करता था, अब मेरी ओर आंख उठा कर देखता तक नहीं. रोज़ रीना की कार में आता है अब.'

'तो दुख क्यों मना रही हो मंजू. दो दिन बाद रीना भी उतर जायेगी दिमाग़ से और कोई मीना चम्पा छा जायेगी.'

'तुम ठीक कहती हो. ऐसे आदमी के लिए दुख भी क्यों मनाया जाये ? आज इसकी कमर में हाथ डाल कर नाचता है तो कल उसकी कमर में हाथ डालता है. आइ हेट हिम. आइ हेट हिम.'

'नहीं, नफ़रत नहीं, यह व्यक्ति दया के क़ाबिल है मंजू.'

उसी शाम मनीषा और ऋतु ने देखा कि मिस्टर दास की मोटरसाइकिल की पिछली सीट पर रूपा बैठी है.

'यह तो तुम्हारी क्लासमेट है ?' ऋतु ने पूछा.

मनी बोली 'अजीब व्यक्तित्व है, सदा गोपियों में कृष्ण बना रहता है यह दास.'

'नहीं मणि, हर बार नई चिड़िया फांसता है यह शिकारी.'

'लेकिन चिड़िया है कि जाल देख कर भी खिंची चली आती है.'

'यही तो आश्चर्य है. इसका आकर्षण इतना तीव्र है कि जानते हुये भी कि यह व्यक्ति वफ़ादार नहीं है उसी के पीछे पड़ी रहती हैं. लड़कियों में तो काम्पीटीशन चल रही है कि देखें कौन आज मिस्टर दास का पार्टनर बनता है.'

'तो अब समझी, बात एकदम उलटी है.'

'तुम कहना क्या चाहती हो मनी ?' ऋतु चौंक पड़ी.

'यही कि मिस्टर दास किसी को भी प्यार नहीं करते. वे तो सिर्फ़ 'चांस' देते हैं लड़कियों को और लड़कियों की इस बेवक़ूफी का मज़ा लूटते हैं, बस और कुछ नहीं. मुझे तो लगता है वे ज़रूर किसी को बेहद प्यार करते रहे होंगे और अब उस लड़की की बेवफ़ाई का बदला सबसे लेने लगे हैं. वे तो 'मैं नदिया फिर भी मैं प्यासी' उक्ति चरितार्थ करते से जान पड़ते हैं मुझे.'

'किसी से बेहद प्यार करने की बात करती हो तुम ? यह कृष्ण कन्हैया तो बस भंवरा है भंवरा. वह किसी एक कली पर टिक कर रहने का नहीं. मनी, ऐसा समझना तुम्हारी भूल है.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तुम उन्हें जो समझ रही हो, वह सही नहीं है दीदी. उन्हें आज तक नहीं समझ पाया. यदि इन लड़कियों से, जिनके साथ वे खेलते हैं क्लबों में, हैं, पिक्चर जाते हैं, जरा भी उन्हें प्यार होता तो वे उनकी इज्जत भी पर इन्हीं को अपनी क्लास में किसी-न-किसी बहाने ज़लील करते हैं. एक दिन मिस फर्नान्डीज़ केवल एक मिनट देर से आई, हांफते-हांफते चढ़ कर दरवाजे के पास खड़ी थी, अन्दर आने की अनुमति मांगती हुई. बोले, क्यों ? तुम्हारे ब्वाय फ्रेण्ड ने तुम्हें इतनी देर से छोड़ा ? क्या नहीं कि पहला पीरियड मिस्टर दास का है ? एक बार मिसेस सिन्हा थे, बाकी डीफीकल्टीज़ कल पूछ लेना, आज आपके पति आपका इन्तज़ार करते बोर न हो जायें कहीं. सारी क्लास के सामने उन्हीं लड़कियों का करना, जिनके साथ उन्होंने शामें बिताईं हों, इसका क्या मतलब ?'

'मनी तुमने सबकी बातें बताई पर अपनी नहीं. क्या सच तुमने से बातें नहीं की ? या दास ने ही तुम्हारे कटीले नयनों की ओर अब तक कर नही देखा, ऐसा मैं तो नहीं मान सकती.'

वह बोली 'एक दिन की बात है, अचानक उन्होंने रीना से पूछा—कौन-ज़ीन है तुम्हारी डेस्क के नीचे ? हां, और कौन-सी होगी फ़िल्मफेयर के सिवा के अलावा और किस बात में इण्टरेस्ट है तुम लोगों को? इतना कह कर से नीचे उतर आये, मेरे सामने खड़े हुए और पूछ बैठे—यह कौन-सी लायब्रेरी की है न ?'

—जी. हिस्ट्री आफ इंग्लिश लिटरेचर. लिगवीस की लिखी हुई.

—कौन-सा ह्वालूम है ?

—१७४० से १९६० तक का.

—बड़ी स्टूडियस हो तुम तो—

—बताओ दीदी, सबके सामने जहां एक ओर रीना को अपमानित किया, पर कमेंट्स करने का क्या मसक़द था भला ?'

'लगता है वे तुम्हारी बहुत इज्जत करते हैं.'

'अगर यही बात है तो कारण क्या है ?'

'इसलिए कि तुम उनकी ओर खिंची नहीं, औरों की तरह.'

'एक दिन उन्होंने लायब्रेरी में मुझसे कहा था—तुम्हें रोज़ यहां पढ़ते हूँ. बहुत पढ़ती रहती हो, मुझे ऐसे ही स्टुडेण्ड अच्छे लगते हैं. मैं भी ४ बजे तक यहीं रहता हूं तुम्हे डिफीकल्टीज़ हों तो पूछ लिया करना और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओपेरा के सामने मिल गये थे मिस्टर दास, मंजू के साथ. उन्होंने टिकटें खरीद लीं और कहा—तुम्हें शायद टिकट नहीं मिली, आओ हमारे साथ. कहा—नहीं सर, मैंने अपनी सहेली को यहीं मिलने के लिए कहा था, शॉपिंग के और दूसरे, अपने प्रोफेसरों के साथ बैठ कर सिनेमा देखना मुझे पसंद भी नहीं है, गुरु और शिष्या का संबंध मेरी दृष्टि में बड़ा पवित्र है सर. आय एम वेरी सर.'

उस दिन रीना के घर पार्टी थी. बॉलडांस हो रहा था, मिस्टर दास सबके बीच बने बड़े अच्छे लग रहे थे. हर लड़की उन्हें अपने हाथों से एक-एक जाम शराब भर कर दिये जा रही थी. मनीषा से देखा न गया, 'अब और नहीं सर, बहुत लिया आपने.'

'मनीषा तुम भी एक जाम पिला दो साक़ी बन कर.'

'नहीं. मैं इतने नीचे नहीं गिर सकती.'

'तो तुम समझती हो हम इतने नीचे गिर चुके हैं ? देखो तो ये सब कितनी खुशी मना रही हैं.'

'हां, इन्हें आपकी बरबादी से दुख नहीं होता, इसीलिये.'

'तुम्हें दुख क्यों हो रहा है मनीषा ?'

'इसलिये कि आप दूसरों से बदला लेते-लेते स्वयं अपने आप से लेने लगे हैं. इस नशे में अपने आपको पहचानिये सर.'

'तुम मेरा अपमान कर रही हो. मैं पीऊंगा और पीऊंगा.' दास चीख से उठे.

दूसरे दिन मिस्टर दास ने इस्तीफा दे दिया था.

होस्टल में बैठी सारी लड़कियाँ आश्चर्य व्यक्त कर रहीं थीं कि दास ने ऐसा किया. तभी मनीषा बोली, 'दीदी, मुझे लगता है, इस आदमी को मैं बदल सकती हूं.'

'क्या पागलपन है यह !'

'हाँ दीदी, मैं इसे एक दिन बदल कर रख दूंगी. यह दुनिया का बहुत सताया हुआ व्यक्ति है.'

फिर पता चला दास कैंसर पर रिसर्च करने जा रहे हैं, इसीलिए उन्होंने इस्तीफा दिया है—अखबारों में एक विज्ञापन छपवाया था, उन्होंने—एक.एम.एस.सी. उत्तीर्ण स्टूडेंट की जरूरत है जो घर के सारे कामकाज से ले कर सेक्रेटरी तक का काम संभाले.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंटरव्यू के समय बीच में एक जालीदार पार्टीशन लगा हुआ था, इस ओर थी और उस ओर मिस्टर दास. एक ही प्रश्न किया था उन्होंने, 'क्या मैं करूँ कि विज्ञापन में दो गई सारी बातों की तुम्हें जानकारी है ?'

'जी हां.'

'तब आज से काम शुरू कर दो.'

'यह जाने बिना कि मैं कौन हूँ, क्या हूं.'

'तुम लड़की हो, इतना काफ़ी है मेरी जानकारी के लिए.'

'क्या मतलब ?' मनीषा चौंक पड़ी, 'आप डांस करना चाहेंगे या शराब चाहेंगे तो मैं साथ नहीं दे पाऊंगी.'

'यह सब नहीं होगा.'

'पर आप तो आशिकाना मिज़ाज के हैं. आपको तो रोज़ नई लड़कियां... मतलब बहुत-सी लड़कियां आपको प्यार करती हैं.'

'सब झूठ है. न कोई मुझसे प्यार करता है, न मैं किसी से.'

'तब रोज़ जो आपका रूप नज़र आता है ?'

'वह एक धोखा है. अगर सबसे अधिक मुझे घृणा है तो वह है लड़कियों से. इसीलिये मैंने तुम्हारी सूरत भी नहीं देखी.'

'आप लड़कियों से घृणा करते हैं ?'

'हद दर्जे तक.'

'फिर मुझे नौकरी पर क्यों नियुक्त किया आपने ?'

'ताकि घर का कामकाज सब ठीक तरह से हो. यह सब एक लड़की ही कर सकती है.'

'मेरा नाम जानना ज़रूरी नहीं ?'

'नहीं. ज़रूरत पड़ने पर घण्टी बजाया करूंगा.' वह चौंकती है 'तुम्हें सामने आने की ज़रूरत नहीं, न मुझसे बात करने की ही कभी करना.' वह हैरान होती है. दास आगे कहते हैं, 'यह रहा मेरा टाइमटेबल. इसके अनुसार तुम्हें चलना होगा. गिलास में पानी न हो तो पानी भर देना, कागज़ न हो तो जाऊं तो टाइप कर देना, पेन में स्याही न हो तो स्याही भर देना. स्याही की दूसरी इंकपॉट रख जाना. समय पर तुम्हें तुम्हारा वेतन मिल जाया करेगा. तुम नौकर हो.'

'आप यह मौन व्यस्तता के कारण रखेंगे ?'

'नहीं. लड़कियों से बातें करना मुझे पसन्द नहीं.'

मनीषा सोच में पड़ गई, इस स्थिति में वह मिस्टर दास को कैसे बदल सकती है ? पर उसने हिम्मत नहीं हारी. दिनों तक मिस्टर दास के दर्शन नहीं होते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना काम बराबर करती. कभी मिस्टर दास ने कोई शिकायत नहीं की. मनीषा को याद नहीं आता कि कभी मिस्टर दास ने उसका चेहरा भी देखा हो.

तेरह वर्ष बाद एक दिन मिस्टर दास अपनी प्रयोगशाला में खुशी से चीख उठे—'मिल गया, मिल गया इलाज. कैंसर अब दुनियां से नष्ट हो जायेगा. कोई है, अरे कोई है यहां ? मेरा प्रयोग सफल हो गया. हा! हा! हा!' मिस्टर दास खुशी के मारे झूम उठे.

उसी समय बाहर से कुछ लोग द्वार खटखटाने लगे. वे बोले, 'दास साहब, आपके घर से बड़ी दुर्गन्ध आ रही है.'

मिस्टर दास ने द्वार खोला तो सारे लोग अन्दर आ गये, 'आह ! यह रही लाश.' वे चीख पड़े.

'लाश ?' मिस्टर दास ने जांच की और विह्वल हो उठे 'हाय मैंने कैंसर का इलाज खोज निकाला और तुम कैंसर से ही चल बसी. आह ! कैसी विडंबना है यह.'

'यह क्या, आपको इनके मरने की कोई खबर नहीं ? लगता है आपने दो-चार दिनों से खाना भी नहीं खाया. रखे-रखे खाना भी खराब हो गया है और दुर्गन्ध फैला रहा है, इस लाश की तरह ही. पर यह स्त्री कौन है ?'

मिस्टर दास झुकते हैं, घुटने टेक कर, मनीषा के माथे पर एक स्नेहसिक्त चुंबन अंकित करते हैं. 'वह चली गई.' मिस्टर दास पागलों की तरह अपने सारे कमरों का चक्कर काटते रहे और लोगों से बताते रहे—'वह चली गई, इस घर को सूना कर चली गई. देखो यह चूल्हा ठण्डा पड़ा है. यह इंकपाट खाली पड़ा है. पानी का घड़ा खाली है, टाईपराइटर गतिहीन है. जब तक वह थी, मैंने उसका अस्तित्व जाना नहीं, पर आज जब वह चली गई तब लगता है मेरा घर एक बारगी ही सूना हो गया है.'

मिस्टर दास ने टाईपराइटर पर लगा हुआ एक काग़ज़ देखा जिस पर लिखा था, 'आपको और मेरी दोनों की तपस्या पूर्ण हुई.'

'हां मनी, बिना तुम्हारी तपस्या के मेरी तपस्या कभी पूर्ण हो नहीं पाती. तुम्हारी कुर्बानी के कारण ही मैं यह सफलता प्राप्त कर सका, इसका सारा श्रेय तुम्हें ही है.' मि॰ दास ने रूंधे हुए गले और छलछलाई आंखों से कहा, 'आज जब मैंने जाना कि प्यार क्या होता है, तुम जा चुकी हो. हाय मैंने जाना भी तो बहुत देर बाद... बहुत देर बाद....ओफ़ यह एहसास....मुझे जीने न देगा...' कहते-कहते मि. दास सीढ़ियों पर लुढ़क गये.

डॉक्टर ने जब नब्ज थामी तब मिस्टर दास टूटे-फूटे शब्दों में इतना ही कह पाये, 'मेरा जीना अब मुश्किल है डाक्टर. मेरी यह आखिरी ख्वाहिश है कि आप हम दोनों को एक ही क़ब्र में दफ़न कर देना.'

—समाधिवार्ड, चन्द्रपूर, महाराष्ट्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(पृष्ठ १० का शेष)

के लिए माँगता है. दाऊद हाँ कह तो देता है पर निचुड़ जाता है, भीतर ही घुटने लगता है. सुलताना इस बात को सुन कर बेहद नाराज़ होती है और करीम के पास जा कर उसे धिक्कारती है—दाऊद जैसे शरीफ़ आदमी की इज्ज़त आबरू पर हाथ डालते तुझे शर्म नहीं आती. इस पर करीम की हुज्जत और आत्म जागती है. सुलताना वैसे ही पाक़ हाल में लौटती है पर दाऊद बहुत ही विह्वल आत्मग्लानि से पीड़ित और मलिन हो उठता है. सुलताना तो सो गयी पर रात देर तक करीम की बातों को ले कर डूबता-उतराता रहा. फिर सो गया. सुलताना की मज़ाक़ भरी बातों ने उसे फिर मलिन कर दिया. लेकिन फिर नींद आयी. दोनों समद सेठ के यहाँ जाते हैं, इतवार बिताने. वहाँ सुलताना की बातों लतीफ़ों से सभी बेइन्तिहा खुश होते हैं और समद सेठ दाऊद को साहित्यिक रूप प्रभावित. फिर दोनों घर लौटते हैं. रास्ते में सुलताना की चुटीली बातें दाऊद को कचोट से भर देती हैं. फिर भी एक गहरी आत्मीयता सुलताना के प्रति उभरती है और सुलताना है कि बेबाकी से कायनात की ओर दाऊद का मन मोड़ है और उससे मिल आने की सलाह देती है. दाऊद अगले दिन जनता पब्लिकेशन है और अपनी तरक्की की बात मैनेजर सलमान से सुनता है, खुश होता है बेहद कर शाम को इस खबर से बेहद दुखी भी कि करीम को तीन महीने की सज़ा गयी. सुलताना से मुक्ति पाकर वह कायनात के साथ अपनी नयी जिन्दगी शुरू की सोच भी न पाया था कि सुलताना उसके लिए और लम्बी अवधि के लिए पड़ गयी. सज़ा की बात जब सुलताना सुनती है तो बेहद खुश होती है पर इस बात से थोड़ी चिन्तित भी कि उसे रुपये कैसे मिलेंगे. दाऊद की उलझनें जा रही हैं. सुलताना जैसी नेक और साफ़ दिल औरत का साथ होना और दोनों ही उसमें एक तनाव पैदा करने लगा है, एक कशमकश, एक मानसिक तान. दूसरे रोज़ सुबह ही वह कायनात से मिलने जाता है. और उसे किताब छापे जाने की सूचना देता है. साथ ही उसे प्रकाशन मैनेजर सलमान से मिलने राय देता है.' चाय-नाश्ते के दौर में बातों का आत्मीय दौर चलता है और दोनों एक दूसरे को काफ़ी क़रीब महसूस करते हैं. वापस आते वक्त वह कायनात को से मिलने के लिए कहता है. रेणु से वह मिलती है. दोनों में वेश्यावृत्ति पर बातें बातें होती हैं. रेणु उससे बहुत प्रभावित होती है और आर्थिक सहायता की रती है.—सं०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनारसी साड़ियाँ
सिल्क
आरगंजा
काटन जार्जेट
प्लेन मटेरियल्स
का थोक
विक्रय-केन्द्र

विशिष्टतापूर्ण
मनोनयन
एवं
चयन
के लिए

फोन: ६३/६६
कला निकेतन
सी के १३/११ लक्खीचौतरा • वाराणसी •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्वीकार स्वीकार

●

शशिकर

तपन के पास मैं दो दिन के लिए आया था पर उसके आग्रह सप्ताह भर के लिए ठहर गया हूं. उसके आग्रह का कारण है, न अस्वस्थता—अस्वस्थता आंखों की. आंखों में पीड़ा है पर आंखों से उसे इस बात की पीड़ा है कि अस्वस्थता के कारण उसका धन्धा, पढ़ना-लिखना भी बन्द है. मेरी उपस्थिति से पीड़ा की में काफ़ी कमी आती है—मैं उसके लिए पत्र-पत्रिकाएं पढ़ देता हूं में आई चिट्ठियों को सुना देता हूं. निर्देशानुसार चिट्ठियों के देता हूं. इसी क्रम में मुझे बेला की चिट्ठी पढ़ने को मिली.

बेला को मैं बहुत वर्षों से इस रूप में जानता हूं जिस रूप में ने मुझे बतलाया है. बेला तपन की विवाहिता है. वर्षों से एक बात नहीं है, मुलाक़ात नहीं है, किसी तरह का सरोकार नहीं है.

बेला शिक्षिका की ज़िन्दगी जी रही है. बेला को मैंने सर्वप्रथम नव-वधू के रूप में देखा था. वह छवि मेरी आंखों के सामने है—बेला, सुन्दरता की चरम सीमा पर पहुंची हुयी बाला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दरता या तो मैंने देखी नहीं है या इतने क़रीब से छटा निहारने का सौभाग्य नहीं मिला. उसी बेला का आज तपन के साथ कोई सरोकार नहीं है या अधिक सत्य यह है कि तपन का बेला से कोई सरोकार नहीं है. बड़ा आश्चर्य लगता है मुझे क्योंकि बेला इतनी आकर्षक है कि नहीं चाहने पर भी अनायास वह ध्यान पर अधिकार कर लेती है. उसी रूपमयी बेला की चिट्ठी आज डाक से आयी है. चिट्ठी इस प्रकार शुरू होती है—

प्राणप्रिय,

चरण स्पर्श.....

इतना सुन लेने के बाद तपन के माथे पर सलवटें आ गईं.

किसकी चिट्ठी है ?

मैंने नीचे नाम देख कर कहा—बेला की.

—फाड़ कर फेंक दो,तीखे स्वर से कहा तपन ने. पीड़ा से अभिभूत हो कर उसने अपनी दिनचर्या बिगाड़ ली. आगे की दूसरी चिट्ठियाँ नहीं सुनी उसने.

मैं वहाँ से उठ कर चला आया, मगर किसी अज्ञात आकर्षण के कारण मैं पत्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

● दीपावली शुभ हो

न्यू काश्मीर एण्ड ओरिएण्टल ट्रांसपोर्ट प्रा० लिमिटेड

NKT

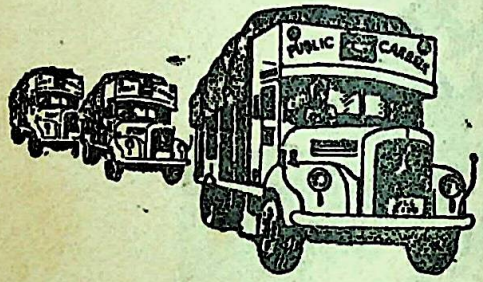

वाराणसी बुकिंग • ६५७७६ : डिलिवरी एवं आफिस : ६२४७१

मैनेजर • आवास : ६६४०४ : गोदाम : ६२२९१

एजेंसियां—उज्जैन, खलीलाबाद, आगरा, जयपुर, सीतापुर, लखीमपुर, गोरखपुर, अम्बाला, जम्मू, श्रीनगर (काश्मीर) बेंगलोर, बड़हलगंज, बड़ौदा, मैसूर, हैदराबाद, मद्रास, सलीम, त्रिचुर, सिकन्दराबाद, मदुराई, बेझवाड़ा, गोवा, बम्बई, ग्वालियर, गाजीपुर, मेरठ, सूरत इत्यादि. चेयरमैन एल. एच. कपूर

● उत्तर प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ भार-वाहन स्वामी ट्रांसपोर्टर्स
रजि० आफिस—फ्लैट न० १० नवीन मार्केट, कानपुर-
फोन : ६७४५५

● सुविधाएं—इन्श्योरेंस कराने पर माल की पूरी जिम्मेदारी हमारी होगी. आपका क्लेम भी एक माह के भीतर चुकता कर दिया जायगा.

हमारी सेवाएं देश भर में सभी प्रमुख शहरों में उपर्युक्त ब्रांचों एवं एजेंसियों द्वारा प्राप्य हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फाड़ कर नहीं फेंक सका. मेरा मन पत्र पढ़ने को ललक उठा और मैं पत्र पढ़ने लगा. पत्र इस प्रकार था—

यह पत्र मेरे जीवन की साँझ के समय का है या ठीक से कहूँ तो जीवन-दीप बुझने के समय का है. पता नहीं इस पत्र के भाग्य में क्या है? पत्र आप तक पहुँच पाएगा या नहीं, पहुँचने पर आप इसे पढ़ेंगे भी या बिना पढ़े फाड़ देंगे. जहाँ तक अनुमान है, आप इसे पढ़ेंगे ही नहीं. ऐसा मैं इसलिए सोचती हूं क्योंकि मैंने अपने पूर्व पत्रों का उत्तर नहीं पाया है. जो भी हो. यदि आपने पत्र पढ़ लिया तो पत्र का आदान होगा, नहीं तो मन का कुछ बोझ उतर जाएगा, ऐसा सोच कर पत्र लिख रही हूं—पूरी आपबीती !

इस पत्र में विगत पत्रों में लिखी गई बातों की पुनरावृति होगी. और यह सब आपके जानने के लिए लिख रही हूं. जान लेने पर आप चरणों पर मुझे शीश रखने देने में कोई आपत्ति नहीं करेंगे.

आज से कोई बीस वर्ष पूर्व मैं इस शहर में शिक्षिका बन कर आई थी. उस समय आप साथ में थे. साथ बिताए गये वे क्षण आपको भी याद होंगे. हम चाहते थे—यह क्षण, क्षण हो, घण्टा हो, दिन हो, सप्ताह हो, मास हो, वर्ष हो—युग हो, कई संयुक्त युग हों.

इसी उल्लास और आशा में आप भी इसी शहर में नौकरी तलाश रहे थे, पर नौकरी नहीं मिली. इस पर मैंने निवेदन किया था—मैं तो अर्जित कर ही रही हूं. क्या इसमें दो प्राणी का गुजर नहीं हो जाएगा. मैंने सहज स्नेह सिक्त भाव से कहा था पर आपको लगा जैसे किसी ने आपके पौरुष का अपमान कर किया है, उसे ललकार दिया है.

—नहीं, यह नहीं हो सकता. तुम्हारी कमाई पर मैं गुजर करूं, यह कितनी लज्जा की बात है—चाहिए तो यह कि मेरे अर्जन पर तुम निर्भर करो—यह आपने घायल-मनःस्थिति में व्यक्त किया था.

—लो आप तो बुरा मान गए—. मैंने बहुत समझाया पर आप दूसरे भावावेश के वशीभूत हो गए थे.

इस घटना के दो दिन उपरान्त कलकत्ते से एक प्रतिष्ठान में नियुक्ति का पत्र आया. यह पत्र अप्रत्याशित था. इस नौकरी की चेष्टा आपने विवाह से पूर्व की थी. नियुक्ति-पत्र पा कर खुशी और उदासी के बीच आपने कहा था—बेलू, मैं कलकत्ते पहुँच कर निवास का प्रबन्ध करूंगा और घर ठीक होते ही तुम्हें लेने आ जाऊंगा-आपने यह ऐसे कहा था जैसे यह आनन-फानन में हो जाएगा. मैंने तभी यह राय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दी थी कि उस प्रतिष्ठान की शाखा तो इस शहर में भी है. आप नियुक्ति यहीं करा लें.

मेरा यह प्रस्ताव आपको अधिक पसन्द आया. अपनी बाहों में भरते हुए कहा था—यही होगा—यही होगा बेलू.

कलकत्ते जा कर आपने पहले अपनी नियुक्ति यहां कराने की चेष्टा की. चेष्टा मंहगी पड़ने लगी—मतलब नौकरी ही चली जाने का खतरा उपस्थित फिर आपने गृहस्थी बसाने के लिए मकान ढूंढ़ना शुरू किया. पर यह भी नहीं हो सका. आपकी यह कोशिश छ माह तक चलती रही.

छ मास में छत्तीस चिट्ठियां आईं और इधर से भी छत्तीस चिट्ठियां गईं.

इसके बाद ग्रीष्मावकाश आ गया. विद्यालय बन्द होने के दूसरे दिन ही मैं के होटल में थी. साथ में आप के सात दिन और सात रात ऐसे कट पता भी नहीं चला कि कब तारीखें बदलीं. आपने दफ़्तर से छुट्टी ले ली थी. दिन स्वर्ग में बिताए दिन थे. पर इस स्वर्ग ने हमें धरातल पर ला कर खड़ा दिया. रुपये गायब हो गए पास कुछ पैसे बच गए थे और मैं मैके में घुटन बिताती हुई विद्यालय वापिस लौट आई. स्वर्ग से जैसे आर्थिक दबाव रूपी यमदूत हमें च्युत कर दिया था.

फिर एक वर्ष बीत गया, मगर कोई हिसाब नहीं बैठ सका. हम चिट्ठी सहारे अपने को बहलाते रहे. छत्तीस चिट्ठियों के आदान-प्रदान का क्रम लगा रहा.

एक दिन शाम को अचानक आप आ गये. मैं उस समय अपने कमरे थी. शायद आप मुझे एक बार चौंका देने के खयाल से खिड़की के पास खड़े हो पर पहले आप ही चौंक गए, शायद. आपने देखा कि मैं एक नवजात बालिका शिशु को बहलाने में विभोर हूं. मैं उसे अपना स्तनपान करा रही हूं—. बालिका रीता में इतनी खो गयी थी कि मुझे कुछ भी ध्यान नहीं था.

आपने अन्दर आ कर पहला सवाल किया—अरे तुम मां बन गई और मुझे तक नहीं की.

—तो क्या हुआ, खबर तो आपको लग ही जाती. मैंने परिहास में कहा.

—कितने माह की है. आपके इस प्रश्न से मैं समझी आप सत्य को जानते हैं सहज भाव से कहा—आठ माह की.

आठ माह—मन ही मन आपने कुछ हिसाब लगाया. पर इस समय भी मन:स्थिति की ओर मेरा ध्यान नहीं था. मैंने कहा—देखिए न, बेटी कितनी हैं. पर आप कुछ उत्तर देते—इससे पूर्व ललित बाबू पहुंच गए. पहुंचते ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

किया—मेरी बिटिया सो रही है क्या ?

ललित बाबू के इस प्रश्न ने मुझे सकपका दिया. मैं होश में आ गई. मैंने....मैंने कैसी गलती कर दी है. और आपने एक बार रीता की ओर देखा....फिर एक बार ललित बाबू की ओर देखा.दोनों के चेहरे के साम्य को देखते आप उठ खड़े हुए और—मैं आता हूं, कह कर निकल गए. पर आप नहीं आए.

मैं विचलित हो उठी. आपको देखने स्टेशन गई. ललित बाबू को भी भेजी. पर आप शहर में कहीं भी नहीं मिले. किसी ने कहा—आप बस से रांची गए. एक बार सोची मैं रांची जाऊं पर रीता को ले कर जाना सम्भव नहीं था.

मैंने समाज को मुंह दिखलाने का साहस खो दिया. पर आपके सामने साहस बटोर कर सब कुछ चित्रित करने के लिए पत्र लिखा, पर आपने चित्र देखा ही नहीं. थक-हार कर ललित बाबू को भेजा. मगर आपने ललित बाबू को भी नहीं सुना. केवल इतना ही कहा—ललित बाबू, बस करें. मुझे कुछ सुनने की जरूरत नहीं है. आप धन्यवाद के पात्र हैं. आपने मेरा बोझ हलका कर दिया है—आपको बधाई है.

ललित बाबू वापस आ गए. मैं परकटे पक्षी की तरह तड़प उठी और अभी तक परकटे पक्षी की तरह पीड़ा के पिंजड़े में पड़ी हूं.

उस दिन से ले कर आज तक की कहानी बहुत लम्बी है. मैं चिन्ता की चिता में जल रही हूं. जिस बेला को आप जूही की लतिका कहा करते थे. वह अब ऐसी केक्टस बन गई है जिसमें हरापन नहीं है. मगर क्या करूं, आप तो ऐसे हो गए हैं कि पहचानना भी नहीं चाहते.

आपकी इस निरन्तर उपेक्षा ने जीने की इच्छा समाप्त कर दी है फिर भी जी रही हूं...दो कारणों से...

पहला रीता की शादी और दूसरा चरणों पर शीश रख कर सदा के लिए सो जाने की अन्तिम इच्छा.रीता की शादी तय हो गयी है.मैं चाहती हूं आप आइए, अपने हाथों से कन्यादान करिए.

आपकी परित्यक्ता हो कर मैं बहुत आलोच्य हो गई हूं. लम्पट प्रकृति के लोग मेरे दरवाजे तक कई बार आए. कितना प्रलोभन दिया. अबला समझ कर जिसने जैसा चाहा मुझसे खेलना चाहा. और तो और, जिस ललित बाबू के चलते मेरा नन्दन-कानन मरघट बन गया, उसने भी मुझे अपनी अर्धांगिनी बनाना चाहा. यह भी दलील दी कि तपन ने मुझे सदा के लिए त्याग दिया है. जो होना था वह हो गया, अब और क्या क्षति होने को है.

मैं कांप उठी थी—नहीं ललित बाबू, यही क्या कम है कि आप रीता के पिता हैं और मैं रीता की मां हूं. यही सम्बन्ध रहने दो. मैं तपन की विवाहिता हूं...और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नारी एक की विवाहिता होती है. इसके बाद से मैंने ललित बाबू को, जो मेरे सहायक रहे, अपने यहाँ आना वर्जित कर दिया.

पत्र आपको इसलिए लिख रही हूँ, कि जितना जल्द आप आ सकें, आपके क़दमों पर सर रख कर मर जाने से मुझे शान्ति मिलेगी. किन्तु यदि आने से पहले चल बसी तो....तो हिदायत दे जाऊंगी...लाश को आपकी रहेगी. आते ही मेरी मांग में सिंदूर भर दीजिएगा, लाश को कन्धा लगा दीजि

रीता जिसे मैंने पाल-पोस कर बड़ा किया है—वह भी नहीं जानती हक़ीकत क्या है. वह भी मुझे ही मां कहती और समझती है. आप जब आवें को सारी बातें आपके सामने बतलाऊंगी. उसे उसकी मां की तसवीर दे दूं तसवीर मेरी परम प्रिय सहेली की है जिसे आप भी जानते हैं—कई बार मैं उसकी चर्चा की है. उसका नाम है अर्पणा.

अर्पणा से मेरी पुनः भेंट इसी शहर में आपके कलकत्ते जाने के बाद हुई. कलकत्ते जाने से उदासी घनीभूत हो गई थी—उसमें अर्पणा की मुलाकात चमक जैसी प्रिय लगी. पर यह खुशी बहुत दिनों तक ठहर नहीं पाई. उसे कोई घाव हो गया था—रक्त स्राव ने उसे मृत्युद्वार पर ला छोड़ा. मरते-मरते गोद में वह रीता को डाल गई और कह गई, आज से तुम ही इसकी मां हो

मैं कुछ कह भी नहीं पायी थी कि वह लुढ़क पड़ी. विमल अर्पणा के मैं रीता को अपने घर ले आयी. मेरे मन में मां बनने की तड़प तो थी ही. की तरह, बल्कि उससे भी बढ़ कर रीता का लालन-पालन किया. मां बनने की मानसिक उत्तेजना के कारण जब-तब मैं उसे स्तनपान करा देती थी. यह कि तनाव महसूस करने पर भी स्तन में कभी दूध नहीं उमड़ा. उस सन्ध्या इसी भावावेश में थी. पर मैं समझती थी कि आपको सब कुछ पता है क्योंकि मैंने पत्र लिख कर सब सूचित किया था.

वह पत्र आपको नहीं मिला और हक़ीकत की जानकारी आपको नहीं हो इस बात का पता तब लगा जब मेरा भेजा गया अन्तर्देशीय पत्र कई पोस्ट से मुहर खाता हुआ मेरे पास वापस लौट आया. इस दुर्भाग्यपूर्ण और विनाशकारी के लिए किसे दोष दूँ—पूर्वजन्म का पाप ही तो सब कर रहा है. वह मेरे पास सुरक्षित है. जब आप आवेंगे इसे देख लेंगे. इसे मैंने अपने वैनेटी बैग छोड़ा है. यह वैनेटी बैग मेरे पीले बक्से में है.

यह सब जान सुन कर मुझे विश्वास है, आप मुझे अस्वीकार नहीं कर आपकी स्वीकृति से मेरे जीवन में पुनः बसन्त लौट आएगा. मरण का द्वार लिए बन्द हो जाएगा. पर यदि नहीं आये तो...

इसे न भूलेंगे—जिस तरह मैं रीता की मां हूँ—आप रीता के बाप हैं. मेरी क़सम—रीता की क़सम■

—सीताराम पथ,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे आप देश-दर्शन पर निकले हों,
मेलेमे हों, समारोह मे हों,
पिकनिक मे हों, जहाँ भी हों,
आपका मनोरंजन करने के लिए

गंगा और तूफान ज़र्दा

आपका सर्वप्रिय

सभी जगह सुलभ है.

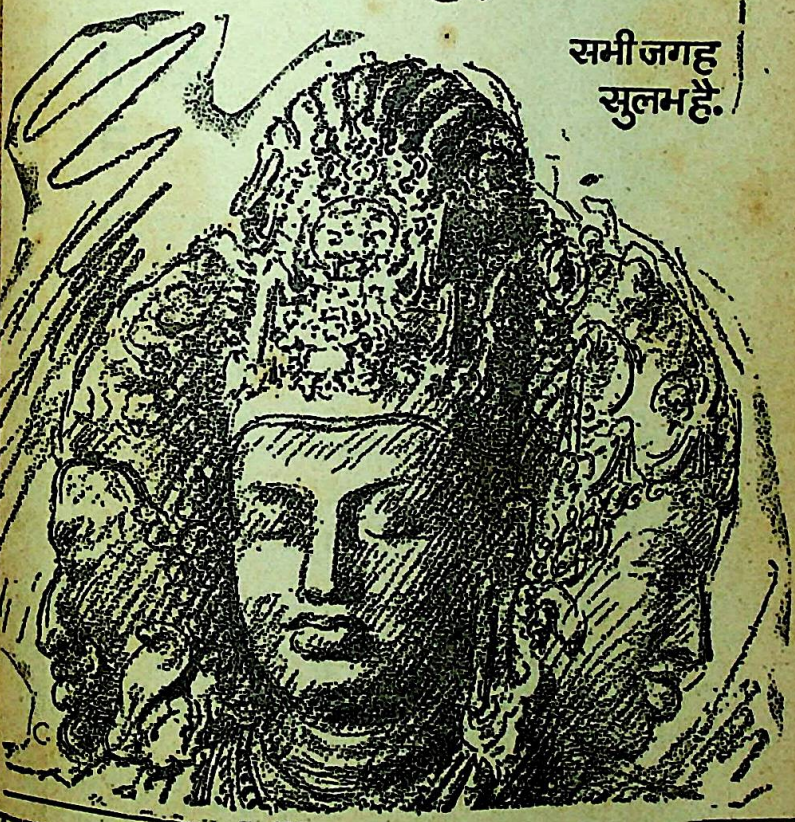

सूराम काशीनाथ परफ्यूमर्स-वाराणसी. फोन. ६३००५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूटना न टूटना

अशोक चौधरी

हाय...करवटों का सहारा कितना आरामदेह है.

और नीलिमा ने सारी रात उन्हीं करवटों के सहारे गुजार
अनजाने में जिन बातों को नीलिमा ने सुन ली थी, तह तक हिला कर
देने के लिए वे काफ़ी थे.

सुन कर वह तब चौंकी जब उसके सास-ससुर ने देवर-भाभी
पवित्र रिश्ते को एक नया सूत्र दे दिया था. उन बातों की भनक
ही वह छटपटाने लगी थी. करवटों का सहारा ही उसका आखिरी
रह गया था.

इन सभी विचारों से थकित जब अलस्सुबह उसकी आँखें
थीं कि सास के शब्दों ने उसे जगा दिया था, 'बहू....सुबह हो गई...'
सास की आवाज पर वह बिस्तर छोड़ हाथ-मुंह धोने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थरूम में चली गई. दर्पण ने उसे बताया कि उसका चेहरा किस बुरी तरह क्लांत कर रह गया है. कितनी नयी रेखाओं का जाल उसके मुख पर फैल कर ह गया है.

एक सहज स्थिति लौटाने के लिए आज उसने बाथरूम में अन्य दिनों से अधिक मय लगाया था.पर कहाँ—वे सब आकृतियां ज्यों-की-त्यों बनी ही रहीं. वहाँ से निवृत्त वह किचन में जा पहुँची.

नित्य सुबह वह ससुर को चाय देती थी, उसके बाद सास को और अन्त में नोद को जहाँ वह खुद चाय पीने में उसका साथ देती थी.

सोते से विनोद को जगाना उसी का काम था. एक प्याली चाय उसके हाथ में कर और सामने पड़ी खाली कुर्सी पर बैठ कर चाय की मीठी-मीठी चुस्कियों के थ, वह कभी देवर को कचोट भी लेती थी, 'लाला—कैसी है चाय ?'

'भाभी....इस को तुम चाय कहती हो'—'कहता हुआ वह भाभी की सिप की हुई य ले कर खुद पीने लगता था और अपनी जूठी चाय भाभी की ओर बढ़ा देता था.

'लाला...अभी तुम बच्चे ही हो. कल से मुझे चाय में चीनी मिला कर देना गा.'—और उस चाय में पड़ी चीनी को चम्मच से मिला कर नीलिमा खुद सिप रने लगती थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनु के नाम

■

आओ दिखायें तुम्हें
तुम्हारी नारी को इस बीसवीं सदी में
समूचा व्यक्तित्व उसका
सिमट गया है बड़े-बड़े जूड़ों में
और छोटी-छोटी बिन्दियों में
बस ! अटक के रह गया है.
उसकी भारतीयता—
गहरे पाश्चात्य रंग में
रंग चुकी है,
और 'फारवर्ड' हो गई
तुम्हारी यह मशीन,
अब हर दृष्टि से
'ओवर हालिंग माँगती है—
उसका हर पुर्ज़ा, ढीला हो गया है,
उनकी नज़र में—
उस संस्कृति का ताना-बाना अब !
'आऊट ऑफ फैशन' यानी कि पुराना
हो गया है.
इस देश में तुम कभी पैदा हुए थे
अच्छा ही किये थे
पर अब
इसकी ख्वाहिश न करना
क्यों कि वह
तुम्हारा जनाज़ा निकाल चुकी है
अब क्या अपने जनाज़े में
शरीक़ होने के लिए
आओगे यहाँ ! बोलो !

—आमोद श्रीवास्तव

इन रस भरी बातों में डूब जब उन दोनों को समय का रहता था तब केवल सास के आदेश नीलिमा चिहुँकती हुई रसोई में भागती थी.

किन्तु आज वह विनोद के में न जा सकी.

'मां....लाला की चाय.'—अपनी सास से जा कर कहा.

बहू के इस नएपन को सास ने चकित हो पूछा, 'क्यों क्या हुआ ? क्या....' बीच में नीलिमा, 'मां...आज तबीयत नहीं. चाहती हूँ जल्द काम कुछ आराम कर लूं.'

'बेटी...तुम जा कर आराम काम मैं देख लेती हूँ.'

'काम ही कितना है मां. निबटाए देती हूँ.—'और सास के चाय दे कर नीलिमा किचन में चली गई. द्विविधा में पड़ी सास गति से, चाय को लिये विनोद के की ओर बढ़ हो गई.

आंख खुलते ही विनोद ने पूछा,

'मां...तुम ? भाभी....'

'आज उसकी तबीयत ठीक नहीं'—सुन कर ही विनोद चारपाई उछल कर धरती पर आ खड़ा और सीधा जा पहुँचा भाभी के पास. उधर चाय की प्याली मां ने पर रखी-रखी ठंडाने लगी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कमरे में भाभी को न पा कर विनोद किचन में जा पहुँचा—'भाभी कैसी हो तुम ?'—और ज्वर जानने की इच्छा से भाभी के हाथ को अपने हाथ में थाम लिया.

आज यह पहला सावका था कि भाभी ने हाथ को झटकते हुए कहा—

'मैं ठीक हूं....तुम जा कर चाय पियो.'

भाभी के इस रूखे व्यवहार पर वह अचम्भित-सा बोला, 'क्यों नाहक छुपा रही हो. तुम्हारे सूजे नेत्र एवं फूले गाल....'

बीच में कूद पड़ी नीलिमा, 'कहा न एक बार मैं ठीक हूं. क्यों परेशान कर रहे हो मुझे.'

भाभी के ये तीखे वाक्य आज विनोद को विचलित करने के लिए काफ़ी थे. फिर भी भाभी के इस आकस्मिक रोष को हल्का करने की गरज से उसने कहा, 'भाभी... क्या मुझसे कुछ अपराध हो गया है ?'

विनोद के इन सांत्वना भरे शब्दों ने, न जाने नीलिमा के किन दुखते रगों को छू दिया था कि वह यकायक बिफर उठी, 'लाला...मां से कहना आज मैं काम नहीं कर सकती'—कहती हुई वह द्रुतगति से अपने कमरे में चली गई. साथ ही दरवाजे को भी उसने अन्दर से बन्द कर लिया.

विनोद अवाक खड़ा-खड़ा सब कुछ देखता रहा. अन्त में दुखी मन लिये वह भी किचन से बाहर हो गया.

अंदर आते ही नीलिमा निढाल पलंग पर औंधी जा लेटी. जिन विगत बातों से वह रात भर छटपटाती रही, उन्होंने अब दोबारा अपना दैत्याकार रूप धारण कर नीलिमा को निगलना प्रारम्भ कर दिया और वह जल बिन मछली के समान फिर से छटपटाने लगी.

जब से नीलिमा इस घर में आई थी, विनोद को मित्र, भाई अथवा बन्धु के सिवा और किसी भी दृष्टि से उसने नहीं देखा था. फिर कैसे वह ससुर के इस नए प्रस्ताव को स्वीकार कर सकती थी ? आश्चर्य तो उसे यों था कि सास ने भी कैसे ससुर के आगे माथा टेक दिया था ? क्यों सहमति दी थी कि नीलिमा का विवाह विनोद से कर दिया जाए ?

वह हादसा जिसे घटे अभी अधिक दिन भी नहीं गुजरे और जिसकी एक हल्की याद भी उसकी जिस्मानी रूह को कंपा देने के लिए काफ़ी था, ऐसी नाजुक स्थिति में यह विद्रूप हुआ क्यों ? उसको कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था. रो-धो कर वह बिस्तर को एकाकार कर रही थी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

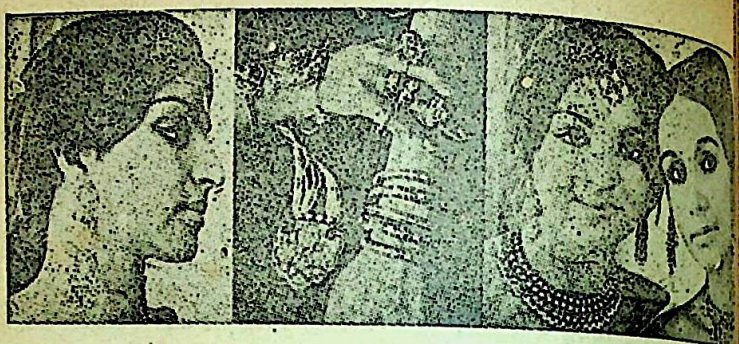

सौन्दर्य में निराला पन निराले आभूषणों से ही

शुद्ध सोने के आधुनिक फैशन के आभूषणों,
जड़ाऊ माल, जवाहिरात, चाँदी के बर्तन
तथा आकर्षक उपहार सामग्रियों के लिए

कन्हैया स्वर्ण कला केन्द्र
आनन्द बाजार ★ वाराणसी. फोन. ६३९२६

जेके

मैपलिथो
पल्प बोर्ड एवं
पेपर मिल्स (उड़ीसा) द्वारा
उत्पादित
सभी प्रकार के कागजों के
एकमात्र क्षेत्रीय अधिकृत
वितरक–

JK PAPER

वाराणसी पेपर कार्पो

बाँसफाटक, वाराणसी. फोन : ६५५०८

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आज नए सिरे से पति को याद कर वह सुबक-सुबक कर रो उठी. एक ही तो बहार उसने पति के साथ बितायी थी कि उसके भाग्य का पासा ही पलट कर रह गया था.

पति के बाहुपाश में जकड़ी हुई न जाने किन-किन दिवा-स्वप्नों को रच डाला था उसने. किन्तु भाग्य के कालचक्र ने उन स्वप्नों को कहाँ साकार होने दिया था. उस काली आंधी ने सब कुछ तो मटिया-मेट कर रख दिया था. सिंदूर के लगते ही पुछ कर रह गया था सब.

केवल एक काग़ज़ का टुकड़ा ही तो उसके हाथ लगा था जिसे आज दिन तक वह सीने से लगाए बैठी है, 'तुम्हारे पति के आकस्मिक निधन से आज सारे देशवासी दुखी हैं. मातृभूमि के लिए जिस शौर्य एवं पराक्रम का उसने परिचय दिया है वह इतिहास के पृष्ठ में स्वर्ण-अक्षरों में अंकित रहेगा. परमपिता परमेश्वर से यही करबद्ध प्रार्थना है कि तुम्हें इस महान क्लेश को सहने की शक्ति दे एवं दिवंगत आत्मा को शांति दे....'

आज वही छबि बार-बार उसके नेत्रों में सजीव हो रही थी जब पति ने युद्ध को प्रस्थान से पहले कहा था—नीलि...मैं कैसा लगता हूँ ?

छलछलाए नेत्रों से नीलिमा ने कहा था—

—देश के एक रक्षक-प्रहरी के रूप में तुम्हारा मुख कितना प्राणवान लगता है. जी चाहता है मैं सदा ही तुम्हें इसी रूप में देखती रहूं. और पति के कंधे का सहारा ले वह रो पड़ी थी.

—नीलि इस समय तुम्हारा रोना अशुभ है. क्या तुम आज उन वीरांगनाओं के समान हंसते हुए मुझे विदा नहीं कर पाओगी ? कहते-कहते उसने नीलिमा को अपनी बलिष्ठ भुजाओं में क़ैद कर लिया था.

उन बलिष्ठ भुजाओं की जकड़ में नीलिमा को न जाने क्या सुख मिल रहा था कि वह उस छोटे से दायरे में सिमटती चली गयी थी.

व्याप्त उस सन्नाटे को उसके पति ने ही भंग किया था—मुस्कराओ न एकबार ताकि तुम्हारी मुस्कराहट से मुझे वह ताजगी मिलती रहे जिससे मैं उन शत्रुओं का संहार कर सकूं, जिन्होंने आज मातृभूमि पर आक्रमण किया है—और अन्तिम बार नीलिमा के शर्मीले एवं गुलाबी गालों पर वह झुक पड़ा था.

इस त्रासदायी से उबरने के लिए ही तो उसने एक सहारा अपनाया था ताकि अपने दुर्भाग्यपूर्ण वातावरण से वह समझौता कर सके—स्वयं को उसमें खपा सके और भूल सके इन सब विगत घटनाओं को. किन्तु भाग्य का क्रूर परिहास...जिस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिनके का सहारा ले वह जीने की लालसा में जी उठी थी, आज वही तिनका उसे ले डूब रहा था.

हालांकि विनोद के अपनत्व भरे शब्दों ने उसे फिर जीने के लिए लालायित किया था. उसके प्यार से उसे वह तृप्ति होने लगी थी जो उसके हरे जख्म को भरने के लिए काफ़ी था.

किन्तु यह क्या...? जिस घाव के टांके अभी तक उसकी त्वचा से घुल-मिल कर एकाकार न हो पाए थे कि आज वही घाव किसी पुराने नासूर की भांति फिर से रिसने लगा.

उसके लिए तो कल्पनातीत-सी बात थी कि जिस विनोद को उसने अतीत में एक भ्राता, बन्धु एवं मित्र के रूप में देखा था—अब उसे पति के रूप में स्वीकार करना होगा ! किन्तु सत्य तो यह था कि पति के रिक्त स्थान को पूर्ण करने के लिए उसने उस पवित्र प्यार को तरजीह दी थी जिस पर आंच आने की कतई गुन्जाइश न थी.

पर हाय रे भाग्य की विडम्बना ! उसके उस प्यार का लोग मोल न आंक सके. केवल यही समझा कि कहीं जवान बहू कुछ अनर्थ न कर बैठे—या कोई एक बदनुमा दाग़ न लगा बैठे !

इस आवर्त से छुटकारा पाने के लिए वह बुरी तरह इधर-उधर हाथ-पांव मारने लगी. किन्तु जितना वह छटपटाती रही उस आवर्त में धंसती चली गयी—कोई किनारा उसके हाथ न लगा.

इन्हीं विचारों से त्रस्त जब उसने दोबारा करवटों का सहारा लिया कि द्वार पर हुई दस्तक से वह यकायक चौंक उठी. किसी के आग्रहपूर्ण शब्द थे, 'भाभी तुमने सुबह से कुछ नहीं खाया. कुछ खा लो ना....' आज विनोद के मुख से उच्चरित 'भाभी' शब्द ने नीलिमा के तन-बदन में आग-सी लगा दी.

उसका मन बोल उठा कि वह कह दे—अब नहीं चाहिए उसका यह दुलार. चला जाए यहां से....

किन्तु ऐसा कुछ वह न कर सकी थी क्योंकि उसी के क्लेशों को हंसी में तराश-तराश कर उखाड़ फेंका था—अमृत समझ कर पी गया था...फिर...फिर वह किस तरह इतनी कठोर बन सकती थी.

दोबारा दरवाजे पर दस्तक हुई. वही प्यार भरा सम्मोहन—'भाभी...'

घर वालों का दृष्टिकोण तो बदल चुका था. किन्तु विनोद का ? यही था सवाल था जिसका नीलिमा को उत्तर चाहिए था. उत्तर मिलना अब नीलिमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिए अनिवार्य हो उठा.

'कहीं...कहीं...वह भी....' यकायक वह बुदबुदा उठी और उठ कर उसने बन्द दरवाजे खोल दिए.

'अन्दर आओ....' भर्राए स्वर में नीलिमा ने कहा. उसकी भर्रायी आवाज़ और गम्भीर मुखाकृति को देख कर विनोद के नेत्र भाभी के मुख पर ठीक स्फटिक शिला के समान पथरा कर रह गए. कुछ न बोल सका वह.

कमरे के अन्दर पड़ी एक खाली कुर्सी पर वह यन्त्रवत् बैठ गया. पलंग के सिरहाने बैठती हुई आज नीलिमा भी अपने देवर को निर्निमेश देखने लगी.

भाभी के उन नेत्रों से कुछ ऐसी रश्मियां फूट रही थीं कि उससे शंकित विनोद ने पूछा, 'भाभी इस तरह क्या घूर-घूर कर देख रही हो ?'

नीलिमा ने यही उचित अवसर प्रश्न के हल के लिए समझा और उसने लक्ष्य की ओर प्रत्यंचा खींची, 'लाला...तुम्हें मुझसे प्यार है न...? बहुत-बहुत प्यार है... मैं ठीक कह रही हूं न ?'

विनोद इन अटपटे शब्दों को सुन कर हैरान रह गया. एक शिशु के समान सामने बैठी भाभी को टुकुर-टुकुर देखता भर रहा. बोल नहीं सका वह. विनोद की उत्सुक निगाहें साफ़ कह रहीं थीं कि आखिर भाभी क्या चाहती है उससे ?

विनोद को अपनी ओर उत्सुक दृष्टि से देखते पा कर नीलिमा ने अपना सधा हुआ बाण छोड़ा, 'विनोद...मैं जानना चाहती हूं, तुम्हारा प्यार मेरे प्रति कैसा है ?'

प्रश्न के तीखेपन से विनोद का चेहरा भी विकृत हो उठा और उसकी स्थिर हुई आंखें स्वतः ही झपक गयीं. फिर भी वह शांत बना रहा. उत्तर नहीं दिया उसने.

विनोद को चुप देख कर इस बार नीलिमा ने अधिकार भरे लहजे में कहा—'विनोद तुम्हें मेरे प्रश्न का उत्तर देना ही होगा.' विनोद ने कनखियों से भाभी पर अंकित भावों को पढ़ा. स्थिति को और भी जटिल न बनाने की गरज से उसने हंस कर कहा, 'वाह भाभी...यह भी कोई पूछने की बात है. देवर-भाभी के मध्य कौन-सा प्यार पनपता है, वह भी क्या बताना पड़ता है.'

'हां,...है....' एक तिक्त उच्चारण से सहसा विनोद चौंक उठा और उसने अपनी भरपूर नजर भाभी पर गड़ा दी.

'मैं आज यह जानना चाहती हूं कि कहीं तुम्हारा प्यार गलत राह पर न भटक गया हो.' नीलिमा अब भी कठोर बनी हुई थी.

अंतराल तक दोनों के बीच मौन सम्वाद बना रहा. भाभी के इन तीखे प्रहारों से अब विनोद भी विचलित हो गया. उसकी छोटी-बुद्धि में नहीं समा रहा था कि आखिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गिरनार

मनोरम आवास
सुखद शाकाहारी भोजन
एवं
रुचिपूर्ण जलपान ग्रह

सुविधाएं—

- प्रत्येक कमरे के साथ संलग्न स्नानघर तथा शौचालय.
- प्रत्येक कमरे में गरम और ठंडे पानी के नल की स्थायी व्यवस्था
- प्रत्येक कमरे आधुनिक सुख और सुविधाओं से सम्पन्न.
- समुचित किराये पर विभिन्न क्षमता वाले कमरे सुलभ.
- शांत, सुरक्षित और पारिवारिक वातावरण से युक्त.
- शहर के मुख्य बाजार गोदौलिया के निकट स्थित—

● गिरनार प्राइवेट लिमिटेड

हौजकटोरा (निकट गोदौलिया) वाराणसी. फोन : ६५४१७

स्पोर्टस् और खेल-कूद व्यक्ति और राष्ट्र की प्रतिष्ठा को बढ़ाते
जीवन में अनुशासन और स्फूर्ति के लिए स्पोर्टस् आवश्यक हैं

● स्पोर्टस् एवं खेल-कूद के सामानों
● नर्सरी-मांटेरी स्कूल के शैक्षणिक खेलों की
सामग्रियों में
विविधता और विशिष्टतापूर्ण
चुनाव का शो-रूम

दीना एण्ड कम्पनी

बांसफाटक वाराणसी. फोन : ६३४७

स्कूल, कालेजों एवं राजकीय मांगों के पूर्तिकर्ता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाभी इन प्रश्नों का अम्बार क्यों लगाए हुए है ? ठीक है भाई के न रहने पर यदि उसके प्यार ने करवट ले भी ली तो ऐसा कौन-सा गुनाह हो गया था कि आज भाभी इस बुरी तरह उस पर टूट रही है ?

कहीं उसका प्यार, मात्र आत्म-वंचना बन कर ही तो नहीं रह गया है, इस सत्य को जानने के लिए उसने अपनी इतने दिनों की दबी लालसाओं का सत्यापन किया, 'भाभी...मैं तुम्हें सर्वाधिक प्यार करता हूँ और करता रहूंगा. जब एक स्थान रिक्त हो चुका है तो क्या मैं....'

बीच में नीलिमा चीखी, 'विनोद....' सहसा कुछ रुक कर फिर मृदुता से उसने कहा—

'जब स्वच्छ फल मिल सकता है, मैं नहीं चाहती कि तुम एक जूठे फल में हाथ लगाओ.' इन शब्दों को सुनते ही विनोद का खून खौल उठा. फिर भी स्वयं को भरसक सामान्य बनाए हुए उसने कहा,'भाभी...दुख है कि तुमने मुझे आज तक नहीं पहचाना. मैं उन व्यक्तियों में से नहीं हूँ जो भगवान के दिए भोग को जूठा कह कर अस्वीकार करे.'—और बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए वह तीव्र गति से बाहर हो गया.

नीलिमा किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी जाते हुए देवर को देखती रही. अब आगे उसे क्या करना है. वह तत्काल किसी निर्णय पर न पहुँच सकी. उसने अवश्य महसूस किया कि कहीं कुछ भूल हुयी है जिसका दुष्परिणाम आज है यह.

उस भूल को सुधार लेना ही उसने अब उचित समझा: वह अविलम्ब अपनी सास के पास जा पहुँची, 'मां...मैं पिता के पास जाना चाहती हूँ.'

सास ने अचानक बहू के इस निर्णय को सुन कर विस्मय हो पूछा, 'हठात्.... पिता के घर ?...ऐसा क्यों ?'

नीलिमा अपने हृदय के उफान में अब सास को भी लपेटना चाहती थी. उसने उसी लहजे में कहा, 'मां...उनके गए अभी कितने दिन हुए हैं जो इतनी जल्द मुझे नए बन्धन में बांधना चाहती हो.'

स्तब्ध थी उसकी सास, 'तो तुम्हें सारी बातों का पता है.'

अब नीलिमा कुछ नरम हो उठी. बातों में मिठास घोलती हुयी बोली—'मां... मेरी धृष्टता को क्षमा करें कि मुझे बातों का पता चल गया है. उसी समय से मैं विचारमंथन में पड़ी हुयी हूँ. मुझे इस बारे में सोचने के लिए समय चाहिए—एकांत चाहिए. कुछ दिनों के लिए मुझे मेरे पिता के पास भेज दीजिए.'

सास ने आगे कुछ नहीं कहा. बहू को वहीं छोड़ बुढ़िया विनोद के पिता के पास चली गयीं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पिता के घर जाने से पहले नीलिमा विनोद से एकांत में एक बार मिलना करना चाहती थी. उस क्षण के लिए बहुत व्याकुल इधर-उधर घूमती रही—मसाती रही—पर विनोद ने जान-बूझ कर ऐसे क्षण को पास फटकने न दिया.

नीलिमा अपने पिता के घर चली आई पर दोनों ओर एक ही विराजता रहा.

पिता के घर आ जाने पर भी उसे मानसिक द्वन्द्व से बहुत छुटकारा न देवर को एक पत्र लिखने की तीव्र आकांक्षा उसके भीतर जाग उठी. न जाने पत्र उसने लिख-लिख कर फाड़ दिए पर एक पत्र भी वह पोस्ट न कर सकी न्यूनाधिक रूप में विद्यमान अहं ने सदा ही उसके दोनों हाथों को बांधे रखा.

अब उसके लिए समय काटना ही दूभर हो गया. अवकाश के समय छवि रह-रह कर उसके नेत्रों के सामने नाचने लगती. उसके अपनत्व कानों में गूंजने लगते. इस बढ़ते व्याधि से छुटकारा पाने के लिए उसने डैडी से कहा, 'मैं नौकरी करना चाहती हूं. समय काटना मेरे लिए पहाड़ हो गया है.' उसके डैडी ने चकित हो कर पूछा, 'बेटा...तू तो कुछ दिनों ससुराल चली जाएगी. नौकरी किस लिए ?'

'डैडी...अब मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूं. अध्यापिका का मुझे प्रिय है.'

उसके डैडी जो एक अवकाश प्राप्त कर्नल थे और आज़ाद खयालों के से थे, बेटी के भविष्य को मद्धे नज़र रखते हुए पूछा, 'क्या जिन्दगी भर अध्यापिकी करेगी ?'

'क्यों क्या बुराई है, डैडी ? आखिर मेरी पढ़ाई किस दिन काम आएगी.'

बेटी की इस नया धारणा पर कर्नल साहब कुछ चिंतित से हो उठे. उन्हें के निर्णय के बारे में पता था. इसलिए बेटी की ओर से वे बिल्कुल निश्चिन्त किन्तु आज के प्रसंग ने उन्हें उद्विग्न कर दिया. चिंतित मुद्रा में उन्होंने आगे 'बेटी....कहीं किसी से कहा-सुनी तो नहीं हुई. या फिर...'—कुछ संकोच उन्होंने शंका समाधान की, 'कुछ विनोद...से...'—कहते-कहते वे सहसा रुक

डैडी की इन बातों से उनकी अभिलाषा भांपते हुए नीलिमा झुंझला 'आपकी और ससुर जी की धारणा एक ही है कि कोई नारी पुरुष के बिना है. इस संसार में वह पुरुष के बिना जी नहीं सकती—उसके सहयोग बिना एकदम आगे चलना दुष्कर है. किन्तु मैं दिखाऊंगा कि स्वयं में मैं कितनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तर्क को आगे बढ़ा कर कर्नल साहब अदूरदर्शी नहीं बनना चाहते थे. धूप में उन्होंने भी बाल सफेद नहीं किए थे.बेटी का यह क्षणिक जोश जीवन के शून्य से कहां तक टकरायेगा, इसका जायज़ा लेते हुए उन्होंने आगे कहा, 'ठीक है बेटी.. किसी-न-किसी स्कूल या कॉलेज में तुम्हारे लिए प्रबन्ध कर दूँगा.

कुछ दिनों के अन्दर वह एक स्थानीय कॉलेज की प्राध्यापिका नियुक्त हो गयी.

फिर भी अशांति जैसे उसे चुभती-सी रही. खाली समय में उसे कुछ-न-कुछ रिसता ही रहा. यद्यपि कॉलेज के वातावरण में वह विद्यार्थियों एवं प्राध्यापिकाओं के मध्य अपने मौन दुख को भूल जाती थी—पर घर आते ही उसका सोया दुख जाग पड़ता था. जब डैडी उससे पूछा करते—क्यों बेटी....कोई पत्र आया विनोद का. तुमने पत्र लिखा उसे.

वह जानती थी कि डैडी इस प्रश्न को बार-बार क्यों उससे पूछा करते हैं.

वह उचित हल की खोज में निरन्तर व्यस्त रहने लगी. एक दिन उसे हल मिल गया.पिता के लाख निषेध पर, उस नौकरी से त्यागपत्र दे कर वह वहाँ से हज़ारों मील दूर नागपुर महाविद्यालय की प्राध्यापिका नियुक्त हो चली गयी.

इस नए परिवर्त्तन ने उसे कुछ ऐसा मोहित किया कि वह एक लम्बे अरसे तक अपने डैडी के पास नहीं आयी. और आयी भी कब ?....जब उसके डैडी उस पीड़ा को लिये यह लोक छोड़ गए.

नितांत अकेली पड़ जाने पर भी वह अपने इस नए परिवेश का मोह न त्याग सकी थी. उसे वहाँ वह शांति मिल रही थी जिसे पाने के लिए वह न जाने कब से तड़पड़ा रही थी.

और एक दिन जब उसने सर पर एक पका हुआ बाल देख लिया था तब वह कुछ इस प्रकार चौंक पड़ी थी जैसे उसका अब तक का मोह टूटने वाला है. उसे एहसास होने लगा कि जीने का उसका साधन कितना खोखला है. उस आयु के आसपास वह मंडराने लगी है जहां द्वय का होना कितना ज़रूरी है.

उसे चुभन हुयी कि उसका भावात्मक जीवन कितना खोखला है. किसी निकटतम सम्बन्ध की बहुत बड़ी सच्चाई अब उसकी दिमागी तहों में लिपटने-सी लगी. मानवोचित दुर्बलताओं की शिकार अब वह होने लगी.

कभी-कभी वह उद्भ्रांत-सी रात्रि के घोर अन्धकार में बिस्तर पर उठ कर बैठ जाती जब किसी शिशु की किलकारियां या उसका करुण-रुदन उसके हृदय में ढँकी पीड़ा को उघाड़ कर रख देता—और उसका बेसब्र मन दौड़-दौड़ कर उससे कहने लगता—काश...एक बच्चा ... छीः ... छीः....यह क्या ? यह कैसी मृगतृष्णा ! ठीक उसी पल उसका अन्तःकरण पछतावे से भर जाता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होटल नटराज

[शाकाहारी एवं कान्टिनेण्टल डिशेज में विशिष्ट]

लहुराबीर, वाराणसी ▪ फोन ▪ ६६३२२,५४०१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस तीव्र बेचैनी के दमन के लिए वह तत्काल बाथरूम जा पहुँचती और घण्टों अपने सर को ठण्डे पानी से तर करती रहती.

ज्यों-ज्यों नीलिमा के बालों पर सफेदी चढ़ती गयी, उसके व्याप्त सूनेपन ने त्यों-त्यों उसे घेरना शुरू किया. उस सूनेपन से अब वह इस क़दर घबरा उठी कि रात्रि का वह सघन अंधकार उसे ठीक उस दैत्य के समान दिखने लगा जो एकाकी जीवन हर परत को हर पल उसके सामने खोल-खोल कर रखने लगा था.

नीलिमा इन्हीं सब तल्खियों के मध्य से गुज़र रही थी कि एक दिन उसे सूचना मिली कि कोई सज्जन उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं. मन में उत्सुकता दबाए वह सीधे ड्राइंगरूम में जा पहुची.

एक फ़ौजी जवान दरवाजे की ओर पीठ किये, कमरे में टंगी तस्वीरों को देखने में व्यस्त था. दरवाज़े के शब्द ने उस जवान को मुड़ने पर विवश किया. जवान का मुड़ना और नीलिमा का चीखना 'अरे...विनोद तुम...!'

'हां भाभी...तुम्हारा देवर जिसे तुमने भुला दिया है.'

जिसकी उसे कल्पना तक न थी, उसे हठात् सम्मुख पा कर नीलिमा की आँखें सजल हो उठी. क्षण भर के लिए दोनों के मध्य नीरवता विराज गयी. अंत में उस स्तब्धता को विनोद ने ही तोड़ा, 'भाभी...याद होगा तुमने एक बार अकेले में मुझसे कुछ कहना चाहा था और मैंने हरचंद ऐसे माहौल को अपने करीब आने न दिया था. किंतु मेरा वह व्यवहार आज तक मुझे सालता रहा. इस लिए जब मैं देश की पुकार पर आज शत्रुओं से जूझने जा रहा हूँ और हो सकता है मैं भी भइया की तरह...' अविलम्ब नीलिमा ने दौड़ कर विनोद को अपने अंक में भर लिया और उसके मुख पर हाथ रखती हुई बिलख पड़ी, 'मेरे विनोद....मेरे बेटे...ऐसा मत कहो. तुम्हें पा कर अब किसी भी कीमत पर नहीं खो सकती...नहीं खो सकती.' वात्सल्य में डूब कर विनोद बुदबुदाया ! बेटे...!

अपने अंक से मुक्त करती हुयी नीलिमा बोली, 'हाँ...बेटे...यही हमारा तुम्हारा अटूट सम्बध है जिसे मैं उस दिन समझाने में असमर्थ रही. आज इतने दिनों की साधना के बाद जब समझा पायी हूँ...तब...तब'—रुलाई के तीव्र आवेश से नीलिमा का गला भर उठा. बच्चे के समान फफक-फफक कर वह रो उठी.

उस करुण विलाप को देख कर विनोद के नेत्र भी तरल हो उठे और बाँध टूटे नदी की तरह वह चले.

श्रद्धा से गदगद नतमस्तक हो कर वह बोला, 'भाभी....मुझे क्षमा करना....' ■

फील्ड पोस्टमास्टर पो. बा. नं. ७३८ ५६ ए. पी. ओ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माध्यम

●

पुष्कर द्विवेदी

वह अपने घर की अपेक्षा अपने सामने वाले मकान के
अधिक जानता है, और उत्सुक रहता है. उस मकान में पाँच
एक मां, दूसरा पिता और तीन लड़कियां. वह माँ-बाप की
तीनों लड़कियों के बारे में अधिक जानता है. बड़ी लड़की १२वीं
पढ़ती है. उससे छोटी मझली ११वीं में और सबसे छोटी ९वीं

परन्तु सबसे अधिक वह बड़ी लड़की के प्रति
चैतन्य रहता है. वह तकरीबन १७ साल की है. गोरी-पीली है—
वह कॉलेज उसी रास्ते से जाता है, जिससे कि वह.
बीच राह में ही पड़ जाता है, जब कि उसे कुछ और आगे जाना
वह भी १२वीं कक्षा का विद्यार्थी है और १८ बसन्त पार कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़की जब अपने कालेज जाती है, ठीक उसी समय वह भी अपने कालेज जाता है. लड़की प्रायः उसे कनखियों से देख लेती है. यदाकदा मुसकरा भी देती है. तब वह कुछ अजीब-सा अनुभव करने लगता है. यह 'अजीब-सा अनुभव' उसे कुछ अजीब-सा बना देता है. वह सोचता है कि वह कैसा हो गया है ? उसे कैसा अनुभव होता है ? तभी वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि उसे कुछ हो जाता है, यह कुछ अजीब-सा हो होता है, जिसे अभिव्यक्त करने को उसके पास फिलहाल शब्द नहीं हैं.

वह दिन-रात परिश्रम करता है. अध्ययन लगन के साथ करता है, जिस तरह कि उसका पिता रिक्शा चलाते समय कठोर परिश्रम करता है, कुछ पैसों के लिए. वह अपने पिता को देख-देख कर सबक़ हासिल करता है कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कठोरतम परिश्रम करना चाहिए. उसका पिता अपढ़ है फिर कभी उसका पिता उसे बताता है—बेटा परिश्रम और लगन सफलता प्राप्ति के दो सशक्त हथियार हैं. इनसे हर लड़ाई जीती जा सकती है. अतः वह दोनों की सहायता से अपना लक्ष्य प्राप्त करे. मन लगा कर पढ़े. अतः वह सभी विषयों के लगन एवं परिश्रम द्वारा अत्यन्त सुन्दर नोट्स व प्रश्नोत्तर तैयार कर डालता है. वह 'काकचेष्टा' की मानिन्द हर विषय उठाता है, परन्तु 'बकोध्याने' नहीं हो पाता. जिस समय वह अध्ययनरत् रहता है, उस समय भी वह अपने सामने वाले मकान की उपेक्षा नहीं कर पाता है. जब अपने घर के अहाते में बैठ कर पढ़ता और नोट्स बनाता है, उस समय बड़ी लड़की कभी द्वार पर आ कर, तो कभी छत की गोरेब से उसे देख जाया करती. वह द्वार अथवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली
पर
विशेष
आमंत्रण

मनोरम एयर कण्डीशंड कक्ष में
सपरिवार सुशोभित हो कर
सुस्वाद
सामिष या निरामिष
(नानवेज या वेज) डिनर, लंच
जलपान, आइसक्रीम एवं कॉफी,
का आनन्द उठायें.

कोनाबे
रेस्टूरेन्ट
एवं
आइसक्रीमबार
दीपक सिनेमा, वाराणसी—फोन : ६३८३३

स्टेनलेस स्टील पैलेस
डी.११/२५ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी
फोन: ६३६५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छत की गौरेब पर अपनी आँख चिपकाने का प्रयास करता तो उसे महसूस होता कि वह लड़की प्रश्न करके पूछना चाहती है—वह क्या कर रहा है ? वह तब कुछ पल टकटकी दृष्टि लगा कर छत की ओर लड़की को देखता हुआ कुछ गुनगुनाने लगता है.

शहर की बिजली फेल हो जाती है, पानी की समस्या है. सारे के सारे चुंगी के नल दम साध कर निर्जीव-से पड़ जाते हैं. इसी आड़े वक्त के लिए शहर के मुहल्ले-घरों के कुओं ने प्यास बुझाने का दायित्व अपने ऊपर लिया है. उसके सामने वाले मकान में भी एक कुआँ है. मुहल्ले के लोग उस मकान से पानी लेने जाते हैं. वह भी पानी लेने उस मकान में प्रथम बार जाता है.

बाल्टी भर कर ज्यों ही दरवाजे तक आता है कि वह लड़की को बीच में ही खड़ा पाता है. लड़की बिना किसी संदर्भ के एक प्रश्न धीरे से करती है—आप किस-किस विषय के नोट्स तैयार कर चुके हैं ? वह तनिक भी आश्चर्यान्वित नहीं होता मानों इसका उसे पूर्वाभास हो चुका था. वह शान से उत्तर दे देता है—सभी विषयों के.

लड़की उससे नोट्स मांगती है. वह 'हां' कर देता है. दूसरे दिन वह अपने सभी नोट्स एवं प्रश्नोत्तर उस लड़की को दे देता है. न जाने क्यों उसे एक आन्तरिक सुख की अनुभूति होती है.

वह अब उस लड़की से यदाकदा मिल कर बात भी कर लेता है. लड़की के मकान में वह बेझिझक चला जाता है. उस मकान की आवश्यक जानकारी भी हासिल कर लेता है, वह महसूसता है कि उसका उस मकान में एक अच्छा इम्प्रेशन है. बड़ी लड़की परिश्रम से जी चुराती है. इसलिए उसने स्वयं नोट्स नहीं बनाये. उसके पिता किसी फर्म के मैनेजर हैं. लड़की का परिवार कुल मिला कर खुशहाल है.

वह अपने साथियों में काफ़ी चर्चित हो चला है. उसे हीरो घोषित कर दिया जाता है. अपने साथियों की निगाहों में वह एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व है. उसके साथी उससे उस मकान के बारे में पूछते हैं. क्यों कि उसमें तीन लड़कियां रहती हैं. परन्तु सबसे अधिक जानकारी उसके साथी बड़ी लड़की के बारे में चाहते हैं जो १२वीं में पढ़ती है और जिसे उसने अपने सभी नोट्स एवं प्रश्नोत्तर दे दिये हैं.

परीक्षाएं होती हैं. परिणाम निकलता है. वह फेल्योर की संज्ञा से विभूषित कर दिया जाता है. उसके साथी सफलता प्राप्त कर आगे बढ़ जाते हैं. वह असफल हो कर उपेक्षा का शिकार होता है. उसके कुछ साथी उसे हतोत्साहित ही करते हैं. पर कुछ उसे पुनः प्रयास करने की सलाह देते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हाँ, वह बड़ी लड़की भी परीक्षा में सफल हो जाती है. अतः वह 'सधन्यवाद' वापिस करने आती है. वह नोट्स ले कर एक तरफ़ फेंक देता है सोचता है कि वह फिर अच्छे नोट्स तैयार करेगा. कुछ कोर्स भी बदल जाता है यह सोच कर दुखी होता है कि हर वर्ष कोर्स क्यों बदल जाता है ? बड़ी बहिन साथ-साथ उसकी दोनों बहिनें भी पास हो जाती हैं. मझली अगली कक्षा और छोटी १०वीं में आ जाती है.

इधर वह कुछ दुखित होता है. उसके पिता को दमे की बीमारी दबोच लेती पिता प्रायः चारपाई पर पड़ा रहता है. वह रिक्शा चलाना छोड़ देता है. वह घर के बारे में नहीं जानना चाहता कि उसके घर की आर्थिक स्थिति कितनी है. वह परीक्षा में पुनः प्रवेश लेने की घोषणा अभी से अपनी माँ के पास टाँक देता है. उसकी माँ उसे छाती से लगा कर घर-घर दिखाती हुई चोकर करने लगती है.

उधर उस मकान में उसका इम्प्रेशन और भी बढ़ जाता है. बड़ी लड़की छोटी बहन को बताती है कि वह एक अच्छा लड़का है. वह काफी होशियार परिश्रमी है. उसके नोट्स पढ़ कर वह सफल हुई है. अतः वह भी उस लड़के नोट्स एवं प्रश्नोत्तर लेने का सफल प्रयास करे.

कालेज में पढ़ायी प्रारम्भ होती है. वह पुनः परिश्रम करके अपने प्रश्नोत्तर तैयार करता है. ठीक उसी भाँति जिस तरह से उसकी माँ घर-घर परिश्रम करके बर्तन करती है अपने घर की दयनीय स्थिति मिटाने एवं अपने लड़के को पढ़ाने

उधर मझली लड़की भी उस लड़के को उसी प्रकार घूरना प्रारम्भ कर देती जिस तरह पहिले उसकी बड़ी बहिन घूरा करती थी. जब वह अपने हाथ में कोर्स पढ़ता या नोट्स बनाता तब भी मझली उसे छुप-छुप कर येनकेन प्रकारेण करती. लड़के को इसका आभास होता है.

फिर एक दिन अचानक तूफान आता है. शहर की सड़कों के किनारे वर्षों पेड़ गिर जाते हैं. टेलीफोन व बिजली व्यवस्था गड़बड़ा जाती. दो-तीन दिन तमाशा बन जाता. बिजली नहीं आती और नगर पालिका के नलों की नालियाँ जाती है. लोग पूर्व की भाँति उसी मकान में अपने-अपने बर्तन ले कर दौड़ते हैं लड़का भी जाता है. वहाँ जिस तरह बड़ी लड़की ने उससे नोट्स माँगे थे, ठीक भाँति मझली लड़की भी उससे वादा ले लेती है. वह दूसरे दिन अपने सभी मझली लड़की को दे आता है. उसके हृदय में भी चुपके से एक तूफान उठने है, मझली के प्रति.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह मझली से भी हँस-हँस कर बातें करके मिला करता है. उस मकान के बारे में और अधिक जान चुका होता है. बड़ी लड़की प्राइवेट बी० ए० की परीक्षा देगी. उसके पिता मैनेजर का वेतन पहिले से अधिक हो गया है. परिवार में अत्यधिक खुशहाली हुई है.

वह अपने साथियों में और भी प्रभावशाली घोषित कर दिया जाता है. उससे अनेकानेक प्रश्न उस मकान के बारे में किये जाते हैं. लेकिन सबसे अधिक प्रश्न मझली के सम्बन्ध में होते हैं जो १२वीं की परीक्षा देगी, जिसे उसने अपने सारे-के-सारे नोट्स एवं प्रश्नोत्तर दे दिये हैं.

परीक्षाएं हुईं. परिणाम स्वरूप वह पुनः फेल्योर के पदक होता है. इस बार उसके साथी उसके प्रति उपेक्षा भाव बरतते हैं. कोई भी साथी उससे सहानुभूति नहीं दिखाता और न ही कोई नेक सलाह देता. हां, वह मझली लड़की पास हो जाती है. साथ ही सबसे छोटी लड़की भी पास हो जाती है. वह ११वीं में आ जाती है.

इधर वह कुछ दुखी होता है. उसकी मां विधवा हो जाती है. इस लिये वह इस वर्ष पुनः परीक्षा नहीं देगा, अगले वर्ष प्रयत्न करेगा. उसकी मां भी यही चाहती है क्यों कि तब तक वह घर को बन्धक में रख देगी, जिससे उसका लड़का फिर से परीक्षा की तैयारी कर सके.

इधर वह उस मकान में 'फ़ेवरिट-ब्वॉय' घोषित कर दिया है. मझली लड़की अपनी छोटी बहिन को समझाती है कि इस वर्ष वह स्वयं किसी प्रकार से परिश्रम करके पास हो ले. अगले वर्ष वह लड़का भी परीक्षा देगा. वह बहुत परिश्रमी एवं अच्छा लड़का है. वह सभी विषयों के नोट्स तैयार करके उसे मांगने पर दे देगा. अतः छोटी लड़की ने अभी से ही छुप-छुप कर एवं यदा-कदा मुसकरा कर उसे देखने का ट्रिक अपना लिया है जैसा कि उसकी दोनों बहिनें कर चुकी हैं; छोटी का हूबहू वैसा ही कार्यक्रम शुरू हो जाता है. दिन जाते देर नहीं लगता. एक वर्ष बीत जाता है, पलक झपकते.

फिर सभी कुछ पूर्व की ही भांति होता है. परन्तु, पूर्व की ही भांति वह अपने साथियों में बिल्कुल भी 'पापुलर' एवं प्रभावशाली नहीं रह पाता. उस सामने वाले मकान की दोनों बड़ी लड़कियां भी उसकी उपेक्षा करने लगी हैं पर छोटी अपने ट्रिक कायदस्तूर इस्तेमाल करती है. यह देख कर अन्य के साथ उसकी मां भी उसकी उपेक्षा करती है.

कोई भी उससे कुछ भी नहीं पूछता, न ही जानकारी हासिल करने की चेष्टा करता है. क्या कि सभी को पता होता है कि वह क्या करता है !...और उसका क्या परिणाम होता है ! ■

— कल्पना नगर, सिविल लाइन्स, इटावा. (उ०प्र०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अतीत कथा

सुजान

•

पद्म

इस विश्व में युगों से मानव धर्म-संकट से जूझता आ रहा यदि मानव-मस्तिष्क इसे धर्म की अपेक्षा नीति कहता तो उपयुक्त क्योंकि धर्म की शाखायें नहीं, जड़ें होती हैं. धर्म का उद्गम प्रेम ही सम्भावित है. मानव को मानव में एकाकार करने वाली कोई नहीं अपितु प्रेम भावना है. प्रेम-नीति मुक्त है.

सुजान तथा आचार्य निम्बाकर में कभी ऐसा ही प्यार हुआ यहीं इसी हवेली के भीतर ! समय की गति न्यारी है, लोग भूल गये इस करुण प्रेम गाथा को परन्तु सुजान नहीं भूल पाई है. कभी नहीं सकी. लोग अब भी नहीं भूले हैं, राऊ झमेल सिंह की हवेली को! अब भी गाँव के एक भाग में खण्डहरनुमा रूप में खड़ी है—बिलकुल के अन्तर्मन की बाह्य आकृति बन कर.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

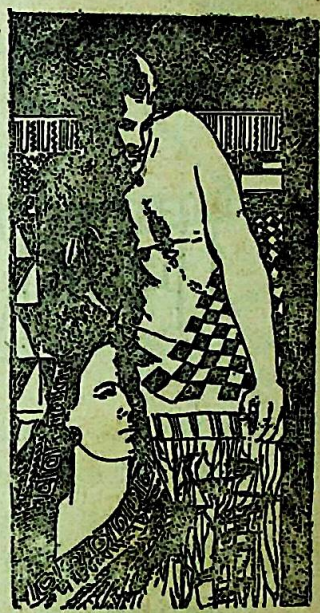

वर्षों पूर्व राऊ झमेल सिंह इस हवेली के स्वामी, सैकड़ों बीघा कृषि-भू के जमीदार थे. कई वर्ष तक उनको सन्तान नहीं हुई. पर विवाह के पन्द्रहवें वर्ष में दैव-कृपा से उनके आंगन में एक कन्या ने पदार्पण किया. वर्षों की साधना पूर्ण हुई थी. उस कन्या को वे साक्षात लक्ष्मी का अवतार मान चुके थे. आषाढ़ में उसका जन्म हुआ था. उस वर्ष आषाढ़ी की फ़सल भी खूब हुई. राऊ साहब के परिवार में एक नयी रीति प्रचलित हुई और प्रति वर्ष कन्या का जन्म-दिन मनाया जाने लगा जिसमें लखनऊ घराने के संगीताचार्य विमल का शास्त्रीय गायन होता. समस्त ग्रामवासियों को प्रीतिभोज दिया जाता.

अब कन्या दसवें वर्ष में पदार्पण कर चुकी थी. अकस्मात् तीव्र उदर-वेदना के परिणाम स्वरूप उसकी माँ नन्दारानी का देहांत हो गया. राऊ को एक असह्य आघात ढलती वक्त के साथ सहना पड़ा था. सुजान के विकसित होते रूप तथा कृषि-प्रभा से यौवन का भार उन्हें उठाना ही था. इस वर्ष लखनऊ घराने के आचार्य भी न आये. फिर भी हवेली में जन्म-दिन पूर्ण उत्साह से मनाया गया. राऊ ने गम्भीर समवेदना से पीड़ित कण्ठ से कहा—

'बेटी ! समय बहुत निर्मम है. तेरी माँ रूठ कर चली गई और इधर आचार्य विमल भी नहीं आये....हाँ...सब नियति के ढंग हैं...बेटी !'

'हाँ ! पर बप्पा, आचार्य क्यों नहीं आये ? मैं उनसे गोष्ठी करना चाहती थी.'

'गोष्ठी !' राऊ ने हुक्के को नाली मुँह से निकालते हुए पूछा, 'कैसी गोष्ठी ?'

'अपने विषय में !'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

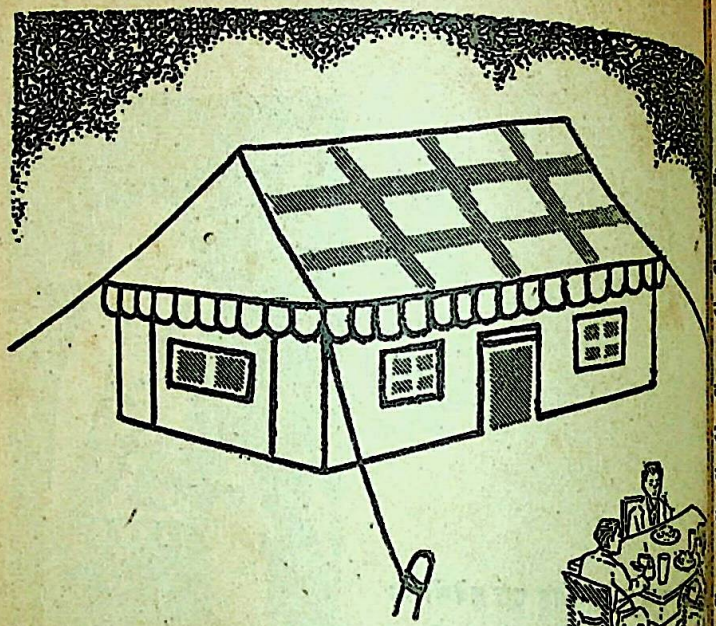

समारोह
डिनर
पार्टियों की
खूबसूरती
और प्रतिष्ठा
के लिए

डायमण्ड डेकोरेटर्स
जंगमबाड़ी • वाराणसी
फोन: ऑफिस: ६६९०३, ५३३२० ■ आवास: ५३४

• मन्य टेन्ट • फर्निचर • क्रॉकरी • कॉफी
प्राप्त करने हेतु हमें आदेश दें •

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'पागल ! अभी तो मैं जीवित हूं. तुझे जीवन के विषय में कैसी चिन्ता हुई ! यह मेरा कर्त्तव्य है कि तुम्हारे बारे में सोचूं !'

वह क्या उत्तर देती ! बस, आंखें झुकाये कालीन में की गई नक्काशी में झांकने लगी. वह सोच रही थी कि बप्पा से कुछ कहे अथवा मौन ही रहे ! हो सकता वह उसकी बात का बुरा ही मान जाएं..

उसने बैठक की दीवालों पर दृष्टि गड़ा दी ! दीवाल पर टंगा चित्र उसके दादा का है. वह इस क्षेत्र के सामन्त थे. सिंह की भांति तेजोमय ललाट, सुगठित शरीर ऐंठी हुई मुछें. और उस चित्र के बाएं भाग में ताऊ की तसवीर लटक रही है. ये वही हैं जिन्होंने सात बार हिम्मतगढ़ रियासत पर आक्रमण किया तथा उसे हस्तगत करके ही रहे.

हम साधारण कृषक तो नहीं हैं. यह भूमि हमारी रियासत है. घर में धन-धान्य का अम्बार है. इस भूमि पर ग्राम आश्रित है. हम स्वामी हैं यहां के—वह गर्वित हो उठी. उधर ताऊ तन्मयता पूर्वक उसके मुख को निरन्तर पढ़ने में तल्लीन थे.

'सुजान तुमने बताया नहीं ! तुम आचार्य से क्या कहना चाहती हो ? साफ़-साफ़ कहो बेटी.'

'बप्पा ! कहूं....'

'कहो बेटी....कहो !'

'मैं नृत्य सीखना चाहती हूं !'

'नृत्य ! तो इसमें लज्जा की क्या बात है ? किसी अच्छी बाई को रख दूंगा, जो तुम्हें कत्थक सिखा देगी !'

वह प्रसन्न थी. उधर ताऊ ने तत्काल अपने विश्वस्त अनुचर को आदेश दिया कि कल ही वह लखनऊ जाये तथा किसी निपुण नृत्याचार्या बाई को ले आये. अनुचर को बात खटक गई. बाई का यहां क्या काम. उसे भ्रम हुआ कि नंदरानी के वियोग को संयोग में परिणत करने के लिए अवश्य ही ताऊ वासना-व्यसन की ओर झुक रहे हैं.

'क्या सोचते हो किसन ! यह तो अपनी सुजान के लिए नियुक्त करना चाहता हूं...बेटा कत्थक सीखेगी !'

'बिटिया नाचेगी ? यह तो बेसवा का काम है ठाकुर...'

'सुजान राजवंशीया है, वो बाई नहीं है. नृत्य किसी को बाई नहीं बनाता. यह कला है किसन.'

'ठीक है ठाकुर. भोर को जाऊंगा.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'और हाँ, वहाँ जा कर विमल जी का कुशल-क्षेम अवश्य लाना. मेरी ओर से कहना अगले बरस जरूर आयें !'

सुजान के लिए एक गुणवती कलानेत्री चम्पा बाई को नियुक्त किया गया. दिन बीते, मास बीते, वर्ष समाप्त होने चला. बाई ने तन-मन लगा कर अपनी शिष्या को नृत्य-कला का प्रशिक्षण दिया. अन्ततः सुजान अपने अथक परिश्रम के फलस्वरूप सफल हो गई.

'अब तुम अच्छी तरह से सीख चुकी हो सुजान ! मैं चाहती हूँ कि तुम्हारी कला का प्रदर्शन किसी सभा-मण्डप में हो !'

'बाई जी ! क्या यह सब कुछ आवश्यक है ?'

'सुजान ! पर्दे में रखी कला का क्या प्रयोजन ! जब तक कला का प्रदर्शन न हो, कलाकार की योग्यता का निर्णय नहीं होता ! कलाकार की कला का निर्णय दर्शक-वृन्द करता है, गुरु नहीं !'

अब सुजान के समक्ष धर्म-संकट की दीवार खड़ी हो चुकी थी. एक ओर कला का निर्णय है तो दूसरी ओर कुल की मर्यादा ! उत्साह पर कुछेक मर्यादायें भारी पड़ने लगी थीं. बाई जी इस वचन पर अड़ी हैं कि नृत्य सभा में अवश्य होगा, तभी वह उसे योग्यता का प्रमाण पदक प्रदान करेंगी.

शाम का समय है, डूबते सूर्य की लाली दूर-दूर तक फैली हुई है, सुजान हवेली के ऊपरी खण्ड में खड़ी सुदूर लहलहाते खेतों की शोभा देखने में निमग्न थी. सुर्ख घाघरा, बैंजनी रंग की पारदर्शी अंगिया पहने उसका अंग-प्रत्यंग और भी आकर्षक लग रहा था. पन्द्रह-सोलह वर्ष की नव-विकसित कलिका-सी हवेली की छत पर खड़ी वह बहुत प्यारी लग रही है. मक्का की निराई चल रही है. खेतों की मेड़ों पर आम तथा जामुन के सघन वृक्ष खड़े हैं. वृक्षों की फुंगियों पर नाना

अन्त

■

मन के कच्चे मकान में
सेंध लगा कर कोई लूट गया
अनछुई कोरी भावनाएँ
अतीत के तह में रखे हुए अनुभव
रह गई खाली वीरान रात
जो चुक गई वो बात
इच्छाओं की पागल मछली
ये नहीं जानती
किनारे पर रेत है
जहाँ साँस टूट भी नहीं सकती
और जुड़ने के लिए एक बूँद भी नहीं
ज़िन्दगी का झूठा अहसास
रह जायेगा बाकी इतिहास
जिसमें तुम्हारा नाम नहीं होगा.

—स्नेह लता वर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...मय कूजनरत हैं.

...गांव के ढोर खेतों के पार बहते बरसाती नाले को चीर कर घरों की ओर लौट ...हैं. एकाएक वह तन्मय हो उठी उस दृश्य को देख कर जिसको कि वह अभी ...रही है. पिछली फ़सल के खलिहान ज्यों-के-त्यों चुने पड़े थे. उस खाली खेत ...अवश्य ही वहाँ के घास-फूस में दाना पड़ा होगा. दो मयूर-दल वहाँ एकत्र हैं. ...दल का राजा अपनी महिषी सहित वे अन्न-दाने एकत्र करना चाहता है तथा ...कार्य में दूसरा मयूर-दल भी लगा है.

...लगता है कुछ वैमनस्य उठ खड़ा हुआ है. अकस्मात् दूसरे दल के मयूर ने ...मयूर की महिषी पर कुत्सित भावना से छेड़छाड़ आरम्भ कर दी थी. ...मयूर किसी धर्म-संकट में पड़ा सोच रहा है. वह अपनी पेयसी को इस भाँति ...होते नहीं देख सकता था. मन-ही-मन सुजान प्रथम मयूर राजा के पक्ष में थी. ...मयूर की कुटिलता पर उसे क्रोध आ रहा था. उसके नथुने फड़क रहे थे. निकट ...खड़ी थी चम्पा बाई, वह भी इस काण्ड को तन्मयतापूर्वक देख रही थी.

सुजान घूम पड़ी तथा बाई से बोली, 'देखो न बाईजी ! कितना निर्लज्ज है वो ...! जी में आता है कि बन्दूक से मार डालूँ. मैं बन्दूक लाती हूँ इस अधर्मी को ...में भेजती हूँ.'

बाईजी के बोलने से पूर्व ही वह वहां से जा चुकी थी. पलक झपकते ही वह ...ले कर आ चुकी थी. बाई जी ने बिहंसते हुए तनी हुई बन्दूक की नलिका के ...पर हाथ रख दिया.

'हट जाओ बाई जी !'

'पगली ! तू दूसरे के धर्म-संकट में फँस कर स्वयं नष्ट होना चाहती है ?'

सुजान के हाथों में बन्दूक ढीला पड़ गई. बाई जी ने उससे बन्दूक ले कर चहार ...के साथ खड़ी कर दी.

'यह धर्म-युद्ध छिड़ा है...तुम केवल इसका निर्णय देखो !'

उसने देखा कि कुटिल स्वभाव वाला मयूर उस शिष्ट मयूरदल से युद्ध में परा-...प्रायः सा हो चुका है. अविलम्ब ही वह पंख दबाये मक्का के सघन पौदों में जा ...छिपा. उसके साथ-ही-साथ उसका परिवार भी लज्जित-सा उसी जगह जा कर ...छिप गया.

'भाग गया, भाग गया अधर्मी !' वह किसी नटखट बालिका की भाँति उल्लास-...उछलती हुई बोली.

...तुम्हारे लिए एक शिक्षा है सुजान ! अपनी भावनाओं को जीवित रखने के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण दास राधिका रंजन

नीचीबाग. वाराणसी. फोन. ६३३८४

स्टाकिस्ट: बेडशीट. कर्टेन. तौलिया. दुशाले. तिरपाल. निवाड़

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युद्ध ही श्रेयस्कर पंथ है. अतएव तुम्हें सभा में नृत्य करना चाहिए !'

एकाएक ठाकुर वहाँ उपस्थित होंगे, वह सोच भी नहीं सकती थी. उसने सादर अभिवादन किया.

'बाई जी ! यह मेरी बेटी है...मैं राजपूत हूँ ! यह बन्दूक चला सकती है पर सभा में नाचे...छीः छीः .'

'यह मेरी शिष्या है, इसे मेरी आज्ञा माननी पड़ेगी !'

'बाई जी ! तुम अपनी गुरु-दक्षिणा लो तथा जाओ ! क्या तुम मेरी वंश-मर्यादा को कलुषित करना चाहती हो ?'

'कला कलुषित नहीं, अपितु पावन करती है महाराज ! मैं अपनी शिक्षा का पूर्ण मूल्य चाहती हूं...धन इतना आवश्यक नहीं जितना गुरु का सम्मान !'

'तो हम देंगे. जो चाहोगी वह देंगे.. तुम्हारे नाम एक पट्टा लिख देंगे. परन्तु सुजान, सभा में नहीं नाचेगी बाई जी !'

'तो मैं भी कुछ नहीं लूँगी...मैं कल चली जाऊँगी खेद है एक राजपूत कर्मचारी कलाकार का सम्मान नहीं कर सका ! उसे सम्मानित किये बिना जा रही हूँ.'

ठाकुर एकदम मौन !

'बाई जी ! आप शान्त हों....मैं पिता जी को...'

'नहीं, नहीं सुजान ! यदि मेरी कला सजीव है तो तुम एकदिन स्वयं नाचोगी ! गायक का कण्ठ, नर्तक का नृत्य और...और प्रेमी के अश्रु कभी थमते नहीं !'

कृष्णा बाई दूसरे दिन लखनऊ जाने वाली डाक गाड़ी से लौट गई. सुजान ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु हठीली बाई न रुकी. कलाकार अपना तिरस्कार सह सकता है ! उसकी तीव्र अभिलाषा थी कि वह अपनी शिष्या का सम्मान कलाकार के मुख से सुने.

सुजान उस दिन अनमनी-सी रही. दूसरे पहर में बाई को विदा कर के वह लौट आया. वह उसी की प्रतीक्षा में हवेली के झरोखे में खड़ी थी. वह उसको आता हुआ देख सर्व प्रथम ड्योढ़ी में जा पहुँची थी.

'किशन चाचा !'

'हाँ बेटी !'

'वे गईं ?'

'हाँ, बाई जी डाक गाड़ी से गईं'

'क्या कह रही थीं.' उसने अस्फुट-स्वर में पूछा !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कहा था बेटी...'

'क्या...'

'कह रही थीं कि मैं तुम्हारे जन्मदिन पर जरूर आऊँगी !'

उसकी आत्मा प्रफुल्ल हो उठी.

माँ के स्वर्गवास के बाद जो क्षण उसने बाईजी के संसर्ग में, संगत की पंगत में सम्मिलित हो कर व्यतीत किये थे, वह ममता के सुखद स्वप्न थे. उसे 'बेटी' कहना बरसों की तृषित आत्मा को स्वच्छ स्नेह से परिपूर्ण कर देना वह चली गई तथा एक असह्य पीड़ा उसके पार्श्व में उँडेल गई. सुजान खिन्न आलिंद देख कर एक निश्वाँस भर कर रह जाती. यहीं उसने सब कुछ पाया था शुद्ध नृत्य-शिक्षा और माँ का असीम स्नेह, दुलार, ममतायुक्त एकांत-वातावरण !

आषाढ़ की पंचमी तिथि आई. राऊ ने बड़ी धूमधाम से सुजान का जन्म-दिवस मनाने की सोची. उन्होंने चार दिन पूर्व ही घोषणा कर दी थी ! हवेली नाना-भाँति के पुष्प-पत्रों से सुशोभित की गयी. मूल्यवान-झाड़-फानूस जगमगा उठे. नाना विधि अतिथियों के विश्राम का प्रबंध किया गया था. घुड़साल की सफ़ाई तथा चारे का प्रबन्ध किया गया.

निश्चित तिथि से एक दिन पूर्व की बात है.

राऊ साहब ने सुजान से मधुर स्वर में कहा, 'बेटी ! इस बार तेरे जन्म-दिवस पर आचार्य विमल के शिष्य आचार्य निम्बाकर आ रहे हैं, अभी-अभी संदेशवाहक आया है. मैं उनकी अगवानी के लिए जा रहा हूँ.'

अश्वारूढ़ हो कर वे चले गये.

ठीक संध्या को आचार्य निम्बाकर बैतालिकों के दल के साथ अतिथि-गृह में पहुँच गये. प्रसन्नचित्त चेहरा, इकहरा शरीर, गौरवर्ण, तीखे-नयन. वह उनका मुख ही निहारती रह गई.

'बेटी प्रणाम करो आचार्य को.' राऊ ने मुसकराते हुए कहा.

'आचार्य, यही है मेरी बेटी ! आपके गुरु महाराज तो अक्सर यहाँ आते रहते थे. इसी के भाग्य से इस घर में पवित्र संगीत का केन्द्र खुला है.'

'बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर. बहुत अच्छी है !'

आचार्य ने मधुर-भाव से देखते हुए उत्तर दिया. वह लजा कर हवेली जा कर खो गई. पीछे से राऊ तथा आचार्य का सम्मिलित हास्य-स्वर सुनाई देता रहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रात्रि के भोजन के समय आचार्य निम्बाकर ने राऊ साहब के पूछने पर बताया कि आचार्य विमल पिछले कई मास से रोग से ग्रस्त पड़े हैं.

'हूं! यह दुरूह समाचार बहुत विलम्ब से मिला, मैं जाता तो उनकी सुश्रुषा जो होती, अवश्य करता! खैर इस समारोह के पश्चात् लखनऊ जाना होगा!'

'हो तो है! वह तो आपके परिवार के निकटतम व्यक्ति हैं. और इसीलिए इनके बारे में....' उन्होंने सुजान की ओर इंगित करते हुए कहा, 'अक्सर बड़ी रोचक बातें सुनाते थे वहाँ!'

राऊ ठठा कर हँस पड़े 'क्या कहते थे?'

'बड़ी चंचल है उनसे यूँ रूँठ जाती है जैसे पिता से पुत्री. हठीली बहुत है. इसको देख कर मैं भी अनुभव करता हूँ कि यह भावुक भी है!'

'देखा सुजान! आचार्य विमल तुम्हें कितना चाहते हैं! लखनऊ जा कर भी नहीं भूलते तुम्हे!'

वह कुछ नहीं बोली. मौन भोजन करती रही. आचार्य निम्बाकर के व्यक्तित्व में एक अनबूझ-सा आकर्षण था. वह चोर-दृष्टि से उन्हें देख लेती. पहले गौर, तीक्ष्ण-नयन, तोते-सी नुकीली नासिका तथा बायें आँख के नीचे तिल! छरहरा-सा शरीर, उस पर साधारण-सी वेशभूषा, सुरीला कण्ठाहार! वह वास्तव में आकर्षण व्यक्तित्व के धनी थे. वह मन-ही-मन उनसे बातें करना चाहती थी, बहुत कुछ पूछने के लिए आतुर थी. कैसे गाते हैं, क्या-क्या गाते हैं, किस अवधि में गायन-कला का अध्ययन किया! वह भोजन समाप्त करके सबसे पहले उठ चुकी थी. तिरछी चितवन से उसने जाते समय उन्हें देख लिया था. आचार्य भी उसकी ओर मुग्ध-नयनों से देख रहे थे. वह पुलकित हो उठी, कुछ-कुछ सशंकित भी. ऐसा क्यों? अपने कक्ष में जा कर अपने पलंग पर वह लेट गयी.

राऊ साहब की भारी भरकम कण्ठ ध्वनि सुनाई दे रही थी. कदाचित किसी सेवक से कह रहे थे, 'साजिंदों को खाने-पीने को पूछ लेना....वे भी हमारे विशिष्ट-अतिथि हैं. लोंगा राम से कहियो कि कल सुबह वह पटवारी के यहाँ चला जाये!'

बाँस की छत से झूलते फानूस की ज्योति में वह न जाने क्या ढूढ़ने लगी. नीरव कक्ष में उसे स्मृतियों के धूमिल चित्रों में कुछ आकृतियाँ-सी दिखाई देने लगी हैं. बाई जी को तो इस अवसर पर आना चाहिये था, परन्तु आई ही नहीं. सचमुच अम्मा के स्नेह की रिक्तता यौवनकाल में बाई जी ने भरपूर कर दी. वह एक प्रकार से उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली की शुभकामना

अल्युमुनियम

शीट्स, सेक्शन, पाइप, तार व फिटिंग्स

हिण्डालियम के आकर्षक

बर्तन व उपहार-सामग्री

अल्युमुनियम के वाल-प्लेट व

अत्याकर्षक विविध रंगों में

एनोडाइजिंग के लिए

शारदा अल्युमुनियम कारपोरेशन

आनन्द बाजार, गौदोलिया, वाराणसी. फोन : ६४६६५

दीपावली का

यह पर्व

हम भारतीयों के लिए

राष्ट्रीय एकता

दोस्ती और

भाई-चारे का

राष्ट्रीय त्यौहार है।

□

'कहानीकार' के आजीवन सदस्य

जेसी एस० मसरूर हुसैन

इण्डिया आटो सर्विस

अलईपुर, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्नेह के आँचल में पल्लवित हो चुकी थी. वह चाहने लगी थी कि क्यों न आचार्य से बाई जी के बारे में पूछे क्यों कि आचार्य भी तो लखनऊ से ही आए हैं.

नई भोर हुई. राऊ झमेलसिंह की हवेली में आज अद्भुत-सी चहल-पहल थी. प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी बहुत से बेगारी (मजदूर) नियुक्त किये गये थे. अश्वशाला की सफ़ाई हो रही थी. कहीं रसोई के लिए लक्कड़ एकत्र किये जा रहे थे. अतिथियों में विशेषकर दीनापुर के ज़मीदार सरताजसिंह के अश्वों के लिए चारे से सानी-पानी की व्यवस्था की गई. एक प्रकार से समस्त ग्राम राऊ की हवेली में बेगार कर रहा था.

हवेली के भीतर झाड़-पोंछ से ले कर तिनके तक हटा दिये गये थे. ऊपरी खण्ड में सुजान एकाकी विचारमग्न-सी खड़ी थी. एकाएक सुरसती ने आ कर कहा, 'अरे! अभी सुजान तो चुप-चुप खड़ी है. भई आज जन्म दिन है, कुछ गुनगुनाओ खाओ और खिलाओ.' वह उसके काँधे से लगभग झूल-सी गई.....

'मोह छोड़ तो! और सुन.'

'कहो!' सुरसती ने कहा.

'क्या खाओगी?'

'जो तुम खिलाओगी...ज़रूर खाऊँगी.'

'सच!'

'हाँ!'

'मैं तुम्हे मार खिलाना चाहती हूँ, कितनी खाओगी?'

'न बाबा न! मार खाते तो जवान हुई है....जवानी में मार खाई कि बूढ़ी हुई!'

वह कटि में बल डाल कर दाँतों में ऊँगली दबा कुछ ऐसे भाव से बोली थी कि सुजान खिलखिला उठी. सुरसती नीचे जाने के लिए जीने से उतरती गई. वह एक-एक चले जाते देखती रही. कितनी भोली तथा हसोड़ है! उसकी भाव-भंगिमाओं को स्मरण करके पुनः अधरों में वह मुसका उठी.

वह हवेली के मुडेर पर आ गई. दूर तक फैले हुए खेतों की ओर देखने लगी. एकाएक उसे पूर्व घटित मयूर-स्पर्द्धा की स्मृति हो आई. पिछले वर्ष यहीं से उसने इस खेत में सब कुछ देखा था. अब तो बाजरा की फसल खड़ी है. कटाई होने में कुछ दिन लगेंगे. तब फिर वे मयूर आयेंगे.

'सुनिये!' एक कण्ठ स्वर सुनाई दिया. वह घूम पड़ी. उसके समक्ष खड़े थे रागों के ज्ञाता आचार्य निम्बाकर, आचार्य विमल के शिष्य, जिनकी आयु केवल पच्चीस-छब्बीस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वर्ष थी तथा जो सरस्वती के महान उपासक थे. उसकी आँखें श्रद्धा से झुक गईं.

'आइए आचार्य !'

'लगता है आप एकांत प्रिय हैं देवी सुजान...!' वह स्वयं भी आ कर मुंडेर के साथ खड़े हो गये थे.

'यूँही इधर चली आती हूं—खुले स्थान में...!'

'आप आज कितने वर्ष की हो जाएंगी !'

उन्होंने उसके सुन्दर मुखारविंद की ओर देखते हुए कहा.

वह चौंक उठी फिर लज्जा की गहन लाली-सी मुख पर दौड़ गई. पर आचार्य से कैसा आवरण, कैसी लज्जा ! वे तो पूज्य हैं.ये सब सोच कर वह बोल पड़ी—'सोलह बरस !'

'अर्थात् यौवन के पूर्ण विकसित वृन्दावन में विचरने चली हैं आप ! सुन्दर और सुन्दर !"

वह तृष्णामयी दृष्टि से यौवन-भार से लदी सुजान की ओर देखते जा रहे थे. दिवस का प्रथम प्रहर था, अभी भी सूर्य में उष्णता प्रखर नहीं हुई थी, शीत का सूर्य कितना मृदुल होता है. न जाने कैसे आचार्य के अन्तरघट में एक तपन-सी अनुभव हो रही थी—एक वही तपन जो मनुष्य को मनुष्यता से तटस्थ कर देती है.

सुजान विस्मित-सी उनके मुख के उतार-चढ़ाव का निरीक्षण कर रही थी. लेकिन वह आचार्य के विवर्ण हुए मुख को समझ भी कैसे सकती थी ? वह तो यह भी भूल गई थी कि रात्रि में उसने बाई जी के विषय में उनसे कुछ पूछने का निर्णय लिया था.

'चलिये आचार्य ! नीचे चलें....मुझे थोड़ा विश्राम करना है !'

'थक गईं क्या आप ?'

'मुझे आदत-सी है. दुपहर के भोजन के पश्चात् मैं बाहर निकलती हूँ और यहीं आ जाती हूँ...सूरज डूबने तक रहती हूँ. संध्या के समय देववंदना फिर थोड़ा नृत्य....'

आचार्य ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'मेरा गायन और आपका नृत्य इस युग की महान कला होगी. आप नृत्य करेंगी और मेरा गायन होगा !'

'समय का आवाहन मुझे स्वीकार होगा, मैं इससे पहले कुछ नहीं कह सकती !'

वह लज्जित-सी वहाँ से चल दी.आचार्य वहीं खड़े रहे,किंकर्तव्यविमूढ़ से देखते रहे.

संगीत सभा का विशाल आयोजन किया गया था.बंदनवार सजाये गये थे.गाँव के तथा समीपवर्ती प्रतिष्ठित जन आमंत्रित थे. गाँव के सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष बच्चे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार उपस्थित थे. वहाँ एक अनुपम उल्लास थिरकता प्रतीत हो रहा था.

रात्रि-भोज समाप्त होते हीठीक किये गये सभा स्थल में आचार्य निम्बाकर ने वैता-लिकों सहित प्रवेश किया. दूसरी ओर हवेली के खुले वातायन से सुजान अपनी अतरंग सखी सुरसती के साथ आचार्य की ओर एक टक देख रही थी. सितार के तंतुवाय झंकृत हुये. स्वर साधा गया. भैरवी का अलाप आचार्य के मधुर कण्ठ से किसी स्त्रोत की भाँति बहने लगा. तबले की थाप मेल दे रही थी. अलाप द्रुत अवलम्बित में ढलने लगा.

सुभ दिन पिया घर आयो,
मैं कित-कित नाचूँ सखी.

द्रुत विलम्ब के ये बोल थे. सुनते ही सुजान झनझना उठी. कोमल टखनी में घुंघरू बजने लगी. वह तन्मयावस्था में नयन मूँदे नृत्य के लिए आतुर हो उठी. सितार की झनझनाहट राग भैरवी का प्रभावमय लय तथा मधुर कण्ठ की संधि ने मुग्ध कर उसे खींचना आरंभ कर दिया.

तक...त...क...थ...ई...त्रिकट...यू...म...धा...धा....इस संगीत नाद ने उसके अवगुंठन खोल दिये. वह वातायन से हट कर न जाने कब सभा मंडप में पहुँच गई. नाचने लगी. उपस्थितगण मंत्रमुग्ध हो नृत्य-गायन में खो गये.

राऊ ने देखा, क्रोधावेश में उठ खड़े हुए पर अपमान के भय से चुप रहे. प्रात ५ बजे सभा विसर्जित हुई. सभी आमंत्रितजन निर्धारित विश्राम कक्षों में जाने लगे.

राऊ सीधे जा रहे थे सुजान के कक्ष की ओर ! द्वार भिड़ा हुआ था. भीतर से सुजान तथा आचार्य की कण्ठ ध्वनियाँ स्पष्ट सुनाई दे रही थीं—

'सुजान ! मैं तुम पर आसक्त हूँ.'

'आचार्य...ये सब मैं सोच भी नहीं सकती....'

'प्रिय, तंग मत करो...मेरे वक्ष से लग जाओ.'

आचार्य का स्वर प्रकपित-सा होता जा रहा था. राऊ के क्रोध की सीमा भंग हो गई. वह उलटे पाँव लौट चले. वह पापी आचार्य को उसकी धृष्टता का दण्ड चुकाने जा रहे थे. सुजान उनकी पुत्री है. प्रथम आक्रोश तो उसी पर हुआ. वह वंश-परंपरा के विरुद्ध सभा में नाची हो क्यों ? दूसरा अक्रोश आचार्य पर था, जो उनकी वंश-परंपरा को कलंकित करना चाहता था....कलाकार के रूप में पाखण्डी, व्याभिचारी मनुष्य !

आचार्य पर कामुकता का भूत सवार हो चुका था. उसने बलपूर्वक सुजान को वक्षस्थल से लगा लिया.

'ओह ! कितनी...कोमल...कितनी रसीली हो...'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शादी-विवाह
एवं
अन्य शुभ अवसरों
की
फोटोग्राफी के लिए
तथा
फोटोग्राफी के हर तरह के
सामानों के लिए

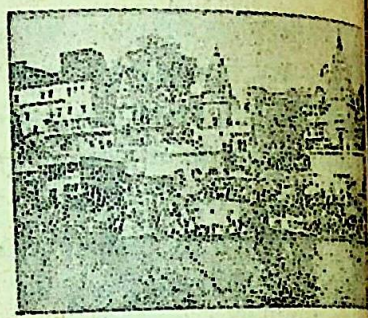

फोटो हाउस

गोदौलिया—वाराणसी

हर प्रकार की मुद्रण सम्बन्धी
स्याही
मशीनों
एवं
सामग्रियों
के स्टॉकिस्ट तथा विक्रेता

प्रिंटिंग मैटीरियल स्टोर्स

सीके. ५९/२५ कर्णघण्टा (बुलानाला) वाराणसी फोन : ६४०३०

एकमात्र वितरक—

- मेसर्स भारत वारनिश मैन्यूफैक्चरिंग कं० बम्बई.
- मेसर्स जे० बी० ए० प्रिंटिंग इंक्स (प्रा०) लि० बम्बई.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'दूर हट...दुराचारी ... माँ सरस्वती को कलुषित करने वाले दुर्जन...

'तुम नहीं जानती, आज माँ सरस्वती के आवाहन से ही संगीत और नृत्य एकाकार हो जाएंगे!' कहते हुए वह झुका और उसके अधर सुजान के अधरों से जा सटे!

एक बारगी वह धर्म-संकट में पुनः फँस गई. एक महानद की धारा उसके मन में बहने लगी थी. लेकिन बाहर खड़ी वंश-परम्परा और उसकी मर्यादा के मोह ने उसमें विद्रोह के भाव भर दिये. फिर यह प्रेम भी तो नहीं. उसके मन ने कहा—

प्रेम....छी! ये प्रेम नहीं...बलात्कार है. बलात्कार...एकाएक उसकी आँखों में पूर दल के वे राजा-रानी स्मरण हो आये....यही परिस्थिति थी उस समय भी. उसकी आँखों में प्रतिशोध भी तीक्ष्ण किरणें फूटने लगीं!

तत्काल उसने तीव्र प्रक्रिया द्वारा आचार्य को पीछे धकेल दिया और अपने पलंग के सिरहाने टँगी बंदूक उठा ली.

'अभी तुम्हें यम-लोक पहुँचाती हूं पापी...'

आचार्य निम्बाकर पैशाची हँसी हँसता हुआ बोला—

'प्रेमी मृत्यु से नहीं डरते....'

'आचार्य! पीछे हटो, नहीं तो गोली छोड़ दूँगी!'

'नहींऽऽऽइसे मैं मारूँगा...' तभी वहाँ राऊ का भारी कण्ठ-स्वर गूँज उठा.

'नहीं....नहीं राऊ....मैं अतिथि हूँ...!' वह भीरु स्वर में बोला और काँप उठा.'

उसकी भीरुता और पैशाचिकता से वह अत्यधिक खीझ उठी. उसने घोड़ा दाब दिया! गोली आचार्य के वक्ष को पार कर गई. एक हृदय-विदारक चीत्कार के साथ वह भूमि पर ढह गया! राऊ विस्मय से अपनी बंदूक की ओर देख रहे थे...वह तो यहीं छूटी!

'मैंने मार दिया इसे...!' कहते हुए उसने बंदूक पलंग पर फेंक दी.

'मैं तुम्हें मारने आया था सुजान!' राऊ ने कहा और कक्ष से बाहर निकल गये.

सुजान विस्मय पूर्वक कभी मृत आचार्य की ओर देखती तो कभी राऊ की कही बात को याद करती! फिर न जाने किसलिए उसकी आँखों से अश्रु बहने लगे.

■

समय बीता. न रहा वो वंश, न रहे वे लोग! गाँव के बाहर वीराने में राऊ कोलसिंह की हवेली खण्डहर के रूप में अब भी विद्यमान है. रातों को वहाँ किसी नारी के अट्टहास एवं रुदन की करुण ध्वनि क्षेत्र के लोगों ने सुनी है. कहते हैं, सुजान प्रकट हो गई थी, उस घटना के पश्चात्. उसकी आत्मा राऊ की बात का उत्तर ढूंढ भी तलाश कर रही है जिस बात को ले कर वह पागल हो गई थी■

—ए६७ सेक्टर १४ चन्डीगढ़, १६००१४.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ स्याह कुछ सफ़ेद

औरत की खूबसूरती का क़िस्सा काफ़ी पुराना है. इस चीज़ को ले कर दुनिया
काफ़ी घोटाला हुआ है. यही एक ऐसी चीज़ है जिसकी परिभाषा आज तक भी असंतुलित
और अनिश्चित है. न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की परिभाषा दी और दुनिया ने तालियाँ
उसे मान लिया पर गुरुत्वाकर्षण की परिभाषा से बड़ी स्त्री आकर्षण की परिभाषा
देने वाला एक भी न्यूटन आज तक पैदा नहीं हुआ. वैज्ञानिकों के लिए यह काम काफ़ी
मुश्किल भी है, क्यों कि वे छूरी और चाकू वाले आदमी हैं और उससे खूबसूरती का
कबाड़ा तो हो सकता है, उसकी पैमाइश कभी भी नहीं हो सकती. यह काम इसी लिए
कवियों और शायरों को सौंपा गया. कवियों से बढ कर उर्दू के शायरों ने सौन्दर्य का
कि खूबसूरती की गुलामी की है लेकिन कवियों में जो हिन्दी में पैदा हुए और जो छायावाद
वादी तहज़ीब से नावाकिफ़ थे, उन्होंने सौन्दर्य का पोस्टमार्टम करके उसका गुलगपाड़ा
कर डाला. उसे 'पंच तत्व यह अधम शरीरा' बना के रख दिया. कबीर के पल्ले
सौन्दर्य 'झीनी चदरिया' बन के रह गया. कुछ ऐसे भी कवि हैं जो इश्क में धोखे
खाये थे, वे नारी और नारी सौन्दर्य की बात पर ही भड़क गये और सौन्दर्य की बात
तो दूर, नारी को सीधे 'ताड़न का अधिकारी' घोषित कर दिया. यही नहीं 'अवगुण
आठ सदा उर बसही' कह कर उसे दो कौड़ी का बना दिया. यह नारी बिचारी शेक्स
पीयर के हाथों पड़ी तो थोक भाव में 'फ्रेलिटी दाई नेम इज़ ओमन' खिताब पा गयी
उसकी यही बेहुरमती राजा भर्तृहरि के हाथों हुई. दरअसल हिन्दी में छायावाद का
न हुआ होता तो नारी सौन्दर्य का सवाल आज तक खटाई में ही रह गया होता
इस दिशा में रीति काल के महारथी कवियों ने काफ़ी करिश्मा किया है. औरत की
खूबसूरती का बखान या तो रीति काल में हिन्दी के कवियों ने किया या फिर आज
बम्बई में फिल्मी-इल्मी लोग कर रहे हैं. रीति काल में नारी की खूबसूरती का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क़िस्सा
औरत की ख़ूबसूरती का

□ कमल गुप्त

कागज़ पर उतारी गयी. आज औरत की ख़ूबसूरती को रौशनी की धार से पर उतारी जा रही है. बिहारी को 'कंचन छड़ी-सी कामिनी' का धोखा हुआ और केशवदास जैसे महारथी कवि को ऐसे ही एक मामले में 'रमा कि रायप्रवीन' का फिर 'रायप्रवीन कि शारदा' का धोखा हुआ था, पर आज की उपलब्धि के हमसर रायप्रवीन ही रायप्रवीन का धोखा होता है. उसी तरह बिहारी की नायिका बनने के चक्कर में काफ़ी औरतें कंचन छड़ी-सी कामिनी बनने की खातिर आधा पेट खा कर डायटिंग में. ज़िन्दगी गुज़ारती नज़र आयेंगी ताकि वे हर वक़्त से ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आती रहें.काग़ज़ की चिकनी सतह,और सिनेमा के पर्दे से ले कर पर्दे के भीतर जहाँ भी देखो औरत की ख़ूबसूरती का सवाल किया जा रहा है. उर्दू शायरी तो औरत पर मर मिटी है. ग़ज़ल का अमन वैसा ही औरत की ख़ूबसूरती रहा है—शायद शायरी की इसी औरत मिज़ाजी से तंग कर इक़बाल ने कहा भी—'हिन्द के शायरो, सूरतगरो, अफ़साना नवीस.

आह! बेचारों के आसाब पै औरत है सवार.

बहरहाल इस बात से यह और जाहिर है कि औरत की ख़ूबसूरती का सवाल एक सवाल है.यही सवाल देश की स्नो-पाउडर और क्रीम बनाने वाली बेशुमार कम्पनियाँ भी हल कर रही हैं.पर इसी बात से यह भी साबित होता हैकि वे स्नो,पाउडर,क्रीम, और कॉस्मेटिक्स बनाने वाली बेशुमार कम्पनियाँ इस बात की गवाह हैं कि देश में पेट की भूख नहीं, सिर्फ़ ख़ूबसूरती की भूख है, दिन-रात ख़ूबसूरत बने रहने की भूख है, औरत की भूख है. पेट की भूख मिटाने के लिए सिर्फ़ दो रोटी चाहिए. औरत की भूख इतनी आसान नहीं और शायद इसीलिए दुनिया भर की जमाखोरी, चोरबाज़ारी और मुनाफ़ाख़ोरी के धन्धे हैं, हज़ार फ़ितरतें हैं. इसलिए किसी को भूखों मरने नहीं दिया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जायेगा—यह कहने के बदले नेता को यह कहना चाहिए कि सरकार किसी को भूखा कर मरने नहीं देगी. कितना अच्छा समाजवादी तर्ज़ है. भूखों तो जानवर भी नहीं मरते फिर आदमी क्यों मरने लगा. जान पर आ पड़ेगी तो कोई-न-कोई हिकमत वह बैठा ही लेगा. नहीं कुछ खाने को मिलेगा तो चोरी करने के बहाने जेल में तोड़ेगा, पर मरेगा कभी नहीं. मरना इतना आसान नहीं है. इसलिए सरकार को चाहिए कि वह इस ओर से निश्चित रहे और मुझे धन्यवाद दे कि मैंने उसे तथा कथित चिन्ता से मुफ़्त में ही मुक्त कर दिया. भूखों मरने वालों की चिन्ता के स्थान पर उसे खा-खा कर मरने वालों की चिन्ता ज़रूर करनी चाहिए. उस तरह की मौत पर सरकार अगर पाबन्दी लगा दे तो समाजवाद के आने में कोई रुकावट ही न रहे. दरअसल समाजवाद के रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट यही है—खा-खा कर मरने वालों की जमात. इस जमात वाले अचानक नहीं मरते. पहले ये खूब खाते हैं. जरूरत से ज्यादा खाते हैं. दो-चार बार नहीं, दस-बीस बार खाते हैं. हज़ार का पेट भर कर अपनी तोंद भरते हैं. इसके कारण पहले उनके गाल नारंगी की तरह गोल-गोल हो जाते हैं फिर शरीर का आकार बोरे जैसा हो जाता फिर तोंद फूल कर गुब्बारे की तरह और फिर वह फूट जाता है—बम विस्फोट की तरह. खा-खा कर मरने वालों की संख्या काफ़ी है. सरकार को चाहिए कि इस संख्या का युद्धस्तर पर मुकाबला करे और इसे खत्म करके समाजवाद ले आये.

मुझे अफसोस है कि बात हो रही थी कि साहित्य की, नारी की और नारी सौन्दर्य की कि कबाब में हड्डी की तरह समाजवाद उसमें टपक पड़ा. इसमें न तो मेरा दोष है और न ही समाजवाद का. दरअसल समाजवाद का जन्म ही कबाब में हड्डी को ले कर हुआ है. समाजवाद को बुलाओगे तो सभी को कबाब नसीब होगा. नहीं बुलाओगे तो वह कबाब में हड्डी की तरह दुख देगा. यह एक महत्वपूर्ण खोज है—एक ऐतिहासिक अन्वेषण है. सरकार को चाहिए कि समाजवाद की इस परिभाषा का प्रचार करे तो उसके आने में आसानी होगी. मार्क्स, लेनिन, स्टैलिन, माओ से और कोसिजिन तक समाजवाद को ले कर जो भी विचार हुए उनसे सब जनता के आने में कोई खास सहूलियत नहीं हुई. कबाब और हड्डी वाली परिभाषा ही दिशा के काफ़ी कारगर साबित होगी, ऐसा मेरा विश्वास है. जनता को यदि कबाब के चक्कर में डाल दिया जाय तो वह बड़ा से बड़ा काम कर सकती है. यदि हलुआ और पूरी के नाम पर वह इलेक्शन का भविष्य बदल कर और विरोधी सरकार बनाकर अपने पैर पर कुल्हड़ी मारने में माहिर है तो फिर कबाब के नाम पर तो वह खुद को भी बेच कर बड़ा से बड़ा समाज सुधार लाने के लिए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो जायेगी.

बात फिर गड़बड़ा गई, नारी और नारी सौन्दर्भ की परिभाषा का सवाल ले कर बैठा था कि समाज-सुधार के चक्कर ने फंस गया. लोग हैं कि समाज-सुधार का चक्कर चला कर सौंदर्भ के सागर में गोते लगाते हैं और एक मैं हूँ कि कबीर की तर्ज में 'बरसे कम्बल भीगे पानी' जैसी उल्टी बानी बोलता हूँ. वैसे मेरे बूते का यह दोनों ही मर्ज़ नहीं है—न तो सौन्दर्भ का चक्कर और न ही समाज-सुधार का चक्कर. सौन्दर्भ की बात पर मेरे बहुत से दोस्त 'कहानीकार' के मुखपृष्ठ के चित्रों को ले कर मुझसे नाराज़ हैं. कई का कहना है—पत्थरों की मूर्ती खूबसूरती ले कर हम चाटेंगे! अरे छापना ही है तो छबीली को छापो, रसीली को छापो, नशीली आँख वाली को छापो. सभी कर रहे हैं, तुम भी करो.

—औरों को करने दो, मुझे इन क्रीम और पाउडर वाली औरतों से ज्यादे वे पत्थर वाली औरतें अच्छी लगती हैं.

—तो चल चुकी तुम्हारी यह पत्रिका. पत्रिका चलाने के गुर सीखो और औरतों का बाजार लगाओ, नंगी तस्वीरों और नंगी जांघों का बाजार गरम रखो और उस पर कविता छापो, नंगी कमर और नंगी छाती पर कहानी छापो तब देखो तुम्हारी पत्रिका कैसे दौडती है!

—मुझसे यह सब नहीं हो सकता.

—तो फिर मुझसे मदद भी नहीं हो सकती. मेरे पास पैसे फ़ालतू नहीं है. भाड़ में जाओ तुम और तुम्हार पत्रिका.

—मेरी बात तो सुनो.

—मेरे पास तुम्हारी बातों को सुनने के लिए फ़ालतू समय भी नहीं है.

दोस्त खफ़ा हो जाता है और मैं परेशान. पत्रिका का बन्द होना मेरी धड़कन के बन्द हो जाने जैसा हादसा है और उसके कवर पर औरतों का बाज़ार लगाना जैसे उसकी अस्मत लूटना है, उसे बेइज्जत करना है या फिर जैसे उससे वेश्यावृति कराना है. मुझे गुमसुम पा कर मेरा दोस्त मुझे मेरे हाल पर छोड़ कर चल देता है.

मैं काफ़ी परेशान हो उठता हूँ, अपनी बेहाली पर. मेरी तबीयत खुदकशी कर लेने को होती है. ऐसे बहुत से खूबसूरत लोग हैं जो किसी खूबसूरत औरत से इश्क फ़रमाते और इश्क में औरत की संगदिली के कारण खुदकशी कर लेते हैं पर मेरी खुदकशी की वजह संगदिल औरत नहीं, संगे मूरते हैं जिनसे मेरी मुहब्बत है और जिन्हें 'कहानीकार' पर छापने से मुझ पर इश्क की तासीर रंग लाती है, साथ ही बर्बादी के पैगाम भी लाती है. किसी खूबसूरत औरत के लिए खुदकशी करना एक बड़ी बात है. ऐसे लोग लैला मजनू या शीरी फरहाद की तरह नाम कमाते हैं और जमाने के सामने बेमिसाल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली शुभ हो

●

रंगीन छपाई, कव्वर, जॉब वर्क्स,
रैपर्स, लेबुल ब्लाक
वैक्सिंग
एवं
वारनिशिंग में विशिष्ट

●

आलोक प्रेस

बुलानाला : वाराणसी

• दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

अंग्रेजी दवाइयों एवं
वैज्ञानिक उपकरणों का प्रतिष्ठान

साइन्टिको

लहुरावीर, वा रा ण सी

फोन–५३५०६, ५३५०७

स्टाकिस्ट—

▪ एस०डीज० लेबोरेटरी केमिकल्स थामस बेकर ▪ राबर्ट जानसन
▪ मयूखो केमिकल्स ▪ सुपर प्राडक्ट्स एण्ड ज्योति इलेक्ट्रिकल्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुहूज्जतबाज माने जाते हैं, जब कि एक पत्रिका को ले कर जान मारना सिवा बेवकूफ़ी के और कुछ भी नहीं हैं. मेरे एक दोस्त का सुझाव है कि अगर अपनी जान ही मारना चाहते हो तो इलेक्शन टिकट के लिए जान मारो, इलेक्शन जीतने के लिए तो जान मारो, स्मगलिंग के लिए जान मारो, शराब के ठेके के लिए जान मारो, गांजा-भांग की ठेकेदारी हासिल करने के लिए जान मारो पर मेरी उल्टी खोपड़ी में एक भी बात नहीं समाती. मेरे जेहन में तो बस एक ही बात घर कर गयी है, जीने के लिए दो रोटी और एक खूबसूरत बहाना काफ़ी है. वैसे मरने के लिए तो बहुत से खूबसूरत बहाने हैं. हां एक खुबसूरत औरत से बढ़ कर शायद जीने के लिए दूसरा खूबसूरत बहाना नहीं होगा. लेकिन ऐसे नाजुक जगहों पर बहुत से हादसों को गुंजाइश रहती है. मसलन औरत के छोड़ कर चले जाने पर 'विभोगी होगा पहला कवि' की तर्ज से आदमी कवि या शायर हो सकता है, ताज-महल जैसी खूबसूरत इमारतों का जन्म हो सकता है. जिन्हें खूबसूरत औरत नहीं मिलती उनकी तमन्नाएं बेढब जी की तरह यह कहते हुए हाथ मलती रहो हैं—मैं ताज को बनवाता मुमताज नहीं मिलती. इसी तरह दुनिया के सात वंडर्स में असीरियन हैंगिंग गार्डन का भी जन्म न हुआ होता यदि मीडिया की खूबसूरत राजकुमारी खूबसूरती को असीरिया की गरमी से बचाने का सवाल न पैदा होता. खूबसूरत औरत का मामला ही था कि क्लियोपेट्रा को तवारिखी शोहरत मिली. ग़रज़ यह कि जीने के लिए एक खूबसूरत औरत का बहाना काफ़ी खूबसूरत बहाना है.

इन सारी बातो से यह साफ़ हो गया कि औरत की खूबसूरती यानी कि नारी का सौन्दर्य काफ़ी बड़ा और अहम मसला है और इस बात को लेकर काफी घोटाला हर जामने में हुआ है. इनकी खूबसूरती की परिभाषा का सवाल अलजबरे के फारमूले से ज्यादा जबरा और टेढ़ा है. यह कहना मुश्किल है कि सिर्फ़ चन्द्रमुखी और चन्द्रवदनी खूबसूरती ही नारी सौन्दर्य की सही परिभाषा है. मजनू के दिल में कोई जाके पूछे या फिर शेक्सपीयर के दिल में कोई झांक के देखे तो इसका जवाब मिलेगा कि क्यों कर ये दोनों काली औरतों पर फिदा थे. मेरे एक दोस्त ने एक बार एक अंग्रेज औरत को एक हब्शी को चूमते और चिपकाते हुए देख कर कहा था—अब इज़ कमरेड माइएड मैं समझता हूँ कि खूबसूरती की सही परिभाषा सिर्फ़ वहीं कर सकते हैं जो प्यार करना जानते हैं. जो बिना प्यार किये खूबसूरती की परिभाषा करते हैं, उनकी बातें भाड़े के टट्टू की बकवास के सिवा और कुछ नहीं होतीं. इश्क और खूबसूरती की दुनिया में भाड़े के टट्टुओं का क्या काम. दरअसल उन्हीं की वजह से सारा घोटाला होता है. इसलिए खूबसूरती परिभाषा वही दे सकते हैं जो खूबसूरती को निहायत खूबसूरती से प्यार करना जानते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूठ के दायरे

● परमानन्द अक्षुज

काशी एक्सप्रेस जबलपुर प्लेटफ़ार्म से सरकने लगी थी. पीछे छूटते हुए मोह का दर्द आँखों के डायल में सेकेन्ड के काँटे की तरह बड़ी तेज़ी से घूम रहा था. प्लेटफ़ार्म के आखिरी छोर पर जहाँ पहुँचते-पहुँचते गाड़ी तेज़ हो चली थी, एक पीले पत्थर के खुरदरे चेहरे पर काले अक्षरों से लिखा था 'ए नाइट हियर फार मारबल राक्स'. संगमरमर की दूधिया, गुलाबी, आसमानी, नारंगी, नीली और पीली चट्टानों के पेट पर क्वांरी नदी नर्मदा ने असंख्य निशान छोड़े हैं. नदी सदियों से बह रही है—अथाह पानी है इसके आँचल में, समय की तेज़ धारा ने कितनी ख़ूबसूरती से तराशा है इन्हें. शिलाओं पर खिंचे हुए ये निशान ज्यों-के-त्यों हैं, मिटते ही नहीं. शायद मिटेंगे भी नहीं. इसी नदी के पानी की सतह पर तैरती हुई नाव में तुम मुझे दे गये हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

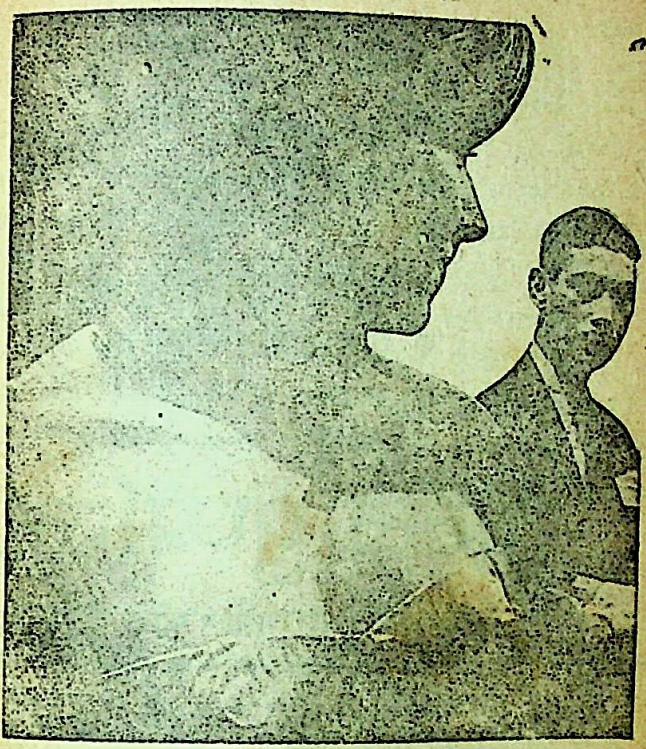

जिन्हें मैं चाह कर भी मिटा नहीं पाती'—यह सोचते ही सरिता की कोरों पर आंसू तैर गयां. एक्सप्रेस अपनी भरपूर रफ्तार से आगे बढ़ रही थी और वह पीछे लौट रही थी. तभी—

—क्या नाम है आपका ?

—सरिता.

—मिस या मिसेज़ !

—जी ! जी—मेरी शादी नहीं हुई अभी.

—यानी मिस सरिता.

—जी हां. माथे का पसीना पोंछते हुए सरिता ने हामी भरी.

—आप क्या कर रही हैं आज कल—?

—मैं एक प्राइवेट हाई स्कूल में लेक्चरार हूं. पूरी तनख्वाह पर दस्तखत कर एक सौ पचास रुपये पाती हूं.

—तो इसीलिए आपको दूसरी नौकरी की आवश्यकता है.

—जी हां, आप अपने यहां मुझे पार्टटाइम नौकरी दे दें तो बहुत एहसानमंद रहूंगी आपकी. और—और मैं अपने काम में कोई शिकायत न आने दूंगी. कभी—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मनोरम
और
आवास
एवं
भारतीय तथा पाश्चात्य शैली
के सुस्वाद भोजन-व्यंजन
का स्थान—

होटल पुष्पांजलि

लहुराबीर ▪ वाराणसी ▪ फोन—६४३३४

कान्टेक्ट लेंस

स्पेक्टिकल्स

तथा

निःशुल्क नेत्र-परीक्षा

का

प्रतिष्ठान

न्यू आइको आप्टिशियन्स

रतन कटरा (पेट्रोल पम्प के समीप) गोदौलिया, वाराणसी
फोन : पी.पी. ६२६४२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिड़गिड़ाते हुए सरिता ने कहा.

—ठीक है. कल से आ जाइये आप काम पर. शाम छै बजे स रात ग्यारह बजे तक की शिफ्ट रहेगी आपकी. कभी-कभी बीच में भी आना पड़ सकता है. ये अखबार का काम है. हम आपकी शुरुआत एक सौ तीस रुपये से कर रहे हैं अभी. अगर काम अच्छा रहा तो और बढ़ा देंगे. एक माह आपका काम देखेंगे अगले महीने से बतौर सह-संपादिका हम आपका नाम भी देने लगेंगे अपने अखबार में.

—जी, बहुत बहुत धन्यवाद आपको. मैं आजीवन आभारी रहूँगी आपकी.

—और रुकिये दो-चार मिनट, चाय पी कर जाइये. देखिये, हमारा अखबार आज़ी नवीन विचारों का है—क्रांतिकारी. तुराने रीति-रिवाजों, मान्यताओं से विरोध है हमारा. नयी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं हम. क्या आपका एका हो सकेगा अखबार की नातियों से.

—जी हां, क्यों नहीं मैं भी...

—रात आपको प्रेस आने-जाने में कोई तकलीफ़ तो न होगी ?

—जी नहीं, मैं पास ही रहती हूँ, हनुमानताल में.

एनाइट हियर फा...

—आज तो शहर में कर्फ्यू लगा हुआ है सरिता जी. जाने में दिक़्क़त होगी, रिक्शे नहीं मिलेंगे. आज यहीं रुक जाइये न.

—जी नहीं, मेरे पास तो प्रेस-कार्ड है न ! फिर इस रास्ते आते जाते तीन माह हो गये. अब तो रात की ड्यूटी के कई पुलिस वाले मुझे पहचानते हैं.

—हो तो ठीक है लेकिन कर्फ्यू ! आप सुबह चली जायेगा.फिर आज रात तीन बजे तक क्रोजिंग चलेगी शायद कोई नयी घटना....नया न्यूज़ !

—ठीक है तो मैं रहूंगी अभी.

—और हां—जब आपको नींद आने लगे तो ये रही मेरे कमरे की चाबी. आप इत्मीनान से ऊपर जा कर आराम करिये. कोई असुविधा नहीं होगी वहां आपको. मैं दूसरा कैबिन अपने सामने छपवा कर सोऊँगा आज.

प्रेस की ऊपरी मंजिल पर चढ़ते हुए सरिता ने आज पहली बार सोचा—शिरीश बाबू कैसे वाले आदमी हैं. इतना बड़ा प्रेस, दो मंजिली बिल्डिंग, अधेड़ उम्र और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बिलकुल अकेले. दूसरी शादी नहीं की इन्होंने ! वैसे प्रेस में उनके सहयोगी काफ़ी गुप्त बातें बताते रहते हैं उनके बारे में. मसलन बड़े-बड़े लोगों पर कीचड़ उछाल कर उन्हें 'ब्लैक मेल' कर इतनी बड़ी जायदाद तैयार की है शिरीष बाबू ने. यह तो था कि कभी सड़क पर अख़बार बेचते थे, यह भी कि कोयला खदान में मज़दूरी भी की है इन्होंने...दसवीं फेल हैं पर ग्रेजुएट बताते हैं अपने आपको. ख़ैर कुछ भी हो लेकिन शिरीष बाबू में प्रतिभा है. संघर्ष से आगे बढ़े हैं और कुछ नहीं तो अख़बार के मामले में माहिर हैं. बड़े-बड़े मिनिस्टर थर्राते हैं उनके नाम से. मगर एक दिन मकरंद ने कह रहे थे कि औरतों के नाम पर बड़े विचित्र विचार रखते हैं ये. सनकी हैं एकदम. शिरीष बाबू ने अपनी पहली बीवी को सिर्फ़ इसलिए तलाक़ दे दिया कि वह बच्चे चाहती थी और ये बच्चे पैदा करने के विरोधी रहे हैं. दिसम्बर की कड़कड़ाती ठंड में भी रात दो बजे सरिता को पसीना, आने लगा शिरीष बाबू के कमरे में घुसते हुए. लेकिन इस बात ने उसे बड़ी तसल्ली दी कि आज तक शिरीष बाबू के व्यवहार में उसने कभी ऐसी-वैसी बात नहीं ही पायी. और दूसरी औरतों के मामले में वह चाहे जैसा भी हों.

देर तक जागी हुई सरिता बिस्तर पर लेटते ही सो गई थी.

—इतने दिन शादी हुए हो गये सरिता और तुम अभी तक शरमाती हो. शुरू-शुरू में तो ख़ैर हमने माना कि क्वांरी शर्म है तुममें लेकिन अब...? रोमेंटिक अंदाज में शिरीष ने सरिता को छेड़ते हुए कहा—फिर शर्म किससे, मुझसे ? मैं तो तुम्हारा भाई मीन हसबैंड हूँ, फिर भाई धूमधाम से शादी की थी, चोरी से नहीं.

—छोड़िये न. आप तो बेवजह तंग करते हैं.

—छोड़ तो ख़ैर सकते नहीं हम आज आपको. लेकिन इन हसीन लम्हों में चिराग़ को गुल कर देना ज्यादती है, तुम्हारी हम पर. फिर तुम तो खूबसूरत हो, बेइंतिहा खूबसूरतफिर ऐसे जिस्म को छुपाना क्या ? गुदाज मादक बदन क्या अंधेरों के लिए है.ऐसे वक़्त अगर नीम-अंधेरा हो, हल्का-सा गुलाबी उजाला और संगमरमरी बदन अगर पूरी तरह खुला हो तो मादकता और बढ़ जाती है और लुफ़्त आ जाता है सिमटने में.

—ऐसा करिये, इस कविता को आप कल अपने पेपर में छपवा दीजिये. आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बत्ती बंद करिये और लेटिये नहीं तो...

—'नहीं तो !'

—नहीं तो बस्स !

—मान भी जाओ बड़ी बी ! मुहब्बत का गरमी और खुलूस एहसासों की तपिश जो उजाले में लिपटने में मिलती है, अंधेरे में कहाँ ?

—अच्छा आज मान जाइये. फिर किसी और दिन.

प्यार के तरल क्षणों में शिरीष बेचैन तो थे लेकिन आज अपने ढग का मज़ा लेना चाहते थे. थोड़ी-सी व्हिस्की और ली शिरीष ने. सरिता को भी दी और बोले—तो सो जाओ सरिता.छोड़े देते हैं हम आज तुम्हें—

—आप नाराज़ हो कर तो नहीं कह रहे न !

—नहीं तो.और शिरीष ने लिपट कर भरपूर चुम्बन टाँक दिये. सरिता के होठों पर प्रेम के उन उत्तेजनात्मक क्षणों में भी उसकी आँखें नम हो आयीं. हल्के से निकल गया गले से—वाह री, मेरी ज़िंदगी !

शिरीष ने सुन लिया—तुम्हें क्या कोई तकलीफ़ है सरिता ?'

—नहीं.

—तो ये शब्द.

—मैं सोच रही थी, आप मुझे कितना प्यार करते हैं. कहाँ आप, कहाँ मैं ! आप ने मुझे सड़क से उठा कर ऊपरी मंजिल के गमले में सजाया है, फिर सड़क पर न फेंक दिजियेगा !

शिरीष ने उसे और ज़ोर से भींच लिया. ऐसी बातें मत करो सरिता. वह और

गीत

कौन गीत गाऊँ जो तेरे
मन की पीड़ा को सहला दे !
किस रंग में मैं रंगूँ साँझ को
जो हारे मन को बहलाये
कैसे उपवन का गुंजन दूँ
जो प्राणों को प्यार पिलाये
कौन दीप बालूँ जो तेरे
मन-मन्दिर में ज्योति जला दे !
किन फूलों का सौरभ ला दूँ
जो तेरे पथ सुरभित हो लें
कौन लहर संग गांठ जोड़ दूँ
जो अन्तः आह्लाद में झूले
किस बादल संग नाता जोड़ूँ
जो धरती पर सावन ला दे !
किस तुलसी से रच दूँ आँगन
जो गृह में आराधन बो दे
कौन मलय का झोंका ला दूँ
जो शरदीया सावन बो दे
किस रंग में आँचल रंग डालूँ
जो नयनों में स्वप्न जगा दे
कौन गीत गाऊँ जो तेरे
मन की पीड़ा को सहला दे !

—डा० कौशल्या गुप्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आलोक पर्व
पर
हमारी हार्दिक
शुभकामनाएँ

•

अनिल इन्जीनियरिंग कम्पनी
३५, लाजपत नगर, वाराणसी.
एजेन्ट :
दी इण्डस्ट्रियल गैसेज लिमिटेड
कलकत्ता–१

Indane
इण्डेन–बिलकुल सुरक्षित
रसोई ईंधन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओर से लिपट गयी शिरीष से.

सरिता सो गई तो शरारत सूझी शिरीष को. नशे की खुमारी में सोई हुई पत्नी के कपड़े खोलने लगा वह.ब्लाऊज...सरिता बेखबर सो रही थी...डर भी किस बात को. नर्म पाँते के बिस्तर पर थी. शिरीष की शरारती अंगुलियाँ नाभि के नीचे फिसलने लगीं. पेटीकोट को कमर से नीचे खिसका कर अपनी हरक़त पर मुस्करा उठा शिरीष. नीले पावर की गुलाबी रोशनी फिर भी बाधक थी. हाथ बढ़ा कर शिरीष ने बल्ब खत्म किया. तेज़ रोशनी में सरिता की आँखें कुछ झपझपायीं.वह फिर सो गयी.शिरीष की हरकतें उरोजों से होते हुए कमर की ओर बढ़ने लगीं.

एक तमाचा-सा पड़ा शिरीष के गाल पर. वह सन्न रह गया. उत्तेजना समाप्त हो गयी. मौन लेटी हुई पत्नी के प्रति अविश्वास भर गया उसके मन में—तो इसने मेरे साथ धोखा किया है—जो औरत इतना बड़ा धोखा दे सकती है क्या कभी भरोसा किया जा सकता है उस पर? शिरीष का मन वितृष्णा से भर उठा. सरिता के खुले अंग खुले के खुले रह गये और वह सो गया या सिर्फ़ लेटा रहा.

दिन भर कुछ नहीं बोले शिरीष. रात देर से लौट कर आये.सरिता वैसे भी डरी हुई थी अज्ञात आशंका से, जब उसने सुबह अपने आपको बिलकुल निर्वस्त्र पाया था.

—बहुत देर कर दी आज, सरिता ने मौन तोड़ा.

शिरीष झुझलाये हुए थे, चुप रहे. कुछ देर बाद सरिता की तरफ़ देख कर बोले—सरिता, मैंने आज तक ये जानने की कोशिश नहीं की कि तुम कौन हो—कहाँ से आई हो—कहाँ है तुम्हारा परिवार ! हर माह तुम पचमढ़ी डेढ़ सौ रुपये किसके पास भेजती हो—मैं सिर्फ़ तुम्हें जानता हूं—तुम आ गयी थी.मुझमें या मेरी जिन्दगी में कुछ बुराइयाँ हों पर शादी के बाद अपना कुछ भी नहीं छुपाया मैंने तुमसे जब कि तुमने मेरे साथ धोखा किया है...झूठ बोली हो. तुम मुझसे अपना बहुत कुछ छुपाये रखी हो. तुम...

ऊपरी मंजिल से उठा कर जैसे काँच का एक गिलास कोई नीचे सड़क पर फेंक दे इसी तरह चूर-चूर हो गयी सरिता. पर वह चुप रही.

—बोलो, शिरीष ने गहरी साँस लेते हुए कहा.

क्या ?

—यही कि तुम्हारे पेट के नीचे सफ़ेद धारियाँ कैसे पड़ीं—पेट की चमड़ी में झुर्रियाँ और झोल पड़ने की वजह बखूबी जानती होगी तुम.

—जी, मेरे पेट में ट्यूमर हो गया था. उसी का आप्रेशन कराना पड़ा था. सहमते हुए सरिता ने सम्हल कर कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज़रूरत नहीं
कि अब आप बनारस से
बाहर जाँय
क्यों कि
बाहर के लोग अब
बनारस आ रहे हैं
किस लिए ?
● मेघदूत के बने
मुग़लियन आर्ट
एन्शिएण्ट आर्ट
स्कैण्डेनेवियन डिज़ाइन
तथा
अमेरिकन डिज़ाइन के
गौरवशाली फर्नीचर्स के लिए
●
साथ ही नए प्रकार के फ़ोम तथा
रिलेक्सान के गद्दे भी.
निर्माता एवं विक्रेता
श्री मेघदूत एण्ड कं०
मलदहिया—वाराणसी, फोन : ६५६६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—झूठ बोलती हो तुम—लगभग चीखते हुए शिरीष दहाड़ा,
आपरेशन का निशान नहीं है ये—ये तुम्हारे माँ बनने की निशानी है—
—जी! सरिता समझ गयी थी कि शिरीष की नजरें ताड़ गयी हैं.
—तो किसका बच्चा था वह और कहां है ?
—जी, जवानी की एक भूल थी जो मेरे गर्भ में रह गया था. वो आदमी मुझे धोखा
दे चला गया, चार-माह का गर्भ था जब मैंने 'एबारशन' कराया था. मरते-मरते
बची, उसी के निशान हैं ये—मैं आपसे झूठ नहीं बोलती.
तड़ाक से एक तमाचा सरिता के गाल पर पड़ा—फिर झूठ बोल रही हो तुम—
मुझे बेवकूफ नहीं बना सकती, ये पूरे दिनों के बच्चे के निशान हैं—ये बात और
है वह मर गया हो, या तुमने उसे मार डाला हो.
—नहीं-नहीं!—वो जिंदा है—मेरा बेटा मरा नहीं—जल्दी में बोल गयी सरिता.
जब बात खुल ही गयी तो बाकी बात भी नहीं छुपायी. फिर कहा उसने—मेरा
बच्चा मसूरी में है, मेरी एक सहेली के पास. कान्वेन्ट में पढ़ता है वहां. मैं उसे अच्छी
तरह देखना चाहती हूं. इसीलिए मुझे आपके यहां नौकरी करनी पड़ा—और उसी
वजह से मैंने आपसे शादी की. क्योंकि आपके साथ शादी में आर्थिक स्वतन्त्रता
थी. आप नवीन विचारों के पोषक हैं—माफ़ कर दीजिये मुझे.
—हो सकता है तुमने मुझे पहले बता दिया होता तो मैं तुम्हें और तुम्हारे बच्चे
को ज्यादा प्यार दे सकता, पर झूठ फ़रेब की ज़िंदगी के लिए बच्चों की माँ को
नहीं के लिए ये शादी नहीं की थी मैंने. तुम्हारे जाने के लिए मेरे घर के दरवाजे
खुले हैं—जितनी जल्दी मेरा घर छोड़ सको उतना ही अच्छा है.
सरिता कुछ सोच नहीं पा रही था और तनाव एवं झगड़े रोज-रोज बढ़ते जाते
थे. वह बूढ़ी और ज़िद्दी आदमी था जो बात निकल गयी सो निकल गयी वह किसी
बात पर सरिता को रखने को तैयार न था. अब लड़कियों की उसे वैसे भी कमी न
थी. फिर सरिता दूसरे की भोगी हुई औरत, और वह भी एक बच्चे की माँ. हालांकि
उसके नये विचारों का था पर अखबार-अखबार है—शिरीष-शिरीष! हां, सरिता
के निर्वाह के लिए कुछ मासिक रक़म ज़रूर बांधना चाहता था—पर सरिता के
अभिमान को मंजूर नहीं था यह. वह चल दी जैसे आयी थी वैसे ही, सब कुछ
छोड़ कर.
बच्चे से वह मिलने जायेगी फिर कहीं भी, किसी भी शहर में कोई भी नौकरी
कर लेगी. बच्चा जितना पढ़ना चाहेगा पढ़ायेगी, जो वह बनना चाहेगा, बनायेगी.
कितनी अच्छी तो खूबसूरत है वह! जवान भी. 'कार्ल गर्ल' भी बन सकती है अपने बेटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को खुशियों के लिए.मन में यह विचार आते ही एक नयी दृढ़ता आ गयी उसके अंदर में.वह फिर सोचने लगी—उसकी जिंदगी में खुशियाँ ही लिखी होतीं तो गर्भ देकर आने से पहले उसका प्रेमी मर न जाता.उसे अपना घर न छोड़ना पड़ता.हाईस्कूल की नौकरी के लिए स्कूल के प्रिंसिपल और संस्था के सेक्रेटरी का हमबिस्तर न होना पड़ता उसे. शिरीष भी इस तरह न छोड़ पाता उसे. न ही शिरीष से झूठ बोलना पड़ता उसे. बहुत छूट गया है वह सब.वह भूल भी गयी है कि उसके माँ-बाप कहां होंगे,कैसे होंगे सिर्फ़ एक सहेली है उसके अपनों में जो उसके बच्चे को पाल रही है और एक बेटा जिसकी खुशियों के लिए वह हर ढंग का, हर स्तर का संघर्ष झेल लेने को तैयार है.

'एलाइट हियर फार पचमढ़ी' और वह अटैची उठा कर स्टेशन के बाहर निकल गयी तेजी से, यह सोचते हुए कि जिंदगी मेरे पेट के निशान नहीं मिटा पायी, मैं जिंदगी के पेट में हजारों निशान छोड़ जाऊंगी।

—टोला, डुण्डी, रेलवे स्टेशन, जबलपुर, (म.प्र.)

पृष्ठ ४ का शेष)
सहचरि प्राण लिखना क्या ग़लत है ? और यदि यह सब ग़लत नहीं है तो त्रियाचरित्रम् शब्दावली के द्वारा पूरे स्त्री वर्ग के व्यक्तित्व को कलुषित करने का यह पैतृक और वंश परंपरागत तरीक़ा कहाँ तक सही है ? फिर चरित्र की बात त्रिया पर ही तो लागू नहीं होती. पुरुष भी तो उसका भागीदार होता है. इस मामले में त्रियाचरित्रम् शब्दावली एकांगी है. यदि चरित्र कलंकित है तो स्त्री और पुरुष दोनों ही समानरूप से उत्तरदायी है. इसलिए किसी समाज का कलुषित चरित्र न तो अकेले स्त्री का होता है और न ही मात्र पुरुष का,बल्कि मनुष्य की संस्कृति का होताहै.समाज और देश का चरित्र दोनों के ही चरित्र का योगफल है. फिर त्रिया चरित्रम् की बात के द्वारा स्त्री के व्यक्तित्व का हनन करने का यह षडयन्त्र किस लिए ? यह साजिश पुरुष के प्रभुत्व को स्थायित्व देने की ग़रज़ से नहीं है ? और यदि यह सच है तो त्रिया चरित्रम् की बात में कितना सच है और कितना झूठ, इसे समझना क्या ज़रूरी नहीं है ? क्या त्रियाचरित्रम् बिल्कुल सच नहीं है ? क्या त्रियाचरित्रम् बिल्कुल झूठ नहीं है ? और यदि थोड़ा सच है, तो कितना सच है ? और यदि थोड़ा झूठ है, तो कितना झूठ है ? इस कितना सच और कितना झूठ के सवालों के ज़रिए हमें नारी के चारित्रिक व्यक्तित्व के अस्तित्व को नये सिरे से समझना क्या ज़रूरी नहीं ? उसे नये वैचारिक आधार देना आज का तकाज़ा नहीं ? शायद है और इस तकाज़े को ही मद्देनज़र रखते हुए 'कहानीकार' का यह पहला खण्ड महिला वर्ष के संदर्भ में पेशे नज़र है.

—कमल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने लिखा है

अंक ५० : कुछ प्रतिक्रियाएँ

कहानीकार का पूर्णांक ५० मानवीय पीड़ा अंक प्राप्त हुआ. इस अंक में सशक्त हस्ताक्षरों द्वारा जो मानवीय दुर्बलताओं का यथार्थपरक चित्रण हुआ है, वह बेहद सुंदर लगा. विशेषकर चीटी (लघुकहानी) गिद्ध, फलाबाज, सुख, कहानियां एवं प्रभात गुप्त जी का व्यंग्य 'यमलोक की यात्रा' ने बहुत ही प्रभावित किया. निश्चय ही इसके लेखक बधाई के पात्र हैं. अन्य कहानियां सराहनीय हैं. कविताओं में कार्टून प्रेम का लोथड़ा एवं हंसी के फूल विशेष रूप से पसंद आई. 'बहुत देर कर दी' उपन्यास की किश्तें अच्छी बहुत अच्छी लग रही हैं और मुझे सबसे अच्छी बात यह लगी कि 'कहानीकार' नए हस्ताक्षरों को भी स्थान दे रहा है. इससे यही सिद्ध होता है कि 'कहानीकार' रचनाकार को नहीं, रचना को महत्व देती है. 'कहानीकार' के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें.

—राजेन्द्र प्रकाश वर्मा 'रजन' ४५७ एन ३ 'ए', गोविन्दपुरा, भोपाल.

आपकी 'कहानीकार' पत्रिका का जून-जुलाई का संयुक्तांक देखा. आपका प्रयास प्रशंसनीय है किन्तु पूर्ण सफलता क्यों नहीं मिल रही है ?

रीडर्स डाइजेस्ट की सफलता का कारण है उनका अथक प्रोपेगेंडा. 'मैटर' तो निश्चित ही कहा जायगा.

—डा० रामधर मिश्र, राजघाट फोर्ट, वाराणसी-२

'बहुत देर कर दी' जितना सुन्दर नाम है, उतना ही सुन्दर इसका लेखा ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मैं बराबर पढ़ रही हूं. सुलताना का कैरेक्टर बढ़िया उभरा है ! अलीम मसरूर को बधाई. हां इसे आप पुस्तक रूप में भी निकाल रहे हैं, मैं भी एक प्रति के लिए तकादे के लिए खड़ी हो जाऊं या नहीं ? अगर आप नहीं कहेंगे तो नहीं मांगेंगे.

और अपने समाचार लिखें, 'कहानीकार' के भी. हां आपने वह गहरी गांठ छोलने वाली बात लिखी है. ना बाबा, हम कान पकड़ चुके. हमारी क़लम हमें बहुत भुगता चुकी, अब हम इसके चक्कर में नहीं आयेंगे.अभी एक परिचर्चा नव भारत' में आई थी जिसमें हम भी हैं—पति के अलावा एक प्रेमी जरूरी है. उस पर अपनी प्रतिक्रिया अपने आस-पास के लोगों से रोज सुनने को मिल रही है और हमें टप से आंख नीचे कर लेना पड़ता है. —मेहरुन्निसा परवेज, प्रतापगंज, जगदलपुर.

'कहानीकार' का 'मानवीय पीड़ा अंक-५० पढ़ा ! अंक की सभी रचनायें स्तरीय तथा ये रचनायें मानवीय पीड़ा के किसी-न-किसी पक्ष को सहज आत्मीयता से उभारती हैं.

राजाराम की कहानी 'गिद्ध' अकालग्रस्त इलाके में मानवीय मजबूरी और उसके दुःख-दर्द, गिरते नैतिक मूल्यों का सही चित्र प्रस्तुत करती है. कहानी में गहरी पैठ है जो मन को अन्दर तक झकझोर देती है. कहानी का कथ्य तरोताजा तथा संपुष्ट है. अजित पुष्कल की कहानी—'कलाबाज' आपाधापी तथा शोषण के विरुद्ध रचनात्मक आवाज तेज करती है. उर्मिला पांडेय की 'एक पैकेट जिंदगी' तथा चन्द्रकांत बची की 'लाश को नाम न था' भी मन पर गहरी लकीर खींचती है.

विनायक की लघु कथा 'चोंटो' बहुत ही सशक्त है तथा लघु कहानियों का संग्रहणीय दस्तावेज है. यह लघु कहानी, लघु कहानियों के क्षेत्र में गाइड-लाइन के रूप में सामने आती है.

कुमारी नाज शबनम की 'कार्टून' देविन्दर विमरा की 'कड़' तथा राजेन्द्र प्रकाश वर्मा की 'विडम्बना' कविताएं भी काफ़ी शालीन हैं. रचनाकारों को साधुवाद !'

—राधेलाल विजधावने 'अतृप्त' क्वाटर नम्बर-४३२ एन-३,
गोविन्दपुरा भोपाल, (म.प्र.)

'कहानीकार' का मानवीय पीड़ा अंक ऐसे शोषित आम आदमियों के दुःख-दर्द का दस्तावेज है, जो मौजूदा सामाजिक परिवेश में मौजूद है. पहले भी रहा है. इस पूरे अंक में दीप्ति खण्डेवाल की आंचलिक कहानी 'भूख' हर दृष्टि से मुझे अच्छी लगी. इस कहानी की मुख्य पात्र रधिया का ड्राइवर की बाहों में समर्पित होना कोई पेशा नहीं, बल्कि उसकी मजबूरी है, जो अपने और अपने परिवार के अस्तित्व को बिखराव से बचाने के लिए की गई है. इस अंक की सार्थकता सिद्ध करने वाली दूसरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

की कहानी है राजाराम सिंह की 'गिद्ध' जिसमें छटपटाते भैंस के
मंडराते गिद्ध को देख कर रामू कहता है—हरामी की औलाद इतने नीच हैं कि
भी खाते हैं और मुर्दा भी खाते हैं. वह खुद भी लाशों का मांस खा गिद्ध-सा
पर बीमार हो जाता है. यही नहीं, वह अपनी बेटी रूपा का अस्मत बेचने के
मारा जाता है. अन्य कहानियों में अजित पुष्कल की 'कलाबाज' भी
जाने योग्य है. 'एक पैकेट जिन्दगी' पूर्णतः मौलिक रचना नहीं है. इसका
कई कहानियों में पढ़ चुका हूँ.

अन्य स्तम्भ में कुछ स्याह कुछ सफ़ेद बहुत अच्छी लगी. इसमें सम्पादक
टरों पर करारा व्यंग्य किया है तथा अस्पताल की दयनीय स्थितियों पर भी
किया है. विनायक की लघु कहानी 'चीटी' भी प्रभावित किये बिना
ही. इसमें आज के समाज का काफ़ी निकट से दर्शन है. कविताओं में 'मांस का
'कड़ी' और 'हँसी के फूल' मार्मिक एवं आज के परिवेश से जुड़ी हुई लगीं.
मसरूर की 'बहुत देर कर दी' की किश्त भी अपनी ओर खींचता है.

—प्रेमपारस मानव, द्वारा—सिविल कोर्ट, हाजीपुर जिला, वैशाली—(बिहार)

'कहानीकार' के अंक मोहते रहे हैं. इसकी विशिष्टता तो इसमें है कि बिना
आन्दोलन, नारेबाजी, तख्तोबाजी के यह शुद्ध कहानियां प्रकाशित करता है.
वर्गों के प्रति कोई आग्रह न होना भी बड़ी बात है. महत्त्व तो कहानियों का है,
चाहिए. इसके लिए मेरा साधुवाद लें. —डा० चन्द्रेश्वर कर्ण, हिन्दी विभाग
गणेश लाल अग्रवाल कालेज, डालटनगंज (बिहार)

'कहानीकार' का 'अगस्त सितम्बर संयुक्तांक' देखा-खरीदा, और जीवन भर के
इसका ग्राहक बन गया. 'कहानीकार' हिन्दी की एकमात्र कहानी पत्रिका है जो
साथ अच्छी-कविताएं भी लाती है. इसलिए यह अप्रतिम है.

स० सि० संयुक्तांक में, आंका हुआ नहीं, भोगा हुआ यथार्थ होने के कारण
नीर शबनम की कविता बेहद अच्छी लगी ! कवयित्री को बधाई ! वैसे
चटर्जी, यसुफ़ पाशा और शरद 'अतृप्त' भी अच्छे लगे.

—मदन भास्वर, महेन्द्र निवास, साउथ चक्कर, मुजफ्फरपुर (बिहार)

क्रमांक ४९ : कुछ प्रतिक्रियाएं

'कहानीकार' का अमानुष संसार अंक प्राप्त हुआ. कवर वास्तव में सुन्दर है. बाक़ी
भी ठीक है. पत्रांशों का 'आपने लिखा है' स्तम्भ ग़ायब पा कर बड़ा
हुआ. यह पृष्ठ पूरे मैगजीन की धड़कन है. इसके हट जाने से मैगजीन उदास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर
और
आधुनिकतम डिजाइनों
में
सनमाइका

विविध प्रकार के
प्लाइवुड और ग्लू
के स्टॉकिस्ट एवं विक्रेता—

श्री गणेश प्लाइवुड इम्पोरियम

डी० ३५/६८-६९ जंगमबाड़ी, वाराणसी, फोन : ५३१७५

फोन ५४००९
५२०७७
६७१२७

आधुनिक
सुविधाओं
से
परिपूर्ण !

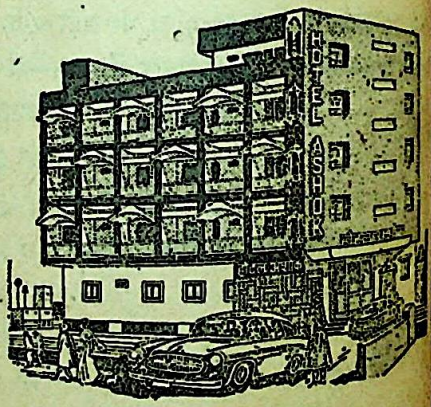

होटल **अशोक**

भारतीय, चाइनीज़ एवं यूरोपीय डिशेज़ में विशिष्ट
सिगरा ● वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लगने लगती है.

एक झटका लगता है जब अगला पृष्ठ खोलता हूँ और 'नया पंचतंत्र' नहीं मिलता. उस स्तम्भ की कहानी की बड़ी उत्सुकता रहती है. कृपया उसे गैरहाज़िर न होने दिया करें.

आगे बढ़ता हूं तो 'बहुत देर कर दी' से मुलाक़ात होती है. तवायफ़ तो रोचक होती ही है फिर सुलताना न ो देर उसके पास रहिये वह दीन-दुनिया भुलाये रखती है.

और आगे बढ़ने पर पाँच कहानियाँ मिलती हैं. जिनमें दो अनूदित कहानियां हैं कुछ प्रभावित करती हैं. उन पर ही विवेचना भी उचित होगी.

इनमें एक सिन्धी से अनूदित कहानी 'गवाही' है. यह कहानी स्तरीय हो जाती यदि लेखक बहुत अधिक कह जाने का लोभ संवरण कर जाता और कहानी अधिक तीक्ष्ण बुद्धि व बारीकी से बुनी जाती. प्रशासन व्यवस्था पर व्यंग्य करने से

लेखकों से निवेदन

रचना भेजते समय उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें ■ केवल वही अस्वीकृति रचनाएं सुरक्षित रखी और लौटाई जा सकेंगी जिनके साथ लेखक का पता लिखा, टिकट लगा लिफ़ाफ़ा होगा, मात्र टिकट नहीं ■ नए लेखक रचना के साथ अपना व्यक्तिगत एवं साहित्यिक संक्षिप्त परिचय, प्रकाशित रचनाओं, वर्तमान व्यवसाय और शौक का उल्लेख करना न भूलें ■ 'कहानीकार' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं.—सं०

पूरी व्यवस्था के सही स्वरूप को भी सुलझ लेना लेखक के लिए आवश्यक होता है. किसी दुर्घटना पर तुरन्त इस तरह सी. आई. डी. नहीं आती. सी. आई. डी. का कार्य-क्षेत्र व कार्य करने का ढंग ही कुछ और होता है.

इस अंक की सबसे अच्छी कहानी नेपाली से अनुदित 'दंत कथा का नगर' है. कथा प्रधान की इस कहानी का स्वरूप व गठन अच्छा है. यह प्रतीकों, बिम्बों से होती हुई ऐब्स्ट्रैक्ट तक चली जाती है. इसके कुछ शब्द दुहरा देने योग्य हैं—यहाँ बड़े-बड़े दरवार हैं, महल हैं, कोठियाँ हैं, ऊंचे-ऊंचे मन्दिर हैं....सभी घरों के दरवाजे खुले हैं, खिड़कियाँ खुली हैं, उद्यान खुले हैं लेकिन झांकने वाली आंखें नहीं हैं, प्रणयालाप करने वाले दम्पति नहीं हैं.

कहानी बहुत दूर तक मार करती है. आज की पीड़ा और संत्रास युक्त जीवन में प्रजा को एक राज कुमारी की खोज है जो उनकी आशाओं को जगायेगी, उनके घावों पर मरहम लगायेगी. पर यह प्रतीक्षा करोड़ों-करोड़ों इनसानों की आंखों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लाइन हाफटोन
एवं
रंगीन ब्लाक
के
निर्माण में
विशिष्ट—

भारत ब्लाक वर्क्स

नीचीबाग :: वाराणसी—फोन : ६३७१५

सभी प्रकार के कोयले को रोड द्वारा
प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें—

तुलस्यान कोल कम्पनी

डीपो पड़ाव, वाराणसी. फोन—५३७१६
प्रधान कार्यालय—सी. के.३६।२ बांसफाटक, वाराणसी. फोन—५२२८३

चन्दन-सी शीतल मन्द, मधुर
खस की सुगंधित हवा का प्रतीक—
चन्दन कूलर
वितरक—

तुलस्यान ट्रेडिंग कारपोरेशन

उत्तर प्रदेश व बिहार के लिए वितरक
सीके.३६।२ बांसफाटक (सत्यनारायण मन्दिर के सामने) वाराणसी-फोन—५२२८३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हजारों वर्षों से चली आ रही है और उसका मृत्यु-दिवस आ-
जाता है.

'मैं अपनी नज़र में' से गंगा प्रसाद विमल के भी कुछ शब्द दोहराये जा सकते हैं—'खाना तो बहुत ही मामूली ज़रूरत है, प्रेम साले धूर्तों की ईजाद है, व्यापारी बुद्धि सही मामले में वर्गीय समझ की मक्कारी है. मजदूर अपनी मूर्खता से मर रहा है. क्रांति का आना घटना भर है—आवारागर्द लोग प्रदर्शनकारी हैं—नाटक, कलायें, साहित्य, सभी धूर्तता को छिपाने के आवरण हैं—धर्म ज्ञान आदि शोषणकारी व्यवस्था के औज़ार हैं...'

आगे 'मानवीय पीड़ा अंक' की प्रतीक्षा है. आशा है, यह आप का प्रतिष्ठा. अंक होगा.

कुछ स्याह: कुछ सफ़ेद के अन्तर्गत आप के द्वारा लिखा लेख खूबसूरत ढंग से शुरू हो कर ज़िन्दगी की बड़ी गहराइयों तक उतर कर प्रतिक्रियावाद व पूंजीवाद पर प्रहार करता है. आज शोषण की परिणति ही चोकन गात हैं जबकि यह भी सच है कि गात कैसा भी हो ठाठ पड़ा रह जायेगा जब लाद चलेगा बंजारा. पर इतनी दूर तक कौन सोचता है सिवा प्रतिबद्ध लेखक के.

—विभू, द्वारा—गोविन्द प्रसाद पाण्डे, सआदतगंज, फैजाबाद.

'कहानीकार' का पूर्णांक ४९ (सयुक्तांक जू०.जु०) मिला. मुखपृष्ठ तो बहुत ही आकर्षक है. 'बहुत देर कर दी' धारावाहिक उर्दू उपन्यास तो वास्तव में बहुत रोचक लग रहा है. विमल जी की 'अपनी नज़र में' आत्मलेख तथा जयनारायण की 'बद गली' नामक कहानी विशेष पसन्द आयी. अन्य लेख भी अत्यन्त रोचक हैं.

—अजय शंकर, सी० एम० पी० डिग्री कालेज, फैजाबाद.

जून-जुलाई संयुक्तांक पढ़ गया. इस अंक की श्रेष्ठतम् कहानी 'गवाही' ने मन को विशेष प्रभावित किया. विष्णु भाटिया तक मेरा साधुवाद अवश्य पहुँचा दें. 'सोए हुए लोग' महानगर के फुटपाथों पर गुज़र-बसर करने वाले आम आदमी के जीवन का नग्न-चित्र जहां यथार्थ की भूमिका पर अभिव्यक्त करती है, वहां उसके संवादों में चुटीलापन स्पष्टतया झलकता है. कविताओं में स्थानीय प्रतिनिधि कलाकार श्री संजय गौड़ 'पथिक' की कविता 'मजबूरी' का लक्ष्य नवीन तो नहीं, फिर भी प्रस्तुतीकरण निःसंदेह जिज्ञासा मूलक है. 'पथिक' जी कविताओं के स्थान पर घटना कथाएं ही लिखें, बेहतर होगा.

—मोहन ठाकुर 'अमर'
—जगन्नाथ प्रिंटिंग प्रेस, तिलक नगर, बिलासपुर (म.प्र.)

आपकी पत्रिका 'कहानीकार' का संयुक्त अंक 'पूर्णांक ४९' प्राप्त हुआ, रिनन्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निखरते हुए परिवेश के लिए हार्दिक बधाई. मुख पृष्ठ से ले कर अन्त तक आकर्षण ही था, जो बेहद भाया. कहानी-जगत की पत्रिकाओं में 'कहानीकार' जिस गति से प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है निःसंदेह वह दिन दुर नहीं जब उच्चस्तरीय साहित्यिक पत्रिकाओं की श्रेणी में आ खड़ी होगी.

इस अंक की कहानियां महानगर के प्रति हमारे दृष्टि की मृगतृष्णा को झकझोर डालती हैं. 'बन्द गली' (जयनारायण), सोये हुए लोग, (बहादुर) सचमुच महानगर के जीवन की झलक प्रस्तुत करती हैं.

'मैं अपनी नज़र में' स्तम्भ बेहद प्रभावशाली रहा. विमल जी के विचार अच्छे हैं.

'कहानीकार' का इंतज़ार बेताबी से रहता है. कभी-२ तो 'न्यूज़ एजेंसी' की पत्रिकायें आते ही एक दिन में हाथों-हाथ बिक जाती हैं. अतः कभी-कभी किसी अंक से वंचित रह जाना पड़ता है. फिर भी कहानीकार' का मोह 'पुस्तकालय' तक ले जाता है.

'कुछ स्याह. कुछ सफ़ेद' के अन्तर्गत कमल गुप्त जी आजकल बेहद अच्छा लिख रहे हैं. इस अंक की व्यंग्य रचना भी काफ़ी पसन्द आयी. पत्रिका हाथ में आते ही पहला अतिक्रमण इसी स्तम्भ पर होता है.

'कहानीकार' के पचासवें अंक के प्रकाशन पर 'मानवीय पीड़ाओं अंक' के लिए एक शुभ-आंकाक्षा. —नरेन्द्र पॉल, एच—११८ हरथला कालोनी, मुरादाबाद

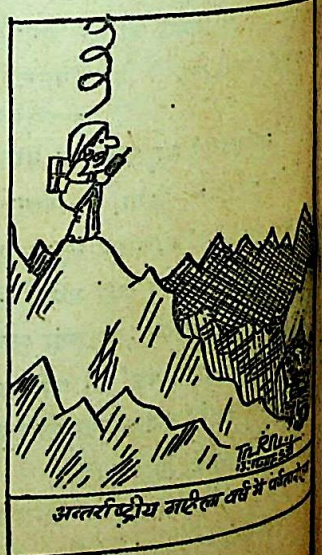

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शिव होजरी की
मुलायम, टिकाऊ और
सुखप्रद परिधान

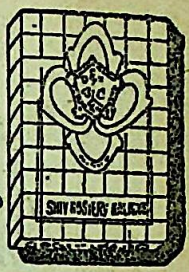

दरबार
स्नोयी
गोल्डन लोटस

इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता: शिव चरन दासरवली
१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-७

BUSH
BEETHOVEN
SOLID STATE STEREO SYSTEM

- बुश तथा मर्फी—रेडियो, ट्रांजिस्टर्स
- उषा तथा ओरिएंट पंखे, लियोनार्ड रेफ्रिजरेटर्स
- एच एम वी. पोलीडोर तथा सरगम रेकार्ड

आनन्द रेडियो कारपोरेशन
ANAND Radio Corporation
GRAM: ARCO. PHONE: 66446 GUDAWLIA, VARANASI.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

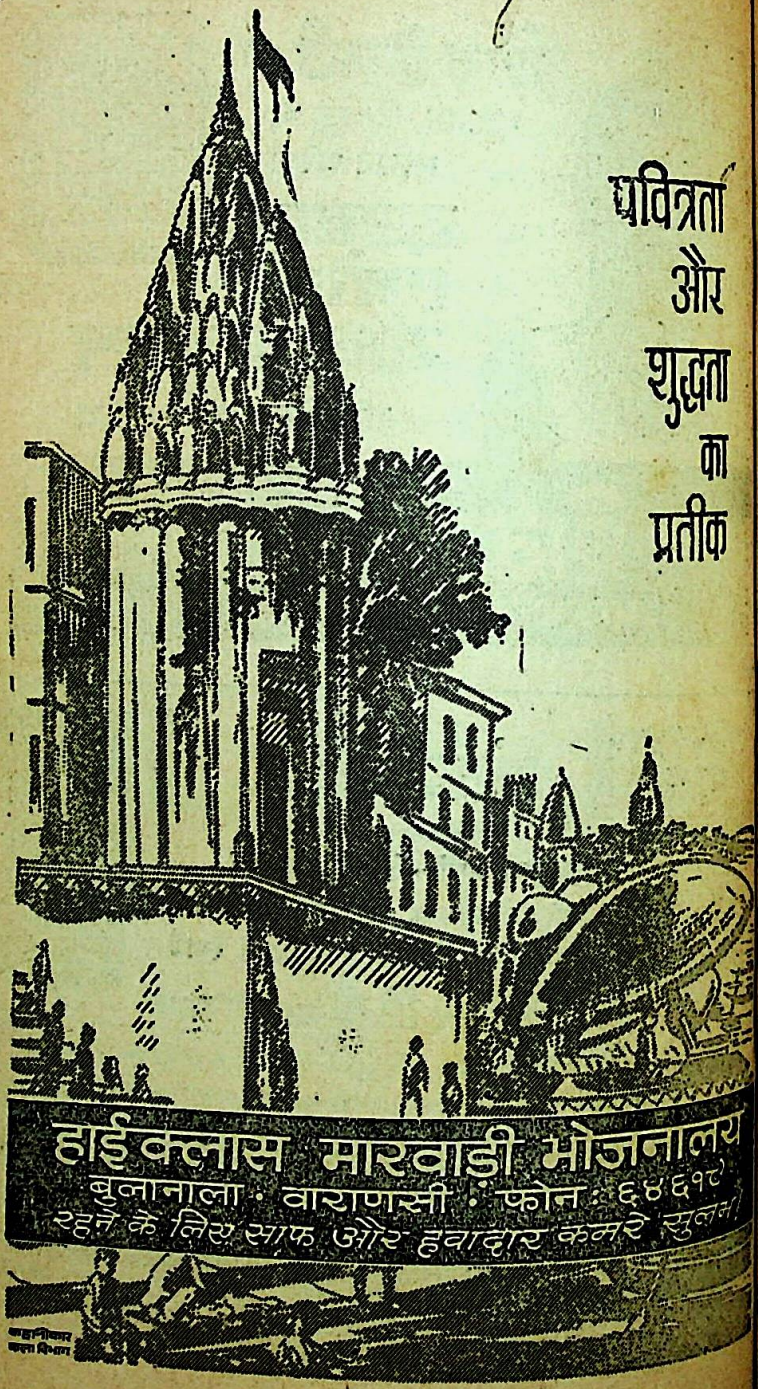

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दीपावली अभिनन्दन

कार

एवं

ट्रकों

के

पुर्ज़ों के लिए

कोहली मोटर स्टोर्स

नदेसर, वाराणसी. फोन : ६३०२३

आवास : ६२४३८

विविध प्रकार

की

इमारती लकड़ी तथा

घर के वास्ते

खूबसूरत

और

मज़बूत

फर्निचर्स के लिए

सहकार वाणिज्य केन्द्र

डी ३५।६६ जंगमबाड़ी, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी द्वारा पुरस्कृत
उर्दू का बहुचर्चित उपन्यास

बेघर

(ले० अलीम मसरूर)

जिसको निम्नलिखित समीक्षकों और लेखकों ने भरपूर सराहना की है—

प्रो. सय्यद एहतशाम हुसैन विभागाध्यक्ष उर्दू इलाहाबाद विश्वविद्यालय. ▫ जस्टिस जी.डी. खोसला, भूतपूर्व सुप्रीम कोर्ट. ▫ प्रो. आले अहमद सुरूर, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू, मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ ▫ डा. मुहम्मद हसन, नेहरू फेलोशिप विभागाध्यक्ष उर्दू, कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर ▫ प्रो. असलूब अहमद अंसारी, विभागाध्यक्ष अंग्रेजी, अलीगढ़ विश्वविद्यालय ▫ डा. ज्ञानचन्द, विभागाध्यक्ष उर्दू, जम्मू विश्वविद्यालय ▫ डा. महमूद इलाही विभागाध्यक्ष उर्दू, गोरखपुर विश्वविद्यालय ▫ डा. हुकुमचन्द नय्यर विभागाध्यक्ष उर्दू. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी.

कृष्ण चन्दर, कुरतुल ऐन हैदर, काजी अब्दुल सत्तार, जीलानी बानू, सुहैल अज़ीमाबादी, डा. मसीहुज़्ज़मा, डा. सय्यद अक़ील जैसे अन्य साथ ही फिल्म के लिए अली रज़ा द्वारा चयित.

हिंदी में पूरा उपन्यास सजिल्द, आकर्षक डिमाई आकार में प्राप्त करने हेतु अपनी प्रति सुरक्षित करायें

मूल्य २०) ● सदस्यों के लिए १६) मात्र ● पृष्ठ संख्या लगभग ३००

व्यवस्थापक
कहानीकार प्रकाशन
के. ३०/३७ अरविन्द कुटीर
(निकट भैरव नाथ) वाराणसी. फोन ६६६६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्यौहार और शादी-विवाह के
शुभ अवसर पर
रंगाई और पेंटिंग के लिए
उच्च कोटि के पेण्ट्स का बृहद स्टॉक

इमारती पेण्ट, कार एवं ट्रकों के पेण्ट्स तथा
इण्डस्ट्रियल पेण्ट्स
का प्रतिष्ठान—

दिल्ली पेण्ट्स

मैदागिन ▫ वाराणसी ▫ फोन : ६४४१९
चीफ स्टाकिस्ट—जेन्सन निकल्सन
स्टाकिस्ट—ब्रिटिश पेण्ट्स

नई
सुजुकी
मोटर साइकिल
(२५० सी. सी.)

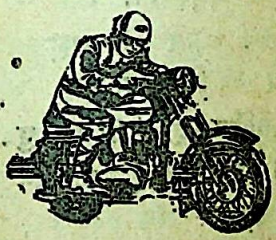

फोन : ६३२१८
५२११०
निवास : ६२८४६
ग्राम : कलस्टोस

एकमात्र वितरक :—
वाराणसी, मिरजापुर, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया.

मेसर्स कलकत्ता साइकिल स्टोर्स

सन्त कबीर रोड :: वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लघुकहानी को परिभाषित करने के क्रम में 'कहानीकार' द्वारा पुनः प्रस्तुत--

लघुकहानी विशेषांक

कहानीकार' ने १९६८ में लघुकहानी विशेषांक (पूर्णांक १०) प्रकाशित किया था, जिसमें विनायक, पंचदेव और सुदर्शन नारंग की तीन सशक्त लघुकहानियां प्रकाशित हुई थीं. यद्यपि इस अंक के लिए छोटे आकार की बहुतायत कहानियां प्राप्त हुई थीं पर वे लघुकहानियों के अस्तित्व को झुठलाती थीं और लघुकहानियां न हो कर चुटकले, लतीफ़े और लघुकथाएं ही बन कर रह गयी थीं. शायद इसलिए हिन्दी साहित्य की इस सशक्त विधा का स्वरूप उनके सामने स्पष्ट नहीं था. १९६८ के बाद के दौर में लघुकहानी और भी भटक गयी और तथाकथित चुटकुलों, लतीफ़ों और विविध प्रकार की लघुकथाओं की भीड़ में भ्रमित हो कर दिशाहीनता की शिकार बनी जब कि इसी बीच 'कहानीकार' में अनेक सशक्त लघुकहानियां प्रकाशित और चर्चित हुईं. (देखिये युद्धविराम अंक २०, जो, बर्फ़ अंक २३, काश, बाज, खुदा की मौत अंक २६, प्रश्न अंक ३०, तथा नया पंचतन्त्र स्तम्भ में प्रकाशित ही रही कहानियां अंक ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ५० और यह अंक.)

इस विशेषांक के द्वारा लघुकहानी को भीड़ से बाहर अलग करके उसके स्वतन्त्र और विशिष्ट स्वरूप को सुनिश्चित करना है जिससे कि उसका भटकाव खत्म हो सके. दरअसल लघुकहानी सबसे पहले कहानी है—ज़िन्दगी के बिलकुल करीब और गम्भीर चिंतन से युक्त. उसके स्वरूप को तोड़ा नहीं जा सकता, छोटा किया जा सकता है और यहीं आकर लघुकहानी एक मुश्किल विधा बन जाती है. इस विधा में जो शक्ति और पकड़ है वही इसकी विशिष्टता है. भविष्य में यह अपना समुचित स्थान अवश्य बनायेगी, इसका हमें विश्वास है और इसी विश्वास के साथ इस अंक के लिए हम आपकी सशक्त रचनाएं आमंत्रित करते हैं. अपनी रचनाएं दिसम्बर अन्त तक हमारे पास अवश्य भेज दें—सं०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पोलेथिन ट्यूब
सीट्स
बैग्स
कैलेण्डर के
निर्माता व विक्रेता

फोन : ६६६६३

श्याम पोलेथिन वर्क्स

प्रधान कार्यालय:
डी॰ ३७/४० बड़ादेव • गुदौलिया • वाराणसी
फैक्टरी:
बाग रानीभवानी • वाराणसी

गारण्टीयुक्त हिन्द व लकी

साइकिल

एवं

साइकिल-रिक्शा,

तथा

असली पुर्ज़ों की

प्राप्ति का

प्रतिष्ठान

विक्रेता वाराणसी
मऊ, बलिया, मऊ

[illegible] एण्ड कं॰ (मुनीमजी)

विश्वेश्वरगंज, वाराणसी
फोन : ६२८६२

[illegible] गोपाल एण्ड कंपनी, सेनपुरा, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गांधी साहित्य

सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय

बापू ने जो कुछ कहा या लिखा, उसका संपूर्ण संग्रह लगभग पचासी खंडों में—गांधी वाङ्मय तथा भारतीय इतिहास के अध्येता के लिए इन खण्डों में बहुमूल्य सामग्री है ६० खण्ड प्रकाशित हो चुके हैं और शेष तैयार किए जा रहे हैं.

प्रथम खण्ड (साधारण)	रु० ७.५०
द्वितीय खण्ड (सजिल्द)	रु०. ५.५०
तृतीय व उससे आगे के खण्ड (प्रत्येक)	रु०. ७.५०
प्रथम ५० खण्ड एक के साथ खरीदने पर रियायती मूल्य	रु० ३५०.००
महात्मा गांधी (चित्रावली)	
गांधीजी का अलौकिक जीवन—आकर्षक चित्रों में.	
३२. ५ × २३.५ से. मी. साइज़ में सुन्दर	
आर्ट पेपर पर	रु० १२.५०
बापू के आशीर्वाद (राजे के लिए गांधी जी का एक विचार)	रु० ६.००
(संकलनः आनन्द टी. हिन्गोरानी)	
गाँधी शतदल (सकलन सोहनलाल द्विवेदी)	रु० ५.००
मोहनदास करमचन्द गांधी (ले० नरेन्द्र शर्मा)	रु० ४.२५
महात्मा गांधी का सन्देश (ले० यू० एस० मोहन राव)	रु० २.६०
गांधी कथा (चित्रों में) (ले० एस० डी० सावन्त, एस०डी० बादलकर)	
गांधीजी की आद्योपान्त जीवन कथा मनोहारी सतरंग	
चित्रों में. बच्चों के लिए विशेष आकर्षक	रु० २.५०
गांधीजी के संस्मरण	रु० १.७०
सब ईश्वर के प्यारे बेटे	
छूआछूत से संबन्धित गांधीजी के भाषणों का संग्रह	रु० १. ०
बापू की वाणी (ले० निरंकारदेव सेवक)	
कविता में गांधीजी के उपदेशों का सारांश	रु०. ०.५०

अन्य कई भाषाओं में रोचक व उपयोगी पुस्तकें—

(डाक खर्च मुफ्त) तीन रुपये से अधिक मूल्य की पुस्तकें वी.पी.पी. से भी भेजी जा सकती हैं. वृहद सूचीपत्र मुफ्त मंगाएं.

प्रकाशन विभाग

डीएवीपी–७५।२६ पटियाला हाउस नई दिल्ली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रूपदर्शी
बनारसी साड़ियों
का
अद्वितीय संसार
●
आरगंजा, कोटा
सिफ़ोन और
सिल्क की
अद्वितीय एवं आकर्षक
प्रिण्टेड साड़ियों में
व्यापक चुनाव
का
प्रतिष्ठान

मेसर्स रूपदर्शी

सी. के ५६।३३ चौक, वाराणसी.

फोन : ६५६११

मुमुक्षु भवन द्वारा कहानीकार प्रकाशन के लिए, कहानीकार मुद्रण संस्थान के. ३०।३ कबीर कुटीर (निकट भैरवनाथ), वाराणसी से संपादित, प्रकाशित एवं मुद्रित.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

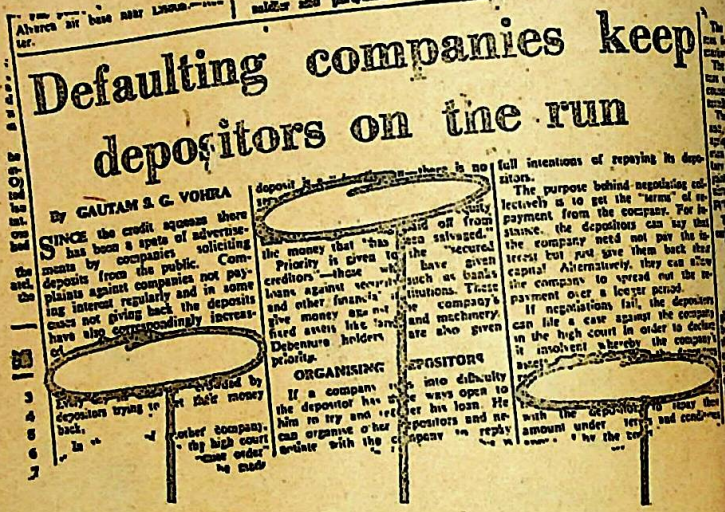

Defaulting companies keep depositors on the run

By GAUTAM S. G. VOHRA

SINCE the credit squeeze there has been a spate of advertisements by companies soliciting deposits from the public. Complaints against companies not paying interest regularly and in some cases not giving back the deposits have also correspondingly increased.

Every ... depositors trying to ... back.

In ... provided by ... their money ... other company ... the high court ... order ... be made

deposit ... there is no ... priority ... paid off from ... into salvaged." ... the "secured" ... have given ... such as banks ... institutions. These ... the company's ... and machinery. ... are also given ...

Priority is given to the money that "has ... creditors"—those who ... loans against security ... and other financial ... give money are not ... fixed assets like land ... Debenture holders ... priority.

ORGANISING

If a company ... the depositor has ... him to try and ... can organise other ... unite with the ...

DEPOSITORS

... into difficulty ... ways open to ... her his loan. He ... depositors and ... company to repay ... full intentions of repaying its depositors.

The purpose behind negotiating collectively is to get the "terms" of payment from the company. For instance, the depositors can say that the company need not pay the interest but just give them back their capital. Alternatively, they can allow the company to spread out the repayment over a longer period.

If negotiations fail, the depositors can file a case against the company in the high court in order to declare it insolvent whereby the company's assets ...

with the depositors to repay their amount under terms and conditions ... the ...

फोर्ट क्षेत्र की एक हाईगोर्ड कम्पनी ने पिछले २ वर्षों से जमाकर्ताओं को भुगतान नहीं किया है।

कम्पनी का दिवाला होने पर, जमाकर्ताओं का नम्बर सबसे बाद में आता है।

दिवाले के आवेदन पर न्यायालय में कभी कभी समझौता हो जाता है।

टाइम्स आफ-इंडिया में प्रकाशित एक खबर

जीवन बीमा-सुरक्षा पाने का सबसे सुरक्षित और विश्वस्त तरीका है।

(भारत सरकार द्वारा पूर्णतया गारन्टी शुदा है)

ऊँची दर पर ब्याज वाली योजनायें आकर्षक होती हैं, परन्तु उनसे मृत्यु होने पर सुरक्षा नहीं मिलती। केवल जीवन बीमा द्वारा ही जीवन पर जोखिम से सुरक्षा मिलती है। इसलिए बीमा कराने के दिन से ही, आप उस पूरी राशि के लिए आश्वासित हैं जिसे बचाने की आपकी योजना है—उन अंशांश बचत योजनाओं की तरह नहीं जिनमें कुल जमा-राशि ही मिलती है।

जीवन बीमा का दूसरा विकल्प नहीं है।

RADEUS/LIC/AS 12 ...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनारसी साड़ी

अनुपम सौन्दर्य
की
अनुपम अभिव्यक्ति

चौधरी ब्रदर्स ठठेरी बाजार, वाराणसी फोन/शोरूम: ६२८६८

नामसे ख्यात:
चौधरी साड़ी सेन्टर
[illegible] मेघदूत, मेरीन ड्राईव नम्बर ३ फो[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

R.N.W. पंजीकृत सं० आर० एन० १५२५०/६७ ● डाक पंजी० सं० एल०आर०एन/

मॉडेला शेर
की
चित्ताकर्षक
छलांग —
मॉडेला
के
चित्ताकर्षक
सूटिंग्स!

हर प्रमुख स्टोर्स पर प्राप्त
सम्पर्क स्थापित करें:

एजेण्ट— **पसमीना** (पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, नेपाल)

डाएक्स ... ा लेन, वाराणसी ... फोन ५४०३०

(निकट मैरव ...) वाराणसी

Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रियाचरित्रम् : कितना सच, कितना

—सन्दर्भित कहानियों का दूसरा

हंसनीकगर

पत्र
श्रेष्ठ कहानियों
पत्रिका

विशेष आकर्षण : बहुचर्चित उर्दू उपन्
'बहुत देर कर
का धारावाहिक दसवां अ

मूल्य : ५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनारसी साड़ी

अनुपम सौन्दर्य
की
अनुपम अभिव्यक्ति

चौधरी ब्रदर्स ठठेरी बाजार, वाराणसी फोन/शोरूम: ६२८६९

बम्बई बाब्च:
चौधरी साड़ी सेन्टर
१५५ बी, मेघदूत, मेरीन ड्राईव, बम्बई-२. फो: २५०३६१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुचर्चित एवं बहुप्रतीक्षित उपन्यास

बहुत देर कर दी

—अलीम मसूर

आकर्षक सजिल्द डिमाई आकार में प्रकाशित

उत्तर प्रदेश उर्दू एकादमी द्वारा पुरस्कृत इस उपन्यास की निम्नलिखित समीक्षकों और लेखकों ने भरपूर सराहना की है :—

(स्व०)प्रो०सय्यद एहतशाम हुसैन, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
जस्टिस जी० डी० खोसला भूतपूर्व जज, सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली
प्रो० आले अहमद सुरूर, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू, मु० विश्ववि०, अलीगढ़
डा० मुहम्मद हसन, नेहरू फेलो, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष उर्दू, कश्मीर विश्वविद्यालय
प्रो०-असलूब अहमद अन्सारी विभागाध्यक्ष अंग्रेज़ी, अलीगढ़ विश्ववि०
डा० ज्ञान चन्द विभागाध्यक्ष उर्दू, जम्मू विश्वविद्यालय
डा० महमूद इलाही विभागाध्यक्ष उर्दू, गोरखपुर विश्वविद्यालय
डा० हुकुमचन्द नय्यर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
कृष्ण चन्दर, कुर्रतुलऐन हैदर, काज़ी अब्दुल सत्तार, जीलानी बानों, सुहैल अज़ीमाबादी, डा० मसीहुज़्ज़मा, डा० सय्यद अकील जैसे अन्य—

[मूल्य २०) कहानीकार के सदस्यों के लिए १६) मात्र]

हिन्दी में पूरा उन्पयास प्राप्त करने के लिए पुस्तक विक्रेताओं से सम्पर्क करें या हमें लिखें—

कहानीकार प्रकाशन

के. ३०।३७ अरविन्द कुटीर निकट भैरोनाथ,
वाराणसी, पिन.२२१००१ फोन.६६६६५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नगर पालिका (रामनगर वाराणसी)

गणतन्त्र दिवस २६ जनवरी १९७६

के अवसर पर

अपने नागरिकों का अभिनन्दन करती है

और उनसे अनुरोध करती है कि

गत् वर्षों की भाँति

अतिक्रमण हटाने, सफ़ाई तथा

टैक्स वसूली के कार्यों में

नगर पालिका को अपना सहयोग प्रदान करें.

विश्राम प्रसाद
अधिशासी अधिकारी
नगर पालिका—रामनगर
वाराणसी

प्रेमकिशोर पाण्डे
अध्यक्ष
नगर पालिका रामनगर
वाराणसी

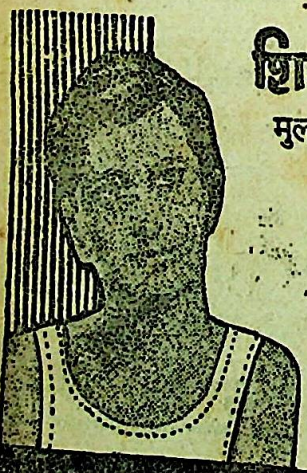

शिव हौजरी की
मुलायम, टिकाऊ और
सुखप्रद परिधान

दरबार
स्नोयी
गोल्डन लोटस
इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता : शिवचरन दास खत्री
१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

अपनी ताक़त को बनाए रखने के लिए ओकासा की चांदी चढ़ी टॉनिक टिकियाँ लीजिए. शक्ति और स्फूर्ति के लिए मशहूर टॉनिक ओकासा. तंदुरूस्ती की एक निशानी ओकासा

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ

पुरुषों के लिए चांदी वाली

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO.PVT.LTD.,12A, Gunbow Street, P. B. No. 396,Bombay 400001.

खेलसन्स

जनता जाफ़रानी

101

सर्वोत्तम तम्बाकू

खेदनलाल एण्ड सन्स

पो. बा. न. ८८. चेतगंज. वाराणसी-१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आत्मस्वीकृति

त्रियाचरित्रम्: कितना सच कितना झूठ

स्त्रियों के समानाधिकार की बात पूरे तौर पर सतही है. समानाधिकार और समानस्थिति कोई देने की चीज़ नहीं है. यह कोई सरो-सामान नहीं जिसे आज तक पुरुषों ने पास और रखा था कि अब स्त्रियों के लिए भी वह हासिल करा दिया जाय. दरअसल समानाधिकार एक सामाजिक स्थिति है. जब तक स्त्रियों के बारे में हमारा मानसिक दृष्टिकोण नहीं बदलेगा समानस्थिति की बातें सिर्फ़ बातें ही रहेंगी. जिसके बग़ैर आदमी पैदा नहीं हो सकता, ज़िन्दा नहीं रह सकता, जिसकी ज़रूरत आदमी को ताउम्र है उसके लिए ताउम्र क़ैद की बात कि उसे बचपन में पिता के, युवावस्था में पति और वृद्धावस्था में बेटों के संरक्षण में रहना चाहिए—हमारे दृष्टिकोण को क्या संकुचित और एक पक्षीय नहीं करती ? क्या ये सारे संरक्षण पुरुष के लिए भी लाज़मी नहीं? शायद इसलिए नहीं क्योंकि ये सारी बातें पुरुष प्रधान समाज की चौकसी के अन्तर्गत आती हैं. दरअसल यह सारी चौकसी सामान या वस्तु के लिए मुनासिब है पर स्त्री सामान या वस्तु नहीं होती. वह स्त्री होती है—पुरुष का अर्ध अंग, फिर इस तरह के संरक्षणों के नाम पर प्रतिबन्धों का मतलब? जहाँ तक 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' की बात है, वह तो ठीक है पर क्या ऐसी स्थिति में नारी को लाने के लिए उसे ताउम्र क़ैद (संरक्षण) में रखना सही रास्ता है? और यदि नहीं तो फिर इसके पैरोकार क्यों की गयी ? और यदि हाँ तो फिर आज के समानाधिकार के युग में वैसी मानसिकता से ग्रसित होने का औचित्य ? यही नहीं 'त्रिया चरित्रम् दैवो न जानाति' शब्दावली से उसके व्यक्तित्व को झुठलाने, दूषित करने को पूर्ववर्ती मान्यताओं से चिपके रहने के पूर्वाग्रहों का उपादेयता ? दरअसल ये सारी बातें झूठ हैं, भ्रामक हैं. चरित्र केवल स्त्री का ही नहीं, पुरुष का भी होता है. दोनों का ही चरित्र श्रेष्ठ हो, साहित्य हो, सामाजिक सन्दर्भों में हितकारी हो, आदर्श हो, इसके लिए समानाधिकार की बात ठीक है पर उससे भी ज्यादा ठीक बात तब होगी जब स्त्रियों से सम्बन्धित तथाकथित पूर्वाग्रहजन्य मानसिकता और मान्यताओं से मुक्त हो कर स्त्री के वैचारिक और संस्कारगत चारित्रिक व्यक्तित्व के निर्माण के लिए एक ऐसे वातावरण और शिक्षण का निर्माण हो—ऐसी सामाजिक मानसिकता का निर्माण हो जिसमें नारी एक वस्तु न समझी जाय, सेक्स सिम्बल न समझी जाय बल्कि नारी समझी जाय—'प्रकृति' औरत की तरह श्रद्धा, देवि, माँ, सहचरि, प्राण समझी-सोची जाय.

—कु० सु०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

त्रियाचरित्रम् :
कितना सच, कितना झूठ !

कहानियाँ

(अ०-क० '७: संयुक्तांक)
वर्ष : पूर्णाङ्क ५२

पाठक—
कमल गुप्त

मूल्य : छः रुपये
विदेश में : दस रुपये
एक अंक : एक रुपया

कार्यालय—
३०।३७ अरविंद कुटीर
(लंका भैरवनाथ)
वाराणसी-१. फोन ६६६६५

मुद्रक-प्रकाशक—श्री अन्नपूर्णा
प्रिंटर्स वर्क्स, वाराणसी

कहानियाँ

	६	परमानन्द 'अश्रुज'
रोशनी के धब्बे	२४	सुरेश
उम्र	४०	सविता बैनर्जी
ऐसा भी	४४	अर्पणा टैगोर
ग़ैरवापसी	५२	ओमप्रकाश पाण्डेय
तीसरी पत्नी	५८	चीनी लोक कथा
त्रियाचरित्रम् की कथाएं	६८	रजनीश प्रसाद मिश्र

धारावाहिक उपन्यास

बहुत देर कर दी (उर्दू)	९	अलीम मसरूर

अन्य स्तम्भ

आत्मस्वीकृति	४	
कुछ स्याह : कुछ सफ़ेद	७६	कमल गुप्त
कविताएं		१४, ३२, ६०,
लघुकहानी एक पुनर्मूल्यांकन	८४	: बलराम
आपने लिखा है	८३	
परिहास पृष्ठ	८६	

आगामी होली अङ्क में पढ़ें :

त्रियाचरित्रम् कथांक (तीसरा खण्ड)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रेयसी

भारतीय पौराणिक साहित्य 'त्रिया-चरित्र' की अनेकानेक गूढ़तम, प्रपंचनात्मक एवं त्यागमयी कथा-चर्चाओं से परिपूर्ण है. श्री कृष्ण की प्रेमिका राधा भी परस्पर विरोधी चर्चाओं से बच नहीं सकी. यह बात सर्वविदित है कि राधा श्रीकृष्ण की ब्याहता पत्नी नहीं थी. वह थी सिर्फ़ प्रेयसी. अतः एक वर्ग जहाँ पति और परिवार के प्रति विश्वासघात कर अन्य पुरुष से प्रणय के लिए राधा को दोषी ठहराता है, वहीं दूसरा वर्ग त्यागमयी निःस्वार्थ उदात्त प्रेयसी के रूप में राधा की वंदना करता है. राधा क्यों वंदनीय है ? पौराणिक कथाओं के माध्यम से जन सामान्य तक आने वाली एक जनश्रुति लघुकथा के रूप में यहाँ प्रस्तुत है—

बुरी तरह पीड़ित थे शिरोवेदना से श्रीकृष्ण. राजवैद्यों ने शताधिक प्रयास किये पर वेदना न कम होनी थी, न हुई. अन्ततः निदान श्रीकृष्ण से ही पूछा गया. सहज भाव से उन्होंने उत्तर दिया—मेरा कोई सच्चा प्रेमी या भक्त अपना चरणोदक मुझे पिला दे तो सिर की इस मरणांतक पीड़ा से मुझे मुक्ति मिल सकती है.

देवर्षि नारद तीनों लोक में घूमे. स्वयं नारद, साधु-सन्यासी, ब्रह्मज्ञानी, पंडित, पुजारी, भक्तगण, सोलह हज़ार पट रानियाँ, राजरानी रुक्मिणी आदि सभा ने नकारात्मक उत्तर दिया—'हरे हरे कैसी बात करते हो देवर्षि—साक्षात नारायण को अपना चरणोदक !—हरे हरे, ऐसे पातकी नहीं हैं हम.'

अंततः नारद राधा के पास पहुँचे. श्रीकृष्ण के सिर में पीड़ा का समाचार सुन कर व्याकुल हो उठी राधा. झट अपने दोनों पैर नारद के सामने बढ़ा दिये 'शीघ्र करो देवर्षि, प्रभु को अविलम्ब पीड़ामुक्त होना चाहिये.'

अवाक् रह गये देवर्षि—'परिणाम जानती हो राधा ?'

'हाँ देवर्षि, प्रश्न परिणाम का नहीं—कृष्ण की पीड़ा का है. मैं जानती हूँ—कल्प युगों तक रौरव नर्क की अधिकारिणी बनूँगी मैं. किन्तु यह तुच्छ शरीर नर्क के भय से अपने स्वामी की पीड़ा देखें, इतनी अधम नहीं हूँ मैं.'

नारद राधा के चरणों पर गिर पड़े, भक्तगणों के मुँह लटक गये. इधर राधा की जयजयकार होने लगी. इसी उदात्त त्याग और प्रेम का परिणाम है कि कृष्ण से पहले राधा का नाम लिया जाता है.

प्रस्तुतकर्ता—परमानन्द

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिश्र की
४००० वर्ष पुरानी
लोककथा का सार

प्रतिदान

आज से लगभग चार हज़ार वर्ष पहले मिश्र में लिखी गयी जन-कथाओं में से मानवचरित्र को उद्घाटित करती हुई दो भाईयों की कहानी आज भी काफ़ी प्रचलित है. इस कथा में बड़ा भाई विवाहित और छोटा अविवाहित है. बड़े भाई के बाहर चले जाने पर उसकी पत्नि अपने देवर के प्रति आकृष्ट होती है और उससे प्रणय निवेदन भी करती है. छोटा भाई विचारशील है और भाई के प्रति ऐसे विश्वासघाती आचरण से दूर रहता है. बड़े भाई की पत्नि बार-बार प्रणय निवेदन करती है लेकिन देवर बार-बार उसे समझाता है और ऐसे दुष्कृत्य से विमुख होने की सलाह देता है. अपने प्रणय निवेदन के ठुकराये जाने पर वह अपने देवर से बदला लेने की सोचती है. जब बड़े भाई यानी कि अपने पति के वापस आने पर वह स्त्री शिकायत करती है— तुम्हारी अनुपस्थिति में तुम्हारे छोटे भाई ने हमारे साथ दुराचार करने की हर चन्द कोशिश की लेकिन मैंने तुम्हारे प्रेम की खातिर उसके प्रणय निवेदन को ठुकरा दिया. ऐसे देवर का मैं मुँह भी नहीं देखना चाहती.

पत्नी की बातें सुनते ही बड़े भाई के तनबदन में जैसे आग लग गई. वह बौखला उठा और अपने भाई का बध करने के लिए घर से निकल पड़ा. जब छोटे भाई को इसका पता चलता है तो वह अपनी जान बचा कर जगह-जगह भागता मारा-मारा फिरता है.

अपने प्रेम का प्रतिदान न पाने पर स्त्री अपने प्रेमी को भयंकर से भयंकर यातना देने पर उतारू हो जाती है. ■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पूर्व कथा

● दाऊद बनारस का एक सीधा-सादा कुँआरा जवान है जो सुन्दर की चाल में खौफ़नाक गुण्डे करीम की मेहरबानी के नाम पर मिली तवायफ़ सुलतान को नकली बीवी बना कर रहता है. किताब की दुकान में नौकर है. उसको व खूबसूरत सुलताना की जोड़ी पूरे चाल में, दोस्तों और मालिकों के बीच उसे चर्चा का विषय बना देती है. सुलताना की चुटीली बातें कभी बफ़ादार बीवी और कभी तवायफ़ होती हैं जिसके कारण दाऊद के मन में कभी खिंचाव की कशिश तो उसका करीम से खैल होना उसमें नफ़रत का ज्वार पैदा करता है. एक रेणु है जो वेश्यावृत्ति पर थीसिस लिखना चाहता है. एक कायनात है जो सीधी-सादी, प्यारी-सी, ग़रीबी की मार सहता हुई लड़की है और जो अपने ताज़े नावेल को छपाने के लिए दाऊद से मदद मांगती है. दाऊद के मन में एक हमदर्दी, फिर प्यार का अंकुर फूटता है पर सुलताना का क्या करे वह. बड़ी मुश्किल में दिन गुज़रते हैं. वह करीम से मिल कर उससे मुक्ति की बात कहता है पर वह उसकी जेबों में इज़्ज़त से 'मौज उड़ाओ' कहते हुए कुछ रुपये भर देता है. अजीब कशमकश में वह घर लौटता है जहाँ पड़ोसियों की भीड़ जमी हुई है सभी सुलताना पर फ़िदा हैं. दाऊद का मन भी बेहद रीझता है पर सुलताना को बेबाकी से सिटपिटाया रहता है. फिर ऊपरी धौंस के लिए वह करीम के रुपयों को अपनी कमाई बता कर उसे दे देता है. सुलताना एक हज़ार में चोर बाज़ार से ढेरों सामान ला कर गृहस्थी सजा देती है. दाऊद दुकान से हो कर कायनात के घर जाता है जहाँ उसका नफ़ासत पसन्दगी, पाक़-साफ़-दिली, साहित्य को पकड़ और उसकी बातें उसमें अपनापन भर देती हैं. वह उसकी आर्थिक सहायता के बतौर बचे तीन सौ रुपयों में उसका उपन्यास खरीद लेता है. घर लौटता है तो अपने सजे संवरे कमरे को देख कर दंग रह जाता है और सुलताना पर मोहित भी, जो बीवी न होते हुए भी बीवी से कहीं आगे है—ज़िम्मेदार है, खैरख्वाह है. फिर भी कायनात की बात कुछ और है. वह ज़िन्दगी है, सुलताना सिर्फ़ एक सजावटी तसवीर. कायनात का उपन्यास छपवाने के लिए दाऊद चिन्तित है. अपने आफ़िस के साथियों को अपनी नकली शादी की दावत के लिए घर बुलाता है, जहाँ सुलताना की खूबसूरती और बातों का जादू सबके दिलो-दिमाग़ पर असर करता है. बातों-ही-बातों में उपन्यास छपाने के रास्ते खुलते हैं और दाऊद के मन में उल्लास की एक महीन किरन फूटती है. सुबह सुलताना के साथ शेरो-शायरी और बातों का दौर चलता है. शाम कायनात के घर गुज़रती है और उपन्यास छपने के मसविदे तैयार होते हैं. प्रसन्न मन से घर लौटते दाऊद से करीम रास्ते में मिलता है और सुलताना को रात दो-एक

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुचर्चित उर्दू उपन्यास

धारावाहिक दसवाँ अंश

बहुत देर कर दी

सलमान शीशों की दीवारों के बीच अपने आफ़िस में बैठे हुए स्टेनो-टाइपिस्ट से कोई महत्वपूर्ण पत्र डिक्टेट करा रहे थे. उनके आफ़िस के बाहर उसी से मिला हुआ दाऊद का टेबुल था, जिस पर पांडुलिपियों और फ़ाइलों का ढेर था. घुटनों पर बैठा हुआ एक आर्टिस्ट से किसी किताब के डस्ट-कवर की डिज़ाइन के बारे में विचार विनिमय कर रहा था कि कायनात ठीक उसके सामने आ कर खड़ी हो गयी.

दाऊद ने उसे देखा और घबरा गया.

'मैं सलमान साहब से मिलने आयी हूँ. उन्होंने मुझे बुलाया है. यह है उनका पत्र!' कायनात ने अपरिचित की तरह कहा और पत्र दाऊद के सामने रख दिया. उसने एक नज़र कायनात पर डाली और पत्र देखने लगा. उसे पत्र में लिखावट कम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और कायनात की तसवीर अधिक दिख रही थी जो सफ़ेद जार्जेट की साड़ी में सफ़ेद ब्लाउज़ में सुरुचिपूर्ण सादगी के साथ सामने खड़ी थी. उसने दोबारा नहीं

बहुत देर कर दी

उर्दू आलोचकों की नज़र में (४)

इधर वर्षों से कभी ऐसा नहीं हुआ कि कोई किताब एक नशिस्त में पढ़ डाली मैं अपनी तबीयत का हाल जानता हूँ, इसलिए किसी तक़ल्लुफ के बग़ैर कह सकता कि ये आपके नावेल का एजाज़ (चमत्कार) था कि जिसने मुझे घण्टों दुनिया माफ़िहा (सारी सृष्टि) से बेखबर रखा.

काश आप यहाँ होते या मैं बनारस आ सकता तो आपको बिलमुशाफ़ा (प्रत्यक्ष) मुबारकबाद पेश करता. आपने उर्दू नावेल की तारीख (इतिहास) में एक बेहतरीन इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया है. आपने अपने नावेल में जगह-जगह कायनात के सेयाक़ो सेबाक़ (संदर्भ) में नावेल के फ़न और उसकी क़द्र व क़ीमत पर इज़्हारों खयाल (विचार-विमर्श) किया है. जी चाहता है कि उनमें से चन्द जुमले खुद अपने नावेल के लिए मुस्तआर (उधार) ले लूँ.

हम लोग तनक़ीद (आलोचना) की दुनिया में, खास तौर से नावेल के तनक़ीद के सिलसिले में, हक़ीकत-निगारी (यथार्थपरक) की इस्तेलाह (शब्द) इस्तेमाल करते हैं. आप यक़ीन मानिये कि आपका ये नावेल इस इस्तेलाह की सही तर्जुमानी (प्रतिनिधित्व) करता है. शराफ़ते नफ़्स (आन्तरिक संस्कार) और शराफ़ते नफ़्स के सिलसिले में इनसान जिस कशाकश (खींचतान) और कशमकश (अन्तर्द्वन्द्व) का शिकार होता है, आपने उसकी बेहतरीन तसवीरकशी की है. दाउद और सुल्ताना का किरदार (चरित्र) अफ़सानवी अदब (कथा साहित्य) का लाफानी किरदार (अमर चरित्र) है—और जब मैं अफ़सानवी अदब कहता हूँ तो मेरी मुराद उस अदब से होती है जो हमारे माहौल (वातावरण) से जन्म लेता है.

आप नावेल की दुनिया में नौवारिद (नए-नए) हैं लेकिन मुझे यक़ीन है कि आपका यह पहला नावेल ही आपको अबदो-ज़िन्दगी (सृष्टि के अन्त तक) की जमानत है.

डा. महमूद इलाही

(विभागाध्यक्ष उर्दू, गोरखपुर विश्वविद्यालय, मेम्बर उर्दू एकादमी, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के दिनांक २३-१-७२ के पत्र का एक अंश.

उठा कर उसे देखना चाहा लेकिन जब्त कर गया. दाऊद के पास बैठा हुआ आदिल बार-बार कायनात को देखता और नज़र झुका लेता. दाऊद ने घण्टी बजायी. चपरासी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आ कर सलाम किया.

'मैनेजर साहब से कहो, कायनात साहबा आपसे मिलने आयी हैं.' दाऊद ने कहा.

चपरासी चला गया. दाऊद ने कायनात से कहा—

'तशरीफ़ रखिये !'

वह बैठ गयी. फिर आर्टिस्ट को सम्बोधित करते हुए दाऊद ने कहा—

'मिस्टर सुधाकर, आपके एक नावेल का काम शुरू होने वाला है. पहला-पहला नावेल है. डस्ट-कवर बहुत ही आकर्षक होना चाहिये.'

चपरासी ने आ कर कहा—

'मैनेजर साहब ने कहा है इन्हें बैठा लीजिये. दस मिनट बाद बुला लूंगा.'

सुधाकर ने दाऊद के जवाब में कायनात से कहा—

'आप ज़रा एक बार फिर खड़ी हो जाइये.'

वह झिझकती हुई खड़ी हो गयी.

सुधाकर ने दाऊद कहा—

'ज़रा ग़ौर से इन्हें देखिये.'

दाऊद ने अपनी भरपूर निगाहों में कायनात के आकर्षण को समेटते हुए कहा—

'देखा.'

'डस्ट कवर की चार कलर की डिज़ाइन में इन्हें ऐसे ही खड़ा कर दिया जाये. आपकी क्या राय है ?' सुधाकर ने पूछा.

'जैसी आपकी राय हो. तसवीर आपको मिल जायेगी.' दाऊद ने इस तरह कहा जैसे उसे कोई खास दिलचस्पी नहीं है. कायनात खड़ी रही.

'अब आप बैठ जाइये.' सुधाकर ने कायनात से कहा.

कायनात फिर बैठ गयी. सुधाकर ने फिर कहा—

'हां, तो मेरे खयाल में किताब का पहला अट्रैक्शन आपकी तसवीर होगी. लेकिन कायनात साहबा, एक गुज़ारिश है.'

कायनात उसकी गुज़ारिश सुनने के लिए उत्सुक हो उठी, लेकिन मुंह से कुछ न कहा. सुधाकर ही ने कहा—

'सफ़ेद साड़ी और सफ़ेद ब्लाउज़ में आप जितनी अट्रैक्टिव मालूम हो रही हैं, इस लिबास में तसवीर उतनी आकर्षक नहीं होगी.....माफ़ कीजियेगा. मैं जो कहना चाहता हूं, शायद आप समझ गयी होंगी.'

कायनात चुपचाप सुन रही थी. सुधाकर ने आगे कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ऐसा कीजिये, आप ऐसी ही, काली साड़ी और काले ब्लाउज़ में अपनी एक तसवीर दीजिये. बस काम फ़र्स्ट क्लास हो जायेगा.'

सुधाकर ने काली साड़ी और काले ब्लाउज़ का नाम लिया तो दाऊद को सब उसी रंग में नज़र आने लगी. वह खो गया.

सुधाकर ने उसे सम्बोधित किया—

'मिस्टर दाऊद !'

दाऊद ने कोई जवाब न दिया.

'मिस्टर दाऊद...दाऊद साहब !'

'जी !' वह चौक पड़ा.

'आप शायद मेरी राय से इत्तफ़ाक़ करेंगे.' सुधाकर ने कहा.

'इत्तफ़ाक़, हाँ....इत्तफ़ाक़ तो होना ही चाहिये ...इत्तफ़ाक़ बहुत अच्छी चीज़ है.' दाऊद वहाँ से बोल रहा था जहाँ सुधाकर की पूरी आवाज़ नहीं पहुँच पायी थी.

चपरासी ने आ कर कहा—

'कायनात साहबा को मैनेजर साहब बुला रहे हैं.'

दूसरे ही क्षण वह सलमान के आफ़िस के दरवाज़े पर खड़ी थी. उसने पूछा—

'क्या मैं अन्दर आ सकती हूं ?'

सलमान ने कायनात को देखा तो यह कहना भूल गये कि 'तशरीफ़ लाइये.' वह कुछ क्षण प्रतीक्षा करती रही. सहसा सलमान ने कुछ याद करते हुए कहा—

'आइये आइये. बैठिये !'

वह उनके सामने कुर्सी पर बैठ गयी. चपरासी ने टाइप किये कुछ काग़ज़ सलमान के सामने दिये और चला गया.

'कायनात आप ही का नाम है ?' सलमान ने पूछा.

'जी !'

वह अपने सामने रखे काग़ज़ को देखने लगे. फिर सिर उठा कर पूछा—

'आप और क्या करती हैं ?'

'कुछ नहीं !'

'यानी आमदनी के दूसरे ज़रिये भी हैं ?'

'जी नहीं.'

'क्या मतलब ?'

'मैं हूँ और मेरी माँ. अब्बू एक साल हुआ चल बसे. छोटे-मोटे ट्यूशन करती हूँ.'

'आप...सलमान कुछ पूछते-पूछते रह गये.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मैं एम० ए० हूँ. नावेल रोज़ी की तलाश में लिखा हूँ' कायनात ने सलमान को खामोश देख कर स्वयं कहा.

'आगे भी लिखेंगी ?'

लिखने से मेरी परेशानियाँ कम होंगी तो ज़रूर लिखूंगी.'

'यह नावेल आपने परेशानियों के बीच लिखा है ?'

'जी, लेकिन आसानियों की उम्मीद पर.'

'अगर इससे आसानियाँ कम न हुईं तो ?'

'आसानियों के लिए नया रास्ता तलाश करूंगी.'

'इसका मतलब ये कि आप लेखिका बनना नहीं चाहतीं, कारोबार चाहती हैं'

'ऐसा कारोबार तो बहुत लोग करते हैं. मैं लेखिका बनना चाहती हूँ, जिसके लिए ज़ेहन के सुकून की तलाश में हूँ.'

'क्या आप यह नहीं जानतीं कि बहुत से अच्छे अदीबों ने परेशानियों के दरमियान ही काम किया है ?'

'वो अदीब क़द्र के क़ाबिल हो सकता है. लेकिन क्या यह ज़रूरी है कि उसकी परेशानियों को भी दूसरों के लिए ज़रूरी बना दिया जाय ?'

'मेरा मतलब यह है कि कोई क़ाबिल अदीब परेशानियों से घबरा कर लिखना बन्द कर दे तो क्या इसकी गिनती नहीं होगी ?'

'होगी, लेकिन इसका ज़िम्मेदार अदीब नहीं हो सकता.'

'फिर कौन होगा ?'

'माफ़ कीजियेगा. वह होगा जो अदीबों की मेहनत से अपनी रोज़ी कमाता है !'

सलमान खामोश हो गये. बातें इतने धीमे स्वर में हो रही थीं कि दाऊद के कानों तक नहीं पहुँच पा रही थीं. जब वह नज़र उठा कर शीशों की स्वच्छ दीवार से कायनात और सलमान को देखता तो वे महज़ एक ठहरी हुई तसवीर के समान नज़र आते. सलमान अपने सामने रखे हुए काग़ज़ों को बार-बार पढ़ रहे थे. फिर उन्होंने कायनात से कहा—

'मिस कायनात ! मैं आपसे मिल कर खुश हुआ. जिस एग्रीमेन्ट के लिए आपको तकलीफ़ दी गयी थी उसके काग़ज़ात अभी पूरी तरह तैयार नहीं हुए हैं और तैयार होने में देर लगेगी. इसलिए आप तशरीफ़ ले जाइये. अब दोबारा तकलीफ़ नहीं करूंगा. मैं खुद आज शाम को आपके मकान पर आ जाऊँगा. यह काम वहीं खत्म कर दूंगा. आप समझिये एग्रीमेन्ट हो गया.'

'आप शाम को कितने बजे तशरीफ़ लाइयेगा ?' कायनात ने पूछा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहनों से—

शिष्टाचार ?
यह एक रोग है,
आदमी के लिए भोग है !
चलना है तो नपे-तुले क़दमों से चलो !
नमस्ते या प्रणाम के स्थान पर
हाथ मिलाओ
और कहो, 'हलो.....हलो'
नारियों ! सारियों के चुन्नट पर
ध्यान रहे;
ऊँची एड़ी के नीचे तक लटके,
तभी फ़ैशन का मान रहे !
अब तो चिपके हुए वस्त्रों का राज है.
लाज हया ? अजी जाने भी दो,
अब तो स्वराज्य है !
कोई परिचित दीख जाए तो अदा से
मुसकराओ,
कभी-कभी श्रीमतीजी सीटियाँ भी बजाओ
नारी परतन्त्र नहीं, पुरुषों से आगे है—
इसका प्रमाण दिखलाती जाओ
शर्म—लाज संकोच ?
सब दकियानूसी बातें हैं !
हे देवियों ! स्वतन्त्रता अपनाओ !
यदि कोई मर जाए तो शोर मत मचाओ
मुंह बनाने की छूट है,
मगरमच्छ-से आँसू गिराओ !
बोलने के लिए मुह फाड़ कर चिल्लाओ,
खाओ तो फ्रन्टियर मेल-सी चक्की चलाओ
पीने की चीज ग्लास में आधी छोड़ जाओ
सोना हो तो खड़े-खड़े ही सोओ !
और यदि गुस्सा आ जाए तो
गालियाँ अंग्रेजी में दो !

—बिजली रानी चौधरी

'सात बजे !

'अच्छा तो इजाज़त दीजिये. आदाब अर्ज़ !'

सलमान ने माथे तक हाथ ले जा कर सलाम किया. कायनात उनके कमरे से निकली तो दाऊद से नज़र मिलाये बिना आफ़िस से निकल गयी.

दाऊद दफ़्तर में कायनात की स्थिति के कारण काम में कम और उसके विचारों में अधिक उलझा हुआ था. वह फिर अपने काम में एकाग्रता से जुटने के प्रयास में था कि आफ़िस से निकल कर सलमान उसके सामने आ खड़े हुए. दाऊद भी खड़ा हो गया. सलमान ने कहा—

'तुमने कायनात को देखा ?'

'जी !'

'क्या खयाल है उस लड़की के बारे में. यानी वो कैसा लिखती है?'

'जहाँ तक देख सका हूँ, बहुत अच्छा लिखा है.'

'मेरा खयाल है उसने आखिर तक बहुत अच्छा लिखा होगा...हाँ, तो मैं यह कहने के लिए आया था कि 'बन्द दरवाज़ा' का काम शुरू कर दो और निहायत तेज़ी से करो. पन्द्रह दिन के अन्दर उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं का काम खत्म हो जाना चाहिए. काम बहुत ही उम्दा, यानी गेट-अप खूबसूरत और छपाई आकर्षक होनी चाहिए. बातें ज्यादा से ज्यादा जितनी भी हो सकें.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कायनात से हिन्दी का तरजुमा इतनी जल्दी कैसे मिलेगा ?'

'वह मिस्टर बुखारी करेंगे. उनसे कह दीजियेगा, रात-दिन काम करें. तरजुमा बहुत अच्छा होना चाहिए. जितना तरजुमा वो देते जायँ, प्रेस को देते जाइए.'

'प्रेस पर तो पहले ही के कामों का बोझ बहुत है.'

'दूसरे प्रेस की मदद लो. मैं अन्नपूर्णा वालों से बात कर लूँगा.'

सलमान की बातों से दाऊद के मन में आनन्द के सोते उबल रहे थे. लेकिन वह हैरान था कि आखिर सलमान साहब को इतनी जल्दी क्यों हो रही है. मगर यह बात पूछ नहीं सकता था. सलमान ने कहा—

'तुम्हें एक काम और करना है.'

'क्या ?' दाऊद ने पूछा.

'बन्द दरवाज़ा' पर पब्लिकेशन की तरफ़ से कायनात का एक शानदार परिचय होना चाहिए. वह तुम लिखोगे...किताब की पब्लिसिटी के लिए बहुत जोरदार मैटर चाहिए. उर्दू और हिन्दी मैगज़ीन के लिए अलग-अलग. उसे भी लिखो, समझे ?'

'जी हाँ !' दाऊद ने ऐसे स्वर में कहा कि सलमान को सन्देह हुआ कि वह कुछ सोच रहा है. उन्होंने सफ़ाई देते हुए कहा—

'बात यह है कि पन्द्रह दिन बाद डिफ़ेन्स मिनिस्ट्री को किताबों का जो पहला शिपमेन्ट भेजना है, वह इस किताब को शामिल किये बग़ैर पूरा नहीं हो रहा है.'

दाऊद ने बात सुन ली. सलमान फिर अपने आफ़िस में जाकर कुर्सी पर बैठ गये और रिसीवर उठा कर अन्नपूर्णा प्रेस को डायल करने लगे.

शाम हुई तो दाऊद दफ़्तर से सीधा कायनात के घर पहुँचा. उसके दरवाज़े से लगा हुआ एक स्कूटर खड़ा था. नजर पड़ते ही उसको ख़याल आया—बिलकुल सलमान के स्कूटर की तरह है. वह दरवाज़े में घुस कर फिर लौट आया. उसने स्कूटर का नम्बर देखा. वास्तव में सलमान ही का था. वह तेज़ी से सामने के फ़ुटपाथ पर चला गया. वहाँ खड़े हो कर सोचता रहा, आखिर माजरा क्या है. फिर यों खड़े रहना ठीक न समझ कर पास ही के होटल के एक ऐसे कोने में बैठ गया जहाँ से वह सलमान को देख सकता था. आध घण्टे बाद सलमान दरवाज़े के बाहर निकले और स्कूटर से रवाना हो गये. दाऊद ने होटल के बाहर निकल कर देखा तो सलमान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतनी दूर जा चुके थे कि दिखाई न पड़े. वह आहिस्ता से बढ़ा और झगड़े वाली बिल्डिंग के दरवाज़े में प्रवेश कर ज़ीना चढ़ने लगा तो उसे महसूस हुआ कि उसके क़दम थरथरा रहे हैं. उसके मन में अजीब-अजीब विचार उठ रहे थे. वह उसी तरह थरथराते हुए क़दम के साथ कायनात के कमरे के दरवाज़े तक पहुँच गया.

'अरे दाऊद तुम !' अत्यधिक उल्लास में कायनात के मुँह से अनायास निकल गया, 'ग़ज़ब हो जाता, सलमान साहब अभी-अभी यहाँ से गये हैं. मुलाक़ात हो जाती तो ?'

कायनात की बात पर पर दाऊद ने कोई आश्चर्य प्रकट न किया.

'बेटा, तुम खुदा की रहमत हो !' माँ ने कहा और मारे खुशी के दाऊद का हाथ पकड़ कर उसे अन्दर घसीट लिया. कमरे में प्रवेश करते ही उसकी नज़र डाईनिंग टेबल पर पड़ी, जिस पर प्लेटों में बची-खुची बिरियानी और शाही टुकड़े रखे हुए थे. उसने देखा, वही प्लेटें थीं जिनमें उसने टोस्ट और मक्खन का नाश्ता किया था.

अम्माँ दाऊद को सोफ़े पर बैठा कर स्वयं भी बैठ गयीं. कायनात ने आलमारी में से ऐग्रीमेन्ट की नक़ल और दो हज़ार रुपया दाऊद के सामने रखते हुए कहा—

'सलमान साहब निहायत शरीफ़ इनसान हैं. यह देखो मेरा एग्रीमेंट और दो हज़ार एडवांस. उन्होंने कहा है कि सोच-समझ कर लिखती रहो. इस वक़्त पब्लिकेशन के हाथ में आदीवों की तक़दीर है. उन्होंने अम्मी से कहा है कि मैं तुम्हारी बेटी को शोहरत के आसमान पर पहुँचा दूंगा और तुम्हें मालामाल कर दूँगा. उन्होंने यह भी बताया है कि इस एग्रीमेन्ट के हिसाब से मेरी कुल रायल्टी लगभग आठ हज़ार होती है. सब रुपये ज़्यादा-से-ज़्यादा एक साल में मिल जायेंगे. ज़रूरत पर मैं पेशगी भी ले सकती हूँ.'

कायनात तीव्र प्रसन्नता में खोयी हुई सारी बातें कहती जा रही थी और दाऊद एक गंभीर मुद्रा के साथ सारी बातें सुन रहा था. उसने एग्रीमेन्ट का काग़ज़ उठा कर नहीं देखा. पूछा—

'सलमान साहब को तुमने बुलाया था ?'

'नहीं, सुबह उन्होंने खुद ही आने के लिए कहा था.'

'कोई वजह ?' यह सवाल दाऊद ने ऐसे स्वर में कहा कि अपने आप में खोयी हुई कायनात बाहर निकल पड़ी. उसके चेहरे की खुशी गायब होने लगी. उसने अपराधी स्वर में जवाब दिया—

'सलमान साहब ने कहा था कि एग्रीमेन्ट का काग़ज़ तैयार नहीं है. तैयार होने में देर लगेगी, इसलिए वो खुद शाम को यहाँ आ कर दस्तखत करा लेंगे.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'वह भी कहा था कि एडवांस का रुपया घर पहुँचा देंगे ?'

'उन्होंने मुझसे पैसे की कोई बात नहीं की थी.'

दाऊद कुछ देर मौन रहा. फिर उसने एग्रीमेन्ट का काग़ज़ उठा कर देखा. उसका सारा मज़मून बदला हुआ था. रायल्टी की दर पुराने और प्रसिद्ध लेखकों के बराबर थी और दूसरी रिआयतें भी वही थीं जो पुराने लेखकों को मिलती थीं.

अम्माँ के चेहरे पर प्रसन्नता का वही भाव था. उन्होंने दाऊद से पूछा—

'काग़ज़ में वही लिखा है न, जो सलमान ने कहा है ?'

'हाँ अम्माँ वही, लिखा है !' दाऊद ने जवाब दिया. फिर उसने उठते हुए बड़े उदास स्वर में कहा, 'अच्छा कायनात, मैं चलता हूँ. बस यही जानने के लिए आया था कि तुम आफ़िस गयीं तो क्या हुआ ?'

कायनात समझ गयी कि दाऊद कुछ सन्देह में है. उसके दिल को ठेस लग गयी. उसने देखा कि उसके चेहरे की उदासी गहरी होती जा रही है. स्वयं उसकी उदासी भी बढ़ने लगी. अम्माँ ने कहा—

'अरे अरे, तू कहाँ जायेगा ! पहले खाना खा. कायनात सलमान साहब के आने की ख़बर लायी तो मैंने इस घर का मनपसन्द खाना अपने हाथों से बनाया, मुर्ग़-ज़ाफ़रानी और शाही टुकड़ा. कल सुबह कायनात रेनू के घर से सौ रुपये लायी थी. और आज शाम तो रहमतों की बरसात हो गयी इतनी ख़ुशी का दिन इस घर की तक़दीर में कहाँ था. यह सब तेरी ही बदौलत तो हुआ और तू चला जायेगा ?'

दाऊद ने एग्रीमेन्ट का काग़ज़ अम्माँ को देते हुए कहा—

इससे भी अच्छे दिन इस घर की तक़दीर में लिख दिये गये हैं.'

'बैठ जाओ दाऊद .' कायनात ने बड़ी विनम्रता से कहा.'

'नहीं कायनात, देर हो रही है. जाऊँगा.'

कायनात की समझ में नहीं आया कि अब वह क्या कहे. अम्माँ ने बहुत मिन्नत की पर वह नहीं रुका. जब वह ज़ीना उतरने लगा तो कायनात ने अम्माँ से कहा—

'अम्मी, मैं अभी आती हूँ.'

वह भी उसके पीछे-पीछे बाहर आ गयी. उसने भारी स्वर में कहा—

'दाऊद, ख़ुदा के लिए मेरी बात सुनो.'

कायनात के अत्यधिक उदास स्वर ने दाऊद के क़दम रोक दिये. वह उसके पास आ गयी, बोली—

'मैं भी चलूँगी.'

'कहाँ ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'जहाँ तुम जाओगे.'

'क्यों ?'

'मुझे तुमसे कुछ कहना है.'

'कहो.'

'रास्ते में कहने की नहीं है.'

'तो घर पर ही कह देती.'

'वहाँ भी कहने की नहीं थी.'

दोनों चुप हो गये. कायनात ने इधर-उधर देखा. उसने दाऊद से कहा—

'मेरे साथ आओ.'

वह उसके साथ हो लिया. चन्द क़दम चल कर वह उसे लिये हुए एक रेस्ट्रां के केबिन में घुस गयी. दोनों आमने-सामने बैठ गये. कायनात ने कहा—

'तुमने मुझसे कहा था न कि मैं तुम्हें पहचान न लूँ. लेकिन मैंने तुमसे यह कहा था कि तुम मुझे भूल जाना. मैंने तुम्हारी ख्वाहिश पर हालात की चादर ओढ़ा दी. दुनिया इसे मेरी ज़रूरत समझ रहा है, लेकिन तुम इसे अपनी आरज़ू क्यों नहीं समझते ?'

दाऊद चुप रहा

'कायनात ने अपने ब्लाउज़ में से एक काग़ज़ निकाल कर उसके सामने रखते हुए कहा—

'यह मेरी किताब का इन्तसाब (समर्पण) है जो मैंने सलमान साहब को दिया है.'

दाऊद ने पढ़ा. लिखा था—

उसके नाम—

जो फ़रिश्ता है—काश कि वह इनसान होता.'

कायनात ने फिर कहा—

'यह इन्तसाब जिसके नाम है, काश कि वह मुझे अपना नाम लिखने की इजाज़त दे देता. मेरा जो चाहता है कि मैं लिख दूं—दाऊद तुम्हारे नाम. मैंने जो कुछ लिखा है वही नहीं, बल्कि मेरे माथे का हर लिखावट जो तक़दीर लिखने वाले ने लिखी है, उसका इन्तसाब भी उसने तुम्हारे नाम कर दिया है.' कायनात रो पड़ी. उसने अपना मुंह दूसरी तरफ़ फेर लिया.

दाऊद ने अपने हाथ से उसका चेहरा अपने सामने करते हुए कहा—

'कायनात, तुमने ग़लत समझा. मैं फ़रिश्ता नहीं इनसान था और इनसान ही हूँ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुमसे भूल हो गयी.'

बैरे ने केबिन का पर्दा उठाया तो दाऊद ने कहा—

'दो कोका-कोला, बहुत ठंडा.'

बैरे ने कोका-कोला की दो बोतलें ला कर उनके बीच रख दीं. कायनात सिर झुकाए हुए बैठी थी. रह-रह कर उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे. दाऊद ने कहा—

'अब बस करो कायनात. लो इसे पीलो.'

उसने उसका हाथ पकड़ कर उसमें कोका-कोला की बोतल थमा देनी चाही. लेकिन वह बार-बार अपना हाथ खींच लेती. उसके आँसू तेज़ होने लगे, यहाँ तक कि सिसकियाँ लेने लगी. दाऊद की कुछ बन न पड़ा. वह चुपचाप बैठा रहा. धीरे-धीरे उसके आँसू थम गये और उसने सिसकना भी बन्द कर दिया. दाऊद ने डरते-डरते फिर कोका-कोला की बोतल उसके सामने की तो उसने उसे ले लिया.

दाऊद को कुछ इत्मीनान हुआ. जब दोनों आधी बोतल पिप कर चुके तो उसने कहा—

'कायनात, अब मैं तुम्हारे यहाँ नहीं आऊँगा. डर है किसी दिन सलमान साहब से मुठभेड़ हो जायेगी.'

कायनात ने कुछ जवाब न दिया. दाऊद ही ने कहा—

'अब तक तो तुमने मेरा इन्तज़ार किया. अब मैं तुम्हारे लिए साकार इन्तज़ार करूँगा. लेकिन कहाँ, मेरे पास तो कोई ऐसा घर भी नहीं.'

'इतवार को शाम चार बजे जूहू-सी-फ़ेस होटल में मिलूँगी.' कायनात ने जवाब दिया.

दाऊद घर पहुँचा तो सुलताना अपने कमरे में नहीं थी. उसमें ताला बन्द था. उसने इधर-उधर देखा, कोई नज़र न आया. उसने वज़ीरा को आवाज़ दी, पर कोई जवाब न मिला. चाल में हर तरफ़ सन्नाटा था. कोई आवाज़ न थी. इतनी जल्दी किसी दिन उसने चाल में ऐसी खामोशी न देखी थी. उसने सोचा कि वह सुलताना को आवाज़ दे, लेकिन गहरे सन्नाटे ने उसे ज़ोर से आवाज़ देने से रोक दिया. वह कुछ देर तक खड़ा रहा. एक आहट-सी हुई. उसने मुड़ कर देखा तो अट्ठाइस नम्बर कमरे से सुलताना निकल कर तेज़ी से उसकी तरफ़ आ रही थी. उसने आते ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

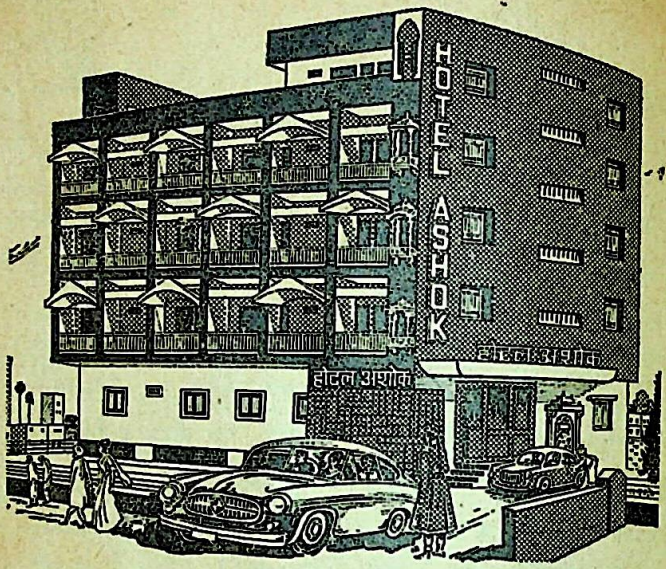

सांस्कृतिक केन्द्र काशी
का
आधुनिक सुविधाओं
से
परिपूर्ण होटल

होटल

अशोक

भारतीय, चाइनीज़ एवं यूरोपीय डिशेज़ में विशिष्ट

सिगरा ● वाराणसी

फोन : ५२०७७, ६७१२७, ५४००६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दरवाज़ा खोला. उसके पीछे-पीछे दाऊद भी कमरे में आ गया. उसने पूछा—

'क्या बात है सुलताना, आज चाल में इतना सन्नाटा क्यों है?'

सुलताना ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और कहा—

'वज़ीरा क़ादिर के साथ भाग गयी.'

'कब?' दाऊद ने हैरत और खौफ़ के मिलेजुले आवाज़ में कहा.

'आज दोपहर को.'

'कैसे मालूम?'

'भाग गयी. अब कैसे मालूम, क्या बताऊँ. फ़ातमा बाई ने पुलिस में रपट की. पुलिस आयी, क़ादिर के माँ-बाप से पूछ-ताछ की. उसका बाप बेचारा कैन्सर का मरीज़, हड्डी का पंजर मौत का इन्तज़ार कर रहा है, क्या बताता? माँ की आँखों में मोतियाबिन्द है. आहट से चल-फिर लेती है. पुलिस को तरस आ गया. उसने ज़्यादा तहक़ीक़ नहीं की. तुम होते तो देखते आज चाल में कैसा तमाशा था. ग़ज़ब की फ़ौज-फ़ाटे थी. बस मज़ा आ गया.

'मज़ा आ गया. अब इसमें मज़े की कौन-सी बात है?'

'अरे दोनों तरफ़ से बहू जगी नारे लगे, एक दूसरे की वह दस्तानें दोहराऊँ कि क्या बताऊँ. शरीफ़ज़ादियों के वह कारनामे सुने कि किताबों में न मिलें. कैसी-कैसी नेकियाँ दरिया में डाल कर बैठी हुई हैं, ऐसा करो. तुम उन सब कारनामों को एक किताब में इकट्ठा करो. हम लोगों के बाज़ार में बहुत बिकेगी. 'तौबतुन-नसूह' पढ़ कर तो दिल बुझ जाता है. उसे पढ़ेंगी तो बलबले जागेंगे.'

दाऊद वज़ीरा के भागने की खबर सुन कर परेशान था. वह अपनी परेशानी दिल में दबाये हुए सुलताना की बातें सुनता रहा. वह चाहता था, सुलताना चुप हो जाये. उसने आखों-आँखों में उसको चुप रहने का इशारा भी किया. लेकिन उसने कहा—

'हाँ हाँ, सच कहती हूँ, बहुत बिकेगी. आहा. क्या क्या डायलाग थे, जब फ़ातमा बाई ने क़ादिर की माँ का झोंटा पकड़ कर कहा—जैसी तू वैसा तेरा बेटा. बेचारी क़ादिर की माँ छुड़ा न सकी. मैंने बड़ी मुश्किल से छुड़ाया. जब क़ादिर की माँ होश में आयी तो उसने फ़ातमा बाई से कहा—तू अपने यार को भूल गयी, क्या? फ़ातमा बाई ने जवाब दिया—तू याद कर अपने यार को. क़ादिर की माँ ने कहा—मैं तो याद कर रही हूँ पर तू काहे को भूलती है?...फ़ातमा बाई बोली—मेरा तो एक यार था भतार था, तेरा तो एक भतार, तीन यार थे.'

क़ादिर की माँ और फ़ातमा बाई की बात सुना कर सुलताना ने दाऊद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ने पूछा—

'सुना ?'

'हाँ सुन लिया !' दाऊद ने धीरे से कहा.

'अच्छा, बताओ, एक का एक भतार एक यार, दूसरी का एक भतार तीन यार तो दोनों में ज्याद नेक कौन थी ?'

दाऊद चुप रहा. सुलताना फिर बोली—

'नहीं समझ में आया ? अच्छा दूसरे सवाल का जवाब दो. एक औरत को दस साल में दो बच्चे हुए तो पाँच औरतों को दस साल में कितने बच्चे होंगे ?'

दाऊद फिर न बोला तो सुलताना ने कहा—

'हत् तेरी की. जवाब नहीं देते. मालूम होता है स्कूल में तुम्हारी अर्थमेटिक बड़ा कमज़ोर थी.'

दाऊद ने सुलताना की बात अनसुनी करते हुए कहा—

'बड़ा सन्नाटा है. किसी ने तुम्हारी बात सुन ली तो क्या कहेगा ?'

'अरे तुम्हें सुनाई नहीं दे रही है, दूसरा क्या सुनेगा. फ़ातमा बाई ऐंड कम्पनी आज बन्द है, वो लोग वज़ीरा को ढूढ़ने गये हुए हैं.'

'अच्छा यह बताओ, लड़ाई खत्म हो गई न ?'

'हाँ खत्म हो समझो. जो होना था वह हो चुका. मगर कैसे मज़े में खत्म हुई है. अफ़सोस तुम न हुए. जो छुड़ाने आया वह पिट गया. फ़ातमा बाई ने किसी को नहीं छोड़ा.'

'तुम किनारे रही न ?'

'अरे वह तूफ़ान था कि किनारा नज़र ही न आता था. मैं तो सोज़-फ़ायर की कोशिश में सबसे आगे थी. सुबा दोदो. चन्द्रा, अमीना भाभी, जुबैदा भाभी सब दूर-दूर से तमाशा देख रही थीं और मुझे भी बुला रही थीं. उन्हें डर था कि फ़ातमा बाई मुझे न कुछ कह बैठे. लेकिन वाह री फ़ातमा बाई. उसने मुझे सनद दे दी.'

'क्या सनद दे दी ?'

'यही कि इस चाल में मुझसे ज्यादा शरीफ़ कोई है ही नहीं. शायद तुम भी नहीं. वरना तुम्हारा नाम न लेती क्या. उसने तुम्हें किसी गिनती में न रखा. मगर एक बात का बहुत अफ़सोस है.'

'किस बात का ?'

'बन्दूक वाले ने अपनी बेटी तमंचा जान को पीट दिया.'

'क्यों ?'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'ज़रा आईने के सामने बैठ गयी थी.'

'बस इतनी-सी बात पर ?'

'हाँ आज बन्दूक वाला डर गया.'

'क्या डर गया ?'

'यही कि उसकी बेटी भी किसी ख़याल में न हो. हर वक्त आईना क्यों देखती रहती है. लेकिन किसी शरीफ़ नाबे ने अपने पूत को नहीं पीटा कि लड़कियों की तरह लो-पौडर लगा कर हीरो बने क्यों फिरते हो.'

दाऊद ने बात बदलते हुए कहा—

'माफ़ करना सुलताना, आज देर हो गयी.'

सुलताना ने गंभीर होते हुए कहा—

'अच्छा ही हुआ कि तुम देर से आये वरना ख़ाहमख़ाह तुम भी परेशान होते.'

'मैं तो वज़ीरा बेचारी की नादानी पर अब भी बहुत परेशान हूँ.' दाऊद ने कहा.

'उसकी नादानी पर परेशान मत हो. वह तो वैसी ही रहेगी जैसी थी. यहाँ की दुनिया छोटी थी, अब बहुत बड़ी दुनिया में पहुँच गया है, बड़े मज़े में रहेगी. क़ादिर अली ख़ैर मनाये.'

दाऊद की भूख मिट चुकी थी, पर सुलताना को रोकने के लिए कहना ही पड़ा—

'बड़ी भूख लगी है.'

(अगले अङ्क में ग्यारहवीं किस्त)

तरीक़ा

—क्या तुममें और तुम्हारी बीवी में कभी मतभेद नहीं होता ?

—होता तो है, लेकिन मैं उसे कभी उस पर ज़ाहिर नहीं करता.

भेंट

—यह एक अच्छा हेयर टॉनिक है डार्लिंग.

—ओह ! तो तुमने बहुत अच्छा काम किया.

—हाँ ज़रूर अच्छा काम किया है. मैं इसे इसलिए लाई हूँ कि आजकल तुम्हारी कोट पर तुम्हारी स्टेनोटाइपिस्ट के काफ़ी बाल चिपके रहते हैं. यह उसे देना, बीवी ने संजीदगी से कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोशनी के धब्बे

सुरेश

अपने कमरे में बैठी नीरु कभी-कभी उत्सुकता से घड़ी की तरफ़ देख लेती है. उसकी अंगुलियाँ बराबर एक निश्चित गति से सलाइयों पर चल रही हैं हर सलाई उतारने के बाद वह बढ़ते हुए स्वेटर को अत्मीयता-भरी-आँखों से देख लेती है. उसने यह बुनाई बड़ी मेहनत से किसी पत्रिका में छपे नमूने से कॉपी की थी, और उसी दिन जा कर यह ऊन खरीद लाई थी. वह भारत की पसन्द जानती है—हल्का आसमानी रंग उसे पसन्द है.

सामने मन्दिर की बुर्जियों पर से धूप सरक कर पीछे चली गई है. शाम का हल्का काला अंधेरा खिड़कियों से हो कर कमरे में घुस आया है. वह स्वेटर एक तरफ़ रख कर अंगुलियाँ चटकाती है तभी घर के आहते में स्कूटर का शोर सुनाई देता है, और घड़ी छ घण्टे बजाती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढ़ कर द्वार खोलती है. स्कूटर स्टैण्ड पर लगाते हुए भारत नीरु की तरफ़ ता है और एक मादक मुसकान का आदान-प्रदान होता है. भारत थका-सा सोफ़े ठ जाता है—

देखो भारत, आज तुम्हारे स्वेटर का एक पर्दा पूरा हो गया है.'

और नीरु उस बुने हुए पर्दे को भारत के वक्ष पर रख देती है—

पने पीछे खड़ी नीरु के दोनों हाथ अपने कन्धों के नीचे सरकाते हुए भारत ी दृष्टि से उसे देखता है—

'इतनी मेहनत क्यों करती हो नीरु, अभी तो सर्दी आने में काफ़ी दिन बाक़ी हैं. धीरे पूरा हो जायेगा.'

नीरु ने अपनी बाँहों का घेरा और कस लिया. उसके होंठ भारत के सिर छू ये—

'मुझे तो जल्दी है. देखना चाहती हूँ,कैसे लगते हो इस स्वेटर में.'

भारत बड़ी देर तक उसे देखता रहा, सोचता रहा, कितना भाग्यशाली है वह जो नीरु जैसी पत्नी मिली है, फिर अचानक जैसे कुछ याद आ गया—

'हाँ नीरु आज खाना मत बनाना—'

'क्यों आज व्रत रखना है क्या.'

'अरे नहीं भाई, आज सिनेमा देखने जा रहे हैं एक अच्छी बंगला फ़िल्म लगी है. ऑफ़िस में दास बाबू बहुत तारीफ़ कर रहे थे. सोचा तुम्हें भी शायद अच्छी लगेगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सो मैंने भी टिकिट मँगवा लिये. इसलिए आज खाना बाहर ही खायेंगे.'

नीरु काफ़ी देर खोई-हुई-सी भारत को देखती रही. उसकी दृष्टि में एक अजीब स्निग्धता थी—

'ऐसे क्या देख रही हो नीरु !'

'कुछ नहीं भारत, अपने नसीब को दुआएँ दे रही हूँ जो तुम जैसा जीवन-साथी पाया मैंने. मैं जानती हूँ, तुम्हें बंगला नही आती पर फिर भी तुम हर बंगला फ़िल्म के टिकिट ले आते हो, सिर्फ़ इसलिए कि बंगला फ़िल्में मुझे अच्छी लगती हैं.'

'उँ हूं, ऐसी बात नहीं. बंगला फ़िल्में मुझे भी अच्छी लगती हैं. उनकी सधी हुई स्क्रिप्ट और सशक्त निर्देशन मेरे मन को छूता है, फिर सबसे बड़ा सन्तोष मुझे यह होता है कि बंगला फ़िल्में तुम्हें अच्छी लगती हैं.....' भारत ने रुक कर फिर कहा, 'नीरु ! तो पति-पत्नी के रिश्ते बड़े सशक्त और आध्यात्मिक होते हैं किन्तु साथ ही बड़े नाजुक भी. जब तक एक दूसरे की भावनाओं का ख़याल न रखा जाये तब तक दोनों ही खुश नहीं रह सकते. ऐसी दशा में पति-पत्नी का सम्बन्ध सिर्फ़ नाम को रह जाता है. अगर दोनों अपनी ही खुशियों में उलझे रहें, दूसरे की खुशी का ख़याल न रखें तो ऊपरी तौर पर जुड़े रहने पर भी पति-पत्नी अन्दर से टूटे रहते हैं.'

कुछ देर बाद दोनों तैयार हो कर घर से निकले और दोनों ही रास्ते भर सोचते रहे कि शादी के बाद के ये तीन साल कैसे बीत गये, तीन दिन की तरह.

■

आज भारत जब घर पहुँचता है तो वह नीरु के चेहरे पर पीड़ा की लकीरें देखता है वह विचलित हो उठता है. घबरा कर पूछता है—

'क्या हुआ है तुम्हें नीरु ?'

और नीरु उसकी इस घबराहट पर बरबस ही मुसकरा उठती है—

'आप इस तरह घबरा क्यों रहे हैं. कुछ नहीं हुआ मुझे. बस हल्का-सा दर्द उठ आया है आज छाती में.'

भारत की घबराहट और गहरा जाती है—

'चलो डाक्टर के पास चलते हैं.'

'कल चले चलेंगे. तुम्हारी छुट्टी भी है कल.'

'नहीं नीरु तुम जल्दी तैयार हो जाओ. तुम नहीं जानतीं, तुम्हारे चेहरे पर पीड़ा को सहन नहीं कर सकता.'

नीरु ने फिर बड़ी स्नेहमयी दृष्टि से भारत को देखा. सोच रही थी, वह कितना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भाग्यशालिनी है. भारत जैसा पति सचमुच भाग्यशालिनी को ही हो सकता है. थोड़ी देर में ही दोनों घर से निकलते हैं और कुछ देर शहर की सड़कों पर घूमता हुआ भारत का स्कूटर एक क्लीनिक के बाहर रुकता है. दरवाजे पर नामपट्ट लगा है—डाक्टर रोहित शर्मा एम.बी. बी. एस (चेस्ट स्पेशलिस्ट)

दोनों अन्दर पहुँचते हैं. सामने ही कुर्सी पर बैठा हुआ एक भव्य और आकर्षक व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होता है.

'हलो! डाक्टर शर्मा आप ही हैं.' भारत आगे बढ़ कर कहता है.

'जी हाँ, कहिये.'

भारत नीरु की तरफ़ आकृष्ट होता है.

'यह मेरी पत्नी हैं नीरु, आज दिन भर इन्हें छाती में दर्द होता रहा है.'

नीरु की विचार-शृंखला टूटती है. वह चौंक कर अपने आस-पास देखती है. सोचती है, अचानक उसे क्या हो गया. वह इस कमरे में घुसते ही संज्ञाशून्य-सी क्यों हो गई. वह इस तरह खो-सी क्यों गई. आखिर डाक्टर में उसे ऐसा क्या लगा कि अचानक उसे देखती ही रह गई. उसने एक बार फिर अपने आस-पास की गतिविधियों पर नजर डाली और एक बार फिर उसकी दृष्टि डाक्टर के चेहरे पर जम गई. उसे लग रहा था कि जैसे डाक्टर का सुन्दर और भावुक चेहरा उसके अन्तर में उतरता चला जा रहा है. तभी रोहित ने कहा—

'आइये नीरु जी, आपको एग्ज़ामिन कर लूँ.'

और स्वयं उठ कर परीक्षा-कक्ष की तरफ़ बढ़ गया. नीरु भी सहमा-सी उसके पीछे चल दी.

'आप वहाँ लेट जाइये.' रोहित ने स्ट्रेचर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा और स्टेथिस्कोप सँभालते हुए फिर बोला—

'क्या इससे पहले भी कभी आपको इस तरह का दर्द हुआ?'

'जी नहीं.' नीरु ने अपने स्वर का भीगापन छुपाते हुये जवाब दिया. रोहित ने स्टेथिस्कोप नीरु की छाती पर रख दिया और जोर से श्वाँस खींचने को कहा.

नीरु ने जब स्टेथिस्कोप के साथ रोहित की अंगुलियों का स्पर्श अपने जिस्म पर महसूस किया तो अनजाने ही उसका शरीर एक अनजानी ठंड से काँप गया. ऐसी अनुभूति उसे पहले कभी नहीं हुई थी. अपने दाँत भींचते हुए उसने स्वयं को संयत करने का प्रयास किया.

कुछ देर बाद दोनों परीक्षा-कक्ष से बाहर निकले. बाहर भारत बड़ी उत्सुकता और बेचैनी से परीक्षा-कक्ष के दरवाजे की तरफ़ देख रहा था—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे आप देश-दर्शन पर निकले हों,
मेले मे हों, समारोह मे हों,
पिकनिक मे हों, जहाँ भी हों,
आपका मनोरंजन करने के लिए

आपका सर्वप्रिय

गंगा
और
तूफान जर्दा

सभी जगह
सुलभ है.

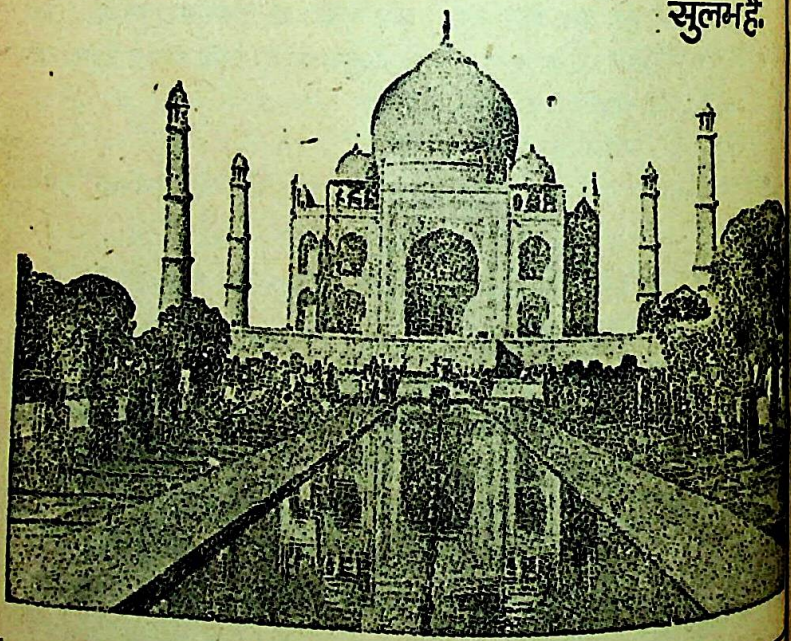

सलगूराम काशीनाथ परफ्यूमर्स -वाराणसी. फोन. ६३०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कहिये डाक्टर साहब, कोई शोचनीय बात तो नहीं ?'

'नहीं ऐसी कोई सीरियस बात नहीं. बस थोड़ी कमज़ोरी है. मैं कुछ टॉनिक लिखे देता हूँ. आप ले लीजिये. सब ठीक हो जायेगा.'

'थैंक्यू डाक्टर, मैं तो बड़ा परेशान हो गया था.'

कुछ देर बाद दोनों क्लीनिक से बाहर निकलते हैं. बाहर आ कर नीरु ने महसूस किया कि उसके दिमाग़ पर एक अजीब-सा बोझ बढ़ गया है. वह अपने आपमें खोई-हुई-सी स्कूटर पर बैठ गई. वह अपनी उधेड़बुन में थी.

डाक्टर रोहित उसके मन के आसमान पर किसी घने बादल की तरह छा गया था. जब वह काफ़ी देर कुछ नहीं बोली तो भारत ने कहा—

'क्या सोच रही हो नीरु, सुना नहीं डाक्टर ने क्या कहा ! कुछ नहीं हुआ तुम्हें.-तुम्हीं बस थोड़ी कमज़ोरी है—'

और भारत के सोचने की दिशा देख कर नीरु का मन भींग गया. उसने लम्बा श्वास खींचा.

'हाँ भारत तुम ठीक कहते हो.'

■

कुछ दिनों से नीरु अपनी स्थिति में एक अजीब-सा परिवर्तन अनुभव कर रही थी. उसे अपनी स्थिति से बड़ा अलगाव-सा हो गया था अपने ही घर की हर वस्तु जाने क्यों उसे पराई-सी लगने लगी थी. पिछले तीन-चार दिन उसने बड़ी उथल-पुथल में व्यतीत किये थे. इन दिनों वह स्वयं अपने-आपसे लड़ती रही थी. रह-रह कर जाने क्यों डाक्टर रोहित का चेहरा उसे अपने विचारों पर छाता हुआ महसूस हो रहा था और न चाहते हुए भी वह रोहित के बारे में सोचने पर मजबूर हो गई थी. कई बार उसे अपनी कल्पना में अपने शरीर पर रोहित की अंगुलियों का स्पर्श अनुभव हुआ था. अपनी स्थिति से कई बार वह उकता उठी थी. सोचती थी, आखिर रोहित उसके मन में इस तरह क्यूँ झाँकने लगा है. भारत के बारे में सोच कर कई बार वह काँप गई थी. सोचती थी, कितना प्यार करता है भारत उसे, शायद दुनिया में सबसे ज़्यादा फिर रोहित उसके ख़यालों में इस तरह क्यों छाता जा रहा है ? किन्तु अपने किसी प्रश्न का उत्तर उसे नहीं मिला था और वह ऊब कर रह गई थी. उसे ऐसा लगता था जैसे स्वयं पर से उसका शासन उठ गया है और कोई अदृश्य शक्ति उसे शासित कर रही है.

■

दूसरे दिन भारत के आफ़िस चले जाने के बाद नीरु अनमनी-सी पलंग पर लेट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गई. उसके मन में एक अजीब अन्तरद्वन्द्व मचा हुआ था. उसकी विचलित मनःस्थिति उसे उद्विग्न किये डाल रही थी. पर फिर भी जाने क्यों उसके मन का कोई एक कोना उसे डाक्टर रोहित के क्लीनिक की तरफ़ धकेल रहा था. वह काफ़ी देर अपने अन्तर्द्वन्द्व से लड़ती रही. उसके चेहरे पर खीज और उकताहट की मिली-जुली रेखाएँ स्पष्ट हो गईं.

अपने मन की इस उथल-पुथल से जूझती हुई वह उठी, हल्का-सा मेकअप किया और घर से निकल पड़ी. अनजाने ही उसके क़दम रोहित के क्लीनिक की तरफ़ बढ़ने लगे. थोड़ी ही देर में वह रोहित के क्लीनिक पहुँच गई. क्लीनिक में कोई पेशेन्ट नहीं था. तभी उसने सामने बोर्ड पर क्लीनिक खुलने और बन्द होने का समय देखा—सुबह आठ से बारह, शाम पाँच से नौ. सामने कुर्सी पर बैठा रोहित कोई एक्स-रे रिपोर्ट देख रहा था. दरवाज़े की तरफ़ उसका ध्यान बिलकुल नहीं था. नीरु दरवाज़े पर खोई-हुई-सी खड़ी सारे कमरे का माहौल देख रही थी, तभी रोहित ने दरवाज़े की तरफ़ देखा.

'अरे आप ! कहिये कैसी हैं ?'

नीरु रोहित के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई. अपने आप में अजीब उलझी हुई-सी वह यन्त्रचालित-सी यहाँ चली आई थी, जैसे किसी अज्ञातशक्ति ने उसे यहाँ धकेल दिया हो. कुछ देर वह चुप बैठी कनखियों से रोहित को देखती रही फिर बोली—

'आप कैसे हैं डाक्टर ?'

'भाई वाह ! आज पहली बार देखा कि कोई मरीज़ डाक्टर से उसका हाल पूछ रहा है.' रोहित ने हँसते हुए कहा.

नीरु के होंठों पर भी हल्की-सी मुसकराहट फैल गई.

'उस दिन के बाद दर्द तो नहीं हुआ आपको ?'

'जी नहीं, वैसे मैं एकदम ठीक हूँ. हाँ मानसिक रूप से कुछ विचलित अवश्य हो गई हूँ.'

'इसमें कोई डर की बात नहीं. कमज़ोरी में अकसर ऐसा हो जाता है. मैं टॉनिक लिखे देता हूँ, आप स्वस्थ हो जायेंगी.'

'डाक्टर ! शायद मुझे टॉनिक की ज़रूरत नहीं.' नीरु ने टूटी हुई दृष्टि रोहित की तरफ़ उठा दी. उस दृष्टि में क्या था—पीड़ा, घुटन, उन्माद, उत्सुकता या नशा, उसे मालूम नहीं था. अपने आपमें उसी तरह खोई-हुई-सी वह फिर बोली—

'अगर आप बुरा न माने तो एक बात कहूँ.'

'कहिये, डाक्टर कभी किसी मरीज़ की बात का बुरा नहीं मानते.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'अगर यह बात एक मरीज़ डाक्टर से नहीं कह रही बल्कि नीरु रोहित से कह रही है.' यह बात इतनी अनौपचारिकता से उसने कैसे कह दी, नीरु को स्वयं मालूम नहीं हुआ.

रोहित ने एक खाली दृष्टि नीरु की तरफ़ उठा दी.

'कहिये.'

'जी मैं कह रही थी, अगर आपको असुविधा न हो तो मैं कभी-कभी आपसे मिलना चाहती हूँ.'

रोहित शायद इस तरह के प्रश्न के लिए तैयार नहीं था. वह अचकचा-सा गया—

'नहीं, वैसे मुझे कोई असुविधा नहीं, मगर क्लीनिक आवर्स में शायद मैं आपको ठीक से अटेण्ट न कर पाऊँ.'

'मैं क्लीनिक आवर्स के बाद ही आऊँगी.'

'फिर मुझे कोई एतराज नहीं. यही मेरा घर है, यही क्लीनिक. ये साथ वाले दो कमरे मेरे रहने के हैं और इस कमरे के सामने ही किचन है.'

■

उस दिन के बाद पहले कभी-कभी और फिर रोज़, भारत के ऑफ़िस चले जाने के बाद नीरु तैयार होती और एक उत्सुकता उसे रोहित के क्लीनिक की तरफ़ खींचने लगती. उसके क़दम यन्त्रचालित-से रोहित के क्लीनिक की तरफ़ बढ़ने लगते. उसका मन एक अन्तरद्वन्द्व से जूझने लगता. पल भर को उसके पैरों की गति शिथिल होती किन्तु दूसरे ही क्षण कोई अनजानी शक्ति उसे आगे धकेल देती.

और फिर धीरे-धीरे जिस तरह हर नये सम्बन्ध की औपचारिकताएं समाप्त हो जाती हैं, नीरु और रोहित के सम्बन्ध भी अनौपचारिक हो गये. दोनों घण्टों बैठे बातें करते रहते. इस बीच कई बार नीरु सोचती—आखिर रोहित उसकी कमज़ोरी क्यों बन गया है? मगर यह प्रश्न हर बार उसकी कल्पना में सिर्फ़ प्रश्नचिह्न ही बन कर रह जाता.

नीरु के जाने के बाद रोहित भी सामान्य नहीं रह पाता. वह भी किसी अनजाने खोज में डूबा रहता और ऐसे में बहुधा उसके अधरों पर एक अजीब मुसकराहट आ जाती जिसमें छल-कपट नहीं होता किन्तु स्वयं घर पर चल कर आई हुई खुशी को पा लेने का उल्लास अवश्य होता.

इस बात को शायद कुछ लोग न माने किन्तु यह एक सच्चाई है कि जब इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तरह के सम्बन्धों की औपचारिकताएं समाप्त हो जाती हैं तो सैक्स स्वतः ही [illegible] में छुपे तेल की तरह बाहर फूट पड़ता है क्योंकि सैक्स एक प्राकृतिक अन्तर प्रतिक्रि[illegible] हम चाहे स्वयं को आदर्शवादी कहलाने के लिए इस सच्चाई पर झूठ का मु[illegible] चिपकाये रखें, इसके विरुद्ध भाषण झाड़ते रहें, मगर इस सच्चाई के अस्तित्व को [illegible] नहीं सकते.

नीरु और रोहित भी स्वयं को [illegible] सच्चाई से नहीं बचा सके और एक [illegible] उन्होंने वो मर्यादा तोड़ दी जिसे [illegible] समाज में सम्बन्धों की पवित्र सीमा [illegible] जाती है.

नीरु हर रोज़ अपने दिमाग़ पर [illegible] बोझ अनुभव करती. एक नया प्र[illegible] उसके दिमाग़ में पैदा होता किन्तु [illegible] प्रश्न सदा प्रश्न ही रह जाता और [illegible] रोहित से मिले बग़ैर न रह पाती. [illegible] नियमित रूप से रोहित के घर जा[illegible] जितनी देर वहाँ रहती, सब कुछ भु[illegible] रहती. मगर जैसे ही घर लौटती, घर की चाहरदीवारी उससे हजारों सवाल पूछती. उसका अन्तरद्वन्द्व उसे कचोटता.

कुछ दिनों से वह काफ़ी उखड़ी-उखड़ी-सी रहने लगी थी. एक दो बार भारत ने उसे टोका भी था कि वह कुछ विचलित-सी रहने लगी है. किन्तु [illegible] टाल गई थी. भारत के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं था. वह उसके प्रति उसी तरह आत्मीय था किन्तु उसे स्वयं को कई बार लगा था कि वह भारत के प्रति कुछ लापरवाह हो गई है. उसे स्वयं अपने ऊपर गुस्सा आने लगता. एक दिन तो उसे अचानक एक धक्का-सा लगा. अपनी स्थिति पर रुँआसी हो आई वह, जब भारत ने कहा—

क्षण भर

■

यह रक्तरंजिता
क्षितिज के उस पार
पर्वतों की ओट में
सूर्य की निस्तेज़ता
की कहानी है—
जैसे
झूठ और कपट की विजय
सत्य की पराजय.
किन्तु
क्या यह चिरस्थाई है—
नहीं,
क्षणभंगुर है यह
उसी तरह
जैसे—
ज्वार-भाटे का उपरान्त
शान्ति का साम्राज्य
सृष्टि की सर्जना
सर्जना का अन्त
प्रेम से विरक्ति
और प्रेमी की आसक्ति.

—राजेन्द्र चौधरी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'नीरु, अब सर्दी काफ़ी हो गई है. अगर तुम मेरा स्वेटर पूरा न कर पाओ तो चलो एक बना-बनाया स्वेटर खरीद लाते हैं.' तब उसे लगा था कि जैसे वह किसी भाररहित वस्तु की भाँति शून्य में लटक रही है. अपने आपसे उसे चिढ़-सी हुई थी. सब कुछ भूल गई वह. कितनी उत्सुकता से वह ऊन खरीद कर लाई थी. अपने आपको काफ़ी संयत करते हुए वह बोली थी—

'नहीं भारत, तीन दिन में तुम्हारा स्वेटर पूरा हो जायेगा.' और फिर चौथे दिन जब वह रोहित के क्लीनिक पहुँची तो देखा रोहित बड़ा विचलित था. उसे देख कर कुर्सी से उठ कर खड़ा हो गया था. कुछ देर बाद संयत हो कर बोला था—

'नीरु मैं जानता हूँ, व्यवहारिक रूप में तुम पर मेरा कोई हक़ नहीं पर फिर भी तुम मेरी बहुत बड़ी कमज़ोरी बन गई हो. इन तीन दिनों में मैं पागल-सा हो गया—'

नीरु काफ़ी देर खामोश बैठी रही फिर खोई-हुई-सी बोली. लगता था उसकी आवाज कहीं दूर अन्तरिक्ष से आ रही है—

'रोहित जानते हो' मेरे पति मुझे बहुत चाहते हैं. वे एक समर्थ और सम्पूर्ण पुरुष हैं. मुझे कभी-कभी अपनी स्थिति एक चरित्रहीन स्त्री-सी प्रतीत होती है, मैं तुमसे झूठ नहीं कहती. कई बार मैं स्वयं को तुम्हारे पास आने से रोकती हूं, मगर मुझे लगता है जैसे कोई अनजानी शक्ति मेरे निर्णय को तोड़ देती है. तुम्हें जब पहली बार देखा था तभी से मुझे न जाने कैसा लगने लगा था. मुझे लगा था जैसे मेरे अन्तर में दो नीरु हैं और उनमें से एक मेरे प्रभाव में नहीं है. वह हवा की तरह, एक पहाड़ी नदी की तरह आज़ाद है और उसे मैंने छेड़ना मुनासिब न समझा, उसे आज़ाद छोड़ दिया. अब यह गलत है या सही मैं नहीं जानती. इसका अन्दाजा भी मुझे नहीं है.'

■

सब कुछ बड़ा समान्य-सा हो कर चलता रहा. नीरु का अन्तरद्वन्द्व भारत की स्थिरता और समय की गति. एक दिन नीरु जब घर पहुँची तो कुछ देर हो गई थी. भारत ऑफ़िस से आ चुका था—

'अरे नीरु! आज काफ़ी देर कर दी कहाँ रह गई थी?'

और न चाहते हुए भी नीरु के मुंह से निकल गया—

'जरा डा. शर्मा के क्लीनिक चली गई थी. आज दिन में कुछ तबीयत ठीक नहीं लगी मुझे.'

'अरे, मैं तो आज सिनेमा के टिकिट ले आया था. बंगला फ़िल्म लगी है ना.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीरु को लगा जैसे किसी ने उसे आसमान से नीचे धकेल दिया हो. सोच रही थी कि वह भारत के साथ क्या कर रही है. वह कुछ न कह सकी. उसे सामान्य देख कर भारत उसके क़रीब आया और उसे अपनी बाहों में भर लिया—

'अच्छा छोड़ो, नहीं जाते अगर तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है तो.'

तभी उसकी नज़र नीरु की गर्दन के नीचे कन्धे पर पड़ीं—एक गोल दायरे में जमा हुआ खून और अगले दो दांतों के हल्के निशान. भारत को पल भर के लिए अपनी आँखों के आगे अंधेरा-सा महसूस हुआ पर तुरन्त ही अपने आप को उसने संयत कर लिया, और न चाहते हुए भी पूछ बैठा—

'ये निशान कैसा है नीरु, कहीं चोट तो नहीं आई...?'

और नीरु को लगा जैसे किसी ने बीच चौराहे पर उसे निरवस्त्र कर दिया हो. आज उन्माद में रोहित ने उसके कन्धे पर काट लिया था. वह कुछ न बोल सकी तुरन्त स्नानगृह की तरफ़ दौड़ गई और सामने लगे आईने को देख कर दोनों हथेलियों से अपना मुंह ढक लिया.

■

भारत एकदम सामान्य था. उसकी स्थिति में कोई अन्तर नहीं आया था. हाँ नीरु के कन्धे पर जमा हुआ खून का गोल निशान कहीं उसके मस्तिष्क की गहराई में अंकित हो गया था. नीरु हर समय घुटी-घुटी-सी रहने लगी थी. वह हर समय भारत को पढ़ने का प्रयत्न करती कि कहीं वह कुछ सोच तो नहीं रहा.

दूसरे दिन भारत आफ़िस से लौटा उसका व्यवहार बिलकुल सामान्य था. हाँ उसके साथ आफ़िस की कुछ फाइलें थीं—

'नीरु, कल मुझे दौरे पर जाना है, तीन-चार दिन में लौट आऊंगा....'

और अगले दिन वह चला गया. नीरु सोच रही थी कि भारत के चले जाने के बाद क्या वह अपने आपको अधिक स्वतन्त्र महसूस कर रही है. किन्तु उसकी अपनी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं लगा था. उसके अन्तरद्वन्द्व का धुआँ ठीक पहले की तरह अपनी मोटी-मोटी परतों को उसके मन की दीवारों पर बिखेरता हुए था.

दो दिन बड़े सामान्य हो कर गुज़र गये. अब नीरु सुबह ही घर से निकल जाती और रात नौ-दस बजे लौटती.

आज इतवार था—रोहित के क्लीनिक के छुट्टी का दिन. शाम का अंधेरा घुल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गहरा गया था. आसपास के घरों में रोशनी हो गई. रोहित ने कमरे की बत्ती जलाई और क्लीनिक के दरवाज़े पर पड़ा मोटा परदा सरका दिया. स्वयं अन्दर कमरे में चला गया. अन्दर नीरु पलंग पर लेटी कोई पत्रिका देख रही थी. रोहित ने उसके पास लेटते हुए उसके हाथ से पत्रिका ले ली और कुछ देर दोनों कहीं किसी दूसरे लोक में खोये रहे. तभी क्लीनिक के बाहर दरवाज़े का पर्दा सरका. रोहित और नीरु छिटक कर अलग हो गये और जब दरवाज़े पर नज़र पड़ी तो लगा जैसे रोहित स्वतः ही अपना नाम भूल गया हो और नीरु जैसे बर्फ़ की शिला बन गई हो. दरवाज़े पर भारत खड़ा था किन्तु उसका चेहरा प्रतिक्रियारहित था वह इसी तरह बोला—

'कुछ जल्दी लौट आया. घर पहुँचा तो तुम नहीं थीं. सोचा, कहीं तबीयत तो खराब नहीं, सो चला आया. मैं मिस्टर दास के घर होता हुआ पहुँचूंगा. तुम सीधी घर आ जाना.'

और भारत बाहर निकल आया. अब उसे अपनी स्थिति बड़ा हल्की और अनुभव लग रही थी. उसे लग रहा था जैसे उसके मस्तिष्क में जमा हुआ खून का वह थक्का पिघल कर बह गया है, किन्तु साथ ही उसे ऐसा भी लग रहा था जैसे कोई तेज़ पदार्थ उसके खून के दौरे में शामिल हो गया है जो उसकी नसों की दीवारों से टकरा कर उन्हें तराश डालना चाहता है. उसके चेहरे पर कठोर लकीरें खिंच गईं और दोनों जबड़े सख्ती से आपस में जुड़ गये. उसके होठों पर एक विषैली मुसकराहट किनारे तक सरक कर टूट गई.

भारत के बाहर निकल जाने के बाद नीरु काफ़ी देर स्थिर-सी पलंग पर बैठी रही, संज्ञाशून्य-सी अपने आस-पास की हर चीज़ को देखती रही. उसे समस्त अन्तरिक्ष अपनी आंखों में घूमता हुआ लग रहा था. रोहित हतप्रभ-सा खड़ा था. उसे यह घटना ऐसी लग रही थी, जैसे उसे किसी ने नींद से जगा कर अचानक कोई भयानक वस्तु उसके सामने रख दी हो.

नीरु काफ़ी देर तक चुप्पी साधे रही फिर अचानक बोली—

'अच्छा रोहित आज मैं जा रही हूँ.'

उसके लहजे में एक अजीब-सी स्थिरता थी. वह बाहर निकल आई. उसके कांपते हुए पांव उसे घर की तरफ घसीटने लगे. दो बातें उसके मस्तिष्क में थीं कि या तो भारत उसे मार डालेगा और या फिर उससे तलाक़ ले लेगा. वह रास्ते भर अपने आपको किसी अनिश्चित घटना के लिए तैयार करती रही.

घर पहुँच कर देखा, दरवाज़ा खुला हुआ था. सामने ही भारत बैठा था. जली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

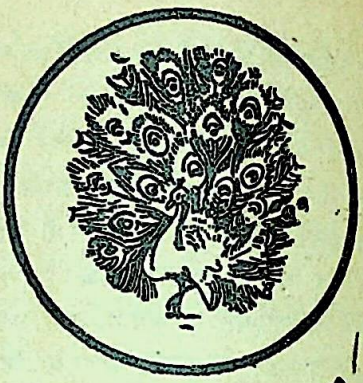

PEACOCK BRAND

आपके
काग़ज़ और बोर्ड
की हर
ज़रूरत की
पूर्ति के लिए
हम हमेशा
तत्पर हैं.

महेश ट्रेडिंग कम्पनी

मैपलिथो, उड फ्री प्रिंटिंग पेपर, सभी प्रकार के पोस्टर पेपर
क्राफ्ट एवं बोर्ड के स्टाकिस्ट.
चुलानाल वाराणसी—फोन : ६४८१६
वितरक—

- ओरिएंट पेपर मिल्स लि० ब्रजराज नगर [उड़ीसा]
- दी सिरपुर पेपर मिल्स लि० सिरपुर [आंध्र प्रदेश]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हुई सिगरेट उसके हाथ में थी. उसे देखते ही वह उठ कर खड़ा हो गया—

'कितनी देर कर दी नीरु. ये देखो तुम्हारे लिए दो साड़ियाँ लाया था.' उसके लहजे में पुरानी आत्मीयता थी.

नीरु किंकर्त्तव्यविमूढ़-सी इधर-उधर देख रही थी. वह तो रास्ते भर भारत के नव रूप की कल्पना करती आई थी. भारत को इस तरह सामान्य देख कर वह चौंकी-सी रह गई थी. फिर उसने सोचा, शायद कल कुछ कहेगा. और इसी तरह काफ़ी दिन बीत गये, किन्तु भारत के व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ. नीरु हर एक दिन बीत जाने के बाद अगले दिन किसी अनिश्चित घटना के घटने की प्रतीक्षा करने लगी, किन्तु कुछ नहीं हुआ. सब कुछ सामान्य हो कर चलता रहा. भारत उससे उसी पुरानी आत्मियता से पेश आता. उसका व्यवहार पहले की तरह ही शान्त और सभ्य था किन्तु नीरु दबी जा रही था, तिल-तिल कर के कोई अनजानी वस्तु उसे दंशित कर रही थी.

भारत वैसे नीरु के समक्ष बहुत मृदु और शान्त था किन्तु एक ज्वालामुखी सी गर्मी उसके भीतर बह रही थी. वह बहुत दिनों से अनुभव कर रहा था कि जब भी वह किसी सुन्दर और कोमल वस्तु को देखता है तो एक तेज़ ज़हर उसकी श्वांस से बाहर फूटने लगता है. कई दिन से वह रोज़ सुबह उठ कर लॉन में आता है. तो गुलाब की टहनी पर खिले हुए फूल को तोड़ लेता है. फिर एक-एक कर के उसकी सारी पंखड़ियाँ उधेड़ लेता है फिर दोनों हथेलियों के बीच रख कर उन पंखड़ियों को मसल डालता है.एक दिन ऑफ़िस में सब लोग आश्चर्य-चकित रह गये जब उसने सामने दीवार पर लगे कैलेण्डर को उखाड़ कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये जिसमें चित्रित एम नवयोवना खरगोश के बच्चों को घास खिला रही थी.

इसी तरह क़रीब छः महीने गुज़र गये. इस बीच नीरु बहुत अस्वस्थ हो गई. कहता था अर्से से बीमार है. उसकी घुटन उसे तिल-तिल कर के चबाये जा रही थी, एक बोझ उसकी श्वांसों पर भारी होने लगा. इस बीच कई बार वह भारत से कहती थी—

'तुम्हें कुछ नहीं कहना मुझसे भारत.'

और भारत अपनी सधी हुई शान्त भाषा में कहता—

'पागल हो नीरु तुम,भला मैं तुमसे क्या कहूँगा.तुम खुश रहो बस, पर देख रहा हूँ. कुछ दिनों से तुम घुलती जा रही हो.'

भारत की इस स्थिरता से उसके मन में रखे हुए पत्थरों का भार और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बढ़ जाता.

■

एक दिन जब भारत ऑफ़िस से लौटा तो नीरु पर खाँसी का दौरा पड़ा हुआ था. वह लड़खड़ाती हुई स्नानगृह से बाहर निकल रही थी. भारत ने आगे बढ़ कर उसे अपनी बाहों में संभाल लिया. तभी नीरु को फिर तेज़ खाँसी उठी और वह रक्त वमन करती हुई अचेत हो गई. पल भर के लिए भारत विचलित हो गया. उसी दिन नीरु को उसने अस्पताल में भर्ती करा दिया. डाक्टर ने क्षय बताया था, और साथ ही आश्वासन भी दिया था कि घबराने की कोई बात नहीं. क्षय तो आजकल साधारण बीमारी रह गई है.

भारत रोज़ सुबह-शाम फल और गुलदस्ते ले कर अस्पताल पहुँच जाता था. किन्तु नीरु बुझती चली जा रही थी. भारत का यह सरल व्यवहार एक कुहासे की तरह उसके चेहरे पर पुतता चला जा रहा था. उसकी आँखें बुझती जा रही थीं.

एक दिन डा. रस्तोगी ने उद्विग्न हो कर कहा था—

'मिस्टर भारत, आश्चर्य की बात है कि आपकी मिसेज स्वस्थ नहीं हो रही हैं, वरना जो चिकित्सा दी जा रही है उससे उनके स्वास्थ में निश्चित ही सुधार होना चाहिये.'

भारत चुपचाप सुनता रहा. उसकी आँखें सिकुड़ कर छोटी हो गईं और माथे की सलवटें गहरा गईं. वह उठ कर नीरु के पास चला आया. उस दिन भारत ने कुछ ग़ौर से नीरु का चेहरा देखा जो एकदम सफ़ेद पड़ चुका था. आंखों के नीचे का दायरा कलछौंह पड़ गया था. भारत उसके सिरहाने बैठ गया था और उसके बाल सहलाने लगा. नीरु की आँखों में नमी सरकने लगी. रुँधे हुए गले से वह बोली—

'कुछ नहीं कहोगे भारत....?'

और आगे के शब्द उसके गले में अटक कर रह गये.

कुछ देर के लिए भारत विचलित हो उठा. मगर फिर भी कुछ कह नहीं पाया—

'तुम ठीक हो जाओ नीरु बस और कुछ नहीं कहना मुझे.'

नीरु ने अपनी पलकों से आँखें ढक लीं जैसे हमेशा के लिए उसने अपनी आँखों में सब कुछ बन्द कर लिया हो.

और दूसरे दिन जब भारत अस्पताल पहुँचा तो नीरु जा चुकी थी. उसे सिर तक एक सफ़ेद चादर से ढक दिया गया था.

कुछ देर के लिए भारत हतप्रत-सा देखता रह गया, जैसे इस घटना की उसे ख़बर न रही हो.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तभी नर्स ने एक काग़ज़ का टुकड़ा भारत को दिया—

'मिसेज भारत ने काफी हालत बिगड़ने के बाद यह दिया था आपके लिए. और सुबह पांच बजे वो नहीं रहीं—'

भारत ने वह काग़ज़ का टुकड़ा नर्स के हाथ से ले लिया और बहुत देर तक संज्ञाशून्य-सा खड़ा उस कमरे के वातावरण को देखता रहा. पंखा अपनी निश्चित गति से घूम रहा था और एक निश्चित चकऽऽऽ चकऽऽ की ध्वनि वातावरण को अजीब रहस्यमय बना रही थी. भारत ने एक बार नीरु के निष्क्रिय और ठंडे शरीर की तरफ़ देखा और काग़ज़ का टुकड़ा खोला. वह एक पत्र था उसी के नाम—

मेरे अपने भारत,

मैं जानती हूँ तुम कभी कुछ नहीं कहोगे, और तुम्हारा कुछ न कहना मेरे लिए कितना बड़ा बोझ है, इसका शायद तुम्हें अन्दाज़ा नहीं. यह बोझ हर रोज़ मेरी श्वांसों पर ज्यादा होने लगा है. वैसे मैं जानती हूँ, इस बोझ से अछूते तुम भी नहीं हो, मगर जिस ठंडे लोहे के तुम बने हो शायद वो कभी नहीं पिघलेगा, तुम यूँ ही चुप रहोगे.

बस एक ही अफसोस रहा, तुमने पश्चाताप का मौक़ा मुझे नहीं दिया. खैर ग़लती मेरी थी जिसकी उपयुक्त सज़ा मुझे मिल रही है. हो सके तो क्षमा कर देना...'

तुम्हारी,

नीरु

भारत ने खत समेट कर जेब में रख लिया. आगे बढ़ कर उसने नीरु के चेहरे से चादर उलट दी. कुछ पल के लिए उसका मन संवेदना से भर गया. नीरु के साथ तीन वर्ष का सुखद जीवन एक परछाईं की तरह उसकी आँखों में तिर गया. मन में विषाद लिये वह डा. रस्तोगी के कक्ष की तरफ़ बढ़ गया.

'हमें खेद है मिस्टर भारत, हम आपकी पत्नी को बचा नहीं सके.' डा. रस्तोगी ने सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कहा.

और एक व्यथित मुसकराहट ने भारत के होंठों को घेर लिया.

'ये लिजिये मिसेज़ भारत का डेथ सर्टिफिकेट—'

सर्टिफिकेट ले कर भारत डा. के कक्ष से बाहर निकल आया. उसके क़दम एक अजीब सुस्ती से उठ रहे थे. विषाद उसके चेहरे पर गहरा गया था. उसके पीछे लम्बा और सूना कारीडोर था और सामने खामोश और विशाल अन्तरिक्ष.....■

—७८ सी। २६ लालपत नगर
नई बस्ती, रामगंज अजमेर (राजस्थान)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उम्र

●

सविता बैनर्जी

ट्राम में आज अधिक भीड़ नहीं थी हालांकि मैं खड़ी ही थी. अगले स्टॉप पर दो सीटें खाली हो गईं और मैं लपक कर सीट पर अच्छी तरह से बैठ गई. इतमीनान से थोड़ी ही देर बैठ पाई थी कि एक महिला ने आ कर मेरे बगल वाली सीट ले ली और मैं थोड़ा सिमट कर बैठ गई. उसके कपड़ों से भीनी-भीनी खुशबू आ रही थी. मैं अब तक बाहर की तरफ़ देख रही थी. खुशबू से प्रभावित हो कर मैं उसकी तरफ़ देखने लगी. क्षण भर बाद मैंने ग़ौर किया कि सिर्फ़ मैं ही नहीं, सामने खड़े हुए सभी लोग उसकी ओर देख रहे थे. कभी कनखियों से तो कभी सीधे ही तौर से. अभी थोड़ी ही देर पहले मुझे लगा था कि ये सब लोग मुझे देख रहे थे, इसलिए मैं बाहर की तरफ़ देखने लगी थी. ट्राम में और भी महिलाएं थीं लेकिन उनकी ओर किसी का ध्यान शायद इसलिए नहीं था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

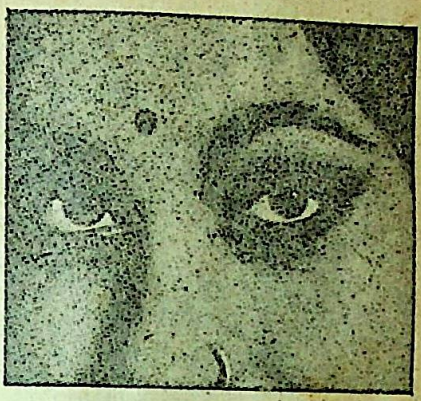

कि उनमें अधिकतर वृद्धायें थीं जो शायद किसी मन्दिर या गंगा-स्नान से लौट रही थीं, उन्हें देख कर कुछ ऐसा ही लग रहा था....

मुझे लगा मेरे पास वाली महिला इस बात से बेखबर नहीं थी कि लोग लगातार उसे ही देख रहे हैं. हर पल उसके हाथ कभी साड़ी ठीक करने में, कभी पर्स सम्भालने में और कभी हवा से उड़ते बालों को सवाँरने में व्यस्त थे. मैंने अपनी निगाह उस पर से हटा ली लेकिन और लोगों का उसकी तरफ़ बार-बार देखना मुझे अच्छा नहीं लग रहा था. मैंने बहुत बार चाहा कम-से-कम मैं तो उसकी तरफ़ नहीं ही देखूँ...क्या है उसमें ऐसा ! लेकिन फिर भी आँखें उसकी तरफ़ चली जा रही थीं.... उस महिला ने मेरी ओर एक बार देखा और फिर दूसरी ओर मुंह कर लिया जहाँ वे बच्चे अपनी नानी या दादी के पास बैठे थे. मुझे उसकी इस हरकत से लगा, मैं अचानक बदसूरत हो गई हूँ. मैं अचानक बेचैन हो उठी और अपनी साड़ी की प्लीट ठीक करने लगी, जैसे वह अच्छी तरह आज पहनी ही नहीं गई हो. अपने जूड़े को ठीक किया, लगा वह भी ठीक से बना नहीं था. उसी समय अगले स्टॉप पर भीड़ का एक रेला आया, जिसमें सब मर्द ही मर्द थे...मेरे पति जो मुझसे काफ़ी दूर पर मेल बोट के पास खड़े थे, भीड़ में दबे जा रहे थे और अब मुझे देख नहीं पा रहे थे. मुझे कुछ राहत-सी हुई लेकिन दूसरे ही क्षण लगा, क्या वे भी अब तक इसी महिला को देख रहे थे ? जरूर देख रहे होंगे क्योंकि मैं तो उसी के पास बैठी हूं और मुझे देखने के बहाने....

साड़ी ठीक करते वक्त मैंने पाया, मेरी साड़ी उससे ज्यादा कीमती और सुन्दर थी. मुझे अच्छा लगा. मैं मन-ही-मन अपनी पसन्द पर खुश हो उठी. मैं अपने आप में मगन थी. मैंने उसकी ओर देखा भी नहीं. इस बीच लोगों की निगाहें कहाँ थीं, किस पर थीं, इसका भी मुझे कुछ पता नहीं था. लेकिन मेरा मन हुआ कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

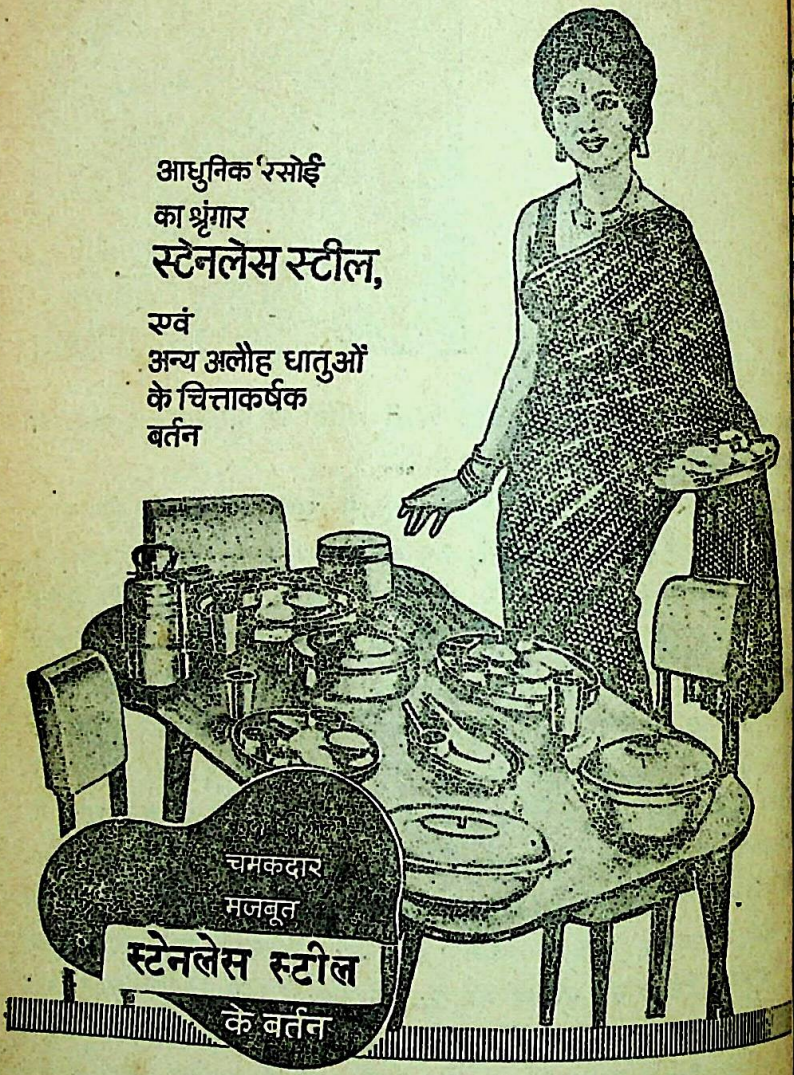

स्टेनलेस स्टील पैराडाइज
डी.११/२४ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी
फोन. पी.पी. ६३६५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...क्या अब भी लोग उसी को देख रहे हैं—विशेष-कर सामने हुए लोग! मेरा मन एकाएक उदास हो गया, जब मैंने पाया कि वे लोग बाहर देखने बहाने बार-बार कनखियों से उस महिला को देख रहे थे. मेरी निगाहें भी उसकी ओर उठ गईं. मुझे अपनी ओर देखती हुई जान कर वह पुनः अपनी साड़ी और बालों ठीक करने में तत्पर हो गई, या शायद मुझे ही ऐसा लग रहा था. लेकिन तभी मैंने देखा एक पुरुष यात्री जो कि कुछ फ़ासले पर था, उसके शैम्पू किए बालों को जो कि उसके गालों और कंधों को छू-छू कर लहरा रहे थे, ग़ौर से देख रहा था. मेरे हाथ अनायास अपने बालों पर पहुँच गए. मुझे लगा मेरे बालों में से कई सिर बाल झांक रहे हैं, हाथों की शिराएँ उभर आयी हैं और पेट और कमर में फूल लटक आये हैं. मैं जैसे अचानक एक बेडोल औरत हो गई हूँ. तभी किसी आवाज़ से मैं चौंकी. उसके पास बैठी बुढ़िया ने उस महिला से पूछा है, क्या बजा है और उसने घड़ी में देख कर बताया कि आठ बजे हैं—लगा जैसे सुरीली घंटियाँ बजी हों. मैंने पाया, मेरे गले में खराश आ गई है. यह भी महसूस होने लगा कि मैं कलाई में घड़ी तक नहीं पहन पाई.

ट्रेन जैसे सरक ही नहीं रही थी. मुझे कुछ बेचैनी-सी होने लगी थी. किसी तरह अगले स्टॉपेज पर उतर कर मैंने अपने पति को एक बार घूर कर देखा, वे निर्लिप्त से दिखाई दिए. उनसे बिना कुछ बोले उदास मन से घर लौटी. आते ही सोफ़े पर पसर गई. पति ने कपड़े बदलने के लिए कहा, पर मैंने कोई जवाब नहीं दिया, और पास-ही रक्खा ऊन और सलाइयाँ उठा कर बेमन से सलाई में फन्दे डालने लगी. सलाई में फंदे चढ़ाती हुई मैंने पति से पूछा, 'तुमने मेरे पास बैठी हुई महिला को देखा था ?'

'नहीं, क्यों ?

'सब उसे देख रहे थे और तुमने नहीं देखा ?'

'कह तो रहा हूँ कि नहीं देखा, क्यों क्या बात थी ?'

'यूं ही पूछ रही थी.'

'फिर भी, पूछ क्यों रही हो ?'

'सब उसको देख रहे थे, इसलिए पूछ रही थी.'

'नहीं, मैंने नहीं देखा.'

पति ने महिला को नहीं देखा यह जान कर मैंने राहत की सांस ली. अपनी सलाई से मैंने दस फन्दे उतार दिये जो शायद ज़्यादा चढ़ गये थे■

२२।५।२ रुस्तम जी स्ट्रीट, कलकत्ता-१९

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसा भी

अपर्णा टंडन

काफी देर से रमाकान्त कुछ समझ नहीं पा रहा था कि अपने को परेशान होने से कैसे बचाये, और स्थिति ऐसी बन गई थी वह स्वयं को सहज भी नहीं बना पा रहा था. दिमाग़ में बहुत सारी बातें गड्डमड्ड हो रही थीं और चाहते हुए भी वह किसी भी बात पर शिलशिलेवार ढंग से सोच भी नहीं पा रहा था.

कुछ भी न कर पाने की स्थिति से उबरने के लिए उसने अपनी जेब से बीड़ी निकाल कर सुलगा ली फिर हलके से एक बार खंखार कर धूंये का एक छोटा-सा गोला बाहर को फेंका. बीड़ी का कश लगाते हुए उसने शोभा को एक बार कनखी से देख लिया था, जो उस समय पांव के अगूठे से ज़मीन खुरच रही थी.

'शोभा, देख तू मेरा कहना मान ले. इतनी भी जिद अच्छी नहीं होती. गलती हम दोनों से हुई है. अब उस बात को घसीटने से क्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ता ? अव्वल तो हम लोगों को शुरू से ही सावधान रहना चाहिये था. चलो वह नहीं हुआ तो बाद में भी मामला साफ हो सकता था. किसी को कानों-कान खबर नहीं होती. पर अब तो कुछ भी नहीं हो सकता.' रमाकान्त अचानक फूट पड़ा था. इतना कुछ कहने के बाद, वह एकदम से घबड़ा गया. वह धीरे-धीरे हांफ रहा था.

'गलती अगर हम दोनों से हुई है तो उसकी सजा अकेले मैं क्यों भुगतूंगी ? मजे तू उठाये और जहालत मैं भोगूं. मामला तो अब भी साफ हो सकता है. तुम दीदी से कह दो कि यह बच्चा हम दोनों का है. अगर इतना कहने का साहस नहीं है तो बात खत्म समझो. बच्चा किसी के पास नहीं रहेगा.' शोभा की गुस्से में डूबी हुई आवाज रमाकान्त को पस्त करने के लिए काफ़ी थी. वह एकदम से घबरा गया.

'थोड़ा आहिस्ता बोल न. पास के कमरे में ही तेरी दीदी लेटी है. चीख तो ऐसे रही है जैसे मैं बहरा हूं.' रमाकान्त बीड़ी को अपने पांव से मसलता हुआ बड़बड़ाया.

टीन के पार्टीशन के पीछे से किसी औरत के खांसने की आवाज आई. यह रमाकान्त की पत्नी कमला थी. शोभा की तेज कड़कती हुई आवाज में कहते हुए शब्दों को उसने सुन लिया था. पर एक निष्फल आक्रोश से वह सिर्फ़ खांस कर ही रह गई. दो साल से लगातार थाइसिस के कारण खांसते-खांसते अब वह खांसने के सिवा हर काम भूल चुकी थी.

शोभा के इस घर में आने के बाद जो-जो परिवर्तन उसके घर में होता रहा, उसे वह सिर्फ़ खाट पर लेटी-लेटी महसूसती ही रही. उसके पास करने के लिए कुछ भी नहीं रह गया था. पर एक दिन शोभा के बढ़े हुए पेट को देख, वह एकदम से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्नाटे में आ गई थी. रमाकान्त से उसने कई दफे घुमा-फिरा कर पूछताछ की पर रमाकान्त हर बार अपनी चालाकी से अपने को बचा ले गया था, और वह कुछ भी पूछने की हिम्मत वह जुटा नहीं पाई. शोभा का सपाट चेहरा, अन्दर को हुई आंखें कमला को न जाने क्यों भयभीत कर देतीं.

रमाकान्त अचानक उठ कर बाहर लकड़ी के बरामदे में आ कर खड़ा हो रमाकान्त के बाहर निकलते ही शोभा भी अपनी दीदी के पास चली आई, जो हमेशा की तरह लेटी हुई थी. शोभा ने दीदी से पानी के लिए पूछा, और कमला 'हां' कहने पर उसे पानी पिला कर बाहर आ गयी. उसे इस समय किसी से भी करने का मन नहीं हो रहा था. शोभा को इस कदर खामोश देख, कमला अपनी पड़ी बिस्तर पर सिकुड़ कर लेट गई.

'तुमने क्या फैसला किया है ? दीदी को सब कुछ सच-सच बताओगे या नहीं' शोभा आज फिर रमाकान्त को घेर बैठी थी. रमाकान्त काम पर निकलने से जल्दी-जल्दी अपना खाना खत्म करने में जुटा था. शोभा की बात सुन कर वह एक के लिए ठिठका, फिर धीरे-धीरे खाने लगा. शोभा का प्रश्न सुन कर उसका हुआ कि साली के मुंह पर एक तमाचा जमाये. एक बच्चा उसके पेट में आ गया, सारा रोब उस पर जब-तब उतारने लग गई है. रमाकान्त ने खीझ कर 'नहीं बताऊँगा तुम्हारे जो मन में आये करो. मुझ पर कोई एहसान नहीं होगा. होने के बाद मैं भी देखूं तू क्या करती है. भला चंगा कह रहा हूँ कि उसे पाल तो नहीं मानती. बाप कहलवायेगी साली मुझे...हूँ.....' रमाकान्त जल्दी-जल्दी पी कर उठ गया.

'तेरी दया पर मैं भी पलूं', और मेरा बच्चा भी पले....क्यों ? बड़ा आया कारी. मुझे अपने पास रख कर मुझ पर एहसान किया है न. बड़ा नाम कमाया रहा है. कमीना कहीं का. तेरे सब किये-धिये पर पानी न फेर दूं, तो मेरा भी शोभा नहीं.' शोभा भी रमाकान्त के साथ-साथ उठ कर खड़ी हो गई.

अचानक रमाकान्त सारा गुस्सा भूल कर शोभा के पास सरक आया. फिर हल्का-सा कश ले कर बोला, 'एक बार मां बन जा न, फिर देख, तेरा यह सारा हवा हो जायेगा. हां...औरत में ममता होती है रे, क्या मुझे नहीं मालूम. बाद तू सारा गुस्सा थूक देगी, जिद छोड़ देगी, समझी ?' रमाकान्त अब तक धीरे हंसने लगा था. वह अपनी ही बातों से बेहद खुश हो गया था. उसे पहली महसूस हुआ कि उसने शोभा को बहुत बड़े ज्ञान की बात बता दी है और वह से जीत गया है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तुझे मैं बहू भी दिन जाऊँगी कमीने.तू ठहर न.और थोड़े दिन की ही तो बात है. फिर तेरा सारा दांत निपोरना निकल जायेगा.' शोभा रमाकान्त के जूठे बर्तन उठाती हुई दहाड़ पड़ी.और उसी समय दूसरे कमरे से खांसने की आवाज़ ज़ोर-ज़ोर से आने लगी.

रमाकान्त जल्दी से चप्पल पाँव में डाल शोभा को एक बार जलती आँखों से घूर कर, बाहर निकल गया. उसके जाते ही शोभा ने फ़र्श पर अत्यन्त घृणा से थूक दिया. फिर जल्दी-जल्दी बर्तन समेट कर बाहर पानी के हौज़ के पास चली गई.

कमला कुछ देर तक खांसने के बाद अपने आप पानी पी कर लेट गई. वह लेटी-लेटी अंगुली पर कुछ हिसाब जोड़ने लगी थी.

■

रमाकान्त के जाने के बाद शोभा हाथ में झाड़ू लिये दादी के कमरे में आ गई.इस कमरे में आते ही एक अजीब क़िस्म की गन्ध नाक से आ कर टकराती थी. धूप इस कमरे में आती नहीं थी. चौबीस घंटे थूकते रहने के कारण कोठरी के भीतर की बू बाहर निकल ही नहीं पाती थी.

'ओह दीदी, तुम्हारे कमरे में कितनी सीलन और बदबू है.' शोभा जल्दी-जल्दी कमरा साफ़ करती हुई बोली. ऐसा वह प्रायः कहा करती. यद्यपि उसे पता था कि दादी इस बात का कोई उत्तर उसे नहीं मिलेगा. पर आज आशा के विपरीत दीदी खटिया पर उठ बैठी. तामचीनी के बर्तन में थूक कर, आँचल से अपने मुंह को पोंछा, फिर शोभा की ओर देख कर बोली, 'धूप का क्या काम इस कमरे में ? आजकल तो धूप भी आदमी और मकान देख कर ही आती है.....'

कमला को अपनी बात पूरी करने में काफ़ी तकलीफ़ महसूस हुई. बात पूरी करने के पहले ही खांसी का ऐसा दौरा आया की बात अधूरी छोड़ कर ही उसे खटिया पर लेट जाना पड़ा.

शोभा चुपचाप झाड़ू लगा कर, कमरे से बाहर निकल आई. दीदी की बातें उसे पहेली-सी लगतीं. अव्वल तो बातें करेंगी नहीं, करेंगी भी तो अजीब तरह की.

शोभा दूसरे कमरे में आ कर तख़्तपोश पर बिना खाये-पीये ही लेट गई. उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उसके कमर के चारों ओर दर्द की एक लहर-सी चल रही हो. उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था. इसलिए तख़्तपोश पर चुपचाप पड़ी रही.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीरो प व की रोशनी में डूबा हुआ जनरल अस्पताल का मैटरनिटी वार्ड अस्पताल के अन्दर और बाहर एक अजीब क़िस्म की निस्तब्धता छाई हुई थी. वार्ड की प्रायः सभी बेडें भरी हुई थीं. वार्ड के एक कोने में बड़ी-सी मेज और दो-तीन कुर्सियां थीं. दो खाली कुर्सियों के बीच तीसरी कुर्सी पर सिस्टर दास बैठी सो रही थीं. कुछ देर पहले भी वे जगी हुई थीं और एक राउण्ड पूरे वार्ड का लगा कर आयी थीं. जच्चे बच्चे सब सो रहे थे. अतः वे निश्चित हो कर अपनी कुर्सी पर पसर गई थीं.

कुर्सी पर बैठी-बैठी वे पूरी तरह सो तो नहीं पा रही थीं, हां गहरी ऊंघ में ज़रूर डूबी हुई थीं. ऊंघते हुए उनकी गर्दन कभी दायें झूल जाती तो कभी बायें. शायद घंटा भर भी ऐसा करते हुए नहीं बीता होगा कि अचानक वे चौंक कर जग पड़ीं. नींद में उन्हें ऐसा लगा था कि दूर कहीं बहुत दूर कोई बच्चा हल्के स्वर में रो पड़ा हो. पर पूरी तरह से शान्ति छाई थी. सिर्फ़ रह-रह कर किसी बच्चे की कुनमुनाने की आवाज़ उस निस्तब्धता में भी उभर आ रही थी.

मिस दास दोबारा नींद का झोंका लेने की तैयारी करने लगीं. पर कुछ देर पहले का भ्रम उन्हें रह-रह कर तंग करने लगा था. जब सोया नहीं गया तो वे अपनी जगह से उठ पड़ीं.

'शोभा, ऐ शोभा !' मिस दास के स्वर में उत्तेजना तो थी, पर बावजूद इसके उन्होंने अपने स्वर को दबाये रखा.

'शोभा, तुम उठती क्यों नहीं ?' इस बार उनके स्वर से क्रोध फूट पड़ा. शोभा की चुप्पी उनके लिए एक रहस्यमय बात बन गयी थी.

'क्यों क्या है ?' शोभा के स्वर में खीझ और झल्लाहट दोनों थी. शोभा, यानी मेटरनिटी वार्ड की बैड नम्बर सात. अब तक वह सिस्टर दास को अपना कानों पर धंसी हुई आंखों से घूरने लगी थी.

सिस्टर दास शोभा के पास लेटी हुई तीन दिन पहले जनमी लड़की को बार-बार हिला-हिला कर परेशान हो गयी थीं. उस कड़ाके की सर्दी में भी उनकी हथेली और माथे पर पसीना चिलचिला आया था. वे समझ नहीं पा रही थीं कि जो कुछ हो गया है, उसका मूल कारण क्या हो सकता है. अचानक ही सब कुछ हो गया था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जानबूझ कर सब कुछ किया गया.

'शोभा, तुम्हारी लड़की मर चुकी है. पर मैं पूछती हूं, वह मरी कैसे ? सच-सच बताओ, नहीं तो थप्पड़ खा जाओगी. तेरी सारी चालाकी मैं समझती हूं.' सिस्टर ने सब सुनने के बावजूद शोभा के चेहरे पर किसी तरह की परेशानी या घबराहट नहीं उभरी.

सिस्टर दास शोभा की निर्लिप्तता से और अधिक बौखला उठीं. उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर वे क्या करें, और क्या न करें. यह तो नौकरी जाने का सवाल हो गया. किसी तरह स्वयं को संयत कर उन्होंने इस बार गुर्रा कर पूछा, 'तुम्हारी लड़की मरी हुई तुम्हारे पास पड़ी हुई है, और तुम्हें थोड़ा भी परवाह नहीं. तुम कैसी औरत हो ?' अन्तिम वाक्य को पूरा करते हुए मिस दास को बेहद तकलीफ़ हुई.

'मर गई है तो मैं क्या करूं ? जिसे मरना था, वह मर गया. अब इसे फिकवा दो. इतना हल्ला मचाने की क्या जरूरत है ?' शोभा के सपाट और कठोर चेहरे पर से चमकती आंखें, न जाने किस घृणा और प्रतिशोध की भावना से जलने लगी थीं.

'क्या....'सिस्टर दास का मुंह शोभा की बातों से खुला-का-खुला ही रह गया. अब तक सारी बातचीत कुसफुसाहटों में ही हो रही थी. पर सारी स्थिति की गम्भीरता और उसके बाद के परिणामों को सिस्टर दास ने अब तक भाप लिया था. शोभा मरी हुई बच्ची, अपनी मां की बगल में थी. पर मां पूर्ण रूप से तटस्थ भाव बनाये हुए थी, जैसे वह बच्चा उसका न हो कर, कोई मांस का लोथड़ा हो. सिस्टर दास ने अब रुकना ठीक न समझा. अतः वे 'सिस्टर्स रूम' की ओर दौड़ीं.

तीन-चार नर्सों और डाक्टरों से बेड नम्बर सात घिर गया था. बारी-बारी से सभी ने बच्ची को देखा. वह बिलकुल बेजान-सी गुड़मुड़ा कर लेटी हुई थी. वार्ड में अब शोर-शराबे के कारण प्रायः सभी औरतें जाग उठी थीं. पूरी बात का पता उन्हें नहीं था, पर सब जानने के लिए उतावली हो रही थीं, जो डाक्टरों की उपस्थिति में सम्भव नहीं हो पा रहा था.

शोभा ने अपने काले, कठोर चेहरे को एक बार अपने सामने इकट्ठी भीड़ की ओर घुमाया. अपनी जलती हुई बड़ी-बड़ी आंखों से उसने डाक्टरों की ओर देखा, फिर उधर से नजर फेर कर जो आंखें मूंद बैठी तो दूबारा लाख प्रयत्न करने पर भी नहीं खोली.

बच्ची की नन्हीं-सी जीभ आधे इंच से भी शायद कम होंठों से बाहर निकल आई थी, जिससे डाक्टरों ने बहुत कुछ समझ लिया था. फिर शोभा की यह अविश्वसनीय निर्लिप्तता ने उन लोगों की समझ को और भी आसान बना दिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बच्ची को वहाँ से उठा लेने का आदेश दे कर लेडी डाक्टर और उनके सहायक धीमे स्वर में आपस में बतियाते हुए वार्ड से बाहर आ गये.

बच्ची को एक सफ़ेद कपड़े में लपेट कर मेट्रन बाहर निकल आई. मिस दास के साथ दूसरी नर्सें भी अब तक सारे बेडों का निरीक्षण करने लगी थीं. मिस दास ने तक प्रायः सभी बच्चों पर कम्बल ठीक से उढ़ा चुकी थीं. उनका हाथ रह-रह कर अभी भी काँपे जा रहा था.

बच्ची को उसकी माँ ने गला दबा कर मार डाला है; यह सत्य जो अब तक छुपा हुआ था, डाक्टर और मेट्रन के बाहर निकलते ही सबके सामने उजागर हो गया था. बच्ची की जीभ का बाहर निकल आना, फिर उसकी माँ की अजीब क्रिया में ढिठाई भरी उदासीनता ने सबके शक को सच बना दिया था.

'अरे दीदी, क्या कहें, कुछ साल पहले इसी अस्पताल में एक औरत का बच्चा ऐसी ही जाड़े की रात में मर गया था. हुआ यह था कि औरत नींद में बिलकुल बेखबर हो कर सो गई थी. उसका बच्चा पास में ही कम्बल के अन्दर गुड़मुड़ा कर सो रहा था. कब उसका दम घुट गया किसी को पता भी न चला. जागने पर उस बच्ची ने सारे अस्पताल को अपने सिर पर उठा लिया था बाद में उस रात ड्यूटी पर जो नर्स थी उसकी छुट्टी हो गई थी.' मोटी अधेड़ क़िस्म की एक नर्स मिस दास को बता रही थी.

'पर इस बार तो सब कुछ दूसरा ही है. है या नहीं ?' मिस दास ने बड़ी कातरता से अणिमा दी से पूछा.

'अरे बिलकुल. ये हरामजादी, सब इसकी बदमाशी है. मैं तो पहले दिन ही समझ गई थी कि यह बदमाश है. शक्ल नहीं देखती कैसी खूंखार है.' अणिमा दी अपने चेहरे पर एक अजीब-सा भाव उभार कर बोलीं.

'पता नहीं बच्ची का बाप कौन है ? लगता तो वही बुढ़ऊ ही है, जो रोज अस्पताल को इससे मिलने आता है.' मिस दास एक हल्की-सी जमुहाई के साथ, अपनी कुर्सी पर पसर गईं. अब तक नौकरी छूटने का डर मन से काफ़ी हद तक निकल चुका था.

वार्ड का शोर थम चुका था. पर जिसे ले कर इतना कांड हुआ, वह अपनी माँ पर पूरी निश्चिन्तता के साथ सो रही थी.

■

रात की घटना को ले कर अस्पताल में काफ़ी चहल-पहल थी. अस्पताल में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भी आ रहा था, एक बार शोभा को जरूर देख रहा था. कुछ समय के लिए शोभा स्वयं को बड़ी अजीब-सी हालत में पाने लगी. पर धीरे-धीरे उसने अपने आपको पूरे वातावरण से काट लिया.

'शोभा, आज मैंने क्या सुना है रे ? यह सब क्या सच है ?' रमाकान्त ने पास के स्टूल पर बैठते हुए शोभा से पूछा. उसकी आवाज में एक कंपकंपाहट थी. उसे शोभा से आँखें मिलाते हुए भी डर लग रहा था.

शोभा, जो अब तक अपनी बेड पर बैठी-बैठी अपने बाँये हाथ पर दाँये हाथ की उंगलियों से लकीरें पैदा कर रही थी, रमाकान्त की बात सुन कर मुसकराई. बड़ी लापरवाही के साथ अपनी टाँगों को नचाती हुई बोली, 'तुझे तो मैंने पहले ही कह दिया था. मुझे तुमने डरपोक लौंडिया समझ लिया था न. अब अपनी आँख से सब देख, कमीना.' बात करते-करते शोभा अचानक खामोश हो गई. उसे इस तरह खामोश हो जाते देख, रमाकान्त ने मुँह उठा कर उसकी ओर देखा. शोभा की दो जोड़ी आँखों में हल्की-सी भी तरलता न थी.

रमाकान्त आगे कुछ कहने-सुनने की हिम्मत खो चुका था. वह सर झुकाये एक अपराधी-का-सा भाव लिये बैठा रहा. पर शोभा उसी तरह निर्मम हो कर रमाकान्त को देख-देख कर हँसी चली जा रही थी. औरतों की कई जोड़ी घृणा भरी दृष्टि के बीच भी वह स्वयं को नितान्त तटस्थ और सुरक्षित महसूस कर रही थी.

३१।३।१ बनारस रोड, सलकिया-हवड़ा-६.

नारी-उम्र

तलाक के एक मुकदमें के दौरान जिरह करते हुए वकील ने महिला से पूछा—'आपकी उम्र क्या है?' महिला ने कुछ अटकते हुए और अपने पति की ओर संकेत करते हुए कहा—'मेरी उम्र उनसे दस साल कम है.' 'उनकी उम्र क्या है ?' वकील ने झल्ला कर कहा. 'मुझसे दस साल ज्यादा.' महिला ने उत्तर दिया.

नारी-स्वर

कई सौ फीट ऊँची मीनार दिखाते हुए गाइड ने कहा—'इस मीनार की ऊंचाई का अनुमान आप इसी से लगा लीजिये कि यदि इसकी सबसे ऊपरी मंजिल पर कुछ महिलाएं बात करें तो नीचे बहुत धीमी आवाज सुनाई पड़ेगी.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

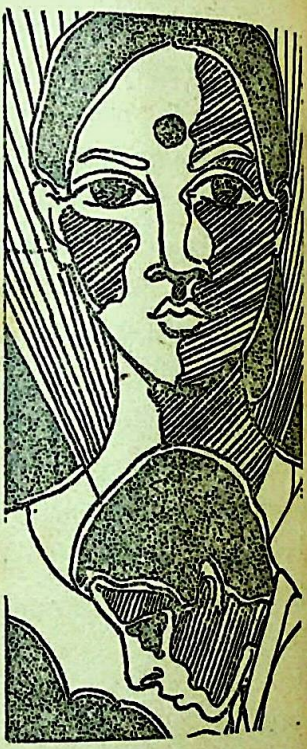

'नीतू अगर वह फिर कभी तेरी जिन्दगी में आने की कोशिश करे तो !' अन्जू ने पूछा है.

'मैं उसका मुँह नोच लूँगी. कमीना कहीं का. कैसे लम्बे-चौड़े वादे किये थे. कहा था मुझसे, नीतू मेरे साथ आगरा चल, मैं तुम्हें सर-आँखों पर बिठा कर रखूँगा. यह वही कमीना इनसान था अन्जू जिसके लिए मैंने अपने बाप-भाई की इज्ज़त का खयाल नहीं किया. 'पता नहीं उसका कौन-सा जादू मुझ पर सवार हो गया था.' कहते-कहते नीतू रोने लगी.

'अरे रे ! बड़ा कष्ट हुआ रे तेरे को. अगर मैं जानती तो काहे को कहती भला. पर अब तो तू अच्छी भली है. नर्स है. अगर तू चाहे तो तेरी शादी भी हो सकती है.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गैरवापसी

ओम प्रकाश पाण्डेय

नीतू कुछ बोली नहीं, चुपचाप उसने आँखें पोंछ भर ली, 'उठ चल, अस्पताल का टाईम हो गया है. देर हो जायेगी तो मेट्रोन बिगड़ेगी.'

अस्पताल पहुँचते ही मेट्रन की तेज़ नज़र नीतू से टकराई है. वह कुछ सहमी है और फिर चार्ट भरने चल दी है. मेडिकल वार्ड और फिर इमरजेन्सी वार्ड में चार्ट भर रही है. सामने एक मरीज़ अधलेटा-सा पहले मुसकराया है और फिर अपनी तकलीफ़ प्रकट की है, 'सिस्टर पसलियों में बड़ा तेज दर्द है.'

नीतू ने एक लापरवाह निगाह उसकी तरफ़ डाली है, 'आराम नहीं करो और बक-बक लगाये रहो, दर्द ठीक हो जायेगा.'

नीतू ने मरीज़ का उदास चेहरा देखा है. खुद उसे एक दर्द का एहसास हुआ है. यहाँ की नर्सें कितना कम मनोविज्ञान जानती हैं! उसे खुद अपने आप पर तरस आया है. वह हल्के-से मुसकराई है और उस नौजवान-मरीज़ के बालों में हाथ फेरते हुए कहा है, 'आराम कीजिए, अभी ठीक हो जायेगा.' युवक की आँखों में छाये नैराश्य के बीच खुशी झलकी है, जिसे नीतू ने कनखियों से देख कर मार्क किया है. बड़ा भोला-भाला इनसान है बेचारा. अपना अखिल भी अगर ऐसा ही होता तो? अखिल की याद आते ही उसका मन एक अजीब वितृष्णा से भर गया है.

शाम को नीतू लौटी है, अस्पताल से. एक कप चाय पीने के बाद पड़ रही है बिस्तरे पर. तबीयत कुछ भारी पड़ गई है. शायद हल्का-सा जुकाम हो आया है उसे. बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही है. उसे कुछ ठण्डक महसूस हुई है और उसने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने चारों तरफ़ कम्बल लपेट लिया है. एक ऐसी ही शाम की याद ताजा हो आयी है. होटल का वह कमरा और अखिल ! क़रीब दो महीने तक का साथ ! फिर अचानक एक दिन अखिल कहाँ ग़ायब हो गया था. यह सोचते ही नीतू को डर लगने लगा है और उसने अपने चारों ओर कम्बल और मज़बूती से कस लिया है.

अगले दिन जुकाम के साथ-साथ नीतू को बुखार भी आ गया है. तीन दिनों तक नीतू अस्पताल नहीं जा सकी.

आज चौथे दिन तबीयत कुछ हल्की लगी है. अस्पताल पहुँच कर उसने युवक का हाल जानना चाहा है

'हाँ तो तुमने क्या नाम बतलाया था ? 'कुमार' ओ....सो-सो. तो नाम से ही सन्य सी हो' आज वह काफ़ी प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी. युवक हल्के से मुस्कराया है, 'आप की दया थी जो जीता बच गया हूँ.'

'ओह कितनी बार कह चुके हो, इसमें मेरी दया क्या ? तुम्हें हल्का-सा कार का धक्का' लगा था और मैंने तुम्हें ला कर अस्पताल में भर्ती कर दिया था.' नीतू ने एक मीठी-सी झिड़की दी है.

'अन्जू कह रही थी कि अब तुम ठीक हो गये हो. आज डिस्चार्ज कर दिये जाओगे' युवक कुछ बोला नहीं है. उसकी आँखों में व्यथा उमड़ी है पर वह मुस्कराता रहा है 'सिस्टर मैं आगरा घूमने आया था. पैसे वगैरह तो सब दवा में....'

'बस-बस, नीतू ने बात बीच ही में उचक ली है, 'तो तुम्हें किराया चाहिए घर लौटने के लिए.'

'जी हाँ, गोरखपुर तक का, और फिर कुछ खाने-पीने के लिए भी. मिस्टर बनीश मानिये घर पहुँचते ही मैं आपका पैसा मनीआर्डर कर दूंगा.'

नीतू कुछ बोली नहीं है. उसने एक लिफ़ाफ़े में दस-दस के पाँच नोट बन्द किये हैं और एक स्लिप पर अपना पता लिखना नहीं भूला है.

नीतू सोचती है मरीज़ ट्रीटमेण्ट तक नर्स को याद रखते हैं और फिर घर पहुँचते ही उसको भूल जाते हैं, यों कुमार जाते-जाते बहुत भावुक हो गया है.

'सिस्टर ट्रेन पर मुझे चढ़ा दीजिए न, विदा होने के आखिरी पल तक मैं आप को देखता रहना चाहता हूँ.' और वास्तव में कुमार तब तक देखता रहा जबतक कि उसे नीतू नज़र आती रही.

स्टेशन से बाहर निकल कर नीतू को लगा है जैसे उसने कोई जबरदस्त भूल कर दी है—अच्छा चलो, बला तो टली. आइन्दा किसी मरीज़ के लफड़े में नहीं पड़ूंगी.

ठीक एक हफ्ते बाद, डाकिये ने हास्पिटल-गार्डेन के पास नीतू को टाका है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'मिस्टर आप का मनीआर्डर' नीतू कुछ ज्यादे ही प्रसन्न दीखी है. बन्धु कहती थी, अब ठेंगा लौटायेगा तेरा रुपया. ले गया. सभी मरीज़ यहाँ रहने तक बहुत ढोंग रचाते हैं. नीतू को लगा है कि वह जीत गई है. उसने साइन करते समय सोचा है, मनीआर्डर भेजने वाला कुमार श्रीवास्तव ही है. "

डाकिये ने दस-दस के पन्द्रह नोट गिने हैं और एक बार फिर गिन कर नीतू को थोरवाया है. नीतू घबड़ा-सी गई है, 'नहीं-नहीं बाबा, तुम भूल रहे हो ! कितने का मनीआर्डर है.'

बूढ़े डाकिये के चेहरे पर कुछ झुर्रियाँ उभरी हैं. उसने एक बार ऐनक ठीक की है 'आप ही देख लो बेटी, पूरे डेढ़ सौ रुपये का मनीआर्डर है.' नीतू कुछ झिझकी है पर तुरत ही उसने रुपया ले लिया है. वह आगे बढ़ने को हुई है कि डाकिये ने उसे एक लिफ़ाफ़ा थमाया है— यह आप की चिट्ठी.' चिट्ठी उसने ले ली है कुमार श्रीवास्तव की ही भेजी हुई है यह. उसने भेजने वाले के पते से जाना है. वह एक उतावली से भर उठी है. क्या लिखा होगा, इसकी मीठी कल्पना के ताने-बाने बुनती हुई वह कामनरूम में पहुँची है. चाकू की एज से उसने लिफ़ाफ़ा खोला है. उसके हाथ में लिफ़ाफ़ा काँपने लगा है. लिफ़ाफ़े में एक निमन्त्रण पत्र है और एक काग़ज़ का टुकड़ा. नीतू पढ़ने लगी है.

नीतू जी,

बड़ा बेबस अनुभव कर रहा हूं अपने आप को. आपके कितने एहसान हैं मेरे ऊपर. आइयेगा अवश्य मेरी शादी में. आने और जाने का किराया मैंने भेज दिया है. आप अवश्य आइयेगा.

शादी तो हमारी उस लड़की की बड़ी बहन से तय हुई थी. क्षमा कीजियेगा, लोगों से सुना था, उसका नाम नीतू श्रीवास्तव था. लेकिन क्या बतायें, मैं इधर दिल के प्यार के ताने-बाने बुन रहा था और उधर वह अपने यार-दोस्त को ले कर भाग गई. यह घटना आज से चार साल पहले की है. यक़ीन मानिये मैंने सिर्फ़ उसका नाम ही सुना था. उसे देखा भी नहीं था, लेकिन उसे भुलाने में मुझे चार वर्ष लग गये हैं. उसके बाद आप से भेंट हुई. इसे किस्मत का चक्कर ही कहूँगा, आप का भी नाम नीतू ही निकला. आप पर मेरा कोई अधिकार तो नहीं है, लेकिन सोचता हूँ कि आपको जीवन भर भी न भुला पाऊँ. एक बात अवश्य है. लगता है यह मिलन मेरे भाग्य में नहीं है.

आपका

कुमार श्रीवास्तव.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीतू ने पत्र पढ़ा है. उसे लगा है कहीं उसकी साँस तो नहीं रुक गई है. निर्जीव हाथों से उसने निमन्त्रण पत्र खोला है. एक तरफ़ कुमार का फ़ोटो है और दूसरी तरफ़ उसकी अपनी छोटी बहन मालती का. मालती अब कितनी बड़ी और कितनी जवान हो गई है, उसने सोचा है. मन एक आवेग से भर उठा है. ऐसा आवेग तब भी नहीं आया था जब वह अखिल के साथ भागी थी. तब भी नहीं जब अखिल ने उसे धोखा दिया था और दुनियाँ में अकेला छोड़ गया था. तब भी नहीं जब उसने अखबारों में अपने पिता द्वारा दिया हुआ विज्ञापन पढ़ा था, 'नीतू बेटे जहाँ कहीं भी हो, लौट आओ. तुम्हारी माँ का स्वर्गवास हो गया है.' नीतू नहीं लौटी थी. लौटेगी भी तो कौन-सा मुँह ले कर, उसने सोचा था. पर आज उसका मन बहुत जोर से चीखा है—नीतू चल घर चलें. मालती की शादी है, तेरी छोटी बहन की, हाँ कुमार के साथ जो तुम्हें देवी समझता है. पर तुरन्त ही वह बुदबुदाई है—नीतू, तू नहीं जा सकती. बहन का पहले जैसा प्रेम अब तुम्हें नहीं मिलने का और कुमार जो तुम्हें देवी समझता है, राक्षसी समझेगा. पहले से भी ज्यादा ऊँची दीवारें रास्ते में आ खड़ी हैं. नीतू अब तू कभी नहीं लौट सकती !

उसने अपने मन को समझाया है. हृदय के आवेग और हिचकियों को रोकने के लिए उसने अपने सीने को दबाया है. आँसुओं को पोंछा है. लिफ़ाफ़ा छोटे से हैंडबैग में बन्द किया है. टॉवल से फिर एक बार आँसुओं को सुखाया है और अपने को सामान्य बना कर चार्ट भरने चल दी है ■

अरविन्द प्रकाशन मन्दिर,
प्रकाश नगर, अधियारी बाग, गोरखपुर

तर्ज़े आशिक़ी

■

बाप ने लड़की को डाँटते हुए कहा—मैं उस लड़के के साथ तुम्हें कभी भी शादी नहीं करने दूँगा. वह सिर्फ़ तीन सौ ही रुपये तो महीने में कमाता है.

—आप चिन्ता न करें पिता जी, लड़की ने दलील की—जब हम दोनों में प्यार रहेगा तो पता ही नहीं चलेगा कि महीना कब खत्म हो गया.

■

लड़की को भगाने के खयाल से लड़का सीढ़ी लगा कर लड़की के कमरे की खिड़की से अन्दर झाँक कर पूछा—यहाँ से भागने के लिए क्या तुम तैयार हो ?

—धीरे बोलो डार्लिंग, कहीं मेरे डैडी जाग गये तो आफ़त आ जायेगी.

लड़के ने इत्मीनान से सीढ़ी से उसके साथ उतरते हुए कहा—घबराओ नहीं, तुम्हारे डेडी नीचे सीढ़ी पकड़े हम दोनों का इन्तज़ार रहे हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

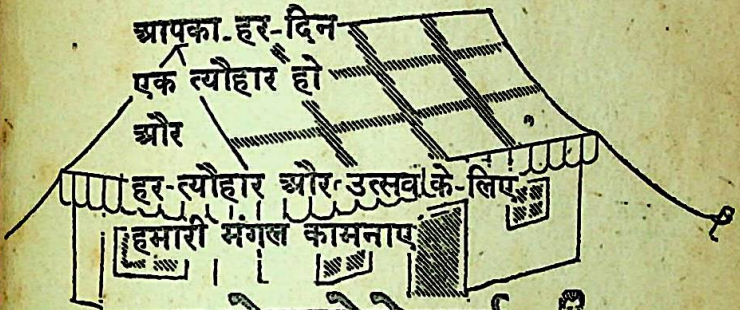

डायमण्ड डेकोरेटर्स

जंगमबाड़ी • वाराणसी

डिनर व पार्टियों एवं
समारोह की प्रतिष्ठा के लिए—

• भव्य टेन्ट • फर्निचर • क्राकरी • कॉफ़ी मशीन प्राप्त करने हेतु हमें आदेश दें.

फोन: ऑफिस: ६६९०३, ५३३२० ■ आवास: ५३४२४

मनोरम एयर कण्डीशंड कक्ष में
सपरिवार सुशोभित हो कर
सुस्वाद
सामिष या निरामिष
(नानवेज या वेज) डिनर, लंच
जलपान, आइसक्रीम एवं कॉफी,
का आनन्द उठायें.

फोनाग्रे
रेस्टूरेन्ट
एवं
आइसक्रीमबार

दीपक सिनेमा, वाराणसी—फोन : ६३८३३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरी पत्नी

कई सदियों पूर्व चीन की राजधानी से कुछ दूर च्वांग नामक एक दार्शनिक रहता था. वह अपनी तीसरी पत्नी के साथ सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत कर रहा था. उसका समय अपने महान गुरु लाओत्से के सिद्धान्तों के अध्ययन में लगता था. अन्य बहुत से दार्शनिकों की तरह वह भी अपने प्रारम्भिक वैवाहिक जीवन में भाग्यशाली नहीं था. उसकी पहली पत्नी का युवावस्था में ही देहान्त हो गया और दूसरी को उसने दुराचरण के कारण तलाक दे दिया. लेकिन तीसरा पत्नी के साथ वह बहुत सुखी था. दार्शनिक होने के कारण उसे एकान्तवास प्रिय था. घरेलू वातावरण बदलने के लिए वह प्रायः तराई और पहाड़ों में निर्जन स्थान में चला जाता. ऐसे ही एक बार एकान्तवास के लिए जाते समय उसने एक ताजा कब्र देखी. वहाँ एक स्त्री बैठी उस कब्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को पंखा झल रही थी. यह देख उसे बड़ा कुतूहल हुआ. उसने उस औरत से नम्रता से पूछा, 'आप यह क्या कर रही हैं ?'

उसने कहा, 'यह मेरे पति की कब्र है. मरते समय उस मूर्ख ने मुझसे यह प्रतिज्ञा करा ली थी कि जब तक उसकी क़ब्र के ऊपर की मिट्टी सूख न जायगी मैं पुनः विवाह न करूंगी. इसके सूखने का मैं कुछ समय तक प्रतीक्षा करती रही. लेकिन यह बहुत धीरे-धीरे सूख रही थी. इसे जल्दी सुखाने के लिए मैं इसे पंखा झल रही हूँ'

यह कह कर उसने दार्शनिक को मुग्ध दृष्टि से देखा. उसे उसकी इस स्थिति पर दया आ गयी. उसने कहा, 'अच्छा लाओ मैं पंखा झल दूँ. उस स्त्री ने पंखा उसे दे दिया और कहा, 'इसके लिए आपका बड़ा उपकार मानूंगी.'

दार्शनिक च्वांग क़ब्र को पंखा झलने लगा और जादू के ज़ोर से कुछ ही समय में उसने उसे सुखा दिया. यह देख वह स्त्री खुश हुई और मुसकरा कर बोली, 'इस दया के लिए मैं आपको कैसे धन्यवाद दूँ. लेकिन कृतज्ञता के रूप में मैं आपको यह खुशनुमा भेंट करना चाहती हूँ और इसके साथ ही आप मेरे जूड़े का यह चाँदी का कांटा भी स्वीकार करें.'

च्वांग ने पंखा तो ले लिया. वरन पत्नी के डर से कांटा नहीं लिया. इस घटना ने उसे सोच में डाल दिया. वह घर आया. उसे अनमना देख उसकी पत्नी ने पूछा—'क्या बात है. अरे ! तुम्हारे हाथ में यह पंखा कैसा ? यह तुम्हें कहां मिला ?'

च्वांग ने सारी बातें विस्तार से बतायीं. इस पर उसकी पत्नी, जिसका नाम लिन था, राग-द्वेष से भर उठी और उस विधवा युवती को भला-बुरा कहने लगी—'क्या पति के मरते ही उसे शादी की आ पड़ी ! ऐसी ही स्त्रियां नारी जगत के लिए कलंक हैं. कुलटा, बदमाश कहीं की.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिन परोक्ष में उस विधवा युवती को जब सब गालियाँ बक चुकी तो चांग ने धीरे से यह कहा—तिन कहीं शकल से ही किसी के मन की बात जानी जा सकती है ! किसी को भला-बुरा कहना आसान है, लेकिन अपने....'

'क्या मतलब आपका' तिन ने तीखे स्वर में कहा, 'क्या उस बेहाया विधवा की तरह सभी औरतें हैं ? आप मेरे ऊपर बोली कस रहे हैं. यह अन्याय है. यह मेरा ही नहीं, मेरी जैसी सभी महिलाओं का अपमान है. आपको ऐसा नहीं कहना चाहिये' क्षुब्ध हो कर तिन ने कहा.

'इस बात पर इतना उबलने की क्रोध करने की क्या जरूरत ! अच्छा बताओ यदि मैं मर जाऊं तो क्या तुम अपनी इस जवानी और खूबसूरती को ले कर सन्तोष करोगी और पांच तीन ही बरस विधवा बनी रहोगी' चांग ने कहा.

'जानते हो, वफ़ादार मन्त्री राजाओं के यहाँ नौकरी नहीं करता और पति-परायणा धर्मनिष्ठ स्त्री दूसरा पति करने की बात कभी नहीं सोचती. यदि मेरे भाग्य में तुम्हारा मरना ही बदा होगा तो पाँच या तीन वर्ष की बात, मैं जीवन भर दूसरे विवाह की कल्पना भी न करूंगी.' तिन ने कहा.

'यह करना बड़ा कठिन है' चांग ने गम्भीरता से कहा.

'क्या तुम स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह ही समझते हो कि एक औरत के मरते ही दूसरा ढूढने लगते हैं, एक को तलाक़ दे किसी दूसरी से शादी करते हैं. लेकिन हम स्त्रियों के लिए तो बस एक ही पति होता है. तुम मुझे चिढ़ाने के लिए यह सब बातें क्यों कहते हो ?'

इतना कह तिन ने उस पंखे को, जो उस विधवा ने दिया था, तोड़ डाला और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये.

'अच्छा अब शांत हो जाओ. तुमसे यही आशा है कि यदि कभी मैं न रहा तो तुम

अभिनन्दन तुम्हारा

बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण के
ओ पहले वर्ष !
अभिनन्दन तुम्हारा !
हम नहीं जानते क्या है तुम्हारे दामन में
उत्कर्ष या अपकर्ष
युद्ध की विभीषिका या शान्ति के प्रयास
विज्ञान की प्रगति, अमन
मानव का मानव के लिए जीवन
या मानव मूल्यों का पतन और दुर्दिन
खैर कुछ भी हो
तुम अनछुई दुल्हन की तरह अछूते हो
क्या पता, संभावनाओं का स्वर्णिम
आकाश और विश्वास लाये हो.
अभिनन्दन तुम्हारा.

— परमानन्द अश्रुज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुम इन बातों का अवश्य पालन करोगी—'

इस घटना के कुछ ही दिन बीते थे कि च्वांग सख्त बीमार पड़ा और उसका रोग जब असाध्य हो गया तो उसने अपनी पत्नी से कहा, 'मैं समझता हूं मेरा अन्तिम क्षण निकट आ रहा है और मैं तुमसे विदा ले लूं. बड़े दुख की बात है कि तुमने वह पंखा तोड़ डाला मेरी क़ब्र सुखाने में वह तुम्हें काम देता.'

'मैं तुम्हारे हाथ जोड़ती हूं. ऐसे समय मेरे ऊपर सन्देह न करो. क्या मैंने कर्म-काण्ड का अध्ययन नहीं किया है. क्या मैंने उससे केवल एक ही बात पर रहना नहीं सीखा है? यदि तुम्हें मेरी निष्ठा पर सन्देह है तो मैं ईमानदारी से कहती हूं कि मैं जो कुछ भी कह रही हूं उसे साबित करने के लिए तुम्हारे सामने ही मरूंगी.'

'अब मुझे और कुछ नहीं कहना है.' च्वांग ने धीमे स्वर में कहा, 'मेरा अन्तिम क्षण आ गया है, अब मैं जा रहा हूं.'

यह कहते ही च्वांग के प्राण पखेरू उड़ गये और उसका शरीर निश्चेष्ट हो गया.

अपने पति को मृत देख तिन जोर-जोर से विलाप करने लगी और उसके शब्द को बार-बार भेंटती कई दिनों तक वह रात-दिन रोती रही. अपने पति के गुणों तथा विद्या-बुद्धि का वह निरन्तर स्मरण करती.

च्वांग बड़ा विद्वान था. उसके निधन से चारों ओर शोक छा गया. तिन के घर संवेदना प्रकट करने वालों का तांता बंधा रहा. इनका सिलसिला अभी खत्म ही हुआ था कि एक बहुत ही सुन्दर और विद्वान युवक वहां आया.

वह बैंगनी रंग की सिल्क की पोशाक काली शानदार टोपी और गहरे लाल रंग का जूता पहने हुए था. उसके नौकर ने बताया कि ये त्सो राज्य के राजकुमार हैं. इसके बाद उस राजकुमार ने कहा, 'कुछ वर्ष पूर्व मैंने श्रीमान च्वांग को लिखा था मैं उनका शिष्य होना चाहता हूं. इसके लिए मैं यहां आया, लेकिन यहां अपने गुरु की मृत्यु का समाचार जान कर मुझे अकथनीय दुख हुआ है.'

यह कह उस राजकुमार ने अपनी रंगीन पोशाक उतार दी और मातमी पोशाक पहन च्वांग के ताबूत के सामने साष्टांग लेट गया और जमीन पर चार बार अपना माथा टेका और सिसकते हुए कहा, 'हे विद्वतवर, मैं सचमुच बड़ा अभागा हूं कि मुझे आपसे शिक्षा नहीं मिल सकी. किन्तु आपके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए मैं यहां रहूंगा और सौ दिन तक शोक मनाऊंगा.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इतना कह उसने चार बार शाष्टांग दण्डवत किया और अपने आसुओं से कब्र को तर कर दी. मातम जब कुछ कम हुआ और आंसू थमे तो उसने तिन के प्रति सम्मान प्रकट करने की इच्छा व्यक्त की, पर उसने तीन बार उसकी प्रार्थना ठुकरा दी. लेकिन जब उसे समझाया गया कि उसे अपने पति के शिष्यों से मिलने से इनकार नहीं करना चाहिए तो उसने उससे भेंट करना स्वीकार कर लिया. सिर नीचे किये उसने राजकुमार का अभिनन्दन स्वीकार किया और उसे एक नजर देखने की इच्छा हुई. उसने उसे जो देखा तो देखती ही रह गयी. उसके रूप पर मुग्ध हो गयी. राजकुमार से उसने अपने ही घर में रहने का आग्रह किया.

रात को उसे खाना खिलाने के बाद उसने वे शास्त्रीय ग्रन्थ उसे भेंट किये जो उसके पति पढ़ा करते थे. राजकुमार रोज ताबूत के पास घुटने के बल बैठ कर गुरु का स्मरण करता और उसके लिए मातम मनाता. तिन भी वहाँ बैठ लेती.

इस तरह लगातार मिलने से दोनों में थोड़ी बात भी होने लगीं. जैसे-जैसे समय बीतता गया, दोनों में स्नेह बढ़ता गया और मातम का काम कम हो गया. राजकुमार तो आधा ही आसक्त था लेकिन तिन उसे दिन से चाहने लगी. उसके बारे में और अधिक जानने के लिए उसने एक दिन शाम को उसके नौकर को बुलाया. उसे खाना खिला-पिलाने के बाद उससे पूछा, 'क्या तुम्हारे स्वामी राजकुमार का विवाह हुआ है?'

'अभी राजकुमार की शादी नहीं हुई है.' नौकर ने कहा.

'कैसी स्त्री से वे शादी करना चाहते हैं?' तिन ने पूछा.

'मेरे मालिक को यदि आप जैसी खूबसूरत स्त्री मिल जाय तो उनके दिल की ख्वाहिश पूरी हो सकती है.'

'यदि ऐसा हो जाय तो क्या तुम हम दोनों की शादी करा सकते हो.'

'मेरे मालिक ने इसके बारे में चर्चा की थी और वे यह चाहते भी हैं. यदि गुरु-पत्नी का रिश्ता इसमें बाधक न हो तो वे विवाह कर सकते हैं.'

'बात यह है कि तुम्हारे मालिक मेरे पति के कभी भी शिष्य नहीं रहे और यहाँ मेरे-ऐसे कोई पड़ोसी नहीं जो इस बात पर ऊँगली उठावें.'

विवाह में कोई बाधा न देख नौकर इसके लिए वार्ता चलाने को तैयार हो गया और कहा, 'यदि इसका कोई नतीजा निकला तो मैं आज ही किसी समय सूचित करूंगा.'

इतना कह कर नौकर तो चला गया लेकिन श्रीमती तिन उसके इन्तजार में बेकरार होने लगी. वह यह जानने के लिए अत्यधिक उत्सुक हो उठी कि नौकर इस विषय में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राजकुमार से क्या बातें कर रहा है उसने सोचा कि खिड़की के पास खड़े हो दोनों की बातें सुनी जा सकती हैं. वहाँ जाने के लिए जब वह ताबूत के पास पहुँची तो किसी की ज़ोर-ज़ोर से साँस लेती आवाज़ सुनाई पड़ी. वह डर गयी और मन में सोचा कि क्या यह सम्भव है कि मृत आदमी फिर जीवित हो जाय. लेकिन वहाँ टिमटिमाती रोशनी में उसने मुर्दे के पास एक कोच पर राजकुमार के नौकर को पड़ा देखा जो नशे में चूर हो लम्बी साँसें भर रहा था. इससे उसकी वह आशंका दूर हो गयी. मृत के प्रति ऐसा अनादर वह कभी बर्दाश्त न करती. उसके क्रोध का ठिकाना न रहता, पर वह मौक़ा ऐसा था कि उसे चुप लगाना पड़ा.

दूसरे दिन उसका ज़िक्र करते हुए तिन ने नौकर से पूछा, 'क्या बातें हुईं ?'

नौकर बोला, 'सब तो ठीक है, लेकिन तीन बातें ऐसी हैं जिनसे राजकुमार हिचक रहे हैं.'

'वे क्या हैं ?' तिन ने पूछा.

'एक तो यह कि घर में ताबूत रहते रीति-रिवाज के अनुसार विवाह का उत्सव करना कठिन है. दूसरा यह कि स्वनामधन्य च्वांग आपको बहुत प्यार करते थे और आप भी उनसे बहुत स्नेह करती थीं. राजकुमार को आशंका है कि द्वितीय पति को सम्भवतः इतना स्नेह न मिल सके. तीसरा यह कि वे अपना सामान नहीं लाये हैं. उनके पास पैसे भी नहीं हैं और न तो ऐसे कपड़े हैं जिन्हें पहन कर वे दूल्हा बन सकें.'

'इन बातों से हम लोगों की शादी में बाधा नहीं पड़ सकती. जहाँ तक पहली आपत्ति का प्रश्न है मैं ताबूत को घर के पिछवाड़े छाजन के नीचे रखवा दूंगी मेरे स्नेह के बारे में उन्हें आशंका नहीं करनी चाहिये, वह उन्हें प्राप्त होगा. मेरे दिवंगत पति ताओ मत के प्रकांड पण्डित तो थे किन्तु वे बहुत नैतिक और चरित्रवान नहीं थे. अपनी पहली पत्नी के बाद उन्होंने दूसरी शादी की. उसे उन्होंने तलाक़ दे दिया. अपनी मृत्यु के ठीक पहले उन्होंने एक विधवा को भी फँसाना शुरू कर दिया था जो उन्हें अपने पति की क़ब्र पर पंखा झलती मिली थी. ऐसे पति से अब क्या वास्ता. तुम्हारे राजकुमार युवा और रूपवान भी हैं, मेरे स्नेह के बारे में उन्हें संदेह नहीं होना चाहिये. वह उन्हें प्राप्त होगा. शादी में होने वाले खर्च के लिए भी उन्हें चिन्ता नहीं करनी चाहिये. उसकी व्यवस्था मैं करूंगी. इस समय मेरे कमरे में चांदी की तीन सिल्लें हैं. कपड़े आदि बनवाने के लिए इसे मैं उन्हें खुशी से दे दूँगी. अब जा कर सारी बातें राजकुमार को बता दो. उनसे कहो कि इससे अच्छा मौक़ा और नहीं आयेगा. हम लोगों के विवाह के लिए आज जैसी मंगलदायक संध्या और नहीं हो सकेगी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकती.'

बीस टेल ले कर नौकर राजकुमार के पास आया और उनसे सारी बातें बताकर फिर तिन से आ कर कहा कि राजकुमार विवाह के लिए तैयार हैं.

खुशी का यह संवाद सुनते ही तिन ने अपनी मातमी पोशाक उतार कर विवाह के वस्त्र धारण कर लिया. अपने गाल और ओठों को रंगा. कुछ ग्रामीणों से तालाब के मकान के पीछे झोपड़ी में रखवा शादी की तैयारी शुरू करवा दी. विवाह के कमरे में उसने स्वयं मोमबत्तियाँ सजा कर जला दी. विवाह का मुहूर्त आते ही वह राजकुमार के स्वागत के लिए तैयार हो गयी. वह अपनी सुन्दर सैनिक पोषाक में आया जिस पर ज़री के कफ़ थे और राजकीय पद के चिह्न अंकित थे. दोनों जब विवाह की मंगलज्योति के सामने खड़े हुए तो सौंदर्य और प्रेम से उनके चेहरे दमक रहे थे. विवाह के बाद दोनों कोहबर में गये और वहाँ से चलने ही वाले थे कि राजकुमार का शरीर अचानक कांपने लगा. उसका चेहरा विवर्ण हो गया और वह अपनी छाती पीटते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा.

तिन बहुत दुखी हुई. उसने उसे अपनी बाहों में पकड़ कर उठाने की चेष्टा की और उसकी छाती को मला. लेकिन इसका कुछ फल निकलता न देख उसने उसके नौकर को बुलाया और पूछा, 'क्या राजकुमार इससे पहले भी इस तरह बेहोश होते रहे हैं'

नौकर ने कहा, 'राजकुमार को ऐसा अकसर होता रहता है. लेकिन इस पर कोई औषधि काम नहीं करती. इसकी एक ही दवा है.'

'वह क्या ?' तिन ने उत्सुकता से पूछा.

'शराब में उबाला हुआ आदमी का भेजा,' नौकर ने कहा.

उसने आगे बताया, 'अपने घर में जब कभी इन्हें इस बीमारी का दौरा होता तो इनके पिता ऐसी नरेश किसी नर का सिर कटवा कर उसके भेजे से इन्हें होश में लाते थे. लेकिन यह इलाज यहाँ कैसे संभव होगा ?'

'क्या मृत आदमी के भेजे से काम चलेगा ?' तिन ने पूछा.

'हाँ, लेकिन उसके मृत हुए उनचास दिन से ज्यादा न हुए हों.'

'तब तो मेरे मृत पति का भेजा काम दे सकता है. इन्हें मरे हुए बीस ही दिन हुए हैं. ताबूतखोल कर उनका भेजा निकाल लेना तो बहुत ही आसान होगा ?'

'लेकिन क्या आप इसके लिए तैयार होंगी ?'

'अब मैं राजकुमार की पत्नी हूँ और वे ही मेरे पति हैं. पत्नी अपने शरीर से पति की सेवा करती है. मुर्दे के प्रति सम्मान के कारण क्या मैं इस सेवा से विमुख हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...कती हूँ ?'

इतना कह कर तिन ने राजकुमार को देख-रेख में छोड़ कर एक कुल्हाड़ा ले ...स झोपड़ी में चली गयी जहाँ उसके मृत पति का शव रखा गया था. वहाँ रोशनी ...र उसने कुल्हाड़ी से ताबूत को तोड़ना शुरू किया. अपने आस्तीन को चढ़ा और ...ओं को भींच वह ताबूत के सिरहाने पर कुल्हाड़ी से ज़ोर-ज़ोर से प्रहार करने ...गी. ३०-३१ प्रहार उसने किये थे कि ताबूत के सिरहाने का भाग टूट कर अलग हो ...या. अपने मृत पति का भेजा निकालने के लिए वह अपने मृत पति के सिर पर ...कुल्हाड़ी चलाने ही वाली थी कि वह जी उठा. उसने दो बार दीर्घ स्वाँस छोड़ी और ...खें खोल दी.

तिन डर कर चीख उठी और पीछे हट गयी. उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूट कर ...र पड़ी. उसके पति दार्शनिक च्वांग ने कहा, 'मुझे इसमें से निकालो प्रिये.'

तिन ने डरते-डरते उस ताबूत से निकाला और सहारा दे अपने कक्ष की ओर ...लायी. वहाँ का दृश्य देख च्वांग क्या कहेगा, यह सोच तिन कांप उठी. लेकिन जब ...कक्ष पर पहुँची तो देखा कि राजकुमार और नौकर दोनों ग़ायब हैं. इससे उसे बड़ी ...राहत मिली और छल करने और बहाना बनाने का मौक़ा मिला. बड़े कोमल स्वर में ...उसने कहा, 'तुम्हारी मृत्यु के बाद मैं दिन-रात तुम्हारे ही ग़म में डूबी रहती थी. ...जब मैंने तुम्हारे ताबूत में कुछ आवाज़ सुनी तो यह सोचा कि शायद तुम्हारे शरीर ...में आत्मा कर प्रवेश हो गया है, जैसा कि मैंने पुरानी कहावतों में सुना है कि ...आत्मा कभी-कभी अपने मृत शरीर में पुनः लौट आती है. मेरे मन में यह आशा ...जगी हुई कि शायद तुम फिर जी उठे हो और कुल्हाड़ी से जब ताबूत तोड़ा तो तुम ...सचमुच जीवित मिले. ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद है कि उसने मेरी मनोकामना ...पूरी की.'

च्वांग ने कहा, 'तुम्हारी इस प्रेमभावना के लिए बहुत धन्यवाद ! लेकिन प्रिये, ...मुझे बताओ कि तुम इतनी सजी-सजी क्यों हो ?'

तिन बोली, 'जब मैं तुम्हारे ताबूत को खोलने गयी तो मेरे मन में आया कि ...तुम्हारी वेश-भूषा में तुम्हारा स्वागत क्यों करूं. यह सोच मैंने यह पोशाक ...पहन ली.'

'अच्छा यह बताओ मेरा ताबूत कक्ष में न रख बाहर क्यों फेंका हुआ था ?'

च्वांग के इस प्रश्न पर तिन निरुत्तर हो गयी. उसे कुछ न सूझा कि इसका क्या ...उत्तर दे. इसके बाद च्वांग ने कमरे में पड़े प्याले और शराब देखी जो यह जाहिर ...कर रही थी कि शादी की दावत हुई है. लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और उससे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होटल नटराज

[शाकाहारी एवं कान्टिनेण्टल डिशेज में विशिष्ट]

लहुराबीर, वाराणसी • फोन • ६६३२२,५४०१२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थोड़ी शराब मांगी. च्वांग क मुसकान पाने के लिए वो मटकते हुए बड़ी अदा से उसे शराब पेश की. किन्तु च्वांग ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया. उसके कन्धे पर हाथ रख उसने कहा, 'अपने पीछे देखो. वे दो आदमी कौन हैं ?'

तिन समझ गयी कि राजकुमार और उस नौकर को छोड़ भला कौन होगा. और जब उसने घूम कर देखा तो वे ही दोनों उद्यान में खड़े थे. वह डर गयी और जब मुड़ कर अपने पति की ओर देखा तो वह ग़ायब था. फिर जब उसने उद्यान की ओर देखा तो राजकुमार और नौकर दोनों वहाँ से नदारत मिले. फिर च्वांग उसकी बगल में आ कर खड़ा हो गया.

अब तिन को असलियत समझ में आ गयी कि राजकुमार और नौकर दोनों ही च्वांग के दूसरे रूप थे जिन्हें उसने अपनी सिद्धी के जोर से खड़ा किया था. जो कुछ हुआ है उसे छिपाने का प्रयास व्यर्थ है. अपने कटिबन्ध को वहीं कड़ी में बांध फांसी लगा कर तिन ने अपनी इहलीला समाप्त कर दी.

च्वांग ने उसके शव को उसी ताबूत में रख दिया जिसमें से वह स्वयं निकला था और घर में आग लगा दी उसमें जो कुछ भी था जल कर राख हो गया. केवल बचे थे ग्रन्थ—तर्क और गुण-सूत्र तथा नानह्वा के उपदेश.

कहा जाता है कि इसके बाद च्वांग पश्चिम की ओर यात्रा पर निकल पड़ा. वह कहाँ गया इसका कुछ पता नहीं. लेकिन एक बात निश्चित है कि वह अपने शेष जीवन भर विधुर रहा ■

लेखक—अज्ञात

अनु० विश्वनाथ सिंह

विवाह :

■ विवाह प्यार के लिए होता है या धन के लिये—दोनों सूरतों में दूसरी वस्तु का अभाव दुःख देगा ही—सो क्या ज़रूरी है कि दुःख भोगा ही जाये —राबर्टबेसन

■ जब हम समझ रहे होते हैं कि दुनिया अब हमारा लोहा मानने लगी है, उस समय अगर हम अपनी पत्नी की राय भी जान जायें तो बेहतर रहे. —पीटनडन्न

■ विवाह में ऐसा ही देखा जाता है जो चिड़िया पिंजरे के बाहर है, वह अन्दर जाने को उत्सुक रहती है और जो अन्दर है, वह बाहर उड़ने को व्याकुल. —नोटेन

■ हर स्त्री का प्रयत्न रहता है कि शीघ्र से शीघ्र विवाह करे और हर पुरुष का यत्न है कि वह जितनी देर रोक सके, अपना कुंआरापन रोके. —जार्ज बर्नार्ड शा

प्रस्तुतकर्ता :—राम निवास शर्मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

संस्कृत वाङ्मय से
त्रियाचरित्र की लघुकथाएं

× पक्ष एवं विपक्ष

एक

×

संस्कृत वैयाकरणों में वररुचि का नाम अग्रगण्य है. उन्होंने पाणिनी के व्याकरण पर वार्तिक लिखा है. शास्त्र पर असाधारण अधिकार उन्हें भगवान शिव की कृपा से वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ था. इसके लिए उन्होंने हिमालय पर जा कर शिव की कठिन तपस्या की. उनकी पत्नी उपकोशा नाम की परम साध्वी रमणी थी. वररुचि के तपस्या पर चले जाने पर वह पाटलिपुत्र में अकेली रह कर पति के कल्याण-कामना में समय बिताने लगी. नियमित व्रत ले कर वह प्रतिदिन गंगा स्नान करती थी. विरह-दुर्बल, पीली अतएव मनोहर और प्रतिपदा के चन्द्र के समान जनलोचनों के लिए आकर्षक, उपकोशा वसन्त-काल में गंगा-स्नान के लिए जा रही थी. मार्ग में उसके इस चित्ताकर्षक रूप को राजपुरोहित, नगरपाल तथा युवराज के मन्त्री ने देखा. उसे देख कर वे तीनों काम-सर के लक्ष्य बन गए. उनकी अवस्था को समझ कर उपकोशा ने भी स्नान में जान-बूझ कर विलम्ब किया. सायकाल को स्नान से लौट कर आती हुई उपकोशा को कुमार सचिव ने बलपूर्वक रोका, किन्तु बुद्धिमती उपकोशा ने कहा—'हे सज्जन पुरुष, जो तुम चाहते हो वही मैं भी चाहती हूँ. किन्तु मैं उच्च कुल में उत्पन्न हुई हूं और प्रोषितभर्तृका हूँ. अतः इस प्रकार का कार्य हमलोगों को नहीं करना चाहिए. यदि कोई देख लेगा, तो तुम्हारे साथ मेरा कल्याण नहीं होगा. इसलिए वसन्तोत्सव की धूम-धाम में नागरिकों के व्यस्त रहने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कर तुम रात के पहले पहर में मेरे घर पर आओ.' कुमार सचिव से ऐसी प्रतिज्ञा कर उपकोशा जब कुछ आगे बढ़ी तो दैवयोग से पुरोहित ने उसे आ घेरा. उपकोशा ने उसे भी रात के तीसरे पहर आने का निमन्त्रण दिया. पुरोहित से किसी प्रकार छूट कर विह्वल उपकोशा ऐसे ही कुछ दूर गई थी कि शहर-कोतवाल ने भी उसे इसी प्रकार रोका. उपकोशा ने उसे भी उसी प्रकार रात के दूसरे पहर में आने का आदेश किया. इन सबसे छूटी हुई उपकोशा काँपती हुई अपने घर पहुँची और अपनी सखियों को बुला कर स्वतंत्रता पूर्वक कर्तव्य-निर्धारण कर बोली—पति के प्रवास में रहने पर कुलस्त्री का मर जाना अच्छा है, किन्तु रूप पर मरने वालों की आखों में रहना अच्छा नहीं. ऐसा सोचती तथा अपने पति का स्मरण करती उपकोशा ने निराहार रह कर रात बिताई. प्रातःकाल ब्राह्मण को भोजन कराने एवं उनकी पूजा के लिए कुछ द्रव्य लाने के लिए अपनी दासी को हिरण्य गुप्त नामक व्यापारी के पास भेजा जो उसके पति का मित्र था और जाते समय उन्होंने कुछ रुपया उसके पास रख छोड़ा था. बनिया भी एकान्त में आ कर उससे बोला—यदि तुम मेरी मनोकामना पूरी करो तो तुम्हारे पति का रखा हुआ समस्त धन मैं तुम्हें दे दूंगा. ऐसा सुन कर उपकोशा मर्माहत हो गई, परन्तु धन में कोई पक्का गवाह न होने के कारण उस बनिए को भी रात के चौथे पहर आने का निमन्त्रण दिया, जिसे सुन कर प्रसन्नमन बनिया चला गया.

तब उसने सखियों से मंगा कर कड़ाहों में तेल मिला कर बहुत सारा अलकतरा पकवाया तथा उसमें कस्तूरी आदि कुछ और सुगन्धित द्रव्य मिलाया. उस कोलतार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सने हुए चार कपड़े के टुकड़े तैयार कराये जिसे कमर में लपेटा जा सके. उसे एक बड़ा भारी सन्दूक बनवाया जिसमें बाहर से बन्द करने के लिए कुण्डी लगी हो.

कुछ समय के बाद वसन्तोत्सव के दिन रात के पहले पहर कुमार सचिव सुन्दर वेश धारण कर सजधज के साथ आया. घर में चुपके से आए उस कुमार सचिव से उपकोशा ने कहा—'बिना स्नान कराए मैं तुम्हारा स्पर्श न करूँगी.' अतः उसने स्नानघर में जा कर स्नान करो. जब उस कामतत्वबुद्धि ने स्नान करना स्वीकार कर लिया तो दासियों ने उसे अन्धकारमय स्नानागार में प्रवेश करा दिया अन्दर से जा कर दासियों ने उसके गहने, कपड़े उतार लिये और कमर में लपेटने के लिए काजल और अलकतरे से सना कपड़े का टुकड़ा दे दिया. घने अन्धकार में कुछ न दीखने के कारण मालिश करने के बहाने दासियों ने आपादमस्तक उसे अलकतरे से काला कर दिया. इसी बीच राजपुरोहित रात के दूसरे पहर में आ धमका. दासियों ने कहा—अरे ! वररुचि का मित्र राजपुरोहित आ गया. इसलिए तुम ऐसे ही आ कर सन्दूक में छिप जाओ. इस प्रकार उन दासियों ने घबराये हुए कुमार सचिव को सन्दूक में बन्द कर कुण्डी चढ़ा दी. दासियों ने पुरोहित को भी वैसा ही किया. रात के तीसरे पहर में कोतवाल के आ जाने पर उसे भी उसी सन्दूक में बन्द कर दिया. कोतवाल का भी, चौथे पहर में हिरण्यगुप्त व्यापारी के आ जाने पर, वही हाल हुआ. एक ही सन्दूक में वे तीनों मानों अन्धतामिस्र नगर में रहने का अभ्यास करते हुए परस्पर अंग स्पर्श होते हुए भी न बोलते थे.

हिरण्य गुप्त के आने पर उपकोशा ने दिया जलाया और स्नानागार में उसे ले जा कर बोला, मेरे पति का दिया हुआ धन मुझे लौटा दो.' उपकोशा की बातें और और एकान्त देख धूर्त्त व्यापारी बोला, 'तुम्हारे पति का दिया हुआ धन मैं तुम्हें अवश्य लौटा दूँगा.' उपकोशा ने बन्द सन्दूक को लक्ष्य कर कहा, 'हे देवताओं! हिरण्य गुप्त का वचन सुनो ' ऐसा कह कर उपकोशा ने दिया बुझा दिया और दासियों ने उसे भी स्नान के बहाने अलकतरे का लेप चढ़ा दिया. मर्दन में देर करने के कारण प्रातःकाल हो आया. दासियों ने कहा—'अब जाओ.' जाने में आनाकानी करने पर दासियों ने उसे गर्दनिया दे कर घर से निकाल दिया. विकृत वेश और चिथड़े देख कर कुत्तों ने रास्ते में उसका खूब स्वागत किया. घर पर सेवक जब उसको कालिमा छुड़ाने लगे तो लज्जा से वह मुँह भी न उठा सका.

दूसरे दिन उपकोशा दासी को ले कर माता-पिता को बिना बताए राजा नन्द के दरबार में जा कर हिरण्य गुप्त के विरुद्ध पति द्वारा दिया धन हड़पने का आरोप लगाया. बुलाए जाने पर हिरण्य गुप्त ने साफ़ इनकार कर दिया. उपकोशा ने साक्षी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपने घर में, सन्दूक में रखे देवताओं को बुलवाने का आग्रह किया. आश्चर्यचकित राजा ने आज्ञा दी. कई लोग मिल कर बड़ी मुश्किल से उस भारी-भरकम सन्दूक को ले आए. उपकोशा ने पास जा कर कहा, 'हे देवताओं! तुम कल रात की बात सच-सच बता दो नहीं तो अभी सन्दूक खोल दूँगी.' राज खुलने के डर से तीनों एक स्वर से बोले—हाँ हिरण्य गुप्त ने धन लौटाने का वादा किया है. बनिए ने निरुत्तर हो कर धन लौटाना स्वीकार किया. अत्यन्त कुतूहलवश राजा के आग्रह करने पर उपकोशा ने सन्दूक खोलवा दिया. अन्धकार-पिण्ड के समान तीनों पुरुष निकले. बड़ी कठिनाई से सभासदों ने उन्हें पहचाना. उपकोशा ने सारा वृत्तान्त राजा को बता दिया. राजा ने परदाराभिगामी उन तीनों की सम्पत्ति का हरण कर उन्हें देश से निकाल दिया और उपकोशा को अपनी बहन मान कर बहुत-सा धन दिया.

मध्य काल में ताम्रलिप्ति नाम का एक नगर था. नगर के मध्य भाग में मणिभद्र यक्ष महायक्ष की मूर्ति से प्रतिष्ठित एक विशाल मन्दिर था. नगर निवासी अपनी-अपनी कार्य-सिद्धि के लिए उस मणिभद्र मन्दिर में जा कर मनौतियाँ मानते थे और कार्या-नुसार उपहार चढ़ाते थे. प्रेमी-प्राप्ति आदि की इच्छाओं के लिए वह मन्दिर विशेष प्रसिद्ध था. एक बार वहाँ के राजा की इच्छा के विरुद्ध किसी ने राजकन्या का वशी-करण कर पूजा के लिए गई उसी मन्दिर से उसका हरण कर लिया. इसके बाद राजा ने आज्ञा दे दी कि जो व्यक्ति मन्दिर के भीतरी भाग में रात के समय किसी अन्य स्त्री के साथ पाया जाय उसे मन्दिर में ही बन्द कर दिया जाय. प्रातःकाल उसी स्त्री के साथ उसे राजसभा में ले जा कर, उसका वृत्तान्त सुन कर उसे मार डालने का दण्ड दे दिया जाय.

उस राज्य में समुद्रदत्त नाम का एक व्यापारी था जो बड़ा ही मनचला था. दुर्भाग्य से नगर-रक्षक कोतवाल ने रात के समय एक दूसरी औरत के साथ मन्दिर के भीतर उसे पकड़ा और उसे वहीं बन्द कर सुदृढ़ साँकल लगवा दिए. समुद्रदत्त के विश्वासपात्र सेवकों ने जो मन्दिर के इर्द-गिर्द निगरानी कर रहे थे, कोई उपाय न देख कर समुद्रदत्त की पतिव्रता पत्नी को यह समाचार सुनाया. शक्तिमती नाम की उस स्त्री ने अपनी प्रत्युत्पन्नमतित्व से दृढ़तापूर्वक अपने कर्त्तव्य का निश्चय किया. साथियों के साथ पूजा-सामग्री आदि उपहार ले कर वह मन्दिर में गई. मन्दिर के पुजारी ने लम्बी दक्षिणा के लोभ से कोतवाल से कह कर मन्दिर का पट खुलवा दिया. उसने मन्दिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के भीतर जा कर किसी स्त्री के साथ अपने पति को देखा और अपने गहने-कपड़े उस स्त्री को पहना कर उसे वहाँ से चला दिया. स्त्री शक्तिमती के वेश में वहाँ निकल गई और शक्तिमती उस स्त्री के वेष में पति के पास रह गई. प्रातः काल राजा के अधिकारियों ने जब आ कर देखा तो वह बनिया अपनी स्त्री के साथ पकड़ा गया. यह वृतान्त सुन कर राजा ने मृत्यु-मुख से उसे मुक्त कर दिया और प्रमाद करने के कारण कोतवाल को ही दण्ड दिया.

तीन

कञ्चन पुर नाम का एक नगर था. वहाँ एक श्रमिक दम्पत्ति रहता था. उसकी पत्नी एक दिन संध्या समय किसी अन्य स्त्री से बात कर रही थी. उसी समय वह श्रमिक दिन भर के काम से थक कर चूर घर लौटा. उसे देख कर वह स्त्री चुपके से वहाँ से खिसक गई. उसे इस प्रकार चले जाने से श्रमिक को संदेह हुआ और उसने अपनी पत्नी से पूछताछ शुरू की. पत्नी से संतोषजनक उत्तर न पा कर भय-भ्रम और थकावट से व्याकुल उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी. उसने उसे पीटना शुरू किया. अधिक पिटने के भय और श्रमिक के क्रोध को देख कर वह स्त्री जोर-जोर से चिल्लाने लगी. श्रमिक ने भी लोगों के अनावश्यक रूप से जमा होने एवं बदनामी की आशंका से पीटना बन्द कर दिया और एक खम्भे से उसे बाँध दिया. क्रोध और निराशा से भर कर वह बिना खाए-पीए सो गया. आधी रात बीतने पर सबकी नजरें बचा कर वह स्त्री, जो एक हज्जाम की पत्नी थी, फिर उसके पास आई और उसके प्रेमी का संदेश दिया—'तुम्हारे विरहानल में जलता हुआ, कामदेव के बाणों से बिंधा हुआ अधमरे की तरह पड़ा है, रात में जैसे चन्द्रमा अन्धकार की छाती छेदता है. अतः वह आग्रह है कि उसकी वैसी अवस्था का खयाल कर तुम उसके पास अवश्य जाओ. तब तक मैं यहाँ तुम्हारी जगह पर बंधी रहूंगी. तुम वहाँ जा कर उसे संतोष दे कर शीघ्रता से लौट आओ.' इस प्रकार उस स्त्री ने श्रमिक पत्नी को चला दिया और खुद उस खम्भे से बंध गयी. अर्द्धनिद्रित अवस्था में श्रमिक ने उन दोनों के वार्तालाप का कुछ अंश सुना. कुछ देर बाद जब उसकी नींद खुली तो क्रोध में भर कर उसने कहा—'पापिनी, मैं तुम्हें जार के घर पहुँचाता हूं.' पहचाने जाने के भय से डर कर स्त्री कुछ नहीं बोली. श्रमिक चिढ़ गया, यह सोच कर कि यह गुमान में भरी है, उसके पास पड़ी चाकू उठा लिया और अपने अपमान के प्रतिकार स्वरूप उसके नाक को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उस्तरा से थोड़ा अंश काट दिया. फिर बड़बड़ाता हुआ सो गया.

कुछ देर बाद श्रमिक की पत्नी लौटी. बोली—'क्या हाल-चाल है ?' दूसरी स्त्री ने कहा—मेरा मुंह ही हाल बतलाएगा.' परन्तु शीघ्रता और घबराहट के कारण श्रमिक की स्त्री ने इसे अन्योक्ति समझ कर इस ओर विशेष ध्यान न दिया और उसे बन्धन-मुक्त कर पुनः खुद बंध गई. वह स्त्री भी अपने घर चली गई. प्रातः काल जब उसके पति हज्जाम ने हजामत बनाने का सामान माँगा तो उसने सिर्फ़ एक छूरा निकाल कर दिया. क्रोध में हज्जाम ने छुरा फेंक दिया. अब क्या था, स्त्री चिल्ला कर मुंह पकड़ कर बैठ गई—हाय तुमने मेरी नाक काट ली वह चिल्लाती हुई राजा के यहाँ फरियाद करने गई. हज्जाम को अपनी पत्नी के अंगभंग में कठोर कारावास का दण्ड मिला. उस स्त्री ने पति से मुक्ति की सांस ली.

इधर श्रमिक से उसकी पत्नी ने कहा, 'तुम बड़े पापी और निर्दया हो. क्रोध में आकर तुमने मेरी नाक काट ली. लेकिन महासती को विरूप करने में कौन समर्थ है. स्वयं भगवान विष्णु सतियों की रक्षा करते हैं. मैंने स्वप्न में भी अन्य पुरुषों का स्पर्श नहीं किया है. अगर मैं चाहूँ तो शाप से तुम्हें भस्म कर सकती हूँ, परन्तु तुम मेरे पति हो, यह मेरे लिए बहुत है' प्रभावित श्रमिक ने उठ कर पत्नी का निष्कलंक मुख देखा और परम आश्चर्य में भर कर उसके चरणों पर यह कहता हुआ गिर पड़ा—'धन्य हूँ मैं जिसे ऐसी परम साध्वी पत्नी मिली है.' प्रस्तुतकर्ता—जगदीश प्रसाद मिश्र

(दाऊद का शेष)

के लिए माँगता है. दाऊद हां तो कह देता है पर निचुड़ जाता है, भीतर ही भीतर कुढ़ता है. सुलताना इस बात को सुन कर बेहद नाराज़ होती है और बुर्के में करीम के पास जा कर उसे धिक्कारती है—दाऊद जैसे शरीफ़ आदमी की बीवी की नाक पर हाथ डालते तुझे शर्म नहीं आती. इस पर करीम की हया और आदमियत जाग उठती है. सुलताना वैसे ही पाक हालत में लौटती है पर दाऊद बहुत ही विह्वल और आत्मग्लानि से पीड़ित और मलिन हो उठता है. सुलताना तो सो गयी पर दाऊद बहुत देर तक करीम की बातों को ले कर डूबता-उतराता रहा. फिर सो गया. उठा तो सुलताना की मज़ाक़ भरी बातों ने उसे फिर मलिन कर दिया. लेकिन फिर हँसी भी. दोनों समद सेठ के यहाँ जाते हैं, इतवार बिताने. वहाँ सुलताना की बातों और हरकतों से सभी बेइन्तिहा खुश होते हैं और समद सेठ दाऊद को साहित्यिक पकड़ में प्रभावित. फिर दोनों घर लौटते हैं. रास्ते में सुलताना की चुटीली बातें दाऊद का मन गुदगुदा कर भर देती हैं. फिर भी एक गहरी आत्मीयता सुलताना के प्रति दाऊद में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उभरती है और सुलताना है कि बेबाकी से कायनात की ओर दाऊद का मन मोड़ रही हैं और उससे मिल आने की सलाह देती है. दाऊद अगले दिन जनता पब्लिकेशन रा है. अपनी तरक्की की बात मैनेजर सलमान से सुनता है, खुश होता है और बेहद पर शाम को इस खबर से बेहद दुखी भी कि करीम को तीन महीने को सजा गयी. सुलताना से मुक्ति पा कर वह कायनात के साथ अपनी नयी जिन्दगी शुरू की सोच भी न पाया था कि सुलताना उसके लिए और लम्बी अवधि के लिए पड़ गयी. सजा की बात जब सुलताना सुनती है तो बेहद खुश होती है पर साथ इस बात से थोड़ी चिन्तित भी कि उसे रुपये कैसे मिलेंगे. दाऊद की उलझनें बढ़ जा रही हैं. सुलताना जैसी नेक और साफ़ दिल औरत का साथ होना और न होना दोनों ही उसमें एक तनाव पैदा करने लगा है, एक कशमकश, एक मानसिक द्वंद्व

'कहानीकार के' तीन विशेष प्रकाश्य आकर्षण

- लघुकहानी विशिष्टांक
- नीति कथांक
- बाल मनोविज्ञान कहानी अङ्क

सभी के लिए सशक्त रचनायें आमंत्रित हैं. नीति कथांक और बाल मनोविज्ञान कहानी अंक के लिए विश्व साहित्य से अनूदित रचनायें भेजने के लिए विशेष आग्रह है.

तान. दूसरे रोज़ सुबह ही वह कायनात से मिलने जाता है. और उसे किताब छापे जाने की सूचना देता है. साथ ही उसे प्रकाशन मैनेजर सलमान से मिलने की राय देता है.' चाय-नाश्ते के दौर में बातों का आत्मीय दौर चलता है और दोनों एक दूसरे को काफ़ी क़रीब मगसूस करते हैं. वापस आते वक़्त वह कायनात को से मिलने के लिए कहता है. रेणू से वह मिलती है. दोनों में वेश्यावृत्ति पर बारीकी बातें होती है. रेणू उससे बहुत प्रभावित होती है और आर्थिक सहायता का करती है. इधर करीम के जेल चले जाने की बात सुन कर सुलताना राय-मशविरे लिए डिस्ट्रिक्ट जेल जा कर करीम से मिल आती है. वह उसे बम्बई में ही रहने हुक्म देता है. इस बात को जब दाऊद सुनता है तो परेशानी महसूस करता है कि भी सुलताना को कहीं और टिकने की बात पर उसे यह कह कर अपने साथ ही रखने के लिए कहता है कि जब तक तुम बम्बई में हो मेरी इज़्ज़त हो—सं०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

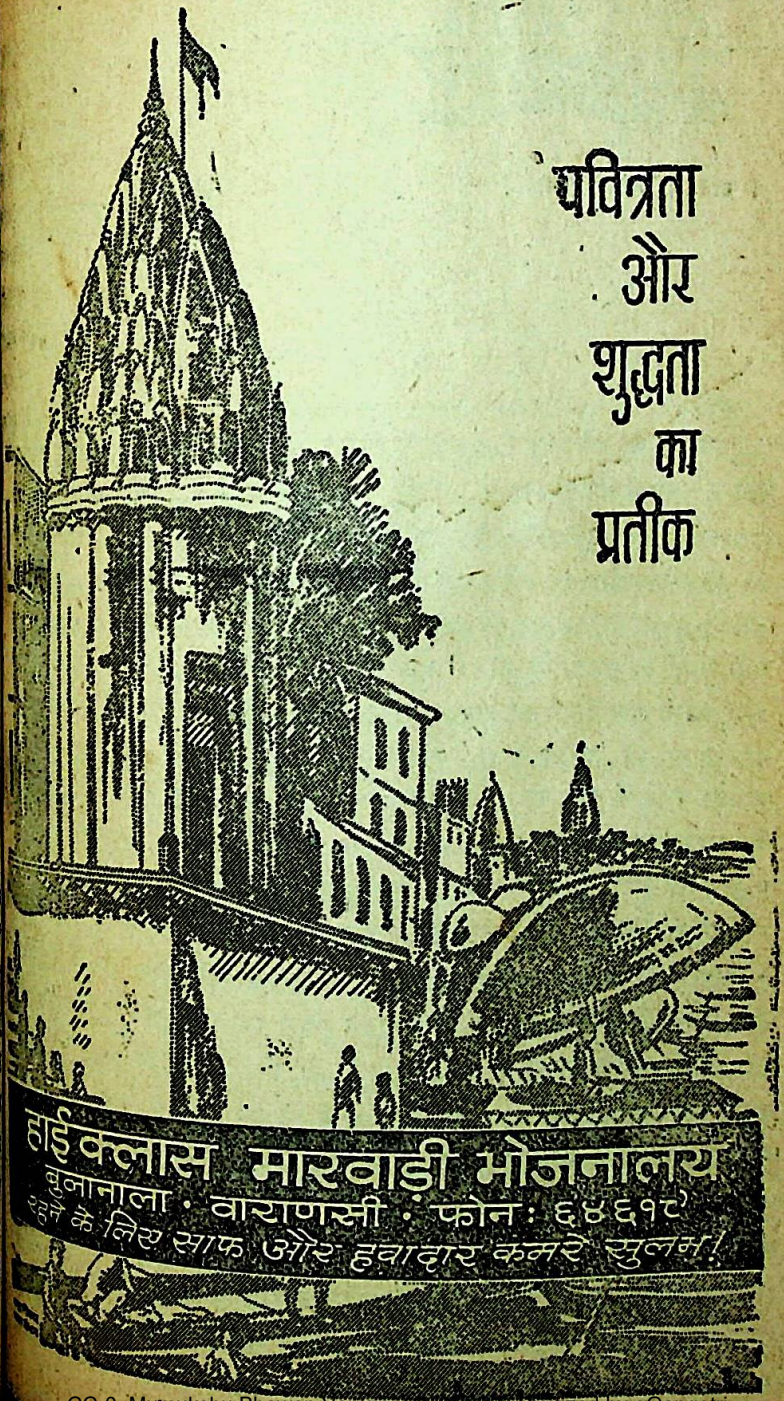

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुछ स्याह कुछ सफ़ेद

(बारहवीं व्यंग्य रचना)

पहले की अपेक्षा अब नौकरी के दिन काफ़ी अच्छे हो गये है. रईसों, साहूकारों सेठों के ज़माने में नौकरी को नीची नज़र से देखते थे. यही हाल रायसाहबों मनसबदारी, तल्लुक़ेदारी और ज़मीदारी के ज़माने में भी रहा. लोगों ने नौकरी को ना-करी बताया.पर चूँकि अब वे सारे दिन लद गये हैं बातें उलट गई हैं, इसलिये नौकरी उतनी ही नियामत हो गयी है जितनी कि तन्दुरुस्ती. वैसे इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि नौकरी और तन्दुरुस्ती में चोली-दामन का सम्बन्ध है. क्यों, चोली और दामन का होना भी नौकरी से ही है. नौकरी न रहे तो शायद चोली और दामन भी नसीब न हो. ऐसा भी होता है कि उसी चोली और दामन को हासिल करने के नाम पर कभी-कभी अच्छे-भले लोगों को अपनी चोली को गिरवी भी रखना पड़ जाता है और दामन नीलाम करना पड़ता है. कुछ ऐसे भी हैं जिनके पास न तो चोली है और न ही दामन है पर वे बदस्तूर गिरवी रखे जाते हैं और नीलाम भी होते हैं. यह धन्धा गाँव से शुरू हो कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सुसंगठित हो चुका है. उसी के अन्तरगत दक्षिण की लड़कियों की थोक भाव से निलामी होते अकसर देखी-सुनी जाती है. नौकरी की तलब क्या-क्या गुल नहीं खिलाती. नौकरी से नीलामी तक के फासले यूँ तै हो जाते हैं जैसे कि गोश्त का टुकड़ा झट से क़ीमा बना दिया गया हो. कुछ का क़ीमा इस देश में ही बन जाता है, कुछ का क़ीमा विदेशी बाजार में बनता है और खूब ज़ोरों से बनता है, बनता चला आ रहा है. जमाखोरी, मुनाफ़ाखोरी, शराबखोरी और हरामखोरी की तरह का ही यह क़ीमाखोरी का धन्धा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर धड़ल्ले से जारी है. क़ीमाखोर इस बात की हर चन्द कोशिश करता है कि कीमा में इस्तेमाल होने वाला गोश्त मुलायम से मुलायम क़िस्म का हो चाहे उसका जो भी दाम लगे. एक की भूख है रोटी, एक की भूख है कीमा वैसे दोनों ही भूख की क़िस्में हैं.रोटी की भूख पैसे के अभाव में ज़माने से बिना बिटे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक अदद बीवी

कमल गुप्त

जब कि क़ीमा की भूख पैसों के आधिक्य के कारण बार-बार मिट कर भी बरकरार है, अगर एक बार में ही यह मिट जाती तो भी बुरा होता क्योंकि फिर ढेर सारे पैसों का क्या होता ? उनकी तबीयत को आराम कैसे मिलता जिनके पास पैसों का ही बिछौना, तोशक और रजाई है. जो पैसे का ही ओढ़न और बिछावन इस्तेमाल करते हैं उनकी तबीयत के आराम के लिए मुलायम से मुलायम गोश्त और उस गोश्त का क़ीमा चाहिए. उन्हें आराम मिले इसलिए लोगों को चाहिए कि नौकरी के लिए, रोटी के लिए अपनी बीवी और बेटी को नीलाम होने दें और पूंजीपरस्तों के काम आने दें उनके लिए क़ीमा की बेहतर से बेहतर क्वालिटी बन कर पेशे-खिदमत हों. ऐसा होता रहेगा तो रोटी में आसानी होगी. यदि ऐसा होने में रुकावट डाली गयी तो क़ीमाखोर चैन से जीने भी नहीं देगा. इसके लिए वह नौकरी की ऐसी राजनीति बनायेगा कि आपकी रोटी खटाई में पड़ जायेगी. रोटी खटाई में पड़ेगी तो आपकी तन्दुरुस्ती खटाई में पड़ जायेगी. मैंने इसीलिए कहा था कि नौकरी उतनी ही नियामत है जितनी की तन्दुरुस्ती क्योंकि दोनों में चोली-दामन का सम्बन्ध है. मैं तो हमेशा ही अपने दोस्तों की नौकरी और तन्दुरुस्ती के लिए मुफ़्त की दुआएं बांटता रहता हूं. हो सकता है दुआएं मुफ़्त की होने के कारण बेअसर हो कर रह जाती हों, पर खैराती दवाखाना की तरह खैराती दुआएं देने में क्या हर्ज है. बहरहाल मेरी दुआओं के असर से या फिर गोश्त या क़ीमा को पेशे खिदमत करने के कारण मेरे खून से दोस्तों की नौकरी और तन्दुरुस्ती उनके लिए हजार नियामत बनी हुई हैं. मैंने कई बार अपने दोस्तों को इसके लिए धिक्कारा भी और कहा कि ऐसी नौकरी से तो बेहतर है कि कुछ खा कर सो रहो.

मेरी बात पर मेरा एक दोस्त मेरे ऊपर ठहाका मार कर हंस पड़ा—लगता है तुम्हारे खून में बाबा आदम के जमाने का खून चक्कर मार रहा है. सोचने का तर्ज बदलो.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखो आज का ज़माना काफ़ी तेज़ी से बदल रहा है. सारे सम्बन्ध आज आर्थिक हैं, शुद्ध रूप से व्यापारिक हैं. मियाँ-बीवी की ही बात लो. दोनों के सारे रिश्ते आर्थिक हैं. बीवी को रोटी चाहिए और वह अपनी रोटी के लिए मियाँ का इस्तेमाल करती है. यूं कह लो कि खुद को इस्तेमाल होने देती है. बीवी की ही तर्ज़ में यदि मियाँ अपनी नौकरी के लिए, रोटी के लिये अपनी बीवी का इस्तेमाल करे तो इसमें क्या हर्ज है?

—हर्ज़ ! मैं तो समझता हूं यह शुद्ध वेश्यावृत्ति है.

—मियाँ-बीवी के आज के रिश्ते क्या वेश्यावृत्ति जैसे नहीं हैं ? गांधी जी ने भी तो कहा है कि मैरेज इज़ ए लीगलाइज्ड प्रास्टिट्यूशन.

—देखो अपनी बेवकूफी में गांधी जी को मत घसीटो. उन्होंने यह जुमला तुम्हारे जैसे सोचने वालों के लिए ही कहा है, अपने लिए नहीं कहा है. आखिर वो भी तो शादी-शुदा थे, मैं गुस्से से बोला.

—हो सकता है तुम्हारी बात सही हो पर क्या गांधी बनना आसान है ?

—बेशक मुश्किल है वैसा बनना, पर ज़िन्दगी को वेश्यालय बनाना क्या ठीक है?

—देखो गाली मत दो. आज आसानियों का युग है. सुविधा भोगी होना मनुष्य का नैसर्गिक कार्य आरंभ से रहा है. क्या यह बात पिछले ज़माने में नहीं होती थी? बात यही थी, केवल स्वरूप बदला हुआ था. साम्राज्य की सुरक्षा और सुविधाओं के लिए ज़माने से राजा-रजवाड़े अपनी बेटियों और बहिनों को अन्य राजाओं के साथ रिश्ते के धागे में बांध दिया करते थे.

—बेशक, पर बीवियों का इस्तेमाल वे इसलिए नहीं करते थे.

—बीवी कौन बड़ी चीज़ है जो, बेटियाँ और बहिनें तो मुश्किल से मिलती हैं, बीवियाँ तो दर्जनों बनाई जा सकती हैं. फिर उसका इस्तेमाल नौकरी के लिए, नौकरी की सुरक्षा के लिए करने में क्या बुराई है. मियाँ की नौकरी रहेगी तभी बीवी भी साथ देगी, वर्ना पत्ता झाड़ चल देगी.

—ऐसी शर्त मंज़ूर करके साथ रहने वाली बीवी नौकरी के जाते ही उसका पत्ता झाड़ चल देगी, मैंने कहा.

—बेशक तुम्हारी बात शतप्रतिशत सही है पर क्या तुम मुझे एक ऐसी बीवी दिला दोगे जो मेरे हाल में, बेहाल में मेरे साथ रहे. बोलो दिलाओगे ?

दोस्त की बात पर मैं सन्न हो जाता हूं. जिस बीवी का तसवीर मैंने दिमाग में इतनी आसानी से बना डाली थी, उसे ज़मीन पर हासिल करना कितना मुश्किल था. काश कि ऐसी औरत दिमाग़ी न हो कर दुनियावी होती और अपने दोस्त के लिए जा कर एक अदद ऐसी बीवी दे सकता, जो उसके हर हाल में, बेहाल में ज़िन्दगी भर उसका साथ दे. उसकी घास की रोटी में भी उसका साथ दे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हिन्दी लघुकहानी—एक पुनर्मूल्यांकन

—बलराम

लघुकहानी और लघुकथा शब्दों का प्रयोग हिन्दी में कब और कैसे हुआ, इसकी पहली लघुकहानी या लघुकथा किसने लिखी, इन प्रश्नों का उत्तर देना आसान नहीं. जन्म और जनक की कहानी बड़ी विचित्र होती है. किसी का जन्म कहीं होता है और उसकी जन्म-तिथि कुछ और अंकित हो जाती है. कभी-कभी तो जनक होता कोई है और जनक का जगह नाम किसी और का लिखा जाता है, तिस पर हिन्दुस्तान में जन्मी विभूतियों और चीजों के बारे में सही जानकारी प्राप्त करना और भी कठिन है. हमारी मानसिकता ऐसी है कि जन्म और जनक की बात आते ही हम गुमान ताकने लगते हैं. कर्ण के बाप का पता हमें आज भी नहीं है. पाण्डवों के बाप पाण्डु नहीं थे. और दशरथ के सभी पुत्र पुत्रकामेष्ठि यज्ञ से पैदा हुए थे. कृष्ण के पिता वसुदेव भी चमत्कार की वजह से हैं. हमारी चेतना ही जन्म और जनक के बारे में कुण्ठित रही है. दूर की बात जाने भी दें तो सूर, और कबीर के जन्म और जनक की प्रामाणिक और सही जानकारी हमें नहीं है. यही हाल हिन्दी लघुकहानी और लघुकथा के इतिहास का है किन्तु फिर भी उसे एक आकार देने का प्रयास कर रहा हूँ.

आज लघुकथा का जो रूप है उसे देख कर लोग नाक-भौं सिकोड़ रहे हैं. हालात ऐसे बन रहे हैं कि अब लघुकथा वह रूप नहीं पा सकती जो लोगों के दिमाग में बना है. दरअसल १९७० से १९७५ के बीच लघुकथा के साथ इतनी अधिक छेड़-छाड़ की गई कि वह मनभावन गृहणी से जिस्म बेचने वाली वेश्या में तब्दील हो गई. सृजनात्मकता से रहित लघुकथाओं की बाढ़ आ गई है जब कि लघुकथा की सार्थकता उसके सृजनात्मक बने रहने में ही थी और अब जो कुछ हो रहा है उस पर किसी का वश नहीं, सिवा इसके कि वास्तविक पहचान के लिए हम लघुकथा की जगह लघुकहानी नाम स्वीकार कर अपने रास्ते को नया मोड़ दें. इस मोड़ से पूर्व लघु-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानी और लघुकथा का सफ़र सम्मिलित सफर रहा है. फिलहाल लघुकहानी के [illegible] की बात हम नहीं कर सकते. यह कोई आवश्यकता नहीं, परिस्थितिजन्य विवशता है.

तमाम तथ्यों की खोज-बीन के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि हिन्दी [illegible] कहानी और लघुकथा के जनक माखन लाल चतुर्वेदी हैं. उन्होंने हिन्दी की पहली आधुनिक लघुकहानी 'बिल्ली और बुखार' लिखी. उन्होंने अपनी ऐसी रचनाओं [illegible] छोटी कहानी कहा है. बिना किसी बहस-मुबाहिसे के माखन लाल चतुर्वेदी की 'बिल्ली और बुखार' को हम हिन्दी की पहली आधुनिक लघुकहानी कह सकते हैं.

१९२९ ई० में कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर ने अपनी पहली छोटी कहानी 'सेठ जी' लिखी. प्रभाकर जी के साथ ही आचार्य जगदीशचन्द्र मिश्र ने भी छोटी कहानियाँ लिखना शुरू किया. यही छोटी कहानियाँ बाद में अन्य भारतीय भाषाओं की नकल पर 'लघुकथा' नाम की विधा से अभिहित की जाने लगीं. प्रारम्भ में हरिशंकर परसाई ने भी कुछ लघु व्यंग्य कहानियाँ लिखीं.

हरिशंकर परसाई के साथ हिन्दी लघुकहानी के क्षेत्र में प्रखर व्यक्तित्व से [illegible] एक ऐसे कहानीकार का उदय हुआ जिसने इस विधा की असीम संभावनाओं के अछूते क्षितिज उघाड़ कर रख दिये और अपने संग्रह 'बन्धनों की रक्षा' (१९५० ई०) से इस विधा की शक्ति और प्रासंगिकता प्रमाणित कर दी. आनन्द मोहन अवस्थी का लघुकहानी संग्रह 'बन्धनों की रक्षा' हिन्दी का पहला अनमोल रत्न है जिसे हम हिन्दी लघुकहानी का पहला संग्रह मानते हैं. समाज के प्रति तीखा व्यंग्य लिये इन लघुकहानियों में आनन्द की असाधारण प्रतिभा के दर्शन होते हैं. अगर आनन्द जीवित होते तो हिन्दी लघुकहानी को वही प्रतिष्ठा मिलती जो हरिशंकर परसाई की वजह से व्यंग्य को मिली. दुर्भाग्य से आनन्द असमय काल कवलित हो गये और हिन्दी लघुकहानी का सफ़र गर्दिश में डूब गया, आनन्द की मौत लघु कहानी के गर्दिश भरे सफ़र का पहला सबसे बड़ा हादसा था जिसकी पूर्ति आज तक नहीं हो सकी. 'कहानीकार' में प्रकाशित 'विनायक' की एक दर्जन लघु कहानियाँ पढ़ कर अब कुछ वैसी प्रतिभा का आभास 'विनायक' में हो रहा है. आनन्द की मौत से दुखद बात यह है कि उनका संग्रह अब अप्राप्य है. काश ! कोई उसे पुनः प्रकाशित करे.

दूसरा संग्रह 'आकाश के तारे धरती के फूल' भारतीय ज्ञानपीठ ने प्रकाशित किया. इस लघुकहानी संग्रह के लेखक हैं श्री कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर. इस संग्रह को अज्ञेय ने हिन्दी को छोटी कहानी के रूप में एक नई देन स्वीकार किया. भूमिका में प्रभाकर जी ने अपनी इन रचनाओं को छोटी कहानी नाम ही दिया है, लघुकथा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीं. इसके बाद आचार्य जगदीश चन्द्र मिश्र के 'पंच तत्व' 'उड़ने के पंख' 'मिट्टी के आदमी' आदि लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए जो बोध-कथाओं के अधिक निकट हैं और हम उन्हें ज्यादा-से-ज्यादा लघुकथा संग्रह स्वीकार कर सकते हैं. लघुकहानी के इतिहास में उनका कोई स्थान नहीं होगा. इसके बाद शरद कुमार मिश्र का लघुकथा संग्रह 'धूआं और धुंआ' छपा जिसमें उन्होंने अपने पिता श्री जगदीश चन्द्र मिश्र को लघुकथा जनक सिद्ध करवाने का प्रयास किया है. प्रमाणों के अभाव में यह बात गले के नीचे उतरती नहीं है.

और फिर हिन्दी लघुकहानी पर छा जाने वाले कथा शिल्पी रावी का पदार्पण होता है. उन्होंने १९४८ ई० में अपनी पहली लघुकहानी 'शीशम का खूंटा' लिखी. १९५८ में उनका लघुकहानी संग्रह 'मेरे कथा गुरु का कहना है' भाग १ तथा १९६१ में 'मेरे कथा गुरु का कहना है' भाग २ भारतीय ज्ञानपीठ से प्रकाशित हुआ.

इसके बाद शुरू होती हैं पत्रिकाओं के पन्नों पर लघुकहानी की नृत्य-नाटिकाएं. सर्व प्रथम हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं काशीनाथ सिंह की तीन लघुकहानियां— कमल, पानी और प्रदर्शिनी, जो जून १९६७ की सारिका मासिक (संपादक कमलेश्वर) में प्रकाशित हुई थीं ये लघुकहानियां आम आदमी की पीड़ा और नियति में लेखक के साझीदार होने और उसके सहयात्रित्व का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं. इतनी सजीव, प्रभावशाली और रचनात्मकता से लैश आम आदमी के अनुभवों के अर्थों तक पहुंचने वाली लघुकहानियों की शुरुआत करके सारिका ने उस क्रम के नैरन्तर्य को बनाये रखा होता तो आज लघुकहानी का इतिहास कुछ और होता. हरिशंकर परसाई और आनन्द की जोड़ी में आनन्द की मौत से जो धक्का लघुकहानी को उस समय लगा था, उसके घाव अभी पूरे भी नहीं हुये थे कि लघुकथा और लघुकहानी की जोड़ी में से लघुकथा का नैरन्तर्य तो जारी रहा किन्तु लघुकहानी का क्रम टूट गया और व्यंग्य की तरह लघुकथा तो प्रतिष्ठा के शिखर पर पहुँच गई किन्तु लघुकहानी का सफ़र और भी अधिक गर्दिश में डूब गया इसके लिये मैं कमलेश्वर जी से सिफारिश करूंगा कि वे इस उपेक्षित विधा पर कृपा दृष्टि डालें और जिस तरह से लघुकथा को प्रतिष्ठा दी है उसी तरह से लघुकहानी को भी अपेक्षित स्नेह दें.

इसके बाद हमारी दृष्टि ठहरती है इतालवी कथाकार इलियो विटोरिनी की लघुकहानी 'लेखक' पर, जो जुलाई-अगस्त १९६८ ई० के कहानीकार द्वैमासिक (संपादक कमल गुप्त) में प्रकाशित हुई. इसी अंक में कमल गुप्त ने लघुतम कहानी पुरस्कार अंक की घोषणा की. मार्च १९६९ ई० में 'कहानीकार' का वह ऐतिहासिक 'लघु कहानी पुरस्कार अंक' प्रकाशित हुआ, जिसने इस विधा का एक स्वरूप निश्चित करने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रयास किया. अभी तक इस विधा की रचनाओं को या तो छोटी कहानी कहा जाता था या अन्य भाषाओं से आयातित नाम 'लघुकथा' से अभिहित किया जाता था. अब कि अब तक छोटी कहानी और लघुकथा का भेद प्रकट होने लगा था. कमल गुप्त का यह प्रयास सर्वथा पहला और नया था जिससे हिन्दी की छोटी कहानी ने लघुकहानी के रूप में एक नये उन्मेष और नई चेतना के साथ अंगड़ाई ली. 'विनायक' की लघु कहानी 'नाव' को पहला पुरस्कार मिला और वह हिन्दी लघुकहानी के इतिहास में एक माईल-स्टोन बन गई. कमल गुप्त ने 'लघुकहानी' को एक विशिष्ट विधा का रूप देना चाहा उन्होंने उसे नये संस्कार और नई परिभाषा दी. उन्होंने लिखा—

"लघुकहानी वर्णन का विस्तार न हो कर एक परिभाषा की तरह ही वह चुस्त-दुरुस्त और नपी-तुली होती है और अपने सीमित कलेवर में मन की गहराइयों को छू जाती है...रंग सभी हो सकते हैं पर आवश्यक नहीं कि एक बड़ा कैन्वास हो

लेखकों से निवेदन

रचना भेजते समय उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें ■ केवल वही अस्वीकृति रचनाएं सुरक्षित रखी और लौटाई जा सकेंगी जिनके साथ लेखक का पता लिखा, टिकट लगा लिफ़ाफ़ा होगा, मात्र टिकट नहीं ■ नए लेखक रचना के साथ अपना व्यक्तिगत एवं साहित्यिक संक्षिप्त परिचय, प्रकाशित रचनाओं, वर्तमान शगल और शौक का उल्लेख करना न भूलें ■ 'कहानीकार' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं.—सं०

लिया जाय. कैन्वास के कटपीस पर भी चित्र खींचा जा सकता है, जिसका प्रभाव दिल और दिमाग़ पर क्षणिक न हो कर स्थाई हो.'

'कहानीकार' के इस अंक के बाद 'सारिका' तथा अन्य पत्रिकाओं में लघुकथायें छपती रहीं. इधर-उधर कुछ लघु थायें ऐसी भी छपती रहीं जो लघु कहानी की मानसिकता से ऊम-चूम होने के बावजूद लघु कथा का लेबिल चस्पा किये थीं दर-असल अभी भी लोग लघुकथा को लघुकहानी के संस्कार और मानसिकता देने में जुटे रहे. पारंपरिक लघु-कथा से इतर विशिष्ट स्तर की दो छोटी कहानियां फिर सारिका के मार्च १९७१ अंक में प्रकाशित हुईं—सुभाषचन्द्र की 'आडंबर' तथा वीरेन मेहरा की 'आविष्कारक'. सारिका के ही मई १९७१ अंक में प्रकाशित विवेकी राय की 'मकड़ जाले' लघुकहानी के रूप में बेहद बेहद प्रभावित करती है. उक्त तीनों लघु कहानियां पढ़ कर बार बार सोचना पड़ता है, काश ! 'सारिका' में लघु-कहानियों का यह क्रम जारी रहता और लघुकथा विशेषांकों की तरह सारिका के लघुकहानी विशेषांक भी आते.

(शेष अगले अंक में)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने लिखा है

अंक ५० : कुछ प्रतिक्रियाएं

अंक ५० यानी कि 'मानवीय पीड़ा अंक' गहरी नजर से पढ़ चुका हूँ. इस अंक की सभी कहानियाँ सामान्यजन का सही दस्तावेज पेश करती हैं. 'गिद्ध' राजाराम सिंह, अकाल की भयावह स्थितियों के बीच फंसे आदमी का आर्तनाद है. 'भूख' दीप्ति खंडेलवाल एक ऐसी ग्रामीण युवती की विवशता भरी व्यथा है जो पति तथा बच्चे की भूख मिटाने के लिए बेहिचक तन बेचती है. यह है आज का सत्य. जिसे हम लाख कोशिश के बाद भी झुठला नहीं सकते. 'कलाबाज' (अजित पुष्कल) में समाज के दलालनुमा चेहरे का चित्रण जम कर हुआ है जो चिल्ला रहा है कि वह है समाजसेवी, राष्ट्रभक्त लेकिन दरअसल वह धोखेबाज है, दूसरों के श्रम को सीना तान कर चाट रहा है—पता नहीं कब तक चाटता रहेगा. 'सुख' (इन्द्राणी) उस वर्ग की युवती की कथा है जो जूठे बर्तन उठाती है—बर्तन धोती है—फिर भी उसका शरीर नंगा है—पेट भूखा है परिवार रोटी के लिए तड़प रहा है. 'एक पैकेट जिन्दगी' उर्मिला पाण्डेय—बाढ़ की आई जैसे नर-पिचाशों को वासना की तृप्ति का मानों अस्त्र मिल गया. बाढ़ में फंसे मानव की चीख की अभिव्यक्ति अनूठी है. दूसरे विश्व-युद्ध की कहानी पढ़ कर रोंगटे खड़े हो गये.

कुछ-स्याह कुछ-सफ़ेद के अन्तर्गत इस मरतबे कमल गुप्त ने अस्पताल का भ्रमण कराया है. वास्तव में भारत का अस्पताल यमलोक बन चुका है. सम्पादक ने बारीकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के साथ भारतीय अस्पताल की दुरव्यवस्था पर प्रहार किया है. व्यंग्य की भाषा अभिव्यक्ति वास्तव में अनूठी है. ऐसी व्यंग्य रचना मुश्किल से ही नज़र आती है. धन्यवाद !

—सदानन्द झा, पुराना बाजार, झाझा, मुंगेर (बिहार)

'कहानीकार' (अ-सि. संयुक्तांक) पूर्णांक ५० की बहुत-सी रचनाएं आज की ज़िन्दगी का प्रतिनिधित्व करती हैं. कहानियों में 'चोंटी' 'गिद्ध', 'एक पैसे ज़िन्दगी' तथा 'सुख' आदि अच्छी हैं. जहाँ तक दीप्ति खण्डेलवाल की कहानी 'भूख' की बात है तो यह आंचलिक कहानी भी कुछ शर्तों का पालन तो अवश्य ही करती है पर दीप्ति जी जैसी कहानियाँ लिखती हैं, वैसा परिवेश नहीं बन पाया है. फिर भी कहानी कई दृष्टिकोण से अच्छी है. 'कुछ-स्याह कुछ-सफ़ेद' के अन्तर्गत कमल गुप्त की व्यंग्य रचना 'यमलोक की यात्रा' अपने में एक गहरा प्रश्न समेट कर आई है.अलीम मसरूर का उपन्यास 'बहुत देर कर दी'—अपने आप में एक चुनौती है, इन रचनाकारों को मेरी बधाई.

—रामप्रताप नीरज, बुधनगरा डेवड़ी, जनकपुर रोड, सीतामढ़ी (बिहार)

'कहानीकार' का मानवीय पीड़ा अंक पढ़ा. आप जिस ईमानदारी से निबाहते हैं वह कम नहीं है, मेरा अपनापन स्वीकारें.

'कहानीकार' का मैं नियमित पाठक रहा हूँ और बार-बार अपनी प्रतिक्रिया भी प्रेषित की है आप मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए प्रतिबद्ध हैं और यही एक समग्रता है, जिसके निमित्त 'कहानीकार' की व्यापकता स्वीकारनी पड़ती है.

प्रस्तुत अंक में चोटी, भूख, कलाबाज और यमलोक की यात्रा को मैं विशिष्ट उपलब्धि स्वीकारता हूँ. यमलोक की यात्रा की कला भंगिमा बार-बार अभिभूत करती है मैं व्यंग्य का ऐसा ही तेवर पसन्द करता हूँ.

—जगदीश विकल, दूबे टोला, दरियापुर, चम्पारण

'कहानीकार' का मानवीय पीड़ा अंक मिला. मैंने जितने अंक इसके पहले पढ़े सब अंक उन सबमें सर्वश्रेष्ठ लगा. मानवीय सम्बन्धों से जुड़ी हुई वास्तविक ज़िन्दगी का चित्रण इन कहानियों में किया गया है. किस कहानी को सर्वश्रेष्ठ घोषित करूँ कहना मुश्किल है फिर भी अकाल का सही चित्रण करने वाली कहानी 'गिद्ध' (राजाराम सिंह) कुछ सोचने को मजबूर करती है. 'कितने अच्छे दिन' सारिका में कमलेश्वर की कहानी पढ़ने के बाद अकाल का सही चित्रण प्रस्तुत करने वाली यह दूसरी कहानी है.

'भूख' दीप्ति खण्डेलवाल, भारत की एक नारी जब कि महिला वर्ष चल रहा है पति की जान बचाने के लिए अपनी अस्मत बेच देती है. आखिर भारतीय नारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इसके सिवा कर भी क्या सकती है ? 'कलाबाज़' (अजित पुष्कल) मानवीय पीड़ा का जागता मिसाल है. अन्य कहानियाँ भी अच्छी लगीं. आशा है आने वाले अंक भी इसी तरह मानवीय पीड़ाओं से ओत-प्रोत रहेंगे.

—रमेश मनोहरा, शीतला घाट, गामोठ की गली, जबरा (म प्र.)

'कहानीकार' का मानवीय पीड़ा अंक देखा. अजित पुष्कल की 'कलाबाज़' आम आदमी के शोषण और पीड़ा को सार्थक और प्रामाणिक रूप से अभिव्यक्ति करने के कारण काफ़ी समय तक याद रहेगी सबसे अधिक खुशी हुई. लघुकहानी विशेषांक की घोषणा से. लगता है इस उपेक्षित विधा को कुछ नया दे सकेंगे. बधाई.

—बलराम, १०।१०८ खलासी लाइन, कानपुर—२०८००१

पूर्णांक ५१ : कुछ प्रतिक्रियाएं

'कहानीकार' का पूर्णांक ५१, त्रिया चरित्रम्—कितना सच, कितना झूठ खण्ड एक देखा. कहानीकार में प्रकाशित इस अंक की प्रायः सभी कहानियाँ 'यथा नाम तथा गुण' को चरितार्थ करती हुई प्रतीत होती हैं. फिर भी परमानन्द अश्रुज 'झूठ के खंजर' नीर शबनम 'एहसास' आदर्श मोहन सारंग 'अभिमानिनी' शशिकर 'अस्वीकार स्वीकार' आदि कहानियों में सहज अभिव्यक्ति देखने को मिलती है. इसके लेखक निश्चय ही बधाई के पात्र हैं.

कमल गुप्त जी का व्यंग्य 'क़िस्सा औरत की खूबसूरती का' अपने आप में बड़ा ही सशक्त है. मेरी ओर से साधुवाद. कुल मिला कर 'कहानीकार' का यह अंक अपनी विशिष्टता समाहित किए हुए है.—राजेन्द्र प्रकाश वर्मा १६२ जोरबाग,नई दिल्ली—३

'कहानीकार' का पूर्णांक ५१ देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. आशा के विपरीत अंक अत्यधिक सुन्दर बन पड़ा है. मेरे विचार से साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये "कहानीकार' का नियमित पाठक होना अनिवार्य है.

सभी रचनायें अपने स्तर को बनाये हुए हैं. कमल गुप्त और पुष्कर द्विवेदी की रचनायें बेहद पसन्द आईं.

भारत के आधुनिक साहित्य में 'कहानीकार' प्रकाश स्तम्भ की तरह जगमगाता रहा. मेरी हार्दिक बधाई स्वीकारें. भविष्य में भी उत्कृष्ट पाने की इच्छा के साथ,

—रमेशरंजन त्रिपाठी, टीकगढ़, म. प्र.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिहास-पृष्ठ

महिला वर्ष की एक गोष्ठी में शास्त्रीजी को शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. प्रत्येक गोष्ठी बाद कुछ लोग अलग-अलग अपनी गोष्ठी बना हैं. ऐसी गोष्ठी में शास्त्रीजी ने महिलाओं पर व्यंग्य किया कि महिलाएं कोई भेद कर नहीं रख सकतीं.

'यह ग़लत है.' एक महिला के विरोध किया.

'आश्चर्य है मेरे लिए.' शास्त्री जी ने कहा.

'होगा, लेकिन मुझे ही लीजिये, मैंने अपनी उम्र की बात छिपा रखी है मैं छब्बीस की हुई तभी से.'

'एक दिन ऐसा आयेगा जब कि आप छिपा नहीं सकेंगी.' शास्त्री जी ने कहा.

'मैं ऐसा नहीं सोचती.' महिला ने कहा, 'जब मैं बारह वर्ष तक भेद छि सकती हूँ तो हमेशा के लिए छिपा सकती हूं.'

'अपनी उम्र बताने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ.'

■

उसी गोष्ठी में एक युवती की ओर मुखातिब हो कर शास्त्री जी ने पूछा, 'आप उम्र क्या होगी.'

यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है.'

'मतलब ?'

'मतलब यह कि जब पिता के साथ कहीं जाती हूँ तो अठारह की होती हूँ मां के साथ बारह की.'

■

बात उम्र से हटी तो रूप और सौंदर्य के दायरे में घूमने लगी. शास्त्री जी कहा, 'चाहे जो हो उम्र के छिपाव के बाद भी औरतें होती हैं आकर्षक.'

'इसके कारण आप नहीं जानते हैं शायद.' एक महिला ने कहा.

'शायद नहीं.'

'इसका कारण यह है कि महिलाओं को भगवान ने स्वयं अपने हाथों से बना और पुरुषों का ठेक पर गढ़वाया है.'

उत्तर में शास्त्री जी ने खिसिया कर कहा—'महिला वर्ष है, चाहे जो कह लीजिये.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पति-पत्नी १९७५—लेखा-जोखा

तारिक 'कार्टूनिस्ट'

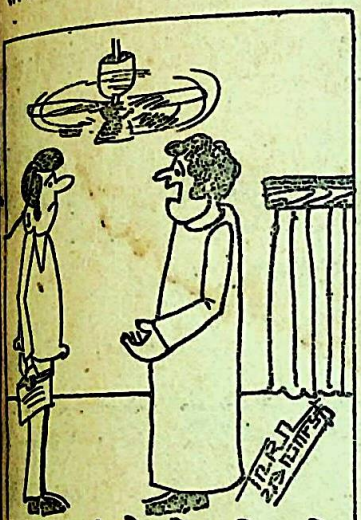

घर बटन टांकने की मुसीबत से बचने के लिए पत्नी ने दर्जी से कहकर ऐसे कपड़े सिलवा दिए हैं।

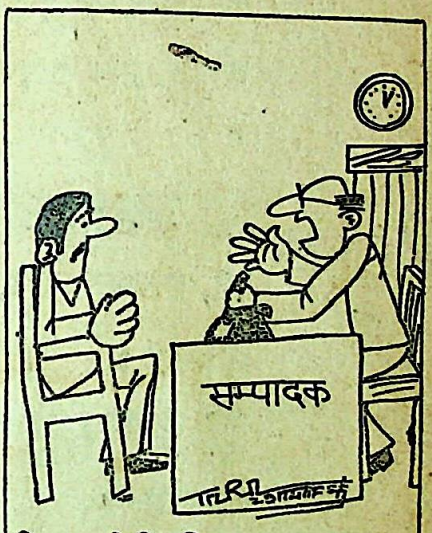

केवल पतियों की बुराइयां न छापूँ तो क्या करूँ? आखिर रहना तो मुझे घर में ही है।

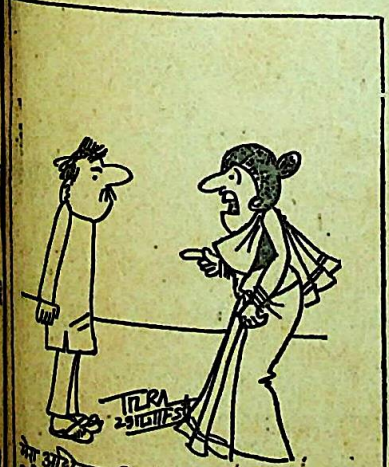

मेरा अधिकार कोई कैसे छीन सकता है? आखिर तुम्हारे दोस्त तुम्हें मूर्ख, निकम्मा, नालायक, कमीना, क्यों कहते हैं?

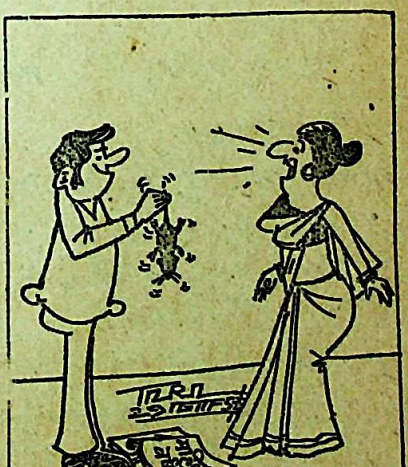

भगवान के लिए रहम कीजिए! मैं कभी भी आपका विरोध नहीं करूँगी!

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२० सूत्रीय
आर्थिक कार्यक्रमों
को सफल बनायें
•
अनिल इन्जीनियरिंग कम्पनी
३५, लाजपत नगर, वाराणसी.
एजेन्ट :
दी इण्डस्ट्रियल गैसेज लिमिटेड
कलकत्ता–१

कहानीकार सदस्यता कूपन

व्यवस्थापक दिनांक.....
के ३०।३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) व.राणसी-१

महोदय

मैं 'कहानीकार' द्वैमासिक पत्रिका का ग्राहक बनना स्वीकार करता हूं।करती हूं. इस हेतु मैंने वार्षिक सदस्यता शुल्क ६) धनादेश (एम० ओ०) द्वारा, जिसकी पोस्ट रसीद संख्या.....है, दिनांक.....को भेज दिया है अथवा इस हेतु आप नए अंक की रु० ८) की व्ही० पी० पी० (वार्षिक सदस्यता शुल्क तथा डाक व्यय सहित) मेरे नाम भेज दीजिये.

.....

पता.....

.....हस्ताक्षर.....

इस कूपन के द्वारा सदस्य बनने पर पत्रिका के दो पूर्व प्रकाशित अंक आप को मुफ्त मिलेंगे. अतः कूपन को भर कर काट लें और पोस्ट कर दें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सौन्दर्य
का
संगीत
सुन्दरतम्
साड़ियों
की
साज
पर
बजता है

विजय बंदर्स

प्रो. जगमोहनदास सतीशकुमार
डी. ३७/४२ गोदौलिया, वाराणसी
फोन: ६७०८५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

H.W. पंजीकृत सं० आर० एन० १५२५०/६७ ● डाक पंजी० सं० एल०आर०ए०/

कहानीकार प्रकाशन ■ के. ३०/३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) वाराणसी, फो० १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

टूटते संबंधों की कहानियाँ

कहानीकार

विशिष्ट कहानियों
मासिकी

विशेष आकर्षण • बहुचर्चित उर्दू उपन्यास
'बहुत देर कर दी'
का धारावाहिक तीसरा अंश

जनवरी १९७५
वर्ष : [illegible] पूर्णांक : ४५

कहानीकार प्रकाशन
१ रुपया

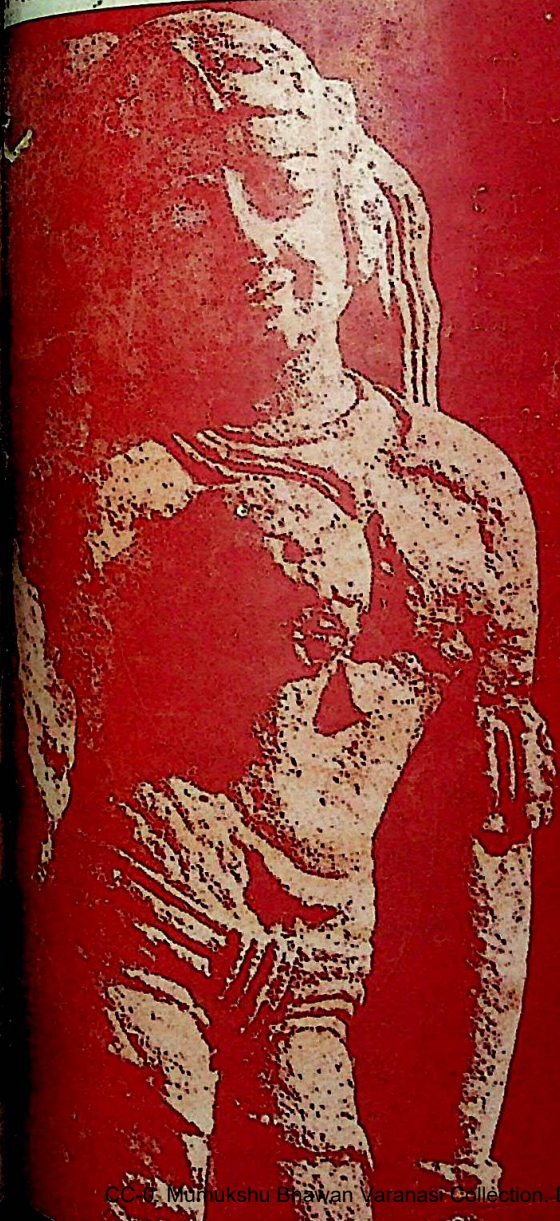

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमि विकास बैंक द्वारा

किसानों को आमन्त्रण

कृषि उत्पादन बढ़ाना प्रदेश के प्रत्येक कृषक का कर्त्तव्य है। भूमि विकास बैंक द्वारा लघु सिंचाई एवं अन्य कृषि कार्यों हेतु दी जाने वाली सुविधाओं का लाभ उठायें।

बैंक सिंचाई कूप, पंपिंग सेट डीजल इंजन, बोरिंग, रहट, नलकूप, ट्रैक्टर, पावर टिलर आदि के लिए दीर्घ-कालीन ऋण उपलब्ध करता है।

बैंक से ऋण ६½% के रियायती ब्याज की दर पर मिलता है। बैंक का ऋण आसान किश्तों में अदा किया जाता है।

अधिक जानकारी हेतु अपनी तह-सील के भूमि विकास बैंक के शाखा प्रबन्धक से सम्पर्क करें।

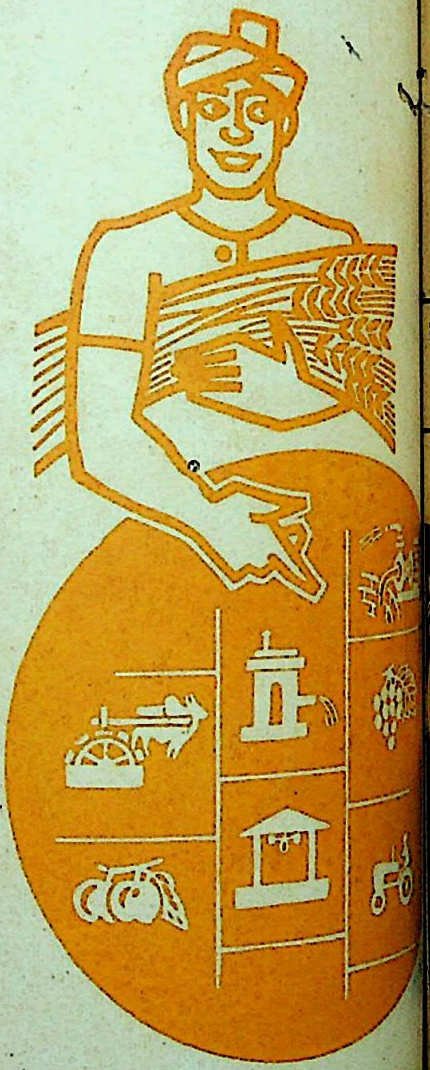

उ०प्र० राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक लि० द्वारा प्रसारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

साहित्यिक,
और
कलात्मक
रुचिवाले व्यक्तियों
के लिए

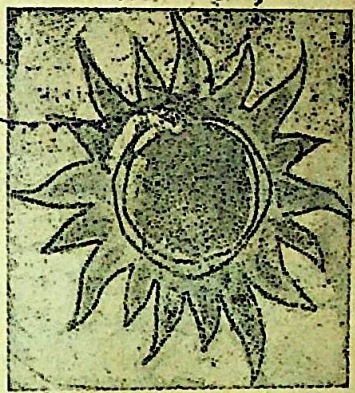

सारे देश में ए० एच० ह्वीलर के रेलवे बुक स्टालों तथा अन्य सोल एजेंटों द्वारा 'कहानीकार' आपके लिए उपलब्ध है.

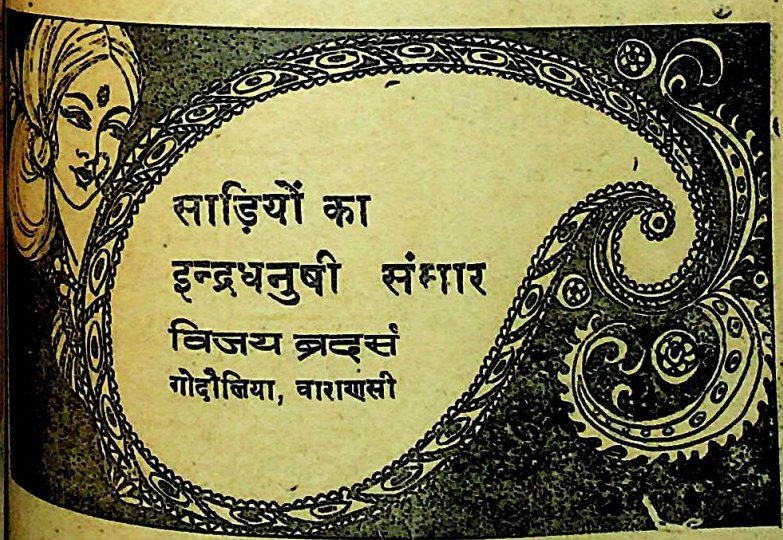

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२७ जनवरी १९७५
को
होटल नटराज का
भव्य उद्घाटन

वाराणसी के गौरव शाली
होटलों की परम्परा में
एक और कड़ी—

होटल नटराज

(शाकाहारी एवं कान्टिनेण्टल डिशेज में विशिष्ट)
लहुरावीर ● वाराणसी
फोन० : ६६३२२-५४०१२

शिव होजरी की
मुलायम, टिकाऊ और
सुखप्रद परिधान

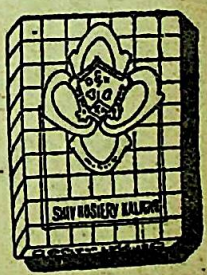

दरबार
स्नोयी
गोल्डन लोटस
इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता : शिवचरन दास खली
१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताक़त

मर्द की शान मर्द की पहचान

इस ताक़त को बनाये रखने के लिए, सदाबहार चुस्ती, फुर्ती और नौजवानी की सी उमंग के लिए ओकासा स्वास्थ्यदायक टॉनिक टिकियाँ लीजिये। ओकासा टॉनिक टिकियों की अनोखी शक्ति से आपके शरीर और दिमाग़ को लगातार नयी ताक़त मिलती है।
ओकासा की टिकियाँ पर चाँदी चढ़ी रहती है।

ओकासा
टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चाँदी वाली

हार्मो-फ़ार्मा लिमिटेड
लंदन-बर्लिन का उत्पादन

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO.PVT.LTD.,12A Gunbow Street. P. B. No. 396,Bombay-400001

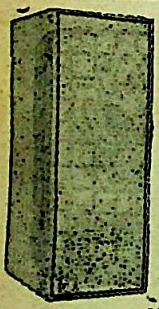

BUSH
BEETHOVEN
SOLID STATE STEREO SYSTEM

- बुश तथा मर्फी--रेडियो, ट्रांजिस्टर्स
- उषा तथा ओरिएंट पंखे, लियोनार्ड रेफ्रिजरेटर्स
- एच एम वी पोलीडोर तथा सरगम रेकार्ड

आनन्द रेडियो कारपोरेशन
AC ANAND Radio Corporation
GRAM: ARCO. PHONE: 66446 GUDAWLIA VARANASI.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

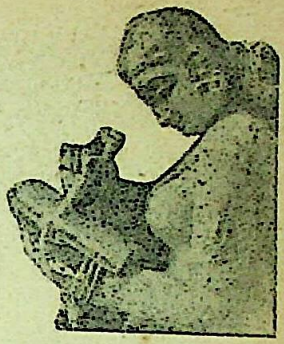

कहानी कार

जनवरी '७५

अंक : पूर्णाङ्क ४५

सम्पादक—
कमल गुप्त

मूल्य : बारह रुपये
विदेश में : बीस रुपये
एक अंक : एक रुपया

कार्यालय—
३०।३७ अरविंद कुटीर
(सिगरा भैरवनाथ)
वाराणसी-१. फोन ६६६६५

मुद्रक सज्जा—श्री अन्नपूर्णा
प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी

मुखपृष्ठ ब्लाक—
[illegible] ब्लाक वर्क्स, वारा०

☐ कहानियाँ

नया पंचतन्त्र	६	अक्षपटलिक
एक और अन्त	२८	ब्रह्मदत्त
परिवार	३६	कुंवर प्रेमिल
उपेक्षित	४२	प्रेम पाठक
प्रतिक्रिया	४८	भगवान वैद्य
नकेल	५८	फकीर चन्द शुक्ला

☐ धारावाहिक उपन्यास

बहुत देर कर दी (उर्दू)	८	अलीम मसरूर

☐ अन्य स्तम्भ

कुछ स्याह : कुछ सफेद	६६	कमल गुप्त
अंदाजे बयाँ और	७४	'जिगर'
परिहास पृष्ठ	७६	मधुर
इत्याख्यान	७९	रजनीश प्र० मिश्र
रंगमंच	८२	क० गु०
१९७४ हिन्दी नाट्योत्सव	८४	डा०भानुशंकर मेहता
एक खत में बन्द...	८८	डा० कृष्ण भावुक
आपने लिखा है	९२	

दो आकर्षक कथा योजनाएं—

☐ त्रिया चरित्रम् कथांक

☐ नीति कथांक

विशेष विवरण पृष्ठ ८३ पर प्रकाशित.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

(छठवीं कहानी)

प्रलय आ ग

उसने प्रलय का नाम भर सुना था. साथ में यह भी सुन रखा था कि प्रलय आने पर जंगल में कोई भी जन्तु शेष नहीं बचेगा. अधिक घबराहट आदमियों के उसने जब कभी किसी मनुष्य को, जिसके पास लोहे की नली वाली छड़ी थी जंगल में आते देखा था तो उसके होश उड़ गये थे और वह बहुत दूर तक भाग और भागता गया था. उसके लिए तो जंगल में एक मनुष्य का इस प्रकार आंशिक प्रलय ही था.

उस दिन जगंल में शाम उतर ही रही थी कि वह अपने बिल में से निकल जंगल के बाहरी किनारे की सबसे ऊँची पहाड़ी पर चढ़ गया था. इसके पहले कि हाथ-पैर सीधा करता उसकी दृष्टि दूर बहुत दूर सामने की ओर जा कर अटक गई उसकी आँखें भय से फैलीं तो फैलती ही गईं. कुछ क्षण वह होश-हवास गुम किये देखता ही रहा. आदमियों की अन्तहीन तीन कतारें खाकी वस्त्र पहने और कन्धे वही लोहे की नली वाली छड़ी रखे बड़ी शीघ्रता से जंगल की ओर बढ़ती आ रही कतारें समाप्त होने का नाम ही न लेती थीं. ऐसा लगता था जैसे दूर चिड़िया आदमी निकलते चले आ रहे हैं.

जब वह होश में आया तो बेतहाशा जंगल के अन्दर भागा जा रहा था और ही चिल्लाता जा रहा था—प्रलय आ गई है.

प्रलय आ गई...!

कुछ ही देर में जंगल के हज़ारों जन्तु एक पहाड़ी के नीचे एकत्र थे और उनका राजा घबराया हुआ उन्हें सम्बोधित कर रहा था. राजा के पास ही खड़ा भयभीत थर कांप रहा था और जो कुछ राजा कहता उसकी वह जोर-जोर सर हिला हामी भरता था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारी बातें सुन लेने के उपरान्त जन्तुओं को इस निष्कर्ष पर पहुँचते देर नहीं लगी कि सचमुच प्रलय आ गई है और वह सब कुछ ही देर के मेहमान हैं. वह समझ रहे थे कि पचासों हजार मनुष्य आ कर अभी जंगल घेर लेंगे और जानवरों को एक तरफ़ से घेरा कर उनकी लाशें उठा ले जायेंगे.

सारी रात सारे के सारे जानवर घबराहट में उसी तरह खड़े रहे. उनके शरीर काँप रहे थे और सबके दिल जोरों से धड़क रहे थे. माँएं अपने बच्चों को चाट रही थीं और रो रही थीं. जिनके पेट में बच्चे थे वह तो खड़ी भी न रह सकी थीं और मैदान पर मिट्टी की ढेर-सी पड़ी थीं. उनके आँसू रुकने का नाम तक न लेते थे. बच्चे कुछ समझ नहीं पा रहे थे. वह केवल रुआंसे हो कर अपनी माँओं के भयभीत चेहरे देखते और उनके पैरों में भिड़ कर खड़े हो जाते थे.

रात भर मनुष्यों की वह कतारें जंगल के एक कने से घुसतीं और अन्त में एक बहुत बड़े खुले मैदान में आ कर समाती गईं. जो चतुर जानवर खोज-खबर लेने भेजे गये थे उन्होंने आ कर बताया कि सारे मनुष्य कपड़ों का मकान गाड़ कर उसी में रहने लगे हैं और वह सब एक ही आदमी का कहना मानते हैं और उसी के इशारे पर सारा काम करते हैं.

कुछ सूझ-बूझ वाले बड़े जानवरों की एक सभा हुई और यह तै किया गया कि उनके दो-चार प्रतिनिधि जा कर मनुष्यों के सरदार से मिलें और उन्हें यहाँ ले आ कर जानवरों की दशा दिखायें.उससे यह भी विनती करें कि इनके प्राणों की भिक्षा दी जाय.

दूसरे दिन सुबह ही जानवरों का प्रतिनिधि मण्डल आदमियों के नेता से मिला तो उन्हें मालूम हुआ कि उस नेता का नाम कमाण्डिंग आफ़िसर है. कमाण्डिंग आफ़िसर ने दया वश एक घण्टे बाद ही जानवरों की वृहद सभा में आना स्वीकार कर लिया.

सभा में कमाण्डिंग आफ़िसर के आते ही खलबली मच गई. उसको सामने टीले पर स्थान दिया गया.उसके एक बगल जंगल का राजा बैठा दूसरी ओर वयोवृद्ध भालू.

सारे जन्तु समुदाय के स्थिर होते ही बूढ़े भालू ने खड़े हो कर विनम्र सम्बोधन करना शुरू किया—महोदय, हम सब तुच्छ जीव इस समय आपकी शरण में हैं और आपसे अपने प्राणों की भीख मांगने यहां एकत्र हुए हैं. हम लोग जानते हैं कि जैसे ही आप लोग चारों ओर से हमें घेर कर मारना आरम्भ करेंगे, हम अपने प्राण नहीं बचा सकेंगे. अतएव हम सबने मिल कर सोचा है कि आपको इन बिलखती हुई माँओं बच्चों को दिखावें और आप से विनती करें कि आप हम सबको जीवन-दान दें. बदले में ईश्वर आप सब को और बहुत ही वस्तु खाने को देगा.

कमाण्डिंग आफ़िसर तुरन्त खड़ा हो कर बोला—तुम सब घबराओ नहीं.हम यहां

(शेष पृष्ठ ९४ पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुचर्चित उर्दू उपन्यास

धारावाहिक तीसरा अंश

पूर्वकथा

दाऊद बनारस का एक साधारण सीधा और कुंआरा जवान है जो सुन्दर बाई की चाल में खौफ़नाक गुण्डे करीम की मेहरबानी के नाम पर मिली तवायफ सुलताना को नकली बीवी बना कर रहता है. किताब की दुकान में नौकर है. उसकी व खूबसूरत सुलताना की जोड़ी पूरे चाल में, दोस्तों और मालिकों के बीच इसे चर्चा का विषय बना देती है. सुलताना की चुटीली बातें कभी बफ़ादार बीवी और कभी तवायफ़ होती हैं जिसके कारण दाऊद के मन में कभी खिंचाव की कशिश तो कभी नफ़रत का ज्वार पैदा होता है. भागना चाह कर भी भाग नहीं पाता. सुलताना की खूबसूरती और हमदर्दी उसे सम्मोहित करती है तो उसका तवायफ होना, करीम की रखैल होना, उसमें विकर्षण, क्षोभ और भय पैदा करता है. दुकान पर दोस्तों की बातों-बातों में ही अनजाने में कटाक्ष निकलते हैं जिससे वह पीड़ित होता है. एक रेणु है जो वेश्यावृत्ति पर थीसिस लिखना चाहती है. एक कायनात है जो सीधी-सादी, प्यारी-सी, गरीबी की मार सहती हुई लड़की है और जो अपने ताज़े नावेल को छपाने के लिए दाऊद से मदद मांगती है. दाऊद के मन में एक हमदर्दी फिर प्यार की किरन फूटती है पर सुलताना को क्या करे वह. बड़ी मुश्किल में दिन गुजरते हैं. वह करीम से मिल कर उससे मुक्ति की बात कहता है पर वह उसके जेबों में इज्जत से 'मौज उड़ाओ' कहते हुए काफी रुपये भर देता है. अजीब कशमकश में वह घर लौटता है जहाँ पड़ोसियों की भीड़ जमी हुई है. सभी सुलताना पर फ़िदा हैं. दाऊद के मन में भी वही चोर घर कर गया है. उसे सुलताना बड़े प्यार से अपने हाथों मालपुए खिलाती है जिसे लेटे-लेटे वह खाता है. फिर सुलताना के सो जाने पर दाऊद के मन-का चोर जागता है लेकिन...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुबह दाऊद की आँख जल्द खुल गयी और वह उठ कर बैठ गया. सुलताना बेखबर सो रही थी, उसका हुस्न जाग रहा था. लेकिन वह उसे उतनी आकर्षक नहीं लगी, जितनी की रात को महसूस हुई थी. वह बहुत शर्मिन्दा था. उसकी स्थिति उस मजबूर लड़की की-सी हो रही थी, जिसकी लाज लूटी जा चुकी हो. उसे अपनी पवित्र आशोश का खयाल आया, जिसकी पवित्रता को उसने क़दम-क़दम पर सँभाला था और जिसको सजाने के लिए वह हमेशा ऐसी लड़की के सपने देखा करता था, जिसे किसी भी पुरुष ने स्पर्श न किया हो.

जब वह बनारस में था तो उसके एक पड़ोसी ने एक नौजवान बेवा से शादी

कर ली थी. जब उस लड़की का डोला उसके पति के द्वार पर उतरा था तो उसने सोचा था कि वह लड़की अपने इस नये घर में पति के लिए मात्र एक श्रद्धा भावना लेकर आयी होगी. उसके मन में अपने नये पति से मिलाप की कोई उत्सुकतापूर्ण कल्पना नहीं होगी क्योंकि वह पुरुषत्व से परिचित थी.

यह खयाल उसके दिल में बार-बार आता रहा कि उसने ऐसा क्यों किया? उसे जैसे कोई ऐसी लड़की नहीं मिली, जिसके मन में पुरुष से मिलाप और उसके आलिंगन की कल्पना एक ऐसा स्वप्न हो, जो हजार बार देखने के बाद भी अनदेखा रहा हो. ऐसी लड़की उसे मिल सकती थी, क्योंकि वह जवान था, खूबसूरत था, अच्छी हैसियत वाला था. जब उसे पता चला कि उसके पड़ोसी ने यह शादी पुण्य-कार्य समझ कर की है तो उसके दिल ने गवाही दी थी कि निश्चय ही यह पुण्य कार्य

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है और उसका पड़ोसी महान पुण्य का अधिकारी है, क्योंकि जवान और बुढ़ापे आरजूओं की यह कुरबानी इच्छाओं को मारने की असीम शक्ति चाहती है और इच्छा का दमन महान आराधना है.

फिर भी वह स्वयं को इस पुण्य कार्य का अधिकारी बनने के योग्य नहीं पाता था. उसने यह सोचा था कि वह ऐसी ही लड़की से शादी करेगा, जो दुल्हन बन कर उसकी निगाहों के सामने सेज पर बैठे तो दोनों एक दूसरे के लिए रहस्यपूर्ण हों और दोनों की आग़ोश एक दूसरे के लिए बेताब हों. उसे यह भी खयाल आया था कि यदि वह मर गया और उसकी पत्नी ने किसी दूसरे मर्द से शादी कर ली तो? इस खयाल से वह कांप उठा था. वह अपनी आग़ोश में रहने वाली किसी लड़की को अपने मरने के बाद भी किसी दूसरे मर्द के आग़ोश में बरदाश्त नहीं कर सकता इसलिए उसने यहां तक सोचा था कि वह अपनी बीवी को वसीयत कर देगा कि यदि वह उसे इस दुनिया में बेवा छोड़ गया तो वह शादी नहीं करेगी, क्योंकि जिसके लिए उसने अपनी खूबसूरत तमन्नाओं को दुनिया की निगाहों से छुपा कर पाला-पोसा और जिसकी खोज में हुस्न की गिरती हुई बिजलियों के बीच वह निर्भय खड़ा रहा, उसे दुनिया का कोई दूसरा मर्द छूने का हक नहीं रखता. उसके बाद हर मर्द की आग़ोश उसके लिए हराम है.

उसने सुलताना की तरफ देखा और सोचा रूप की यह मूर्ति एक ऐसे पीकदान का एक खुबसूरत माडल है, जो हर राह चलते को अपने अन्दर थूकने को उकसाता है. वह उसकी आग़ोश में कभी नहीं आ सकती. रात की बात सोच कर उसे ऐसा कष्ट हो रहा था, जिसे वह अपने उस पाप का दण्ड समझ रहा था, जो उसने कभी किया ही नहीं. ऐसा दण्ड जो उसके लिए असह्य था. उसके अन्तर में एक तूफान उठा हुआ था. उसने सोचा, उसकी वह अन्तरआत्मा, जिसे कल रात नींद आ गयी थी, जाग उठी है. फिर उसे महसूस हुआ कि यह उसकी अन्तरआत्मा नहीं है बल्कि उसे झिंझोड़ने वाली कोई दूसरी शक्ति है जो कहीं से उसके सीने में संचित हो रही है.

उसे कायनात का खयाल आया. आज ही शाम उससे मिलने का वादा था. उसने सोचा, वह उससे जरूर मिलेगा. उसकी मदद भी करेगा. वह ग़रीब है, मजबूर है, बेबस है. शायद उसकी यह हमदर्दी उसके दिल पर आयी हुई मुसीबत का निवारण कर सके.

सुलताना की आंख खुल गयी. वह उठ कर बैठ गयी. उसने देखा बाबूजी जा चुका है. पूछा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'तुम आज बहुत जल्द उठ बैठे !'

दाऊद ने कोई जवाब नहीं दिया. वह बोली—

'रात तुम सो गये. ज़रा-सी आँख लगती तो ऐसा लगता कि घर में चोर घुसा हुआ है. नींद तो आ गयी लेकिन कैसे-कैसे डरावने ख्वाब देखे हैं. तौबा-तौबा !'

दाऊद फिर चुप रहा. सुलताना ने कुछ देर बाद रुक कर पूछा—

'एक बार जहाँ चोर आता है सुना है, बार-बार आता है.'

'जब जाग हो जाती है तो फिर नहीं आता.' दाऊद ने सुलताना की ओर देखे बिना जवाब दिया. उसकी अन्तरआत्मा जाग रही थी.

दरवाज़े पर किसी की आहट हुई. दाऊद ने झुक कर देखा. एक बच्चा झाँक कर आड़ में हो गया. दाऊद ने उसे बुलाया—

'आओ, आ जाओ !'

वह अन्दर आ गया.

'क्या है बेटे ?' सुलताना ने बड़े प्यार से पूछा.

'अम्मी और अब्बू ने कहा है, आज आप लोग नाश्ता हमारे साथ कीजिये.'

'ऐसा ?' सुलताना ने मुस्कराते हुए कहा.

लड़का चुप रहा. सुलताना ने दाऊद से कहा—

'कितना प्यारा बच्चा है. सुलेमान मेमन का लड़का अब्बास मेमन है. इसकी माँ का नाम अमीना है.' फिर उसने अब्बास मेमन से पूछा—

'आज क्या है ?'

'माँ ने दूदी का हलुवा बनाया है.'

'जाओ, अम्मी और अब्बू से कहो हम लोग ज़रूर आयेंगे.'

लड़का चला गया. दोनों तैयार होते रहे और बातें करते रहे. सुलताना ने अमीना की मुहब्बत और शराफ़त की बहुत तारीफ़ की तो दाऊद ने पूछा—

'तुम्हें हर आदमी शरीफ़ लगता है. माथे पर लिखा है क्या ?'

'माथे पर लिखा होता तो मैं यहाँ रह सकती ? मैं नहीं जानती शरीफों को लोग कैसे बर्बाद करते हैं. मुझे तो रजील और शरीफ़ की पहचान है. मेरी सात पुश्ते रज़ीलों के साथ गुज़री हैं.'

'लेकिन तुम तो ऐसी बातें करती हो जैसे इस चाल में कोई रज़ील है ही नहीं.'

'एक नहीं, दर्जन भर होंगे. मैंने बताया नहीं तो क्या जाना भी नहीं...फ़ातमा बी अब क्या गुल खिलायेगी, वज़ीरा की पूछो. मुझे डर है कि मेरे बाद तुम्हें उसे न देखना पड़े. हर वक्त ताक-झाँक नाज़-नखरे...बाईस नम्बर क़मरे में मिस गोम्स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहती है. अस्पताल में नर्स है. वज़ीरा की सरपरस्त है. वह मेरी ही तरह कुंआरी है. कमबख्त मुझे फ़ैमिली प्लैनिंग के गुर सिखाती रहती है जिसके यहाँ पाँच बच्चों की माएं कुंआरियों के भाव बेच डाली जाती हैं. लक्ष्मी बाई निहायत सीधी और बेज़बान औरत है. उसका शौहर बेहद कमीना है. नांदरेकर निहायत शरीफ़ मर्द है. उसकी बीवी इन्तहाई ज़ालिम है. तमंचा जान मासूम लड़की है. डर है कि कोई उसे ले न डूबे. अपना रवैया नहीं बदलेगी तो आज नहीं तो कल सुन लेना. बतूल और हुसैन निहायत शरीफ़ मियाँ बीवी हैं. उनका लड़का क़ुरबान बेहद आवारा है. मुझे देखता है तो उस पर दौरा पड़ने लगता है. समझता है कि मैं जल्द ही उस पर मरने वाली हूँ....क़ादिर मेरे फ़िराक़ में बुरी तरह परेशान रहता है. कल तो उसने मुझे ऐसी निगाहों से देखा कि मैं उसे आँख मारते-मारते बची. ख़याल आ गया, तुम्हारी बीवी हूँ.'

'अच्छा बस !' दाऊद ने घबरा कर सुलताना को रोक दिया.

'सुलताना थोड़ी देर के लिए चुप हो गयी फिर कहने लगी—

'मुझे इसका मौक़ा ही कहाँ मिलेगा कि सबके बारे में इतनी सारी बातें बता सकूं. मेरे बाद समझ-बूझ कर रहना. जिनकी तारीफ़ करूं उनसे मिल-जुल कर रहना. आराम से रहोगे. आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने.'

'मेरे बारे में भी कुछ बता के जाना.'

'तुम कौन बड़े करीम दादा हो, जिसकी थाह न मिले. देख लिया, समझ लिया. शरीफ़ हो, सीधे हो वरना आती ही क्यों. मेरी मिट्टी न पलीद हो जाती.'

'फिर तुमने मुझे छेड़ा क्यों ?'

'छिनाल औरतों की तरह बातें मत करो. अरे छेड़ ही दिया तो क्या, मेरा तो यही काम है.'

'कुछ हो जाता तो ?'

'कुछ हो जाता तो मेरा क्या बिगड़ जाता. तुम शरीफ़ रह जाते तो रो-धो कर तौबा कर लेते, नहीं तो मुझे ढूँढते फिरते. फिर होतीं मुलाक़ातें...लेकिन तुम्हारे मुलाकातें भी किस काम की. डेढ़ सौ रुपल्ली में क्या नहाते, क्या निचोड़ते.'

यह कहते हुए सुलताना हँस दी.

'तौबा करके शरीफ़ रह जाने की खूब कही.' दाऊद ने व्यंग्य से कहा.

'क्या झूठ है ? खुदा माफ़ करने वाला है तो तुम कौन. मैं ऐसे बहुत से शरीफ़ों को जानती हूँ.'

'अब तुम हर मर्द को ले डूबना चाहती हो.' दाऊद ने बात काट कर कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हर मर्द को क्यों. तुम्हारे जैसे भी तो इस दुनिया में बहुत होंगे.'

'हो सकता है तुमसे मिलने के पहले मैं तौबा कर चुका होऊँ.'

'ऐसे दिल गुर्दे के आदमी तो नहीं हो.'

दाऊद अपने ऊपर यह कटाक्ष सहन कर गया और चुप रहा.

'चुप क्यों हो गये ?' सुलताना ने हँस कर पूछा.

'अब चुप ही रहने दो.'

'ताव मत खा जाना. बुरी बात है. तुम मुझे ऐसे ही बहुत अच्छे लगते हो.'

दाऊद कपड़े पहन चुका था. उसकी पतलून में वह रुपया हिफ़ाज़त से रखा हुआ था, जो उसे करीम से मिला था. वह उसके उपयोग के बारे में कोई निर्णय न कर सका था. लेकिन वह सुलताना को यह भी नहीं बताना चाहता था कि वह रुपया कहाँ से आया. डर था कि वह ताने देगी.

सुलताना ने अपना सूटकेस खोला. उसमें से एक साड़ी और ब्लाउज निकाला और दाऊद के सामने बदलने लगी. दाऊद ने पूछा—

'कितनी साड़ियाँ लायी हो ?'

'तीन ही लायी थी. मैं क्या जानती थी कि इस मुसीबत में फँस जाऊँगी.' सुलताना ने बात तो शिकायतन कही थी पर उसका स्वर शिकायत भरा नहीं था.

'तुम्हारी नाराज़ी ठीक है. लेकिन मैं क्या करूँ ?'

सुलताना ने कोई जवाब न दिया. दाऊद ने फिर कहा—

'चलो आज कुछ साड़ियां ले लो.'

सुलताना चौंक पड़ी, बोली—

'बड़े रईस हो गये हो क्या ?'

'तुम्हारे लिए होना ही पड़ा.'

सुलताना ने मुंह फेर कर ब्लाउज बदलते हुए कहा—

'यह भी ठीक है. हम लोगों से मिलने वाले को रईस बनना ही पड़ता है, चाहे घर बिक जाये...करीम से रुपया लाये हो क्या ?'

'नहीं !' दाऊद ने इतनी ज़ोर से कहा जैसे उसे डर हो कि मुँह से 'हां' न निकल जाये.

'तो क्या पास के पैसे खर्च कर डालोगे ?'

'नहीं, इन्तज़ाम किया है. कभी अदा कर दूँगा. अभी जल्दी नहीं.'

यह कहते हुए दाऊद ने अपनी जेब से एक हज़ार रुपया निकाल लिया. जब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुलताना उसकी ओर मुड़ी तो उसने उसके आगे करते हुए कहा—

'यह देखो ?'

'लाओ मुझे दे दो.' सुलताना ने कहा.

दाऊद ने वे रुपये सुलताना को दे दिये. उसने गिने और बोली—

'इतना सा रुपया ?' और अपने ब्लाऊज़ में रखते हुए कहा—'तुम अपनी लूंडे पर चले जाना. मैं खुद बाज़ार जाऊँगी. कई दिन से घर से बाहर नहीं निकली. मैं घबरा रहा है.'

'अकेली जाओगी ?'

'अकेली क्यों, जुबैदा भाभी और अमीना भाभी को साथ ले लूँगी.'

अब्बास मेमन फिर बुलाने आ गया. दोनों तैयार हो चुके थे. दाऊद ने कमरे में ताला बन्द किया और दोनों उसके साथ चले. अमीना और सुलेमान ने बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया. टेबुल पर नाश्ता चुना हुआ था. सब लोग एक साथ बैठ गये. सुलेमान मेमन ने कहा—

'भई माफ़ करना, तकलीफ़ दी. बात यह है कि अमीना आप लोगों की बड़ी तारीफ़ करती है. मुझे अफ़सोस रहा कि आप लोगों से मुलाक़ात न कर सका. शोर इसी बहाने मुलाकात हो जाये. आप लोग आ गये बहुत-बहुत शुक्रिया.'

'इस इज़्ज़त अफ़ज़ाई का शुक्रिया तो हमें अदा करना चाहिये.' दाऊद ने बड़ी विनम्रता से कहा.

'दाऊद भाई, रस्मी बातें बन्द, बिस्मिल्लाह कीजिये.' सुलेमान ने मुस्कराते हुए कहा.

सब लोगों ने नाश्ता शुरू कर दिया. बूंदी के हलुवे के साथ अंडे और पराठे थे. दाऊद ने मज़ा लेते हुए कहा—

'आप लोगों ने बड़ा तकल्लुफ़ किया.'

'तकल्लुफ़ करते तो शायद अभी मुलाक़ात न हो सकती.' सुलेमान ने जवाब दिया.

नाश्ता करते हुए सुलताना की नज़र अमीना की मसहरी पर पड़ी. लखनवी पलंग की नक़्क़ाशी अवध के नवाबों के दौर का नमूना थी.

'अमीना बहन, यह मसहरी कब मँगायी ? पहले तो शायद यहाँ दूसरी थी. बड़ी क़ीमती है.'

'मसहरी ही नहीं हर चीज़ कीमती है. वह देखिये कैबिनेट, यह सिंगारदान' सुलेमान ने बैठे-ही-बैठे इशारे से बताया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाऊद और सुलताना ने देखा.सचमुच हर चीज़ बेहद खूबसूरत और क़ीमती—प्राचीन कला का नमूना.

'आप बहुत शौक़ीन हैं सुलेमान भाई !' दाऊद ने प्रभावित होते हुए कहा.

'शौक़ की बात नहीं दाऊद भाई. चोर बाज़ार में मेरी पुराने फ़र्नीचर की दुकान है. यह सब सामान लोगों के बिगड़े वक़्त की निशानियां हैं. सस्ते दामों में मिल गये तो ख़रीद लिया. यह मेरा घर भी है, गोदाम भी. घर में ऐसा फर्नीचर रखता हूं, जो सलीक़े से रखा जा सके और इस्तेमाल में भी आ सके ताकि रहने की तकलीफ़ न हो. हो सकता है आप दोबारा आयें तो यहां दूसरा सामान मिले, यह बिक जाये और दूसरा आ जाये.'

'बड़ी दिलचस्प बात है.' दाऊद ने मुस्कराते हुए कहा.

'बम्बई ही बड़ा दिलचस्प है. यहां कोई चीज़ आज एक की है तो कल दूसरे की, यहां तक की बीवी भी.' यह कहते हुए सुलेमान मेमन जोर से हंस पड़े. दाऊद मौन ही रहा. उसे यह बात दिलचस्प नहीं लगी.

सुलताना ने दूदी का हलुआ मुंह में रखते हुए कहा—

'बड़ी दिलचस्प बात है.' और कनखियों से दाऊद की ओर देखा तो वह पानी पी रहा था.

'दाऊद भाई, आप तो पानी पीने लगे. पहले खाइये तो.' सुलेमान ने कहा.

'बहुत खा लिया. शुक्रिया !' दाऊद ने ऐसे कहा जैसे उसका मन उचाट हो गया हो.

'नहीं दाऊद भाई, थोड़ा-सा और लीजिये न...सुलताना बहन, तुम कहो न !' अमीना ने कहा.

लेकिन सुलताना भी हाथ खींचते हुए बोली—

'शुक्रिया बहन ! मेरा भी पेट भर गया.'

सुलेमान ने कहा—

'अच्छा, मैं भी बस, दाऊद भाई और सुलताना बहन की मरज़ी नहीं कि मैं खाऊं.'

'नहीं नहीं, आप तकल्लुफ़ क्यों करते हैं. खाइये न !' दाऊद ने ऐसे लहजे में कहा जिसमें जोर नहीं था.

'नहीं भाई बस अब चाय पी जायेगी.' सुलेमान ने कहा.

अमीना ने चाय पहले ही तैयार कर ली थी, इसलिए उसमें भी देर न हुई. सब और जल्दी नाश्ते से फ़ारिग हो गये.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'दाऊद भाई, यह घर भी आप ही का है. मेरे लिए कोई काम हो तो कह दीजिए येगा.' सुलेमान ने कहा.

अनादृत-प्रणाम

जंगल होने का अहसास
वीराना बना देता है,
यादों के दस्ताने पहन कर
जब मन की अंगुरियाँ
हवाओं में लिखे
गन्धों के गीत मिटा देती हैं
आंखों के मुरझाए हुए, दो फूल
प्रतीक्षा के वहम को
ढोते रहते हैं,
अतीतों के पाहुने
कोई जब
चटकी हुई पसली के ऊपर
ताजी ताजी अपेक्षाओं के ओंठ रख दें,
तो कहना पड़ेगा
अभी जाने के दिन बाकी हैं.
व्याकुलता को जन्म देकर
अनन्त कामनाओं के प्रणाम
अनादृत, संकेतों की
भाषाओं को लूटकर,
चल देते हैं
और फिर
जंगल होने का अहसास
वीराना बना देता है.

—पूरन 'निर्दोष'

उसके बाद सिवाय चन्द रस्मी बातों के और कोई बात न हो सकी. सुलेमान जल्दी ही अपने कमरे में लौट आये. सुलताना के चेहरे पर उदासी छाई हुई थी. सुलताना ने कमरे में दाखिल होते ही पूछा—

'तुम आदमी हो या मोमबत्ती. जरा सी हवा लगती है तो बुझ जाते हो.'

'सुलताना मैं बहुत कमजोर इनसान हूं.'

'आपको अब पता चला है. इस बात पर तो मैं कब का मातम कर चुकी. अब क्या कहूं.'

दाऊद सिटपिटा गया. सुलताना ने तसल्ली देने के अन्दाज में कहा—

'मर्द हो न. अपनी नहीं तो दुनिया के मर्दों की लाज रख लो. नहीं तो लोग क्या कहेंगे. मेरे शौहर हो न. मुझे ही शर्मिन्दा करने पर तुले हो. जाओ, आराम से अपना काम करो. बहुत सोचते हो. ऐसा न हो कि डाक्टर के यहां ले चलना पड़े.'

दाऊद जाने लगा तो सुलताना ने बड़ी मुहब्बत से कहा—

'शाम को देर से मत आना.'

'नहीं सुलताना, आज भी कुछ देर हो ही जायेगी. दुकान का एक काम है.' दाऊद ने कायनात के यहां जाने के खयाल से कहा.

'अच्छा जाओ. लेकिन शाम का खाना मुझसे पूछ कर मंगाना. आज एक चीज खाने को जी चाहता है.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाऊद चला गया.

दिन भर दुकान की गहरी व्यस्तता के बाद जब वह वापस होने लगा तो बहुत थका हुआ था. लेकिन कायनात से मिलने के खयाल से उसकी थकान कम होने लगी. वह सीधा उसके दिये हुए पते पर रवाना हो गया और बड़ी आसानी से उसके कमरे के दरवाजे तक पहुँच गया. कायनात आपाद-मस्तक प्रतीक्षा बनी हुई थी. उसे देखते ही मुस्करा उठी. उसने बढ़ कर उसका स्वागत किया और उसे बैठाने से पहले अपनी माँ से मिलाते हुए कहा—

'अम्मी ! ये वही हैं.'

'बैठो बेटा !' माँ ने बड़े स्नेह से उसे सोफ़े पर बैठाया.

दाऊद ने देखा, कायनात का कमरा काफ़ी बड़ा था. ज़रूरत का हर सामान ज़रूरत से अधिक था. कमरा खूब सुसज्जित था. सिवाय कायनात और उसकी माँ के चेहरे के किसी चीज़ से ग़रीबी नहीं झलकती थी. वह चारों ओर बड़े ध्यान से देखने लगा. माँ ने दाऊद की जिज्ञासा समझते हुए कहा—

'हम लोग ग़रीब नहीं थे, ग़रीब हो गये हैं. कायनात के अब्बू बहुत शौक़ीन थे. हम लोगों की परवरिश दिलोज़ान से करते थे. कोई दुकान नहीं थी. कमीशन का काम करते थे. अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा हम लोगों की नाज़बरदारी में खर्च कर देते थे. पन्द्रह बीस हज़ार रुपये जमा भी कर लिये थे. कायनात की शादी धूम-धाम से करने का अरमान था. बेटी पैदा हुई तो बड़ी मुहब्बत से उसका नाम कायनात रखा. क्या खबर थी कि हम लोगों की कुल कायनात यही होगी. शुगर के मरीज़ थे. अचानक दिल की बीमारी हो गयी. छै महीने ज़िन्दगी और मौत की कशमकश में गुज़रे. सारा रुपया उनके इलाज की भेंट हो गया. कोई और कमाने वाला होता तो शायद अभी जीते. ग़रीबी के दुख में चल बसे.'

'कितने दिन हुए ?' दाऊद ने खेद प्रकट करने के भाव से पूछा.

'एक साल.' माँ ने कहा. उनकी आँखें भींग चुकी थीं. कायनात भी उदास थी. माँ ने फिर कहा—

'बम्बई में पैसे के बिना एक दिन काटना मुश्किल है. हम लोगों ने साल गुज़ार दिया. मत पूछो कैसे गुज़ारा.'

कायनात दाऊद के सामने बैठी हुई थी. उसने देखा, उसकी साड़ी और ब्लाउज़ उतना मामूली नहीं है, जितना की कल था. उसने महसूस किया कि उस पर हर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लिबास खिल सकता है. चेहरे पर ताज़गी के आसार थे. वह न तो कोई शोला थी, बिजली, लेकिन ऐसी चिनगारी ज़रूर थी, जो भड़क उठने के लिए बेचैन हो. सोचने लगा, आस कितनी कमज़ोर चीज़ है, लेकिन ज़िन्दगी से उसका रिश्ता कितना मज़बूत है. एक क्षण के लिए आती है तो ज़िन्दगी को कितना निखार देती है, और है तो कितना उजाड़ देती है. यदि वह आस, जो कायनात को उससे है, टूट जाय तो क्या होगा ?

माँ उठ कर किचन में चली गयी, जो उस कमरे से मिला हुआ था. कायनात बैठी रही. दोनों देर तक मौन रहे. शायद कुछ कहने के लिए बातें सोच रहे थे. इस में कायनात ने रुक कर कहना शुरू किया—

'कल आप से मिलने के बाद घर आयी तो बहुत रोयी. बार-बार ख़याल आता रहा कि आप मेरी बातों पर हँस रहे होंगे, मेरा मज़ाक़ उड़ा रहे होंगे. मैं कहाँ की बड़ी अदीबा हूँ जो कोई मेरी किताब छाप दे. छाप ही न दे बल्कि मुझे पैसे भी दे. न जाने मैं क्या कह गयी, कैसे कह गयी...दाऊद साहब, ऐसा लगता है, मेरी ख़ातिर ही मजबूरी मेरा मज़ाक़ उड़ा रही है. अब्बू ज़िन्दा थे. तो कौन कह सकता था कि मुझ पर ऐसा वक्त भी आयेगा. मरते वक़्त वो मुझी को देखते रहे. दम निकल गया तो भी वो मुझी को तकते रहे. शायद वो यह सब जानते थे !'

कायनात एकदम रो पड़ी. दाऊद को बहुत तकलीफ़ हुई. उसने तसल्ली देते हुए कहा—

'रो मत कायनात. जाने वाला तुम्हें अपना प्यार भी दे गया. जाते-जाते भी वह तुम्हारे दुख अपने साथ ले गया और अपनी सारी खुशियाँ और सारा प्यार छोड़ गया. वह सब तुम्हें मिलेगा.'

'हां मैं यह नहीं कह सकती कि अब्बू मेरे लिए दुख छोड़ गये. जिसने ज़िन्दगी भर मेरे लिए दुख उठाये, वह जाते वक़्त मेरे लिए दुख क्यों छोड़ता. मेरी बदनसीबी तक़दीर है जिसने अम्मी को भी परेशान कर रखा है.'

'सब ठीक हो जायेगा. घबराती क्यों हो. हाँ, यह बताओ, तुमने यह कैसे सोचा कि तुम्हारे आने के बाद मैंने तुम्हारा मज़ाक उड़ाया होगा.'

'मजबूरी इन्सान को खुद अपनी निगाहों से गिरा देती है. मैं वापस आने के बाद अपने आपको बहुत छोटी लग रही थी. आपने तो कोई ऐसी बात नहीं कही थी. आप तो बड़ी मुहब्बत से पेश आये थे. मैंने यह भी सोचा था कि आप कितने अच्छे हैं फिर भी मुझे ढारस नहीं हुई. वहम बराबर सताते रहे.'

'तुम्हारा वतन कौन-सा है. मतलब तुम्हारे अम्मी और अब्बू कहाँ के थे'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आते थे ?'

'लखनऊ के.'

'कोई रिश्तेदार यहाँ भी हैं ?'

'यहाँ कहाँ से आयेंगे. लखनऊ में भी नहीं हैं.'

'फिर कहाँ हैं ?'

'कहीं नहीं.'

यह बात दाऊद की समझ में नहीं आयी. वह चुप रहा. कायनात समझ गयी कि उसका जवाब संतोषजनक नहीं है. उसने फिर कहा—

'मेरे अब्बू और अम्मी ने अपने-अपने खानदान की मरज़ी के खिलाफ़ शादी कर ली थी. इसलिए दोनों के खानदान वालों ने उन्हें छोड़ दिया था. वो लोग भी तबदिल हो कर बम्बई चले आये थे. फिर किसी से रिश्ता-नाता नहीं रहा. यह बात मुझे अम्मी ने बताई थी. मेरी अम्मी और अब्बू ने जो किया वह बुरी बात समझी जाती है मेरी अम्मी प्यार किये जाने की चीज़ थी. अब्बू बहुत नेक थे. उन लोगों ने एक दूसरे को पसन्द किया तो क्या बुरी बात थी. आखिर लड़के-लड़कियाँ आज भी एक दूसरे को पसन्द किये जाते हैं. अम्मी और अब्बू के खानदान वालों के सलूक ने मुझे भी उनसे दूर कर दिया. मैं नहीं जानती कि मेरा कोई है तो कहाँ है, क्योंकि अब वो मेरे नहीं.'

'तुम्हारे अब्बू का नाम क्या था ?'

'आफ़ताब !'

'अम्मी का नाम ?'

'बदुन्निसा. सचमुच दोनों चाँद सूरज की जोड़ी थे.'

'इसमें क्या शक है.'

बदुन्निसा ने कायनात को आवाज़ दी. वह दाऊद से माफी माँग कर चली गयी. कुछ देर बाद वो उसके हाथों में चाय के दो कप थे. उसने सेन्टर टेबुल पर रख दिये. दाऊद ने कहा—

'कायनात, यह तकल्लुफ़ है.'

'अब्बू होते तो आप देखते, तकल्लुफ़ किसे कहते हैं.'

दोनों चाय पीने लगे. बीच में दाऊद ने पूछा—

'तुम्हें नावेल लिखने का शौक़ कब से हुआ ?'

'नावेल तो इधर ही लिखा है. कालेज मैगज़ीन में कहानियाँ लिखती थी. मेरी कहानियों को पसन्द आती थीं. वो मुझसे लिखने का बराबर तक़ाज़ा करती रहती थीं. प्रोफेसर भी हिम्मत बढ़ाते रहते थे. सोचा था, तालीम पूरी करके लिखूंगी. मुझे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत शौक़ था. सारा शौक़ धरा रह गया. अब तो जो लिखा है, जरूरत से लिख
खुदा जाने क्या लिखा है. आप जब से आये हैं, बराबर हिम्मत बांध रही हूं
आपको दिखाऊं....लेकिन....'

'कोई काम नहीं तलाश किया ?'

'काम के लिए सोचा तो अम्मी रो पड़ी. काम बिना भी काम कहां चलता
अब्बू के कुछ मिलने वालों के यहाँ तीन जगह ट्यूशन करती हूँ. वह भी बहुत
तनख्वाह पर. ज्यादा अच्छे ट्यूशन मिल सकते हैं, लेकिन तलाश करते हुए रोना
आती है, डर भी लगता है. ऐसा लगता है कि मुझे डरा हुआ देख कर मुसीबत
और बन पड़ी.'

'कहानियाँ अदबी रिसालों में भी छपी हैं ?'

'कहा न, सारा शौक़ धरा रह गया. अब्बू होते तो मैं लिखती, फिर वो छप
भी. वो तो मेरी किताब भी छपवा देते. न बिकती तो भी क्या होता, अपनी
सहेलियों में बांट देती जो अब मेरी सहेलियाँ नहीं रहीं.'

दोनों चाय पी चुके थे. दाऊद ने पूछा—

'तुम किन लेखकों की कहानियां और नावेल पसन्द करती हो ?'

'आपका मतलब है, मैं क्या लिखती होऊँगी. मैंने बहुत कुछ पढ़ा. पसन्द
आया, नहीं भी आया. जो कुछ मैंने लिखा है वह अदब की दुनिया में कोई तहलका
मचा देगी, इसका खब्त भी नहीं. बड़ी खराब होगी, ऐसा भी नहीं. बहुत-सी बकवास
लिख कर लोग हज़ारों कमाते हैं. उनका मुक़ाबिला नहीं करना चाहती. हां
अगर किसी का नाम लेकर कुछ कह गयी तो वह खाली पेट की आलोचना होगी,
आप भी अच्छा नहीं समझेंगे. सच तो यह है कि इस वक़्त ऐसी तल्ख हक़ीक़त
सामना है कि कहानियों की बात अच्छी नहीं लगती. मैं तो पैसे की बात सोचती
वह कैसे आ सकता है...इस वक़्त मेरी कहानी यह है कि अब्बू की बीमारी में
के पैसे ही नहीं खर्च हुए, जेवर भी बिक गये. मकान का किराया चुकाने के लिए
जहाँ-जहाँ ट्यूशन करती हूँ, वहाँ-वहाँ से एडवांस लिया, फिर भी किराया बाक़ी
तनख्वाह में से एडवांस की किस्त कट कर मिलती है. एक वक्त का खाना ही
है. मकान मालिक कमरे पर क़ब्ज़ा करने की फ़िक्र में है. नये किरायेदार से
नज़राना पैंतीस हज़ार रुपया मिलेगा. अम्मी का खयाल था कि यह रूम बेच कर
शादी कर दें और सस्ता-सा कोई रूम ले कर अपने रहने का बन्दोबस्त कर दें
कहूँ कि मैं शादी नहीं करूंगी तो अच्छी बात नहीं. लेकिन अम्मी जो चाहती हैं
हो जाये तो बहुत बुरी बात होगी. अम्मी कैसे रहेंगी, क्या खायेंगी, कहाँ से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...मकान मालिक नोटिस दे चुका है. अगर अब दो दिन में ?...किराया नहीं पहुँचता है तो कमरा हाथ से निकल जायेगा और मेरी ग़रीबी की कहानी मुकम्मल तस्वीर हो जायेगी....जिस सोफ़े पर आप बैठे हैं, अगर बेच दूं तो किराया अदा हो जायेगा. उसके बाद रेडियो, ड्रेसिंग टेबुल क़ालीन, सूटकेस, डिनर सेट और कुछ-से क़ीमती सामान है जिन्हें बेच कर खाया भी जा सकता है, किराया भी अदा किया जा सकता है. लेकिन कब तक ?...गृहस्थी का सामान बेचना मेरे नज़दीक औरत की आबरू बेचने के बराबर है. वक़्त पड़ा तो औरत ने आबरू भी बेची है. मैं बहुत कमज़ोर सही, लेकिन इतनी भी कमज़ोर नहीं !...मैं शादी कर लूंगी, लेकिन उससे, जो शरीफ़ हो, पढ़ा लिखा हो. मुझे जेवर न दे, अच्छे कपड़े न दे, सूखा खाना का खाना दे. रूखा-सूखा सही. लेकिन मेरे घर में रहे. मेरी अम्मी को ज़िन्दगी भर इस घर में रहने दे. उन्हें दो वक़्त का खाना और तन ढांपने को कपड़े दूंगी. मैं यह मकान उसे दे दूंगी, जिसकी कीमत सामान सहित पैंतालीस हज़ार रुपये है. मैं जानती हूं, मुझे हजारों मिलेंगे, क्योंकि बम्बई में बीवी से क़ीमती मकान है. लेकिन इसकी जल्दी नहीं. अभी तो मुझे अपना मकान बचाना है, जो न रहा तो मैं मर जाऊंगी.'

दाऊद बहुत ग़ौर से कायनात की बातें सुनता रहा. जब वह चुप हो गयी तो वह उसकी गम्भीरता से बहुत प्रभावित भी था और उसकी तकलीफ़ से उदास भी. उसने कहा—

'कायनात, तुमने जो कुछ भी लिखा होगा, बहुत अच्छा लिखा होगा.'

'कुछ लोगों का खयाल है कि अच्छा अदब हमेशा ग़रीबी और परेशानियों के अंदर ही लिखा जाता है. जो यह कहते हैं, वो अदीबों को ग़रीब और कंगाल रखना चाहते हैं. मेरा खयाल है कि बेहतरीन रचना वह करते हैं, साहित्य जिनका पेशा नहीं शौक है. वो अपनी रोज़ी दूसरे ज़रिये से कमाते हैं और अपनी कमाई अपनी रचना को बेहतर बनाने में खर्च करते हैं. ग़रीबी अच्छी रचना का सबब नहीं, बल्कि अच्छी रचना के बोझ ने अदीब को कंगाल बनाया है. मैं अपनी रचना की वजह से मुफ़लिस नहीं हुई, बल्कि मेरी मुफ़लिसी इस रचना का सबब है. इसे अच्छा नहीं कह सकती. इस वक़्त मैं यह घटिया माल ही बेचना चाहती हूं.'

'नोटिस कितने रुपये का है ?'

'तीन सौ रुपये का.'

'तीन सौ रुपये में अपनी नावेल बेचोगी ?'

'बेच दूंगी.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाऊद ने अपनी जेब से तीन सौ रुपये निकाले और कायनात के वालों में दिये. वह दाऊद का मुंह ताकती रह गयी. कायनात जैसे सकते में थी. क्या लिखने वालों की रचनाएं ऐसे बिका करती हैं. दाऊद ने कुछ देर इन्तज़ार के बाद कहा—

'कायनात, अपना नावेल लाओ.'

'क्या बिना देखे ही सौदा कर लेना चाहते हैं ?'

'बेचने वाले किताबें पढ़ कर खरीदते हैं, पढ़ने वाले खरीद कर पढ़ते हैं. इसमें ताज्जुब की क्या बात है.'

'मैं समझ गयी. आप मेरी मदद करना चाहते हैं.'

'मैं इस क़ाबिल कहां. मैं खुद एक ग़रीब आदमी हूं.'

कायनात कुछ देर सोचती रही. फिर उठ कर मेज की ड्रार से अपने उपन्यास की पांडुलिपि निकाल लायी और दाऊद के सामने रखते हुए बोली—

'मैं इस वक़्त बहुत ज़रूरतमन्द हूं. कुछ न पूछूंगी, आपने यह सब क्यों किया.'

दाऊद ने पांडुलिपि उठा कर बग़ल में दबायी और जाने की अनुमति मांगी. कायनात ने कहा—

'अम्मी को आ जाने दीजिये.'

वह रुपये ले कर चली गयी और कुछ ही क्षणों के बाद अपनी अम्मी के साथ वापस आ गयी. अम्मी ने आंखों में आंसू भर कर कहा—

'बेटा, कायनात तो अपना नावेल बेचना चाहती थी. तुमने तो हम लोगों के

सूत्रधार

एक परदा—
लगा है मेरे घर के दरवाजे में,
जहाँ बैठा रहता है एक काला कुत्ता,
दुम हिलाता जिसे देख,
हर आने-जाने वाला भड़कता है,.
एक परदा—
लगा है मेरे आफिस रूम में,
जहाँ बैठा रहता है भृत्य,
आँखें मिचमिचाता जिसे देख,
हर आने-जाने वाला ठिठकता है.
एक ऐसा ही परदा लगा हुआ है
शाशित और शोषित के बीच, —
परदे के पीछे—
कुर्सी है, टेबल है, नेता हैं, नाटक हैं,
परदे के बाहर—
जनता है, वोटर हैं, दर्शक हैं, याचक हैं,
कुत्ते और भृत्य की तरह,
इस परदे के पास बैठने वाले का नाम
है—राजनीति
जिसे देख हर आने वाला सिहरता है,
उसका शिकार बनता है
और उसका भोजन बनने के लिए
बार-बार जिन्दा होता है,
बार-बार मरता है.

—अभिलाष दबे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खरीद लिया.'

'नहीं अम्मी, यह मत कहिये. आप लोग बहुत क़ीमती हैं. उसका दाम कोई नहीं दे सकता.' फिर कायनात से मुस्कराते हुए दाऊद ने कहा—'कायनात ! दूसरा नावेल शुरू करो.'

कायनात मुस्करा दी. दाऊद ने विदा ली. घड़ी में रात नौ बज रहे थे. उसे घर की याद आयी. वह उपन्यास की पांडुलिपि दबाये हुए घर की ओर चल दिया झूमता हुआ. रास्ते में उसे कायनात की बातें याद आती रहीं और वह गहरे प्रभाव में डूबता रहा.

सुन्दरबाई की चाल में पहुँच कर वह अपने कमरे से दस क़दम पहले ही रुक गया. उसने इधर-उधर देखा. वज़ीरा अपने दरवाज़े पर खड़ी हँस रही थी. बोली—

'दाऊद भाई, तुम्हारा ही है. अन्दर आओ.'

उसने दरवाज़े का पर्दा उठाया तो हैरान रह गया. मसहरी, कुर्सी, टेबुल, अलमारी, रेक, स्टोव, बर्तन, गिलास, टी-सेट, जार, रेडियो, पंखा, ट्यूब लाइट. जलते हुए स्टोव पर तवा रखा हुआ था और सुलताना खड़ी हुई रोटी बेल रही थी. दाऊद ने ज़मीन की ओर देखा. आकर्षक फूलों वाला लेनोलियम. उसने घबरा कर पूछा—'सुलताना यह सब क्या है ?

सुलताना ने दाऊद की ओर देखे बिना कहा—

'अलादीन...अलादीन...अलादीन....' और रोटी बेलती रही.

'बताओ न.' दाऊद ने सुलताना को अपनी ओर घुमाते हुए निवेदन के स्वर में पूछा.

'बता तो दिया.'

'क्या गोल-माल बातें कर रही हो.'

'क्या गोल-मोल बात कर रही हूँ...धत् तेरी की. बातों में रोटी भी तिकोनी हो गयी...चुप रहो मुझे काम करने दो.'

दाऊद ने सुलताना की बाँह पकड़ ली और उसे खींच कर कुर्सी पर बैठाते हुए फिर पूछा.

'आखिर यह सब क्या है ?'

'बताऊँ ?' सुलताना ने आंखें मटकाते हुए पूछा—

दाऊद ने यूँ देखा, मानों कह रहा हो, बताती क्यों नहीं ?

सुलताना ने कहा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सुबह तुम मुझे अलादीन का चिराग दे गये थे न. तुम्हारे जाते ही मैंने घिसा. चाल के बत्तीस कमरों से सारे जिन्न निकल पड़े. घण्टे भर में कमरा रगड़ पोंछ कर दुरुस्त कर दिया. दो घण्टे में सारा सामान मौजूद...चार बजे तक फिट ! छः बजे तक खीर तैयार. आठ बजे तक अपने हाथ से सारी चाल में बांट आयी और सदा सुहागिन रहने की दुआ ले आयी. अब तुम्हारे लिए खाना तैयार कर रही हूँ. तुम्हें भूख लगी है न. बस ज़रा-सा और ठहर जाओ....लेनोलियम दरवाज़े के पर्दे, चादर और तकिये के सिवा सारा सामान चोर बाज़ार से आया है. चोरबाज़ार में खरीदार लुट जाता है, इसलिए उसका नाम चोर बाज़ार है. सुलेमान भाई ने इतने कम पैसों में दिला दिये कि सचमुच चोरी का माल लगता है. कुल सौ तेरह रुपये खर्च हुए. सारी गृहस्थी इकट्ठा हो गयी. सत्तासी रुपये बचे हैं. ब्लाउज़ में रखे हैं, निकाल लो.' उसने अपने गुदाज़ सीने को दाऊद के सामने उभारते हुए कहा—'लो निकाल लो मेरे दोनों हाथ आटे में सने हैं.'

दाऊद ने हँस कर सुलताना की पीठ पर एक घूँसा दिया और बोला—'बदतमीज़ कहीं की.'

दाऊद कपड़े बदलने लगा. सुलताना फिर से रोटी बेलती हुई बोली—

'कपड़े हैंगर पर लटकाना. सामने दिवार से लगे हुए हैं. तुम्हारा सड़ा-सा बक्स मसहरी के नीचे है. चारपाई चाल में है. उसको वहीं रहने देना.'

दाऊद ने कपड़े बदल कर कुर्सी पर बैठते हुए पूछा—

'साड़ियाँ कितनी लायी हो ?'

'उसकी मुझे ज़रूरत नहीं थी. नहीं लायी.' सुलताना ने तवे पर रोटी उलटते हुए कहा. फिर रुक कर बोली—'फ़ातमा बाई कमरे में आई तो बोली—घर अच्छी तो घर खराब...घर अच्छा तो घरनी खराब. अब तो मैं बनाव-सिंगार करने भी गयी.'

दाऊद चुप रहा, फिर कुछ सोचते हुए बोला—

'सुलताना, मैं नहीं जानता कि तुमने यह सब अच्छा किया या बुरा. लेकिन तुमने अपने लिए साड़ी नहीं ली, यह बहुत बुरा किया. अब मैं तुम्हें क्या दे सकूँगा.'

'तुम क्यों यह सब सोचते हो. करीम मर गया है क्या. मैं पाई-पाई वसूल कर लूँगी. उसने भी क्या समझा है. कभी के दिन बड़े तो कभी की रातें.'

दाऊद तमाशा देखता रहा और सुलताना की रोटी पक गयी. उसने जल्दी-जल्दी बेलन, तवा, चौकी सब किनारे किये. हाथ मुंह धो कर सिंगारदान पर बैठ गयी. ब्लाउज़ को खींचा-ताना, साड़ी की सिलवटों को ठीक किया. बालों में कंघी की और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पातों पर पाउडर कर दाऊद के सामने बैठती हुई बोली—

'बहुत थक गयी. बीवी होना भी क्या मुसीबत है.'

'मसहरी पर लेट कर थोड़ा सुस्ता लो !' दाऊद को सचमुच सुलताना पर तरस आ गया.

'तुमने इतने प्यार से कह दिया. अब तो लेटना ही पड़ेगा.' यह कह कर सुलताना उठी और मसहरी पर लेट कर उसने एक ज़ोरदार अंगड़ाई लेते हुए कहा—'यह मसहरी हम दोनों के सोने के लिए है. देखो, कितनी चौड़ी है.'

'छोटी भी होती तो काम चल जाता. सोना तो एक ही को है.'

'फिर अमीना भाभी और जुबैदा भाभी क्या कहती कि दूसरा कहां सोयेगा. तुम्हारे आने से कुछ देर पहले गोपाल मेहता की बीवी चन्द्रा आयी थी. बोली—सुलताना बहन, आज तो सुहागरात मालूम होती है. सुबह मिठाई मिलेगी न. मैंने कहा, अब क्या मिलेगी. वह तो कभी की बँट चुकी....क्या मिठाई बँटी थी ? अम्मां ने सखावत की हद कर दी थी. सारे बाज़ार में धूम मची थी. नाज़नीन की अम्मां जल मरी. उसने बहुत बहलाया-फुसलाया, पर वह सेठ का बच्चा मुझ पर ऐसा आशिक हुआ कि टस-से-मस न हुआ. अम्मां ने दस हज़ार लिये. बात-बात पर कहता था. सुलताना तुम बहुत खूबसूरत हो. मैंने भी दो हज़ार ऐंठ लिये. बेचारा फिर नज़र नहीं आया. सोचती हूँ सचमुच उसका दीवाला तो नहीं निकल गया...च-च.'

सुलताना ने बात खत्म करके दाऊद की तरफ़ देखा तो वह मुंह लटकाये हुए बैठा था. उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं. सुलताना ने घबरा कर पूछा—'क्या हुआ ?'

'तुमने सचमुच चन्द्रा से यह सब कुछ कहा है ?'

सुलताना को ज़ोर से हंसी आ गयी. बोली—

'हां, सब कह दिया है. कोई झूठ है क्या ?'

दाऊद की घबराहट बढ़ गयी. सुलताना ने कहा—

'सुनती हूँ बहुत पढ़े-लिखे हो. खाक पढ़ा है. मामूली-सी बात समझ में नहीं आती...चन्द्रा से कह दिया, मिठाई बंट चुकी. बात खत्म. अब किसने बाँटी, कहाँ बाँटी, कितनी बँटी, कैसे बँटी, यह सब तो तुम्हें बता रही हूँ. अब तुम भी सुनना नहीं चाहते तो जाओ, नहीं कहती. मेरे लिए कौन-सी बड़ी नयी बात है.'

दाऊद अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हुआ. थोड़ी देर तक सुलताना खामोश बैठी रही, फिर यकायक उठ बैठी. बोली—

'सिगारदान की दराज़ खोलो. उसमें कुछ सामान है, निकालो तो.'

दाऊद ने दराज़ खोली. उसमें से कागज़ में बँधा हुआ एक पैकेट निकाल कर पूछा—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

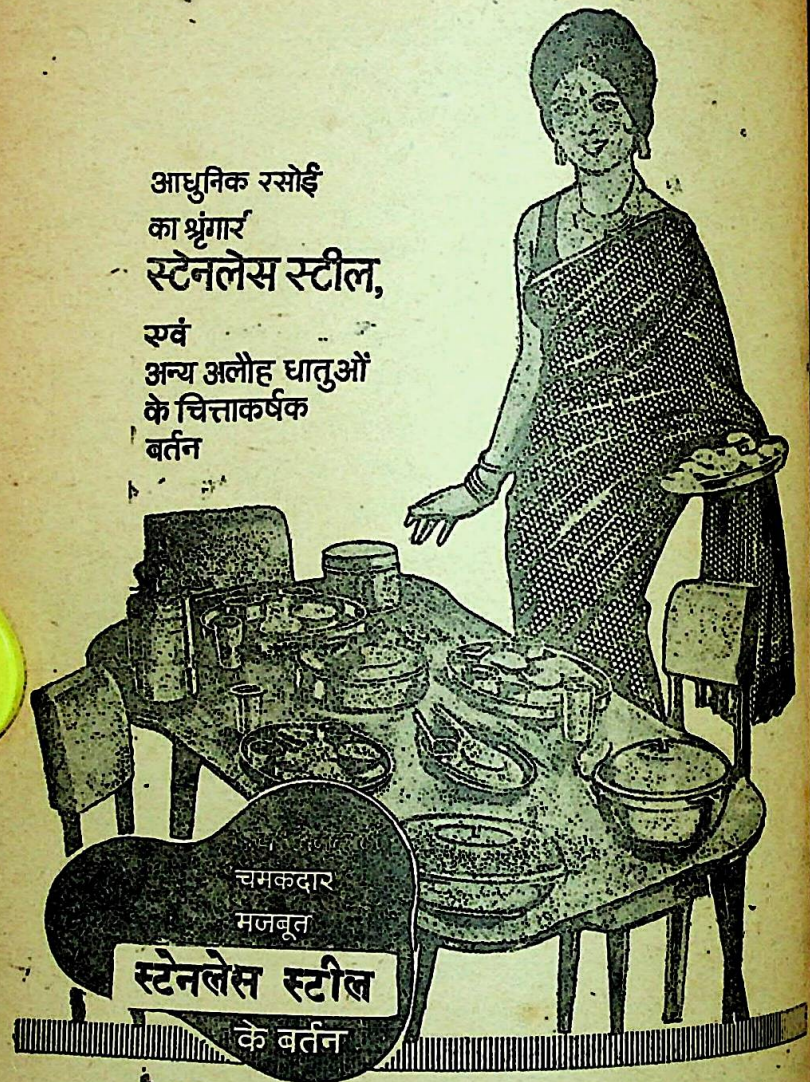

स्टेनलेस स्टील पैराडाइज

डी.११/२४ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी

फोन. पी.पी. ६३६५१

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'यही ?'

'हां !' सुलताना बोली—'ज़रा खोलो तो.'

दाऊद ने उसे खोला. एक ट्यूब, कुछ टैबलेट और निरोध के कुछ पैकेट थे.

'यह किस लिए ?' उसने घबरा कर पूछा.

सुलताना ने दोबारा मसहरी पर लेटते हुए कहा—

'मिस गोम्स दे गयी है. फ़ैमिली प्लैनिंग हफ़्ता चल रहा है. फ़ैमिली प्लैनिंग सेंटर से मुफ़्त बँट रहा है. कह गयी है, पहला बच्चा अभी नहीं. मैंने कह दिया, ख़ाली क्या कभी नहीं...फ़ैमिली प्लैनिंग वालों से कह दो, मेरी तरफ़ से इत्मीनान रखें.'

दाऊद सुलताना की बात से तंग आ रहा था. उसने बात बदलते हुए पूछा—

'क्या पकाया है ?'

वह उठ बैठी. बोली—

'हां, अब खाया जाय. मुझे भी भूख लग रही है.'

सुलताना बड़े सलीक़े से टेबुल पर खाना चुनती रही. दाऊद चुपचाप देखता रहा. अन्त में गिलास में पानी ले कर वह भी बैठ गयी. दाऊद ने पूछा—'क्या-क्या है ?'

सुलताना ने एक-एक प्लेट पर उँगली रखते हुए कहा—

'खीर, मुर्ग़स्टू, मटन क़ोरमा, यख़नी, पुलाव, चपाती.'

दाऊद ने अचरज से पूछा.

'तुम इतने खाने बनाना जानती हो ?'

'इसमें ताज्जुब की क्या बात है. औरत हूँ...हां, तुम औरत के बारे में जानते ही क्या हो.'

'ठीक है, ठीक है. मैंने कहीं पढ़ा है. मलिका एलिज़ाबेथ भी कभी-कभी किचन में अपना खाना खुद बनाती थीं.' दाऊद ने झेंपते हुए कहा.

'और इन्दिरा जी ?' सुलताना ने पूछा.

'अरे, वो खाना बनाना न जानतीं तो अख़बारवाले न चिल्लाते कि इन्दिरा जी भारतीय संस्कृति की नुमाइन्दा नहीं हो सकतीं.'

दोनों खाने लगे. दाऊद को खाना बहुत पसन्द आया. उसने सुलताना का उत्साह बढ़ाते हुए कहा—

'बहुत उम्दा. जी खुश हो गया.'

'आज जी खुश कर लो. कल से दाल-रोटी मिलेगी. नहीं तो समद सेठ से कहो, तनख़्वाह बढ़ायें. इतने में मियां-बीवी का गुज़ारा नहीं हो सकता.'

(अगले अंग में चौथी किस्त)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनती हो ? ओंकार ने जोर से कहा, 'घर से भागी हुई दिल्ली की एक लड़की बाम्बेसैंन्ट्रल स्टेशन पर पकड़ी गयी.'

'ऊंह ! यह कौन-सी नयी खबर है.' पत्नी लापरवाही से बोली, 'रोज के ही किस्से हैं ये आजकल.'

'फिल्मों का चक्कर था.....' पत्नी की उदासीनता उसे अच्छी नहीं लगी. घर में जवान लड़की और यह औरत अपने को बेखबर रखती है. वह तो बेचारा अखबार से चुन-चुन कर ऐसी खबरें सुनाता रहता है, ताकि वह असावधान न रहे, लेकिन.....

पिछले तीन सालों से वह बेहद परेशान है. तीन साल पहले उसके जीवन में एक साथ दो घटनाएं घटी थीं. एक, लड़की जवान हो गयी थी; दूसरी, वह बूढ़ा हो गया था. अद्भुत बात मगर यह थी कि शीशे से वह कहीं भी अपने को बूढ़ा महसूस नहीं करता था, लेकिन संगी-साथी कहते थे कि वह बूढ़ा होता जा रहा है और कोई कारण नहीं था कि वे झूठ कहते हों. चिन्ता आदमी को तोड़ डालती है. वह अच्छी तरह जानता है और वह चिन्तित है, इसमें कोई शक नहीं. घर में जवान लड़की हो और उसके हाथ पीले करने का कोई उपाय न हो, तो वह आदमी नहीं पत्थर होगा, जो चिन्तित न हो.

ओंकार एक मिल के आफिस में कलर्क था. आधी जिन्दगी कलम घिसने में बिता देने के बाद भी वह क्लर्क की कुर्सी के ऊपर न जा सका था. गुंजाइश भी न थी. दफ्तर में या तो क्लर्कों की कुर्सियां थीं, या फिर चपरासियों के मोढ़े. एक थोड़ी ऊंची कुर्सी हेडक्लर्क की जगह थी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक और अन्त

□ बहादत्त

लेकिन उस पर इक्कीस जोड़ी लोलुप आंखें सदैव लगी रहती थीं—बयालिस विरुद्ध थे. नहीं, उसने अपने आपको कभी इतना शक्तिशाली नहीं माना. न ही वह राजनीति के दांव-पेंचों में कुशल था.

वह एक सीधा-सरल आदमी था. कुटुम्ब-नियोजन के सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन करने के बाद उसने अपने आपको पूर्ण रूप से भगवान के भरोसे छोड़ दिया था. तीन लड़के थे, एक लड़की. लड़के छोटे थे और स्कूल में पढ़ते थे. लड़की जवान हो गयी थी और दसवीं पास करने के बाद घर के कामों में मां का हाथ बटाती थी, जो कि कुछ खास नहीं था, सिवाय दो वक्त खाना बनाने के. बाकी के खाली वक्त में वह या तो पड़ोस से मांग कर लायी फिल्मी-पत्रिकाएं पढ़ती या फिर चाल की गैलरी में खड़ी हो सड़क के यातायात को निहारती. ओंकार लड़की को डांटता और पत्नी को उलाहना देता. लड़की चौबीसों घंटे उसके दिमाग में बनी रहती.

'रेखा कहां है ?' जब तक वह घर में रहता, बीच-बीच में पूछा करता.

'होगी कहीं.' पत्नी हमेशा उपेक्षा से जवाब देती. उसे बड़ा गुस्सा आता. इस वक्त वे कहीं जवान लड़कियों पर निगरानी रखी जाती है ? वैसे डांट-फटकार और धमकियों को वह नये मनोविज्ञान के हिसाब से उचित नहीं मानता था, लेकिन इसके अलावा उसे अन्य कोई उपाय भी नहीं मालूम था. यों भी नये या पुराने, किसी भी मनोविज्ञान से उसका कोई वास्ता न था. जो भी जानकारी थी, आफिस में उसके एक सहकर्मी की थी, जिन्होंने सन सैंतालीस में बी. ए., 'फिलासफी विथ इकनामिक्स' में पास किया था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ओंकार को किसी भी विज्ञान में कोई रस न था. उसको सिर्फ इस बात की परवाह थी कि लड़की के पैर कहीं इधर-उधर न पड़ जायें और कुल की मान-मर्यादा मिट्टी में मिल जाये. इसके लिए उसकी भारतीय आत्मा को अगर कोई उपाय सूझता भी था तो केवल यही कि लड़की को किसी तरह से धर्म की ओर उन्मुख कर दे. यह बात नहीं थी कि वह अधार्मिक थी, या वे लोग धर्म-कर्म नहीं करते थे. वह रोज सुबह सालिगराम का स्नान-ध्यान करता था. गैलरी में लोहे के तार से बनी कुंडी में तुलसी के बित्ता भर पौधे में पानी डालने में लड़की और लड़की की माँ कभी नहीं चूकती थीं. लेकिन इतने से होता क्या है ? मन बड़ा चंचल है. शक्तियाँ भी. वह लड़की को धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, मंदिरों में जाने और व्रत-उपवासों को करने के लिए खूब प्रोत्साहित किया करता था. वह अकसर धार्मिक कथाएं सुनाता और प्रयत्न करता कि उसमें महिला भक्तों की कथायें ज्यादा हों; किन्तु दिमाग पर बहुत जोर देने के बावजूद, उसे मीरा के सिवाय और किसी महिला-भक्त का नाम याद न आता था.

इतनी सब सावधानी बरतने के बाद भी न जाने क्या बात थी कि लड़की धार्मिक पुस्तकों के साथ फिल्मी-पत्रिकाएं पढ़ ही लेती और समय-असमय बैठकों में खड़ा होना न छोड़ती. ओंकार व्यग्र हो उठता. जल्दी ही कुछ करना चाहिये, यह दिमाग में आता. लेकिन क्या करना चाहिये, उसे कुछ सूझता न था.

पौने तीन सौ रुपये में छह प्राणियों का भरण-पोषण ही एक दुष्कर कार्य था. उसमें शादी जैसी चीज की आयोजना करना, आत्महत्या के सिवाय और कुछ न था. सिर्फ आत्महत्या की ही बात होती तो ओंकार ऐसा डरपोक न था कि पीछे हटता. लेकिन यहां आत्महत्या के साथ चार हत्याएं भी जुड़ी थीं. उसका धर्म-भीरु हृदय कांप उठता. उसे लगता कि उसके लिए कहीं से कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है. वह कुछ भी कर सकने में असमर्थ है. वह भागना चाहे तो भाग नहीं सकता. सिर पर जैसे पहाड़ धरा है और पैर पृथ्वी में धँसते चले जा रहे हैं. वह छटपटा उठता. उसका दम घुटने लगता. पैर छुड़ा कर वह भागना चाहता. तेज, तेज, और तेज....लेकिन वह भाग नहीं सकता. दौड़ने की कल्पना-मात्र से उसकी छाती फूलने लगती है. पैर मन-मन भर के हो जाते हैं.

पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बढ़ तो नहीं गया है ? वह कई बार सोचता कि यह बात किसी से पूछना चाहिए, किन्तु जड़ता ने उसे इस कदर घेर रक्खा था कि वह हिल-डुल भी नहीं सकता था. हां, कभी-कभी यह जड़ता यदि किसी कारण से टूटती थी तो इस तरह से कि जैसे किसी पेड़ की हरी शाखा टूट तो जाये, लेकिन मरकर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हो, तने से लटकी रहे. ऐसी ही घटना एक दिन घट गयी. ओंकार दफ्तर से घर लौटा ही था कि पत्नी ने दरवाजे पर ही उसे खबर दी.

'सुना तुमने ? नलिनी भाग गयी.'

'क्या ?' जूते का बन्द खोलते-खोलते ओंकार ने सिर ऊपर उठा कर उसकी ओर देखा, 'कौन नलिनी ? कहाँ भाग गयी ?...रेखा कहाँ है ?' यकायक उसकी हृदयगति बढ़ गयी.

'रेखा यहीं है.' पत्नी कुछ झल्ला कर बोली, 'नलिनी को नहीं जानते ? शंकर की लड़की. हमेशा गैलेरी में तो खड़ी रहती थी.'

'अच्छा, वह.' ओंकार मोजे हाथ में लिये मूढ़-सा बैठा पत्नी को देख रहा था, 'वह तो रेखा की भी सहेली थी न ?'

पत्नी ने सिर हिला कर हां की, 'मगर अब किसी से कह मत देना. वे लोग पुलिस में कंप्लेंट करने गये हैं ? वह बदहवास-सी बोली.

'मुझे क्या गरज पड़ी है.' ओंकार कुर्सी में जैसे जड़ हो गया था, 'कहाँ भाग गयी? किसी के साथ भागी है या अकेले ?'

'कुछ ठीक-ठीक पता नहीं लगता है. चाल में तो जितने मुंह हैं, उतनी बातें. कोई कहता है—सुबह चार बजे गयी. कोई कहता है, सात बजे. रमा की घाटिन कहती है कि उसने उसे बिल्डिंग से उतरते देखा. मास्टरानी कहती है, नीचे एक टैक्सी खड़ी थी, उसमें बैठ कर गयी. मगर बबन और कांति कहते हैं कि टैक्सी नाके पर खड़ी थी और उसमें दो छोकरे बैठे थे. पता नहीं सच क्या है.'

ओंकार ने सिर नीचे झुका लिया. उसे लगा कि जैसे उसकी कोई पसली निकाल ले गया हो. सहसा उसने अपने भीतर बड़ी कमजोरी महसूस की.

'तुम तो बैठे ही रह गये. उठो, हाथ-मुंह धो लो, मैं चाय ले आऊं. पत्नी भीतर के कमरे में चली गयी. उसने सिर घुमा कर कमरे में देखा. एक कोने में रेखा गुड़ी-मुड़ी-सी बैठी कोई किताब पढ़ रही थी. उसे देखते ही न जाने क्यों ओंकार को क्रोध आ गया.

'क्या कर रही है वहाँ बैठी-बैठी !' वह चीखा, 'कितनी बार कहा कि मां की जरा मदद किया करो. मगर नहीं, सारा दिन पढ़ने को दे दो अल्ली-मल्ली किताबें. देख लिया न अपनी सहेली का अंजाम ? अब तो कुछ होश करो.'

रेखा सिटपिटा कर उठ खड़ी हुई. एक क्षण को वह किंकर्तव्य विमूढ़-सी खड़ी रही, फिर तेजी से भीतरी कमरे में चली गयी.

ओंकार ने दोनों हाथों से अपना सिर सहलाया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'क्यों नाहक बिगड़ रहे हो. पत्नी चाय का कोप उठाये आयी, 'अपनी लड़की ऐसी नहीं है. नलिनी के चाल-चलन किसे नहीं मालूम थे.'

'वह तो ठीक है. मगर वह इसे भी बहका ले जाती तो ? आखिर इसे अक्ल ही कितनी है....ठहरो, मैं जरा हाथ-मुंह धो आऊं.' वह उठ खड़ा हुआ.

उस रात अपनी खूब ऊंची आवाज में उसने पत्नी को सब परिणाम बताये जो एक भागी हुई लड़की के साथ घटित हो सकते थे. उसने बताने में कोई कसर न छोड़ी. यहां तक कि उदाहरण दे-देकर उसने गुण्डों और वेश्यालयों का भी जिक्र किया. जब उसे पूरी तरह विश्वास हो गया कि मारे डर के लड़की अब घर के बाहर कदम न निकालेगी, वह सो गया.

■

इसके ठीक दो महीने बाद रेखा भाग गयी. उस दिन भी वह काम पर से घर लौटा था और पत्नी ने दरवाजे पर ही रो-रो कर उसे सूचना दी थी कि दोपहर तीन बजे से रेखा का कहीं पता नहीं है.

'तुमने सब जगह देख लिया...?' उसने खड़े-खड़े ही पूछा था. बड़ी मजबूत शांति से नियति के इस क्रूर प्रहार को वह झेल रहा था.

'हूं....' पत्नी अनवरत रोये चली जा रही थी.

'कहां-कहां देखा ? चाचा के घर ?'

'सब जगह देख लिया....पूरी बाग में ढूंढ़ा. चाचा और दयाल के घर भी एक लड़के को भेजा था.....कहीं नहीं है...'

'ठीक है. अब रोना-धोना छोड़ो. जरा शांति से बैठो और सोचो कि और कहां हो सकती है' ओंकार ने पैंट की जेब से रूमाल निकाल कर अपना चेहरा पोंछा. उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगी थीं. वह स्वयं कुछ सोच सकने में असमर्थता महसूस कर रहा था.

'पिक्चर देखने तो नहीं गयी ?' अचानक उसके दिमाग में आया. उसके चेहरे पर

विज्ञापन

—रमेश मनोहरा

प्रजातंत्र की भीड़ में
एक अदना सा बालक
'समाजवाद' कहीं
गुम हो गया है
जो कोई भी उसे
ढूंढ़ कर लायेगा
उचित इनाम
दिया जायेगा.—हुलिया—
उसका रंग—बदरंग है
ऊंचाई—अभी तक नहीं नापी गई
स्वभाव—बईमानी से लगाव
यदि आपको कहीं मिल जाये
तो नीचे लिखे
पते पर ले आयें -
पता—
मंत्रीगण
लोकतन्त्र की गली
जिला—गणराज्य, (भारत).

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक धमक आयी.

'नहीं', पत्नी जोर से रो पड़ी, 'उसके कपड़े-लत्ते कुछ भी नहीं हैं. कानों की बालियां भी ले गयी....!'

'क्या ?' अत्यन्त क्रोध और विवशता से ओंकार की आंखों में आंसू आ गये. आंखें लाल हो गयीं. एक क्षण को वह कुछ भी न बोला. सामाने दीवार पर भगवान विष्णु के चित्र को उसने देखा. उसके दांत किटकिटा उठे.

'उसकी किसी सहेली का पता-वता मालूम है ? जब वह गयी तो तुम कहां थी ?' वह चिल्ला-सा पड़ा.

'मेरी जरा आंख लग गयी थी....

'हां-हां, सोओ, सोओ.....घर में भले ही आग लग जाये, लग ही गयी है.' उसने दोनों हाथों से अपना सिर पीट लिया,' आखिर घर की इज्जत मिट्टी में मिल ही गयी.' उसने कहा और उसकी दीनता उभर कर उसके सामने आ गयी. भयानक रूप से उत्तेजित हो वह पत्नी को पीटने लगा.

चीख-पुकार सुन कर पड़ोसी जमा हो गये. कुछ लोगों ने उसका हाथ पकड़ लिया. कुछ लोग सांत्वना देने लगे. कुछ लोग सलाहें देने लगे कि क्या करना चाहिए. किसी ने पुलिस में लिखाने को कहा, लेकिन एक-दो ने यह कह कर विरोध किया कि पहले अच्छी तरह ढूंढ़ लो फिर पुलिस में जाओ, नहीं तो नाहक ही लफड़ा बढ़ेगा. इतनी देर में ओंकार की पत्नी को भी कुछ पते याद आ गये. गिरगांव में रेखा की दो सहेलियां थीं, जो उसके साथ पढ़ी थीं. एक मांडवी में रहती थी, जिसके पिता का कांदावाड़ी में प्रेस था. कोई एक सांताक्रुज में भी थी. मगर किसी का भी पूरा पता मालूम न था, लेकिन जो कुछ भी जानकारी थी, उसे ले कर ओंकार जाने को तैयार हो गया. भीतर के कमरे में जा कर उसने पत्नी से पूछा कि घर में कुछ पैसे हैं? पत्नी ने तंबाकू की डिब्बी से दस की एक तुड़ी-मुड़ी नोट निकाल कर दी. ओंकार उसे ले कर निकल पड़ा.

रात्रि नौ बजे तक वह जगह-जगह भटकता रहा. उन पतों के अलावा वह अपने कई एक परिचितों और मित्रों को भी मिला. पुलिस-स्टेशन जाने के पहिले उसे एकदम ख्याल आया कि बोरीबन्दर रेल्वे स्टेशन पर चल कर देखना चाहिये. उसने वहां जा कर जो भी गाड़ियां उस वक्त छूटने वाली थीं, सबों के डिब्बे-डिब्बे में जा कर देखा. रेखा मगर जैसे पूरी बम्बई से लापता हो गई थी. निराश, टूटा हुआ सा वह स्टेशन के बाहर, नाके पर आ कर खड़ा हो गया. उसने सोचा अब चल कर पुलिस-स्टेशन में लिखाना चाहिये. उसे किशोर का कहा याद आया कि अपने एरिया के पुलिस-स्टेशन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

में ही शिकायत लिखानी पड़ती है. वह हारा-सा सिर झुका कर धीरे-धीरे चल पड़ा...पुलिस में खबर करूं या न करूं ? चलते-चलते उसने सोचा...बेकार में लफड़ा बढ़ेगा. पूछताछ, तहकीकात...कई बार तो शंका में माँ-बाप को ही बन्द कर देते हैं, ऐसा सुना है....रही-सही इज्जत भी चली जायेगी....जिसे नहीं मालूम है, उसे भी मालूम पड़ जायेगा. लड़की मिल भी जायेगी वापस तो...जिन्दगी भर को लग ही गया....ऐसे ही शादी करना दुष्कर था, पर अब तो...पुलिस में ही सब सब अच्छे लोग हैं. सुना है...पढ़ा भी तो था, किसी अखबार में कि....नहीं, पुलिस में जाना ठीक नहीं है...जवान लड़की का मामला है...और एक-दो दिन ढूंढ़ लेना चाहिये है...शायद वह भी लौट आये...लौट आयेगी तो....अस्पतालों में भी देख आना चाहिये कहीं किसी एक्सीडेन्ट में न फंस गयी हो....रेल्वे-पुलिस से भी पूछना चाहिये...हत्याओं के मामले आजकल कितने बढ़ गये हैं...

चलते-चलते उसे यकायक खयाल आया कि अचानक उसकी गति बढ़ गयी है. वह सड़क पर जैसे उड़ा चला जा रहा है....लड़की भाग गयी तो मैं क्या करूं ? सोचा...मैंने तो अपनी तरफ से हरचंद कोशिश की कि वह एक अच्छी लड़की बने...सदा यही कोशिश की कि बच्चे सुखी रहें, दुःखी न हों...क्या दुःख था रेखा को...भाग गयी तो भाग जाये. मैं क्या करूं ?...

'कुल्फी ! कुल्फी मलाई.' उसके कानों में आवाज आयी. पारसी कुंएं के पास लैम्प का टिमटिमाता दिया जलाये एक कुल्फी वाला हांक लगा रहा था.

...आइसक्रीम का तो स्वाद ही याद नहीं रहा. ओंकार को खयाल आया. चौपाटी गये तो जैसे युग बीत गया. शादी के पहले बटाटा-पुरी, भेल-पुरी खाये बिना चैन नहीं मिलता था. अब तो होटल में चाय पी लेना भी एक नियामत है...जवानी के लिए क्या दिन थे. तो क्या अब वह बुड्ढा हो गया है ?...अभी उस दिन बस की बाहर यूनीफार्म पहने खड़ी वह लड़की... अरे, अभी तो उसमें गज-भर का कलेजा है. ले मुकाबला कोई चढ़ता जवान...

चलते-चलते वह जैसे उछलने लगा. ईरोस-थियेटर को दूर से देखते ही उसे याद आया कि बरसों से उसने कोई अंग्रेजी फिल्म नहीं देखी. हालांकि फिल्म की बातें उसे समझ में नहीं आती, लेकिन जो कुछ भी हो फिल्म तो बनाते हैं यही सोच. खून की रगों में भी खून दौड़ने लगता है. चलते-चलते वह रुक गया...पिक्चर देखना है ? उसने अपने आप से पूछा...कब देखना है ? फिर कभी ? अरे, देखना है तो आज ही देख लो. फिर कभी तो कभी नहीं आता...अभी देख लूं ? हां, अभी, अभी. उसका रोम-रोम पुकार उठे...अभी शो का टाइम है. किसी ने उसके भीतर कहा....और वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दो इतनी देर, आज कोई नहीं पूछेगा. उसके मन ने उसे आश्वस्त किया...तो चलो, फिर आज देख ही लो. उसने अपने आपको जैसे प्रोत्साहित किया... पर ठहरो. पहले कुल्फी. नहीं, पहले कुल्फी नहीं. पहले मेल. फिर कुल्फी. फिर पिक्चर. वह ठठा कर हँस पड़ा. अचानक उसे लगा कि जैसे उसके पैरों के नीचे से पृथ्वी का गोला खिसक गया है और वह किसी निर्द्वन्द्व पंछी की तरह डैने पसार कर आकाश में आपास उड़ता चला जा रहा है□□

१२।३४६ बैलासिस ब्रिज बम्बई–४०००३४

लघुकथा—

एक तालाब का बनना

बैताल डाल पर औंधे मुंह लटक गया और विक्रमादित्य को कथा इस प्रकार सुनाने "लगा—अमुक समय में एक कस्बे में तालाब निर्माण की योजना बनी. टेंडर निकला. कागज पर तालाब का नक्शा बना. कार्य भार एक ठीकेदार को मिला. दो-तीन माह बाद नक्शे में तालाब की खुदाई पूरी हो गयी. अब प्रश्न पारिश्रमिक के बंटवारे का खड़ा. हुआ चूंकि प्रश्न जटिल नहीं था, इसलिए उसका हल आसानी से हो गया. जिन लोगों का श्रम लगा था, उन्होंने सरलतम रूप से आनुपानिक ढंग में पारिश्रमिक का बँटवारा कर लिया. एक-दो माह बाद उसमें मछली पालने की योजना बनी. यह कार्य उसी ढंग से सम्पन्न हो गया. कुछ समय बाद कागज पर की ये मछलियां दुर्गंध पैदा करने लगीं. आसपास का वातावर दूषित होने लगा. कस्बे में महामारी फैलने लगी. इसकी सूचना अधीनस्थ पदाधिकारी को दे दी गयी. अब यह तय हुआ कि गंदगी और सड़ांध पैदा करने वाले तालाब को यथाशीघ्र भरवाया जाय. अतः तालाब भरने की योजना पुनः प्रारंभ हो गयी. तालाब भर गया. पारिश्रमिक का भी बंटवारा हो गया. जब तालाब भर ही गया तो नक्शे की क्या जरूरत ? बस थोड़े से कागज पर से नक्शा भी उतार दिया गया. बात आयी-गयी हो गयी.

कहानी भी यहीं समाप्त होने को चली. अतः बैताल चुप हो गया और डाल पर औंधा लटक कर विक्रमादित्य के कंधे पर सवार हो गया.

—श्याम बिहारी, बोस्टेड रोड, पटना (बिहार प्रान्त)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक जोर की हवा का झोंका इठलातासा फिर छेड़ गया. सामने की खिड़की का पर्दा एक बारगी हवा में लहराया. उसने झट से खिड़की के अन्दर नजरें तीर-सी फेंक दी. लेकिन नजरों का बिम्ब खिड़की से आस-पास ही लिपट कर रह गया. सा...ला...पर्दा भी...कभी-कभी दीवार बन जाता है. वह बुदबुदाया.

लगता है सविता आज फिर कहीं होगी. किसी पार्क में, किसी पिक्चर में, या कहीं शापिंग कर रही होगी. होगी कहीं. अपने को क्या? जो करेगा सो भरेगा. वह सोच रहा था.

चें...चें....चें का सामूहिक स्वर उसके कानों से टकरा रहा था. सविता की छोटी बहिन कविता होगी. चिड़ियां चुगा रही होगी. तभी सनसनाता हुआ एक कंकड़ उसकी टेबिल से टकराया—इस मुहल्ले के लड़के सब के सब आवारा हैं. उसने एक भद्दी-सी गाली निकाली. चिड़ियों को पत्थर मारा होगा. उसने अनुमान लगाया. साले, चुगा नहीं सकते तो इन्हें मारने का क्या अधिकार है. और, जिस दिशा से पत्थर आया था—उसने उसी दिशा में जोर से फेंक मारा—लगेगी तो खोपड़ी अवश्य खुल जायेगी—वह दुबारा बुदबुदाया.

सविता के पिताजी तो सरजू के पूरे-पूरे परिवार से नफरत करते हैं. वे अपने बच्चों से कहते हैं—बुरे पड़ोसियों की तरफ मत देखो. मुंह काला होने का डर है. डिप्टी मजिस्ट्रेट बने हैं. भूखे मरने के दिन आये हैं. बिना पंख के भी कोई उड़ा है....स...वि...ता...अब कहीं इस तरफ निगाह की तो दोनों हिरनी की माफिक आंखें निकाल फेंकूंगा. अब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिवार

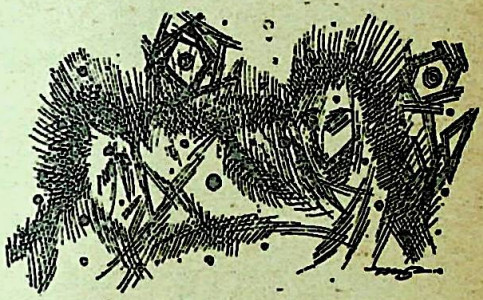

कुंअर प्रेमिल

सूरज...मेरी बैठक में टंगी हिरनी की आंखें अब पुरानी भी हो गई हैं. और मेरी आंखें उसमें एकदम फिट आयेंगी.

■

सरजू जब भी कभी अपने घर के बारे में यह सब सुनता है तो क्रोध से उफन-उफन जाता है. उसके नथुने गुस्से में फूलने लगते हैं. आंखें जलने लगती हैं. मगर... वास्तविकता भी कोई चीज है. सच्चाई से लड़ना आसान नहीं होता. इस बात से वह वाकिफ अवश्य है.

'सूरज...ओ...सूरज....अब तू ही नहाले. पानी गर्म हो कर खौलने भी लगा है. मां लगभग उसे चीखती हुई सी बुलाती है.

ओह...यार! मम्मी भी ग़जब की चीज है. इतनी जोर से चिल्लाती हैं कि...और कैसा गजब के आलसी हैं. पानी उनके लिए गरम होता है और जनाब जासूसी उपन्यास पढ़ने में ऐसे खो जाते हैं कि बस...और तब तक सरजू नहाये. पढ़ रहा है मित्रों से बातचीत कर रहा हो या...नहाओं....एक भी काम वह अपने मन से नहीं कर सकता. सबमें छोटा, सबका गधा, सबका नौकर. सरजू, सरजू. उफ ! छोटा होना भी क्या गुनाह है.

और यह छोटी—मालती की बच्ची भी क्या है. जब-तब उसके पीछे पड़ी रहती है. यह उसकी बहिन तो कम लेकिन सौत ज्यादा दिखती है. जरा डांटो तो मुंह फुलाया, ढील दो तो पतंग ही सर्र. सोलह की हो गई लेकिन—अक्ल से बिल्कुल रद्द है.

तब तक बाबू जी पर्दापण कर चुके होते हैं. उनके बिना बैट्री का रेडियो सुबह-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PEACOCK BRAND

कागज के

इस

घोर संकट में

आपकी

सुविधाओं

के लिए हम सदा की भाँति

तत्पर और प्रयत्नशील हैं.

महेश ट्रेडिंग कम्पनी

मैप लिथो, उड फ्री प्रिंटिंग पेपर, सभी प्रकार के पोस्टर पेपर क्राफ्ट एवं बोर्ड के स्टाकिस्ट.

बुलानाला, वाराणसी—फोन : ६४८१६

वितरक—

- ओरिएंट पेपर मिल्स लि० ब्रजराज नगर (उड़ीसा)
- दी सिरपुर पेपर मिल्स लि० सिरपुर (आंध्र पदेश)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...ही ग्रॉन हो चुका होता है—'यह कलियुगी सन्तान है. कोई ...हों का पैदा नहीं हुआ. सब एक नम्बर के जाहिल और बदमाश हैं. भिखमंगे बनेंगे. ...-बती में चौखटा लिये घूमेंगे. लोफर...एक नम्बर के...लो...फ...र...'.

उनकी गालियों की तेज बौछार दूसरों के लिए अवश्य चौंका सकती है, लेकिन ...घर के लोगों को नहीं. वह हैं भी बूढ़े मेमने से, मजबूर. कोई सामने पड़ा नहीं ...बोलती बन्द हो जाती है. अभी इतने बुड्ढे तो नहीं हुए. कुछ भी हो बाबूजी हैं ...वार अवश्य !

और सरजू—उसमें किसी के लिए कोई सहानुभूति नहीं है. इस परिवार में एक ...व्यक्ति ऐसा है, जो अपनी इज्जत और मर्यादा के लिए तिल-तिल जल रहा है. ...में मनुष्यत्व है. एक आदर्श है. झुकाने की ताकत है. एक मजबूत खम्भा है इस ...का. और दूसरे सदस्यों को तो देख ही रहें हैं आप—सब के सब स्वार्थी, एक नम्बर ...विलासी. बनावट और झूठे अहम् में डूबते हुए. मनुष्यता और आदर्श से सैकड़ों, ...हजारों मील दूर.

और संझले से बड़ी...दीपू. जब से मोहन से उसके बारे में सुना तो हाथों के तोते ...उड़ गये. वह कहता था—दादा ! दीपा दीदी का तो खयाल रखो. वह रोज गोपाल ...के साथ-साथ खोमचे वाले के यहां चाट खाने जाती है. अन्धेरे में—भला सीलन ...भरे घुटन वाले कमरे में भी चाट खाने का कोई मजा है. इतना था तो भी ठीक था. ...इतना ही नहीं उस पिंजाबी छोकरे के साथ रोज छुप-छुपकर 'डिम लाइट' ...में ब्लू फिल्म भी....

सरजू के आगे धरती और आकाश दोनों घूमते नजर आते हैं. इसके आगे वह ...सुन नहीं सका था. दोनों कान में उङ्गलियाँ डाल कर वह धम्म से बैठ गया था.

एक की बात हो तो ठीक है. यहां तो सब के सब आवारा हैं, बदचलन हैं. ...वैसी भाभियां भी !

बड़े भाई, रामचन्द्र नाम है इनका. लेकिन बिल्कुल रावण के अवतार हैं. ...रोज ही एक मसाले का पवौ अवश्य चाहिये. लाने वाला सरजू—न लाये तो वही ...फटकार ! गाली-गलौज ! जेब खर्च बन्द !

एक दिन संझली भाभी का बुलौआ आ गया. उनके कमरे में एक मार्डन आर्ट ...की...सी फोटो थी. उसकी कीलियां ढीली थीं. उन्हें पक्का करना थी. फिर ...से सस्ता और कौन मिलता उन्हें.

'सज्जो बाबू इतनी-सी मेहनत की कितनी फीस वसूल कर रहे हो. इस गर्मी में ...बूढ़े चाय बनानी पड़ रही है तुम्हें.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'भाभी—मैं चाय नहीं पीता हूं.' वह बोला.

अहा....वाह रे. भोलानाथ ! क्या अभी तक मम्मी का ही दूध पीते हो.' वह नचाती हुई बोली.

'भाभी'—उसने आंखें तरेर कर देखा. मुझे फालतू बातें बिल्कुल पसन्द नहीं।' सरजू ने बिगड़ कर कहा.

'हां मैं ही फालतू बतियाती हूँ. मैं खुद भी फालतू हूँ. दूध के धुले तो केवल तुम ही हो.'

'भाभी—मैं तुम्हारे पैर पड़ता हूँ. मुझे यह बातें बिल्कुल पसन्द नहीं हैं.'

फिर कब दरवाजा बन्द हुआ—और कब भाभी की गर्म सांसें—उसकी गर्दन को पिघलाने लगीं उसे पता नहीं रहा.

उसने गुस्से में तस्वीर जमीन पर फेंक मारी थी, 'तुम नागिन हो भाभी' उसने जमीन पर थूक दिया था.'

'अपने परिवार को एक दिन तुम ही डस लोगी. तुम और तुम्हारा आदमी दोनों आवारा हो. मैं तुम लोगों की शक्ल नहीं देखना चाहता. आइन्दा...'वह आग बबूला होता हुआ कमरे से भाग आया था.

यही हैं संभले भैया—मुरली बाबू. खुद की मुरली तो पता नहीं किसके लिए बचा रखी है. सविता से इश्क फरमाये जाते हैं साहब्. अभी-अभी बलात्कार के एक केस से छुटकारा पाया था. अब स्मगलिंग कर रहे हैं. कहते हैं सब्बों एक दिन मेरे घर की रानी बनेगी. इसी बात को ले कर सविता का बाप रोज हजारों गालियां बकता है. मगर किसे पड़ी है. इज्जत किसी के पास हो तो पानी हो.

लेकिन सरजू. उसने कुछ फैसला कर लिया है. अब मन के विद्रोह से कुछ कम होगा. अब वह सबको बराबर सबक देगा. हार जायगा तो एक दन घर छोड़ कर जंगल में निकल जायगा. लेकिन चुपचाप हाथ पर हाथ रखने से कुछ नहीं होगा. वह बाबू जी जैसा तो लाचार नहीं है.

■

एक दिन सुबह-सुबह उसे मालती के नाम का पोस्ट किया हुआ लिफाफा मिला. सरजू जानता है कि दूसरे का पत्र पढ़ना अच्छा नहीं है. लेकिन अब उसे किसी के ऊपर भी विश्वास नहीं रहा है. वह जानता है कि मालती भी सोलह की पार कर चुकी है.

पत्र की एक-एक लाइन बमुश्किल उसके गले के नीचे उतर रही थी. किसी मोहन ने इस पत्र में अपनी राधा को संसार भर की गन्दगी से पूर दिया था. वह गुस्से में थरथरा कर कांप गया था. पत्र में लिखा हर एक शब्द बिच्छू जैसा डंक मार रहा था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह गुस्से से तमतमा उठा था. उसने जोर से मालती को जोर कर आवाज दी थी. मालती हमेशा वाली सरल चितवन ले कर आ खड़ी हुई थी.

'मोहन कौन है ?' वह चीखा था. उत्तर में मालती सकपकाई थी. उसने लिफाफा उसके चेहरे पर दे मारा था, 'साली...टांगे तोड़ दूँगा आइन्दा अब घर से निकली तो.'

सरजू ने रौद्र रूप धारण कर लिया था. वह पूरे घर को नंगा कर देना चाहता था. बीसियों बातें जो वह अब तक पचा रहा था. उगल दे रहा था. उसके गिन-गिन कर पूरे घर को—धमकियां दी थीं किसी ने भी आगे से...तो फिर...हां टांगें तोड़ दूँगा उनकी. साले ! सब के सब चोर चमार आ बसे हैं इस घर में.

एक दिन पहिले दीपा की पिटाई जो हुई थी, सब के सब देखते रहे थे. किसी की भी हिम्मत सरजू को रोकने की नहीं पड़ी थी. पूरा मुंह सूज गया था दीपा का.

मुरली जो तीन दिन से अपने कमरे में बन्द थे. रामचन्द्र जो वाकई राम बन गये थे, घूरे पर उनकी बोतलें-पौए लुढ़क रहे थे. और उस पिंजाबी का स्कूटर तीन दिनों तक नालें में पड़ा रहा था.

यह था सरजू. इन्कलाब ले आया था. बूढ़े बाबूजी की रगें फड़कने लगी थीं. वह जोर-जोर से कह रहे थे—'यह है मेरा लड़का. सरजू की मां—देखो ! सरजू मेरा पूत है. बोलो इन सबको ले कर कहां-कहां मुंह काला किया था.' कुछ ही दिनों में सबकुछ जवान हो जायेंगे किसको पता था.

सरजू सबेरे नल से नहा कर आ रहा था. तीनों भाई उसके साथ थे और वह खड़ा हो कर जोर-जोर से कह रहा था.

'बुरे पड़ोसियों की नजर से बचना चाहिए. डिप्टी...मजिस्ट्रेट बने हैं...अब मुहल्ले की पुरानी आंखें बदल दो लालाजी. सब्बो भाई गई है. न हो तो दरोगा तक को रपट लिखाने. आंखें खोल कर देख लेना. मेरी तो दोनों बहिनें घर में हैं. और सुनो...अब मुरली को भूल जाना. मुरली घर में है. सब्बो उसके लायक नहीं थी.'

उसने क्या सारे मुहल्ले ने देखा था. लाला अपने घर की खिड़कियां बन्द कर रहा था. और सरजू....अपने घर की खिड़कियां स्वाभिमान से खोल रहा था. आज सारा परिवार एक था. 'पूरा घर मन्दिर के समान पवित्र और भव्य लग रहा था.'

—४५८, मोती भवन, आमनपुर, जबलपुर.

आँख का निरीक्षण

डाक्टर—क्यू भाई तुम्हारी आँख तो बिल्कुल ठीक है.

रोगी—डाक्टर साहब, मुझको रात में सपना साफ नहीं दिखता. कोई चश्मा दे दीजिये जिससे सपने साफ दिखलाई पड़ने लगें.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'बाबा आ गए, बाबा आ गए'—तीनों बच्चे एक-साथ चिल्लाये और बाबा जी की ओर दौड़ पड़े. 'बाबा जी हमारे लिए क्या लाए', तीनों एक बार फिर चिल्लाए. तत्काल बाबा जी ने एक भटमैले-सी पुड़िया निकाल कर बच्चों के हाथ पर धर दी. बच्चे तृप्त नजरों से कभी पुड़िया को और कभी बाबा जी को देखने लगे. मानों उनके हाथ मुंगफली का खजाना आ लगा हो. तीनों बारी-बारी मुंगफली के दाने खाने लगे बीच-बीच में बाबा जी को भी दो-चार दाने पकड़ा देते. बाबा जी मन-ही-मन खुश हो रहे थे नन्हें-मुन्नों को देख कर कि तभी किसी की परुष सुनाई पड़ी.

बच्चों के मुख पर मलीनता छा गई और बाबा राम दयाल सिमट अपने आप में दब-से गये. 'राजू, पिंटू, मिंटू—दिखाओ तुम्हारे हाथ में क्या है, नहीं तो लगाती हूं दो झापड़. दिखाओ, दिखाते क्यों नहीं—ये कमबख्तों, क्या सांप सूँघ गया या जबान पर पक्षाघात हो गया जो बोलते नहीं बनता' और यह कहते-कहते बड़ी बहु ने तीनों को एक-एक झापड़ रसीद कर दिया. बच्चे बाबा के पीछे आ दुबके और बोले, 'बाबा बाबा मां मारती हैं, ऊँ...ऊँ....' राम दयाल पहले तो चुप रहे पर विवश हो कह उठे, '...छोड़ो बहू, बच्चे ही तो हैं. और हां मुंगफली तो मैंने ला कर दी—कल से मांग रहे थे' और राम दयाल ने बच्चों को जकड़-सा लिया. 'बस फिर क्या था बहू ने अनाप-शनाप कहना शुरू कर दिया....'मैं तो जानती हूं कि बच्चे आपकी शह पा कर ही बिगड़ते हैं वरना इनकी क्या मजाल. सौ बार कहा कि इन्हें ऐसी-वैसी चीज खाने न दिया करें. बड़ी लाए हैं सौग़ात उठा कर. अरे मैं तो कहती हूं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उपेक्षित

प्रेम पाठक ●

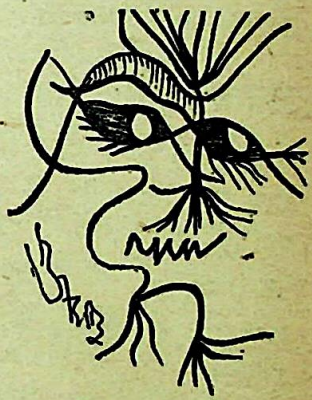

मेरे बच्चों के लिए मेरी मुंगफली ही रह गई है. कोई देख लिया तो क्या कहेगा कि एक सैक्शन आफिसर के बच्चे गन्दी चीजें खाते हैं. पर आप को क्या आपकी बला से कोई क्या कहेगा—क्या सोचेगा. सौ बार कहा कि ये मालियों-चपरासियों वाली आदतें छोड़ दो परन्तु आपकी तो नस-नस में चपड़ासीपना रच गया है.' बड़ी बहू न जाने क्या...क्या कहे जा रही थी.

बड़ी बहू की जली-कटी सुनते-सुनने ल० राम दयाल ऊब-से गए और वह कहीं और ही ख्यालों की दुनिया में भ्रमण करने लगे. मानों सोच रहे हों—बड़ी आई औकात और इज्जत वाली. जिसके पीछे 'मेम साहिबा' बनी फिरती हो वह भी तो मेरा ही बेटा है. एक चपरासी का बेटा. मैंने दिन-रात एक कर दिया इन बच्चों को बड़ा करने, इन्हें योग्य बनाने के लिए. अपने जीवन की, अपने अरमानों की होली जला कर इन दो बच्चों को मैंने पाला. इनके साथ रात-रात भर जागा. इनके सुख को अपना सुख, इनके दुख को अपना दुख समझा. तब मेरी उम्र ही क्या थी—केवल तीस वर्ष. कितने रिश्ते आए, दूसरे विवाह के लिए मजबूर करते रहे.परन्तु मैंने इन दो बच्चों की खातिर अनेक प्रस्ताव ठुकरा दिये इसलिए इन्कार कर दिया कि कहीं सौतेली माता इनके साथ कैसा व्यवहार करे. स्वयं अपने हाथों से इनके लिए खाना बनाता, कपड़े धोता तथा इन्हें नहलाता-धुलाता. और हां नन्हा तो तब था ही केवल वर्ष का—इसे हर समय कन्धे पर उठाए घूमता रहा. अरे तुझे क्या मालूम. मैं जन्म से चपरासी ही था ? क्या-क्या दिन देखें हैं मैंने. एक वह जमाना था

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जब हाथों में अंगूठियाँ, गले में सोने की चैन पहने रहता था और सवारी के लिए मेरे पास घोड़ी थी. कितना रोब था तब. गली-मुहल्ले के लोग कितना दबदबा मानते थे मेरा. औरतें देखते ही सिर पर कपड़ा ओढ़ झट-से घरों के अन्दर भाग जाती थीं. फिर समय ने करवट बदली. काम-काज बिगड़ गया. वही हाथ जो कभी धन लुटाते थे अब दाने-दाने को मोहताज हो गए. अरे काया और माया का क्या मान.

हड़ताल : कुछ सुझाव

पत्नी बोलो :
आज पहली तारीख है
क्या-क्या लाये ?
बताया हमने :
भाग्यवान हम हैं हड़ताल के सताये
इसीलिए
आज खाली हाथ घर आये
अब तो
फैसला हो जाने के बाद ही
मिलेगा वेतन का प्रसाद
जब तक हड़ताल खत्म नहीं होती
भजो हवा
जपो पानी की माला
उधार भी नहीं देगा लाला
इसलिए हे गृहलक्ष्मी !
पेट पर—
कस कर बाँध लो पट्टी
भूख नहीं लगेगी
हड़ताल नहीं खलेगी.

—सुखबीर विश्वकर्मा

मैंने हिम्मत न हारी. अपना गाँव, अपना देश छोड़ नौकरी की तलाश शुरू कर दी परन्तु नौकरी कहां से मिलती. पढ़ने के नाम पर सिर्फ रामायण बांचना और पत्र लिखने से अधिक कुछ न जानता था. जब घर का व्यापार था पैसा था तब शिक्षा का महत्व न जाना. सोचा कि पढ़-लिख कर क्या होगा. पिता जी ने बहुत जोर लगाया परन्तु मुझे न पढ़ना था, न पढ़ा. जब रोटियों के लाले पड़े तो मैंने मान, सम्मान को ताक पर धर दिया. सोचा चोरी करना पाप है लेकिन हाथ से काम करने में कोई बुराई नहीं. और फिर आखिरकार मैं एक व्यापारी से एक चपरासी बन गया. तब भी मेरा आत्मविश्वास बना रहा और दृढ़ विश्वास और कार्यशीलता का समावेश हिलोरें लेता रहा. मैंने कभी भी अपने कार्य अथवा व्यवसाय के कारण अपने इन दोनों किशोर बेटों में हीनता की भावना न आने दी. दोनों को पढ़ा तैसे कर उच्च शिक्षा दिलाई और उन्हें लोगों की तरह जीने का पाठ पढ़ाया. परिणामस्वरूप आज दोनों बेटे एक सुखी सम्पन्न जीवन व्यतीत कर रहे हैं.

बहुत लोग तो मेरा उदाहरण देते हुए भाई कहते हैं—कोई त्याग करे तो ऐसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खाना जैसा करें. कभी-कभी तो मैं भी सोचता—मुझे क्या चाहिए केवल दो जून रोटी.

और अब अपनी तो कट गयी थी. बच्चे भी सुखी हैं. अब और क्या चाहिए मुझे. परन्तु एक बात जो रह-रह कर मुझे कसक जाती वह है बड़ी बहू का असभ्य और अशिष्ट व्यवहार. उसने कभी-भी मुझे ससुर का सा आदर-मान प्रदान नहीं किया. जो रोटी देते हुए भी उसे ऐसा आभास होता मानो वह मुझे असहाय और निरीह शब्दों पर अहसान जता रही हो. मैं ममता के बन्धनों में जकड़ा छटपटाता रहा. अन्दर-ही-अन्दर कुढ़ता रहा, घुटता पर मुंह पर शिकन न लाया केवल इसलिए कि बुढ़ापे में इस जर्जर शरीर को ले कर कहां जाऊँ.

इन्हीं विचारों में सोया था कि बेटा आ गया. बहु ने एक की चार लगाई. कुछ फुसफुसी आवाजें मेरे कानों से भी टकराती रहीं. बहु कह रही थी, 'सुन लो जी, अब इस बूढ़े का एक दिन भी मेरे घर न कट पाएगा. मरा बैठा-बैठा रोटियां खाता रहता है, चारपाई तोड़ता है. हमने सारे जीवन का ठेका नहीं उठा लिया. बेटे को कहो रखे अपने पास. मैं तो चुप रहती हूं वरना कान पकड़ कर बाहर निकलवा दूं भला सब को क्या बताना कि मैं अमुक दफ्तर में चपड़ासीगिरी करता था. बूढ़ा सठिया गया है.'

मैं सब सुनता रहा और अन्दर-ही-अन्दर खून का घूंट पीता रहा. सोचता रहा—इसी औलाद के लिए मैं आधा पेट भूखा रहा और अपने अरमानों का खून किया. किसे अहसास है कि मैंने अपना युवाकाल कैसे काटा. सिर्फ मुझे हो न. बेटे तो कहते हैं, तुमने अपना फर्ज पूरा किया है. कौन-सा बड़ा तीर मारा है. आखिर सब करते हैं अपने बच्चों को. ठीक है पैसा बहुत बुरी चीज है. यह वह मादक नशा है जिसे चढ़ जाता है उसकी आंखों के सामने रिश्ते-नातेदारी का कोई महत्व नहीं, मां-बाप भाई-बहन आजकल पैसे तथा स्टेटस से पहचाने जाते हैं.

कब रात ने अंधेरे की चादर ओढ़ ली, मालूम ही न पड़ा. सुबह होते ही घर में चहल-पहल दिखाई पड़ी. राम लाल नौकर से मालुम हुआ कि साहब का 'प्रमोशन' हो गया है और नई कार भी खरीद लाए हैं—इसीलिए सायंकाल को एक पार्टी आयोजित कर रखी है. मेरी आंखें खुशी से सजल हो उठीं. मेरे बेटे ने कार ले ली. मैं भागता हुआ भगवान के मन्दिर गया. पांच रुपये का प्रसाद चढ़ाया और बच्चों के लिए मंगलकामना की. प्रसाद ला कर बड़ी बहू को थमाया, 'बहू राम लाल से मालूम पड़ा था कि लड़के की प्रमोशन हुई है और उसने कार ली है. इसीलिए मन्दिर गया था. यह लो प्रसाद बांट दो. तुमने तो बताया भी नहीं.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हां, हां बता दूंगी. रख दो वहां. और सुनो आज सायंकाल अपने कमरे में ही रहना. खाना वहीं भिजवा दूंगी. बड़े-बड़े लोग शाम को पार्टी पर आ रहे हैं—समझ गये न.'

समझ गया, सब समझ गया और मैं चुपचाप अपने कमरे में लौट आया. सोचने लगा—वाह रे जमाने ! बेटे की खुशी में बाप सम्मिलित नहीं हो सकता. आज खाना खाने को मन न हुआ. सुबह से भूखा पड़ा रहा. सांझ हो गई परन्तु किसी ने पूछा तक नहीं कि उस बागवान का क्या हाल है जिसने इस पेड़ को फलों से भरपूर देखने के लिए अपने शरीर पर आंधी-पानी को झेला है. हँसी-खुशी की मिली-जुली तरंगें मेरे कानों से भी कभी-कभी टकरा जातीं. कभी-कहीं आहट होती तो मुझे आभास होने लगता कि बढ़का होगा, मुझे बुलाने आया होगा. बड़े-बड़े अफसरों से मिलवाएगा और कहेगा कि यही मेरे देवतुल्य पिता हैं जिसके कारण मैं इस पद-स्तर तक पहुंचा हूं. परन्तु नहीं, मुझे बुलाने कोई नहीं आया. आज मुझे जमना, इनकी मां और अपनी धर्मपत्नी रह-रह कर याद आ रही है. काश वह जिन्दा होती और मैं उसे अपना दिल दिखा पाता. अब मेरी कौन सुनेगा. मैं बूढ़ा सठिया गया हूं, इसीलिये तो अकेला यहां पड़ा हूं. इन्होंने तो मुझे जीते जी ही मरा समझ लिया है. ठीक ही तो है.

अब मैं कदापि यहाँ नहीं रहूँगा. कल ही नन्हें के पास चला जाऊंगा. छोटी बहू, सभ्य तो है. बड़े-छोटे का आदर करना जानती है. फिर खयाल आया कहीं वह भी मुझे बोझ न समझ बैठे. फिर कहीं का न रहूँगा अभी खयालों की खिचड़ी पक ही रही थी कि तीनों बच्चे आ गए—'बाबा आप यहां हैं और हम सारा घर छान आए. यहां अकेले क्यों बैठे हो. बाहर चलो. पापा नई कार लाए हैं. चलो बाबा देखो न नई कार.'

'अच्छा बेटे अभी चलूंगा. सब लोग चले जाएं, तब. नहीं तो तुम्हारी मां गुस्सा करेंगी.' 'नहीं, बाबा.....चलो ना. नहीं तो हम नहीं बोलेंगे' यह कहते-कहते बच्चों ने मुझे जबरन उठा लिया. 'बाबा यहां बैठो. देखा कितनी सुन्दर कार है. अब आप इसमें बैठा करो. वह आपका दोस्त बिशम्बर नाथ पाठक है ना, उसके घर इसमें बैठ कर जाना. ठीक है न बाबा ?' मैं और बच्चे बहुत देर तक कार में बैठे बतियाते रहे. समय का अनुमान ही न लगा. इसी बीच पार्टी भी समाप्त हो गई. बहू और बढ़का बेटा विशेष अतिथियों को बाहर तक छोड़ने आये. लौटते समय बहू बढ़के से कह रही थी, 'चलो अच्छा हुआ आज बुढौउ बाहर नहीं निकला. नहीं तो नाक कट जाती हमारी. जानते हो मैंने तो सबसे कह रखा है कि 'इनके' माता पिता तो बचपन में ही स्वर्ग सिधार गए थे. यह बूढ़ा तो हमारा पुराना नौकर है इसीलिए तो इतने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छोड़ा है,'

ओह, इतना अनादर. क्यों मैं इतना ममता के बन्धनों में उलझ गया. मैं क्या नहीं कर सकता. विदेश में तो लोग साठ-सत्तर की आयु तक विवाह ही करते हैं. फिर अपने देश में भी तो डा० राजेन्द्र प्रसाद, डा० राधाकृष्णन तथा अनेक अन्य लोग बुढ़ापे में समाज सेवा करते रहे हैं, आज भी कर रहीं हैं. मैं अपाहिज तो नहीं जो व्यर्थ में बहुओं बेटों पर आश्रित रहूं. मेरी तरह अन्य बुजुर्ग भी होंगे जो पूर्णतः बहुओं बेटों पर निर्भर होंगे और नरक तुल्य जीवन व्यतीत कर रहे होंगे और.... और वास्तव में सारा जीवन भी तो काम के बिना कटना मुश्किल है. शायद वे लोग कुछ सुखी हो जिन्हें पेंशन मिलती हो या जिनके पास असंख्य धन हो परन्तु आखिर कितने ऐसे लोग होंगे. क्या यहां भी विदेशों की भांति कोई 'वृद्ध होम' जैसी संस्था स्थापित नहीं की जा सकती जहां मेरे जैसे अन्य लोग भी जीवन की कटुताओं से राहत पा सकें. हाथ पर हाथ रखने से क्या होगा. मुझे कुछ करना ही होगा. अपने लिए तो सभी जीते हैं परन्तु जो मजा दूसरों के लिए जीने में है, वही अमूल्य निधि है.

दृढ़ संकल्प कर दूसरे दिन ला० राम दयालने नई दिशा चुन ली और नये पथ पर शान्ति को खोज में निकल पड़े. १३।११, रेलवे, सेवा नगर, नई दिल्ली-११०००३

शांति की राह

एक व्यक्ति किसी संत के पास पहुँचा और बोला—'भगवन्, शान्ति के लिए मुझे क्या करना चाहिए' ?

'तुम करते क्या हो ?' संत ने उत्तर देने से पूर्व जिज्ञसु की भाव भूमि जानने का प्रयास किया.

'मैं राजा हूँ. आगन्तुक ने छोटा-सा जवाब दिया.

'तुम कितनी देर तक सोते हो ?' संत ने फिर पूछा.

'रात को कुछ समय के लिए आँख लग जाती है.'

संत ने परामर्श दिया कि शान्ति पाने के लिए अब तुम रात और दिन में जितना अधिक सो सको, सोया करो. इससे तुम्हें शान्ति मिलेगी और प्रजा में भी शान्ति रहेगी.

राजा आश्चर्य में डूबा आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगा तो सन्त ने कहा, 'इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है. शासक जाति ही ऐसी है कि जितनी अधिक जागेगी, उतना ही शोषण, उत्पीड़न अन्याय और अत्याचार को बढ़ावा मिलेगा.

—शरद कुमार 'साधक'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

घड़ी ने दिन के दो राउंड पूरे कर फिर से अगले दिन के लिए दौड़ना शुरू कर दिया था. वह बिस्तर पर पड़े-पड़े पत्रिकाएँ उलटता रहा—एक के बाद दूसरी, दूसरी के बाद तीसरी. सब कुछ पढ़ा हुआ सा लग रहा था. एक आर्टिकल से जबरदस्ती उलझने की कोशिश की. लेकिन लग नहीं पाया. आंखें अकेली पड़ गयी थीं. मस्तिष्क कहीं और विचारों के भँवर में चक्कर काट रहा था. झटके दे कर अलग करने की कोशिश की लेकिन वह था कि पतिंगे की तरह बार-बार फिर वहीं जा कर मंडराने लगता. ऊब का दोष गरमी के सिर मढ़ने की कोशिश में बाहर बालकनी में आ कर बैठ गया. और सुबह घर से आये पत्र का जवाब लिखने लगा. यहाँ भी कुछ सूझ नहीं रहा था. एक हाथ में कलम थामें दूसरे से मच्छरों के हमले लौटाने लगा. एक बार बाहर की ओर झाँक कर देखा. तूफान के गुजर जाने के बाद की सी शान्ति थी. केवल सामने सड़क के एक कोने लगा सार्वजनिक नल टोटी निकाल लिये जाने के कारण, तूफान में टूट कर गिरे असहाय पत्तों-सा अपनी विवशता का रोना रोये जा रहा था. लेकिन सुनने वाला कोई नहीं था. नाईट-शिफ्ट के लोग जा चुके थे. सेकंड शो छुटने में अभी कुछ समय बाकी था.

मुश्किल से दो-चार पंक्तियां लिख पाया होगा कि किसी के सीढ़ी चढ़ने की आवाज आयी. पत्र पर अनिच्छापूर्वक जमी आंखें अवसर पा कर चट से जीने की ओर उचट गयीं. देखा, रामू था—ग्राउंड फ्लोर पर रहने वाले बतरा जी का साला. प्लान्ट में ही काम करता है. तीन साल पहले मेट्रिक पास की, खेती के काम से जी चुरा कर यहां भाग आया. एक माह हो जाने के बाद भी जब लौटने का नाम नहीं लिया तो कुछ पत्रिका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिक्रिया

●

भगवान् बैद्य

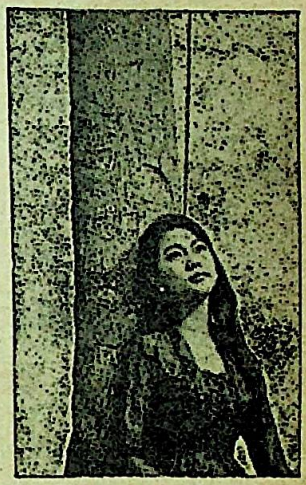

दिल रखने और कुछ अपने सिर का बोझ हलका करने के इरादे से बतरा जी ने सौ-दो-सौ के लिए गांठ ढीली कर प्लान्ट में ही सर्विस लगवा दी. आशा थी नौकरी लग जाने पर कुछ तो वसूल हो ही जायेंगे. लेकिन हुआ कुछ और ही. चार माह बीत जाने पर भी जब रामू के हाथ ढीले नहीं हुये तो बौछार बहन पर आने लगी. बहन ने जब देखा दोनों ओर से जकड़ी जा रही है तो एक दिन पूरा जोर लगा कर बतरा जी की अनुपस्थिति में ही बहन-भाई का रिश्ता ताक पर रख कर जी भर कर खरी. खोटी सुना दी और अन्त में 'अपना प्रबंध कहीं और कर लेने' का नोटिस भी दे दिया. जवानी तिलमिला उठी. दूसरे दिन वह किसी दोस्त के घर 'शिफ्ट' हो गया और उन्मुक्त हो कर पंजाबी-बासा और कभी चाट की दूकान आबाद करने लगा. इधर आना-जाना भी नहीं के बराबर रह गया. कभी आता भी तो सीधे ऊपर आ कर उसी से मिल कर बहन के हाल पूछ जाता और जाते समय रमता को ऊपर बुला कर दो चार चाकलेट या आठ-चार आने थमा कर मामा का रिश्ता 'रिन्यू' कर जाता.

रामू को सामने देख कर उसका मस्तिष्क फिर भंवर की चपेट में आ गया और थोड़ी देर पहले बतरा जी के घर से आ रही स्मिता के रोने की आवाज उसके कानों में गूंजने लगी.

बतराजी को इस ब्लाक में आये करीब चार साल हो गये. यहाँ आने के कुछ ही दिनों बाद उनकी इकलोती लड़की स्मिता की बरसी थी. —शायद पांचवीं. तब पहली बार कालोनी के अन्य लोगों के साथ उसे भी बुलाया गया था. औपचारिकता निभा कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे आप देश-दर्शन पर निकले हों,
मेले मे हों, समारोह मे हों,
पिकनिक मे हों, जहाँ भी हों,
आपका मनोरंजन करने के लिए

आपका सर्वप्रिय

गंगा और तूफान ज़र्दा

सभी जगह सुलभ है.

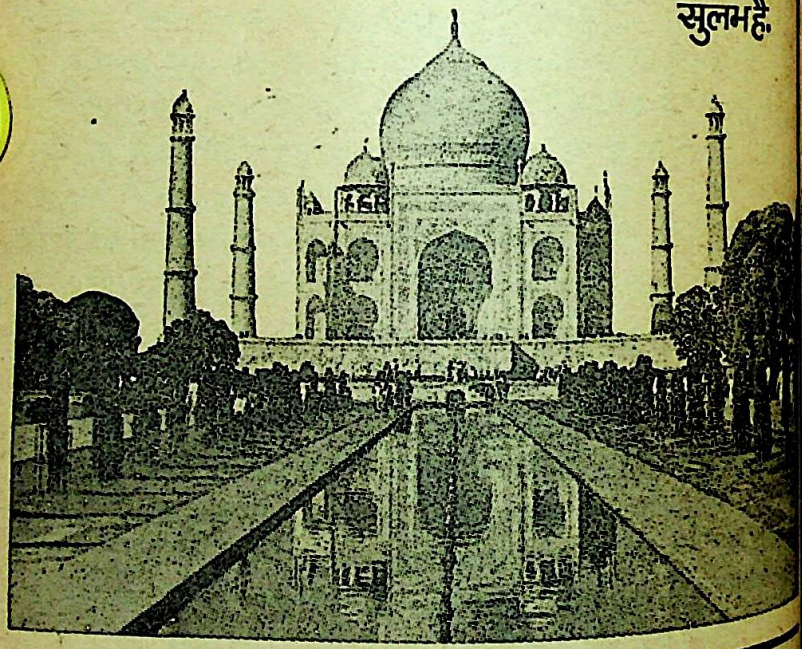

सलगूराम काशीनाथ परफ्यूमर्स • वाराणसी • फोन ६३

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रुक-रुक कर सारे आमंत्रित जा चुके थे. वह जरा देर से गया था इसलिए बैठा रह गया. काम से जरा राहत पा कर बतरा जी भी उसके पास आ बैठे. कर्टर के अकोमोडेशन से बात चलकर रेन्ट, मंहगाई, प्लान्ट, गर्मी आदि पर सर्वे करती व्यक्ति-गत विषयों पर आ कर रेंगने लगी. उसके 'अभी-तक बैचलर' कहते ही बतरा जी उठ कर अन्दर जाकर लौटे और सहानुभूति-दर्शाते से बड़े आग्रह से कहने लगे 'अब खाना खाकर ही जाइये.बस,दस-बीस मिनट और लगेंगे, सब कुछ तैयार ही है.'

उस दिन पहली बार बतरा जी से उसका परिचय हुआ. उसके बाद हर अवकाश के दिन नाश्ते के लिए और किसी त्योहार पर खाने के लिए बुलावा आने लगा. सुबह-शाम आना-जाना शुरू हो गया. पहले केवल बतराजी होते, फिर रामू या स्मिता होती और बाद में मिसेज बतरा अकेली होती तब भी. पहले केवल किसी काम से ही जाना होता, फिर हाल-चाल पूछने, कभी स्मिता को पढ़ाने, कभी खुद एक कप चाय पीने और बाद में केवल गप्पें मारने भी. बीच-बीच में उसे उऋण होने के अवसर भी मिलने लगे कभी साग-सब्जी ला कर देता, कभी राशन का शक्कर तो कभी किसी के लिए डाक्टर की दवा. एकाध बार जब अपना जरूरी काम छोड़ कर मिसेज बतरा के आग्रह पर उसके घर का कोई 'जरूरी सामान' ला कर देना पड़ता तब मि० बतरा की अपने खुद के घर के कार्यों की ओर दिखायी जाने वाली उदासीनता उसे अखरने लगती.लेकिन फिर सोचता इनका खाया-पिया भी तो आखिर किसी-न-किसी रूप में लौटाना ही है.

रामू या बतरा जी की उपस्थिति या अनुपस्थिति में देवर-भाभी की हँसी मजाक चलने लगती. एक बात बहुत दिनों से उसके मन में थी. एक दिन अवसर पाकर हंसी-हंसी में मिसेज बतरा पर उछाल दी—

'भाभी, एक बात पूछूं.'

'पूछो ?' पिछली बात पर शुरू हुई खिलखिलाहट को जारी रखते हुए मिसेज बतरा ने कहा.

'झूठ तो नहीं बोलोगी. '

'पूछोगे भी या भूमिका ही बाँधते रहोगे.'

'सरकार ने तो दो या तीन तक छूट दे रक्खी है, फिर आप लोग एक पर ही क्यों रुक गये. स्मिता के बाद दूसरा नम्बर...'

...संगीत रचना करते सारे तार एक बार जोर से झनझनाकर जैसे एक साथ रुक गये. मिसेज बतरा किसी बहुत उंची जगह से एकदम नीचे लुढ़क गई थी. उठ कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुंह एक ओर कर कपड़े फाड़ती सी भर्राये आवाज में बोली...'अब शायद कुछ [illegible] होगा.' फिर कुछ संभल कर बात को उंडेल कर बहाती-सी बोली—'क्या करना है, एक भी तो बहुत है...'

इतना कहने पर भी उसे लगा कि बात कुछ अधूरी या असंगत ही रह गयी है पूरी करने के लिए फिनिशिंग टच सा देती आगे कह गयी...'सरकार के चाहने से चाहने से क्या होता है....' लेकिन बस इतना ही कह पायी.

उस दिन बात को वहीं छोड़ कर वह निकल आया और अपने क्वार्टर में आ कर तुरन्त निश्चय कर लिया कि अब कभी उनसे इस संबंध में नहीं पूछेगा. लेकिन इस निश्चय के साथ ही एक बात उसके मस्तिष्क में अच्छी तरह जम गयी थी कि कोई न कोई बात है अवश्य.

एक दिन शाम को रामू से 'टाईम पास' बातें करने बैठा था. कोई ऐसा विषय मिल नहीं पा रहा था जिस पर देर तक बात की जा सके. जबर्दस्ती बातों के टुकड़े तोड़े जा रहे थे. अचानक उसको यह बात याद हो आयी. सोचा रामू को छोर पर देखा जाए.

थोड़ा इधर-उधर कुरेद कर वह बात सीधी पटरी पर ले आया. [illegible] स्मिता अभी कुछ ही महीनों की थी कि फैक्ट्री से लौटते वक्त इनका एक्सिडेन्ट हो गया. हाथ पैरों के साथ-साथ गुप्तांग पर भी कहीं चोट आयी थी. आपरेशन करना पड़ा था. यहां तक की बातों का अन्दाजा तो यदा-कदा मिले बातों के टुकड़े जोड़ कर वह लगा चुका था. आगे रामू ने बताया कि उसके बाद मि० बतरा संतानोत्पत्ति के लायक नहीं रहे. मि० बतरा से सम्बन्धित बातें रामू को बहन से भी जुड़ी होने के कारण सब कुछ स्पष्ट शब्दों में बताने में रामू का झिझकना स्वाभाविक ही था लेकिन उसने चतुराई से 'हां, ऐसा कुछ मुझे ज्ञात हुआ था, बतरा जी ऐसा कुछ एक बार बता रहे थे' आदि वाक्यांशों का सहारा ले कर रामू से सब कुछ उगलवा लिया था. और आज वह उस रोज मजाक में कही गई बात की गहराई का अन्दाज लगा सका था.

जाना-आना चलता रहा. बातचीत और हंसी मजाक के दौरान वह [illegible] अवश्य ध्यान रखता कि ऐसी कोई बात उसके मुंह से न निकल आये जिससे मि० [illegible] बतरा के सेंटिमेंट्स को आघात पहुँचे. इसी बीच कुछेक अवसर ऐसे भी आये [illegible] उसने पति-पत्नि में कुछ तनाव-सा महसूस किया किन्तु इसे अधिक महत्व न दे कर और केवल पति-पत्नी का आपसी मन-मुटाव समझ कर वह नजर अन्दाज करता रहा. दो एक बार दोनों के बीच पड़ कर सुलह करा देने का श्रेय भी लिया, [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोनों सुबह अच्छे रवासे बोलते दीखते और शाम को अचानक
अन्तर्धान हो जाते. स्मिता अगर कभी किसी काम से उपर आती तो पूछने पर
उसके बतीस होने का पता जरूर लग जाता था. किन्तु उसके उत्तर से 'कारण' पता
नहीं लग सकता था. स्मिता की बातों से ऐसा लगता कि या तो उनकी बातें इसकी
समझ से परे हैं या फिर इसे घर की बातें अन्यत्र किसी से न कहने की सख्त ताकीद
की गयी है.

एक दिन वह फर्स्ट शो देख कर 'मूड' में लौटा. सीढ़ियों की ओर मुड़ते वक्त उसने
सामने बैठी मिसेज बतरा से कहा, 'क्या चल रहा है भाभी'. छूटते ही जवाब मिला
'आप ही की राह देख रही थी'. उसने महसूस किया जैसे पूछने भर की देर थी;
जवाब पहले से तैयार था. एक नजर बरामदे में खाट पर आँखें मूंद कर पड़े. मि.
बतरा पर डाल कर वह खटखट सीढ़ियां चढ़ने लगा. दो चार सीढ़ियां चढ़ कर
मिसेज बतरा से मिले जवाब को एक बार फिर चबाया—आप ही की राह देख रही
है—कुछ ज्यादा, ही फ्रैंक हो गई है और निगल कर आगे बढ़ गया.

कपड़े उतार कर खाट पर पड़ा ही था कि नीचे से कुछ आवाजें सुनायी
पड़ने लगीं. पहले धीमे और बाद में अच्छी खौलती हुयी. उसेन जीने पर आ कर
सुनने की कोशिश की. सुनायी तो पड़ रहा था लेकिन संदर्भ मालूम न होने के कारण
समझ सकने में असमर्थ था. कुछ देर बाद आवाजें शान्त हो गई थी लेकिन जब तक
उसे नींद नहीं आ गयी तब तक मिसेज बतरा की रोने की आवाज उसे बराबर
सुनायी देती रही.

दूसरे दिन उसने किसी से बात नहीं की. सुबह उतर कर बिना किसी से बोले
बाहर निकल गया और शाम को भी सीधा ऊपर चढ़ आया. शायद उसे उनका
इस प्रकार रहना अच्छा नहीं लगा था. किसी काम से स्मिता ऊपर आयी थी.
उसके पूछने पर पता चला—रात पापा ने मम्मी को बहुत मारा,पता नहीं क्यों. उसने
मन में निश्चय किया, कभी अवसर पाकर मि.बतरा से कहेगा—क्या पढ़े लिखे हो कर
जानवरों जैसे पत्नी को मारते पीटते रहते हो. कोई देखे तो क्या अच्छा कहेगा. लेकिन
दूसरे दिन विचार बदल गया. एक बार याद आया जरूर लेकिन अपने संबन्धों के साथ
तौल कर देखने पर बात कुछ ज्यादा बजनदार-सी लगी. सोचा, क्या करना है. किसी
के आपसी मामले में हस्तक्षेप करना उचित न होगा. कितनी ही घनिष्ठता क्यों न हो.
क्या मालूम...दोनों में से कोई कह दे....आपको क्या लेना-देना हमारी आपसी बातों से.

उसे फिरभी झगड़े का कारण जानने की उत्सुकता बनी रही. बतरा से पूछा न
गया. मिसेज बतरा जरा अधिक लगाव और अपनत्व से बाते किया करती थीं. उन्हीं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर, आकर्षक, रंगीन,

हाफटोन, लाइन,

ब्लाक के निर्माता

वचित्रकार

जौहरी

ब्लाक वर्क्स

निशात सिनेमा, गोदौलिया, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बैठा. तार तभी तक तने हुये थे. छूते ही झन्झना उठे—
नहीं आज कल क्या हो गया है. बात बात पर दिमाग खराब होता है.दो चार दिन
बीते नहीं कि जैसे दौरा पड़ने लगता है. क्या करूं, किस्मत ही खोटी निकली,
मूरख से पाला पड़ा.' अन्तिम शब्द उसे कानों में धनुष-टंकार से लगे. खिसिया कर
भी कुछ कह न दे इस डर से चुपचाप वह वहाँ से खिसक गया.

शाम को वह दफ्तर से लौटा तो मूड कुछ आफ था. आ कर सीधे लेट गया. झपकी
लग गयी. नींद खुली तो देखा शाम हो चली थी. उठ कर बत्ती जलाने का प्रयास
किया लेकिन जली नहीं. बाहर देखा, बाजू के ब्लाक में रोशनी थी. फ्यूज चेक करने
नीचे उतरा. सामने बतरा जी के क्वार्टर की ओर नजर गयी. अंधेरा था. लेकिन
सामने का दरवाजा खुला था. सोचा मोमबत्ती या माचिस मिल जायगी. दरवाजे पर
आ कर एक के लिए पता नहीं क्यों ठिठक गया और फिर कुछ सोच कर स्मिता को
आवाज दी. उसने खुद महसूस किया, आवाज कुछ ज्यादा ही दब गई थी शायद अन्दर
तक गयी ही नहीं. फिर एक और आवाज दी. अन्दर से सिसकियों से उभरी आवाज
ने उत्तर मिला, स्मिता बाहर गयी है....खेलने. फिर सिसकियां. उसने अन्धेरे कमरे के
अन्दर पैर रखा. लगा सारा कमरा सिसकियों से भर गया है. अन्दर कमरे में खाट
पर मिसेज बतरा पड़ी थीं. देख कर कुछ सहम गया. रोने का कारण जानने की कोशिश
की... 'कुछ नहीं....यूं ही. 'उसने इस कुछ नहीं और यूं ही को 'मूरख के संदर्भ से
जोड़ कर पूछा—अभी तक दफ्तर से लौटे नहीं. सांस रोक कर जवाब दिया गया...
आजकल ओवर-टाईम चल रहा है. अचानक उभर आयी सहानुभूति कदमों को खाट
तक खींच कर ले गयी. उसने हाथ माथे पर रख कर आवाज में अत्यधिक अपनत्व
भर कर पूछा,'भाभी,बोलो ना आपको क्या हो गया है? क्या आज फिर मारा ?'उसका
हाथ थाम लिया गया एवं सिसकियां रोने में बदल गयीं. वह हाथ छुड़ाने की रूष्टता
न कर सका, वहीं सिरहाने टिक गया. सोचा थोड़ी हलकी हो जायगी तो अपने आप
जाने लगेगी. दो ही चार मिनट हुए होंगे कि बाहर सायकिल रुकने की आवाज
आयी. हाथ अपने आप खिंच गया जैसे किसी ने तान कर रखा स्प्रिंग एकाएक छोड़
दिया हो. दरवाजे पर आ कर देखा मि० बतरा थे. वह एकदम सकते में आ गया जैसे
खून करते रंगे हाथों पकड़ा गया...पता नहीं क्या सोचेंगे. और हां, बिजली
भी नहीं है.....

मि० बतरा ने केवल एक नजर उसकी ओर देखा और अनदेखा-सा करके पूरा
ध्यान सायकिल पर केन्द्रित कर उसे एक ओर करने लगे. आखिर उसने ही बोलना
शुरू किया—भाभी अन्दर पड़ी रो रही हैं. लेकिन उसे लगा उसने ये शब्द अपने आप

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से ही कहे हैं. शायद मि० बतरा तक आवाज पहुँची ही नहीं. वे अपने काम में वैसे ही व्यस्त थे जैसे कुछ हुआ ही नहीं. सायकिल में ताला बन्द किया और टिफिन निकाल कर सामने पड़े स्टूल पर रख दिया और एक ओर पड़ी कुर्सी पर बैठ कर जूते उतारने लगे. उसने फिर कहा—अपने ब्लाक में बिजली नहीं है, शायद फ्यूज चला गया है ...कोई जवाब नहीं. ऐसा लगा जैसे उनके पास कहने के लिए शेष कुछ बचा ही नहीं. आंगन की ओर से आती गर्म हवा का एक झोंका कानों को चटकाता-सा सीधे घर में घुस गया. उसे लगा बतरा जी की आवाज उसमें घुल जाने से वहा और अधिक गर्म हो गयी है ....शायद बतरा जी ने प्रत्युत्तर में उससे कहा...अवसर अच्छा देखा देना।

एक दिन वह दफ्तर से छूट कर उधर ही से पिक्चर निकल गया. घूमते फिरते लौटा तो काफी रात हो चुकी थी. सब कुछ सुनसान था, पड़े-पड़े साल भर पीछे निकल गया. लौटा तो लगा, क्या आज फिर कुछ हो गया. अब क्या हो गया ? जवाब ढूंढते मस्तिष्क थक कर पता नहीं कब सो गया.

सुबह उठ कर नौ के करीब नीचे उतरा तो देखा स्मिता कहीं जा रही थी. उसे देख कर रुक गयी. उसने इशारे से पूछा...माँ कहां है. बोली 'अन्दर है.' मैं बस आपको बुलाने ही वाली थी. रात मां को खूब मारा. वैसे ही, जैसे एक बार और मारा था.'

'तुम कहां जा रही हो' उसने पूछा.

'दूध लेने, डेयरी पर. आज अभी तक न चाय बनी.न खाना.वे ऐसे ही ड्यूटी पर गये. मेरा स्कूल का टाईम भी होने को आ रहा है....'वह आगे बढ़ गयी.

उसने अन्दर झांककर देखा तो मिसेज बतरा अस्त-व्यस्त सी खाट पर पड़ी थीं. मुंह दूसरी ओर था. पीछे की ओर मुड़े हुये घुटनों तक खुले पैर बाहर झांक रहे थे. कमर और पीठ के बीच का कमानदार खुला हिस्सा सामने की ओर मुड़ा था. वहीं आस-पास काले-काले खुले बालों का गुच्छा अस्त-व्यस्त सा बिखरा पड़ा था. थोड़ी देर तक उसकी आंखे यह सब देखने में लग गयीं. तभी अचानक कमर के पास वाले और खुले भागपर मारका लाल निशान, काला-सा पड़ता जा रहा देख कर उसकी दृष्टि वहीं सिमट कर रह गयी. लेकिन पैर आगे बढ़ गये. उसने माथे पर हाथ रख कर देखा बुखार था. कंधा धीरे से हिला कर एक दो हलकी आवाजे दीं. नीचे से एक हाथ ऊपर की ओर बढ़ा और कंधे के उपर से लुढ़काते हुये उस हाथ को भी नीचे घसीट ले गया. उसने थोड़ा झुक कर देखा लगा अभी अभी घनघोर वर्षा थमी थी.सट कर वहीं बैठ गया. दूसरे ही पल एक अजीब सी गरमीं चढ़ती महसूस हुयी. उसका हाथ उस दूसरे गरम हाथ द्वारा छातियों के बीच जकड़ लिया गया.मिसेज बतरा सीधी हो कर उसे घूर रही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं. उसको लगा जैसे उसे धिक्कार रही हैं. वह जड़वत बना रहा. मिसेज बतरा ने अपने दोनों हाथ उपर उठा कर एक जंजीर-सी बनायी और उसके गले में डाल कर उसे अपने बिल्कुल पास खींच कर कस कर अपनी छाती से लगा लिया. वह इस अचानक हमले के लिए तैयार न था. उसे लगा जैसे उनके शरीर में खून की जगह तप्तरस प्रवाहित होने लगा. वह अब तक अपना धैर्य खो चुका था और अब उसके शरीर का तप्तरस भीतर से फुट पड़ने के लिए व्याकुल हो उठा था. उसके शरीर में सुप्तावस्था में पड़ा पिशाच अब बोटी-बोटी कर देने के लिए तप्त था. तभी अचानक उसे लगा कि चेतना तप्तरस एक साथ फुट पड़ा. बस, उसके बाद कुछ देर तक वह निर्जीव-सा पड़ा रहा.

जब कुछ संभला तो देखा स्मिता दूध का डिब्बा लटकाये अन्दर की ओर चली आ रही है. वह खाट पर निस्पंद पड़ा बोझिल पलकों को उठा कर देखता रहा. मिसेज बतरा झट से उठ कर अलग हो गयी.

कानों में कुछ सुनायी पड़ा...शायद स्मिता पूछ रही थी—अंकल को क्या हो गया मम्मी. और जवाब में कह दिया गया था—चक्कर आ गया अचानक इसलिए यहीं लेट गये.

थोड़ी देर बाद मिसेज बतरा चाय का कप लिये उसके सामने खड़ी थीं. उसने महसूस किया, मिसेज बतरा अब भी उसे घूर रही हैं शायद इसलिए वह अपनी नजर चाय की प्याली पर गड़ा कर रखने की भरसक चेष्टा कर रहा था. फिर भी नजर थी कि उपर उठ ही गयी. उसने देखा, सामने वाली आंखों में एक अजीब संतुष्टि झलक रही थी—पति की मार का प्रतिशोध ले चुकने के बाद की सी संतुष्टि.

...बाहर किसी ने एक मरियल से कुत्ते पर लठ जड़ दिया था और प्रतिकार करने में असमर्थ होने के कारण वह कीऽऽऽकीऽऽऽकर रहा था■

—डी ३ एल०आई०सी० कालोनी सेक्टर ६, भिलाई जि० दुर्ग.

दरियादिल

—आपके पास सिगरेट है ?

—जी हाँ, यह लीजिए पूरा पैकेट हाजिर है.

—धन्यवाद, क्या माचिस होगा ?

—जी हाँ यह लीजिये मेरा लाइटर.

—वाह, आप तो बड़े दरियादिल हैं.

—आप गलत फरमाते हैं, दरियादिल नहीं, कैंसर-दिल.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कभी स्वपन में भी नहीं सोचा था. कतई उम्मीद न थी कि कभी ऐसा भी होगा. अभी...अभी पत्नी का फोन आया था....' गांव से कुछ भाई तशरीफ लाये हैं. कोई जरूरी काम बतलाते हैं. विश्वास नहीं रहा हमारा सम्बन्ध टूटे तो दो वर्ष से भी ज्यादा हो चुके हैं और दौरान आना-जाना तो एक ओर रहा, पत्र व्यवहार तक नहीं हुआ.

सम्बन्ध बने भी कैसे रहते ? भैया ने कौन...सा मुझसे अच्छा सुलूक किया था. ऐसा तो कोई शायद अपने दुश्मन से भी नहीं करता. मैं तो भैया का उनका छोटा भाई था. मैंने कौन...सा ऐसा गुनाह किया था जो मुझे घर छोड़ने के लिए कहा गया. चाहता तो झगड़ा कर सकता था. कोर्ट में अपील कर सकता था. क्या मैं आधी जायदाद का हकदार नहीं ? लेकिन बात का बतंगड़ बनाना उचित न समझा था. घर की बदनामी होती लोग तमाशा देखेंगे.

दो-अढ़ाई वर्ष की लम्बी अवधि के बाद आज भैया क्या करने आ होंगे ? कुछ समझ नहीं आ रहा. खैर ! घर चल कर ही पता चल पाएगा. दिमाग पर यूँ ही बेवजह स्ट्रेन डालने से क्या फायदा. आगे की छुट्टी लिख कर घर की ओर चल पड़ा.

■

जल्दी....जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ने लगा. दरवाजे को हल्का...सा खटाया. पहली बार हे हाथ मारने से दरवाजा खुल गया. भिड़ा हुआ था. अन्दर से साँकल नहीं चढ़ी हुई थी. पत्नी रसोई घर में थी. वहीं चला गया (बाहर का दरवाजा खुलते ही अन्दर सामने रसोई घर आता है.मकान कुछ अजीब ही ढंग का बना हुआ है).रसोई घर में वे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

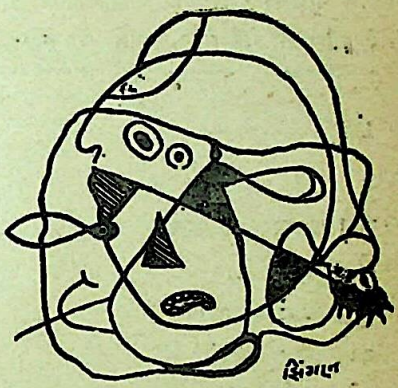

नकेल

□ फकीर चंद शुक्ला

मैं ड्राईंग रूम में बैठे देख रहा हूँ. वही पुराना पहरावा, सफेद धोती...कुर्त्ता. आँखों पर रबर का मोटे शीशों वाला चश्मा. मगर कनपटियों पर बाल पहले की अपेक्षा कहीं ज्यादा सफेद हो गये हैं. चेहरा भी काफी उतरा हुआ लगता है. गाल तो यूँ चेहरे में धँसे हुए हैं जैसे किसी ने कच्ची गिली दीवाल में धूँल भर दिया हो. माथे पर बड़ी बड़ी लम्बी...लम्बी और गहरी शिकनों से लगता है मानो कोई बहुत ही गम्भीर बात सोच रहे हों. भैया को जाने क्यों धोती...कुर्त्ता ही पसन्द है. मुझे कभी भी अच्छा नहीं लगा. कालेज के दिनों में अक्सर उन्हें टोक दिया करता था—'क्यों बड़े...बूढ़ों की तरह धोती कुर्ता पहने रहते हो ? पैंट नही तो कम-से-कम पजामा ही पहन लिया करो.

मगर हर बार वही पहला...सा जवाब मिलता—'जब तुम नौकर हो जाओगे तो सूट पहना करूँगा. हाँ, कहीं कुर्ते...पजामें की बात न करने बैठ जाना तब.' पल भर की हल्की—सी मुस्कराहट के बाद एकदम गम्भीर हो कर कहते—'फिलहाल तुम्हारी पढ़ाई का खर्चा ही निकलता रहे, इतना ही बहुत है.

भैया के दांई ओर सोफे पर ही एक मैला-सा थैला पड़ा लगता है. वही पुराना थैला होगा, शायद. जगह जगह पैबन्द लगे हुये. जाने कब छुटकारा होगा इस बेचारे का. क्या इतनी छोटी-सी चीज भी नहीं बदल सकते भैया ! थोड़ी झुंझलाहट होती है.

रसोई घर से मैं ड्राईंग रूम में आ जाता हूं. भैया सिर झुकाये जाने किन विचारों में खोये हुए हैं. मेरे वहाँ आने का आभास उन्हें नहीं हुआ.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या कह कर सम्बोधन करूँ, समझ नहीं आ रहा. 'भैया' शब्द क्यों गले में अटक रहा है. भाई क्या इतना निर्दयी होता है ? दिसंबर माह की, जमा देने वाली सर्दी में घर से चले जाने को कहा था. रात भर बिताना कठिन हो गया था. लगता जैसे गांव में नहीं बर्फीले पहाड़ों के ऐन बीच खो गया होऊँ. यह तो पहले से ही मन में शंका थी कि भैया वन्दना को स्वीकार नहीं करेंगे. मगर इतने कठोर दिल होंगे, इतनी बेरहमी से पेश आयेंगे, कभी सुना कर भी भेजे में नहीं आया था.

जानबूझ कर थोड़ा-सा खांसता हूं. भैया एकदम गर्दन उठा कर देखते हैं. राजीव !

एकटक उनकी ओर देखते रहता हूं. कुछ क्षणों के लिए, हाथ उनके पांव छूने के लिए बढ़े, मगर जाने क्यों झुक नहीं पाया. सिर्फ 'कैसे हो भैया ?' कह कर हाथ जो थोड़े—से ही आगे बढ़ पाये थे, पीछे खींच लेता हूं. वे उठ खड़े होते हैं. प्यार से आहिस्ता....आहिस्ता मेरे सर पर हाथ फेरते हैं. उनकी आंखें भर आई लगती हैं. चश्मे के शीशे कुछ धुंधले लगे (शायद मेरा भ्रम हो).

'बहुत दुबले हो गये हो. कुछ खाते पीते नहीं क्या ?'

भैया शायद अपने आप ही से कह रहे हैं, मुझे लगता है.

'बैठिए'

सोफे के एक ओर बैठ जाते हैं. मैं भी उनके पास ही बैठ जाता हूं.

'आने से पहले लिख दिया होता, स्टेशन से ले आता.' जाने कैसे कह पाया.

यह सब. दरअसल पूछना तो चाहता था, मेरे घर का पता तुम्हें किस से चला.

प्रत्युत्तर में भैया कुछ नहीं कहते. फर्श पर नज़रें गड़ाये शायद कुछ सोच रहे हैं.

कैद

■

खुले आकाश के नीचे
कैद हुए बैठे हैं,
कुछ इनसानी परिन्दे.
क्यों कि द्वेष-जाल के
पड़े हुए हैं फन्दे.
ये कैद
पिंजरे की कैद से भी भारी है.
इसी लिए तो समूची दिनचर्या
एक लाचारी है.
स्वतंत्रता से फुदक सकते हैं
उड़ नहीं सकते,
तिनके से टूट सकते हैं
मुड़ नहीं सकते.
क्यों कि,
यूँ तो सारा ही वातावरण
कहने को है घर,
मगर, सामर्थ्य ने सभी
काट दिये हैं पर.

—'लोचन'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'कैसे आना हुआ ?'

'हूं.....' वे चौंकते हैं. सचमुच ही कुछ सोच रहे थे.

दोबारा नहीं पूछ पा रहा.

रसोई घर से पत्नी इशारा करके बुलाती है. उठ कर वहाँ चला जाता हूँ. पूछती है—'भैया के लिए क्या पकाया जाये. अपने लिए तो मीट बनाया है.'

'मीट तो क्या, भैया तो अंडा भी नहीं खाते. कट्टर शाकाहारी हैं.'

'अजीब मुसीबत है. अब कौन दूसरी भाजी तैयार करे. मंहगाई का जमाना है. सब्जी-सूखी खाने को मिलती नहीं, दो-दो भाजियाँ कौन बनाये ?'

'खैर ! बाद में कर लेंगे. पहले चाय तो भेजो.'

■

'चाय की क्या जरूरत थी. तुम जानते तो हो मैं चाय नहीं पीता.'

मुझे तो जैसे और कोई काम ही नहीं. बस यही याद रखता फिरूँ, कोई क्या खाता है, क्या पीता है... यह सब अन्तर में ही कह कर प्रत्यक्ष रूप से यही कह पाया... एक कप ले लीजिएगा. क्या फ़र्क पड़ता है.'

वे कुछ नहीं बोले. चुपचाप चुस्कियाँ भरने लगे.

'कब आये ?'

'सुबह ग्यारह की गाड़ी से. घर ढूंढ़ते...ढूंढ़ते ही एक-डेढ़ घन्टा लग गया.'

'सुबह ग्यारह की गाड़ी ?' मन ही मन सोचता हूँ....अढ़ाई बजने को हैं. शायद अभी तक खाना भी न खाया हो.

'भूख लगी होगी. थोड़ा नाश्ता मंगवाऊँ ?'

'नहीं, कोई आवश्यकता नहीं. मेरे पास है.' और अपने पास पड़े थैले से कपड़े की एक पोटली निकाल कर खोलने लगे. दो रोटियों के बीच थोड़ा अचार और एक कटा-सा प्याज था.

'हमें तो यही हजम होता है. शहर की मसालेदार चीजें.....'कहते कहते अचानक रुक जाते हैं. शायद गले में ग्रास अटक गया है. जल्दी से चाय का एक घूंट भरते हैं. घूंट अन्दर निगलने से 'गटक' की आवाज होती है. एक लम्बा....सा सांस खींचकर कहते हुए मेरी ओर देखते हैं.

'कैसे आना हुआ ?'

जाने क्यों मुझे उनके यहाँ आने की वजह जानने की इतनी बैचैनी है. शायद इस-लिए कि अब उनका हमारे यहाँ आना अविश्वसनीय लगता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

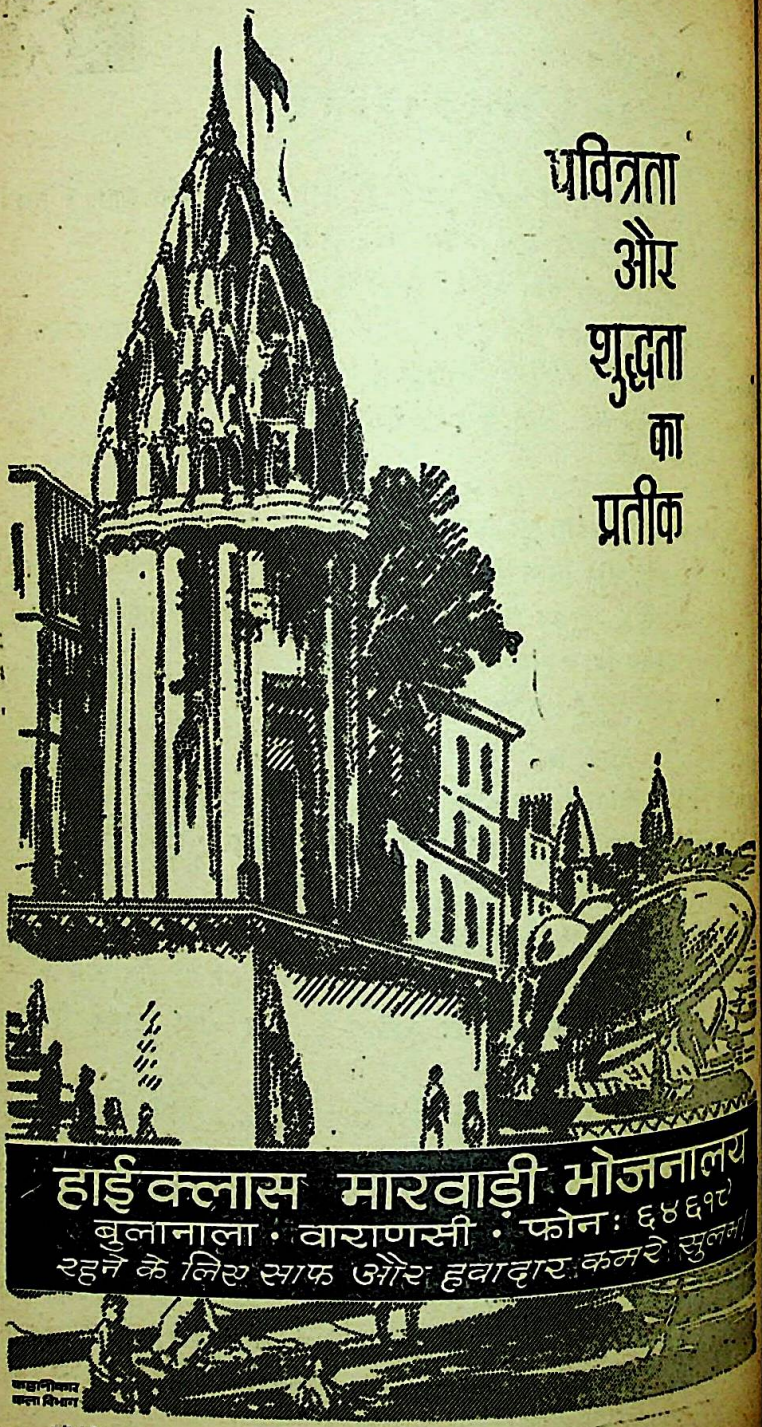

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'दो....दरअसल बात यूँ है...' वे उठ खड़े होते हैं.मैं भी खड़ा हो जाता हूँ.मेरे कंधे पर हाथ रख कर एक ओर ले जाते हैं. एक करेन्ट-सा लगता है. शरीर में कंपकंपी दौड़ने लगी. भैया ने इसी तरह कंधे पर हाथ रख कर एक ओर ले जाकर कभी कहा था—'तुमने अच्छा नहीं किया राजीव. खानदान की नाक कटवा दी. जाने किस जाति की है. कुछ तो सोचा होता.

मैं तब चुपचाप सुनता रहा था.

कुछ क्षण बाद निःश्वास छोड़ कर भर्राये गले से उन्होंने कहा था—'बेहतर यही होगा तुम इसी वक्त यहाँ से चले जाओ. समझ लो आज के बाद हमारा तुम्हारा कोई रिश्ता नहीं. तुमने कुछ तो सोचा समझा होता. बच्चे जवान हो रहे हैं, उन पर क्या असर पड़ेगा.

जाने भैया ने यह सब किस लहजे में कहा था. मगर वन्दना के सामने मेरे पौरुष को चुनौती थी, ललकार थी. जिनकी लड़की है, उन्होंने तो कुछ कहा नहीं, इनकी तो नाक कटी जा रही है. इडियट. एक भी पल और वहाँ न ठहरा और वन्दना को साथ लिये तुरन्त लौट पड़ा. रातभर गाड़ी में सफर करते समय सर्दी से ठिग्गी बँध गई थी. रास्ते भर पत्नी के उलाहने—'तुम तो कहते थे मेरे भैया देवता हैं, पितृ-तुल्य हैं. क्या यही वास्तविक रूप है उनका ? क्या यही सबूत है उनकी उदारता का ? मेरे क्रोध के दिमाग की नाड़ी फटी जा रही थी. मगर स्वयं को कंट्रोल करता रहा. मेरे थोड़ा...सा भी कुछ कहने से बात का बढ़ जाना स्वाभाविक था. कई दिनों तक उससे आँख मिलाने का साहस नहीं बटोर पाया था.

यह तो मेरा सौभाग्य था कि वन्दना के पिता जी के एक दोस्त किसी फ़र्म के जनरल मैनेजर निकले और मुझे शिफ्ट इंजीनीयर की जगह मिल गई. जल्दी ही सब कुछ सैटल हो गया, वरना कहाँ लिये फिरता उसे अपने साथ. भैया की महानता और उदारता के जो महल मैंने उसके सामने खड़े किये थे वे तो पल भर में ही ध्वस्त हो जाते.

'अरुणा के लिए लड़का देखा है. तुमसे मशवरा...'

हूँ...तो अब आये वास्तविक बात पर. लड़का देखा है ! तो देखते रहें. मुझे क्या ! मुझे काहे को बतलाने आये हैं. जो मन में आये करें. मैं कौन होता हूँ सलाह.... मशवरा देने वाला. घर में मेरे रहने से तो बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा—जाने क्या कुछ मस्तिष्क में रेंगने लगा है, ऐसा ही.

उंगली से बालों में खुजली करते हुए भैया बतलाते हैं....'घर-बार अच्छा है. बाप की पंसारी की दुकान है. तीन बेटे हैं. दो तो बाप के साथ ही दुकान पर काम करते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं, और तीसरा, जिसे अरुणा के लिए देखा है, इसी शहर में 'कपड़े की मिल' में नौकर है.'

खुशी की बात है. अच्छा घरबार मिल गया. लड़का नौकरी लगा हुआ है, घरबार समृद्ध है. आजकल दोनों चीजें एक साथ मिलना तो मायने रखती हैं. यह सब अच्छे कर्मों का फल है—इतना कुछ कहना चाह कर भी कुछ नहीं कह पाता. मूक श्रोता की तरह सुनता रहा जिसे उस विषय में कोई दिलचस्पी न हो और मजबूरन उसे सुनना पड़ रहा हो.

एकटक कुछ देर तक मेरी ओर देखने के बाद भैया पर्दा और उठाते हैं...'वाले चाहते हैं शादी इसी माह की जावे वरना...वे ज्यादा इंतजार नहीं करना चाहते मगर....इतनी जल्दी पैसों का प्रबन्ध कैसे कर पाऊंगा ? कुछ समझ....' कहते कहते रुक जाते हैं. दरवाजे की ओर देखने लगे हैं. वन्दना खड़ी है. वे नजरें झुकाये बैठकर सोफे पर आ बैठते हैं. शायद उन्हें वन्दना का आना अच्छा न लगा हो. शायद लिहाजदें के आने के कारण. वन्दना ने तो दुपट्टा भी नहीं ओढ़ा हुआ है. वैसे भैया बिल्कुल पुराने विचारों के हैं. आधुनिक युग के अनुसार थोड़ा-सा भी स्वयं को एडजस्ट नहीं कर पाये. एक बार शहर में किसी की शादी पर गये थे. कई दिनों तक घर आ कर बोलते रहे—कैसे निर्लज्ज लोग हैं. ससुर से भी पर्दा नहीं. औरों की तो बात ही क्या मान...मर्यादा तो इन लोगों ने जैसे बेच खाई है. हमारी बहू ने ऐसा किया तो कई दिन बोल देंगे...या तो हमें छोड़ दो या फिर यह नया फैशन.

'कहीं से दो...चार हज़ार का प्रबन्ध हो जाये तो....' आखिर भैया के कंठ से वास्तविक बात फूट ही पड़ती है. उनका आशय मैं समझता हूं.

'क्यों नहीं, दो....चार हज़ार क्या, जितना मर्जी हो ले लीजिए.' वन्दना के इन शब्दों पर वे यूं पलट कर उसकी ओर देखते हैं जैसे किसी ने उनके लिए कुबेर के खज़ाने का दरवाजा खोल दिया हो. चेहरे पर एक अजीब-सा रंग फैल गया लगता है.

'हां, दो...चार हज़ार तो कुछ भी नहीं. बैंक वाले तो कई-कई हज़ार लोन पास दे देते हैं.'

खतरे का साइरन बजते ही लड़ाई के दिनों में जैसे एकदम लाइटें गुल कर दी जाती हैं और छुप्प अंधेरा छा जाता है, वन्दना के इन शब्दों ने भी शायद ऐसा ही किया है. भैया के चेहरे पर दोबारा आए परिवर्तन को देखने का साहस मुझमें नहीं. नज़रें झुका लेता हूं.

कुछ पल की खामोशी के बाद भैया फुसफुसाते हैं (आवाज भर्राई हुई लगती है) '...हां, इसी सिलसिले में शहर आया था. थोड़ी फुर्सत मिली, सोचा तुम लोगों से भी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चिन्ता चलूँ.'

अपना थैला उठा कर उठ खड़े होते हैं. जेब से पाँच का नोट निकाल कर वन्दना की ओर बढ़ाते हैं... 'तुम्हारे शगुन के हैं.'

मुझे लगता है अभी कुछ विस्फोट होगा. वन्दना रुपये पटक कर फट पड़ेगी... —सम्हाल कर रखिएगा इन्हें अपने पास. हमें नहीं जरूरत तुम्हारे पैसों की,—मगर 'इतनी क्या जल्दी है, कल चले जाना' कह कर वह नोट पकड़ लेती है.'

'शादी...ब्याह की बात है. ढ़ेरों काम पड़े हैं करने को....तुम लोग जरूर आना.'

भैया चलने लगे हैं.

मैं आग्रह करता हूँ...'थैला मुझे पकड़ा दो, स्टेशन तक छोड़ आता हूँ.

'अरे नहीं, तुम आराम करो. थके...टूटे आये होगे. दफ्तरों में कौन...सा कम काम रहता है...और यह शहर मेरे लिये नया थोड़े ही है...फिर अरुणा की शादी के बाद तो अक्सर यहाँ आना ही पड़ा करेगा.'

भैया यूँ गर्दन झुकाये सीढ़ियाँ उतर रहे हैं जैसे सर पर बहुत भारी बोझ उठाए हुए हों. दरवाजे में खड़ा मैं उन्हें जाते हुए देख रहा हूं सीढ़ियाँ उतर कर वे सामने वाले फुटपाथ पर चलने लगे हैं...निरन्तर आँखों से ओझल हुए जा रहे हैं. मन में आता है भाग कर उनसे जा लिपटूँ. उन्हें वापिस ले आऊँ. जोर से चीख कर कहूं...

—आप क्यों चिन्ता करते हैं.दो-चार हजार तो कुछ भी नहीं. इतना तो मैं अभी दे सकता हूँ...आपका मुझ पर हक है. यह सब आप ही की बदौलत तो है...मगर कदम आगे बढ़ा पाने से पहले ही वन्दना मेरा हाथ पकड़ लेती है और मैं यंत्रवत उसके साथ कमरे में जाने लगा हूँ■

—बी० २ १७ मोहल्ला भारद्वाजा लुधियाना (पंजाब)

शाकप्रूफ

—मुझे एक वाटर प्रूफ घड़ी दिखाओ.

—लीजिए यह पूरी तरह वाटरप्रूफ है.

—क्या यह शाफप्रूफ भी है

—जी हाँ

—तो क्या यह ऊपरी मंजिल से नीचे गिरा देने या कार के नीचे दे देने पर भी शाकप्रूफ रहेगी ?

—जी हाँ यह वाटरप्रूफ भी है, और शाकप्रूफ भी, पर मुझे माफ करो यह बुलप्रूफ नहीं है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कृष्ण स्याह कृष्ण सफेद

गीदड़ की मौत आती है तो वह शहर की ओर भागता है ठीक उसी तरह जैसे कि किसी अच्छे-भले आदमी की जब शामत आती है तो वह लेखक बनता है. ग्रहों कि दशा जब खराब होती है, राहु और शनि की दृष्टि जब वक्र होती है तो कोई आदमी लेखक बनता है—ऐसा ज्योतिषी मानते हैं लेखक होना भी कोई काम है, कोई धन्धा है. कुछ बनना ही है तो नेता बनो, लेखक बनने से फ़ायदा ? लड़की वाला लड़की देने के पहले यदि यह जान ले कि लड़का लेखक है तो शायद उल्टे पांव लौट जाय. मेरे एक मित्र बत्तीस साल जब कुंआरापन में गुजार दिये तो उन्होंने लड़की वाले से यह बताने के बदले कि वह लेखक हैं, उन्होंने यह कहा कि वे कचहरी में पेशकार हैं. बस कहने की देर थी कि ताबड़-तोड़ उनको एक लड़कीवाले ने अपनी लड़की पेश कर दी. लेकिन जब शादी के बाद यह मालूम हुआ कि मेरे मित्र महोदय ने झूठ कहा था और वे दरअसल लेखक के लेखक ही बरकरार थे तो लड़की के बाप ने तलाक के लिए दरख्वास्त पेश कर दी. पहली पेशी के बाद दूसरी पेशी तक मेरे मित्र महोदय ने ऐड़ी चोटी का पसीना एक करके पेशकारी हासिल कर ली और कलम को तलाक दे दिया तब कहीं जा कर उनकी बीवी द्वारा उनका तलाक रुक सका. पेशकारी के बाद उनकी जिन्दगी आराम से कट रही है और अब वे आधा दर्जन बच्चों के बाप भी हैं.

पेशकारी की बदौलत मेरे दोस्त की जिन्दगी तो कबाड़ा होने से बच गयी लेकिन लेखकी की बदौलत आये दिन घरों का कबाड़ा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गीदड़ की शामत

□ कमल गुप्त

होते देखा-सुना जाता है. बनारस में पुरा के नाम से कई मुहल्ले हैं जैसे मदनपुरा, अली-पुरा, सोनारपुरा, अलईपुरा, लल्लापुरा वगैरह वगैरह एक दौर में आप चाहें तो इन्हे शायरपुरा भी कह सकते हैं. यहाँ का हर दूसरा मुहल्ला शायरी के इस रोग से आक्रांत है, गोया कि शायरी न हुई कोई महामारी हुई. जिस घर में शायर होता है उस घर से मुहल्ले के और घर छूतहे घर का-सा परहेज करते हैं. जिस दिन घर के किसी आदमी के शायर होने की खबर कान में पड़ती है, घरवाले उस दिन अपना माथा पीट लेते हैं और घरवाली अपना करम पीटने लगती है. शायरी का भूत सवार होते ही शायर जनाब की कलम चलने लगती है. फिर तो घर वालों को रोटी की जगह शायरी, भात की जगह शायरी, दाल की जगह शायरी, और तरकारी की जगह शायरी ही शायरी खाने को मिलती है. शायरी का ही भोजन, शायरी का ही ओढ़न और शायरी का ही बिछावन घर वालों को नसीब होने लगता है. शायर महोदय की कलम भाप के इंजन की तरह छक-छुक छक-छुक चलने लगती है और माल गाड़ी की लदान की तरह शेरो-शायरी के गट्ठरों की ढुलाई जारी रहती है. उनकी कलम नानस्टॉप बस की तरह चलती रहती है और घर के लोग रास्ते के पैसिंजरों की तरह मुंह बाये दौड़ती हुई बस को देखते रहते हैं और बस है कि रुकने का नाम ही नहीं लेती. उस बस में बैठने के लिए किसी और के लिए जगह भी नहीं होती, जगह होती है तो सिर्फ शायर महोदय के लिए, उनकी कलम के लिए और शेरो-शायरी के पुलिन्दों भरे गट्ठरों के लिए. यह बस दिन-रात चलती रहती है, हमेशा चलती रहती है, रुकती है तभी जब किसी हादसे का शिकार हो जाती है—मसलन जब बाप तंग आ कर उन्हें घर से निकाल दे, उन्हें लावारिस या पागल करार दे, या फिर बीवी किसी और के घर बैठने का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

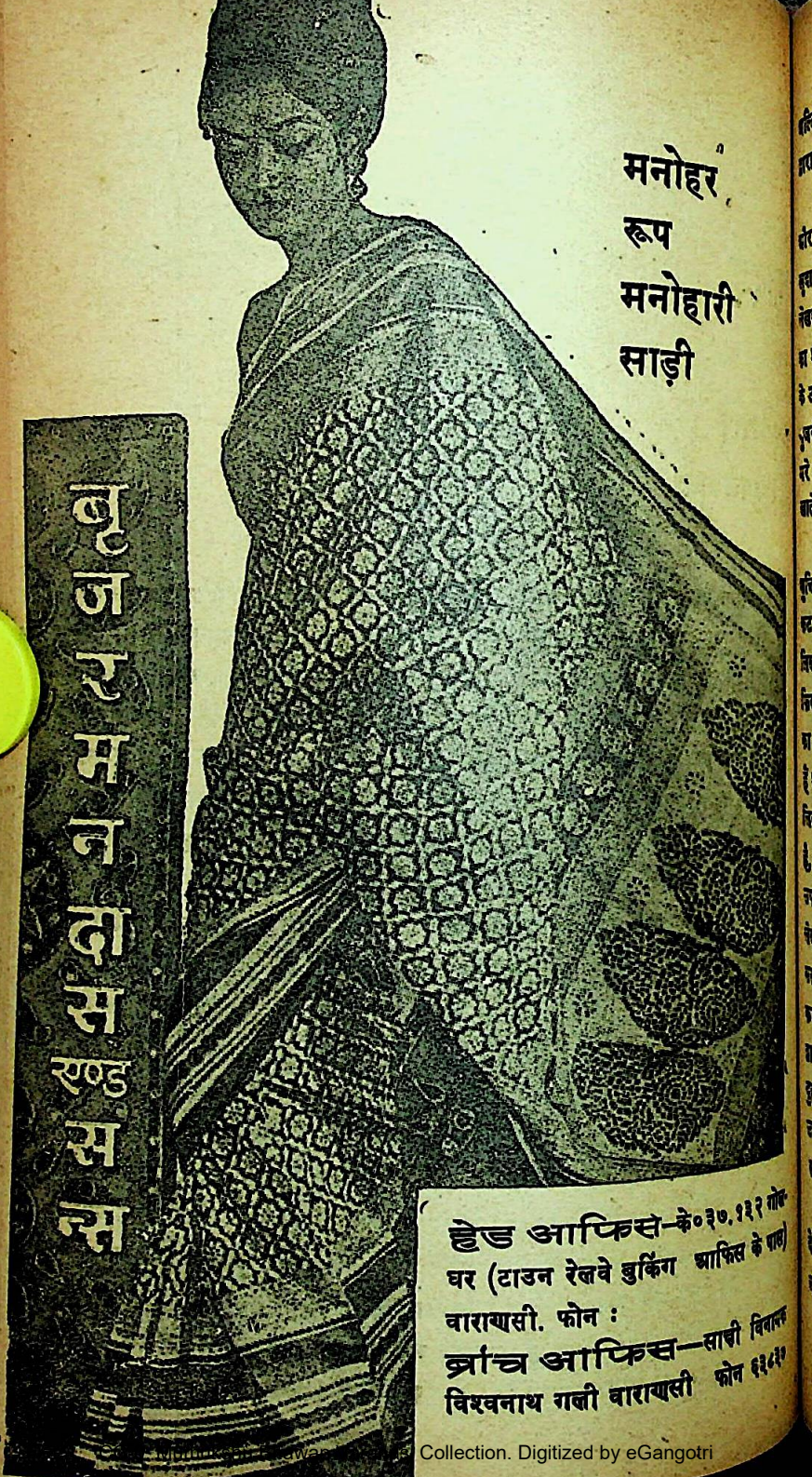

Collection. Digitized by eGangotri

प्रेजिडेंटस दे दे या फिर शायर महोदय किसी मुशायरे में पब्लिक

अपर पिट जाँय.

मैंने इसीलिए कहा था कि जब आदमी की शामत आती है तो वह लेखक बनता और जब गीदड़ की शामत आती है तो वह शहर की ओर भागता है. दरअसल दुनिया की सबसे बद्किस्मत कौम है लेखक. क्या गरीब क्या अमीर सभी की हालत लेखक बनने के बाद रोने लायक हो जाती है. बादशाह ज़फ़र भी करम के मारे लेखकी का शौक पाल बैठे और और 'दो गज ज़मीन' के लिए तड़प कर मर गये. ग़ालिब के अंदर यह जनून सवार हुआ तो जिन्दगी भर मुफलिसी के दामन में आँसू पोंछते गुजरी. निराला का निरालापन उन्हें कब चैन से जीने दिया. जिये तो फ़ाकेकशी में और मरे तो फ़ाकेमस्ती में. बिचारे प्रेमचन्द मरने के पहले गरीबी की मार सहते रहे और जाते समय दाल में दो डोप घी के लिए तरसते रह गये.

पर यह भी सच है कि मेरी बात सोलहों आने सच नहीं है. सभी निराला और गुरुभोष की मौत नहीं मरते. बहुत से लेखक हैं जिनकी जिन्दगी बड़े आराम से कट रही है. लोगों का कहना है कि जो सेठाश्रयी हो गये हैं, जो नेता के लिए भाषण लिखते हैं, उनके नाम से किताबें लिखते हैं, जो 'तीन बेर खाती सो तीन बेर खाती है, या फिर नगन जड़ाती सो वो नगन जड़ाती है' की तर्ज में अपने आश्रयदाता सेठ या नेता का गुणगान करते नहीं अघाते, उनकी बड़े आराम से कट रही है. ये बातें सच भी हैं और सच होनी भी चाहिए. भूखों मरने से तो बेहतर है कि कसीदे लिखो, प्रशस्तियां लिखो, वन्दना और अभिनन्दन लिखो. भूषण जैसे रचनाकार की आराम से कट जाती है, कट ही नहीं जाती बल्कि प्रायः वे पद्मविभूषण, पद्मभूषण, और पद्मश्री जैसी उपाधियों से विभूषित भी होते हैं और जिन्दगी भर उससे चिपके रहते हैं. देश के लेखन के सामने, लेखकों के सामने, हिन्दी के सामने, जनता के सामने जीने-मरने का सवाल हो पर वे अपने आभूषण से चिपके रहते हैं. टैगोर जैसी गलती वे नहीं करते. एक जलियां वाला बाग काण्ड पर गीतांजलि लेखक टैगोर ने बर्तानिया सरकार द्वारा दिये गये 'नाइट' के खिताब को तिलांजलि दे दी थी. लेकिन वह इतिहास क्या दुहराया गया ? (ताजा खबर के अनुसार 'रेणु' को एक अपवाद मान लीजिए) क्या उपाधियों को तिलांजलि देने का मौका अभी नहीं आया ? क्या लेखकों को जेल में सड़ाया जाना इस कार्य को करने के लिए काफी नहीं ?

मारिए गोली, लेखक जेलों में सड़ें तो मैं क्या करूँ ? उपाधि को तिलांजलि दे देने से सरकार को क्या परेशानी होगी ? उल्टे मुफ्त में सरकार की तोप उनकी ओर घूमने लगेगी और यह सौदा कम खतरनाक नहीं. किसी को कुत्ता काटा है जो जेलों में सड़ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुन्ता

एक राजनीतिक उपन्यास

पढ़िये—राजनीति की आड़ में होने वाले व्याभिचारों और अत्याचारों की जीवन्त गाथा

मूल्य—७.५०

संपर्क—
चित्रलेखा प्रकाशन
१४७ साहबतिया बाग-इलाहाबाद

गारण्टीयुक्त हिन्द व लक्की

साइकिल

एवं

साइकिल-रिक्शा

तथा

असली पुर्ज़ों की

प्राप्ति का

प्रतिष्ठान

वितरक वाराणसी
गाजीपुर, बलिया, मऊ

रामबक्स राम एण्ड कं० (मुनीमजी)

विश्वेश्वरगंज, वाराणसी
फोन : ६२८६२

ब्रांच—गोपाल एण्ड कंपनी, सेनपुरा, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेखकों से हमदर्दी के बदले सरकार से दुश्मनी मोल ले. सेठाश्रयी पत्रों का यह लेखक समझौतावादी होता है. उसके पास कुर्सी होती है, कुर्सी का मोह होता है, घड़ियाल के आंसू होते हैं, लफ्फ़ाजी की भाषा और भाषा की लफ्फ़ाजी होती है और इनके सहारे उनकी जिन्दगी आराम से कुर्सी में कट जाती है और बाकी की दुश्वारियों पर, गलियों में, नालियों में और जेलों में कट जाती है.

वैसे यह बात भी सच है कि लेखक बनना एक शौक नहीं है, एक मजबूरी है. खुदा की कुदरत का एक करिश्मा है लेखक, एक फरिश्ता है लेखक. यह बेवकूफ आदमी अपनी बदकिस्मती का तो नहीं पर औरों की बदकिस्मती का बोझ उठाये फिरता है और उसी गम को ढोते-ढोते मर जाता है. निराला के लिए पत्थर तोड़ने वाली का ग़म ज्यादा गहरा था—वह तोड़ती पत्थर इलाहाबाद के पथ पर वाल्मीकि को अपना कोई गम नहीं था. जोड़े से विलग एक पक्षी के विलाप और दर्द में उन्हें कवि बना दिया. प्रेमचन्द को होरी का दर्द साल गया. क्या तमाशा है, जिन्दगी अपनी और गम की लादी औरों की. पर आखिर मजबूरी भी तो कोई बात है जो सही माने में लेखक है, वह इसी मजबूरी का शिकार है चाहे वह गोर्की हो, चाहे बोरिस पास्तरनाक हो, सोल्जेनीत्सिन हो, मुक्तिबोध हो, रेणु हो. ये सभी दूसरों की तकलीफों के लिए निर्वासित होते हैं. यही तो है वह लेखकीय मजबूरी जो लेखक की आत्मा में पैठ कर क्रान्ति के बीज बोती है, शब्दों की गोली और अर्थों का बारूद बनाती है.

वैसे यह भी सच है कि लेखक एक अत्यन्त निरीह प्राणी होता है—कपोत-सा कोमल, पंखड़ी-सा मुलायम, पानी-सा तरल और खरगोश-सा सहमा हुआ. आलोचना के आगे उनकी हालत कसाई की छुरी के नीचे पड़े बकरे की गरदन जैसी हो जाती है. आलोचना की आंधी से उत्पीड़ित ऐसे निरीह रचनाकारों को टी० बी० का शिकार होते आये दिन सुना जाता है. सुमित्रानन्दन पन्त और अंग्रेजी भाषा के सुकोमल कवि कीट्स की गणना ऐसे निरीह रचनाकारों में बखूबी की जा सकती है, मैंने इसलिए कहा था कि जब आदमी की शामत आती है तो वह लेखक बनता है:

एक बात और बड़े मजे की है. अंग्रेजी में एक शब्द है पास्थ्यूमस और हिन्दी तर्जुमा है—मरणोपरान्त. देश की लड़ाई में बहादुरी दिखाने और मारे जाने के चमत्कार में मरणोपरान्त वाहवाही और उपाधि दी जाती है. उसी तर्ज में लेखक भी जिन्दगी भर अपनी मुफलिसी और पैमाली से लड़ते-लड़ते एक दिन बिना दवा के जब मर जाता है तो सारे जीवित और चलताऊ लेखक उस मरे हुए लेखक को भुनाने लगते हैं. उसे महान लेखक कबूल करने लगते हैं और उसकी महानता के गरम तवे पर अपनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रोटी सेकने लगते हैं. बीरबल की खिचड़ी भले ही न पकी हो पर इनकी खीर जरूर पक जाती है. कभी-कभी ऐसा भी होता है कि जब कोई गरम तवा नहीं मिलता है रोटी सेंकने के ख्वाहिशमन्द लेखक किसी-न-किसी लेखक को ठिकाने भी लगा देते हैं. उसका जनाजा निकाल देते हैं, फिर उस पर लेख लिख कर, कविताएं लिख कर, किताबें लिख कर अपनी रोटी सेंकनी शुरू कर देते हैं. एक किस्सा जो सच है यूँ बयान है कि एक शायर महोदय नदी के किनारे काफी देर से बैठे-बैठे काफी शायरी लिख गये. फिर उनकी तबीयत जरा स्नान करने की हुई. वे नदी में उतरे ही थे कि गहरे उतर गये और लहरों की लपेट में आ गये. हफ्तों लापता रहे. उनके यार दोस्तों ने समझा कि वे नदी में डूब कर मर गये.बड़ा मातम हुआ काफी चन्दा इकट्ठा हुआ, शोक-प्रस्ताव पास हुआ अखबारों में एक—महान शायर का निधन-शीर्षक हरूफों में खबर छपी. फिर एक दिन ऐसा हुआ कि शाम को उसी शायर की शोक सभा हो रही थी. बड़े नामी-गिरामी लेखक माइक पर उस शायर की मौत की दुहाई दे कर अपने खयालातों का इजहार कर रहे थे कि एक आदमी बीच सभा में उठ कर चिल्लाया—अरे साहबजादों मैं तो जिन्दा हूँ, तुम लोग क्यों मिल कर मुझे मार रहे हो. लोग चिल्लाए—बैठ जाओ, बैठ जाओ. वह शायर फिर चीखा—क्यों बैठ जाँय साहब. मैं नदी में बह के मर थोड़े ही गया था. दूर एक गाँव में बीमार पड़ा था. गाँव के लोगों ने मुझे बचा लिया और मैं यहाँ चला आया पर यह क्या तमाशा है कि लोग मुझे मारने पर उतारू हैं.

बड़ा हंगामा फैलने को ही था कि माइक पर से तेज आवाज आई—उस आदमी का दिमाग ठीक नहीं लगता. वह पागल है, उसे पन्डाल से बाहर फेंक दीजिये. लोगों ने ताबड़तोड़ उसे धक्के दे कर पन्डाल के बाहर फेंक दिया. शोक सभा के आयोजकों की जान में जान आयी. चन्दे की रकम का सवाल था, उनके उन लेखों और कविताओं के प्रकाशित होने का सवाल था, नाम कमाने का सवाल था. शायर को यदि जिन्दा मान लिया गया होता तो इतने सवालों का हल होना मुश्किल था, इसलिए सीधा रास्ता यही था कि उस शायर को मार कर उसे अमर करने का चक्कर चलाया जाय. बहरहाल उस जिन्दा शायर को पण्डाल के बाहर धकेल कर पण्डाल के भीतर उसकी मातमपुर्सी का दौर काफी रात गये तक मनाया गया.

याद है न, मैंने इसीलिए कहा था कि जब गीदड़ की शामत आती है तो वह शहर की ओर भागता है और जब आदमी की शामत आती है तो वह लेखक बनता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फिल्म के लिए कलाकार चाहिए—

बी० आर० पद्म की रोचक फिल्म

तवायफ

का शीघ्र मुहूर्त.

रोल्स के लिए

सम्पर्क स्थापित करें.

सम्पर्क सूत्र—

आर० श्याम
प्रोड्यूसर-डायरैक्टर
कल्चरल फिल्म्स डिविजन
सिकोन्निया, आगरा—४

फिल्म के लिए जरूरत है—

फाइनेंसर अथवा पार्टनर की

जो १५००० की राशि लगा सके.

फिल्म तीन चौथाई

बन चुकी है.

उचित लाभ की गारंटी

विशेष जानकारी के लिए

सम्पर्क सूत्र—

मैनेजर
न्यूज रील साप्ताहिक
बेलन गंज
आगरा—४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अन्दाज़े बयाँ और

ये राज़ हम पर हुआ न अफ़्सा[1] किसी की ख़ास इक नज़र से पहले
कि थी हमारी ही कम निगाही[2] हमी थे कुछ बेख़बर से पहले.

कहाँ-कहाँ उड़के पहुँचे शोले ये होश किसको ये कौन जाने
हमें बस इतना है याद अब तक लगी थी आग अपने घर से पहले.

ज़माना माने न माने लेकिन हमें यही है यक़ीने कामिल[3]
जहाँ उठा कोई ताज़ा फ़ित्ना उठा तेरी रह गुज़र से पहले.

वो यादे आग़ाज़े इश्क़[4] अब तक अनीसे जानो दिले हज़ीं[5] है
वो इक झिझक-सी वो इक झपक-सी हर इल्तिफ़ाते नज़र[6] से पहले.

हमी थे क्या जुस्तजू का हासिल हमी थे क्या आप अपनी मंज़िल
वहीं प आकर ठहर गया दिल चले थे जिस रह गुज़र से पहले.

हमारे शौक़े जुनूँ अदा की सितम जरीफ़ी[7] तो कोई देखे
कि नामावर[8] को रवाना करके पहुँच गये नामावर से पहले.

ये नाला[9] क्यों है ने नग्मा क्यों है ये आह कैसी ये वाह कैसी
ये पूछ ले आइने के दिल से न पूछ अपने 'जिगर' से पहले.

जिगर मुरादाबादी—हुस्न और इश्क के शायर जिगर साहब अपनी शायरी की दुनिया के बादशाह थे. जिन्दगी को जिस खूबसूरती से देखा उसी खूबसूरती से लिखा भी: डूब कर जिया और डूब कर लिखा. मुहब्बत में रोये भी और ग़ज़ल की कशिश और अपने तरन्नुम से रुलाया भी. उनके दिल की राह थी अपने दिल की राहत थी ग़ज़ल. जिगर साहब की जिन्दगी शायरी की दुनिया में शोहरत का

---

१. रहस्योद्घाटन २. कम दीखना ३. विश्वास ४. प्रेम के प्रारम्भ की स्मृति ५. दुःखी दिल और जान का साथी ६. नज़र का होना ७. अजीब हालत ८. पत्र वाहक ९. रोना.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अल्लाह अगर तौफ़ीक[1] न दे इन्सान के बस का काम नहीं
फ़ैज़ाने मुहब्बत[2] आम सही इरफ़ाने मुहब्बत[3] आम नहीं.

अब लफ़्ज़ा बयाँ सब खत्म हुए अब दीद ओ दिल का काम नहीं
अब इश्क है खुद पैग़ाम अपना अब इश्क़ का कुछ पैग़ाम नहीं

या रब, ये मोक़ामे इश्क़ है क्या गो दीद ओ दिल नाकाम नहीं
तीस्कन[4] है और तस्कीन नहीं, आराम है और आराम नहीं.

क्यों मस्ते शराबे ऐशो तरब[5] तकलीफ़े तवज्जो[6] फरमायें
आवाज़े शिकस्ते दिल ही तो है, आवाज़े शिकस्ते जाम नहीं.

इक और गवारा खुद कर ले वे शर्त शिकस्ते फ़ास[7] अपनी
कुछ उनके भी दिल की साज़िश[8] है तन्हा ये नज़र का काम नहीं.

इक शाहिदे मानीओ सूरत[10] से मिलने की तमन्ना है सबको
मैं उसके न मिलने पर हूँ फ़िदा, लेकिन ये मज़ाके आम[11] नहीं.

पीने को तो सब पीते हैं 'जिगर' मैख़ानए फ़ित्रत[12] में लेकिन
महरूमे निगाहें साक़ी है[13] वो रिन्द जो दुर्द आशाम[14] नहीं.

---

[1] बेमिसाल अफसाना है. आपके तीन दीवान 'दागे जिगर' 'शोला-एतूर' और 'आतिशे-गुल' आपके सामने ही लोकप्रियता की ऊँचाई पर थे. 'आतिशे-गुल' पर उत्तरप्रदेश एकादमी ने पाँच हजार रुपये का पुरस्कार दे कर उनका सम्मान किया था. उनकी कृतियों को क्लासिकी का दर्जा हासिल है और 'जिगर' को हर दिल का वास्ता हासिल है—मुद्दतों रोया करेंगे जामो- पैमाना मुझे—सं०

---

१. वरदान २. प्रेम की कृपा ३. प्रेम का ज्ञान ४. शान्ति ५. खुशी की शराब से मस्त ६. ध्यान देने का कष्ट ७. दिल के टूटने की आवाज़ ८. खुली पराजय ९. षड्यन्त्र १०. आकार और निराकार रूपवाला माशूक़ ११. साधारण लोगों का शौक़ १२. प्रकृति रूपी मदिरालय १३. साक़ी की नज़र में न आने वाला १४. तलछट पीने वाला,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परिहास-पृष्ठ

शास्त्राइन भाभी घबरायी हुई जब मेरे घर आ के दस बजे आयीं तो मैं समझ गया कि शास्त्री ने कोई गुल खिलाया है. वे बोलीं 'भैया चलो जल्दी देखो जरा चल के. उनको क्या हो गया है!'

जाकर देखा तो शास्त्रीजी डगमगा रहे थे और हवा में हाथ लहरा रहे थे.

मैंने पूछा, 'शास्त्रीजी, क्या बात है ?'

'तुम पूछने वाले कौन...स्सा-अ-ले !'

'अजी मैं हूँ, मैं मधुर !' मैंने समझ लिया कि शास्त्रीजी को किसी ने छका है। मैंने कहा, 'बैठ जाइये न !'

'क्यों बैठूँ ? मैं तुम्हारा नौकर हूँ ?'

'नहीं, मैं आपका नौकर हूँ.'

'तो फिर लो बैठता हूं. मगर दो कुर्सियों पर बैठूँगा...मैं मालिक हूँ लेकिन पहले मेरे सवाल का जवाब देना होगा, तभी बैठूँगा...बताओ. मेरी मुट्ठी में क्या है!'

मैंने कहा-'मक्खी !'

'नहीं.'

'तो फिर कोई घोड़ा होगा.'

'हूं ऽऽऽ . नहीं.'

मुझे क्रोध आ गया. गुस्से से बोला, 'फिर आपकी मुट्ठी में हाथी है.'

वे मुस्कराये और गंभीर हो गये. बोले, 'ठीक, लेकिन बताओ वह किस रंग का है ?'

■

दूसरे दिन जब मैं पूछने गया कि हाथी कहाँ गया तो शास्त्री जी बाथरूम में गा रहे थे.

बाहर आते ही मैंने हाथी के रंग के बारे में पूछा तो शरमा गये. तब मैंने पूछा 'कहिये शास्त्रीजी बाथरूम में आप गाने कब से लगे ?'

'जब से बाथरूम की कुण्डी टूट गयी.'

■

मैंने पिछली रात की बात की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'मेरा विचार है, आपने

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पत्नी आपकी आय में अपना खर्चा तो अच्छी तरह चला लेती होंगी.

'जी हाँ, जी हाँ ! ठीक ही चला लेती हैं. केवल मुझे अपने खर्च के लिए अलग से प्रबन्ध करना पड़ता है.'

'कल भी आपने खूब प्रबन्ध किया था. मैंने व्यंग्य किया.'

'जी नहीं. बात यह है कि आप समझेंगे नहीं.' शास्त्रीजी ने गंभीर हो कर कहा, 'मेरी पत्नी भी नहीं समझ सकीं. दरअसल हुआ यह कि नहर के किनारे, विचारों में खोया चला आ रहा था तभी जाने कैसे पाँव फिसल गया कि मैं नहर में नज़र आने लगा. मैं तो बस डूब ही जाता मगर किसी ने मुझे आ कर निकाला. मैंने धन्यवाद दिया तो वे बोले—अजी साहब, बूढ़े हो गये मगर तैरना नहीं सीखा ? मुझे गुस्सा आ गया, मैंने कहा—आपसे किस बेवकूफ ने कहा कि मुझे तैरना नहीं आता ? उसने पूछा—फिर तुम क्यों रहे थे ? मैंने कहा—अजी साहब, डूबते समय मैं तो यह भुल ही गया था कि मुझे तैरना भी आता है. धन्यवाद. अगली बार डूबते समय तैरना याद रखूँगा !... और फिर उसी ने ठंढ से बचने के लिए थोड़ी-सी ब्राण्डी पिला दी और फिर...'

...आपकी मुट्ठी में हाथी आ गया. 'मैंने कहा.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपका हर-दिन
एक त्यौहार हो
और
हर-त्यौहार और उत्सव के-लिए
हमारी मंगल कामनाएं

डायमण्ड डेकोरेटर्स

जंगमबाड़ी • वाराणसी

डिनर व पार्टियों एवं
समारोह की प्रतिष्ठा के लिए—

• भव्य टेन्ट • फर्निचर • क्राकरी • कॉफ़ी मशीन प्राप्त करने हेतु हमें आदेश दें

फोन : ऑफिस : ६६९०३, ५३३२० ■ आवास : ५३४२४

फोन : ६३३८१

ब्यूटी हकर्स

मुंशी कटरा
लहुराबीर
वाराणसी

* आकर्षक व्यक्तित्व के लिए
* आकर्षक सिलाई
का
विशेष योग्यता प्राप्त प्रतिष्ठान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कल्याणव्रत

रजनीश प्रसाद मिश्र

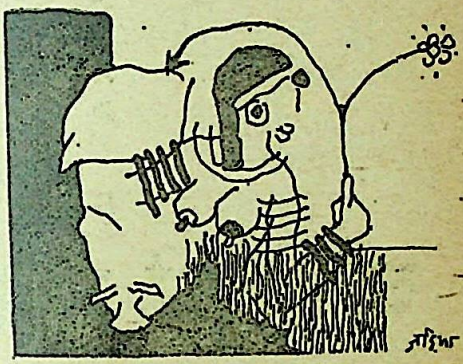

प्राचीन काल में दीपकर्णी नामक प्रसिद्ध पराक्रमी एक राजा हुआ. उसकी शक्तिमती नाम की प्राणों से भी प्यारी रानी थी. एक समय राजोद्यान में रतिकाल के अन्त में थक कर सोई हुई रानी को साँप ने काट लिया. उससे अत्यधिक प्यार करने के कारण राजा ने संतानरहित होने पर भी ब्रह्मचर्य-व्रत धारण करने का निश्चय किया. वे अपना शेष समय भगवान शिव की आराधना में बिताने लगे. कुछ समय बाद राज्य के योग्य पुत्र न होने से अत्यन्त दुःखी राजा को भगवान शिव ने स्वप्न में आदेश दिया—शिकार खेलने जाने पर जंगल में घूमते हुए सिंह पर बैठे एक बालक को तुम देखोगे. उसे ले कर घर आना, वही तुम्हारा पुत्र होगा. जागने पर राजा ने स्वप्न का स्मरण करते हुए प्रसन्नता प्रकट की. किसी दिन राजा शिकार के सिलसिले में जंगल में दूर तक निकल गया. जंगल में भ्रमण करते हुए राजा ने दोपहर के समय एक यक्ष-सरोवर के किनारे शेर पर चढ़े हुए सूर्य के समान तेजस्वी बालक को देखा. स्वप्न का स्मरण करते हुए राजा ने सिंह को एक बाण मारा. बाण लगते ही सिंह अपना शरीर छोड़ पुरुष बन कर प्रकट हुआ. राजा ने पास जा कर बालक को गोद में उठा लिया और आश्चर्य चकित हो कर उस पुरुष से पूछा—यह क्या ? पुरुष बोला—मैं कुबेर का मित्र सात नामक यक्ष हूँ. मैंने एक बार स्नान करती हुई एक ऋषिकन्या को देखा. देखते ही दोनों परस्पर आसक्त हो गये. उसे गान्धर्व विवाह द्वारा मैंने पत्नी बना लिया. ऋषिकन्या के बन्धुओं ने हमारी स्वेच्छाचारिता से दुःखी हो कर शाप दिया कि तुम दोनों पापी स्वेच्छाचारी सिंह बनोगे. कन्या के घबरा कर रोने लगने पर उनका चित्त द्रवित हुआ और उन्होंने शाप में संशोधन किया. ऋषियों ने उस कन्या

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कार
एवं
ट्रकों
के
पुर्जों के लिए

कोहली मोटर स्टोर्स

नदेसर, वाराणसी. फोन : ६३०२३
आवास : ६२४३८

अच्छी सिलाई
अच्छे कपड़ों से
ज्यादा
जरूरी है.

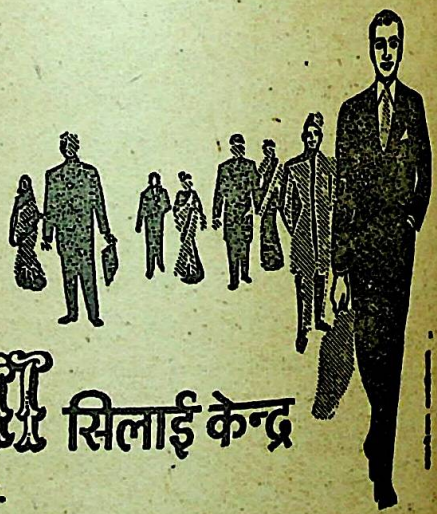

ओजोन्ज़ो सिलाई केन्द्र
लहुराबीर, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

को पुत्र उत्पन्न होने तक शाप की अवधि दी और मुझे बाण का प्रघात लगने तक. इसके बाद हम दोनों सिंह की जोड़ी बन गए. कुछ समय बाद वह सिंहनी गर्भवती हुई और इस बालक के उत्पन्न होते ही मर गई. मैंने इस बालक को अन्यान्य सिंह-शिशुओं के दूध से पाला है. आज तुम्हारे बाण के प्रघात से मैं भी शाप से छूट गया हूँ. इस लिए तुम इस महाबलवान बालक को लो. यह बात पहले के ही शाप देने वाले मुनियों ने कही थी. ऐसा कह कर उस सात नामक यक्ष के अन्तर्ध्यान हो जाने पर राजा दीपकर्णी उस बालक को ले कर राजमहल लौट आए. सात नामक यक्ष ने उसे उठा रखा था, अतः उस बालक का नाम सातवाहन रखा और समय आने पर उसे सिंहासन पर बैठा दिया. कुछ समय बाद राजा दीपकर्णी के वन चले जाने पर वह सातवाहन राजा सार्वभौम बन गया. कहा जाता है शक-सम्वत के प्रणेता इतिहास-प्रसिद्ध दक्षिण भारतीय नरेश सातवाहन यही थे. परन्तु सातवाहन प्रारम्भ में अत्यन्त ही विलासी प्रकृति के थे. इनके राज्य में देवी नामका एक प्रसिद्ध विश्वकर्मा था. उसने इनके आमोद-प्रमोद के लिए एक अद्भुत उद्यान और तड़ाग का निर्माण किया. एक बार बसन्तोत्सव के समय राजा सातवाहन देवी के बनाए उस उद्यान में गया. नन्दनवन में महेन्द्र के समान बहुत काल तक उद्यान में रानियों के साथ विहार करता हुआ सातवाहन बावली के जल में उनके साथ जलक्रीड़ा के लिए उतरा. जल में वह रानियों को हाथों से फेंके हुए छींटों से सींचने लगा और रानियाँ भी उसे इसी प्रकार सींचने लगीं जैसे हथिनियाँ हाथी को सींचती हैं. जलक्रीड़ा करते-करते उस राजा की शिरीष-पुष्प के समान एक सुकुमार रानी स्तन-भार से क्लान्त हो कर खेलती-खेलती थक गई. वह बोली—देव ! मोदकैः ताडय माम्—अर्थात् स्वामिन् मुझे पानी से मत मारो. परन्तु शब्द-शास्त्र का ज्ञान न होने के कारण राजा ने जल्द ही बहुत से लड्डू मँगवाए. तब रानी ने फिर हँस कर कहा—राजन्, पानी के अन्दर लड्डुओं की क्या संगति है ? मैंने तो तुमसे कहा था कि जल से मुझे मत मारो (मा + उदकैः) पर तुम इतने मूर्ख हो कि 'मा' शब्द और 'उदक' शब्द की सन्धि भी नहीं जानते और न बातों का प्रसंग ही समझते हो. तुम कैसे मूर्ख हो! शब्द-शास्त्र की विदुषी रानी के इस प्रकार फटकारने पर राजा अन्य रानियों के सम्मुख अपनी अवमानना का ध्यान कर धक से रह गया. 'पाण्डित्य की शरण में जाने पर मृत्यु की, राजा सोचता हुआ शय्या पर पड़ा. राजा अत्यन्त दुःखी होने लगा. एकाएक राजा की ऐसी अवस्था देख कर सेवकजन आकुल हो गए. उन्होंने मंत्री शर्ववर्मा को सूचना दी. मंत्री सर्ववर्मा ने स्वामी कार्तिकेय को तपस्या से प्रसन्न कर राजा सातवाहन को बारह वर्षों में पढ़ा जाने वाला व्याकरण छः महीनों में पढ़ा कर पारंगत कर दिया।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सत्य हरिश्चंद्र' से 'अन्धेर नगरी' तक

बात १७ दिसम्बर की रात को स्थानीय मुरारी लाल मेहता प्रेक्षागृह में भारतेन्दु बाबू की १२५ वीं जयन्ती के अवसर पर भारतेन्दु नाटक मण्डली द्वारा उनके लगभग शताब्दी पूर्व लिखे चार नाटकों—'सत्य हरिश्चन्द्र' 'वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति' 'भारत दुर्दशा' के नाट्यांश तथा 'अंधेर नगरी' संपूर्णांग में अभिनीत हुआ. सत्य हरिश्चन्द्र अपने भावप्रवण और मर्म को छूने वाले अभिनय के लिए, तथा दूसरा और तीसरा नाटक अपने व्यंग्य की तीक्ष्णता के लिए जहाँ स्मरणीय माने जायेंगे वहीं 'अंधेर नगरी' को अपने सांगोपांग रूप में अविस्मरणीय मानना पड़ेगा. 'अंधेर नगरी' का मुद्दा दीर्घकालिक ही नहीं बल्कि सर्वयुगीन है. 'अंधेर नगरी' शासक और शासित के बीच की दरार और खोखलेपन को नंगा करती है. नाटक में एक फरियादी है जिसकी बकरी कल्लू बनिये की दीवार के नीचे दब कर मर गई है और वह न्याय की गुहार राजा के पास करता है. न्याय की खातिर दोष की छानबीन शुरू होती है जिसमें कल्लू बनिये ने कारीगर के मत्थे, कारीगर ने चूने वाले के मत्थे, चूने वाले ने भिश्ती के मत्थे, भिश्ती ने कसाई के मत्थे, कसाई ने गड़ेरिये के मत्थे और गड़ेरिये ने कोतवाल के मत्थे, दोष को आरोपित कर दिया. कोतवाल चालाकी से खुद को फांसी के फंदे से मुक्त करके एक निरीह व्यक्ति को फांस देता है. न्याय के नाम पर निरीह को भी फांसी दिया जाना आज के न्याय व्यवस्था की एक रोजमर्रा की बात है—क्रूर विडम्बना है. न्याय के नाम पर अकसर एक निर्दोष आदमी मारा जाता है. अन्याय की दीवार के नीचे बकरी की जगह आदमी को दबते हुए देखा जाता है. आज फरियाद करने वाला इस डर से फरियाद नहीं करता कि कहीं कचहरी का चक्कर उसे फाकाकशी पर न उतार दे. राजा जब चौपट होता है तो नौकरशाही अपना उल्लू सीधा करती है. उसमें जनता की मिट्टी पलीद तो होती ही है राजा की भी दुर्दशा होती है. जनता हलाल होती है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और राजा बालि का बकरा—कभी अपनी बेवकूफी के कारण तो कभी नौकरशाही की चालाकी के कारण. मूर्ख राजा के शा में जनता मुर्दाबाद और नौकरशाही जिन्दाबाद होता है. 'अंधेर नगरी' का व्यंग्य चौपट प्रशासन पर काफी गहरा और तीखा है और इस व्यंग्य को डा. सत्यव्रत सिन्हा (प्रयाग रंगमंच, प्रयाग) अपने अनुभवी और दक्ष निदेशन से पूरी तरह उभारने में सफल हुए हैं. नाटक का प्रस्तुतिकरण अपने सम्पूर्ण कलेवर में मेलोड्रामेटिक है. शीर्षक संगीत की लय रचना अद्भुत रूप से मन को बांधती है.शायद यही वजह थी कि कलकता की सुविख्यात संस्था 'अनामिका' द्वारा आयोजित नाट्योत्सव के अन्तर्गत जब यह नाटक अभिनीत हो रहा था, इसकी लय पर समूचे दर्शक दीर्घा के लोग घण्टों ताल मिला-मिलाकर झूमते रहे. इस धुन ने एक सभा बांध दी थी.

दो सर्वथा नयी कथा-योजनाएं

• त्रिया चरित्रम् कथांक

त्रिया चरित्र को लेकर हर देश, काल और साहित्य में अजीबोगरीब मान्यतायें रही हैं-कुछ बुरी, कुछ अच्छी. कभी उसे अत्यन्त गहरा, गूढ़,रहस्यमय, पेचीदा, और विडम्बना माना गया है तो कभी अत्यन्त गंभीर, तेजोमय, उच्चात्त, त्यागमय और ममता मय-अद्भुत है नारी चरित्र. इस विषय पर छोटे आकार की मूल रचनाएं तथा भारतीय एवं विश्वसाहित्य से अनूदित प्रभावशाली रचनाएं आमंत्रित हैं—सं०

• नीति कथांक

प्राचीन एवं आधुनिक संदर्भों की मूल एवं अनूदित रचनाएं अमंत्रित हैं—सं०

अभिनय के लिए चौपट राजा की भूमिका में नीलकमल चटर्जी अद्भुत रूप से प्रभावित करते हैं. काम, क्रोध, लोभ, भय, विलासिता, मद्यव्यसन और मूर्खता इन सभी विकारों से युक्त राजा को अभिनय में जीवित करना अभिनय और निदेशन की कुशलता का प्रमाण है. गोवरधन दास की भूमिका का रामकिशोर जेटली ने अच्छा निर्वाह किया है. मंच की नेपथ्य और प्रकाश योजना संदर्भात्मक और प्रभावशाली है भारतेन्दु के प्रथम तीन नाटकों के मंचन के द्वारा क्रमशः १०० वर्ष, ५० वर्ष और २५ वर्ष पुरानी मंच की शैली, संयोजना और प्रभाव के आयाम को प्रदर्शित करके एक ऐतिहासिक कार्य किया गया है. इस पूरे कार्यक्रम के लिए इसमें भाग लेने वाले सभी व्यक्ति हार्दिक बधाई के पात्र हैं.

—क० गु०

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१९७४ का रंगमंच

—डा० भानुशंकर मेहता

●

कलकत्ता की सुप्रसिद्ध संस्था 'अनामिका' ने दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में नाट्यलेखन और रंगमच दोनों के विकास को प्रस्तुत करने के उद्देश्य से एक नाट्योत्सव का आयोजन किया.

नाट्योत्सव के चार अङ्ग थे—नाट्यप्रस्तुति, रंग प्रयोगशाला, परिसंवाद एवं प्रदर्शनी.

नाट्यप्रस्तुति—इसके अन्तर्गत वाराणसी, कलकत्ता, दिल्ली और जयपुर की संस्थाओं ने नाटकों का मंचन किया. २६ दिसम्बर को वाराणसी की भारतेन्दु नाट्य मण्डली ने आधुनिक हिन्दी के प्रथम महत्वपूर्ण नाट्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की नाट्य रचनाओं पर आधारित 'भारतेन्दु विविधा' प्रस्तुत की. इसमें १०० वर्ष पुरानी नाट्य शैली में श्री रमेश कुष्ण नागर निदेशित 'सत्यहरिश्चन्द्र' का संक्षिप्त संस्करण प्रस्तुत किया, श्री नीलकमल चटर्जी के निदेशन में 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' का एक दृश्य 'यमपुरी' पारसी नाटकी की अर्थात ५० वर्ष पुरानी शैली में और श्री पी. के. भट्टाचार्य के निदेशन में 'भारत दुर्दशा' का 'किताब खाना' २५ वर्ष पुरानी शैली में प्रस्तुत किया. नाट्यांशों के बाद प्रयाग रंगमंच के निदेशक डा. सत्यव्रत सिन्हा के निदेशन में भारतेन्दु की सुप्रसिद्ध रचना 'अन्धेर नगरी' को आधुनिक ऊलजलूल ढंग में प्रस्तुत किया गया. सभी नाटकों की प्रस्तुति साफ-सुथरी और श्रद्धा से ओत-प्रोत थी. दर्शकों ने इन्हें खूब सराहा और 'अंधेर नगरी' की अधुनातन प्रस्तुति से वे आश्चर्यचकित रह गये कि भारतेन्दु के नाटक आज भी इस खूबसूरती से खेले जा सकते हैं. यह सिद्ध करने में कि भारतेन्दु के नाटक सभी युगों में अभिनेय रहे, मंडली को पूर्ण सफलता मिली. 'अन्धेर नगरी' की धुन तो कुछ ऐसी लोकप्रिय बनी कि समारोह के अन्तिम दिन तक गूंजती रही.

दूसरा नाटक 'अनामिका' (कलकत्ता) द्वारा प्रस्तुत जय शंकर प्रसाद का गरिमामय नाटक 'चन्द्रगुप्त' था ! अनभिनेयता विशेषण ढोते इस चुनौती भरे नाटक को मंचित करने का दायित्व ले कर संस्था ने विशेष साहस का परिचय दिया था. आवश्यक तैयारी और दोषपूर्ण, दृश्यबन्ध के कारण नाटक कुछ बिखर गया किन्तु इसमें संदेह नहीं कि अनामिका के प्रस्तुतिकरण ने यह अवश्य सिद्ध किया कि 'चन्द्रगुप्त' का मंचन प्रभावशाली और सफल हो सकता है. इस नाटक का निदेशन श्री विमल लाठ ने किया.

दिल्ली की सुख्यात संस्था 'अभियान' ने स्व० मोहन राकेश की अधूरी कृति (जिसे कमलेश्वर ने पूरा किया है) 'पैरों तले की जमीन' सुख्यात रंगकर्मी श्री राजेन्द्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नाथ के निदेशन में प्रस्तुत की. आसन्नमृत्यु की मंडराती लाकी
आशा में डोलते आठ व्यक्ति, उनका द्वन्द्व, उनकी छटपटाहट और अन्त में मृत्यु की
आशंका दूर होने पर उनका मानसिक पुनरावर्तन बड़े मार्मिक ढंग से मूर्त हुआ था !
नाटक का अन्तिम अंश गतिहीनता के कारण कुछ बोझिल एवं ऊब भरा हो गया था,
फिर भी अभिनय और प्रस्तुतिकरण की सफाई ने नाटक को उल्लेखनीय बना दिया.

चौथा नाटक डा. लक्ष्मीनारायण लाल का 'व्यक्तिगत' था. वे समारोह में व्यक्तिगत
रूप से उपस्थित थे. दिल्ली की प्रसिद्ध संस्था यान्त्रिक ने श्री एम. के. रैना के
निदेशन में इसे प्रस्तुत किया. नाटक का यह प्रथम मंचन था और बहुत ही सफल
मंचन था. आज की आधुनिक उलझन, अपने आपको न समझ पाने, न जी पाने की
पीड़ा इस नाटक में 'मैं और 'वह' के माध्यम से अनेक व्यक्तिगत प्रसंगों और विचारों
में मुखर हुई. नाटक में केवल दो मुख्य पात्र थे पर दो पात्रों को ले कर ही निदेशक ने
बारीकियों से मंच को ऐसा भर दिया था कि दर्शक मुग्ध हो गये.

अन्तिम प्रस्तुति थी जयपुर की संस्था 'त्रिमूर्ति द्वारा' श्री हमीदुल्ला (जो स्वयं भी
उपस्थित थे) का लिखा नाटक 'एक और युद्ध' जिसका निदेशन युवा निदेशक श्री एस.
रघुदेव ने किया था. देश और समाज के नस-नस में व्याप्त भ्रष्टाचार और बहशीपन
आज का यथार्थ है जिसमें सच्चे संवेदनशील व्यक्ति के लिए घुट-घुट कर मरने के सिवा
और कोई चारा नहीं और आर्थिक सामाजिक मोर्चे पर एक और युद्ध लड़ने की
सरकारी घोषणा पूरी स्थिति के संदर्भ में स्वयं खोखली बन कर स्थिति के व्यंग्य और
निरर्थकता को और भी उभार देती है. पूरे नाटक में व्यंग्यात्मक टिप्पणियाँ मुखर थीं.
कशाटा तीखा झाट-सा यह नाटक जीभ कोही नहीं बहुतोंके अन्तरतम को भी झकझोर
गया. अखबार के मुखपृष्ठ पर छाये कार्टून की भाँति इस नाटक की छुपी मार बहुतों
को घायल कर गयी. नाटक में गति, नवीनता के साथ ही अनेक अच्छे समूहन भी
देखने को मिले.

नाट्योत्सव का दूसरा अंग था—रंग प्रयोगशाला २० से ३० दिसम्बर
तक कलकत्ता, वाराणसी, प्रयाग, रायपुर, दिल्ली और बम्बई के कलाकारों ने विभिन्न
समूहों में बंट कर छः निदेशकों के नेतृत्व में एक संवादहीन कृति 'बयान एक बुद्धू'
(मूल लेखक श्री अशोक मित्रन, अनुवादक श्री विमल लाठ) अपने-अपने ढंग से प्रस्तुति
करण की तैयारी की. निदेशकों में थे डा. सत्यव्रत सिन्हा (प्रयाग), श्री कृष्ण कुमार
(कलकत्ता), श्री विभु कुमार (रायपुर), श्री शिवकुमार झुनझुनवाला (कलकत्ता),
श्री विमल लाठ (कलकत्ता) और श्री अमोल पालेकर (बम्बई).

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'बयान' एक मंचहीन-संवादविहीन नाटक है, इसका मौन निदेशकों ने अपने-अपने ढंग से तोड़ा. डा.सिन्हा, विभुकुमार और झुनझुनवाला ने प्रस्तुति के लिए रैम्प बनाया तो श्री विमल लाठ ने स्विमिंग पूल, श्री कृष्ण कुमार ने पक्का चबूतरा और श्री [illegible] कर ने खुला मैदान. एक व्यक्ति के त्रास भरे आज के दैनिक कार्यकलाप का यह भिन्न रूप प्रस्तुतिकरण ३१ दिस० को शिक्षायतन में दर्शकों की भारी भीड़ के समक्ष हुआ. शायद यह भीड़ ही प्रयोग की असफलता बन गयी. लेखक ने यह पहले ही कहा था 'नाटक को थोड़े से दर्शकों के बीच घटित होना है' पर हुआ ठीक उल्टा. भीड़-भाड़ शोर-शराबे में प्रस्तुतियाँ बिखर गयीं. फिर भी रंग प्रयोगशाला में कलाकार और निदेशक एक दूसरे के निकट संपर्क में आये और एक नाटक कई रंगों में खेले जा सकने की संभावना अच्छी तरह उजागर हुई. इस दृष्टि से प्रयोग सफल ही रहा.

नाट्योत्सव की तीसरी भेंट थी 'परिसंवाद'! २८ दिसंबर को डा. लक्ष्मी नारायण लाल की अध्यक्षता में संपन्न 'परिसंवाद' का विषय था—समसामयिक हिन्दी नाटक लेखन की दिशाएं. इस परिसंवाद के प्रमुख वक्ता थे डा. विपिन कुमार अग्रवाल और श्री नेमीचंद्र जैन. गोठी में भाग लेनेवालों में श्री शिव कुमार जोशी, श्री शरद जोशी, पं० विष्णुकांत शास्त्री, अमोल पालेकर, तथा अनेक युवा रंगकर्मी थे. दूसरी गोष्ठी २९ दिसंबर को हुई जिसका विषय था—समसामयिक रंगमंच की उपलब्धियां, जिसकी अध्यक्षता डा० भानुशंकर मेहता ने की और प्रमुख वक्ता थे डा० सत्यव्रत सिन्हा और श्री राजेन्द्र नाथ. इस गोष्ठी में विभुकुमार, कृष्णकुमार, विमल लाठ, डा० प्रतिभा अग्रवाल प्रभृति अनेक सुख्यात और अनेक युवा रंगकर्मियों ने भाग लिया.

नाट्योत्सव की चौथी विधा थी 'भारतेन्दु नाट्य प्रदर्शनी.' कलामन्दिर के प्रांगण में आयोजित इस सुरुचिपूर्ण सुंदर प्रदर्शनी में मुख्यतः भरत निरूपित रंगशालाओं के मॉडल, अनामिका द्वारा आयोजित नाटकों के दृश्यबन्धों के मॉडल तथा चित्र और वाराणसी से प्राप्त काली दुर्गा के मुखौटे थे.

कुल मिला कर नाट्योत्सव १९७४ एक भव्य और सफल आयोजन था जिसमें देश के अनेक कलाकर रंगकर्मियों को आपस में मिलने-जुलने का अवसर मिला, बहुत कुछ कलाएं समझने, सीखने को मिला. अनामिका द्वारा कलाकारों के आवास और स्वागत सत्कार की व्यवस्था इतनी स्नेह भरी और पूर्ण थी कि सभी कलाकार उसे वर्षों तक याद रखेंगे. इसका श्रेय अनामिका की मंत्री श्रीमती किरन जालान और उनकी निष्ठावान कार्यकर्ताओं की टोली को है. समूचे समारोह, के आयोजन के पीछे अनामिका की अध्यक्षा, उ० प्र० संगीत नाटक अकादमी की 'रत्नसदस्य' एवम् काशी की गौरवमय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीर्ती प्रतिभा अग्रवाल की कल्पना; रंगमंच के प्रति समर्पित निष्ठा स्पष्ट रूप से झलक रही थी.

सन् १९७४ का अन्तिक सप्ताह अनेक रंगकर्मियों के लिए मधुर स्मृतियों युक्त त्योहार बन गया है।

देश में बैंक तो बहुत हैं, परंतु डाकघर बचत बैंक ही इतना लोकप्रिय क्यों है ?

अपनी जानकारी के लिए यह पढ़ें

- क्योंकि डाकघर बचत बैंक आपका अपना बैंक है. यदि आप शहर में हैं तो आपके किसी पड़ोस में ही और यदि आप देहात में रहते हैं तो आपके ही गाँव या पड़ोस के गाँव में एक डाकघर अवश्य मिलेगा जहाँ बैंक की सुविधा होगी. देश में जितनी शाखायें डाकघर बचत बैंक की हैं उतनी अन्य किसी बैंक की नहीं हैं.
- क्योंकि डाकघर तो आपको अन्य कार्यों से भी जाना रहता ही है. साथ ही साथ आपका बैंक का कार्य भी वहाँ हो जाता है और इस तरह आपका समय भी बच जाता है.
- क्योंकि डाकघर बचत बैंक में भी अन्य बैंकों के बराबर आपको ५ प्रतिशत मिलता है परन्तु आय कर से मुक्त है.
- क्योंकि डाकघर बचत बैंक में भी चेक द्वारा रुपया निकालने की सुविधा उपलब्ध है.
- क्योंकि डाकघर बचत बैंक से सप्ताह, माह अथवा वर्ष में रुपया निकालने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है और अब तो रुपया निकालने में शिनाख्त की कठिनाई भी नहीं रहती है.

तो फिर, आप भी आज ही अपना खाता निकट-तम डाकघर बचत बैंक में खोल लें.

राष्ट्रीय बचत निदेशालय, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक खत में बन्द

दो कथा पत्रिकाओं की संपूर्ण समीक्षा

आपके पत्र मिले. बहुत-बहुत धन्यवाद. अपने आप में बंद मुझ से आप इस तरह से खुल कर विचारों का आदान-प्रदान करने के लिए तैयार हो जाएंगे, स्वप्न में भी ऐसा सोचा न था.

इस बार मैं 'कहानीकार' के पूर्णांक ४२ अर्थात् सितम्बर '७४ के अंक पर दृष्टिपात कर रहा हूँ. 'नया पंचतंत्र' की कहानी 'जन्म दिन का उपहार' में पशु की तुलना में मानव जाति की हृदयहीनता और क्रूरता पर कटाक्ष है—मानव स्वार्थ पूर्ति के लिए अनाक्रामक और अक्षतिकारी पशुओं का भी वध करते हिचकते नहीं.

'ताड़कावन की लंका' शीर्षक कहानी (उपन्यास 'दीक्षा' का एक अंश) के रूप में राम-गीता के 'यदा...यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत...' कहने वाले भगवान कृष्ण का प्रतिरूप बन गये हैं. 'स्वयं तुम में राम बनने की सामर्थ्य है' वाक्य जनता की सुप्त चेहना के लिए तूर्यनाद है. शेष कहानी में नरेंद्र कोहली चाह कर भी व्यंग्य और कटाक्ष को न ही इतना पैना कर पाये हैं और न ही वर्तमान युग के विविध संदर्भों को अधिक प्रतिच्छायित ही कर सके हैं. कहानी में कहीं-कहीं स्वतंत्र देश के मुक्ति-संग्राम और भारत के महान प्रयत्नों के स्वर अवश्य अनुगुंजित हुए हैं. समग्रतः यह उपन्यास ही है, 'औपन्यासिक कहानी' नहीं.

'समान्तर' शीर्षक कहानी में मृत पत्नी की पूर्वदीप्ति में गुँथी हुई स्मृतियों के साथ पति (नायक) द्वारा पत्नी का दाह-संस्कार सम्पन्न करना एक अदृष्टपूर्व समानान्तरता लिये हुए है. 'छाला' कहानी में अरुण प्रकाश (नये कहानीकार) ने दिखाया है कि घर-परिवार में वेतन में आर्थिक वृद्धि होने पर मनुष्य का शारीरिक पीड़ा तक पहुँच जाना प्रायः स्वाभाविक हुआ करता है, क्योंकि 'बाहर के छाले' से भी कहीं अधिक पीड़ादायक 'भीतर का छाला' हुआ करता है. जब वही पुर जाये, तब बाहर का छाला उसके सामने क्या !

'गुमराह' शीर्षक कहानी भी अपरिचित-सी लेखनी की है. आनन्द वर्मा का हस्ताक्षर कम-से-कम मेरे लिए तो नया-नया-सा ही है. इस रोमांसाभासी कहानी में एक भटकी हुई दुश्चरित्रा के अन्तर्द्वन्द्वों, पुरुषों के प्रति घृणा, क्रोध, खीझ, कटाक्ष और निर्धनता-जन्य-विवशता की नानावर्णी फुहारें छिटकी हुई हैं. उपमा देखी—'नाली का एक कीड़ा सेन्ट में डुबा दिए जाने पर भी गन्दा कीड़ा ही रहता है.' (पृष्ठ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो कुशवाहा कांत के एक उपन्यास की उपमा याद हो आई—
शहद के कांटे पर तनिक-सा मधु लगा कर किसी के कलेजे में भोंक देने से उसका
दर्द मीठा नहीं हो जाता—' कहानी में प्रसाद के 'तितली' उपन्यास-शीर्षक का
कथा-भूमिका के लिए भी द्वयर्थक प्रयोग हुआ है.

'शून्य की ओर' शीर्षक कहानी में एक विवाहिता (भूतपूर्व सहपाठिनी) स्त्री तथा
प्रेमिका के रहस्यमय क्रिया-कलापों का 'नारी एक पहेली है' के संवेद्य की पृष्ठभूमि में
मनोहर आख्यान हुआ है. इस कहानी की नायिका का चरित्र 'गुमराह' की नायिका के
चरित्र से मेल खाता है. कहानी का समूचा अंदाज़ उसे किसी 'हिन्दू' कहानीकार की
कहानी का फल ही सिद्ध करता है. अब्दुल बिस्मिल्लाह जैसे नये कहानीकार की यह
एक बड़ी भाषागत उपलब्धि मानी जायेगी.

'तलाश का दर्द' शीर्षक कहानी का लेखक उमेश प्रद्योत फिर नया है. नये नामों
को मंच पर लाने में 'कहानीकार' का योगदान सराहनीय रहेगा. कहानी में अपने
मनोमीत शहर की तलाश में भटकती हुई सुनीता है, जो अतृप्त वात्सल्य की ग्रन्थि से
ग्रस्त हो कर पति तक को छोड़ जाती है. वस्तुतः कथा-भूमिका एक न्यूरोटिक चरित्र
है. 'कहानीकार' में कहानियों के चुनाव से ऐसा जान पड़ता है मानो संपादक मनो-
विज्ञान या दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं और उसी ढर्रे की कहानियाँ छापते हैं.

सांवर दइया को अलवर (राजस्थान) से प्रकाशित होने वाली (अब बंद)
पत्रिका 'मरुगन्धा' में कई बार पढ़ा था. ७ पृष्ठ पर सूची में उनकी कहानी का गलती
से छपने वाला (लेखक द्वारा रखा हुआ) शीर्षक 'फिर बाहर' छप गया है और
पृष्ठों के साथ 'लोग' शीर्षक छपा हुआ है, जो कि संपादक के द्वारा बदला हुआ जान
पड़ता है. 'फिर बाहर' शीर्षक कहानी के कथ्य को ढोने वाला एक सपाट शीर्षक था,
जबकि 'लोग' सांकेतिक शीर्षक है. इस कहानी के कथ्य की तुलना उषा प्रियंवदा की
प्रसिद्ध कहानी 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' से की जा सकती है. यहाँ भी प्रतिपाद्य
यही है कि घर में आर्थिक सुविधाओं-दबावों के होने-न-होने के अनुसार ही परस्पर
सम्बन्ध बनते-मिटते रहते हैं. वही 'मार्क्सवादी सिद्धान्त की घिसी-पिटी कहानी है.

कमल गुप्त इस बार फिर हास्य-व्यंग्य लेख ले कर आये हैं. शीर्षक है—'खुराफ़ात
की जड़ हैं ये आँखें.' सम्पादक ने इसी एक लेख से अपने कुशल लेखक होने का भी
प्रमाण दे दिया है. लेख में चुनाव के दौरान 'मुस्लिम लीग को पैदा करने' की भार-
तीय नीति को निर्ममता से नंगा किया गया है, जयप्रकाश नारायण के दिल्ली की
राजनीति की किरकिरी बनने पर कटाक्ष है, दिनेश सिंह के श्रीमती गांधी की आँख से
उतर कर मंत्रिमंडल से हटने पर व्यंग्य है. भारतीय जनता की मिट्टी पलीद होने और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आणविक विस्फोट से सुशोभित होने की युगपत् समान्तरता को लक्षित किया है. निष्कर्ष यह है कि यह एक लेख 'धर्मयुग' में 'बैठे-ठाले' स्तंभ में छपने वाले और बैठे-ठाले ही लापरवाही से लिखे गये कई हास्य-व्यंग्य लेखों से कहीं ऊँचे स्तर का है. लेखक ने मुहावरों और कहावतों को युग-चेतना के फ्रेम में कसने में श्लाघनीय कार्य किया है.

'अन्दाजे बयाँ और' की दोनों ग़ज़लें प्यारी रहीं—विशेषतया दूसरी ग़ज़ल का शेर—'शिकवा-ए-जौर करे क्या कोई....'

कमल गुप्त द्वारा की हुई 'कोरा कग़ज़' फ़िल्म की समीक्षा भी काफ़ी सन्तुलित पक्षपात-रहित है. आज आवश्यकता इस बात की है कि 'सारिका, 'धर्मयुग' और 'कहानीकार' की तरह हर पत्रिका प्रयोगशील चलचित्रों के लिए एक अभिनव 'मानस' तैयार करे, ताकि दर्शकों को घिसे-पिटे कथानकों मार-धाड़ों और आँसू भरत वाक्यम्-नुमा सुखान्तों वाली फिल्मों से जल्दी-जल्दी छुटकारा मिल सके.

अब लीजिए-दूसरी कथा-पत्रिका 'सारिका' का सितम्बर '७४ का अंक. इधर मैं अत्यन्त अस्वस्थ था. अस्वस्थता का मुख्य कारण तो था मेरा रोग और दूसरा गौण कारण था 'सारिका' का यह अंक, जिसमें १६ देशों की एक-एक पृष्ठ की ३६ कहानियाँ तो हैं, किन्तु अपने देश की मौलिक कहानी के नाम पर भगवती चरण वर्मा की एक ही कहानी है 'खानदानी हरामज़ादे' ! नाम पढ़ते ही मुँह में गाली का स्वाद सा आया है. सच कहूं, मैं इस अंक की एक कहानी पढ़ने के लिए भी अपेक्षित साहस न बटोर पाया हूँ. समझ में नहीं आता, 'सारिका' के सम्पादक यह क्या कर रहे हैं ? उधर डॉक्टर मुझे कड़वी से कड़वी दवाएं भी कैप्सूलों के खोलों में पिला रहे हैं और इधर...! कम-से-कम नीरस और कड़वी विदेशी कहानियों के हिन्दी अनुवादों के साथ कुछ-न-कुछ तो हिन्दी की मौलिक सरस-तीखी कहानियाँ अवश्य होनी चाहिए. मेरे पास कुछ दूसरे मित्र भी आए हैं. उनका भी यही मत है. उनमें से कुछ ने तो यह अंक भी एक घूँट में पी डाला है और कहते हैं कि दो-चार लघु कथाओं को छोड़ कर 'सारिका' का यह सम्पूर्ण अंक 'सारिका' की ख्याति को झुठलाती है. अब आप ही बताइये, ऐसी-ऐसी प्रतिक्रियाएं सुन कर एक अच्छा भला स्वस्थ व्यक्ति भी 'अस्वस्थ' क्यों नहीं हो जाएगा ? फिर भी मैं यही कहूँगा कि मैं अस्वस्थता के कारण इस बार आप को दूसरी कथा-पत्रिका की संपूर्ण समीक्षा नहीं लिख पाया हूँ और उसके लिए क्षमा-प्रार्थी हूं. यह और बात है कि मेरा स्वास्थ्य...खैर छोड़िये. इन बातों ने मन रखा है. आजकल बड़े आदमियों के विषय में दीवारों में भी कानाफूसी नहीं होती

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...मैं और आप तो...खैर छोड़िये.

'शारिका' के इसी अंक में 'मेरी प्रिय कहानियाँ' शीर्षक से राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर के राजपाल एंड सन्स से छपे दोनों कहानी-संग्रहों की समीक्षा धनंजय वर्मा ने लिखी है. कमलेश्वर का चित्र ऊपर है और यादव का नीचे. कमलेश्वर की सशक्त कहानियाँ चुन कर (और 'लाश,' 'मैं' जैसी चुटकुलेनुमा कहानियाँ तथा 'वह मुझे जेल कैदी पर मिली थी' जैसी बेकार कहानी छोड़ कर) उन्हें भरपूर सराहा गया है और राजेन्द्र यादव की छोटे-छोटे ताजमहल, सम्बन्ध, खेल-खिलौने, जैसी आधुनिक बोध की दृष्टि से पिछड़ी हुई और प्राचीन संवेदना वाली घटिया कहानियाँ चुन कर (और ढोल, टूटना, मेहमान, रिहर्सल जैसी सशक्त कहानियाँ छोड़ कर)

□ मैं अपनी नज़र में □ जनवरी-फरवरी १९७२ के अंक से आरम्भ हुए इस स्तम्भ के अन्तर्गत हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट कहानीकारों का अन्तरंग आत्मसाक्षातकार प्रस्तुत हो रहे हैं.

यह आत्मदर्शन और आत्मसाक्षातकार अन्य-पुरुष शैली में अभिव्यक्त हो रहा है. लगभग ४ पृष्ठों के लेख के अन्त में अपनी तमाम कहानियों में से अपनी सर्वाधिक प्रिय कहानी (या कहानियों) की रचना के लिए उत्तरदायी कारणों को भी प्रकाश में लाने के साथ-साथ उस कहानी की संक्षिप्त विवेचना भी लेखक द्वारा ही दी जाती है. कहानीकार की उक्त सर्वाधिक प्रिय कहानी लेख के साथ प्रकाशित होती है, अतः उसकी प्रतिलिपि लेख के साथ ही अपेक्षित है.

इसके अन्तर्गत अब तक हरिशंकर परसाई, कमलेश्वर चन्द्रकान्त बक्षी, आबिद सुरती, मेहरुन्निसा परवेज, अमृत राय, अजित पुष्कल, राजेन्द्र अवस्थी, भीष्म साहनी रवीन्द्रनाथ त्यागी तथा शसि प्रभा शास्त्री का आत्मलेख और उनकी एक-एक विशिष्ट कहानी 'कहानीकार' में क्रमशः २७, ३०, ३१, ३३, ३४, ३६, ३७, ३८, ३९, ४० तथा ४१ पूर्णांकों में आप पढ़ चुके हैं—सं०

उन्हें बेकार घसीटा, नोचा और रगेदा गया है, बल्कि ऐसा करने की 'हास्यास्पद चेष्टा' भी की गयी है.

मैं इस विषय पर और अपने इस पत्र के सम्बन्ध में आपकी प्रतिक्रियाएं चाहता हूं. मुझे पूर्ण आशा है कि एक जागरूक संपादक के नाते 'कहानीकार' के संपादक आपके पत्रों को 'कहानीकार' में प्रकाशित करेंगे, नहीं तो कम-से-कम आप के सभी पत्र मुझ तक पहुँचा ही देंगे. मैं अपने इस पत्र के माध्यम से कहानी के पाठकों के साथ अपने विचारों का मुक्त आदान-प्रदान करना चाहता हूँ. आशा है, मेरे प्रस्ताव को आप अन्यथा नहीं लेंगे. तो मुझे पत्र द्वारा अपने विचार सूचित कर रहे हैं न? आपका,

—डा० कृष्ण भावुक,

६४/४ कुदरत निवास, तोपखाना रोड, पटियाला.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपने लिखा है

अक्तूबर का अंक मिला. इस अंक से धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जाने वाला उपन्यास 'बहुत देर कर दी' वाकई अलीम मसरूर साहब की सशक्त लेखिनी का परिणाम है. क्या जोरदार शैली पाई है अलीम साहब ने. पहली किस्त रूह को खींच गई. यदि अगर उपन्यास पढ़ लिया जाये तो एक खूबसूरत स्वप्न पूरा हो. उर्दू के सशक्त रचनाकार रईस अहमद 'जाफ़री' सी भाषा-शैली मसरूर ने पैदा की है.

जसवंत सिंह विरदी की 'भय' नामक कहानी में वर्तमान की तेजतरार रफ्तार का सही मूल्यांकन हुआ है. वैसे भी विरदी साहब वर्तमान के मुलाजिम पेशा लोगों के जेहन का अच्छा अन्वेषण करते हैं.

राधा कृष्ण की बिल्ली, नीमा-पेमा, पुजारी, पुनश्च, राजपरत अपनी-अपनी भाषा तथा संस्कृति की विशुद्ध रचनायें प्रतीत होती हैं.

कुल मिलाकर, यह अनुवाद अंक 'कहानीकार' की मेहनत का प्रत्याभूत प्रमाण है.

—पद्म ए।६७, सैक्टर-१४, चण्डीगढ़-१६००१

'कहानीकार' का नियमित पाठक हूँ. इसका हर अंक एक प्रतिमान स्थापित करता चला जा रहा है. इसकी साज-सज्जा, रूप-रंग एवं शिल्प-विधान निराला और बेजोड़ है. कहानियों का चयन भी अच्छा है. आजकल जब कि हिन्दी साहित्य में बाजारू एवं व्यावसायिक पत्रिकाओं की बरसाती नालों की तरह बाढ़ आई हुई है 'कहानीकार' अपना साहित्यिक स्तर बनाये रख कर हिन्दी-साहित्य-सरिता में बहुत बड़ा योगदान कर रही है और प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और विद्या के क्षेत्र में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सांस्कृतिक नगरी वाराणसी के नाम को यह पूर्ण सार्थक बना रही है.

दिल्ली महानगर के साहित्यिक अड्डे काफी हाउस, कनाट प्लेस तथा उसके आसपास बड़े-बड़े स्टालों पर 'कहानीकार' अपने रूप-रंग और शिल्प के कारण सबसे अलग ही दीखती है और बरबस ही पाठक की नजरें अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं. बढ़ती सफलता और लोकप्रियता के लिए आपको अनेकानेक धन्यवाद. आप द्वारा अकेले इतना बड़ा प्रयत्न प्रशंसनीय है.

—राजा राम सिंह, ३।३३ वाडी गाड क्वाटर्स, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली.

कहानीकार का अंक ४३ पढ़ा. दिल्ली में यह पत्रिका पहले उपलब्ध नहीं थी. अबसे उपलब्ध होनी प्रारम्भ हुई है, नियमित पढ़ रहा हूँ. पत्रिका में नया पंचतन्त्र—एक विशेषता लिये है. इसमें वास्तव में आज के समाज पर करारा व्यंग्य है. बहुत देर कर दी—बहुत ही पसंद आई. आपका हास्य का—परिहास-पृष्ठ गुदगुदा जाता है. 'राजपरत' की संवेदना मन को छू जाती है.

—अमिन्न भूपाल सूद, १।२० साधन आश्रम, महरौली, नयी दिल्ली १०

लेखकों से निवेदन

रचना भेजते समय उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें ▪ केवल वही अस्वीकृति रचनाएं सुरक्षित रखी और लौटाई जा सकेंगी जिनके साथ लेखक का पता लिखा,टिकट लगा लिफाफा होगा, मात्र टिकट नहीं ▪ रचना की प्राप्ति सूचना हेतु टिकट व पता युक्त कार्ड रचना के साथ ही भेजने की कृपा करें ▪ नए लेखकरचना के साथ अपना व्यक्तिगत एवं साहित्यिक संक्षिप्त परिचय, प्रकाशित रचनाओं, वर्तमान जगह और शौक का उल्लेख करना न भूलें ▪ 'कहानीकार' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं.उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं.—सं०

'कहानीकार' का भारतीय कथानुवाद अङ्क बहुत प्रिय लगा. 'बहुत देर कर दी' उर्दू धारावाहिक उपन्यास की प्रथम किस्त पढ़ने को मिली. धारावाहिक उपन्यास की दूसरी किस्त पढ़ने हेतु मन लालायित है.

'अन्दाजे बयाँ और' में उर्दू के प्रसिद्ध शायरों की नज्में हर अंक में पढ़ने को मिलती हैं. यह स्तम्भ हमें उर्दू भाषा की ओर आकर्षित करता है. कठिन उर्दू शब्दों के अलग से अर्थ भी दिये जावें तो उर्दू भाषा का हमें भी अच्छा ज्ञान हो सकता है.

—रोशनलाल कटरिया 'रोशन'—कोठी बाजार, जावरा, (म. प्र.)

आज की बड़ी पत्रिकायें भाई-भतीजावाद से घिरी हैं. ऐसे में 'कहानीकार' का एक अलग रूप है. मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि यह एक निष्पक्ष पत्रिका है.

'कहानीकार' का पूर्णाङ्क ४३ भारतीय कथानुवाद अंक.

उर्दू का बहुचर्चित उपन्यास 'बहुत देर कर दी' का अंश एक नयी शैली और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताजगी लिए हुये है. जसवन्त सिंह विरदी की कहानी 'भय' नारी के टूटन को अभिव्यक्त करती है, तो दूसरी तरफ नारी के विश्वासघात की झलक घनश्याम देशाई और अमर ठाकुर की कहानियों में मिलती है. डोगरी कहानी 'राज-परत' पुलिस-जुल्म के विरुद्ध आक्रोश व्यक्त करती है. अन्य स्तम्भों में 'कुछ स्याह कुछ सफेद' विशेष पसन्द आयी.

—अभय सिंह, द्वारा श्री सत्यदेव ना० सिंह, हाजीपुर (बिहार)

'कहानीकार' के अनेकशः अंकों को प्रायः देखा किया हूं. इसे उत्तरोत्तर लोकप्रियता ग्रहण करते हुए देख कर, सचमुच, मैं तो विस्मित हूं. सूरत और सीरत में सराबोर, इस पत्र के सफल संपादन के लिए, साधुवाद !

मैं समझता हूँ, 'कहानीकार' पूर्वाञ्चल की एकमात्र कथा की पत्रिका है, जिसे पूर्वाञ्चल का कथा-पत्र होने का महत्व प्राप्त होना चाहिए. इस गौरव की प्राप्ति के लिए जितना भी संघर्ष हो, सभी को जुट कर करना चाहिए, संपादक के श्रम के साथ, लेखक और पाठक की शक्ति का जुड़ जाना ही पत्र के आयुष्य का प्रमाण हो सकता है.

वैसे, 'कहानीकार' के लिए जो आपने अकेले सात वर्ष संघर्ष का अर्पण किया है, वह सर्वार्थतः कीर्तनीय है !

—अवधेश कुमार नवनेर, पो. डिहरा जि. औरंगाबाद (बिहार)

(पृष्ठ ७ का शेष)

तुमको मारने नहीं आये हैं. हमारे शत्रु की एक बहुत बड़ी सेना इस जंगल से हो कर गुजरने वाली है. हमारी सेना के लोग यहाँ छिप जायेंगे और जब शत्रु की सेना गुजरेगी तो उसे घेर कर हम उसका सफ़ाया कर देंगे.

जानवरों के कुछ समझ में न आया. वह सब हतप्रभ हो कर उसके मुंह की ओर देख रहे थे. तभी वृद्ध भालू बड़ी नम्रता से खड़ा हो कर फिर बोला—महोदय ! हम सब बुद्धि व ज्ञानरहित जीव हैं. हम समझ नहीं पाये आपका शत्रु कौन है ?

कमाण्डिंग आफ़िसर हंस कर बोला—हमारा दुश्मन आदमी है—पड़ोसी देश का आदमी. हमारे और पड़ोसी देश में युद्ध स्थिति है. हम उसकी सेना के मनुष्यों को मार देंगे.

सब जानवर सुन्न खड़े रह गये. उनकी समझ में फिर भी कुछ नहीं आ रहा था. एक भेड़िये ने बगल खड़े सियार से फुसफुसा कर पूछा—क्या आदमी को आदमी खाता है ? सियार ने धीरे से सर हिला कर कहा—पता नहीं !

कमाण्डिंग आफ़िसर को जल्दी थी, वह चला गया. पर सब जानवर उसी तरह सुन्न खड़े रहे. कुछ क्षण पश्चात् बूढ़ा भालू थर-थर कांपता हुआ उठा और विस्फारित नेत्रों से बोला—मित्रों, घर जाने से पहले आओ हम सब उस परमात्मा को धन्यवाद दें जिसने हम सबको पशु बनाया है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोन ५४००९
५२०७७
६७१२७

आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण !

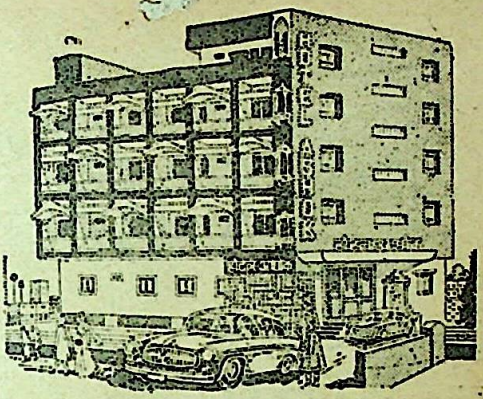

होटल अशोक

भारतीय, चाइनीज़ एवं यूरोपीय डिशेज़ में विशिष्ट
सिगरा • वाराणसी

मनोरम एयर कण्डीशंड कक्ष में
सपरिवार सुशोभित हो कर
सुस्वाद
सामिष या निरामिष
(नानवेज या वेज) डिनर, लंच,
जलपान, आइसक्रीम एवं कॉफी
का आनन्द उठायें.

कोनाग्रे
रेस्टूरेन्ट एवं
आइसक्रीमबार

दीपक सिनेमा, वाराणसी—फोन : ६३८३३

कमलगुप्त द्वारा कहानीकार प्रकाशन के लिए, कहानीकार मुद्रण संस्थान के. ३०।३७ परिषद कुटीर (निकट भैरवनाथ), वाराणसी से संपादित, प्रकाशित एवं मुद्रित.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्यार की तरह
गरम
और
फूलों-सा
मुलायम

ऊनी : कम्बल
शाल

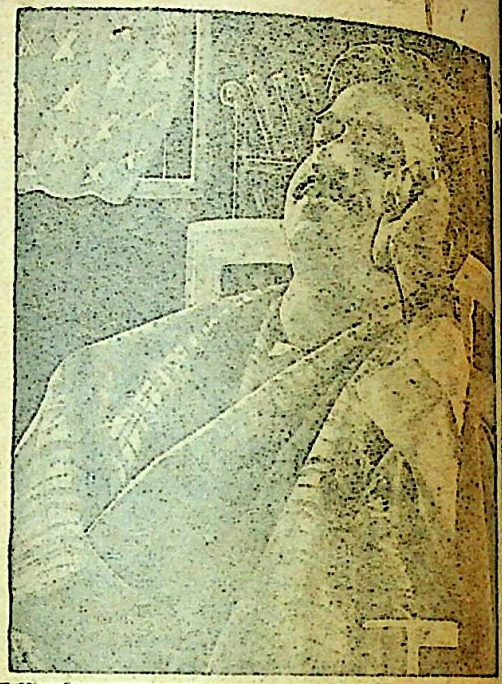

कम्बल घर

गौरवशाली
और
निःसंदेह
आकर्षक

सूटिंग्स

टैरवल-आलऊल

▶ विश्वनाथ प्रसाद एण्ड सन्स• बुलानाला, वाराणसी
▶ भारत टेक्सटाइल्स• आसमेरो (चौक) वाराणसी

बुलानाला आसमेरो — निवास — फैक्टरी
६२८२५. ६४५२६. ६५२४५. ६४५०८. ६२३७५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

STEEL FURNITURE

with comfort, elegance for offices, industries and warehouses.

olympic

Pressure Cooker for Safe, Easy & Economical Cooking.

AUTHORISED DEALERS FOR VARANASI AND MIRZARUR COMMISSIONERIES

SONA AGENCIES

D 35/68-69 JANGAMBARI • VARANASI

PHONE : 67015 • TEL : "SONA"

ALSO CONTACT US FOR RADIOGRAM & FOAM MATTRESS

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मीनाक्षी

गौरवान्वित
करने वाले
मनोरम परिधान
बनारसी सिल्क
एवं सूती
साड़ियाँ
स्कार्फ, ब्रोकेड
इत्यादि

• श्री अन्नपूर्णा सिल्क फैक्टरी
(भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त)
दशाश्वमेध ▪ वाराणसी ▪ फोन-५२०३३
• श्री मीनाक्षी सिल्क इण्डस्ट्रीज़
श्री वेंकटेश्वर लाज बिल्डिंग, दशाश्वमेध, वाराणसी, फोन-६६८००

कहानीकार प्रकाशन ▪ के. ३०/३७ अरविंद कुटीर (निकट भैरवनाथ), वाराणसी फोन-६६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानीकार

विशिष्ट कहानियों की पत्रिका

अन्तर्ग्रंथ
लियां
की नजर में — राजेन्द्र कुमार
वर्ष ७
पूर्णांक ३८
सुकुन्दु रुवा वेद वेदाङ्ग प्रकाशन
अस्सी, वाराणसी।

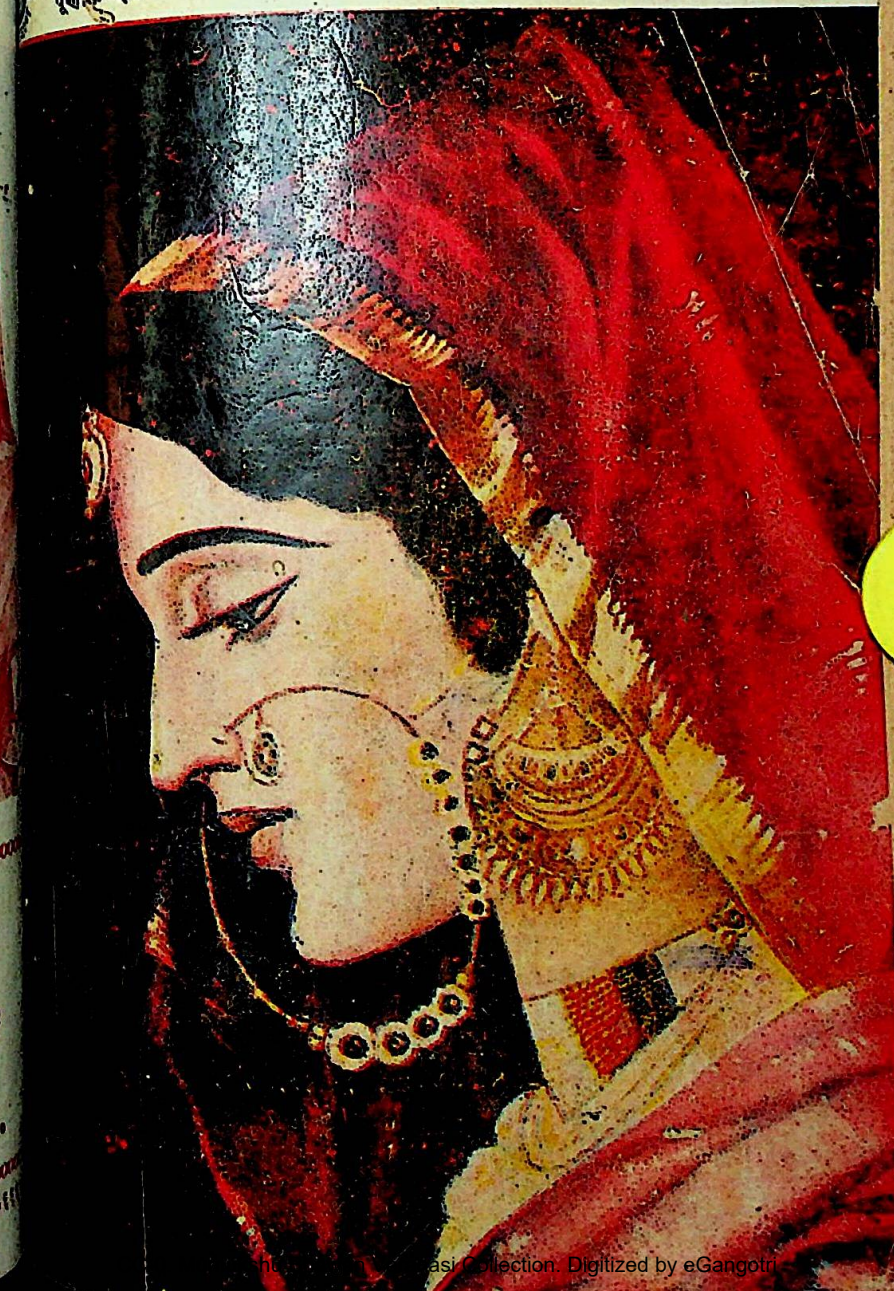

Hu... Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

FAST

ACCURATE

Easy MANIPULATION

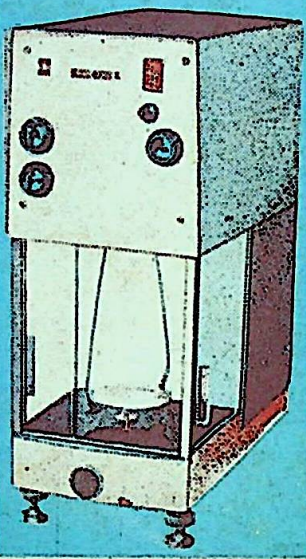

a balance of distinction

POPULAR SINGLE-PAN-BALANCE

MODEL NO SB-1

PERFORMANCE DATA		DESIGN DATA	
Capacity	100 gms	Damping	Air
Range of Optical Scale	100 mgm	Knife edges and planes	Fine Agates
Sensitivity 1 Vernier Graduation	= 0.1 mg	Pan	Non magnetic chrome-nickel steel
Readability ½ Vernier Graduation	= 0.05 mgm	Weights	Non-magnetic Stainless Metal
Accuracy of set of weights	± .1 mg	Projection Lamp	6 Volts
Accuracy in optical range for differential weighing	± 0.5 mg	Housing	Aluminium
System	Substitution	Base Plate	Light Alloy

GRAM . POPULAR

POPULAR BALANCE WORKS

J 8/98 JAITPURA (DIGHIA) VARANASI

PHONE : 66113

Sole Selling Agents

The Scientific Instrument Co. Ltd.

Head Office : 5 Tej Bahadur Sapru Road, Allahabad

Branches : Bombay, Delhi, Calcutta, Madrass

Outposts : Ahmedabad, Hydrabad, Banglore

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

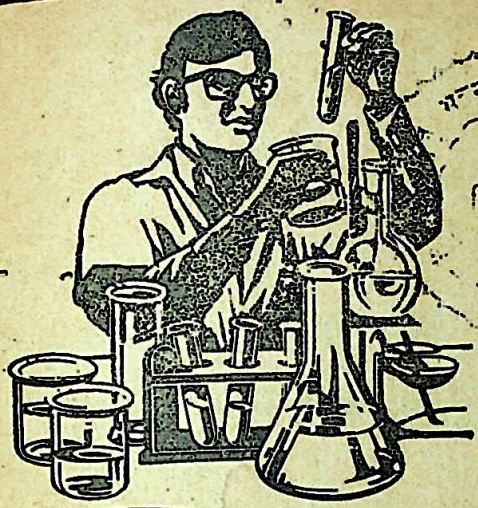

शिक्षा

शिक्षा हर एक के लिए नितांत आवश्यक है—
आपके बच्चे के लिए और कन्या के लिए भी!

परन्तु ऊँची शिक्षा चाहे वह डाक्टरी हो, इंजीनियरी हो या तकनीकी—इतनी महँगी होती जा रही है कि बगैर योजना के आपके मनसूबे धरे-के-धरे रह जाते हैं। आज के स्पर्धा-संघर्ष के युग में ऊँची शिक्षा सफलता का एक साधन जैसी है। आप अपने लाड़लों के लिए, जीवन बीमा के जरिये, ऊँची शिक्षा का प्रबन्ध कर सकते हैं।

यदि आपने अभी तक ऐसा प्रबन्ध न किया हो, तो आज ही कर लीजिए। समय के साथ चलना समय को पहचानना है।

योगक्षेमं वहाम्यहम्

शिक्षा और सुख का अनुपम साधन—जीवन बीमा!

B-LIC-8

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

व्यापार में
प्रगति और सफलता
की सुन्दर भाषा है—
आकर्षक कैलेन्डर
और
आकर्षक कैलेन्डर
के चुनाव के लिए

दी ट्रेडर्स

फोन नं. ६२१०३ | पोस्ट बाक्स ७२

दी के ब्यूटी ऑफ प्रिन्टी.

वाराणसी (उ०प्र०)

विशिष्ट कलेण्डर, ग्लेसीन (बटर पेपर), ग्रीस प्रूफ टिशू पेपर, लेबुल, पोस्टर्स, इक्सरसाइज नोट बुक (अभ्यास पुस्तिका) बहुरंगी कापी कवर के स्टाकस तथा चित्रों की आकर्षक मढ़ाई और सभी प्रकार के ऑफसेट छपाई के कार्यों का सम्पर्क प्रतिष्ठान.

●

दी प्रिंटिंग गुरु (शिवकाशी, दक्षिण भारत) के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार तथा मध्य प्रदेश क्षेत्र के एकमात्र विक्रय-प्रतिनिधि.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठकों लिखा है

पिछले दो अंकों पर कुछ मिली-जुली प्रतिक्रियाएं

कहानीकार का पूर्णांक ३६. आरम्भ से अंत तक पढ़ गया हूँ. प्रारंभ में ही श्री हरिशंकर परसाई पर हमले की आप द्वारा निन्दा संपादकीय दायित्वों के प्रति आपकी जागरूकता का सबूत है. कहानियों में डा० विष्णु कुमार तथा चन्द्रा औलक की कहानियाँ पसन्द आईं ! मृदुला गर्ग की कहानी एक अंचल विशेष के लोगों के जीवन की आंशिक झांकी प्रस्तुत करने में सक्षम रही है. हिन्दी में ऐसी कहानियों का स्वागत होना चाहिए.

'मैं अपनी नजर' में स्तम्भ काफ़ी अच्छा जा रहा है. आत्मलेख पढ़ने के बाद किसी लेखक की कहानी पढ़ना सुखद तो जान पड़ता ही है, सार्थक भी लगता है. इस बार श्री अमृत राय की कड़ुवी-मीठी बातों ने रस तो दिया ही, ज्ञान भी बढ़ाया है.

सानुरोध ● पत्र-पत्रिका के प्रकाशन में उत्पन्न कठिनाइयों, कागज और छपाई की दरों में हुई अप्रत्याशित वृद्धि से विवश हो कर 'कहानीकार' के मूल्य में कुछ वृद्धि करनी पड़ी है. आशा है, हमारे सहृदय पाठक हमारी विवशता को समझेंगे और पहिले से पूर्ववत स्नेह बनाये रखेंगे—सं०

कुल मिला कर 'कहानीकार' का यह अंक पठनीय भी है और आकर्षक भी !

—शकील सिद्दीक़ी, समी मंज़िल, याहियागंज, लखनऊ-३

कहानीकार पूर्णांक ३६. शुरुआत में ही संपादकीय टिप्पणी—'रचना लड़ाई पर नहीं, कलम के सिपाहियों पर'—आपका सोचना इस शर्मनाक हरकत पर सही सुर की प्रतिक्रिया है. 'कहानीकार' में सही मायने में हम अपनी आवाज पाते हैं. इस अंक की अच्छी कहानियाँ लगीं—अलग-अलग एहसास (कृष्ण कमलेश), समय की बेड़ियाँ (राधेश्याम उपाध्याय), हँसी की परतें (तड़ित कुमार) और कोई नहीं (चन्द्रा औलक) कृष्ण कमलेश ने कई मौसमों में, कई स्तरों पर एक औरत की तसवीर गहरी उतारी है. कृष्ण कमलेश की नायिका ही आज

(शेष पृष्ठ १०८ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आई. बी. पी.

पेट्रोल, डीजल एंड लुब्रिकेन्ट्स

तथा

लाइट विहिकिल्स की सर्विसिंग

के लिए

विश्वसनीय प्रतिष्ठान

मेसर्स सिंहल एजेंसी

बलरामपुर, आजमगढ़.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दाम्पत्य जीवन का
आकर्षण बिन्दु है—
प्रेम
प्रेम का आकर्षण बिन्दु है—
नारी
और नारी का जो सौंदर्य-बिन्दु है
उसका रक्षक है
ब्रेस्टॉनिक

मेसर्स एल. के. हर्बल इण्डस्ट्रीज
सी २७/५३ जगतगंज, वाराणसी.

Kupid

बाम्बे डाइंग फैब्रिक्स द्वारा निर्मित
बच्चों के कपड़ों के वाराणसी में
एकमात्र वितरक

फूल-से सुन्दर
बच्चों को
फूल-से सुन्दर
कपड़ों से सजायें

मेसर्स कुमार • चौक, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

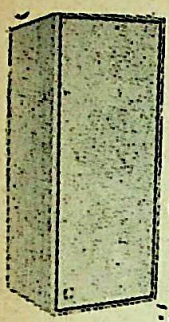

BUSH
BEETHOVEN
SOLID STATE STEREO SYSTEM

- बुश तथा मर्फी—रेडियो, ट्रांजिस्टर्स
- उषा तथा ओरिएंट पंखे, लियोनार्ड रेफ्रिजरेटर्स
- एच एम वी. पोलीडोर तथा सरगम रेकार्ड

आनन्द रेडियो कारपोरेशन

RC ANAND Radio Corporation

GRAM: ARCO. PHONE: 66446 GUDAWLIA, VARANASI.

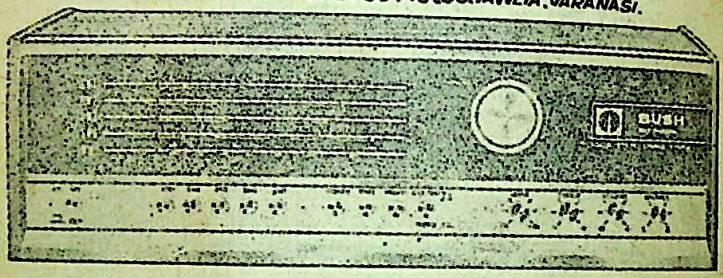

शिव होजरी की
मुलायम, टिकाऊ और
सुखप्रद परिधान

दरबार
स्नोयी
गोल्डन लोटस

इजिपशियन धागे से निर्मित

निर्माता: शिवचरन दास खत्री
१८७, महात्मा गांधी रोड कलकत्ता-७

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहानीकार

(नवम्बर-दिसम्बर '७३)

वर्ष ७ : पूर्णांक ३८

सम्पादक—
कमल गुप्त

■

कला-चित्र : 'अधीर'

■

वार्षिक : छ रुपये
विदेश में : दस रुपये
प्रति अंक : एक रुपया

■

कार्यालय—
डी.३०।३७ अरविंद कुटीर
(निकट भैरवनाथ)
वाराणसी-१.फोन६६६६५

■

ब्लाक सज्जा—श्री अन्नपूर्णा
ब्लाक वर्क्स, वाराणसी
मुखपृष्ठ ब्लाक—
बैनर्जी ब्लाक वर्क्स,वारा०

कहानियाँ

विवाहोपरांत	८	नरेन्द्र काहलो
अलाव घर	१८	सिद्धेश
चीख	२६	शंकर पुणतांबेकर
तीसरा आदमी	३६	उमेश कुमार सिंह
प्रेम की पीर	४४	शम्सुद्दीन
व्यक्तिगत	४८	चन्द्र प्रकाश पाण्डेय
मेरी उसकी चाह	६०	डा.कृष्णनंदन सिनहा
चोट	६८	कुमार शीरो

एक विश्व प्रसिद्ध उपन्यास

अपराजिता	७४	पर्ल बक

मैं अपनी नजर में (८)

आत्मलेख	८६	राजेन्द्र अवस्थी
अपना शहर (कहानी)	९०	,, ,,

अन्य स्तम्भ

कथा-परिकथा	१०३	विचारकेतु
आपने लिखा है	३	
कविताएं	१२, २०, ३०, ३८, ५१, ६४, ७८	

मानवीय पीड़ाओं का अंक—'कहानीकार' का यह विशेष अंक युद्ध की भयंकर नृशंसता,अकाल और बाढ़ की विभीषिका तथा मानवीय क्रूरताओं और शोषण से उत्पन्न मानव की पीड़ा,उसकी बाह्यांतर यंत्रणा,क्षोभ,कुण्ठा, उसकी विवशता और निराशा का एक दस्तावेज होगा. उसके लिए सही और सत्य घटनाओं पर आधारित मौलिक तथा अनूदित कहानियाँ, रिपोर्ताज और संस्मरण आमंत्रित हैं.रचनाएं ३१ मार्च १९७४ (परिवर्तित अवधि) तक आ जानी चाहिए—सं०

(कुछ विशेष कारणवश पूर्व घोषित दो विशिष्ट कथांकों—प्रतिष्ठा अंक तथा मानवीय पीड़ा अंक का प्रकाशन फिलहाल अगले के लिए टाल दिया गया है)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विवाहोपरान्त

नरेन्द्र कोहली

विवाह के पश्चात् ली गई छुट्टियों का आखिरी दिन था। से कालेज जाना था और सुमन बार-बार अपने-आपको सहज का प्रयत्न कर रही थी, ताकि वह पहले के ही समान सहज कालेज जा सके. उसका विवाह हुआ था—यह उसका मामला था. कालेज में उसके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं चाहिए था.

कनाट प्लेस में सैर करते हुए,एक बड़ी-सी शो-विंडो के सुमन खड़ी हो गई. कितनी अच्छी चप्पलें थीं—सादी और कोने वाली काली चप्पल की डिज़ाइन भी एकदम नयी थी. भी फ्लैट हील. उसे विवाह में जितनी चप्पलें मिली थीं, सब हील की थीं; और विवाह से पहले की चप्पलें वह अपने साथ नहीं थी, कल पहन कर कालेज जाने के लिए उसे यह चप्पल लेनी चाहिए थी, नहीं तो हाई हील की चप्पल पहन सारे कालेज खट्-खट् करती फिरेगी तो सारे बरामदों में अपने-आप ही करती चलेगी कि उसका विवाह हो गया है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हैं जी . . यह चप्पल कैसी है ?'

'अच्छी है.'

'इसे ले लें ?'

अमित के चेहरे पर ढेर सारी विरोधी रेखाएं उभर आईं, 'अभी से नई चप्पल की जरूरत पड़ गयी ? विवाह में इतनी चप्पलें तो ली थीं, क्या सब टूट गईं ?'

सुमन भौंचक हो अमित के चेहरे को देखने लगी : विवाह के पहले का वह उदार अमित कहाँ था, जो अपना सारा वेतन अपने पर्स में रखा करता था और बात-बात में अपना पर्स निकाल कर सुमन के हाथों में दे देता था. अब सहसा ही वह बहुत हिसाबी और घर-बारी अमित हो गया था—जो पैसे-पैसे का हिसाब रखता था और एक पैसा भी अनावश्यक रूप से खर्च करने को तैयार नहीं था.

सुमन का मन एकदम खिन्न हो उठा. आज तक तो छुट्टियाँ थीं. कल से वह कालेज जाएगी. यदि पहले के ही समान कभी देर हो जाएगी और वह स्कूटर ले लेगी तो क्या अमित उसे इस बात के लिए भी टोकेगा कि वह स्कूटर पर कालेज क्यों गयी ? बस पर क्यों नहीं गयी ? इस तरह से यदि वह बात-बात पर उसका हाथ पकड़ने लगा तो सुमन का तो जीना ही कठिन हो जाएगा....

पर दूसरे दिन अमित स्वयं उसे कालेज पहुँचाने आया था—टैक्सी में. शादी के बाद पहला दिन था न—अमित ने उसे समझाया था—रोज़-रोज़ तो सम्भव नहीं है, पर पहले दिन तो इतना मान होना ही चाहिए. और जब कालेज के गेट पर वह उतरने लगी थी तो अमित ने उसे याद दिलाया था, 'ज़रा अपनी हेड आफ डिपार्टमेंट से कहना, तुम्हारा टाइम-टेबुल एडजस्ट कर दें.'

इस विषय पर उन्होंने पहले से ही काफी सोच रखा था. वे दोनों ही चाहते थे कि दोनों का टाइम-टेबल एकदम एक जैसा हो, ताकि दोनों साथ-साथ कालेज जा सकें. यदि दोनों का टाइम-टेबल अलग-अलग होगा तो जो भी घर पर रहेगा, वह अकेला बोर होगा. सुमन का तो यह सोच कर घर आने का मन ही नहीं करेगा कि अमित कालेज में होगा और वह घर पर अकेली रहेगी. अमित को भी अकेले घर में रहना अच्छा नहीं लगेगा और कालेज में भी यही सोचता रहेगा कि सुमन घर पर अकेली होगी और या तो बोर हो रही होगी, या डर रही होगी. फिर, अकेले-अकेले, घर में खाने-पीने का भी कोई मज़ा नहीं आएगा...

कालेज में उसकी हेड-आफ-डिपार्टमेंट मिसिज़ शर्मा बड़े प्यार से मिलीं.

'आ गई ?'

'जी.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'हनीमून में कोई झगड़ा तो नहीं हुआ ?'

सुमन कुछ नहीं बोली, उसने सिर झुका लिया.

'सब ठीक है न ?' मिसिज़ शर्मा ने फिर पूछा.

'जी.'

सुमन की हिम्मत कुछ खुली. क्या वह अपने टाइम-टेबल के एडजस्टमेंट की बात कहे. इस समय तो वह कह भी सकती है, बाद में उसका साहस जवाब दे जाएगा.

'जी. एक बात कहनी थी.'

'कहो.' मिसिज़ शर्मा मुसकरा रही थीं.

'जी ! मैं चाहती थी कि मेरे टाइम-टेबल के ये कुछ पीरिएड आगे-पीछे...'

मिसिज़ शर्मा के चेहरे के सारे भाव बदल गए.

'क्यों ?'

'मेरा टाइम-टेबुल उनके टाइम-टेबल के अनुकूल हो जाएगा तो हमें सुविधा होगी.'

मिसिज़ शर्मा सहसा ही बहुत कर्कशा हो गयी थीं. 'सुमन रानी. नौकरी इस प्रकार नहीं होती. हमें लड़कियों और उनकी पढ़ाई का हित देखना है, यह नहीं देखना है कि किस टाइम-टेबल में आपको रोमांस लड़ाने की सुविधा होगी.'

सुमन एकदम हतप्रभ हो गई.

'जी ! रोमांस की बात नहीं है. ज़रा खाने की सुविधा...'

'सबके घर हैं, सब के पति हैं.' मिसिज़ शर्मा ने उसे बीच में ही टोक दिया, 'सब लोग अपने खाने-पीने का हिसाब-किताब रखते हैं. उसके लिए किसी का टाइम-टेबल नहीं बदला जा सकता. घर अपनी जगह है और नौकरी अपनी जगह.'

सुमन समझ गई कि मिसिज़ शर्मा से कुछ भी कहना बेकार है. हो सकता है कि टाइम टेबल में हेर-फेर सम्भव ही न हो—पर मिसिज़ शर्मा अपनी मजबूरी जताकर इनकार नहीं कर रही हैं. वे तो चिढ़ कर जली-कटी सुना रही हैं...

सुमन सारा दिन अटपटाई-सी रही. आते-ही-आते मिसिज़ शर्मा ने उसका मूड कुछ ऐसा खराब कर दिया था कि उसका कोई कदम सीधा नहीं पड़ रहा था. घर जाने के लिए उसने स्कूटर रिक्शा लिया तो चढ़ते हुए किसी चीज़ में फँस कर उसकी का बार्डर फट गया. वह एकदम बुझ-सी गई. कैसा दिन चढ़ा है—सब कुछ उल्टा सीधा होता जा रहा है. इतनी बढ़िया साड़ी है—अब फट गयी. वह बहुत देर तक फटे हुए बार्डर को घूरती रही—पता नहीं यह ठीक से रफू भी हो पाएगा या नहीं.

घर आते ही, अमित की नज़र उसके चेहरे पर पड़ने से पहले साड़ी के फटे बार्डर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर पड़ गई.

'इतनी क़ीमती साड़ियाँ हैं. इन्हें कुछ दिन तो सम्भाल कर पहनना चाहिए सुमन.' उसने कहा, 'ये फट गई तो नई खरीदी भी जाएगी कि नहीं, कौन कह सकता है.'

सुमन एकदम हताश हो गयी. यह क्या जानती थी कि अमित की नज़र, मम्मी की नज़र से भी अधिक तेज़ है.

वह मूक दृष्टि से अमित के चेहरे पर कुछ खोज रही थी. पर उस चेहरे के लिए वह अमित एकदम अपरिचित था, जिसने मम्मी से कहा था कि साड़ियाँ आखिर होती किसलिए हैं, फटने के लिए ही तो. वह अमित भी कहीं खो गया था, जिसने साड़ी फट जाने के कारण रोती हुई सुमन को आश्वासन दिया था कि उसे नयी साड़ी ला देगा.

अगले ही दिन रसोई में काम करते हुए एक प्लेट सुमन के हाथ से छूट कर फर्श पर गिर गयी. खन्-न्-न् की आवाज़ हुयी और प्लेट के टुकड़े-टुकड़े हो गए. सुमन किसी भारी आशंका से धक् हो गयी. क्षण भर तो वह एकदम स्तंभित-सी खड़ी रह गयी, जैसे समझ ही न पायी हो कि हो क्या गया है. जब कुछ संभली तो उसने रसोई में झांक कर देखा—आस-पास कहीं भी अमित नहीं था. तो अमित को पता नहीं चला होगा कि उससे प्लेट टूट गयी है.

उसने झुक कर प्लेट के सारे टुकड़े बटोरे, उन्हें चुपचाप पुराने समाचार पत्र में लपेटा और बाहर रखे, कूड़ा फेंकने के पीपे में डाल आयी. पर रसोई में उसका मन काम में नहीं लगा. रसोई में पड़ी हुए सब्जियों के छिलके या ऐसी ही दूसरी चीजें भी वह बाहर पीपे में डाल आई. अब किसी को प्लेट के टुकड़े नज़र नहीं आ सकते थे.... और तब वह सचेत हुयी...वह क्या कर रही है ? वह एक टूटी हुयी प्लेट के टुकड़ों को चोरों के समान छिपा रही है, जैसे वह उस घर की नौकरानी हो और उसे मालिकों से डाँट पड़ने का भय हो. घर में काम करते हुए चीनी के बर्तन किससे नहीं टूटते ? फिर वह किससे इतना डर रही है...? वह घर की स्वामिनी है. उससे कोई नहीं पूछ सकता कि प्लेट क्यों टूटी. यदि अमित से कोई गिलास टूट जाए तो क्या वह उसके टुकड़ों को उससे इस प्रकार छिपाता फिरेगा ?...

पर सुमन की यह पुरानी आदत है. उसे याद है कि अपने बचपन में भी वह इसी प्रकार के काम किया करती थी. एक बार वह कुछ बुनने के लिए मम्मी की सिलाइयाँ चुपके स्कूल ले गयी थी. पता नहीं सिलाइयाँ स्कूल में छोड़ आई या रास्ते में फेंक आई थी या कोई उठा कर ले गया था. पर सिलाइयाँ गुम हो गयी थीं. घर आ कर वह बहुत डर गयी थी—मम्मी को कैसे बताएं. 'ऐरो' की अच्छी-खासी महंगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिलाइयाँ थीं, मम्मी को मालूम होगा, तो बहुत नाराज़ होंगी. वह मन-ही-मन कहती रही और इधर-उधर से करके किसी प्रकार साढ़े तीन रुपयों में सिलाइयाँ ले आयी थी.

मम्मी ने जब अपने डिब्बे में एकदम नयी-सी सिलाइयाँ देखीं तो पूछा, 'यह सिलाइयाँ कहाँ से आयी ?'

और तब सुमन को सारा किस्सा सुनाना पड़ा था.

मम्मी बहुत नाराज़ हुयी थीं, 'सिलाइयाँ गुम गयी थीं तो मुझे बता देती. मैं तुझे दे जाती क्या ? तुझे इतनी महँगी सिलाइयाँ लाने के लिए किसने कहा था ?'

सुमन को लगा, वह अमित से भी ज्यादा ही डरने लगी है, जितना मम्मी से डरती थी. वह चाहे जानती हो क्यों न हो कि अमित इतने से नुकसान के लिए उसे कुछ नहीं कह सकता, कुछ नहीं कहना चाहिए पर फिर भी प्लेट टूट जाने पर उसे बताने का साहस नहीं कर सकती थी. उसकी प्लेटें उससे टूटती ही रहती थीं. कभी कपड़ा फट जाता, तो अमित की नजर पड़ने से पहले ही कहीं छिपा कर वह उसे डालती. अपनी आदत के अनुसार, जब वह धोबी से धुल कर आए कपड़े अलमारी में न रख, ड्राइंगरूम के सोफे पर ही पड़े रहने देती, अमित की कोई पुस्तक वह अपने पर्स में डाल कर कालेज ले जाती और लौटने तक उसका कोई कोना मुड़ जाता,

समय पर अपना पेन न खोज पाने के कारण, अमित का पेन या पेंसिल कालेज ले जाती और कहीं रख कर भूल जाती या कहीं गुमा आती तो अमित का भय उसे बुरी तरह सताता था.

अमित ने उसे जूड़े में लगाने का चांदी का एक पिन काटेज इम्पोरियम से ले कर दिया था. पिन बड़ा सुन्दर था. उसके सिरे पर तीन छोटी-छोटी घंटियाँ बनी हुयी

ऐतिहासिक पुनरावृत्ति

कमजोर
ऐतिहासिक रस्सी का फंदा
एक आदमी ने
अपने गले में डाल लिया है
और
शून्य में झूल गया है
कल सुबह चाय पर
अखबार में
आत्महत्या का समाचार
लोग पढ़ेंगे
और सिगरेट के आखिरी कश के साथ
उस अजनबी लाश को
अतीत के अन्धेरे में फेंक देंगे
और वह ऐतिहासिक रस्सी
पुनः एक समाचार की तलाश में
झूलती रहेगी.

—मधुर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

थीं, जो शोभा के लिए तो थीं ही, कभी-कभी बज भी उठती थीं.

दूसरे-तीसरे दिन ही, सुमन उसे जाने कहाँ खो आयी थी. उसने घर आ कर डरते-डरते अमित को बताया था. उसे भय था कि अमित नाराज़ होगा. पर अमित नाराज़ नहीं हुआ था.

'तो क्या हो गया केयरलेस ब्यूटी.' उसने हँसते हुए कहा था, 'इस बार आपको हम तीन के स्थान पर पाँच घंटियों वाला पिन ले देंगे. पर इस बार ध्यान रखना. भुलाना मत. बी रिस्पांसिवल सुमन. चीज़ों को संभाल कर रखा करो. इट इज़ हाई टाइम, यू शुड इम्प्रूव योर केयरलेसनेस.'

अमित ने जो कुछ कहा था, पूरा किया था. अगली बार जब वे टहलते हुए जनपथ की ओर गए थे, तो अमित ने उसे काटेज इम्पोरियम से पांच घंटियों वाला पिन ले दिया था; और अपने हाथों से उसके जुड़े में लगा दिया था. पर सुमन क्या करती. पिन जुड़े में ठहरता ही नहीं था. कोई गोद से चिपका हुआ तो था नहीं. बालों में यूं ही अड़ाया हुआ था—कहीं गिर गया.

अमित को पता चला, तो वह नाराज़ तो नहीं हुआ, पर हँस कर बोला,'भई ! आपको यह लापरवाही हमें पसन्द नहीं आयी. अब आपको न हम पिन ले कर देंगे, न लेने देंगे.'

बाज़ार में घूमते हुए, सुमन को एक गार्डन लेंप पसन्द आ गया था.

'इसे ले लें ? मैं बहुत दिनों से एक अच्छा-सा गार्डन लैंप खोज रही थी. अच्छा है न ?'

'बहुत महंगा है.' अमित उसकी कमर में हाथ डाल, उसे धकेल कर गार्डन-लैंप से दूर ले गया,'एक डेकोरेशन-पीस के लिए, हम सौ रुपए एफोर्ड नहीं कर सकते सुमन !'

सुमन को बहुत बुरा लगा.

अगले ही सप्ताह अमित ने सुमन को बताया, 'मैंने दूध वाले से कह दिया है, कल से वह एक किलो के स्थान पर दो किलो दूध दे जाया करेगा.'

'वह किसलिए ?'

कल भैया-भाभी और बच्चे आ रहे हैं.' वह बोला,'चाय-वाय के लिए दूध चाहिए ही, बच्चों के पीने के लिए भी दूध तो चाहिए ही.'

सुमन भौंचक हो उसका चेहरा देखती रही : क्या वे रोज़ दो किलो दूध एफोर्ड कर सकते हैं ? पर अमित का ध्यान उस ओर नहीं था. बोला,'मैं बाज़ार जा रहा हूं, कुछ फल-सब्जियाँ और मीट-वीट ले आऊँ.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और अमित जो कुछ लाया था—वह पन्द्रह रुपयों का फल, ढेर सारी सब्जी और डेढ़ किलो मीट था. अमित लायी गयी चीज़ों को संभाल-संभाल कर रखता रहा और सुमन चुपचाप उसके चेहरे को ताकती रही.

'शाम को बच्चों को ले कर बाज़ार घूमने जाएंगे न, तो बच्चों को कोई चीज़ या कपड़े-वपड़े ले देना,' वह बोला,'बच्चे पहली बार हमारे घर आ रहे हैं. कम-से-कम पच्चीस-पच्चीस की चीज़ ले दोगी तो चाची को याद रखेंगे.'

सुमन के मन में संचित होती आई चिढ़ प्रकट हो गई,'इतने पैसे कहां से आएंगे'

अमित अपने-आप में इतना मग्न था कि उसने सुमन के चिढ़ने की ओर ध्यान ही नहीं दिया,'हम दोनों लेक्चरर हैं. हमें लेन-देन तो अपनी हैसियत के अनुसार ही करना होगा न.'

सुमन एकदम ऐंठ गई. जी में आया, तड़प कर कहे, जब मैंने गार्डन लंच में को कहा-तो पैसे नहीं थे. अपनी खर्च के लिए पैसे नहीं हैं और अपने भाई-भतीजों की बारी हैसियत की बात आ जाती है. क्या अपने रहन-सहन के समय हैसियत नहीं सोचनी चाहिए ? पर उसने कुछ नहीं कहा. बात को मोड़ कर दूसरी ओर ले गई 'ज़रा सोच-समझ कर खर्च करो. अगले सप्ताह पुष्पा का जन्मदिन है. उसे भी तो प्रेज़ेंट देना है.'

सुमन देखना चाहती थी कि उसकी बहन के विषय में अमित क्या कहता है.

पर अमित की मुद्रा में कोई परिवर्तन नहीं आया. वह उसी प्रकार सहज बोला,'अच्छा किया. याद दिला दिया. नहीं तो मैं कहीं भूल ही जाता. मुझे किसी की जन्म-तिथि याद ही नहीं रहती है.उसके लिए भी कोई अच्छी-सी चीज़ ले लेना.'

'दस रुपए की कोई चीज़ दे दूं क्या ?' सुमन ने उसे उकसाया.

'दिमाग़ खराब है.' अमित की झल्लाहट बड़ी विचित्र थी,'दस रुपयों में क्या आता है, आजकल महंगे ज़माने में. कमाऊ बड़ी बहन हो कर भी कुल दस ही रुपये में निबट जाना चाहती हो. देते हुए, कुछ तो उदार हुआ करो.कम-से-कम पच्चीस का तो बजट रखो ही.'

सुमन अमित को ले कर द्वन्द्व में पड़ गई थी. क्या माने वह उसे—कंजूस ? हां, कंजूस नहीं कहे तो क्या कहे. खर्च करने को कहो तो उसका दम घुटता है. और जब दूसरों को देने की बारी आती है, तो उसका हाथ नहीं रुकता. क्या कहे—फ़िज़ूल खर्च ? हां फ़िज़ूल खर्च ही है. सुमन के मन में एक दूसरी प्रतिक्रिया जन्म ले रही थी—कहां तो वह यह सोचती थी कि वह खुले हाथों खर्च करती है और अमित पैसे को दांतों से पकड़ता है; और कहां अब वह सोच रही थी कि वह बच-बच कर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

खर्च करती है, अमित ही बेतहाशा पैसे बहाता है. अमित के लिए दूसरों को देना अधिक महत्वपूर्ण है और उसके लिए अपना आराम. जब वह पैसे बहाता है, तो सुमन ही क्यों जानमारी करे.

दूसरे दिन सुमन की दृष्टि पल-पल में घड़ी पर जा टिकती थी. उसके मन में बार-बार कौंधता था कि उसे जल्दी तैयार हो जाना चाहिए, नहीं तो उसे कालेज जानेमें देर हो जाएगी. पर बार-बार स्वयं को तैयार होने से रोकती रही थी. अन्त में जब तैयार हो कर वह कालेज जाने के लिए घर से निकली थी, तो वह बहुत स्पष्ट रूप से जानती थी कि यदि वह बस में जाएगी तो किसी भी प्रकार समय से कालेज नहीं पहुँच पाएगी.

उसने जैसे किसी को समझाने के लिए घड़ी देखने का आडम्बर किया, और यह जता कर कि अब इतना समय नहीं रह गया है कि वह बस में जा सके, अतः मजबूरी में स्कूटर ही लेना पड़ेगा, वह स्कूटर स्टैंड की ओर बढ़ गई.

दिन भर वह अपने-आप को समझाती रही कि स्कूटर पर उसने जो सवा दो रुपए खर्च किए हैं, वे उस आराम और सुविधा के सामने नगण्य हैं, जो उसे बस में न आ कर स्कूटर में आने के कारण मिला है. उसे न केवल आज घर भी स्कूटर में जाना चाहिए, बल्कि रोज़ इसी प्रकार स्कूटर पर ही आना-जाना चाहिए.

वह स्कूटर में ही घर लौटी भी थी. पर उसे आते हुए कहीं यह नहीं लगा कि वह अपनी इच्छा से, अपने आराम के लिए स्कूटर में आयी है, बल्कि उसने तो किसी को चिढ़ाने के लिए, यह जताने के लिए कि देखो, मैं यह भी कर सकती हूँ—स्कूटर लिया था.

और अपनी ओर जैसे चेतावनी देते हुए अमित को बताया था कि वह आज कॉलेज स्कूटर पर आयी गयी है.

अमित ने बड़े आश्वस्त स्वर में उत्तर दिया, 'अच्छा किया. पैसे आखिर होते ही किसलिए हैं. मैं तो तुम्हें कब से कह रहा हूं, बसों में धक्के खाना छोड़ो. आराम से कालेज आया-जाया करो.'

सुमन ने ऊपर से अमित की बात मान ली, पर मन-ही-मन वह कभी भी आश्वस्त नहीं हो सकी. उसे कभी नहीं लगा कि वह अपने आराम के लिए स्कूटर पर कालेज आती-जाती है. वह अपने आराम के लिए यातायात पर इतने पैसे खर्च करने के लिए कभी भी अपने-आपको तैयार नहीं कर पायी थी. उसके लिए यह अधिक सहज होता कि स्कूटर के खर्च के अनुसार अमित उसे महीने का खर्च दे देता और वह बस में आ-जा कर जो पैसे बचाती, उन्हें अपनी इच्छा से जैसे चाहती अपने ऊपर खर्च करती.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शायद आप भूले नहीं होंगे कि—
मनुष्य वस्त्रविहीन पैदा होता है और
उसे सामाजिक प्राणी बनाने में
आकर्षक वस्त्रों का कितना बड़ा हाथ है और
आकर्षक वस्त्रों के बनाने में
हमारा कितना हाथ है, इसे आप निश्चय ही भूले न होंगे

श्रीजी सिलाई केन्द्र
लहुराबीर, वाराणसी.

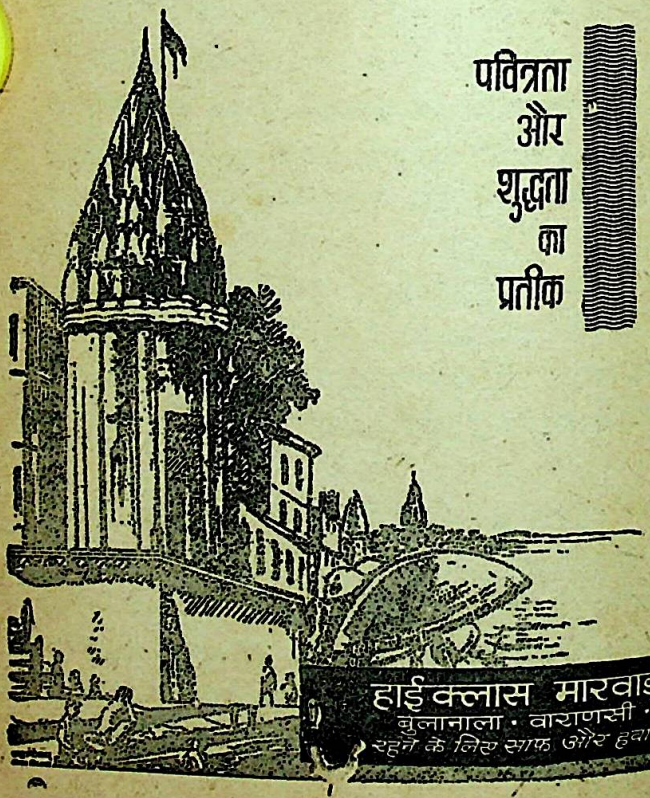

पवित्रता
और
शुद्धता
का
प्रतीक

हाई क्लास मारवाड़ी भोजनालय
बुलानाला • वाराणसी • फोन: ६४६१
रहने के लिए साफ और हवादार कमरे सुलभ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पर उसने जब कभी अपने वेतन के हिसाब-किताब के विषय में अमित से बात करनी चाही, वह हर बार नाराज़ हो उठता; और बात लड़ाई तक जा पहुँचती. उसने कितनी ही बार बैंक में अपना अलग एकाउंट खोलना चाहा, पर अमित इस अलगाव के लिए कभी भी तैयार नहीं हुआ.वह ज्वायंट एकाउंट ही रखना चाहता था.

सुमन जानती थी कि वह ज्वायंट एकाउंट में बचत नहीं कर सकती, क्योंकि उस एकाउंट में वह जो पैसा बचाएगी, उसे अपने ढंग से खर्च नहीं कर पाएगी. अमित उसे अपने ढंग से खर्च कर डालेगा. तो फिर वह बचत किसलिए करे—अमित के मनमाने खर्च के लिए ?...पर अमित को मनमाना खर्च करने से रोकने के लिए वह अपने पैसे इस प्रकार तो नहीं उड़ा सकती...

'हूँ जी ! मैं सोचती हूं, मैं एक बीमा पालिसी ले लूं.'

'अच्छा विचार है.' अमित बोला,'पर मेरा विचार है हम ज्वायंट पालिसी लें. रिस्क ही कवर करना है, तो अच्छी तरह हो. यदि मुझे कुछ हो भी जाए तो तुम्हें दुगने पैसे मिल सकें....'

पर सुमन अपनी अलग पालिसी लेना चाहती थी, ताकि वह पैसा उसके हाथ में आए. रिस्क की बात उसने कभी नहीं सोची थी. वह तो केवल एक ही बात चाहती थी कि कुछ पैसा उसका अपना हो.उस पैसे का हिसाब उसे अमित को न देना पड़े—अमित से पूछना न पड़े, वह जैसे चाहे उसे खर्च करे.

इस बात के लिए अमित उसके साथ सहमत नहीं हुआ, और ज्वायंट पालिसी के लिए वह अमित से सहमत नहीं हो सकी. परिणाम यह हुआ कि दोनों में से किसी का भी बीमा नहीं हो सका.

और अब पैसों के विषय में भी अमित सुमन के लिए हौवा हो गया था.वह उससे बहुत डरने लगी थी. उसका मन कहीं बहुत गहरे जा कर, यह विश्वास कर चुका था कि जैसे ही वह अमित से पैसों की बात करेगी,अमित उससे जरूर ही लड़ पड़ेगा ■■

(अप्रकाशित उपन्यास 'साथ सहा गया दुख' का एक अंश)

—एस–३६२, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली-४८

शरीफ चोर

'पिछली बार हम किस होटल में टिके थे, क्या तुम्हें याद है ?' पत्नी ने पूछा.

'रुको बताता हूँ' पति बोला,'जरा तौलिया निकाल कर देख लूं.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अलाव

सिद्धेश

घर में सब कुछ है.एयर कूलर से पूरे घर में बर्फ जैसी ठं
तैरती रहती है. बाहर इतनी गर्मी पड़ रही है कि शीशे के पार देखने
से रास्ते पर सब कुछ सुनसान नज़र आता है, एक आदमी की छाया
तक नहीं दीख पड़ती. सामने फुटपाथ पर एक छोटा पेड़ आसमान से
बरसती हुयी आग में झुलसता रहता है. इधर रेफ्रीजरेटर में पानी
फ्रीज होता रहता है, वह कुछ देर बाद बर्फ का रूप ले लेता है.
सोफासेट, रेडियोग्राम, दीवार पर घड़ियां और शो केस में रकम-
रकम के श्वेत पत्थर की बनी मूर्तियाँ. मगर इन सब चीजों से रोशनी
को कुछ लेना-देना नहीं. वह जान गयी थी कि माँ भी इन सब चीजों
से कोई आसक्ति नहीं रहतीं, अब वह अधिकतर बाहर-बाहर रह कर
समय काट लेती हैं. कभी कुसुम मांसी के यहां, कभी सुषमा मासी के
यहां, कभी-कभी किसी के यहाँ पार्टी में शामिल होने जाती हैं और
रात भर आतीं ही नहीं. घर से सम्पर्क उनका बहुत कम रहता है.
उस दिन छुट्टी का दिन था, माँ घर से बाहर निकलीं ही नहीं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्सुक हुआ था मन में अतः शाम तक रीना माँ के कमरे से निकले जाने की प्रतीक्षा करती रही थी. पिताजी रोज की तरह उस दिन भी मीना दी के साथ बाहर निकल गये थे. कोई कुछ बोलने नहीं गया था. मीना दी उन्हें सुबह ही सुबह लेने आ गयी थी. उसने ही पिताजी को चाय और टोस्ट बना कर ब्रेकफ़ास्ट कराया था. माँ तब भी अपने कमरे में पड़ी अखबार पढ़ रही थीं. पिताजी दोपहर में खाने पर नहीं लौटे थे.

उस दिन माँ शाम होते न होते फूट पड़ी थीं और घर को अपने सर पर उठा लिया था. उन्होंने अपने आपमें बड़बड़ाना शुरू कर दिया था,'यह क्या पागलपन है, जो घर-बार न देख कर हर वक्त उसके पीछे-पीछे भागते फिरते हैं. यह क्या कोई सराय-खाना है, जब चाहा तब आये. घर में जवान बेटी है, इसका भी तो खयाल करना चाहिए.'

रीना ड्राइंग रूम से सब कुछ सुनते हुए भी चुपचाप किताबों के पन्ने पलटती रही थी. वह जानती थी कि इस वक्त माँ के सामने पड़ने का अर्थ है, मां को अप्रत्याशित रूप से स्तब्ध कर देना या तो माँ ही उसे पकड़ कर फूट पड़ेंगी. वही हुआ था, माँ ने थोड़ी देर बाद खुद ही आवाज़ दे कर बुलाया था,'रीना, चल तुझे अगले महीने के होस्टल में दे आऊंगी. यहाँ रह कर घर का कोई सुख नहीं मिलेगा. मैं भी इन सबों को स्वतंत्र छोड़ कर कहीं रहने लग जाऊंगी. मेरी भी जरूरत क्या है यहाँ, रैना से कह दे कि वह यहीं आ कर रहे. समझी ?'

रीना जानती थी कि इसका जवाब कुछ भी नहीं हो सकता. इसलिए वह चुप रही और सर झुका कर सब कुछ सुन रही थी. वह नहीं चाहती थी कि पिताजी और माँ के बीच बढ़ते हुए तनाव का वह शिकार बने. वह उनकी छाया से भी भागना चाहती थी. वह इन सारी बातों से परे रहना चाहती थी. मगर बाहर की विषाक्त हवा से बचना तब भी सम्भव नहीं था, शीशे के भीतर बन्द फ्रीज्ड किये हुए मौसम से वह कैसे भाग सकती थी. इसलिए कभी-कभी शरीर के पूरे अवयवों को झकझोर देने वाली चुप्पी और ठंढ की उठती हुई लहर से घबड़ा कर कभी-कभी वह बाहर भागना चाहती थी.

रीना ने जब से होश संभाला तब से पिताजी और मां के सम्बन्धों की बात सुन कर उसके मन में भी एक अव्यक्त कल्पना का ज्वार आया था और वह उन्मुक्त इस ज्वार में बह गयी थी. उसने मन-ही-मन एक छोटा-सा संसार रच डाला था. सुना था, पिताजी और माँ का परिचय विदेश में ही हुआ था, जब दोनों किसी रिसर्च के सिलसिले में वहाँ थे. पिताजी तो पहले चले आये, मगर माँ भी पिताजी के विशेष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आग्रह पर हमेशा के लिए भारत आ गयीं. माँ ने अपना रिसर्च पूरा भी नहीं किया और यहां आ कर पिताजी के साथ-साथ उन्होंने भी कालेज में नौकरी ले ली. दो वर्ष आगे यही बात सतीश से कहते हुए कितना गर्व का अनुभव किया था. उसने में सतीश ने कहा था—'तुम सोच सकती हो रीना, दोनों ने कितने-कितने सपने संजोये होंगे. जिस समय के दौर में हम दोनों पिछड़ रहे हैं, उसे उन्होंने कितने कम समय में और विश्वास के साथ साकार कर लिया था.'

'सती, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है. पिताजी और माँ ने जिस लाड़-प्यार में मुझे इतना बड़ा किया है, उसका मूल्य तो चुकाना ही है. इसीलिए सोचती हूँ कि कोर्स पूरा करके उसी रिसर्च में लग जाऊं, जिसे मैं ने अधूरा छोड़ दिया था.'

सतीश यह सुन कर चौंका था, उसने प्रश्न किया था, 'तो क्या तुम भी विदेश जाओगी ?'

'हो सका तो जाऊँगी, मगर सारा कुछ यहीं सेटल करूँगी. तुम घबड़ा गए?' रीना की आँखें चमक रही थीं. सतीश के चेहरे का रंग उड़ते देख कर उसने एक और मजाक किया था, 'तो तुम क्या सोचते हो कि वहीं से पार्टनर लेती आऊंगी?'

—सचमुच इन बातों के गुजरे हुए वर्ष भर हो गए. हठात् सब कुछ उलट-पलट गया. एक ज्वार की भाँति आ कर सपनों प्रवाह सारे सपनों की तहस-नहस कर गया. रीना की आँखों के सामने से मानों सम्बन्धों की कड़ियाँ टूटती गयीं. पिताजी और माँ में हमेशा किसी-न-किसी बात को ले कर झड़प होने लगी, इसका मूल कारण मीना दी थी, जो पिताजी के जीवन में आ कर अलग से जुड़ गयी. पिताजी जिस कालेज में थे, उसी की वह छात्रा थी. घण्टों घर में ही रह कर पढ़ती-लिखती रहती,

बच्चे का पैर

बच्चे के पैर को
अभी यह पता नहीं
कि वह पैर है.
वह उसे तितली
बना लेना चाहता है
या सेब,
पर आगे चल कर
पत्थर और घास
सड़कें-चढ़ाइयाँ
धरती के ऊबड़-खाबड़ रास्ते
उसे यह सिखाते हैं—
कि पैर उड़ नहीं सकते
—न ही शाख पर
गदराया फल हो सकता है.
तब बच्चे का पैर हार जाता है
युद्ध में गिर पड़ता है
कैदी हो जाता है
जूती में जीने के लिए
अभिशप्त हो जाता है.
—पाब्लो नेरूदा
अनु० कृष्ण सरल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकान्त कमरे में. वहाँ कोई नहीं जाता था, बस पिताजी और मीना ये दोनों किसी विषय को ले कर उलझे रहते, यहाँ तक कि पिताजी ठीक समय पर खाना लेना तक भूल जाते. अधिक रात हो जाने पर मीना दी अपने घर नहीं लौटती, वहीं दूसरे कमरे में सो जाती. उस रात पिताजी माँ के कमरे में ही सोते. बाकी दिन वह अपने स्टडी रूम में ही सोने की व्यवस्था कर लेते. उस रात पिताजी माँ के कमरे में थे, मीना दी अलग से दूसरे कमरे में रह गयी थी. रीना अपने कमरे में थी. तभी माँ के कमरे से पिताजी के जोर-जोर से बोलने की आवाज आने लगी थी. रात अधिक हो जाने के कारण चारों ओर पूरा सन्नाटा बाहर-भीतर छाया हुआ था. अतः पिताजी की आवाज स्पष्ट सुनायी पड़ रही थी, 'मैं नहीं जानता था कि तुम इतनी संकीर्ण दिमाग की हो ?'

'तो तुम क्या समझते हो कि मैं घर में रहते हुए आँख-कान मूंद कर रहूँ. क्या हो रहा है, यह मुझसे छिपा है ? यह सब अपने सामने होने नहीं दूँगी.' यह माँ की आवाज थी.

'आखिर तुम चाहती क्या हो ? मैं ही घर में न रहूँ. मीना ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?'

पिताजी की इस आवाज से रीना मानों चौंक पड़ी थी. वह अपने बिस्तरे पर करवट बदलते हुए थम गयी थी, पता नहीं, पिताजी की आवाज मीना दी के भी कान तक पहुँची थी या नहीं. वह सुबह ही उठ कर बिना पिताजी के बताये हुए चली गयी. सुबह उठ कर वह उसके कमरे तक आयी थी, रीना अखबार पढ़ रही थी, वह मीना दी को दरवाजे पर आया देख कर उठ खड़ी हुई थी. मीना ने उसके नजदीक आ कर कहा था, 'तुम्हारे पिताजी शायद अभी सो रहे होंगे. मैं जा रही हूँ, कहना कि वह कालेज में मिल लेंगे. अच्छा, कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है, मैं ही उनसे मिल लूँगी.'

और रीना अपलक नजरों से मीना दी का जाना देखती रही थी. उसके बाद पिताजी को जब यह पता चला तो बहुत नाराज हुए, उस दिन खाया-पीया भी नहीं. सवेरे ही घर से बाहर निकल गए उस रात वह वापस नहीं आये थे. मां मन-ही-मन बहुत व्यग्र थीं, मगर ऊपर से कुछ नहीं कहा था. पत्थर की तरह कठोर और चुप थीं. रीना ने चुपके से उठ कर मां के कमरे में झांका था, माँ उस रात ठीक से सो भी नहीं सकी थीं. रात भर चहलकदमी करते हुए और करवट लेने में ही बिता दिया था. बीच-बीच में पिताजी द्वारा लिखे गए आगे के पत्रों को काफी देर तक पढ़ती रही थीं. सुबह उठ कर रोज की तरह नहाया-धोया था, रसोईघर में खुद घुस कर पिताजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

के मन लायक खाना बनाया था और उस दिन पिताजी की प्रतीक्षा में कालेज भी नहीं गयी थी. दोपहर में पिताजी लौटे थे. चेहरे पर से हवाइयां उड़ रही थीं, चेहरा और उदास लग रहे थे. आते ही चुपचाप अपनी स्टडी रूम में आ गए थे. फिर बिना खाये-पीये शाम तक उसी में थे.

■■

रीना कालेज में सीधे घर आ गयी थी. उसकी इच्छा नहीं हुई कि वह शीला, मधु के साथ ही कोई पिक्चर चली जाए या रेखा के जन्म दिन पर उसके घर पर जा कर बर्थ-डे फंक्शन में शामिल हो जाए. वे सब साथ चलने के लिए कितना जिद कर रही थीं. मगर उसे यह सब बकवास लगा था और उसके सारे प्रस्ताव बेतुके बेमन से सुने भर थे और किया मन का था. बस पर चढ़ कर सीधे घर आ गयी थी तब तक मां या पिताजी कोई भी घर पर नहीं आये थे. वह बिना फ्रेश हुए ही सीधे अपने बेडरूम में आ गई थी. बाहर से गर्मी में झुलस कर आई थी, तब भी इच्छा नहीं हुई कि एयरकूलर चला ले या रेफ्रीजरेटर से निकाल कर ठंडा पानी ही पी ले. वह कटे वृक्ष की तरह बिस्तर पर आ पड़ी. थोड़ी देर बाद बिस्तर से माथा उठा कर शीशे के पार बाहर की तरफ देखा था, अब तक गर्मी से झुलस कर फुटपाथ पर का वह पेड़ अधमरा हो गया था. उसके छितराये हुए पत्ते सूख गए थे और डाली से लटके हुए की तरह लटक रहे थे. आसमान धुंधला और पीला लग रहा था. वह उठ कर ड्राइंग रूम में आ गई. उसने बुक-सेल्फ के ऊपर फ्रेम में रखे हुए पिताजी और मां की फोटो देखी कुछ देर तक खड़ी वह उन्हें देखती रही. यह फोटो बहुत पहले की थी, लगभग सत्तरह-अठारह वर्ष तो हो हो गए होंगे. यह शायद विदेश में खींची गयी फोटो थी. जब वे दोनों विदेश में ही थे. इन सत्तरह-अठारह वर्षों में कितनी फोटो, कितनी याददाश्त, सब के सब एलबम में बन्द हैं. मगर इन दोनों फोटो के आगे वे सब फीके लगते हैं.

रीना को एक क्षण के लिए लगा था, इन दोनों फोटो की बदौलत ही सत्तरह-अठारह वर्ष का इतना बड़ा समय गुजर गया, दोनों के चेहरों पर कितना-कितना उन्माद, सपना, सम्पर्कों के प्रति अज्ञात परस घहराता रहा है. मगर अब इनका मूल्य चुक गया लगता है, इनकी सारी याददाश्त धुंधली पड़ गयी है, बाहर-भीतर सब कुछ शून्य हो गया है. रीना विचलित हो उठी. वह घबड़ा कर टेबुल के सामने आ गयी. टेबुल पर पेपरवेट के नीचे दबी पिताजी की डायरी पर उसकी नजर पड़ी थी. उसने धीरे से डायरी उठा ली. बीच से किसी पन्ने पर लिखे हुए अक्षर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लहराने लगी.

—मीना दी के साथ पिताजी का सम्पर्क वासनात्मक नहीं था, मगर सम्मोह का था. उसको करीब पा कर पिताजी सारे कष्टों को भूल जाते थे. अन्दर-ही-अन्दर एक रचनात्मक अनुभूति उपजती थी और जो बाहर-भीतर को एक विचित्र स्फुरण से भर देती थी. पिताजी ने कितनी बार चाहा है कि परिवार में बढ़ती हुई अशान्ति की वजह मीना दी से सारे सम्पर्क तोड़ लें और अपने अन्दर ढहते हुए कगार की परवाह किये बिना पुनः अपनी पूर्व की जिंदगी में लौट आयें; नितान्त अकेला, निर्व्याज. मगर क्या अब लौटना उनका सम्भव था, क्या अब अपने को सम्पूर्ण समाप्त करके जीवित रखना सम्भव था ? वह मां की मानसिक पीड़ा को समझना चाहते थे,समय का इतना बड़ा अन्तराल. परिचय से ले कर इन स्थितियों तक. उस सम्मोह को धुंधला दिया था, लेकिन इसका दोषी क्या वही एक मात्र थे, मां नहीं थीं ? मां ने अपना अधिकार क्यों हावी हो जाने दिया ? अधिकार थोपने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता, सिवा शून्यता के. पिताजी और मां के बीच शून्य पैदा हो जाने का एकमात्र कारण यही था, एक भारी गैप. मीना दी तो केवल साधन मात्र थी, इस गैप को भरने के निमित्त, संयोग-वश इस नियति के साथ जुड़ गयी थी. मीना दी नहीं होती तो कोई और होती. मीना दी का इसमें कोई दोष नहीं था. पिताजी ने ही इसे स्वीकार लिया था, नियति के रूप में, नितान्त आवश्यक समझ कर नहीं.

सीढ़ियों पर किसी की पद्चाप सुनायी पड़ी. रीना ने डायरी रख दी फिर अलग हट कर दरवाजे के सामने आ गयी. वहाँ से सीढ़ी पर चढ़ कर ऊपर आने वाले को देखा जा सकता था. पिताजी ही थे, पीछे-पीछे मीना दी थी. रीना को एक क्षण के लिए लगा था, मीना दी जिस उदास चेहरे और धीरे-धीरे पग से सीढ़ियाँ चढ़ रही थीं, इससे पता चलता था कि पिताजी के आग्रह पर भले ही आयी हों, मगर बेमन से ही आयी थी. रीना अन्धेरे से हट कर अपने कमरे के पास आ गई. पिताजी की नजर उस पर पड़ते ही घबड़ा गई. पिताजी ने वहीं से पूछा,'माँ आयी नहीं ? तुम अकेली हो ?'

'हाँ, माँ अभी तक नहीं आयीं.' वह धीरे से अपने कमरे में आ गई. देखा था, मीना दी उजाले से आ कर अन्धेरे कमरे में ढुक रही थी. पिताजी अपने कमरे में कपड़े बदलने चले गए थे. मीना दी के कमरे में काफी देर तक कोई रोशनी नहीं हुई. बाहर-भीतर अन्धकार छा गया था. शाम डूब चुकी थी.

मीना दी उस रात नहीं रुकी. रात के नौ तक थी और जाते समय रीना से कहने भी आयी थी,'माँ से कहना, यह मेरा घर नहीं है, मैं हमेशा के लिए यहाँ से

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जा रही हूँ. याने पूरे हिन्दुस्तान से बाहर. यही बात माँ से मिल कर कहने के लिए आयी थी, जो उनसे नहीं कह पायी.' और मीना दी जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतर गईं. पिताजी मीना दी को बाहर तक छोड़ने गये थे. ऊपर तक आने में उन्हें काफी देर लगी थी. जब कि मीना दी की गाड़ी के गये हुए काफी देर हो चुकी थी. माँ उस रात नहीं आयीं.

■■

कालेज की सीढ़ियां चढ़ते हुए रीना सोच रही थी, आज वह सतीश को ले कर कहीं बैठेगी. उसे बहुत सारी बातें करनी है. शायद यह कुछ निर्णय ले सके. जिसके बारे में पिछले कई दिनों से परेशान थी. रीना कई-कई रात बेकार के सपने देख सोचने में बिताया था कि सतीश से वह यह कैसे कहेगी.मगर वह अपनी इस मानसिक अशांति के बीच उसको भी शामिल करके अपने गलत भविष्य का भागीदार नहीं बनायेगी.

वह कई दिनों से कालेज इसी परेशानी में नहीं आयी थी, आज यही सोच कर आयी थी कि सतीश से मिल कर आज वह इसका फैसला कर ही लेगी. सतीश सीढ़ियों पर से नीचे उतरते हुए मिल गया था. उसे देख कर ठिठक गया. वह ऊपर नहीं जा सकी.

थोड़ी देर में दोनों सामने के पार्क के बेंच पर जा बैठे थे. पार्क में और भी कई लोग छितराये हुए बैठे थे. नजदीक में कोई नहीं था. फिर दोनों बेंच से उठ कर पेड़ की छांव में आ गए. मगर दोनों एक दूसरे से कुछ नहीं बोल रहे थे, सिवा कुछ औपचारिक बातों के.

रीना को लगा था, वह जो कहना चाहती थी, शायद कह नहीं पायेगी. वह कहां से बातें शुरू करे. तभी सतीश ने रीना का हाथ थाम कर चूमना चाहा था. रीना ने कोई एतराज नहीं किया. वह चुप बनी बैठी रही. पता नहीं, सतीश ने इसका क्या अर्थ लगाया होगा. उसके चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया नहीं थी.

अन्त में रीना को कुछ नहीं सूझ पड़ा तो कहा,'तुम मुझे चाहते हो न सतीश?'

'हां, मगर क्यों, आज ऐसा प्रश्न क्यों कर रही हो?'

'मैं भी तुम्हें कम नहीं चाहती,मगर इतने से क्या होता है? मैं चाहती हूं कि तुम मुझे सम्पूर्ण रूप से ग्रहण करो. यह अधूरापन मन को सालता है.'

'क्या मतलब, तो तुम कहना चाहती हो कि वासना ही इसकी अन्तिम परिणति है? मानसिक और आत्मिक रूप से जो हम दोनों बंधे हैं, वही पर्याप्त नहीं है?'

नहीं सतीश, यही तो मैं कहने आयी हूं. दैहिक सम्पर्क के बाद भी कुछ बाकी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहता है या इसके अलावा भी कुछ रह जाता है, इसमें मेरा विश्वास नहीं है.'

'तुम कहना क्या चाहती हो रीना ? तो क्या विवाह बन्धन में बधने के पहले ही हम दोनों अपनी वासना शान्त कर लें ?'

'हां सतीश, इसी में हम दोनों सुखी रह पायेंगे शायद, मगर इतना जान लो कि हम दोनों विवाह बन्धन में कभी नहीं बधेंगे. जब तुम्हें मेरी आवश्यकता पड़ेगी, मैं बुलाते ही चली आऊंगी, मगर हमेशा के लिए कभी नहीं.'

'ऐसा क्यों रीता, तुमने ऐसा निर्णय क्यों लिया, तुम बता नहीं सकती ? ऐसे विचार तो तुम्हारे कभी नहीं थे. तुम्हीं तो विवाह के बन्धन को पुरुष और नारी के लिए पवित्र बन्धन मानती थी.'

'हाँ, कभी मानती थी, आज नहीं. यहां मैं कैफीयत देने नहीं आयी हूँ. अब देर न करो. कहो, तुम्हारे साथ मैं कहां चलूं ?'

सतीश तहप्रभ-सा रह गया. उसे सूझ नहीं पड़ा, वह क्या करे. तो क्या रीना को हमेशा के लिए ठुकराये, या जैसा कहती है, वैसा करे. अन्त में दोनों ऐसी जगह आ गए, जहां कोई नहीं था. दोनों एक दूसरे की धड़कन सुन सकते थे. अन्धेरे में एक दूसरे को छू सकते थे. चारों तरफ से दीवार थी, ऊपर छत. एक पूरी प्रक्रिया से गुजरने के बाद रीना उस अन्धेरे से निकल कर अकेली जब अपने रास्ते आगे बढ़ी तो उसे लगा कि अब तक उसका कोई घर नहीं था ■

—१६ ए, श्यामानन्द रोड,
कलकत्ता-२५

तीन बहनें (कुर्दिस्तानी कहानी : ले०ग्रीगुर माकुल्स)

सुबह मां काम पर जाने की तैयारी कर रही थी.

'लड़कियों,' उन्होंने बेटियों से कहा, 'कमरों की सफाई करो ?'

'कल मैंने कमरों की सफाई की थी' सबसे बड़ी ने कहा. वह शीशे के सामने खड़ी बाल सवार रही थी.

'मैं थोड़ी देर में सफाई कर दूँगी.' बीच वाली ने कहा.

सबसे छोटी बेटी चुप रही. उसने पूरा घर बुहारा और फिर खाना बनाया.

शाम को माँ घर लौटी तो तीन सेब लेती आई.

'माँ सेब लाई हैं.' बहनों ने शोर मचाया और उनका स्वागत करने दौड़ीं.

'तनिक सांस लो' माँ ने बड़ी बेटी से कहा, 'तुमने अपने हिस्से का सेब कल खाया था और फिर बीच वाली बेटी से बोलीं, 'तुम अपना सेब बाद में खाना.'

इसके बाद उन्होंने सबसे छोटी बेटी को बुलाया—'मेरे पास आ' रानी बिटिया, कल तुमने तीनों के हिस्से का काम किया है न, इसलिए ये तीनों सेब तुम्हारे ही हैं.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शंकर पुंणतांबेकर

चीख

उस दिन नहा-धो कर जब मैं ऊपर आया तो राधाकृष्ण की 'रिलीजन एण्ड कल्चर' ले आरामकुर्सी में पड़ गया. इतवार की छुट्टी थी. अतः सोचा था इसे आज पूरी कर के रहूंगा.

पुस्तक मैंने हाथ में ली ही थी कि अनजाने ही मेरी दृष्टि खिड़की में से बाहर दौड़ गई और सड़क के दूसरी ओर वाले मकान की गैलरी में जा लगी जो, मेरे कमरे के ठीक सामने थी. गैलरी सूनी थी जैसी कि वह हमेशा रहती थी. लेकिन वह ज्योंही और आगे बढ़ी, मुझे आश्चर्य हुआ यह देख कर कि गैलरी में खुलने वाला कमरे का दरवाजा बन्द है. अरे, दरवाजा बन्द क्यों है आज ? यह तो रात में भी कभी बन्द नहीं होता. हाँ, पहले वाले किरायेदार जरूर इसे बन्द कर लिया करते थे जब भी मन में आता था. लेकिन जब से ये नये लोग आए हैं, यह हमेशा ही खुला रहता है.

रहे बन्द. मुझे इससे क्या ! यह सोच मैंने 'रिलीजन एण्ड कल्चर' की ओर ध्यान दिया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लेकिन मेरा ध्यान पढ़ने की ओर नहीं लग सका. दस-पन्द्रह मिनट योंही निकल गए. चार-छः पृष्ठ जरूर पढ़ डाले. लेकिन मुझे नहीं मालूम मैंने क्या पढ़ा.

दृष्टि दरवाजे की ओर फिर जा पड़ी. वह अभी भी बन्द था.

पिछले कोई दो महीनों से मेरी दृष्टि का उस सामने वाले कमरे से एक अज्ञात नाता-सा जुड़ गया था. अपने कमरे में रहते वह किसी भी समय वहाँ पहुँच जाती थी. यह बात नहीं कि मैं जो कुछ वहाँ देखता था उससे मुझे कोई सुख मिलता था. बड़े कष्ट ही पहुँचता था. किन्तु फिर भी उधर देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता था.

जो नये किरायेदार उस मकान में रहने आए थे उनके बारे में मुझे पहले रामदीन ने बताया था. रामदीन मेरा नौकर था.

—बाबूजी जानते हो सामने वाले मकान में किरायेदार आ गए हैं ?

—लगता तो ऐसा ही है. कौन आया है ?

—एक किस्मत की मारी औरत है बिचारी.

—किस्मत की मारी, क्यों ?

—उसके मर्द को फालिज की बीमारी है.

—अरे अरे ! मेरे मुँह से एकदम निकल गया.

—उसी का इलाज कराने आई है. किसी छोटी जगह की है. वहाँ इलाज नहीं हो सका तो यहाँ ले आयी है.

—अरे, तुम्हें तो पूरी जानकारी है उसकी.

—गिरधारीलाल जी के नौकर बदरी ने बताया ये सब.

गिरधारीलाल उस मकान के मालिक थे और वहीं किसी हिस्से में रहते थे.

और उसी दिन शाम को अचानक मैंने उस औरत को गैलरी में देखा था. रूपवती तो वह नहीं कही जा सकती थी. हाँ, उसकी चढ़ती उम्र, पुष्ट देह और बड़ी-बड़ी आँखों के कारण एक ऐसा आकर्षण उसमें जरूर था जो देखने वालों की आँखों को कुछ पकड़े रख सकता था.

तभी मुझे रामदीन की याद आयी...एक किस्मत की मारी औरत है बिचारी. और इसके साथ ही मेरा दिल एकदम करुणा से भर गया. अरे अरे, इतनी छोटी उम्र की इस औरत पर ऐसी मुसीबत आ पड़ी ! क्या इसका और कोई नहीं है, इस मुसीबत में सहारे के लिए ? देखो तो, इसकी बड़ी-बड़ी आँखों में कितनी गहरी उदासी भरी हुई है ! चेहरे पर तो जैसे पीलापन पुत गया है....क्यों न हो यह, उदासी और पीलापन ! पति की जिंदगी और मौत से जो लड़ रही है यह !

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह नीचे सड़क की ओर देखती हुयी खड़ी थी. बिलकुल तटस्थ और निरपेक्ष भाव से. लगता था उसकी शून्य-सी नज़रों में सब कुछ बन कर प्रतिबिम्बित हो रहा था.

इसके बाद शीघ्र ही मैंने उसके पति को भी देखा था. शायद इसके दूसरे दिन की ही बात है. मैं भोजन करके कमरे में आया और अपनी डायरी में किसी पढ़ी हुयी पुस्तक के अंश उद्धृत करने के लिए टेबुल पर जा बैठा. लिखते-लिखते सहज ही मेरी दृष्टि खिड़की से बाहर की ओर गयी और गैलरी के खुले दरवाजे में से सीधी कमरे में जा पहुँची.

मेरे दृष्टिपथ में ही कमरे के दूसरी ओर वाली दीवार से लगा हुआ एक पलंग था. उसी पर पड़ा हुआ वह मुझे दिख गया. कमरे में रोशनी तेज नहीं थी, पर इतनी भी नहीं. वह एक दुबला-पतला युवक था. चेहरा उसका पिचका हुआ था और उस पर कुछ-कुछ दाढ़ी बढ़ी हुई थी.

करुणा इसे देख कर भी मुझे में जागी. उफ, यह क्या हालत हो गयी है इसकी. कैसा जर्जर बन गया है. आँखें मैं देख नहीं सका था. उनकी जगह दो बड़े-बड़े गड्ढे मात्र दिखे थे, जिनसे स्पष्ट था वे बिलकुल धँस गयी थीं. जरूर वे एक दिन चमक रही होंगी.बढ़ी हुई दाढ़ी के नीचे का चेहरा भी एक अच्छी रौनक लिये हुए रहा होगा.

इसके बाद तो जैसे मर्द औरत दोनों ही मेरी दृष्टि के परिचित बन गए थे. इतना कि दिन में कभी भी बीच-बीच में उनसे मिलना उसका क्रम-सा हो गया था, चाहे फुरसत में होऊँ या किसी काम में.

सुबह मैं प्रायः देखता था, औरत ने मर्द को तकिये के सहारे जैसे-तैसे बैठाया है. वह उसका मुंह धो देती है और फिर पास में बैठ कर चाय पिलाती है.कभी देखता—गीले तौलिये से उसका बदन साफ कर रही है और दूसरे साफ कपड़े पहना रही है. कभी दवा पिलाते पाता था. सब कुछ जैसे मौन में ही चलता रहता था. औरत कम वाणी का कम ही प्रयोग करती थी और मर्द तो शायद अपनी वाणी ही खो चुका था. करुणरस भरी एक मूक फिल्म के दृश्यों जैसा लगता था मुझे वह सब.

सुबह और रात को मैंने कई बार औरत को खाना खिलाते हुए भी देखा था.थाली पास में ले एक-एक कौर उसके मुंह में डालती.जैसे किसी बच्चे को ही खिला रही है.

औरत की सेवा में मैंने नित्य ही तन्मयता का भाव पाया था.

दो-तीन दिन में डाक्टर देखने को आ जाता था.जो डाक्टर आता था उसे मैं जानता था. शहर का वह एक नामी डाक्टर था.

पहली बार डाक्टर को देख कर मेरे दिमाग में आया था—मरीज को इतने अच्छे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्पताल में ही क्यों नहीं रखा.ऐसे मरीजों का इलाज तो वहीं अच्छा होता है. किन्तु दूसरे ही क्षण यह भी बात दिमाग में आयी—हो सकता है इसमें उस औरत को सुविधा न हो या उसके पास इतने पैसे न हों. आजकल निजी दवाखानों में मरीज को रखना कोई हँसी-खेल नहीं.

औरत इंजक्शन देना जानती थी. शायद सीख लिया था. कई बार मैंने उसे देते हुए देखा था.

लेकिन आज यह दरवाजा बन्द क्यों है ? दोनों रात ही रात मकान छोड़ कर चले कहीं गए ? कहीं मर्द की हालत अचानक नाजुक तो नहीं हो गयी ? तब तो बेचारी औरत अन्दर बैठी हुयी रो रही होगी.

तभी रामदीन चाय ले आया.

किताब एक तरफ रख चाय पीते हुए, मैंने सोचा, रामदीन से पूछूं आज सामने दरवाजा बन्द क्यों है.उसे जरूर मालूम होगा.उन दोनों के बारे में उसने मुझे और भी कई बातें बतलायी थीं—औरत पढ़ी-लिखी है. स्कूल में नौकरी करती है. मर्द की भी कहीं अच्छी नौकरी थी....पहले अपनी ही जगह पर काफी इलाज कराता था...डाक्टर ने उसे कहा है तुम घबराओ नहीं, तुम्हारा मर्द जरूर अच्छा हो जाएगा...दवादारू पर पानी की तरह खर्च हो रहे हैं....यहाँ खूब कोशिश कर-करा के पहले कुछ दिन सरकारी अस्पताल में भी रखा था. लेकिन आम मरीजों में डाक्टर लोग कहाँ दिल-चस्पी लेते हैं. वहाँ से निराश हो कर यह मकान खोज लिया और निजी डाक्टर का इलाज शुरू कर दिया....बिचारी जब तक पास में पैसे हैं, इलाज कराती रहेगी. जिस दिन खत्म हो जाएंगे चली जाएगी, अपनी जगह वापस—मर्द की हालत सुधरे या न सुधरे.

—मेज पर किताबें बिखरी हैं. इन्हें ठीक से लगा दूँ ?

मैं अपना सवाल करूं इसके पहले ही रामदीन बोल उठा

—अरे, रहने दो. वे तो फिर वैसी ही बिखर जाएंगी.

लेकिन वह नहीं माना. बेहद तरतीब-पसन्द था वह. किताबें ढंग से रखने लगा.

—कितनी मोटी-मोटी किताबें पढ़ते हैं आप बाबूजी. बीबीजी ठीक ही कहती हैं, हैं तो अपना काम भला, किताबें भली.

—और क्या-क्या कहती हैं वह मेरे बारे में ? मैंने जरा मुसकराते हुए ही कहा.

वह भी मुसकराया और बोला—वाह बाबूजी, मैं कोई चुगलखोर थोड़े ही हूँ. वे तो बड़ी भली हैं.भली औरत अपने मर्द के बारे में हमेशा अच्छी बातें करती है.

—फिर मर्द कितना ही बुरा क्यों न हो, नहीं ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—मेरी समझ में यह नहीं आता बाबूजी, आखिर इन किताबों से क्या मिल जाता है जो दिनरात इन्हें पढ़ते रहते हो.

—रोज सुबह तुम नदी जाते हो नहाने, उससे तुम्हें क्या मिल जाता है!

—वाह, तैरने जैसा मजा कोई हो सकता है ?

—तुम पानी की नदी में नहाते हो. मैं ज्ञान की नदी में नहाता हूँ. जो मजा तुम्हें उसमें मिलता है, वही मुझे इसमें मिलता है.

तभी श्रीमतीजी ने उसे आवाज दी और वह नीचे भागा.

दिनचर्या

■

सर्द रात में
भीतर लिहाफ के
जमा हुआ इरादा—
सुबह की गरमाती धूप से
पिघलना शुरू होता है,
दोपहर तक
द्रवित हो कर,
शाम को
नये रूप में
मूर्तिमान होता
प्रतीत होता है,
एक और दिन व्यतीत होता है !

—अशोक गुजराती

मैं सोचने लगा—भला यह नाममात्र को पढ़ा आदमी क्या जाने ज्ञानगंगा के आनन्द को ! फिर ज्ञानगंगा से सिर्फ आनन्द ही नहीं मिलता है. उससे बुद्धिपरिपक्व होती है, विवेकशक्ति का विकास होता है और और विचारों की व्यापकता बढ़ जाती है. ऐसे व्यक्ति के लक्ष्य अपने तक ही सीमित नहीं रहते. फिर, वह बुराइयों का डट कर प्रतिकार कर सकता है. संक्षेप में वह एक ऐसा आदर्श नागरिक बन जाता है जिसकी आज देश को दरकार है.

सामने दरवाजा अभी भी नहीं खुला था. अब मैंने निश्चय किया, उधर ध्यान ही नहीं दूँगा. मैंने पुस्तक फिर उठा ली.

तभी रामदीन पूछने आ गया—बीबी जी पूछती हैं, साग क्या बनेगा ?

—अरे साग मुझे थोड़े ही बनाना है! हाँ, यह तो बताओ रामदीन, आज वह दरवाजा कैसे बन्द है ?

और सचमुच ही उसे मालूम था. उसने बतलाया दो-चार दिन से वह औरत बहुत परेशान थी, पैसों के कारण. जब पैसे खत्म होने को आए तो उसने घर लौट जाने के बजाए फिर से सरकारी अस्पताल में जाने की बात सोची और दुबारा दाखिले के लिए कोशिश भी की. लेकिन दाखिला मिला नहीं. अब वह पति के भाइयों के पास गयी है मदद माँगने. खुद उसकी रिश्तेदारी में तो ऐसा कोई नहीं है जो मदद कर सके. कहती थी एक-दो जेठ अच्छे पैसे वाले हैं. चाहें तो मदद कर सकते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—अरे, तो क्या मर्द को अकेला ही छोड़ गयी है ?

—नहीं. बदरी से कह गयी है,देखभाल के लिए. दो-तीन दिन में ही लौट आएगी.

मुझे यह सब सुन कर अच्छा नहीं लगा.

—हाँ, तो क्या साग बनेगा आज ? बीबीजी ने पूछा है.

—अरे, कह दो, भिंडी छोड़ कर कोई भी बना लो.

रामदीन चला गया।

मैं बहुत कुछ चाह कर भी पुस्तक नहीं पढ़ सका. औरत के बारे में ही सोचता रहा. क्या उसे रिश्तेदारों के यहाँ से पैसा मिल जाएगा ? और न मिल सका तो ? यहाँ से चली जाएगी, और क्या ? आखिर और उपाय ही क्या है ? पति के भाग्य में शायद यही बदा है कि जिंदगी भर वह ऐसा ही बना रहे मूक, लंगड़ालूला और जर्जर.

तभी मुझे याद आया.कल सुबह मैंने औरत की आँखों में आँसू देखे थे.उस कमरे से लगा एक और कमरा था. उसका भी इसी कमरे की तरह गैलरी के लिए दरवाजा था जो प्रायः बन्द रहता था. कल वह खुला था और उसी में बैठी हुयी वह आँसू बहा रही थी. मैंने उस पर दुख और विषाद की छाया हर बार देखी थी, लेकिन आँखों में आँसू कभी नहीं. अपने दुखदर्द को वह अन्दर-ही-अन्दर चुपचाप पीती हुयी-सी लगती थी. उसे आँसू कभी नहीं बनने दिया था.

वे आँसू देख कर मैंने सोचा था—आदमी के भुगतने की भी एक सीमा होती है. फिर वह तो एक औरत है...एक असहाय औरत !

उसके आँसू बहाने का अर्थ आज समझ में आया. अपनी आर्थिक विपन्नता के कारण ही वह रो उठी होगी.

फिर यह भी याद आया. मर्द को देख कर डाक्टर कुछ देर पहले ही गया था.जाने से पहले उसकी औरत से कुछ बात हुयी थी, उसी बगल के कमरे में. मैंने साफ-साफ देखा था. मैं उस समय खिड़की में खड़ा था.

जरूर डाक्टर के पैसे चढ़ गए होंगे. उसने माँग की होगी. तभी तो उस पर रोने की यह नौबत आई होगी.

किन्तु डाक्टर से बात करते हुए अचानक उसकी देह काँपने क्यों लगी थी ? शायद वह चिल्ला भी पड़ी थी,दबी आवाज़ में. फिर देखते-देखते आँखें लाल हो उठी थीं जैसी क्रोध में हो जाती हैं.

पैसे के अभाव में तो आदमी दीन बनता है. किसी से इस तरह पेश नहीं आता. कम-से-कम ऐसे व्यक्ति से जिस पर हम किसी बात के लिए निर्भर हों.

शायद डाक्टर ने धमकी दी हो. मैं इलाज बन्द कर दूँगा.और औरत ने धमकी को

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न माना हो और क्रोध में आ गयी हो.

वह पूरा दिन मेरा ऐसे ही बीत गया.

सामने का दृश्य मुझे फिर दिखाई देने लगा.

औरत तीन दिन बाद ही आ गयी थी. डाक्टर फिर आने लगा था.

मैंने सन्तोष की साँस ली थी. तो इसकी पैसे की समस्या हल हो गयी. क्यों न होती ? आखिर जिनके पास याचना करने गयी थी मर्द उन्हीं के परिवार का, उन्हीं के खून का तो है !

वैसे मैं डर भी गया था. क्योंकि लौटने के बाद औरत को दो दिन तक जिस हालत में देखा था उससे मुझे लगा था वह निराश हो कर लौटी है. दरवाजे के पास खटिया लगा उस पर पड़ी रही थी और रह-रह कर रोती रही थी तकिये में अपना मुंह छिपाए हुए.

लेकिन तीसरे दिन से मैंने ऐसी कोई बात नहीं देखी. उलटे उसका चेहरा किसी निश्चय की आभा से दमक उठा था.

पहले डाक्टर हफ्ते में दो-तीन दिन ही आता था. अब रोज आने लगा था. कभी-कभी रात को भी आता.

अब मैं सामने कम ही ध्यान देता था.

लेकिन एक रात मैंने जो दृश्य देखा, वह मेरे लिए एकदम नया और अजीब था. यह फिर से इलाज शुरू होने के कोई सात-आठ दिन के बाद की बात है.

हमेशा की तरह औरत ने मर्द को सहारा दे कर बैठाया है. औरत के हाथ में दवा का गिलास वह उसके मुंह के पास ले जाती है....लेकिन आज मर्द दवा से मुंह फेर लेता है. औरत उसे समझाती हुयी लगती है. फिर भी वह नहीं मानता है. जब औरत जबरदस्ती करती-सी लगती है तो वह अपने अच्छे वाले हाथ से गिलास दूर करने की कोशिश करता है.

देख कर मैंने सोचा. मर्द बेचारा दवा ले-ले कर ऊब चुका है. शायद इस तरह की परावलंबित लूली जिंदगी से मर जाना ही बेहतर समझता है.

किन्तु औरत उसके विरोध की परवाह नहीं करती. उसे दवा पिला ही देती है. दवा पिलाने के बाद वह उसे पूर्ववत सुला देती है और नित्य की तरह उसके बालों पर हाथ फिराती है. पर मर्द उसके हाथ को एकदम अलग कर देता है. कुछ इस ढंग से कि उसके वाणी होती तो कहता—कोई जरूरत नहीं है. हाथ फिराने की. मेरे पास से दूर हट जाओ तुम.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्या बात है? मर्द औरत से इस तरह नाराज क्यों है? क्या उसके हाथों कोई गलती हो गयी है?

औरत पलंग पर से उठ जाती है और देहरी में आ कर रोने लगती है.

वास्तव में इन लोगों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं था. न उनके रोने से, न हँसने से मुझे अपने काम में लग जाना चाहिए था. किन्तु नहीं, परायों का दुख हमारे दिल को झकझोर देता है.

उस दृश्य ने मेरे दिल को इसीलिए झकझोर दिया. अपने काम की ओर ध्यान न देते हुए सोचने लगा—क्या वास्तव में मर्द इतना ऊब गया है कि अब मर ही जाना चाहता है? इस जर्जर अवस्था में उसे अब अपनी औरत से घृणा हो गई है?

किन्तु उस रात जब मैं पलंग पर पड़ा, मेरा दिमाग कुछ और ही तरह से सोचने लगा.ऐसा तो नहीं कि वह डाक्टर...आजकल वह रात को भी तो आता है. सिर्फ आता नहीं उस दूसरे कमरे में कितनी ही देर तक बैठा रहता है औरत के साथ. और मर्द को यही न भाता हो.

हो सकता है डाक्टर ने अब इसी सूरत पर इलाज शुरू किया हो.

अपने रिश्तेदारों से पैसे-वैसे औरत को मिले नहीं हैं. नहीं तो लौटने पर दो दिन रोती हुयी क्यों पड़ी रही? कौन आजकल किसकी मदद करता है? सब अपनी-अपनी देखते हैं.

डाक्टर पर पहले ही पैसे चढ़ गए होंगे और उसके बदले में उसने जरूर घृणित प्रस्ताव रखा होगा. शायद उसी दिन जिस दिन मैंने डाक्टर के सामने औरत की आँखें लाल होती देखी थीं. उसकी देह काँप उठी थी और डाक्टर के चले जाने के बाद वह बड़ी देर तक आँसू बहाती रही थी.

इलाज करने वालों के पेशे के लिए यह कितनी कलंक की बात है? मुफ्त इलाज न करता वह, किन्तु इस तरह तो नहीं. फिर जिसे आदमी कहते है उसमें कुछ दया-परोपकार के भाव भी तो होते हैं!

लेकिन ये सब तो मेरी दिमागी बातें हैं. मुझ जैसे व्यक्ति को निराधार ऐसी बातें सोचनी भी नहीं चाहिए. हो सकता है मर्द का गुस्सा किसी और कारण से हो.

किन्तु मेरा सन्देह गलत नहीं निकला. दूसरे ही दिन उसकी सत्यता सिद्ध हो गयी. और....

वही रात का समय था. खाना खा कर मैं कमरे में लौटा ही था कि आदत के मुताबिक मेरी दृष्टि सामने जा पहुँची.

मैंने मर्द को बुरी तरह से छटपटाते हुए देखा. अपने स्वस्थ हाथ और पैर को वह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पलंग पर इस तरह चला रहा था जैसे उठने की कोशिश कर रहा हो. लगता था चिल्लाने की कोशिश भी कर रहा हो. लेकिन वह चिल्ला नहीं पा रहा था.

क्या वह औरत को बुला रहा है ? जरूर उसे कोई कष्ट है. औरत कहाँ चली गई

मैं खिड़की के पास गया.

अब मेरी दृष्टि बगल वाले कमरे की ओर गई. दरवाजा बन्द था. किन्तु उस वाली खिड़की पर मैंने जो कुछ देखा बस उसी ने मेरा सन्देह दूर कर दिया.

कमरे में धीमी रोशनी थी. खिड़की पर परदा था. किन्तु मेरे लिए परदा परदा न रह सका. क्योंकि जो कुछ परदे में रहना चाहिए वही मुझे उसने दिखा दिया. औरत और डाक्टर की आलिंगनबद्ध परछाई वह मुझे दिखा रहा था. दोनों अवश्य ही रहे बेखबर थे.

मुझे अनुमान लगाते देर न लगी कि इधर मर्द इसीलिए छटपटा रहा है. वह उन्हें देख न पा रहा हो. किन्तु उसका शरीर ही तो फाजिलग्रस्त था...चेतना तो नहीं.

मुझ से देखा नहीं गया. अन्दर-ही-अन्दर बौखलाहट भर गयी, बिलकुल उसी तरह जैसे कि सुबह जो अखबार के एक कार्टून को देख कर भर गयी थी. उसमें एक नौजवान औरत को अंक में लिए बैठा था. औरत की साड़ी पर लिखा था हुकूमत. उस कोने में जनता का प्रतीक एक जर्जर आदमी पड़ा हुआ था और वह चिल्ला रहा था—वह मेरी है....वह मेरी है.

उस समय जिस तरह मेरी आँखें लाल-पीली हो गयी थीं, भौं तन गयी थी और हाथ मुठ्ठी बँध गयी थी, वैसा ही इस समय हुआ. लगा यहीं से चीख कर कहूँ—डाक्टर, डाक्टर यह तुम क्या कर रहे हो ? इलाज के नाम पर यह क्या बेहयाई है ? छोड़ दो उस औरत को....

लेकिन...लेकिन मैं चीख नहीं सका. ज़रा भी नहीं. लगा जैसे मुझ में चीखने की शक्ति नहीं है. और एक विचित्र अनुभूति चाट गयी मुझे जो मेरा रोम-रोम झंकृत करती हुयी कहती गयी—तुम्हारी चेतना का अंग तो काफी प्रबल है. लेकिन उससे जुड़े जो विविध ठोस अंग हैं जो आदमी को खड़ा रखते हैं, चलाते-बढ़ाते हैं, वे निपट दुर्बल हैं, बेहद कमजोर हैं—बिलकुल उस मर्द की तरह... ■■

—१३, जिला रोड
जलगांव (महाराष्ट्र)

दक्षिणी नाइजीरिया में इबिबियस जाति के लोग जुड़वा बच्चे पैदा हो जाने पर अपने भाग्य को बहुत कोसते हैं. उनका ऐसा विश्वास है कि उन दोनों बच्चों में से कोई-सा एक बच्चा शैतान होता है. उनमें से कौन-सा बच्चा शैतान है, यह निर्णय न कर सकने पर वे दोनों को ही मार देते हैं और उनकी माता की शुद्धि के लिए देश-निकाला दे देते हैं.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

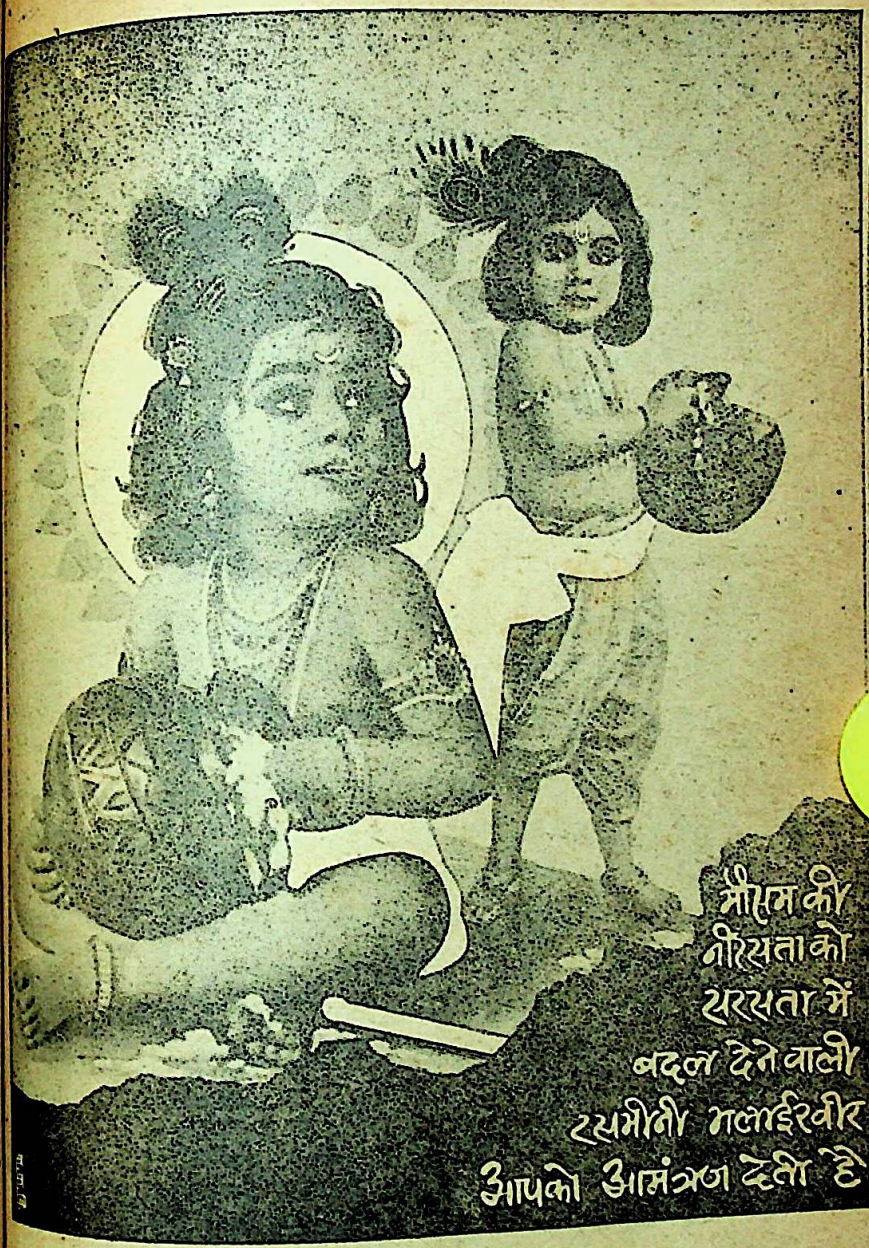

गोपाल स्वीट हाउस

रेफ्रिजरेटर शोकेस में रखी भारतीय मिठाइयाँ व नमकीन

लहुराबीर, वाराणसी. फोन: ६५८१५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उमेश कुमार सिंह

तीसरा आदमी

संध्या की माँ को सिनेमाघर में छोड़ कर वह उसके घर लौट रहा था. रिक्शे पर वह गुदगुदी और सिहरन में लिपटा बैठा था. उसे मौसम खुशनुमा लग रहा था.

एकाएक ही वह मुसकरा उठा था, कितनी चालाकी से उसने कल प्रोग्राम रखा था उसकी माँ के सामने पिक्चर का और आज एकान्त उसकी मुट्ठी में कैद होगा. काफी खुले वातावरण में वह संध्या से मिल सकेगा.

अहाता पार कर वह जीने चढ़ने लगा. कमरे के चौखट से जकड़ा वह देख रहा था, फर्श पर फैली सन्ध्या स्टोव पर खाना बना रही थी. स्टोव के सू-सू की आवाज़ और घनघनाहट कमरे में छा गई थी. स्टोव की काँपती लौ के गिर्द उसने संध्या का चेहरा पढ़ना चाहा उसका चेहरा पुछे हुये स्लेट की तरह था. उसे झुँझलाहट हो गई. सोचने लगा, आज कोई बहाना नहीं चल सकता. वह मुसकरा रहा था.

'बैठो न.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सन्ध्या की निगाहों ने हरकत की. वह बैठ गया.

टेरेस पर सन्ध्या के बच्चों के साथ मुहल्ले के बच्चे इकट्ठे हो गये थे. वह झुंझला रहा था बच्चों पर. वह जल्द-से-जल्द सन्ध्या को बिस्तर पर खींच ले जाने को बेताब हो रहा था.

उसने सन्ध्या को इशारा किया.

'बच्चे हैं.' इशारे से ही उत्तर आया. उसकी झुंझलाहट और बढ़ गई.

उसने दीवार में पीठ टिका ली थी. बैठा वह अखबारों के इश्तहार घूर रहा था. कभी-कभी उसकी नज़रें खिड़की में उलझ जाती थीं. देखते-देखते खिड़की में फँसा आकाश अन्धेरे में डूब गया. अब सामने वाले मकान का टेरेस नज़र आ रहा था जिसे पीली बीमार-सी रोशनी भींगो रही थी.

उस मकान का वातावरण उसे मुर्दा लग रहा था. वह फिल्मों के इश्तहार घूरने लगा.

नीचे गली से बच्चों का शोर ऊपर उठ रहा था. सन्ध्या की निगाह कई दफा उससे उलझ गई थी. हर बार उसने उसे बगल के कमरे में चलने का इशारा किया था. वह बच्चों की उपस्थिति का अहसास उसे करा दिया करती थी.

पड़ोस के बच्चे चले गये थे. सन्ध्या के दोनों बच्चे उसके पास ही फर्श पर बैठ गये. वह उदास होता जा रहा था.

उसका बच्चा एक लेसन ले कर उसके पास आया. वह मौन बना बैठा रहा. बच्चे ने फिर जिद की पढ़ा देने की तो उसने बच्चे को झिड़क दिया.

उसने देखा. सन्ध्या के होंठ फैल गये थे.

पड़ोस से बच्चों की आवाजों के जंगल फैलते जा रहे थे.

उसने सन्ध्या को इशारा किया कि बच्चों को नीचे चले जाने को कहे.

'बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ेगा.' सन्ध्या ने कहा.

वह तिलमिला कर रह गया.

उसे एकान्त क्षणों में सन्ध्या की चढ़ती-उतरती साँसों की यादें आने लगी थी. साँसें जिनकी गर्माहट उसने कितनी ही बार महसूस की थी.

'अरे !'

कमरे की चौखट से एक आकृति झांकी और परछाई चौखटे में ही कैद हो गई.

'तुम...'

सन्ध्या मुसकराहट के सैलाब में डूब गई थी. और वही सैलाब उसे टेरेस तक बहा लाया.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आगन्तुक का उसे देख कर काँप जाना, उसे अन्दर तक झकझोर गया. सन्ध्या की मुसकराहट के सैलाब में उसे अपना किनारा छूटता नज़र आया.

वह अकेला छोड़ दिया गया था—लहरों पर बहता हुआ.

फर्श पर बच्चे स्लेट फैलाये बैठे थे. उसकी इच्छा बगल के कमरे में जाने की हो रही थी लेकिन वह इतना कमजोर होता जा रहा था कि दीवार से पीठ टिकाये बैठा रहा. अखबार की लकीरें धुंधली लग रही थीं उसे. सामने के मकान का टेरेस और उदास हो गया था.

बच्चे उठ कर बगल के कमरे में चले गये. उसने अपना सारा ध्यान उसी कमरे की ओर लगा रखा था. तो वह अपने को रिसिवर बना पा रहा था टेलिफोन का लेकिन उसका माउथ-पीस चुप्पी से भरा था. बगल के कमरे के दूसरे माउथ-पीस पर कई आवाजे चढ़-उतर रही थीं. बच्चों को डांट कर नीचे भगा दिया था. 'मिठाई, मिठाई' चिल्लाते वे सीढ़ियां उतर गये थे.

एक चर्र-चर्राहट की आवाज़ को सुन कर बगल के कमरे को आहिस्ता से बंद किया जाना वह महसूस कर रहा था. उसकी इच्छा उठ जाने को हो रही थी लेकिन उसे लग रहा था कि उसकी पीठ दीवार से जकड़ दी गई है. वह अपने को पसीने से भींगता पा रहा था.

एक तनाव की यात्रा अब खत्म हो चुकी थी. वह एक दूसरे तनाव में दौड़ रहा था.

वह सोच रहा था. काश, पीठ से सटी दीवार कांच की होती. बगल के कमरे की फुस-फुसाहट अब दब गई थी. एक चुप्पी घेर रही थी उस कमरे को जिसके बीच कभी-कभी चुड़ियों की खनक, खांसी की एक दो फंसी आवाजें और सांसों के उतार चढ़ाव की आहटें रेंग जाया करती थीं उसके पास तक.

उसे अब अपने कमरे का माहौल ज्यादा घिनौना लगने लगा था. अपनी बाल

दुर्घटनाएं

कई तरह के बोझ
मेरे चारों ओर
असफलताओं एवं
मानसिक पीड़ाओं के
जाल बुन रहे हैं
वे सभी उस जाल से
पकड़ लेना चाहते हैं
मेरी मछलियां
नादानी के इस
आदान-प्रदान की
उनकी सारी इच्छायें
मैं निरन्तर स्वीकार कर रहा हूँ
क्योंकि मैं जीने के
अनुपात से—
कहीं अधिक मर रहा हूँ.

—प्रभु दयाल खट्टर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से उसे खुद घृणा होने लगी थी. वह अपने को एक गलत योजना का शिकार होता पा रहा था. अनचाहे ही वह आत्म कुंठा से बौना होता जा रहा था.

कमरा फिर अहिस्ता से खोला गया था. खामोशी की लहर कुछ देर काँपती रही फिर बाथरूम से पानी गिरने की आवाज़ आने लगी.

वह अकेलेपन से ऊब गया था इस बीच. संध्या का उसकी उपस्थिति से बेखबर होना उसे क्रुद्ध कर रहा था परन्तु उसने अपने को काफ़ी सर्द और जड़ होता महसूस किया. थोड़ी देर बाद ही वह बुरी तरह तन गया था.

वह उसके कमरे में लौट आई थी. उसने कनखियों से झांका. संध्या उसके चेहरे पर तनाव की रेखायें गिन रही थी. उसके हाथ स्टोव में फिर उलझ गये थे. वह केतली में पानी उबालने लगी.

अपने अन्दर के जलते स्टोव पर उबलता हुआ वह कई निर्णय ले रहा था. सही और सुविधाजनक मौके की तलाश कर रहा था जब कि वह उठ सके उस कमरे से. संध्या की पुकार पर आगन्तुक उसके कमरे में ही बैठ गया था. वह थोड़ा खिसक गया. उसने कोई दिलचस्पी नहीं दिखलाई आगन्तुक के प्रति.

आगन्तुक बीस-ब्राईस साल का छोकरा था. वह इस छोकरे से अपने को पराजित होता महसूस कर रहा था. उसने फैसला ले लिया, संध्या को बिना छुये ही चला जायेगा.

संध्या उसके चेहरे को पढ़ने में व्यस्त थी. आगन्तुक ने उसे अखबार में छपी एक तसवीर दिखला कर कहा,'बहुत अच्छा खेलता है, यह आदमी.'

क्रिकेट के किसी खिलाड़ी की वह तसवीर थी. लेकिन वह नबाब पटौदी की तसवीर देख रहा था. वह अनमना ही रहा. कोई जवाब नहीं दिया उसने छोकरे की बातों का. उसने छोकरे द्वारा अपने को आउट किया जाता महसूस किया.

इसी तनाव के बीच उसने चाय की चुस्कियां ली. संध्या उसके गुस्से को अब तक भाप चुकी थी. थोड़ी देर पहले उसने संध्या को गुनगुनाते सुना था जब वह चाय में शक्कर घोल रही थी.

छोकरा उठ खड़ा हुआ. वह दीवार से पीठ टिकाये बैठा रहा. उसे ऐसा करके एक अन्तरिक सुख मिल रहा था. संध्या छोकरे के साथ ही टेरेस तक आ गई थी.

उसके कान फिर चौकन्ने हो गये. फुसफुसाहटें उभरती रहीं. सामने की दीवार पर दो छायाएं एक दूसरे को ओवर लैप कर रही थीं. फुसफुसाहटें घिसटती हुई सीढ़ियों तक चली गईं उसने बहुत कोशिश के बाद 'फिर आना' सुना. वह संध्या को टेरेस से सट कर खड़े हो कर हाथ हिलाते देखता रहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह तकिये के सहारे अधलेटा हो गया. संध्या लौट आई. एक नई मुस्कान अपनी आंखों में भर कर उसने उसे देखा. वह उसी प्रकार तना रहा.

संध्या ने खिड़कियाँ और दरवाजे बंद कर डाले. वह आने वाली स्थितियों को समझ गया था. उसकी नसों में उबाल आने लगा.

'बगल वाले कमरे में चलो'

वह संध्या को ले कर बगल के कमरे में आ गया. उसे कमरे के टेबिल पर गुलदस्ते में रखा फूल ताजा लगने लगा था. उसने बेडशीट की सलवटों पर निगाहें जमा दी.

संध्या स्विच बोर्ड की ओर बढ़ने लगी थी.

'नहीं, उजाला रहने दो'

उसने संध्या को थाम लिया था. वह मेढ़क की तरह टांग समेटे लेट गई थी.

चित्र का प्रभाव

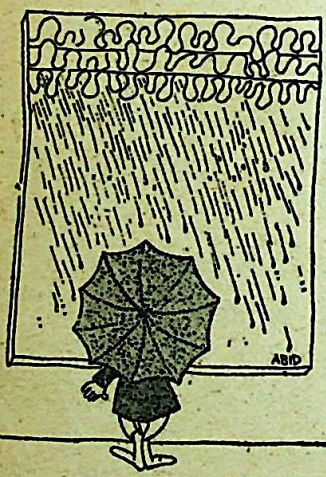

—आबिद सुरती

उसकी उत्तेजना सहसा धीमी पड़ गई थी. उसे लग रहा था कोई तीसरा आदमी उसके और संध्या के बीच लेटा है. वह जल्दी ही थक गया था.

संध्या उठ कर बाथरूम की ओर खिसक गई थी वह कमरे के टेबिल पर रखे गुलदस्ते के फूल सूंघ रहा था. फूल उसे गंधहीन लगा था.

वह पहले वाले कमरे में चला आया. उसका सिर भारी हो गया था. घुटनों के जोड़ ढीले लग रहे थे. उसने बिना किसी आनन्द की प्राप्ति के थकान हासिल कर ली थी. यह तीसरा आदमी उस पर हावी हो गया था. एकाएक ही उसे घिन आने लगी अपने आप पर.

एक विद्रोह की आग उसके अन्दर सुलग उठी थी. वह सोच रहा था कि संध्या और उसके पति के बीच भी तो वह तीसरा आदमी ही है. उसे आश्चर्य हो रहा था कि आज पता नहीं क्यों उसे संध्या का पति निरीह लग रहा था. वह भी उसे घिनौनी लग रही थी उस वक्त.

'मैं तो चाह रहा था कि यह सब खेल खेलूं ही नहीं. उस धोकरे के आने के बाद ही मैं कोल्ड हो चुका था.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वह उससे कह रहा था.उसे पछतावा हो रहा था कि क्यों नहीं वह उठ कर पहले ही चला गया था.

'सच बताओ, तुम्हारा उस लड़के से क्या सम्बन्ध है ? संध्या एक बारगी ही काँप गई थी, उसने महसूस किया. लेकिन वह तटस्थ बनी रही. 'मैं जानती थी तुम्हें शक होगा.'

और इसी शक को तथा तनाव को दूर करने के लिए उसने खुद खिड़कियां बंद की थी, वह सोच रहा था. उसे संध्या की उसके प्रति उदासीनता समझ में आ रही थी.संध्या अपनी सफाई दे रही थी—

'तुम सोच सकते हो ऐसा. तुमसे जब मैंने इस उम्र में, कई बच्चों के बाद सम्बन्ध जोड़ा तो तुम्हारा सोचना ठीक ही है. लेकिन...'

वह रुआंसी आवाज में कह रही थी.

'तुमने जब अपने पति को धोखा दिया तो मुझे क्यों नहीं दे सकती हो. मैं कभी धोखा नहीं खा सकता. तुम्हारा उस छोकरे के साथ नाजायज सम्बन्ध है.' वह दृढ़ता से बोल रहा था.

'हाय कैसी बातें कहते हो. वह मुझे छोटी मां कहता है. कितना बच्चा है वह तुम्हारे मुंह में कोड़े पड़ेंगे..., बिसुरती हुई वह फुंफकार उठी थी,'मैंने तो अपने पति को धोखा दिया ही है. पति से दगा किया, नर्क तो भोगना पड़ेगा ही और बीमारी ने क्या हालतबना रखी है मेरी.यही क्या नर्क नहीं भोग रही हूँ. कितने नेक दिल हैं वे और उनसे मैंने दगा किया....'

वह और भी बिसुरने लगी थी.

उसे लगा रहा था, तीसरा आदमी का लेबुल उस पर लगा दिया गया है.

'तुम्हें उसके साथ ऐसा नहीं करना चाहिए था,बेचारा. तुम खुद ही गिरी हुई हो.'

वह बकता जा रहा था और हलका होता जा रहा था. वह चलने को उठ खड़ा हुआ.

'विश्वास करो, मैंने पराये मर्द के रूप में सिर्फ तुम्हें जाना है. भले ही लांछित कर लो. एक बार जब गलत राह पर पैर पड़ ही गये तो तुम्हे कैसे भरोसा होगा.'

उसने उसे रोक लिया था. आंसुओं की बाढ़ उसने ला दी थी कमरे में. बार-बार 'मुझे गलत मत समझो' की आवाजें उसके रूंधे गले से फिसल जाती थीं.

वह सीढ़ियां उतर नीचे आया.

जीना उतरते 'गलत मत समझना, फिर आना' की आवाज सुनी.

वह सड़क पर निकल आया था. उसने एक सिगरेट सुलगा ली. उसका सिर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुन्दर, आकर्षक, रंगीन,

हाफटोन, लाइन,

ब्लाक के निर्माता

व चित्रकार

जोहरी

ब्लाक वर्क्स

निशात सिनेमा, गोदौलिया, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भारी लग रहा था. मरियल टट्टू-सा वह घिसटने लगा.

वह सोच रहा था. उसके दिल की आवाज़, कानों द्वारा सुनी गई गलत आहटें हैं या संध्या की सफाई. बार-बार उसका रोता चेहरा उसके सामने ठहर जाता था.

वह बढ़ता रहा. कई रोते-मुसकराते चेहरे गड्मड् होते गये फिर एक भद्दी सी आकृति उभर आई.

उसकी उँगलियों में फँसी सिगरेट बुझ चुकी थी. उसने सड़क पर ही सिगरेट फेंक दिया.

वह फैसला कर रहा था—इस अधजली सिगरेट के टुकड़े की तरह ही वह औरत भी है, इसे फेंक देना ही ठीक है.

जेब से उसने सिगरेट की पाकेट निकाली. डब्बा खाली था.

—नई सिगरेट लेनी होगी उसने सोचा

—इस बार माँ को अपनी शादी की सहमति दे देगा. यह विचार उसके मन में और अपने को वह सहज पाने लगा.

चौराहे पर मोड़ लेते वक्त उसके मन में एक बात और कौंध गई,'अगर कहीं बीबी भी अधजली सिगरेट हुई तो...?' ■■

—मेडिकल आफिसर,
सामुदायिक विकास प्रखण्ड. लातेहर. पलामू (बिहार)

कुछ इधर-उधर की ॥

संसार की सबसे छोटी पुस्तक ००१३८ × ५० इंच आकार की है. इसमें मात्र ११ पृष्ठ हैं, जिनमें अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति लिंकन के इतिहास प्रसिद्ध गेट्सबर्ग व्याख्यान को उद्धृत किया गया है. पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में औसतन ४५ शब्द हैं, जो ०.००५ इंच ऊंचे टाइप में मुद्रित किये गये हैं. पुस्तक का वजन ०.०३५ औंस है तथा इसकी स्वामिनी है—कनाडा की श्रीमती एग्नेस फील्ड्स. इस पुस्तक को खुर्दबीन से ही पढ़ा जा सकता है.

ग्रेट ब्रिटेन में ऐसे किसी भी प्रकाशन को पुस्तक माना जा सकता है, जिसका मूल्य कम-से-कम छह पैसे हो. इटली और आयरलैंड में कम-से-कम १०० पृष्ठ होने चाहिए, अन्यथा उसे पुस्तिका माना जाता है. डेनमार्क में कम-से-कम ६० पृष्ठ, हंगरी में ५४ पृष्ठ, दक्षिण अफ्रीका में ५० पृष्ठ, कनाडा में ४९ पृष्ठ, चेकोस्लोवाकिया में ३२ पृष्ठ और आइसलैंड में ११ पृष्ठ का कोई भी प्रकाशन 'पुस्तक' कहला सकता है. भारत, इंडोनेशिया और रूस में पुस्तक और पुस्तिका (पम्फलेट) में अन्तर नहीं माना जाता.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शम्भु

प्रेम की

मराठा इतिहास में दरबारी-नर्तकी मस्तानी और राव पेशवा प्रथम की प्रेम-गाथा अद्वितीय है तथा मानव-हृदय को पिघला देने वाली है. बाजीराव का व्यक्तित्व बड़ा शाली था तथा मराठों में शिवाजी के बाद दूसरा महत्वपूर्ण इन्हीं का था. इतिहासकार के शब्दों में 'उनका मस्तिष्क बनाता था तथा हृदय उसे कार्यान्वित करता था.' उनका ऊंचा तथा चेहरा तेजस्वी था. अपने बलिष्ठ शरीर के कारण केवल अच्छे योद्धा थे, वरन् कुशल राजनीतिज्ञ भी थे. उनका हृदय कोमल एवं उदार भी था और सचाई तथा ईमान से काम करने वालों के प्रति वे हमेशा दयालु रहते थे.

सन् १६६१ में औरंगजेब ने चम्पतराय को परास्त उसका लड़का छत्रसाल बुन्देला मिर्जा राजा जयसिंह की मदद किसी तरह मुगल सेना में घुस आया और एक मामूली

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

था. उसने सन् १६६७ में पुरन्दर के संघर्ष तथा देवगढ़ पर
रक्षण के समय बड़ी बहादुरी से युद्ध किया, किन्तु बाद में उसका मन बहुत बदल
और उसने शिवाजी की तरह जोखिम से भरा तथा स्वतन्त्र जीवन अपनाने का
निश्चय किया. बाद में उसने शिवाजी के अधीन काम भी किया. मराठा राजा की सलाह
वह अपनी मातृभूमि वापस आ गया तथा उसने मुगल सेना को गुमराह किया.
१६७० में औरंगजेब ने हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ने की नीति अपनाई, जिससे
बुन्देलखण्ड एवं मालवा की हिन्दू जनता भड़क उठी. लोग अपने पवित्र देवालयों की
रक्षा करना चाहते थे तथा किसी बहादुर और निडर नेता की तलाश में थे. ऐसे मौके
पर छत्रसाल उनके बीच आया. लोगों ने उसे हिन्दू धर्म तथा बुन्देलों की स्वतन्त्रता
की रक्षा के लिए अपने नेता एवं राजा के रूप में स्वीकार किया.

छत्रसाल मुगलों का बहुत बड़ा शत्रु हो गया. एक बार जब वह मुगलों से संघर्ष
कर रहा था, अचानक मुसीबत में पड़ गया और उसने बाजीराव पेशवा से मदद मांगी
बाजीराव के समय पर मदद कर देने से छत्रसाल विजयी हुआ और मुगलों को
भगना पड़ा. इसी समयौचित सहायता के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करने हेतु छत्र-
साल ने एक खुबसूरत मुसलमान दरबारी नर्तकी बाजीराव पेशवा को विजय-भेंट के
रूप में दी. इसका नाम मस्तानी था तथा वह बेहद खुबसूरत तथा गुणवान भी थी.
आज भी उसकी हृदयगाथा कहानियों तथा गीतों के रूप मे प्रसिद्ध है.

विधाता ने उसे हिन्दू पिता और मुसलमान माता की संतान के रूप में जन्म दिया.
उसमें नृत्य और संगीत के सिवाय अन्य कई दुर्लभ विशेषताएं थीं. उसका सौंदर्य
अनिंद्य था तथा अपने शिष्टाचार एवं व्यवहार में वह इतनी कुशल थी कि कोई
पुरुष स्वेच्छा से उसका आजीवन दास बन सकता था. भाग्य उसके अनुकूल था,
और वह बाजीराव पेशवा की आराध्य देवी बन गई.

इस प्रकार दो महान आत्माएँ एक-दूसरे के सम्पर्क में आईं. बाजीराव शीघ्र ही
उसके प्रेम-पाश में बंध गया और मस्तानी का जीवन ही बदल गया.

'मुझे तुम पर नाज है, मस्तानी ? अब तक युद्ध में प्राप्त उपहारों में तुम श्रेष्ठ
और अमूल्य हो.' अपनी बलिष्ठ भुजाओं में उसे भरते हुए बाजीराव ने कहा, 'तुम्हारा
सौंदर्य इतना गहरा और मनमोहक है कि मेरी समझ में नहीं आता, मैं तुम्हारे मधुर
अधरों की मदिरा का पान कैसे करूं.'

मस्तानी ने खुमारी भर कर बाजीराव की आंखों में आंखें डाल दीं और अपना
सर उसके वक्ष पर झुका दिया.

ये क्षण बातों में बिताने के नहीं, प्रिये ! आओ हम दोनों अपने दिलों की धड़कनें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बहुत करीब से सुनें और तन-मन से एक हो जाएं प्यारी ! अब देर न करो, मैं तुम्हें समा जाने के लिए बेचैन हो रहा हूँ. रात्रि के इन मौन मधुर क्षणों में प्रकृति की आवाज़ सुनो और अपने प्रेम की अंजलि से मेरे प्यासे हृदय को शांत करो !' बाजीराव ने आतुरता से याचना करते हुए कहा.

बाजीराव मस्तानी के प्रेम में इतना दीवाना हो गया कि हर समय वह उसी खयाल में डूबा रहता. यहां तक कि राज्य के कामों में भी उसका मन न लगता. इतना ही वह मांस-मदिरा एवं ऐशो-आराम का भी इतना दास हो गया कि वह लोगों की नज़रों से न बच सका. मस्तानी के प्रति उसकी तीव्र आसक्ति उसकी कीर्ति को धूमिल करने लगी. मस्तानी को संगीत और नृत्य का इतना शौक था कि वह त्योहार उत्सव के समय ताजमहल के सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी भाग लेती और अपनी कला का प्रदर्शन करती. वह अपनी वेशभूषा, बातचीत तथा रहन-सहन में हिन्दुओं की रहती तथा एक पति-भक्त स्त्री की तरह बाजीराव की हर तरह से सेवा करती.

बाजीराव की विवाहित पत्नी काशीबाई एक समझदार औरत थी. उसने मस्तानी से द्वेष करने के बजाय मित्रता का व्यवहार किया. उसकी इच्छा बाजीराव को खुश रखना थी. अतः उसकी खुशी के लिए वह मस्तानी से प्रेम का वर्ताव करती थी. उसने एक विवाहित पत्नी के नाते अपने हक एवं विशेष अधिकारों की ओर कभी ध्यान नहीं दिया तथा मस्तानी को अपनी बहिन की तरह रखा.

कुछ समय के बाद काशीबाई तथा मस्तानी दोनों को पुत्ररत्न पैदा हुए. काशीबाई के पुत्र का नाम राघोबा तथा मस्तानी के पुत्र का नाम शमशेर बहादुर रखा गया. आरम्भ में सब ठीक रहा, लेकिन समस्या उस समय पैदा हुई जब राघोबा का उपनयन संस्कार हुआ और शमशेरबहादुर को इस अधिकार से वंचित रखा गया. यद्यपि इस समय बाजीराव बहुत क्रोधित हुआ और उसने पंडितों और ब्राह्मणों को बहुत बुरा-भला कहा, किन्तु धर्म के ठेकेदार टस से मस न हुए और शमशेर बहादुर को उस हिन्दू धार्मिक संस्कार से वंचित रहना पड़ा.

इस घटना का बाजीराव के मस्तिष्क पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और वह राज्य के काज में अरुचि रखने लगा. एक बार दुश्मनों के करीब आ जाने का समाचार सुनकर भी उसने युद्ध में जाने से इनकार कर दिया. मंत्रियों और कर्मचारियों ने सोचा कि इन सारी बातों की जड़ मस्तानी है. अतः उससे छुटकारा दिलाने के लिए योजना बनाने लगे.

पूना के मध्य में एक किला था जो टूटी-फूटी हालत में था. मंत्री और कर्मचारी जब बाजीराव और मस्तानी को एक दूसरे से अलग करने के हर तरह के प्रयत्नों में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असफल हो गए तो उन्होंने मस्तानी का हरण करके उसे इस किले में कैद करके रख दिया. लोगों ने यह दुष्टकार्य यथपि राज्य और प्रजा के हित के लिए किया किन्तु इसका प्रभाव युगल प्रेमियों पर बड़ा बुरा पड़ा. युद्ध में विजयी हो कर लौटने के बाद जब बाजीराव को सब कुछ पता चला तब उसकी हालत खराब हो गई और अन्त में वह बीमार पड़ गया.

धर्म के अन्धभक्त बाजीराव की इस हालत से भी संतुष्ट नहीं हुए और अच्छा इलाज कराने के बहाने उसे एक दूर स्थान में ले गए.बाजीराव की हालत दिन-पर-दिन बिगड़ती ही गई. गिरती हुई हालत का समाचार सुन काशीबाई उनके पास गई और हालत देख अवाक् रह गई. बाजीराव अर्ध-बेहोशी में कुछ बक रहे थे. उस हालत में भी वे मस्तानी को न भुला सके और काशीबाई को देख उसे मस्तानी समझ बैठे.वे उसे मस्तानी कह कर पुकारते और बातें करते.इसे देख काशीबाई का हृदय दुःख से कातर हो उठा और वह समझ गई कि मस्तानी ही उनके हृदय में बसी है और उसी बिरह में उनकी यह हालत हुई है. किन्तु वह लाचार थी और कुछ कर नहीं सकती थी. आखिरकार बाजीराव की मृत्यु हो गई. काशीबाई अंतिम सांस तक उनके पास रही और उनकी सेवा करती रही. उनका पुत्र भी साथ था और उसी के हाथ उनका अंतिम संस्कार हुआ. काशीबाई फिर लम्बी यात्रा पर चली गई.

इधर मस्तानी बाजीराव की गम्भीर हालत का समाचार सुन ब्याकुल हो रही थी और वह किसी तरह कैदखाने से भाग कर अपने प्रियतम के पास पहुँच जाना चाहती थी ताकि बीमारी में उनकी सेवा कर सके. उसने एक पहरेदार को खूब धन देने का वायदा कर उससे एक तेज घोड़ा प्राप्त किया और शीघ्र ही छलांग मारती हुई उस स्थान के लिए चल पड़ी जहां बाजीराव को रखा गया था. किन्तु मस्तानी के पहुँचने के पहले ही काल के कठोर हाथों ने पेशवा को छीन लिया. चिकंद के जंगल में ही यह समाचार सुन मस्तानी का हृदय टूट गया. वह पहले ही बहुत कमजोर हो गई थी और लम्बी यात्रा से पूरी तरह थक चुकी थी. वह इस आघात को न सह सकी और वहीं गिर कर मर गई.

इस प्रकार मस्तानी और बाजीराव के अनुपम प्रेम की गाथा का अन्त हो गया. मस्तानी का शव पूना से २० मील पूर्व की ओर एक गाँव पापल ले जाया गया. जहां उसे दफना दिया गया. उस स्थान पर बनी हुई एक छोटी-सी मजार आज भी आने-जाने वालों को मस्तानी की याद दिला देती है ■

—७।१५० बैजनाथ पारा,
रायपुर (म०प्र०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चन्द्र प्रकाश पाण्डे

व्यक्तिगत

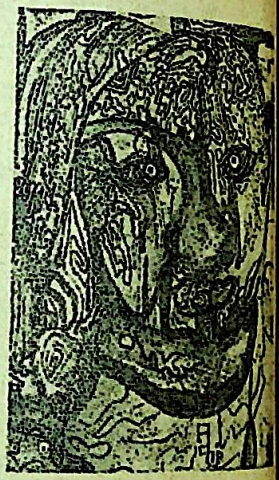

यहां जब बर्फ गिरनी शुरू होती है तो निरंतर गिरती है जाती है. सूरज पीतलनुमा बादलों में कभी छिपता है तो कभी मरियल रोशनी की एकाध किरणें ठण्डी बनस्पतियों को सहला जाती हैं. पत्तों से टप्प-टप्प गिरती बूंदे और कुहरे का धुंआ एक अजीब किस्म की सफ़ेद खामोशी वातावरण पर फैला देते हैं. बर्फ थमने के बाद थपेड़ों वाली हवा चलती है—निर्मम, क्रूर, अस्थियां प्रकम्पित कर देने वाली. तापमान प्रायः शून्य से भी नीचे हो जाया करता है. चारों तरफ एक उदासी भयावहता और नीरसता अनायास गिद्ध के छतनार परों-सी फैली रहती है. ऐसे में कोई कहीं निकल सकता है, जल्दी से नहीं कहा जा सकता. मेरी दुनिया तो पूरी तरह मेरे कमरे तक ही सीमित रह जाती है. बस लिखती-पढ़ती रहती हूँ—उदास न हो सकूं इसलिए कभी कुर्सी पर बैठ कर ,तो कभी बिस्तर पर लेट कर.टहलती भी हूँ तो कमरे की

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

शोभित चहार दीवारी में आया मेरे साथ हो रहती है. हमेशा अंगीठी घेरे बैठी रहती है. बहुत कहने पर अण्डों के लिए निकलती है. लाती है तो एक साथ कई दर्जन. यही सोच कर कि कुछ दिन चलेंगे, लेकिन जब हफ्ते बाद ही उसे जाना पड़ता है तो उसका विमनस्क हो जाना अस्वाभाविक नहीं लगता दरअसल विमनस्कता की स्वाभाविकता और कृत्रिमता को इतनी जल्दी समझा भी तो नहीं जा सकता.शराब का स्टोर काफी है.ओना भिजवा दिया करता है.लेकिन मैं उतना नहीं ले पाती स्वाद भी कुछ बदला लगने लगा है. उम्र की बात हो सकती है. लेकिन मैं अपने बारे में कह सकती हूँ कि उन दिनों भी जब मेरा मांस सिकुड़ा नहीं था और झील के नीले पानी में पड़ती चांदनी बहुत अच्छी लगती थी, बावजूद इस बर्फीले मौसम के वसंत का आभास हुआ करता था. तब भी कभी-कभी मुझे इस तरह हो जाया करता. मैं महसूस करती कि बूढ़ी हो गई हूँ. उदासी की तरुणाई मुझ पर हावी है. एक पेग लगता जैसे मैं कोई जहर का घूंट निगल रही हूँ. लगता जैसे सीधे जाती कार को सहसा एक मोड़ दे कर, पुलिस की सीटी ने किसी एक कोने में खड़ा होने के लिए विवश कर दिया है.

ओना के साथ जब थी तब भी इसी कदर विमनस्क हो चुकी थी—बिखरने की स्थिति तक. बचती रही तो अपनी असहायता का अहसास करके. मेरे बच्चे इस योग्य नहीं थे कि अपने पैरों चल सकते. चलते रहना मैंने नदियों से सीखा था कितनी निर्मलता और पावनता होती है उनमें. चूंकि चलना था सिर्फ इसलिए कि मेरे बच्चे पंगु न हो जांय मैं चलती रही, अन्यथा बहुत थक चुकी थी. बार-बार दुहराव वाली जिंदगी की प्रक्रियायें कोई कम उबाऊ नहीं होतीं.

आया भी कभी-कभी उदास होती है.मैं सोचती हूँ प्रायःलोग उदास हुआ करते हैं. कुछ उद्दण्ड हवा की तरह, कुछ प्रशांत ज्वालामुखी की तरह. मैं उस दिन पूछने वाली थी कि मैरिया तू उदास नहीं होती ? अच्छा हुआ नहीं पूछा. उसके चेहरे ने बता दिया था कि मेरे पूछने की सार्थकता नहीं है.

मेरे पास इतना कुछ था कि उसके बीच अभाव नाम की चीज खटक भी नहीं सकती.मैं सोचती—वह कौन-सी चीज है जो मेरे पास नहीं है.शायद मैं उसे कोई शब्द नहीं दे सकती थी.कभी-कभी स्वयं को विमनस्कता की नितांत घुटन वाली एकांतता में पाती कि कहीं कुछ जरूर है जो पास नहीं है.अगर किसी चीज का ज्ञान नहीं हो पाता तो उसके अस्तित्व को ही नकार देना कोई बुद्धिमानी नहीं मानी जा सकती.बाह्य रूप से मैं भले संपन्न रही हूँ लेकिन अपनी अंतरात्मा में पाती कि कहीं कोई संधि है जिसमें कुछ घुस जाता है और मुझे मथ कर चला जाता है. ओना के साथ की जिंदगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक प्रतिष्ठित फिल्म संस्था
के लिए
फिल्म के निर्माण हेतु
फाईनैंसर्स
अथवा
पार्टनरशिप की
शीघ्र आवश्यकता है.
संस्था द्वारा दो फिल्में
पूर्व प्रदर्शित हो चुकी हैं

सम्पर्क करें—
श्रीमती जया पद्म
ए–६७ सेक्टर–१४, चण्डीगढ़–१६००१४.

रवि ब्राण्ड
बिजली संबंधी
विविध
सामग्रियाँ—
अधिक मजबूत
आकर्षक और
सुरक्षापूर्ण
निर्माता व विक्रेता—

कोठारी इलेक्ट्रिकल्स
कटरा श्री चरण दास, ठठेरी बाजार, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बावजूद अपनी तमाम चालाकी के (उसे चालाकी ही कहना होगा, क्योंकि उसके शरण्य को मैं कभी पत्नी रूप में कम-से-कम अपनी अंदरूनी आवाज से न कर सकी) मैं अपने को उस पुस्तक की तरह पाती जिस पर निगाहें तो हमेशा टिकी रहती हैं, लेकिन उसका एक शब्द भी पढ़ा नहीं जा पाता. जिस वेग और उन्मत्तता की निस्सीम पराकाष्ठा पर अपने को खड़ा करके मैंने वह निर्णय लिया था. उसके पीछे मेरे जीवन का पीछापन तो था ही, आने वाले क्षणों में किसी खुशनुमा छाया का संभावना भी ले कर मैं चली थी, अन्यथा मेरी यात्रा समाप्त हो गई थी. यह संभावना न केवल बच्चों के भविष्य से जुड़ी थी अपितु मेरी 'स्त्री' से भी. यात्रा प्रारम्भ की तो इसके साथ इसका जुड़ना स्वाभाविक हो जाता है. पुरुष के प्रति हविश वाली बात, अपने ऊपर आरोपित होने को स्वीकारू ऐसा नहीं समझना चाहिये. पुनर्विवाह तमाम व्यक्तिगत सुरक्षाओं से हट कर हल्का होने की कामना से भी किया जाता है. यह हल्का होना कम महत्वपूर्ण नहीं. लेकिन मैंने पाया, मेरी यह अभीप्सा भी खण्डित हो गई है. खण्डित हो कर फिर से किसी 'खड्ड' में उतरना न केवल मेरी अहमन्यताओं की हत्या थी वरन मेरी उन तमाम विवादास्पद स्थितियों को बढ़ाने वाली भी थी जिनकी कड़ुवी घूंट मैं अब तक पीती आ रही हूँ. यह अतिरिक्त बोझ मेरे दिमाग में चुपके से आ कर बैठने लगा था.

पाया था कि संपन्नता के बीच पनपने वाले पौदे बड़े स्वस्थ और भास्वर होते हैं. लेकिन इस बार जब फिर उस जिंदगी को नये सिरे से जीना शुरू किया तो पाया कि असलियत और झूठ में बड़ा फर्क होता है. मैंने जब महसूस किया कि सिर्फ सोने से जीविका किसी हालत में नहीं चल सकती जब तक उसके अंदर एक संवेदनशील मनुष्य नहीं है. मैं इस जिंदगी की आदी अब तक नहीं थी कि शराब को गले तक

फ़र्क

पांवों में घुंघरू
एक हाथ में त्रिशूल लिये
पाउडर और लिपिस्टिक से पुता चेहरा
भिक्षा की इच्छा से
कोई मेरी दुकान में आया
बहुरूपिया समझ कर
मैंने टालना चाहा
तो उत्तर मिला—
'बच्चा ! हम सन्यासी हैं.'
एक दिन
वैसा ही एक और सन्यासी
मेरे घर आया
मैं आदर से झुक कर
पांव छूने लगा
तो वह मेरे हाथ पकड़ कर
कुछ हिचकता-सा बोला—
'बाबूजी, बहुरूपिया हूँ.'

—प्रमोद कृष्ण खुराना 'पावन'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ले कर अपने हो एक से दो बन कर चिल्ला लिया जाय और खामोशी से बिस्तरे को ही सब कुछ समझ रातें गुज़ार ली जाए.

ओना ने उस दिन कहा था, विवाह के ठीक तीन साल बाद—'तुम जो जिंदगी चाहती हो उसकी रूमानियत अब किताबों में भी नहीं मिलती. मैं उससे नफरत करता हूँ...और इस तरह की जिंदगी कम-से-कम मेरे साथ अधिक दिन नहीं चल सकती.'

मैं उस वक्त आवेश में थी. उसके शब्दों को उतना वजनदार नहीं समझा. इस अंदाज में उसने फेंकें थे, इस नियति से कि मैं कुचल जाऊं. निशाना ठीक बैठा था. मैं कुचली हो नहीं पिस भी गई. कुचल जाने से पिस जाना बड़ा दारुण होता है. वह मुझे अकेला छोड़ कर चला गया था. बच्चे शायद स्कूल में थे. नौकर-चाकर अपने-अपने काम में व्यस्त थे. मैं थी, वह बिस्तर था जिस पर उसके साथ सुहागरात मनाने की औपचारिकता निबाही थी और थीं मेरी सुबकियाँ. मैं अपने जीवन में दूसरी बार रोयी थी. पहली बार रोयी थी अपने पति चेस्टरटन की हत्या पर. मैंने घर के किसी कोने से सुना कि मैं गलत हो गई हूँ. एक बार नहीं, अनेक बार—स्वयं अपने से. ओना से भी, अपने बच्चों से भी. मेरा दिमाग चकराने लगा. लग रहा था कि इस बियाबान, सूनी, भयावनी रात में जहां कुछ नहीं सूझ रहा था, मैं अकेली कुछ खोजती, अपने से ही उलझी, मुक्ति पाने की तलाश में निरंतर उस गहरे और क्रूर दलदल में धंसती जा रही हूँ जहां ऊपर-ऊपर कुछ फूलनुमा चीजें बीच-बीच में चमक जाती हैं. और इसी बीच वह आदमखोर शेरनुमा कोई बूढ़ा जानवर अपने पंजों को झपट्टों में बदल कर मेरी ओर लपक रहा है. मुझे ताज्जुब होता है कि हथेलियां कितनी जल्दी पंजे बन कर झपट्टा मारने को उतारू हो जाती हैं! अपने ही द्वारा सहलाये गये कपोलों के मांस को लोथड़ों में देखने के लिए नोचने-खसोटने लगती हैं. मेरा रोम-रोम सनसना जाता है. कंपकंपी छूटने लगती है. मेरी आंखों की रोशनी, जिन्हें 'फेस' करने का साहस, मैं जानती हूँ किसी में न था, लुंज-पुंज हो कर मेरे ही सामने टटोल रही है मैं देख रही हूँ तो सिर्फ उन दो आंखों से—नितांत पराई आंखों से जिन्हें अब अपनी कतई नहीं कह सकती. अपनी थीं कभी. मेरा मतलब उन दो आंखों से है—मेरे दोनों बच्चे और चेस्टरटन की आँखें. मैं इधर काफ़ी दिनों से अपने को ओना की पत्नी नहीं महसूस कर पा रही हूँ, जब कि ऐसा नहीं होना चाहिए. वे दोनों आंखें जो अभी-अभी मेरे सामने आई थीं, अपनी चमक प्रदीप्त करके गुम हो गई हैं. फिर भी दो आँखें हैं—मेरे दोनों बच्चे, ग्रेस्टर और राबर्ट. और यहीं मैं अपने को उस तट पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाती, जहां से दूर-दूर तक सिवाय जलराशि के कुछ न सूझता. और मुझे तट छोड़ना होता. छोड़ने के लिए किसी अनाम प्रतिबद्धता से मैं अपने को जुड़ा पाती.

ओना पेरिस चला गया था, शायद अपने फेंके वजनदार शब्दों की प्रतिक्रिया देखने के लिए. दरअसल उसे भी मेरे अंदर कुछ मिला था जिसकी मोह-शृंखलाओं से मुक्त होना वह चाहता भी न था. ऐसा हो भी नहीं सकता था. अपने हृदय की किसी गहराई से उसने मुझे कभी बहुत प्यार किया था. और प्यार जब गहराई से, निश्छलता से छन कर आता है तो उसे छिछलाने में भी कुछ समय लगता है. धुंधलाने पर भी कुछ अच्छाइयाँ याद हैं. उस दिन शनिवार था. रविवार को अखबारों में जो कुछ देखा उससे मेरे धैर्य्य की परीक्षा लेना मूर्खता है. औरत का धैर्य्य वहीं तक देखा जाना चाहिए जहां तक वह गाँठ बन कर उसके सीने में समा न जाय. गाँठ और धैर्य में फर्क समझा जाना चाहिये.

मैं फूट-फूट कर रो पड़ी थी, जितना रो सकी थी. लगा था, रोने का सिलसिला अब शीघ्र समाप्त होने वाला नहीं है. उससे मुक्त होना भी या सोचना भी निरर्थक लगा.

पेरिस का वह बहुत बड़ा होटल है—नाईट्रेडम. वहीं वह रुका था. बड़ी खुबसूरत लड़की थी वह. अखबार में छपी अपनी फोटो से भी अधिक. मैनेजर ने बताया था—'मैडम आपके हस्बैन्ड आये हैं. कहीं बाहर गये हैं. लौट कर आने पर ही उनसे बातें कर सकती हैं.' यह तो मैं जानती थी कि वापस आने पर ही उनसे बातें की जा सकती हैं—बातें भी नहीं, सिर्फ समर्पण. यही एक और एकमात्र उपाय शेष था जिससे उस दरार को पाटा जा सकता था.

ठीक आठ बजे ओना आया था. इमोलिया नाम की लड़की उसके साथ थी. मैंने साफ देखा था कि वह होटल के एक कमरे से निकला था. पीछे इमोलिया थी. मुझे कोई गिला न था कि मुझसे झूठ बोला गया. मैनेजर का क्या कसूर, जो उससे कहा गया था वही उसने दुहराया था, मेरे पूछने पर.

मुझे उस वक्त कुछ नहीं दिखाई पड़ा. नीले अन्धेरे की पर्तों में सिर्फ दो आँखें—चेस्टरटन की दो आंखें जिन्हें मैंने ओना की आँखों में पाया. मैं बेतहाशा दौड़ती उसकी बाँहों में जा गिरी थी. सुबक-सुबक कर रोती रही थी. विगत के दुर्भाग्यपूर्ण प्रसंगों से प्रताड़ित मैं. ओना की बांहों से फिसल कर मैं उसके पैरों पर माथा टेके न जाने कब तक पड़ी रही, जब उसने उठाया. मेरी पीठ को थपथपाया. मेरे शीत जैसे होठों को अपने उष्ण होठों से छुआ. मैंने महसूस किया—कहीं कुछ न था. कुछ नहीं घटा था. जो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हवायें कट कर हमारी रिक्तताओं से टकराईं थीं. वे हवायें अब गुज़र चुकी हैं. हमारा प्रेम फिर एक प्रशांत महासागर की तरह गरिमावान हो चुका है.

इमीलिया खड़ी कुछ देर तक देखती रही थी. फिर मुसकरायी और एक उपेक्षा से कमरे की तरफ मुड़ गई थी. ओना ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया. उसे पता ही न चला कि इमीलिया भी उसके पीछे आ कर खड़ी हो गई थी. उसी दिन फिर अखबारों में मेरे बारे में छपा था. भारतीय औरतों की तरह मैंने आँसुओं द्वारा अपनी चौड़ी होती दरारों को पाट दिया था. मैं फिर हरा दी गई थी. लेकिन मुझे यहीं फिर लगा कि मुझे फिर न्याय से वंचित किया गया है. आँसुओं को कमज़ोर समझ कर क्या भावनाओं को एकदम से नष्ट किया जा सकता है—और फिर एक औरत की. मैं भी औरत हूँ. बिलकुल सामान्य कोटि की औरत. मैं इसे बार-बार दुहराती हूं. इसलिए कि मुझे इससे हट कर देखे जाने का प्रयास छोड़ दिया जाय.

मुझे इमीलिया से नफरत नहीं थी—ओना से भी नहीं. अगर कुछ थी तो स्वयं अपने से. अपने लिये हुए निर्णय से—अपने विचारों से, अपनी मान्यताओं से, जिन्हें बदलना चाह कर भी मैं कभी नहीं बदल सकी और फिर उस वक्त बदलना कोई मायने भी नहीं रखता था.

इमीलिया भी औरत है—सिर्फ औरत. मैं भी औरत हूँ. लेकिन 'सिर्फ' नहीं. माँ भी हूँ, पत्नी भी इमीलिया से नफ़रत करने का सवाल यहाँ नहीं उठना चाहिए. नफ़रत भी मैं कम-से-कम उससे करना पसन्द करती हूँ जो सामान्य स्तर वाला हो. अपने से नीचे स्तर वाले से नफ़रत करके मैं भले अपनी विद्रूपताओं को ओढ़ लूं लेकिन मेरा लक्ष्य खाली जाएगा. मेरी नफ़रत जब तक वह भी न समझ ले जिसे मैं कर रही हूँ तब तक उसकी सार्थकता क्या ? इमीलिया जिस जिंदगी को ले कर चल रही है, मैं जानती हूँ. वह उसके चयन की जिंदगी नहीं हो सकती. अपनी विवशताओं के बीच कोई अन्य विकल्प न पा सकने के अभाव में ही इसे चुना होगा. आदमी क्षणिक हो सकता है. होता भी है. लेकिन उसके निर्णय विशेष रूप से जिंदगी से सम्बद्ध क्षणिक नहीं हो सकते—होने भी नहीं चाहिए.

उस रात ओना ने मुझे बहुत प्यार किया था, मैंने भी. यही कहना चाहिये लेकिन असलियत यह है कि इस दरम्यान मैं हमेशा अपने बारे में सोचती रही. आँसुओं से जो पुल मैंने बनाया था, था तो पुल ही. दरार तो अब भी थी. वह पटी कहाँ थी. पुल कभी भी टूट सकता है. एक गहन नीरवता के साथ खाई फिर बढ़ सकती है और उसी रात याद आये थे मेरे दोनों बच्चे. जो अब मेरे साथ नहीं थे. उनकी दादी ने अपने पास रख लिया था. बच्चों ने स्वयं उन्हें लिखा था. मैंने उसी रात पहली बार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सोचा था कि क्या पुनर्विवाह किए बगैर मैं जीवित नहीं रह सकती थी? हालांकि मेरा यह सोचना निरर्थक था.

आया अभी अभी कॉफी रख गई है, उबले हुए अण्डे भी. सामने वाली खिड़की कहीं से खुली रह गई है. दमघोट इस रोशनी वाले कमरे में लगता है मेरा वसन्त वापस आ गया है. मैं किसी तरफ से निरुपाय नहीं हूं. मैं वही फेनी हूं, वही फेनी जिसके लिए कवियों ने कविता लिखी थी. चित्रकारों ने चित्र बनाएँ थे. शिल्पियों ने मूर्तियाँ तराशी थीं और बीबी बन गई थी एक ऐसे प्रतिभाशाली युवक की जो इनमें से एक भी न था, लेकिन था बहुत बड़ा. इतिहास चेस्टरटन की कभी नहीं भूल सकता.

इसी बीच उस फोटोग्राफर वाली घटना घटी. मैं कोई ध्यान न देती. वह अकसर मेरे पीछे लग लेता. जिस स्थिति से पाता मेरे चित्र खींच लिया करता. एक बार शायद पेरिस से लौटने के एक हफ्ते बाद की बात होगी. मैं जालीदार बनियाइन और स्कर्ट पहन कर उतरते मौसम में कुछ खो-सी गई थी. पेड़ों के पत्ते पीले हो कर गिरने लगे थे. हवा में कोई दम न था. सूरज मासूम और कुछ हद तक मायूस लग रहा था. उसने मेरे कई चित्र लिये. मुझे कुछ नहीं मालूम. जब वे प्रकाशित हुए तो स्तब्ध रह गई. मेरी स्तब्धता इसलिए नहीं कि ओना देखेगा तो क्या होगा? उसकी तरफ से पूरी छूट थी. मैं स्वयं अपने आप पर स्तब्ध रह गई थी. अगर कोई कुछ नहीं कहता, किसी विचित्र अथवा एक सीमा तक अनैतिक आचरण को देख कर तो इसका मतलब हमेशा यही नहीं हुआ करता कि वह उसे पसन्द करता है कभी-कभी अपने स्वयं को नहीं अच्छा लगता. मेरे तो दो बच्चे भी हैं. अगर इस तरह के चित्र वे देखते हैं तो मेरे प्रति क्या धारणा बनायेंगे?जालीदार बनियाइन और स्कर्ट और दोनों पारदर्शी—मेरे सारे अंग झलक रहे थे. चेहरा खिला था. लेकिन मैंने कभी यह कोशिश नहीं की कि अपने अंगों के माध्यम से किसी को उत्तेजित करूँ. इसे मैं अपराध समझती हूँ. मैंने फोटोग्राफर को टोंका था. डाँटा भी था. वह ही....ही...करके हँसने लगा था. फिर बोला था—'ओह गलती हुई....मैं समझता था आप काफी 'फ्रैंक' हैं. मुझे मालूम हुआ आप उससे बहुत नीचे हैं.'

उसका उत्तर सुन कर मैं चकित रह गई थी. मेरी 'फ्रैंकनेस' को क्या इसी तरह देखा जाता रहा है? फिर लोगों ने ओना के साथ शादी को मेरी 'फ्रैंकनेस' क्यों नहीं समझा? उसे मेरे पूर्व पति की प्रसिद्धि और गरिमाओं के साथ जोड़ा जाता रहा? मैंने स्वयं अपने से पूछा था. लोग क्या चाहते हैं, क्या चाहते थे, दोनों साफ नहीं है. वे चाहते थे—जैसी मैं थी, वैसी ही रहती.रक्तपात और देखती. कुढ़ती. अपनी अहम-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

न्यताओं को कुचलती सिर्फ ख्याति को ढोने के लिए खच्चर बनी जीती रहती.

आया ने कब खिड़की वाली सुराग मूंद दी, मुझे नहीं मालूम. अण्डे खा लिये हैं. दो पेग शराब भी ले ली है. बदन कुछ गरम मालूम पड़ने लगा है. बिजली की अंगीठी अभी सुलग रही है. बिजली के 'रॉड' अब भी जल रहे हैं. बिजली-सी गरमी अब जगह है. अगर कहीं नहीं है तो मेरे अन्दर. शराब और अण्डे उसे कब तक गरम रखेंगे.

कभी-कभी स्थितियाँ कुछ इतनी दारुण और अनिर्णयात्मक हो जाया करती हैं कि आदमी जैसा चाहता है वैसा न हो कर प्रायः वैसा हो जाता है जिसके लिए उसने कल्पना भी न की थी. मैंने अपने को भी कुछ ऐसी ही विपन्नताओं के बीच पाया. सोचा कुछ था, हो कुछ गया. लेकिन इस होने के बाद भी मैं अपने को कहीं किसी तन्तु से जुड़ी पाती हूँ. मेरा मोह भंग हो गया है—ओना की तरफ से भी, बच्चों की तरफ से भी. और लोगों की तरफ से तो मुझे कभी कोई मोह रहा ही नहीं. मेरी स्थिति उन यात्रियों जैसी थी जो वायुयान पर बैठे होते हैं और सहसा सन्नाटे और स्तब्धता के बीच यह घोषणा कर दी जाती है कि यान में कुछ गड़बड़ी आ गई है अब वह गिरने वाला है. यात्रियों की मनःस्थिति उस वक्त देखने काबिल होती है. कैसे-कैसे विचारों से वे आक्रांत होते होंगे. कैसी-कैसी चीजों की कामना वे करते रहे होंगे ? और सहसा फिर दूसरी घोषणा होती है—गड़बड़ी ठीक कर ली गई है. वह क्षण जो गुजर गया, इतनी जल्दी इस खुशी के सैलाब से भुलाया नहीं जा सकता. मेरा तो वायुयान टकरा गया था. मैं बच गई, यही मेरा कसूर हो सकता है. दूसरे क्षण की तलाश को दुहराना मैं महत्वपूर्ण नहीं समझती.

आया उस दिन कह रही थी—'मैडम ! आप चर्च नहीं जातीं. वहां जाने से सुकून मिलता है. आप जैसे लोगों के लिए आवश्यक है. मुझे प्रसन्नता है कि आया मेरे प्रति उदार है. मेरी अन्तरात्मा की गहराइयों को पहचानती है. यही मेरे लिए काफी था. चर्च जाने या सुकून ढूंढ़ने की ललक मुझे जब कभी नहीं रही तो अब क्या रहेगी. यही क्या कम सुकून की बात है कि मैं सुकून की तलाश में नहीं हूँ.

वर्फ पिछली रात से लगातार गिरती रही है. बीच-बीच में तीखी हवा भी चल जाती है. लिखते-लिखते उंगलियाँ थक गई हैं. लगता है जकड़ गई हैं, मौत की अकड़न से. एक तरफ बैठे रहने से टांग सुन्न हो गई है. रक्त-संचार सिमट कर एक जगह थम गया लगता है. अखबारों ने खबर दी है कि इस वर्ष काफी बर्फ गिरेगी. सारे पुराने रिकार्ड टूट जायेंगे. पता नहीं सच है कि गलत. अखबारों पर मैं विश्वास नहीं कर पाती. न जाने क्यों ? मन तो मेरा भी करता है कि पेड़ों पर खिले और पत्तों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मन करता है उन बर्फ के फूलों को चुनूं ! चुन कर उनसे खेलूं. बड़ा अच्छा लगता है मुझे, लेकिन शरीर साथ नहीं देता. निकलूं भी तो आया पीछे लग जाती. किसी के पीछे लग जाने पर मैं कभी कुछ नहीं कर पाती. वह भी क्या सोचेगी ? मन-ही-मन कहेगी कि चर्च तो जाती नहीं यह बुढ़िया, बर्फ के फूल बटोरने निकली है. जानलेवा ठंडी हवा अभी-अभी दरवाजे और खिड़कियों को थपथपा गई है. लग रहा है कि कोई खटखटा रहा है, प्रवेश के लिए. जब-जब ऐसा होता है, टॉमी भूंकना शुरू कर देता है. कभी-कभी जब अगल-बगल की बनस्पतियाँ शीशों से झांक कर दीवालों पर प्रतिछाया फेंकतीं हैं तो लगता है तमाम अनाम यात्री दीवालों पर गुजरते जा रहे हैं. टॉमी सतर्क हो जाता है. भूंकने का उसका स्वर कुछ भयावह लगने लगता है. उसे चुप कराने का बस एक रास्ता है. शीशों के ऊपर पर्दा खींच देना या लकड़ी की खिड़कियों को बन्द कर देना. इसे मैं ही नहीं आया भी जान गई है.

मैं निर्वासित हूँ या मुझे स्वयं ने निर्वासन अपना लिया है, इसका निर्णय खुद मैं नहीं कर पाती. ओना मुझे अब भी नहीं भूल पाया है—दूसरी लड़की से शादी कर लेने के बाद भी. माना उसकी स्मृति मेरे लिए पालतू कुत्ते को कच्चे गोश्त के टुकड़े फेंक देने भर की है. यही क्या कम है ? वह चाहे तो यह भी नहीं कह सकता. अब शायद बात साफ हो गई होगी कि मुझमें पुरुषों के लिए हविश कतई नहीं थी. ओना औरतों के लिए है, क्या इसमें अब भी कोई सन्देह रह गया है ? मैं साठ की हूँ, यह नब्बे का, नई बीबी तीस की. अजीब है संख्याओं का यह खेल ! सब में तीस है. तीस सबको काट सकता है. शायद मेरी परिणति मुझसे अपरिचित नहीं....

■■

'यह मकबरों का जंगल है हुजूर...देख रहे हैं न आप ! कितनी दूर तक चहार-दीवारी बनी है. इन्हीं प्राचीरों के घेरे में सोयी तमाम तृषित, अतृप्त कुण्ठित और अतृप्त आत्माओं के पार्थिव शरीर के ढेरों में से एक फेनी का भी होगा. नहीं कह सकता कौन है ? घास-फूस और तमाम बनैली झाड़ियों ने उग कर पेड़ का चेहरा ढक लिया है. उन्हें काटने की कई बार कोशिशें की गईं. कुछ काटे भी गये. लेकिन उनकी जड़ें मरती नहीं. वे फिर देखते-देखते अपने पुराने स्वरूप में आ जाते हैं. यह पुस्तिका आप लौटा दें. यह रिकार्ड है हुजूर ! इसे मैं किसी को नहीं देता. देख रहे हैं पन्ने, पन्ने-पन्ने अलग हो गये हैं—एकाध तो अक्षर भी. लेकिन मुझे इसकी चिन्ता नहीं. पढ़ने वाले अक्षरों को जोड़ लेते हैं. कुछ दिन पहले बिजली आई थी. फिर चली गयी. आती जाती रहती है. इसीलिए मैंने इस लालटेन को स्थायी रूप से रख लिया है.' टोनी रिकार्ड की तरह बोलता गया था.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

राबर्ट का चेहरा कुछ और उदास हो गया था. लग रहा था उन तमाम मकबरों में से एक आकर उसके चेहरे पर टंग गया है. श्लथ हाथों से पुस्तिका लौटाते हुए उसे चूमा था. फिर गिरे लहजे में कहा—'टोनी अगर तुम इस पुस्तिका को मुझे दे दो तो बड़ा उपकार करोगे ? मैं इसे छपवाऊँगा.'

'हुजूर बहुत लोग इस दरगाह में आते हैं. सभी यही कहते हैं. कुछ लेकर गये हैं. पर अब तक नहीं लौटे. और फिर यह पुस्तिका पूरी कहां दिखाई आपको ?' पुस्तकों के ढेर में उसे फेंकते हुए उसने कहा.

'क्या वे मुझे देखने को नहीं मिल सकते ?' राबर्ट की उत्सुकता बढ़ गयी थी.

वह हँसा. सफेद दाढ़ी और सफेद बर्फ की तरह बालों में पूरी की पूरी हँसी उलझ कर रह गई.

'मुझे ढूँढ़ना पड़ेगा और आप जानते हैं जंगल में चीजें जल्दी से ढूंढ़ने पर नहीं मिलतीं.'

'अभी कितने पन्ने होंगे ?'

'सैकड़ों...'

'सैकड़ों !'

'हूँ....' एक अन्यमनस्कता के साथ उसने सिगरेट सुलगा ली थी.

राबर्ट ने फिर एक कोशिश की—'टोनी उन पन्नों को तुम ढूंढ़ दो. हो सके तो मकबरा भी दिखा दो. यह मेरा आग्रह है.'

टोनी ने राबर्ट की तरफ देखा. चेहरा सूख गया था. सूखी मिट्टी के ढूह की तरह.

'फेनी तुम्हारी कौन थी ?'

'मां...'

टोनी स्तम्भित रह गया, फिर भी कुछ न कर सकने की स्थिति में था. पूरा कमरा इसी तरह की किताबों से भरा है—धूल-गर्द से सना. अन्धेरा हो चला है—गहरा. लालटेन उससे लड़ नहीं पा रही है. एक साँस लेते हुए कहा—'मेरे प्यारे दोस्त, तुम्हारे साथ मेरी पूरी हमदर्दी है. लेकिन मेरी भी कुछ परेशानियाँ हैं. तुम कल सवेरे ही आ जाओ. मैं तुम्हें सब दिखा दूंगा. विश्वास रखो.' वह उठ कर कमरे के चक्कर काटने लगा था. एक आलमारी में कुछ बिखरे पन्ने पड़े थे. उन्हें उठा लाया. राबर्ट के सामने रखते हुए बोला—'यह मेरी आखिरी कोशिश है. शायद एकाध पन्ना फेनी का भी हो.

दरगाह बिलकुल खामोश थी. बीच-बीच में जंगली जानवरों की आवाज उस खामोशी को भयावह बना देती. बस्ती से काफी दूर इस मुर्दा-टीले में केवल दो प्राणी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक टोनी एक राबर्ट. उनके भी चेहरे पर मुर्दनी कोई कम न थी.

राबर्ट जल्दी-जल्दी पन्नों को पलट रहा था, बारीकी से देखते हुए. सहसा एक पन्ना मिला. वह पढ़ने लगा—'यह उस औरत की असलियत है जिसने कभी अभाव नहीं महसूस किया. किसी चीज का. सब कुछ होते हुए भी जिसने एक अतृप्त प्राणी का जीवन बिताया'—फेनी. दो एक लाइन छोड़ कर फिर लिखा था—'मेरी आखिरी ख्वाहिश है कि मेरी कब्र पर यह लिखा जाये—मैं जिंदगी में कई बार मर चुकी हूँ. रुसवाई नहीं गयी तो अपनी हठधर्मिता के कारण. मैं लड़ती रही नकारात्मकताओं की लड़ाई. अब हार गई हूँ जी.....

'मिल गया टोनी. सब कुछ मिल गया. अब आसानी से हम उस मकबरे को ढूंढ़ लेंगे.'

टोनी की आँखें अन्धेरे के कारण उदास दिखाई पड़ रही थीं. 'क्या मिल गया मेरे दोस्त ?' एक भर्राई आवाज़ में उसने पूछा.

'पता..... यह उसकी कब्र पर लिखा होगा.' लिखा वाक्य वह दुहरा गया.

मुसकराना चाह कर भी टोनी इस बार खामोश रहा, निश्चल—यहाँ कभी कुछ नहीं मिलता मेरे दोस्त. यह खोने की बस्ती है. यहाँ सब कुछ खो जाता है. यह इसीलिए बनाई गई है. सारा वैभव, यौवन, सौन्दर्य यहाँ आ कर मिट्टी में मिल जाते हैं. न जाने कितनों की ख्वाहिशें सिर्फ कागज तक सीमित रह जाती हैं. किसे पड़ी है कि मकबरे पर कुछ खुदवाये. छोटे आदमियों की दरगाहें भी छोटी होती हैं. टोनी बैठा सोच रहा था, यही सब. और राबर्ट लालटेन ले कर निकल पड़ा था ढूढ़ने, फेनी की कब्र. कब तक ढूंढ़ता रहेगा ? मिलेगी भी या नहीं, इसे टोनी अच्छी तरह जानता है. इसलिये खामोश बैठा है. उदास है तो सिर्फ इसलिए कि उसकी रोशनी छिन गई है ■■

२।३७३ नवाबगंज, कानपुर-२

मुर्ग मुसल्लम

अमेरिका के एक कोर्ट में एक होटल वाले पर चिकेन में घोड़े का मांस मिलाने का आरोप लगा कर मुकदमा पेश हुआ. जज ने होटल वाले से पूछा, 'तुम किस अनुपात में गोश्त में मिलावट करते थे ?'

'आधा आधा' होटल वाले ने कहा.

'क्या मतलब ?'

'जी' होटल वाले ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया, 'एक मुर्ग मुसल्लम में एक घोड़ा मुसल्लम'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

डा० कृष्णनन्दन सिनहा

मेरी उसकी चाह

मौसम मध्य-शीत का था और ठंढक कम नहीं थी. लेकिन मैं तो ठंढे देशों में भी रहा हूँ और बर्फ़बारी के दरम्यान भी रात-बेरात घूमता रहा हूं. एक बार, बस एक ही बार, शीत की ठिठुरन महसूस की थी. जेन के कहने पर सिनेमा चला गया था और आधी रात तक एक अजीब ख्याल में डूबा हुआ 'शो' देखता रहा था. बाहर सड़कों पर बर्फ जम कर पत्थर हो गई थी, और टेम्परेचर शून्य से भी नीचे चला गया था. फिर मेरे हाथ पैर शून्य-से होने लगे थे, और अगर जेन ने सहारा नहीं दिया होता तो पता नहीं क्या हो जाता. उसने मुझे मेरे 'अपार्टमेन्ट' तक पहुँचा दिया था. 'हौट-शावर' लेने के बाद उसने कॉफी बना कर पेश की थी. कमरे का टैम्परेच उसने एक सौ डिग्री फारेनहाइट स्थित कर दिया था. और रेडियो ग्राम पर पैगनर का 'ट्रिस्टम और ईसौल्ट' लगा दिया था.

लेकिन अब तो वह किसी बीते हुए, खूबसूरत जमाने की बात हो गई है. उस वक्त जीवन में बसन्त था पर अब तो मैं मध्य-शीत के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

और गुजर रहा हूँ.

कहाँ जेन और कहाँ रम्भा !

बहुत घरेलू, किस्म की औरत है यह तो. उसने 'फायर प्लेस' में लकड़ियाँ सहेज कर रखीं और धीमे आग जला दी. बहुत धुआँ होने लगा और मेरी आंखें रुआँसी हो आईं. मैं उठ कर खिड़की के पास चला आया और शीशे पर जमें शबनम को देखने लगा. बाहर का संसार पारदर्शी शीशे के बावजूद ओस की परत की वजह से धुन्धला दीखने लगा. स्याह चोटियां कहीं नजर नहीं आ रही थीं. सेमर और यूक्लिप्टस के पेड़ छिपे हुये थे. लैम्पपोस्ट की रोशनी फीकी और उदास दीख रही थी, और मेरे मन मे एक संत्रावह रिक्तता, एक क्लान्त उदासी—

मैं लौट कर फायर प्लेस के पास आ गया जहां रम्भा बड़ी लगन से नई, तेज और लाल लपटों को देख रही थी.

रम्भा अभी भी सुन्दर है. आंखें हिरन की आंखों जैसी खिंची-खिंची भयभीत, मुख लावण्य से निखरा-निखरा, होठ, नाक, कान ठोढ़ी सभी अपनी जगह पर ठीक सुसज्जित. पर रम्भा कितनी जर्द और पीली लग रही है—लाल आग में जैसे टेसू के फूल पर जूही की रंगत !

उस समय मेरे मन में रम्भा के लिए बहुत ममता उमड़ पड़ी, हमेशा तो यह बीमार रहती है—कभी वह आब नहीं रहा आया जो मोती को मोती बनाता है !

'मैं क्या करूँ. रम्भा, मेरा मन कहीं नहीं लगता.' मैंने आग की लपटों की ओर देखते हुये कहा.

रम्भा ने उदास-उदास नजरों से मुझे देखा. लाल किरण उसकी आंखों में तिरीं, फिर मन्द हो गई. वह धीमें से बोली—'कहानियां क्यों नहीं लिखते ! पहले कितना नाम था आपका.'

मैं अनमना-सा हंसा. शब्द मेरे पास नहीं थे कि जो दर्द मन-प्राण को सालने लगा था, उसे व्यक्त करता.

'कहानी लिखने के लिए जरूरी है कि प्रेम हो. कलाकार मोहबन्ध हो कर ही तो लिखता है.' मैं ने कहा.

'पहले कैसे इतना अच्छा लिख लेते थे ?' रम्भा ने सहज भाव से पूछा.

'पहले ? तुम से ब्याह होने के पहले जेन के मोह में बंधा था; फिर तुम आईं मेरे जीवन में और शब्द मेरे मोह राग से बेश कीमती हो आयें. अभी भी तुम्हें बहुत और अबाध रूप से मानता हूं पर एक कड़ी टूट गई है जैसे... चालीस के गलत सिरे पर आ कर आदमी बहुत बेसहारा और बेजार हो जाता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

PEACOCK BRAND

कागज के
इस
घोर संकट में
आपकी
सुविधाओं
के लिए
हम प्रयत्नशील हैं.

महेश ट्रेडिंग कम्पनी

मैप लिथो, उड फ्री प्रिंटिंग पेपर, सभी प्रकार के पोस्टर पेपर, क्राफ्ट एवं बोर्ड के स्टाकिस्ट.

बुलानाला, वाराणसी—फोन : ६४८१६

वितरक—

- ओरिएंट पेपर मिल्स लि० ब्रजराज नगर (उड़ीसा)
- दी सिरपुर पेपर मिल्स लि० सिरपुर (आंध्र प्रदेश)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रम्भा ने कहा कुछ नहीं. उसके मुख पर एक गहरी, रहस्यमय भावना दीखी. वह बोली—'तो फिर प्रेम कीजिये किसी से.

■■

रम्भा से तो नहीं कहा, लेकिन अपने मन को कैसे समझाऊं ? अब अगर मैं पागल नहीं हो जाऊं तो आश्चर्य ही होगा, मैं सचमुच—सम्पूर्ण हृदय से—प्रेम में हूं.सुबह घूमने जाने की मेरी आदत है—चाहे ग्रीष्म हो या शीत,बसन्त या बरसात. इसी घूमने के सिलसिले में झीलों की ओर निकल जाता हूं.रोज-रोज रामकृष्ण आश्रम के पास वाले सुर्मई रंग के बंगले से तीन लड़कियाँ निकलती हैं जो 'स्विमिंगपूल' और बुद्ध मन्दिर तक जा कर लौट आती हैं,उन तीनों को मैं देखता हूं. दो तो बहुत औसत-सी हैं पर जो हरा स्कार्फ लगाये लगाये, अविकल नीली आँखों वाली रहती है उनके साथ, वह बरबस मेरा ध्यान आकर्षित कर लेती है.वह गौर वर्णी है,और आँखें गहरी नीली. मैं ने विदेश में भी नीली आंखों वाली 'ब्रूनेट' देखी हैं, पर यह तो सब से अलग है. मैं रोज देखता हूँ कि वह झील में मछलियों को दाने खिलाती है, और बुद्ध मन्दिर में बड़ी लगन से प्रणाम करती है जैसे समर्पिता हो किसी की, और भगवान में रम गई है.उसकी झील-सी आंखों में न जाने कैसी एक कसक होती है जो मेरे मन में लहरें पैदा कर देती है. मुझे क्यों उसे देखना भाता है,यह भी नहीं जानता. जब किसी दिन वह नहीं दीखती है तो सारा दिन ही बरबाद लगता है. और जब सूरज शैलाभ-सा पूरब में उदित होता है और गुलाबी शीत बिखरने लगती है और पानी पर फूलझड़ियां फूट पड़ती हैं तो मुझे लगने लगता है कि काश वह भी यह दृश्य देखती ! वैसे ही जब धुन्ध घना होता है और बादलों के रेशमी धागे आकाश में यहां-वहां टूटते हैं तो उसका वहाँ नहीं होना मुझे अच्छा नहीं लगता.

मैं नहीं जानता था कि रम्भा से परिचित होगी वह—और जब जाना तो भला ही लगा मुझे. उस दिन रम्भा भी मेरे साथ बुद्ध मन्दिर गई थी और वे तीनों लड़कियां वहीं थीं उस समय.वह नीली आखों वाली समाधिस्थ-सी खड़ी थी प्रतिमा के सामने, और रम्भा उसे विस्मय से देख रही थी. जैसे ही उसने प्रार्थना समाप्त की, रम्भा ने मुसकराते हुए कहा—'हो गई पूजा तुम्हारी, अर्चना ?'

अर्चना ने सादगी और विस्मय से रम्भा को देखा, फिर मुख पर गुलाब फूट पड़े. 'अरे आप ? इतने दिन कहाँ रहीं ? मैंने तो समझा था कि पृथ्वी के अतल तल में खो गई होंगी कहीं...'

'कैसी अपशकुन वाली बात कह रही हो तुम ? मैं बीमार-बीमार रहती हूँ तो क्या मेरे जीने की कामना भी नहीं करोगी ?' रम्भा ने कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दोस्तों के नाम

आओ, हम अपनी 'नाम-पट्टिकायें'
जगह-जगह जड़ दें
जगह-जगह एक पट्टिका
रेलवे स्टेशन पर लगायें
एक बस स्टैंड पर
एक हर तांगा-रिक्शा-टैक्सी स्टैंड पर
एक हर बस स्टाप पर
एक हर सड़क पर
और एक गली के उस मोड़ पर
जहां हम रहते हैं. 'कवि श्री.....
कथाकार श्री.....पत्रकार श्री.....
अपने नाम के पहले स्वयम् 'श्री' जोड़ लें
वरना कोई और नहीं जोड़ेगा.
कोई माने-न-माने हम अपने आप ही
'लब्ध-प्रतिष्ठ' बन लें !
कुछ शेष पट्टिकाओं पर लिखें
'संघर्ष रत श्री.....
कैंसर से अस्वस्थ श्री.....
मरण-शैय्या पर श्री.....
आर्थिक सहायतापेक्षी श्री.....
यदि ये सब हम न कर पाये तो
हम मर जायेंगे जवान मौत और तब
तथाकथित साहित्यकार
हम पर लेख लिखेंगे,
अपने संस्मरण छपायेंगे
पारिश्रमिक बटोरेंगे
और हमारे बाल बच्चे
भूखों मरेंगे, मरते रहेंगे.....!

—कृष्ण कमलेश

'मेरा मतलब यह नहीं था. सुना था, आप अपने पति के साथ विदेश चली गई थीं. आप के स्कूल छोड़ने के बाद कोई टीचर उतनी संवेदनशील और योग्य आई ही नहीं.'

'अब तुम्हारा कौन-सा साल है ?'

'युनिवरसीटी में हूं—एम० एस० सी० फाईनल में.'

तब रम्भा ने मुझे देखा जब मैं मोह-बन्ध-सा अर्चना को देख रहा था. मैंने उससे से कहा, 'अब चलो.'

रम्भा ने कहा—'यह है अर्चना. मेरी स्टुडेन्ट थी, अवन्तिका में. कितनी मोटी-सी थी यह, पर अब तो बहुत लावण्य की अधिकारिणी हो गई है. और ये मेरे ... यूनिवरसीटी में साईकोलॉजी के लेक्चरर.'

'काश मैं भी विज्ञान में होता तो ... का क्लास लेता.' मैंने कहा जिस पर अर्चना हौले से मुसकराई. मुझे लगा कि मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था क्योंकि प्रथम परिचय में ऐसी बातें कही नहीं जातीं.

उसके बाद से अर्चना अपनी दोनों सहेलियों के साथ घूमती हुई इसतरह प्रतीत होती कि जैसे मेरा हृदय एक रास्ता है—मन्दिर का रास्ता—और वह भव्य चरण रखती हुई उस पर से गुजर रही है. जब कभी मेरी आंखें विह्वल-सी उसकी कमल जैसी आंखों से जा टकरातीं तो लाज का एक नवल आभास हो जाता उसे और शायद मुझे भी. जब मेरे होठों पर हल्की, संचित-सी मुसकान आती तो वह मोहक मुसकान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से जवाब दे देती लेकिन कभी बातें नहीं होतीं. उससे आमने-सामने गुजरने पर कभी अगर मैं चाहूँ भी कि दो शब्द बोल लूं तो वह झील, बुद्ध की प्रतिमा स्विमिंग पुल और रामकृष्ण बीच में आ जाते. लेकिन रातों में बीमार रम्भा की गोद में सिर रख कर सो रहा होता तो झील के किनारे की कोई जोगनमेरे मन में होती. एक मोहिनी मूरत चुपके से सपनों के द्वार से प्राणों के मन्दिर में आ जाती और मैं जाग-जाग कर रातें गुजरता, और बावला-सा पूछता रम्भा से—'अब मैं क्या करूँ, रम्भा. जवाब दो.'

और रम्भा बस यही कहता—'कहानियां लिखिये. मन को स्थिर करने का यही एक मार्ग है—कला में अपने को आत्मसात करना. मैं कब तक आप के संग रहूँगी ? लेकिन मगर मैं तिल-तिल कर मर भी जाऊँ तो यह संतोष तो रहेगा कि आप को बनाया संवारा है.'

मुझे रम्भा, पता नहीं क्यों दोस्तोवस्की की सोनिया जैसी लगती है—बीमार, 'डेन्टली' जोगिनों की तरह.

**

उस दिन मेरा जन्म-दिन था—जो आज तक कभी मनाया नहीं गया था. रम्भा को उस दिन बहुत खांसी थी और वह बुझी-बुझी-सी लग रही थी. मैंने पूछा भी, 'तबीयत तो ठीक है न ?'

'हां,' फिर बड़े प्यार से कहा उसने—'याद है आज कौन-सी तारीख है ?'

'क्यों ?'

'आज आपका जन्म-दिन है. इसी दिन ईश्वर ने उसकी रचना की थी जो मेरा ईश्वर है. मैं कितनी खुशनसीब हूँ,'

'मैं ईश्वर नहीं हूं, रम्भा. तुम्हें मालूम नहीं कि मैं कितना हीन, कमजोर, और गिरा हुआ हूं...' मैंने कहा.

'नहीं, नहीं, ऐसा मत कहिये....अच्छा, मुझे एक खयाल आ रहा है कि अर्चना को खाने पर बुलाऊँ आज. लड़का बड़ी प्रिय लगती है मुझे. वह मेरी बड़ी 'फेवरोट' स्टूडेन्ट थी.'

'तो बुला लो न.' मैंने कहा और मुझे लगा कि आज सचमुच मेरा जन्म-दिन आ गया है.

'क्या-क्या बनाऊँ ?' रम्भा ने पूछा.

'जो मन चाहे.'

'अच्छा तो केशर की खीर, दही बड़े, आलू पनीर की सब्जी...'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'और मछलियाँ ?'

'नहीं, निरामिष है खालिस.' रम्भा ने कहा, 'पर एक शर्त है...आप को कहानी लिखनी होगी आज.'

'नहीं, नहीं, इतनी बड़ी सजा तो मत दो तुम !' मैंने हँस कर कहा.

रम्भा को खाँसी का दारा आया और खाँसते-खाँसते मुँह लाल हो आया, फिर एक अजीब सी मुर्झायी-सी जर्दगी लौट आई, और वह वाश बेसिन में कफ फेंकने गई.

उसकी तकलीफ से मेरा मन कुम्लाने लगा और मेरे मन में हुआ कि उसकी पीठ सहला दूं जिससे उसे राहत मिले. जब मैं बेसिन के पास गया तो पानी की धार से वह कुछ धो रही थी. पेसिलेन पर लाल रक्त के धब्बे थे.

'यह क्या, रम्भा ?'

'नहीं, कुछ नहीं, कण्ठ में कहीं खरोंच आ गई होगी...आप परेशान मत होइये' वह बोली, और कमरे में लौट कर सोफे पर निढास हो कर पड़ गई.

मेरा मन बहुत ब्याकुल होने लगा क्यों कि रक्त का आना कोई नई बात नहीं है सात साल पहले एक बार टुबरकुलोसिस उसे हुई थी जो ईलाज से ठीक हो गई थी अब दुबारा यह लक्षण...

'क्या पहले भी रक्त आया था ?' मैं ने रम्भा से पूछा.

'नहीं तो. आप तो बेकार परीशान होते हैं. मैं तो ठीक हो हूँ.'

'जाइये कहानी लीखिये....अर्चना को पढ़ाइयेगा,' वह मुसकरा कर बोली.

'अर्चना का ही क्यों ?' मैंने अनायास ही पूछ लिया,

'बता दूँ ?'

'हां—'

'क्योंकि आप की कहानियों की प्रेरणा अब मैं नहीं रही,' उसने कहा, और तकिये में मुंह छिपा लिया.

मुझे मालूम नहीं था कि औरतों को—बीमार, घरेलू किस्म की औरतों को—अन्तर्दृष्टि होती है. बस एक ही बार तो बुद्ध मन्दिर में अर्चना और रम्भा के बीच मैं था फिर रम्भा ने कैसे जान लिया कि कहीं मेरे मन में अर्चना है ! शायद इसी लिये उसने आज अर्चना को बुलाया भी है. अर्चना मेरी आने वाली कहानियों की प्रेरणा—यह कैसी बात कह रही है रम्भा, खाँसी के दौर के बाद, रक्त से सनी वाश-बेसिन के बाद. पर मैं क्यों अर्चना का नाम जपता रहता हूँ, झील पर, हर समय में? बुद्ध मन्दिर के पास? मोह विराग, सुख-दुख, जीवन-मृत्यु के मध्य क्यों झूलता रहता हूँ?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बार-बार यही एक प्रश्न क्यों उभरता है—मैं अब क्या करूं, कहां जाऊं, कैसे रहूं ?

■■

वह आ गई थी—अर्चना. मैं दूर ही दूर रहा उससे. रम्भा से खूब हिल-मिल कर बातें कर रही थी. मैंने केवल कण्ठ-ध्वनि सुनी उसकी—मीठी, हृदय में उतर जाने वाली. मैंने एक झलक भी देखी उसकी—पूर्णिमा का चांद हो जैसे. लेकिन सामने नहीं गया. टेलीफोन की घंटी बजी तो रम्भा ने पुकारा.मुझे उस कमरे में जाना था और अर्चना की ओर बिना देखे जब लौटने लगा तो रम्भा ने कहा—'बात नहीं करेंगे अर्चना से ?'

अर्चना उठ कर खड़ी हो गई, लजाती हुई, मुख नीचे किये. मैं क्या बोलूं ? मेरे अन्दर झील है, मन्दिर है, पर बात नहीं है. सो मैं ने कहा—'खाना पसन्द करोगी ?'

अर्चना ने सिर झुका कर जताया,'हां'

फिर मैंने पूछा—'कलकत्ता में कब से रह रही हैं आप ?' तो उसने जवाब नहीं दिया. रम्भा की तरफ़ देख कर बोली—'अच्छा, मैं चलूं अब.'

'अरे, रुको, रुको, इतनी जल्दी भी क्या है ?' रम्भा ने पुकारा.

पर वह बिना रुके तेजी से चली गई.

मैं स्थिति प्रज्ञ-सा खड़ा रह गया. मेरे अन्दर न झील है, न मन्दिर, केवल एक बात है जो आंखों में पिघल कर बह जाना चाहती है.

'अजीब लड़की है यह.' रम्भा ने कहा, 'अभी तो इतना घुल-मिल कर बात कर रही थी, पर आप के आते ही....'

मैंने जाने कैसे उस बात को सहेज कर कहा—'तुमने बेकार ही रोका था मुझे. इस लड़की को मोह-माया नहीं है कुछ भी...' लेकिन मेरी अपनी ही आवाज मुझे टूटती और बिखरती हुई लगी.

रम्भा ने मेरे दिल में कहीं आंखों के जरिये गहरे पैठ कर कहा,' सच कह रहे हैं ?'

'हां, तुझे विश्वास नहीं होता ? वह नहीं है मेरी कोई भी...तुम ही तो हो मेरी अर्चना...मेरी कहानियों की प्रेरणा तुम ही तो हो.'

रम्भा ने मेरे सीने में मुंह छिपा लिया और सिसक-सिसक कर रोने लगी ■■

—रमणीमोहन गार्डेन कलम बाग रोड,
मुजफ्फरपुर (बिहार)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुमार

चौ

सहसा वह किसी गाड़ी के तेज हार्न से चौंक पड़ा. कर उसने पीछे की ओर देखा. एक चमचमाती हुई एम्बेसेडर थी. उसे महसूस हुआ कि वह सड़क के बीचों-बीच खड़ा है. टाँगों को तेजी से उछालता हुआ वह एक ओर को हो गया. उसके करीब आकर रुकी.

—ओह, प्रेम साहब, आप !

इस बार पूरे होश में रहते हुए भी वह चौंक पड़ा. आंखों लेंस घूम कर एक स्त्री के चेहरे पर रुक गया. वह फुरती से के पास आया और जरबन मुसकरा दिया. स्नो-पाउडर से चेहरा खुशी से चमक उठा. लिपिस्टिक से सुर्ख किये होंठ

—आप को कहां जाना है.मिसेज कपूर ने ड्राइविंग अपना सफेद काग़जी चेहरा बाहर निकाल कर पूछा.

—मैं...प्रेम सोच में पड़ गया कि उसे जाना कहां है. एक लगहे बाद उसने बेतुका-सा जवाब दिया—मैंने...

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है.

मिसेज कपूर का चेहरा गुलाब की तरह खिल उठा. एक पल के लिए लाल, होंठ में मिले और फिर अपनी आवाज़ को जितना अधिक मीठा बना सकों, बना कर —तो आइये ना. आप को गाड़ी पर छोड़ दूँ.

प्रेम उचक कर अगली सीट पर बैठ गया. उसे और अधिक प्यास लगने लगी थी. भर दोनों खामोश बैठे रहे. कार डिलक्स रेस्टोरेन्ट के सामने जा रुकी.

दोनों केबिन के भीतर समा गये. प्रेम ने पूछा—आप क्या लेंगी.

—ठंडा. फिर मुस्करा कर मिसेज कपूर ने कहा—इस वक्त आपको ठंडी चीज की जरूरत है.

—मुझे. प्रेम चौका. अपने को शीघ्र ही सम्भाल कर पूछा—आखिर आपको कैसे चला कि मैं ठंडा लूंगा.

—आपका बार-बार होंठों पर जबान फेरना. आपकी नज़रें भी बता रही हैं कि को फौरन ठंडे की आवश्यकता है. प्रेम कुर्सी से और भी चिपक गया. उसकी दशा उस अपराधी की तरह हो गई जिसने अपनी ओर बढ़ते पुलिस अफसर को लिया हो. मगर अपने आप को इस स्थिति से उबारने के लिए मिसेज कपूर की में साथ हो लिया.

कोल्ड कॉफी पी कर बाहर आये. उस समय तक प्रेम अपने को सामान्य कर चुका मिसेज कपूर के हर संभावित प्रश्न के लिए तैयार था.

—अब किधर चलें.

प्रेम कोई जवाब दे कि इससे पहिले उसने स्वयं कहा—क्यों न रंगमहल चला नई इंग्लिश पिक्चर लगी है.

—चलिये. उसने छोटा-सा उत्तर दिया और गाड़ी में बैठ गया.

गाड़ी स्टार्ट हो कर चिकनी सड़क पर भागने लगी. हर टर्न पर मिसेज कपूर के हुए हाथ स्टियरिंग व्हील के साथ घूमने लगे. स्टियरिंग घूम रही थी. चक्के घूम रहे मिसेज कपूर के विचार घूम रहे थे और इन सबके बीच प्रेम का ख्याल घूम रहा वह बार-बार सोचता और सोच कर खामोश रह जाता. उसे डर भी था, कहीं नाराज़ न हो जाये. बड़ी कोशिशों के बाद यह पानी से लबाल ग्लास हाथ लगा अंत में वह ही पूछ बैठा—कपूर साहब कहां हैं.

उसका सोचना सही निकला. पहिले होंठों को अजीब तरह से सिकोड़ा फिर सांस लेकर कहा—पीकर, मिसेज सिद्दीकी, मिसेज सिंह या मिसेज साहनी के में मन की प्यास बुझा रहे होंगे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

—क्यों, घर पर तो आप...

—हां.लेकिन क्या हो सकता है.मिसेज कपूर ने तीखी नज़रों से प्रेम को तकते हुए कहा—घर की मुर्गी साग बराबर हूँ. कितनी हीं नमक-मिर्च लगाओ, स्वाद नहीं रहता.

थियेटर में अधिक भीड़ देख मिसेज कपूर ने कहा—भीड़ अधिक है. क्यों न बाक्स में चलें.

उसने सिर हिलाया और बुकिंग विंडो की ओर बढ़ गया. पांच मिनट बाद वह वापस आया तो उसका चेहरा लटका हुआ था. चेहरे के भाव को मिसेज कपूर भाप लिया और फिर भी पूरी जानकारी लिए पूछा—क्या हुआ. एक बार सिर हिला कर उसने बताया—पिक्चर रोमाँटिक है. नवयुवकों की भीड़ अधिक है. इसमें किसी की खैर नहीं. यह तो पुलिस वाले ही जाने कि वह इनसे कैसे निपटते हैं.

उसको इस लम्बी-चौड़ी बातों पर ध्यान न देकर मिसेज कपूर ने कहा—अब?

—अब, तुम्ही कहो. प्रेम ने उलटा प्रश्न किया.

—चलो कोई भी फिल्म देख लें. मिसेज कपूर ने इतनी गिरी हुई आवाज में कहा कि जैसे यदि उन्होंने यह अंग्रेजी फिल्म न देखी तो उनका खाना हजम नहीं होगा. बूरी है.चाहे खाना हजम हो या न हो.अच्छा खासा वक्त कट जायेगा.और नहीं तो कुतिया की तरह इधर से उधर अकेली भटकते रहने से क्या फायदा.

कार अल्पना टाकीज़ की ओर घूम गई. अचानक झटके से कार को रुकते देख पूछा—क्या हुआ. दरवाजा खोल नीचे उतरते हुए मिसेज कपूर ने छोटा-सा उत्तर दिया—नहीं मालूम.फिर बानेट उठा कर इंजिन को ध्यान से देखने के बाद वापस आ सीट पर आकर पुनः कार स्टार्ट करने का प्रयास करती हुई बोली—लगता है, पेट्रोल चुक गया.

—फिर. प्रेम का मुंह लटक गया.

—फिर. मिसेज कपूर ने इस तरह कहकहा लगाया मानों उसके मन के भाव को ताड़ लिया हो. उसी तरह हंसती हुई कहने लगी—अब गाड़ी धकेल कर किसी पेट्रोल पम्प तक पहुँचाएंगे. फिर बिलकुल ही उदास हो कर कहने लगी—क्या आप इतनी सी सहायता नहीं करेंगे ?

सहायता.....और वह भी लगभग दो फर्लांग गाड़ी धकेल कर. प्रेम को जैसे ही विचार आया उसके चेहरे पर पसीना झिलमिलाने लगा. न जाने कब तक इसी तरह के विचार में खोया रहता कि अचानक आवाज़ पर चौंका.मिसेज कपूर कह रही थीं—प्रेम साहब, ज़रा जल्दी कीजिये वर्ना पेट्रोल पम्प बन्द हो गया तो घर जाना

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ढकेलियेगा.

—घर तक! वह सिहर गया और अपनी पूरी ताकत से गाड़ी ढकेलने में जुट गया.

पेट्रोल पम्प तक ढकेलते हुए वह पसीने से नहा उठा. शरीर से निकलता हुआ नमकीन पसीना उसके जिस्म में चिपचिपाने लगा. रूमाल से उसने पसीना पोंछा और श्रम से जा कर पिछली सीट पर हांफने लगा. कुछ ही पल में २० लीटर पेट्रोल गाड़ी की टंकी में समा गया. बिल पेमेंट के लिए प्रेम ने अपना पर्स मिसेज कपूर की ओर बढ़ाते हुए कहा—जितना लगे, ले लो. पर्स हाथ में ले कर उसने एक पल तक उसके वजन को महसूस किया और सौ रुपये के एक नोट अटेंडेंट की ओर बढ़ा दिए. कार जब स्टार्ट हुई तो आँखें बन्द किए हुए वह मिस्टर बी० के० कपूर के जीवन को टटोलने लगा. कपूर साहब एक प्राइवेट फर्म के जनरल मैनेजर हैं. अधिकतर काम का बहाना बना वे अपनी गर्ल फ्रेन्ड के साथ रात बिताया करते, या कभी पार्टी का बहाना ले कर घर से, मिसेज़ कपूर से दूर रहा करते. पीते और पी कर रात भर अपनी फ्रेन्ड की पहलू में खुद को गर्म करते. मिस्टर कपूर ने इस बात पर कभी ध्यान नहीं दिया कि उनकी पत्नी की रात कैसे गुज़रती होगी.

उसे अपनी पत्नी लक्ष्मी को याद हो आयी. वही लक्ष्मी जिसने समाज के समक्ष अग्नि देवता की सौंगध लेकर प्रेम को अपना देवता मान लिया था. वह उसके सुख-दुःख की भागीदार बनी थी. वही अब उससे मीलों दूर अपने बाबा के घर रह रही थी. न जाने उसने कभी स्वप्न में भी उसे याद किया या नहीं, शायद ही किया हो. अब तो वह अपनी मुन्नी को प्यार से चुमकारते हुए सारा समय बिता देती होगी.

मुन्नी का ध्यान आते ही प्रेम के चेहरे पर विशाद की रेखायें उभर गईं. उसे पूर्ण विश्वास था कि मुन्नी उसकी बच्ची नहीं है. वह किसी और के अंधेरे का पाप है जो उसके सर मढ़ दिया गया था. इसी बात को ले कर उसने कितना पीटा था. मगर लक्ष्मी ने जरा भी विरोध नहीं किया. बल्कि वह सिसकती रही....मेरी कोख में पलने वाली संतान जब आपकी नहीं तो फिर किसकी है ? आखिर मैं आप के साथ आठ-आठ महीना गुजारी हूँ. इन दिनों किसी का मुंह भी देखा हो तो धरती फट जाय ताकि मैं इसमें जीते जो समा जाऊं. आप से एक ही बात पूछता हूँ कि ये संतान आपकी नहीं तो किसकी है ?

बेचारी लक्ष्मी, देहात की औरत! वह प्यार क्या जाने! मगर प्रेम को जो शक शुरू में हुआ वह अन्त तक बना रहा और डिलीवरी के समय उसे बाबा के घर छोड़ आया बाद में एक पत्र लिखा जिसमें उसने यह भी साफ-साफ लिख दिया—ये सन्तान मेरी नहीं है. और अब आपकी बेटी की जरूरत मुझे कतई नहीं. चाहे तो तलाक ले सकती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

❀ सफेद बाल काला ❀

रिवजाब से नहीं हमारे आयुर्वेदिक सुगन्धित (केश कल्याण) तेल के सेवन से बाल का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है. यह तेल दिमाग की ताकत और आँखों की रोशनी को बढ़ाता है. जिन्हें विश्वास न हो वे मूल्य वापसी की शर्त लिखा लें.

मूल्य ९॥), फुल कोर्स २६)

कल्यान भवन (के)

पो०—मैंरावरीठ (पटना)

सफेद दाग की मुफ्त दवा

सतत् प्रयत्न के पश्चात हमारी निर्मित महौषधि से शरीर के विभिन्न अंगों के सफेद दाग इत्यादि तरह-तरह के कठिन चर्मरोग एवं विकृत दाग, सूजन, सुनापन, एग्जिमा में पूर्ण लाभ होता है. इस दुष्ट तथा कलंकित रोग से अच्छा होकर हजारों ने प्रशंसा-पत्र भेजे हैं. लगाने वाली दवा एक फायल मुफ्त.

पं० ईश्वर दयाल गुप्ता वैद्य (के)

पो० मैंरावपीठ (पटना)

केवल ६) में घड़ी

आप १५ ज्युवेल्स व ५ साल की गारण्टी की घड़ी चैंप सिस्टम में ६) रु० में प्राप्त कर सकते हैं.

पोस्टेज २,९० पै०

राधा वाच कम्पनी [के]

पो०—वागी वरडीहा (गया)

सुपरिचित हिन्दी कथा-लेखिका

इन्द्राणी

का चुनिंदा ग्यारह कहानियों का नया संकलन

टूटे घरौंदे ● मूल्य ३ रुपये

प्रकाशक—

साहित्यकार सहयोगी प्रकाशन, भदैनी, वाराणसी.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तलाक हुआ और तीन वर्ष का समय धीरे-धीरे बीत गया.

बीच उसे कई बार लक्ष्मी की याद आई किन्तु जैसे ही मुन्नी का ध्यान आता उसके चेहरे की नसें खिंच जातीं.

लक्ष्मी से अलग होने के बाद उसे अपने आस-पास खाली-खाली सा अनुभव होता. वह महसूस करता कि जो कुछ उसने किया वह लक्ष्मी के प्रति नहीं बल्कि खुद अपने प्रति अन्याय है और जब उसे अहसास होता है कि वह खुद अपराधी है तो इस अहसास को भुलाने के लिए दफ्तर से सीधा न्यू मार्केट की ओर पैदल ही निकल जाता. अकसर ड्राइवर खाली गाड़ी ले कर शिमला-हिल बंगले पर पहुँच गाड़ी गैरेज में नॉक करता और अपने घर चला जाया करता. प्रेम का कोई ठिकाना नहीं कि कब कितनी रात गये वापस आये.

प्रेम पहले तो रंग महल पहुँचता जहाँ रोज के देखे हुए फिल्मी पोस्टरों पर आधा घंटा नजरें फेरने के बाद मालवीय नगर के न्यू मार्केट में निरुद्देश्य घूमता रहता और जब थक जाता तो 'डिलक्स' में बैठ कर दो-तीन काफी के प्याले गले से नीचे उतार कर फिर मार्केट के चक्कर लगाने लगता. इस बीच वह किसी हँसते हुए जोड़े को अपलक घूरते रहता. मानों वह जागरण में ही स्वप्न देख रहा हो कि वह और लक्ष्मी जीवन के हज़ार दुःखों को पीछे छोड़ कर किस तरह हँस रहे हैं. अचानक किसी बच्चे का रुदन सुनते ही उसे मुन्नी का ध्यान आ जाता तो मुंह आप ही आप इस तरह बन जाता मानों कड़वी दवा हलक में फंस गई हो. और वह मुंह फेर कर तेज़ और निकल जाता.

गाड़ी बंगले के सामने रुकी तो जैसे प्रेम के विचार भी रुक गये. वह मिसेज कपूर के पीछे-पीछे किसी सम्मोहन शक्ति के द्वारा खिंचा-सा चला. बैठक में बिठा कर अन्दर जाते हुए मिसेज कपूर ने कहा—ज़रा कपड़े बदल लूं.

जब पन्द्रह मिनट बाद वह वापस आई तो थुल-थुल शरीर में महीन पेटीकोट पर सिर्फ ब्लाउज ही थी. हाथ में रम की बोतल और कांच के गिलास थे. सामने छोटी तिपाई पर इन चीजों को रख देने के बाद वह प्रेम की ओर देखने लगी. वह इस वेष में मिसेज कपूर को देख कर लगातार यही सोचे जा रहा था, बड़े लोग जो अपने आप को सभ्य समझने व कहलाने के शौकीन हैं उनकी क्या यही सभ्यता है कि एक गैर मर्द के सामने इस तरह अपने को उघार कर अपनी इच्छा जताएं ?

जवाब पाने के लिये उसने कई कड़ुवे पैग हलक से नीचे उतारे. सर चकराने लगा. कुछ नशे का सुरुर छाने लगा तो वह उठा और बिना कहे-सुने लड़खड़ाता हुआ अपने घर की राह चल पड़ा. उसका अन्तिम निर्णय था, कल सबेरे की पहली बस से रायपुर जा कर लक्ष्मी को ले आएगा. मुन्नी को चूम कर गले से लगा लेगा ■■

—सह-सम्पादक : दैनिक देशबन्धु, रायपुर (म० प्र०)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एक विश्व प्रसिद्ध उपन्यास

'इम्पीरियल वोमन' का सार-संक्षेप

अपराजिता

□ पर्ल बक

पश्चिम में जब विक्टोरिया राज कर रही थी, चीन में अन्तिम महिला सम्राट जूसी का युग था. उसने एक अत्यंत साधारण परिवार में जन्म लिया. मगर, वह अनिन्द्य सुन्दरी थी. उसका घर का नाम ऑरचिड था. सत्रह वर्ष की आयु में पेकिंग निषेधित नगर में तत्कालीन राजा की एक सौ रखैलों में से एक हो कर पहुँच गयी. मगर वह उन रखैलों से सर्वथा भिन्न बनी रही, क्योंकि वह बचपन से ही बहुत महत्वाकांक्षी थी. अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति में इस राज्याश्रय को उसने केवल एक सोपान माना. रखैल के रूप में उसका नाम पड़ा एहोनला. उस उस हिजड़ों और रखैलों के संसार में अद्भुत रूप से अपनेपन का प्रदर्शन किया. उसके आरम्भिक आचरण से भविष्य की शक्तियाँ और संभावनायें प्रकट होने लगीं. जब वह प्रथम बार राजा के सामने आयी तो उसने निगाहें नीची नहीं कीं. शैया पर राजा ने पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया तो उसने एक विचित्र उत्तर दिया और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहा,'जब राजा के निकट पहुँचने की मनौती में एक बार उसने अपने इष्टदेव को धूप समर्पित किया तो उसके धुंए से राजा का यही राजकीय चित्र उभर कर झलकने लगा था.' उसने आगे कहा,'वह अपना भाग्य जानती है, अतः डरती नहीं है.'

मगर जिस उल्लास से वह राजा की पर्यंकशायिनी बनने गयी वह एक आस्वाद के बाद राजा की पुंसत्वहीनता देख कर बुझ गई. उसका प्रसुप्त नारीत्व जाग कर कसमसाने लगा. उसकी दमित देह-भूख भड़क उठी. देहदान के बाद उसके भीतर एक विचित्र प्रेम की प्रतिक्रिया हुई और लौट कर रूठने का ऐसा हंगामा मचाया कि सभी दहल गये. उसने देवपुत्र की आज्ञा का उलंघन किया. अफवाह फैली कि उस पर राजा की गहरी आसक्ति है. उसे तैयार कर पुनः राजा के पास भेजना समस्या हो गयी. समाधान के लिए उसकी साकोता नामक दूर की बहन जो उसके साथ ही रखैल के चुनाव में आई थी तथा जो इस समय राज-गर्भ से सम्मानित थी, बुलाई गई. परन्तु इसने उसकी भी एक न सुनी. अन्त में सामने पहुँचाया गया जुंग लू, उसका बाल-प्रेमी. वह राजकीय सेना में साधारण गार्ड था. उसने उसे तब तक नहीं छोड़ा जब तक उसने इससे प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा नहीं मान ली और इस अलौकिक प्रेम पर के स्थायी चिन्ह स्वरूप 'लौकिक मुहर' नहीं लगा दी. फिर तो एहोनला के आगे उल्लास ही उल्लास भर गया. उसकी बहन सकोता को पुत्री हुई तो रास्ता और साफ हो गया जबकि इधर उसे पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई. पुत्रोत्सव में एक सप्ताह तक पेकिंग और वह 'निषेधितनगर' डूबा रहा. इस बीच एहोनला को एक बात बराबर खटकती रही कि क्यों सकोता उसे बधाई देने नहीं आई. वास्तव में वह उसके प्रेमी का रहस्य जानती थी. इस खटक को निकाल डालने के साथ उसके मन में अब अपने भावी सम्राट-शिशु के मार्ग को निष्कण्टक बनाने की अभिलाषा जगी. उसकी धारणा थी कि विदेशी लोग ही प्रमुख रूप से बाधक हैं.

'फार्चूनेट मदर' होने के साथ ही एहोनला का पद बढ़ गया. अब वह इम्प्रेस (शाहजादी) थी. नया नाम पड़ा जूसी और फिर वह प्रतिष्ठा के शिखर पर पहुँच गयी. एक महान नीतिज्ञता का काम उसने इस समय किया. सारा पद भुला कर बहुत विनम्रता के साथ वह स्वयं साकोता के पास गई और उसे मना लिया. अपने प्रभाव विस्तार के लिए उसने जाना कि कौन-कौन लोग उसके शत्रु और कौन लोग मित्र हो सकते हैं. उसके सम्भावित शत्रु ग्रेंड कौंसिलर शुशुन, प्रिंस सिक्स और प्रिंस चेंग हैं और सबसे बड़े सहायक प्रिंस कुंग हैं. धीरे-धीरे कदम बढ़ा कर वह अपनी महत्वाकांक्षाओं के लिए मार्ग बनाने लगी. इसी समय राजकुमार के जन्म-दिन पर राष्ट्रीय

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भूमि-कटाव
की
रोकथाम
के लिए
अधिक-से-अधिक
वृक्ष
उगाइए.

वन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

ग-१५२१७

नरेन्द्र कोहली का कथा-साहित्य

- परिणति
  ग्यारह सशक्त कहानियाँ
- एक और लाल लिफाफा
  सार्थक व्यंग्य की सत्ताइस रचनाएं
- पांच एब्सर्ड उपन्यास
  एक नई विधा में पांच तीखे व्यंग्य
- पुनरारंभ
  जिजीविषा को पुष्ट करने वाला अत्यंत रोचक उपन्यास
- आश्रितों का विद्रोह
  समकालीन परिस्थितियों पर एक प्रबल व्यंग्य-उपन्यास
- आतंक
  आधुनिक युग-बोध का अत्यन्त रोचक एवं सशक्त उपन्यास

- प्रकाशक : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, २३ दरियागंज, दिल्ली-६
- प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्सव का विशाल आयोजन हुआ. इस अवसर पर उसे कनसोर्ट का दर्जा मिला और वह इम्प्रेस आफ वेस्टर्न पैलेस कहलायी. वह देवपुत्र (राजा) की परम विश्वासपात्रा बन गई. वह राष्ट्रीय मामलों पर उन्हें परामर्श देने लगी. सभा-भवन में परदे के पीछे उसके लिए स्थान निश्चित हो गया. उसकी बुद्धिमत्ता के पीछे देवपुत्र सेनफेंग झुक गये. इस प्रकार पति और प्रेमी दोनों को सहेजती वह शक्ति और सौन्दर्य की देवी, विशाल पुष्ट काया और बड़ी-बड़ी सतेज आँखों वाली असाधारण साम्राज्ञी अपनी आकांक्षाओं की एक मंजिल पार कर गई.

['इम्पीरियल वोमन' में नारी को एक मार्मिक कोण से परखा गया है. नारीत्व और रानीत्व के सघन अन्तरसंघर्ष में अपराजित और अटूट व्यक्तित्व को निरवारती हर तड़पन को महत्त्वाकांक्षाओं की थपकियों से सुलाती और भयानक से भयानक राजकीय उथल-पुथल को धैर्य पूर्वक झेलती अपने समय की असामान्य सुन्दरी तथा अखण्ड युवा-उमंगों वाली पुरातनपंथी राजमहिषी जूसी पर्लबक की इस प्रेम-कहानी की नायिका है. अपने प्रेम, प्रेमी, पुत्र, राज्य और अपनेपन के लिए आजीवन कठोर संघर्ष करती यह नारी राजनीतिक कर्कशताओं और रोमांचक विरोध-बाधाओं की अनवरत बेधकताओं के बीच किस प्रकार अपनी कला-सौन्दर्यप्रियता तथा हृदय की कोमलता को सुरक्षित रखती है, पढ़ कर मन एक अनोखी तृप्ति से भर उठता है. दुनिया से दूर, राजधानी से लगे, हिजड़ों-रखैलों और दास-दासियों की विशाल फौज से भरे 'वर्जितप्रदेश' की वास्तविकतायें जहाँ चीन के विलासी राजाओं की वास्तविकताओं को प्रकट करती हैं, वहीं जूसी की राजनीतिक क्रियात्मकता की पृष्ठभूमि बन कर रहस्य-रोमांच को अत्यन्त गाढ़ा कर देती हैं. इसी क्रम में पर्लबक उपस्थित करती हैं चीन का एक समय का जीवन इतिहास, अत्यन्त रोचक, परम आकर्षक, मन को छूने वाली अद्भुत ताजगी से भरी भाषा-शैली में.]

कठिन समस्या थी दक्षिण में गोरे लोगों के उपद्रव की. उनकी तोपों और गोलियों से सभी आतंकित थे. एक दिन क्वांग प्रान्त का वायसराय जिसका नाम येह था, आ कर रोने लगा—गोरे क्रुद्ध हैं.क्या हो ? क्या युद्ध ? नहीं.जूसी की नीति थी—विलम्ब करो, न तो झुको, न इनकार करो. काफी बहस के बाद एक दिन प्रिंस कुंग ने उसका लोहा मान लिया. अब राजनीतिक समस्याओं पर उसके निर्णय की मुहर लगने लगी थी.

एक दिन एक विशाल सांस्कृतिक समारोह का आयोजन हुआ. राजा ने विधिवत् देवता की पूजा की. देवता का नाम ग्वार्डियन एन्सेस्ट्रल था.यह विस्तृत पूजा समारोह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वैसा ही था जैसा भारत के गाँवों में 'डीहबाबा' की पूजा होती है. राजा-रानी एक विशाल काफिले के साथ ग्रीष्म प्रासाद पहुँचे जहाँ की रंगीनियाँ और वैभव असीम थे. यह स्थान राजधानी से दूर गाँवों के बीच है. कुछ समय के लिये यहाँ के ग्रामीण राजा के पड़ोसी हो जाते. अतः पर्याप्त धनी हो गये थे. यहाँ आ कर जूसी ने मुक्त हवा में साँस ली तो बुरी तरह उसका प्रेमी चूंचू याद आ गया. वह छटपटा उठी. उसने उसके रैंक को इतना ऊँचा कर दिया कि मिलने में कोई रुकावट न रहे. कहानी ने प्रेम-कहानी का मोड़ ले लिया. जूसी ने एक स्त्रियोचित चरित्र का प्रदर्शन किया और अपने प्रेमी से मिल लिया. उसने स्थान को निर्मक्षिक बनाया था. मगर, परदे के पीछे पड़ी थी जुंगलू की एक और मौन प्रेमिका. बाद में वह बहुत साहसपूर्वक जूसी से बोली, 'वह आपसे प्रेम करता है.' जूसी उसके प्रति अति क्रुद्ध हुई, साथ ही साथ अति सन्तुष्ट भी. विचित्र है नारी हृदय! इस समय जूसी ने एक प्लान बनाया और एक तीर से दो शिकार करने की तैयारी की. जुंगलू का रैंक ऊँचा करना आवश्यक था. उस पर उसका विश्वास था. वह बेटे के बड़े होने तक अपना दिन लेना चाहती थी. उसे अपने दुश्मनों का ज्ञान था. वह अपनी दुर्बलताएं भी जानती थी. उसने जीवन को मोड़ देने के लिए एक नयी परम्परा का शुभारंभ किया. यह परम्परा कला से संम्बन्धित थी. उसने प्रतिष्ठित कलाकारों को बुलाया और उनका सम्मान किया. कलाप्रियता से उसके व्यक्तित्व का गर्वित

नया साल

एक साल नया और आ ही गया
एक साल पुराने और हुए—
ये धरती ये आकाश.
एक साल पुराने और हुए—
ये सूरज चांद-सितारे.
मस्ती और जवानी कल की
हो गई एक कहानी कल की
वासी हो गये उनके लब से—
निकले प्यार के बोल.
जीवन का अब भाव न पूछो,
घट गया दिल का मोल.
खुशबू जैसे साथ पवन के,
खेला करती है अठखेली
यूं ही संग मेरे खेला थी,
एक सुन्दर अलबेली.
आज वो अल्हड़ और अलबेली
हाथ में अपने दरपन ले कर
चुप-चुप और अफ़सुर्दा-सी
सोच रही है हैरत से—
जुल्फ के काले शीशे में,
चाँदी-सा कहां से बाल आया ?
और दूर पुराने बरगद पर
चिड़ियां हँसती गाती हैं.
सदशुक्र नया फिर साल आया.

—अलीम मसरूर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चुरचित रहने लगा.

'राजकुमार की एक अगली वर्षगाँठ पर जुंगलू को निमंत्रित करने के प्रश्न पर एक बार और वह देवपुत्र से रूठ गयी.उसकी प्रबल रूप-शक्ति के आगे देवपुत्र हार गये और जुंगलू निमंत्रित किया गया. दावत में जहाँ उच्च वर्ग के राजकीय पुरुष थे, एक मामूली गार्ड कैसे आ गया ? प्रश्न उठा मगर, इस उत्तर से कि शाहजादी का पूर्व साथीभाई है, समाधान हो गया. इस प्रकार जूसी ने अपने प्रेमी को खूब उठाया, क्यों कि वह अपने जिस उद्देश्य की ओर बढ़ रही थी उसमें वही उसका असली सहायक था. अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उसने अपनी बहन की शादी एक प्रिंस से कर दी. तभी खबर मिली कि दक्षिण से पुनः गोरों ने कैंटन नगर पर कब्जा करने की तैयारी की है. जूसी अपनी 'डिले' वाली नीति पर अडिग थी. राजपुरुष उससे परामर्श लेने आये तो उसने कहा, कि 'शत्रुओं से कहा जाय कि अपनी मांगें पेश करें और राजा के बीमारी से उठने के बाद उस पर विचार किया जायगा.'

राजा की बीमारी से अनिश्चित उत्तराधिकार चिन्तनीय हो गया. उत्तर चीनियों की मदद से कैंटन को गोरों ने हथिया लिया.जूसी'डिले' की नीति पर डटी रही.कहती हमें समझने दो.किन्तु गोरे बढ़े आने लगे तो संधि हो गई.वे फिर आगे बढ़े तो जवानों को भेज कर जूसी ने उन्हें मुँह तोड़ उत्तर दिया. चारों ओर जूसी की प्रशंसा होने लगी. प्रिंस कुंग गोरों से भयग्रस्त रहते थे. उनकी शक्ति को वे बराबर बढ़ा कर कहते थे. जूसी को यह पसन्द नहीं था. मगर,उसकी पसन्दगी से क्या होता है ? गोरे फिर आगे बढ़ कर राजधानी तक आ गये और तब पूरे राज परिवार को मय रखैल और हिजड़ों की सेना के सैकड़ों मील उत्तर जेहोल के उत्तरी प्रासाद भागना पड़ा. जब लोग भाग रहे थे तो बीच में ही धुंआ और आग दिखाई पड़ा. उस समय असीम वैभव विलास का केन्द्र ग्रीष्म प्रासाद लूटा जा चुका था और जला कर राख बना दिया गया था. नये स्थान पर आ कर जूसी ने धावक के मुँह से उस प्रिय स्थान की बरबादी, लूट-कत्ल का बयान सुना. वह बहुत क्षुब्ध हुई. यह क्षोभ इस कारण से और बढ़ गया कि वह यहाँ राजा के पास नहीं बुलायी गयी थी. उसे लगा कि उसके विरुद्ध कोई षडयंत्र हो रहा है. उसने सुना कि शुशुन आदि ने राजा से कहा है कि वह जुंगलू की प्रेमिका है.उसे यह भी मनक मिला कि उसके विरोधी राज हथिया-कर उत्तराधिकारी की हत्या करने वाले है. वह बहुत बेचैन हुई. कोई सहायक नहीं. प्रिंस कुंग शत्रुओं के बीच राजधानी में छूट गये थे. अन्त में उसने ली लाइन को प्रिंस कुंग के पास भेजा. प्रिंस कुंग लौटे तो ज्ञान हुआ कि उसका उत्तराधिकारी भी गायब कर दिया गया है. वह बहुत घबरायी. प्रिंस कुंग उसकी खोज में चले.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इस बीच जूसी ने उत्तराधिकार का एक घोषणा पत्र किंग की ओर से लिखा. उसे साहस से लड़का मिल गया और मरते राजा से उसने अपने पुत्र के उत्तराधिकार की विधिवत घोषणा, विरोधियों के विरोध और षड्यंत्र के बावजूद, करा लिया और स्वयं शासिका बन गयी. जुंगलू की सहायता से राजकीय मुद्रा प्राप्त कर लिया. रास्ता साफ था.

राजा की अन्त्येष्टि के लिए जब लोग राजधानी आ रहे थे, रास्ते में एक पड़ाव पर विरोधियों ने जूसी और उसके पुत्र को कतल करना चाहा. जुंगलू ने बड़े कौशल से उन्हें बचाया. जुंगलू वास्तव में मौन भाव से अपने प्रेम-कर्तव्य का पालन करता चलता. यात्रा पूर्ण कर जब सभी राजधानी पहुँचे तो प्रिंस कुंग ने

विशेष स्तम्भ

एक विश्व-प्रसिद्ध उपन्यास—

इस स्तम्भ में समय समय पर विश्व स्तर के लोकप्रिय और चर्चित उपन्यास का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत होगा. इसके अन्तर्गत स्कॉट लेखक लैरी फारेस्टर का एक विश्व प्रसिद्ध उपन्यास 'बैटिल आफ द एप्रिल स्टार्म' का संक्षिप्त हिन्दी रूपान्तर 'कहानीकार' के पूर्णांक २३(बंगला देश विशेषांक) में तथा पूर्णांक ३२ नवम्बर-दिसम्बर '७२ में मेरी कोरेंली का एक विश्व प्रसिद्ध उपन्यास—थीलमा प्रकाशित हो चुका है.

आगामी दो चयन के रूप में पढ़ें नोबुल पुरस्कार विजेता प्रख्यात अंग्रेजी उपन्यासकार हाइनरिश ब्यौल की एक सशक्त कृति और प्रख्यात अमेरिकन उपन्यासकार इरविंग वालेस का विश्व प्रसिद्ध उपन्यास—दी मैन. संबंधित अंकों की प्रतीक्षा करें.

मीटिंग बुला कर सावधानी से नीतियों पर विचार किया. विद्रोही फिर एक बार जोर पर आये थे. प्रिंस यी ने रिजेन्ट होने का दावा किया. जूसी ने विद्रोहियों को कैद करा लिया. शुशुन को सरे बाजार कतल करा दिया. शेष विरोधी आत्महत्या के लिए विवश हो गये. मगर जूसी की कठिनाइयों का अभी अन्त नहीं था. राजकुमार अभी पाँच वर्ष का ही था. दस वर्ष तक अभी राज-माता को ही सब सँभालना था. उसे गहरी चिन्ता थी क्योंकि चीनी लोग महिला शासक पसन्द नहीं करते थे. राजधानी पेकिंग में मृत राजा का संस्कार शेष था. विदेशियों से जो संधि हुई थी वह अपमान जनक थी. हरजाना प्रदान करने के साथ ही उन्हें व्यापार और धर्म प्रचार की स्वतंत्रता देनी पड़ी थी. दक्षिण के नानकिंग प्रान्त में विद्रोही शासक बन बैठे थे.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

युन्नाना में मुसलिम विद्रोही पृथकतावादी नीति पर चल रहे थे. जूसी को स्वयं अपनी छब्बीस वर्ष की जवान सपनीली आयु की चिन्ता थी. सबके बीच से राह बना कर उसे चलना था. पर कितना कठिन था !

एक दिन नानकिंग प्रान्त के विद्रोही हंग के आंतक के बारे में उसे खबर मिली कि वह ईसाई बन गया है तथा हत्या और लूटपाट के बल पर सत्ता हथियाना चाहता है. प्रिंस कुंग के असहमत होने पर भी राजमाता ने सैन्य संचालन और सुरक्षा व्यवस्था में हस्तक्षेप करते हुए जनरल को लिखा, 'वह जो कुछ कर सकता है करे. वह किसी कठिनाई के बारे में नहीं सुनना चाहती है. जैसे भी हो विद्रोही हंग का खात्मा होना चाहिये. इसके लिए उसे गहरा पुरस्कार मिलेगा.' उसने दृढ़ता से सारा प्लान तैयार किया.अच्छा काम करने वालों को पुरस्कृत कर करके एक अनुकूल वातावरण बनाया. उसने प्रिंस कुंग को 'प्रिंस एडवाइजर टू द थ्रोन' की उपाधि और जुंगलू को 'ग्रैंड कौंसिलर' का सम्मान प्रदान करने का निश्चय किया. इतनी कूटनीतिक और प्रशासनिक जटिलताओं में रहते हुए भी उसमें युवा उमंगें और कला-सौन्दर्य की भावनायें सुरक्षित रहीं. एक आश्चर्यजनक संयम और संतुलन उसमें दिखाई पड़ा. शुद्ध मनोरंजन के लिए इस बीच वह 'सीप्लेस' गयी. नाटक और संगीत का भव्य आयोजन हुआ. जब ड्रामा चल रहा था, बहुत घात से एकान्त में जुंगलू को बुला कर उसने कहा, 'उसे ग्रैंड कौंसिलर की जगह और लेडी मी से विवाह स्वीकार करना है,क्योंकि उसने राजमाता के जीवन की रक्षा की है.' उसने यह सुना तो दिया, मगर उस रात उसका नारीत्व जाग कर हाहाकार कर उठा. अपने प्रेम, प्रेमी और स्थितियों की विकटता को ले कर रात भर रोती रही. किसी प्रकार मन को रोक कर समझौता कर सकी. एक हलकी ईर्ष्या की भावना उठी कि उसका प्रेमी जुंगलू अब लेडी मी आओ की बाहों में रहेगा ? जंगलू भी सब समझता था. प्रेम की गहराई को मान कर विचित्र स्थिति मे विवाह के लिए तैयार हुआ. मगर, विवाह में जूसी नहीं सम्मिलित हुई. दो दिन उदास मन से शाही पुस्तकालय में चिकित्सा-विज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ती रही. शादी का प्रबन्ध चीफ एनक ने किया.

राजमाता जूसी विद्रोह और अनुशासन की बाढ़ को रोकने के लिए जैसे-जैसे प्रयास करती थी, वह बढ़ता ही जाता था. उसे दाल में कुछ काला लगा और एक बहुत साहसिक कदम उठाया तथा विद्रोही होने के सन्देह में प्रिंस कुंग को गिरफ्तार करा लिया. बाद में उनके विशिष्ट अधिकारों को छीन कर छोड़ दिया. उसने राजकुमार को विधिवत् सिंहासन पर बिठाना शुरू किया. उसे घुड़सवारी आदि की शिक्षा की व्यवस्था की. विद्रोहियों के खात्मे के अभियान को तेज कर दिया. अनवरत श्रम और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रार्थना के बाद प्रधान सेनापति फैन द्वारा विद्रोहियों का सफाया हुआ. उनका लीडर 'हीभेनली किंग' और उसका बेटा मारा गया. फैन राजधानी आया और 'हीभेनली किंग' का सिर काट कर सारे प्रान्त में घुमाया गया. राजमाता ने इस दृश्य को स्वयं भी देखा. इस विद्रोह दमन में विदेशी गोरे लोग विशेष कर गार्डन की सहायता मिली थी. परन्तु जब राजमाता की ओर से उसे पुरस्कृत और सम्मानित किया जाने लगा तो उसने इसलिये अस्वीकार कर दिया कि उसके द्वारा क्षमादान किये गये विद्रोहियों को भी कतल करा दिया गया था. पूरे देश को आश्चर्य हुआ. जूसी ने जाना और पहली बार अनुभव किया किया कि पश्चिम में भी अच्छे लोग हैं. मगर इस विचार से उसे डर ही लगा.

दक्षिण में पुनः शांति स्थापित करते हुए नानकिंग में सेनापति फैन मर गया तो उसकी जगह पर जुंगलू की राय से ली हंग बैंग को कमांड दी गयी. जूसी की आज्ञा से प्रिंस कुंग ने पाँच वर्ष तक कठिन श्रम पूर्वक पूरे देश से भारी कर उगाह कर मृत किंग के लिए एक शानदार मकबरा बनवाया. बहुत ठाठबाट से मृत किंग का शव उसमें दफनाया गया. इसके पुरस्कार में अपने पुराने पद प्रतिष्ठा और अधिकारों पर प्रिंस कुंग की बहाली हो गयी. तभी जुंगलू को पुत्र लाभ हुआ. घटनाओं ने एक विचित्र मोड़ लिया. राजकुमार के लिये योग्य राजकुमारिओं की तलाश की जा रही थी. इस अभियान में गये चीफ एनक को प्रिंस ने मरवा डाला. उसकी सगाई की चिन्ता राजमाता को खा रही थी. एक और भारी चिन्ता थी. राजकुमार में एक विचित्र विकास हुआ. वह अपनी माता के विरुद्ध रहने लगा था. फिर भी मां को कर्तव्य निभाना था. ६००० कुमारिओं में से १०१ को चुनाव परेड में बुला कर एक कुमारी अलूत को चुना गया और राजपुत्र चुंगशी की उससे शादी हो गई. राजमाता ने अपने को भारमुक्त महसूस किया.

घटनायें अत्यन्त तेजी से मोड़ लेने लगीं. अद्भुत शक्तिमता की उस अलौकिक राजमहिषी में सामान्य नारी हृदय की एक जातीय ईर्ष्या उत्पन्न हुई. वह अलूत के प्रति ईर्ष्यालु हो उठी. उसे लगा कि उसके बेटे को इस छोकरी ने छीन लिया. फिर तो द्वेष वश उसने एक भयंकर षड्यन्त्र किया. एक अत्यन्त सुन्दरी दासी को सिखा-पढ़ा कर अपने पुत्र की सेवा में कर दिया और ऐसे सधे हाथ का तीर चलाया कि बेटा फिसल गया. कुछ समय बाद विभिन्न शारीरिक मानसिक रोगों से ग्रस्त हो कर शैय्या ग्रस्त हो गया. एक बार जब वह गंभीर रूप से बीमार था, उसके आगे ही जूसी अलूत से इस प्रकार झगड़ पड़ी कि उसके धक्के से वह मर गया. जूसी राजवंश की नारी निकली. उसे पुत्र-राजा मरने की चिन्ता नहीं थी. वह अपने आश्रित उत्तरा-

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धिकारी की तलाश में परेशान थी. झपट कर अपनी बहन के बच्चे को उठा लाई. वह जानती थी कि अलूत के पेट में वास्तविक उत्तराधिकारी था. मगर उससे ईर्ष्याग्नि और भड़क उठती थी. एकदम भूखी शेरिनी बन गई थी, वह. उसने ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि अलूत को आत्महत्या कर लेनी पड़ी. घटनाचक्र में और मनोवैज्ञानिक तेजी आयी. जूसी का 'अहं' उत्तरोत्तर और बढ़ता गया वह उसे आहत होते नहीं देख सकती थी. अपने अहं की रक्षा के लिए प्रिंस कुक को, यहाँ तक कि प्रेमी और रक्षक-सर्वस्व जुंगलू तक को अपदस्थ किया साकोता को ऐसा दबोचा कि वह जाती रही. और विधिवत् उत्तराधिकारी छोटा राजकुमार क्वांग शू घोषित हुआ.

देश में शांति स्थापित थी. उस साल फसल अच्छी थी. पर राजमहिषी पूर्ण निश्चिन्त नहीं थी. ग्रीष्म प्रासाद वाला सपना उसके मन में उमड़ रहा था. वह उसके पुनः निर्माण में जुट गयी, मगर यह प्रयास बहुत मँहगा पड़ा. उसी का बनाया छोटा किंग उससे झड़प रहा था. इतना ही क्यों ? जासूसों ने समाचार दिया कि उसका वांग (राजा) उसे गिरफ्तार कर पूर्ण सत्ता हथियाना चाहता है. यह वही समय था जब जापान वाले बढ़ आये थे. राज सेना कमजोर पड़ रही थी. राजमहिषी चतुर्दिक से शक्ति संचयन में जुटी थी. विदेशियों को देश से बाहर निकालने का उसका पुराना उत्साह पुनः जाग्रत हो गया था. उसने पुनः जुंगलू का पदोन्नति कर दी. इस बीच एक दिन बुला कर उससे जम कर प्रेमचर्चा की. जुंगलू ने उसे पहले ही सावधान कर दिया था कि देश पर विदेशी खतरा है. उस दिन उसने पुनः यह बात दुहरा दी. जुंगलू विश्वासपात्र व्यक्ति था. उसकी इस सूचना से उत्सव का रंग फीका पड़ गया. एक दिन पुनः जुंगलू गंभीर परामर्श के लिए बुलाया गया. जूसी ने चीफ एनक को इस सूचना को दुहराया कि वास्तव में विद्रोहियों और आधुनिकतावादियों के बहकने में आ कर सम्राट उसे गिरफ्तार कराना चाहता था और उसने इसके पूर्व उसे ही गिरफ्तार करा लिया. यह एक गंभीर स्थिति थी और जुंगलू ने पुनः उसे सँभाला तथा वह पुनः पावर में आ गयी. जुंगलू प्रेम निभाना जानता था.

बाद में एक बार पुनः जोरदार मतभेद हुआ. जूसी का नारा था—विदेशियों को बाहर भगाओ. जंगलू का विचार था—शांतिपूर्वक वार्ता द्वारा समस्या का हल हो. वास्तव में जूसी कुछ बिखर रही थी. तरह-तरह के लोग उससे बात कर भरमा रहे थे. उसके जासूस भी उसे ठीक समाचार नहीं दे रहे थे. बराबर लग रहा था कि उसके विरुद्ध तगड़े जाल बुने जा रहे हैं. वह घबरा उठी. इस घबराहट में उसने विदेशियों से लड़ने के लिए निर्णय ले लिया. जुंगलू मना करता था. सभी हितैषी विरोध में थे. पर लड़ाई ठन ही गयी. लड़ाई के प्रथम चरण में ही, अचानक जूसी मर गयी और जुंगलू बेहोश पड़ा था. अब क्या हो ? उसने रूस इंगलैण्ड और जापान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्टेनलेस स्टील पैलेस
डी.११/२५ कोतवालपुरा, विश्वनाथ गली, वाराणसी
फोन: ६३६५१

गारण्टीयुक्त हिन्द व लकी
साइकिल
एवं
साइकिल-रिक्शा
तथा
असली पुर्ज़ों की
प्राप्ति का
प्रतिष्ठान

वितरक—वाराणसी
गाजीपुर, बलिया, मऊ

विश्वेश्वरगंज, वाराणसी
फोन : ६२८६२

राम बदन राम एण्ड कं० (मुनीमजी)

ब्रांच—गोपाल एण्ड कंपनी, सेनपुरा, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

से सहायता की याचना की मगर कहीं से कोई उत्तर नहीं आया. गृह-युद्ध छिड़ गया. जूसी कूटनीति में असफल हुई. विद्रोही और विदेशी आपस में लड़ कर फिर राज्य से लड़ने लगे. रानी परम अकेली और असहाय पड़ गई. इस संकट की घड़ी में उसे याद आया कि जुंगलू का कहना न मान कर उसने भारी भूल की. अन्त में वह उसकी शरण में गयी. उसने उसे सलाह दिया कि कुछ समय के लिये वह गुप्त रूप से कृषक नारी के वेश में कहीं दूर भाग जाय. यहाँ वह उसकी गद्दी की रक्षा करेगा. इस अवसर पर जुंगलू ने प्रथम बार उसे 'माई लव' कह कर सम्बोधित किया और रोती राजमहिषी का गाल थपथपाया. प्रेमी ने बारम्बर अपनी प्रेमिका को रक्षा का वचन दिया.

राजधानी छोड़ कर निर्वासन में रहते हुए जूसी ने सिअन नगर में आवास बनाया और सुना कि राजधानी और उसके महल को विदेशियों ने अस्त-व्यस्त कर दिया है. स्थिति विकट थी और पुनः एक बार जुंगलू उसे सुलह के लिए प्रेरित करने लगा. इस बार जूसी मान गयी. विदेशियों के आगे झुकने और सुलह के लिये राजी हो गयी. यद्यपि निर्वासन में भी उसका शाहाना मिजाज बराबर बना रहा पर जब जमीन पैरों के नीचे से खिसक रही थी तो वह करे भी क्या ? संधि हुई.

वह राजधानी लौटी. उसे लगा, पुराना सब चला गया. वह राजमहिषी के रूप में अपने नारीत्व के लिए अब तक बराबर तड़पती रही. उसका उच्च अभिजात अहं सदा आड़े हाथ आ जाता रहा. अन्त में जब जुंगलू भी उसे छोड़ कर सदा-सदा के लिये चला गया तो उसके अहं की कसी मुट्ठियाँ ढीली पड़ गयीं.

जूसी की यह वृद्धावस्था थी. अब वह अत्यन्त उदार बन गयी थी. अब वह 'एक ईश्वर की सन्तान' का नारा लगाने लगी थी. विदेशियों के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण एक उमर के बाद उसमें जाग्रत हुआ. अब उसे लोग 'ओल्ड बुद्धा' कहते थे और धीरे-धीरे मृत्यु की ओर बढ़ती वह ओल्ड बुद्धा प्रजा का प्रेम पा कर भी निजी जीवन में आजीवन अकेली घुलती ही रही.

—संक्षिप्तकर्ता : डा० विवेकी राय

॥ हाजिर जवाबी ॥

प्रख्यात एडवोकेट सी० आर० दास काफी नाटे कद के थे. वे काफी प्रतिभा सम्पन्न और पुरमजाक थे. एक बार कोर्ट में जज ने उनसे मजाक के लहजे में कहा, 'मि०दास आप तो इतने छोटे से हैं कि आपको मैं अपने जेब में रख सकता हूँ.'

'तब आपके दिमाग से अधिक दिमागदार आपका जेब हो जायेगा.' सी० आर० दास ने छूटते ही कहा.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

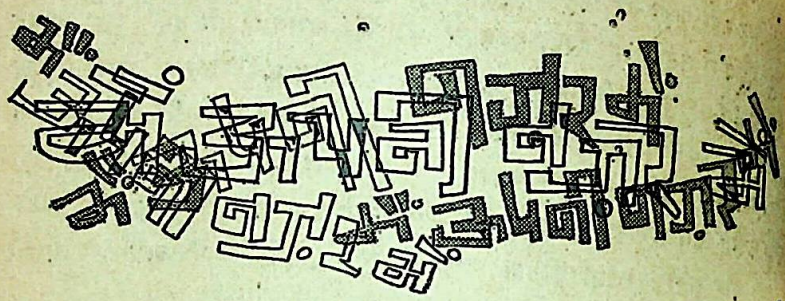

मैं, यानी राजेन्द्र अवस्थी. इसमें मैं इन दोनों को दो अलग व्यक्ति मानता हूं. मैं आम आदमियों की तरह एक हूं—अच्छाइयों और बुराइयों का एक सुगढ़ व्यक्ति. हर आदमी अपनी कमजोरियों और अच्छाइयों को मिला कर अपने को एक पूरा आदमी बनाता है. उसे इन दोनों के दायरे में ही देखना चाहिए. जिसमें एक चीज की कमी हो जाती है, वह या तो आदमी से ऊपर उठ जाता है या नीचे चला जाता है. अपनी कमजोरियों को जानना-पहचानना आसान नहीं है. एक ही बात जानता हूँ कि बचपन से जिद्दी रहा हूँ और यह आदत अब भी छूट नहीं पायी. जहाँ दूसरों की सुविधाओं का ध्यान मुझे रहता है. वहाँ मेरा भीतर का 'मैं' अधिक प्रबल भी हो उठता है. चाहता हूं हर आदमी वही करे जो मैं चाहता हूं. सब कुछ वैसा ही होता रहे, जिसको मैं आकाँक्षा है. दूसरे के प्रभाव अथवा दबाव में आना मेरे लिए कठिन है, मैं जानता हूं यह 'डिक्टेटरशिप' है और आज की दुनिया में ऐसे दिन लद गये हैं. आदमी जान कर भी अपने को बदल नहीं पाता, यही तो उसकी कमजोरी है.

मेरे मित्रों की संख्या बहुत बड़ी है. हर तबके के लोग मेरे मित्र हैं और कई बार सोचता हूँ कि इतने अधिक मित्र बना लेना भी कितनी बड़ी परेशानी है. इसका प्रभाव रचना-प्रक्रिया पर पड़ता है. लेखक को वास्तव में इतना अधिक 'घिरा हुआ' नहीं होना चाहिए. 'चाहिए' वाली बातें वैसे मुझे चिढ़ाती हैं, क्योंकि उसमें एक उपदेश की बू आती है और उपदेश सुनने का मैं आदी नहीं रहा. बहरहाल चाह कर भी मित्रों को नहीं छोड़ पाता और यह जानते हुए भी कि समय पड़ने पर इनमें से बहुत धोखा दे सकते हैं (और देते हैं) मैं उन पर अविश्वास नहीं कर सकता. सही मायने में यह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

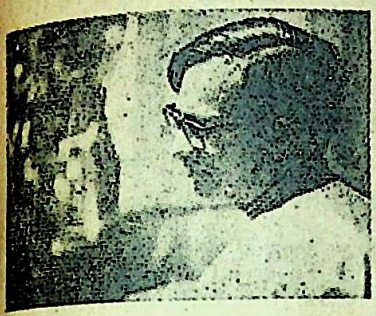

राजेन्द्र अवस्थी

सही दृष्टि नहीं है, लेकिन आदमी का निर्माण अपने घेरे और परम्पराओं से ही तो होता है.

इतने मित्रों के बावजूद मैं आत्मरत और परेशान रहता हूं. मेरा एकाकीपन मेरे भीतर हमेशा बना रहता है. मैं अपने को हर आदमी से अलग पाता हूँ. कुछ बार नितांत एकांत कमरे में, जंगल में या समन्दर के किनारे मैंने घंटों बिताये हैं. आदमियों के भरे हुए जंगल में उनसे दूर हट कर अलग बैठे रहना और उन्हे देखना अपने आप में दिलचस्प है. समन्दर की लहरों का गिनना या चौराहे से गुजरती हुई भीड़ को घूरना मुझे अच्छा लगा है. इस प्रक्रिया में जैसे हर लहर नयी होती है, हर आदमी भी अलग और निराला होता है. कहानी के सूत्र इन्हीं किन्हीं दायरों में सोये हुए मिल जाते हैं

मित्र, चाहे बुरा भी हो, मुझे अच्छा लगा है. रिश्तेदार चाहे अच्छा भी हो, मैं दूर भागता रहा हूं. मित्र के साथ एक सुविधा है. उसे चाहे जब जोड़ा और तोड़ा जा सकता है, किन्तु रिश्तेदार एक बार जुड़ गये तो फिर टूटते नहीं. आप चाहें तो भी वे नहीं टूटेंगे. सही ढंग से समझने के लिए बीवी का उदाहरण लिया जा सकता है. सात फेरों के नाटक के बाद वह आती है, इसलिए आप से पटे या न पटे, आप उसे चाहें या न चाहें, वह आपका घर नहीं छोड़ेगी. जरूरत पड़ी तो वही आपको घर छुड़वा देगी. रिश्तेदार अपने बीच से किसी को भी बढ़ते हुए देख कर ऊपरी तौर से प्रसन्न, लेकिन भीतर से दुखी होते है, क्योंकि बड़े आदमी के साथ अपने को जोड़ कर उन्हें कुछ सुविधाएं तो मिल ही जाती हैं. भीतरी दुख उन्हें इस बात का रहता है कि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हमारे बीच का एक मेंढक उछल कर कैसे बाहर चला गया. यही कारण है कि रिश्तेदारों की अपेक्षा मित्रों को मैं पहले मानता हूं.

■■

लेखक के रूप में राजेन्द्र अवस्थी भिन्न होते हुए भी मैं के साथ कहीं-न-कहीं जुड़ा तो है ही इसलिए दोनों व्यक्तित्व अलग भी हैं और जुड़े हुए भी. यह एक विरोधाभास कहा जा सकता है, लेकिन जो है वह तो है ही.

राजेन्द्र अवस्थी ने कविताएं लिख कर साहित्य जगत में प्रवेश किया था. उनकी पहली कविता अंगरेजी में लिखी थी, जब वह आठवीं या दसवीं का विद्यार्थी था. बाद में वह कवि-सम्मेलनों में खूब जाता रहा. लेकिन कवि-सम्मेलन निहायत बेमानी

□ मैं अपनी नज़र में □ हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विशिष्ट कहानीकार, इसके अंतर्गत एक अंतरंग आत्मसाक्षात्कार प्रस्तुत करेंगे. इस आत्मदर्शन और आत्मसाक्षात्कार को अन्य-पुरुष शैली में अभिव्यक्त करने की योजना है. लगभग ४ पृष्ठों के लेख के अन्त में अपनी तमाम कहानियों में से अपनी सर्वाधिक प्रिय कहानी (या कहानियों) की रचना के लिए उत्तरदायी कारणों को भी प्रकाश में लाने के साथ-साथ उस कहानी की संक्षिप्त विवेचना भी लेखक द्वारा ही दी जायेगी. कहानीकार की उक्त सर्वाधिक प्रिय कहानी लेख के साथ प्रकाशित होगी. अतः उसकी प्रतिलिपि लेख के साथ ही अपेक्षित है.

इसके अंतर्गत अब तक हरिशंकर परसाई, कमलेश्वर, चन्द्रकांत बक्षी, आबिद सुरती, मेहरुन्निसा परवेज, अमृत राय तथा अजित पुष्कल का आत्मलेख और उनकी एक-एक विशिष्ट कहानी 'कहानीकार' में क्रमशः २७, ३०, ३१, ३३, ३४, ३६ तथा ३७ पूर्णांक में आप पढ़ चुके हैं—सं०

होते हैं. कवि को एक भीड़ का सामना करना होता है और भीड़ के बीच आपको भी उसका एक अंग बनना पड़ेगा. यही कारण है कि कवि-सम्मेलनों के कवि कम, तुकबाज या अखाड़ेबाज अधिक हैं. इस तरह के व्यक्तियों से चिढ़ कर राजेन्द्र अवस्थी वहां से हट गया.

उसके साथ 'दुर्घटनाएं' हुई हैं. अचानक एक दिन किसी प्रसंग को ले कर उसने एक कहानी लिख दी और बाद में उस पहली कहानी पर ही उसे अखिल भारतीय प्रतियोगिता में पहला पुरस्कार मिल गया. वह कहानीकार बन गया. इसी तरह एक दिन वह कहानी लिखने बैठा तो वह इतनी लम्बी हो गयी कि उपन्यास बन गयी—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'सूरज किरन की छाँव.' इस तरह वह उपन्यासकार भी बन गया. उसका कवि धीरे-धीरे छूटता गया और फिर कहीं खो गया. वह अब भी यद्यपि एक कवि की तरह नाजुक मिजाज और निहायत भावनापूर्ण व्यक्ति है. लेकिन अपने लेखन में वह सेंटीमेंटलिज्म का विरोध करता है, आधुनिक दुनिया के साथ उसका तुक नहीं बैठता, आज का आदमी एक भावना के आवेश में जिंदा नहीं रह सकता. लेकिन ये सब कहने की बातें हैं, राजेन्द्र अवस्थी नकारते और स्वीकारते हुए भी जीवित है और नितांत आधुनिक व्यक्ति है.

अपने लेखन में वह कहीं पिछड़ा हुआ नहीं है. उसने ठेठ आदिवासियों को भी नयी नजर से देखा है और उन्हें नयी दुनिया के माध्यम से पहचाना है. उसके नये उपन्यास 'बीमार शहर' में सारी आधुनिकता एक साथ समा गयी है.

राजेन्द्र अवस्थी लेखक के साथ साथ संपादक भी है. यह भी एक 'दुर्घटना' है. उसके पिता उसे सर्किल आडीटर और श्वसुर पुलिस सबइंस्पेक्टर बनाना चाहते थे, लेकिन उसने जिद की और केवल ९० रुपये माहवार के वेतन पर उसने अपना शहर छोड़ दिया. वह नागपुर चला गया. थोड़े ही समय में वह 'नवभारत' (दैनिक) में वहाँ उसने वे सयारे काम किये जो एक पत्रकार को करने पड़ते हैं. लेकिन इससे उसे दुख हुआ—पत्रकार और लेखक में बहुत अंतर है. पत्रकार कुछ क्षण के बाद मर जाता है. लेखक मरने के बाद फिर से जीवित होता है. पत्रकार ने आज के लेखक को बहुत बचाया है, अन्यथा लेखक को ही पत्रकार बनाना पड़ता.

इस विरोधाभास में राजेन्द्र अवस्थी ने महसूस किया कि साहित्यिक मासिक पत्र उसके लिए ज्यादा उपयुक्त है. इसलिए उसने मासिक पत्रों में नौकरी शुरू कर दी. वह सब भी अनायास हुआ. कभी किसी नौकरी के लिए उसे प्रयास नहीं करना पड़ा.

राजेन्द्र अवस्थी संपादक होते हुए भी उसे आज एक नौकरी मानता है. वह कहता है कि पेट भरने के लिए आदमी सब्जी बेचने से ले कर दफ्तर तक में काम करता है. संपादकी इससे अधिक नहीं है. उसे अपने लेखक होने का मान हमेशा बना रहता है, इसलिए वह नितांत 'मूडी' आदमी है. वह इसीलिए भी लेखकों के अधिकारों और उनके पारिश्रमिक आदि को ले कर व्यवस्था से निरन्तर झगड़ता रहता है. व्यवस्था में रहकर व्यवस्था का ही विरोध करना वह अपनी मजबूरी मानता है.

■■

राजेन्द्र अवस्थी के लेखन और व्यक्तित्व में साम्य और विरोधाभास, दोनों एक साथ देखे जा सकते हैं. 'अपना शहर' इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण कहानी है. इस

(शेष पृष्ठ १०९ पर)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अपना शह

राजेन्द्र अवस्थी

सारी रात वह सो नहीं सका !

न जाने ऐसा क्यों हुआ कि पूरे समय वह केवल करवटें लेता रहा. उस छोटे-से डिब्बे के और यात्री बेसुध पड़े रहे. और उनमें कोई ऐसा भी नहीं था, जिसके लिए उसकी आँखें खुली रहें चाहें. डिब्बे के भीतर बैठते ही उसने अपने तीन सहयात्रियों पर नजर डाली. ताजा अखबार उठा कर पढ़ने लगा था. लेकिन वह अच्छी तरह जानता है कि यह पढ़ना केवल शब्दों के शून्य में कदम की तरह चक्कर खाना है.

खिड़की के बाहर जंगल थमता हुआ नजर आने लगा था. अंधेरे में पहले जैसे वहाँ कुछ था ही नहीं. सन्नाटे में सीटियाँ मारती रेलगाड़ी और टकराते हुए बर्तनों के से बेहतरीब स्वर ! घिसता हुआ लोहा यदि देखा जाए तो चिनगारी पैदा करता है और सुना जाए तो अतीत को ठोकरें मारता-सा आघात पहुँचाता है. डिब्बा पवन-चक्की की तरह रात भर डोलता रहा. उसे हर आघात याद है, चाहे वह भागती हुई रेलगाड़ी की हो या थमे हुए

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

क्षणों की जिनमें गति को विराम देने वाला चुम्बक लगा होता है.

यह रास्ता उसके लिए नया नहीं है, न ही यह रेलगाड़ी है, न उसकी आवाजें और न उसके बाहर का फैला हुआ सैलाब ! लेकिन जब व्यतीत अचानक वर्तमान के दरवाजे पर आ कर दस्तक देने लगता है तो उन क्षणों को भोगते हुए व्यक्ति अनायास अयाचित सम्भावनाओं से कांप उठते हैं.हलके धुंधलके के बीच स्टेशन का नाम पढ़ कर फिर जोर का धक्का लगा था. कोई अचानक आवाज दे गया जैसे:

'अरे इसे पहचानता है तू ?'

'नहीं माँ, कौन है ये ?'

'जरा थम कर देख. तू ही नहीं पहचानेगा ?'

शर्म और लज्जा के साथ खिंचते हुए गाल. झुकी हुई आँखों को जैसे कोई जरवन बांध रहा है. ऊपर को उठी हुई नाक में नकली मोती और अधखिले ओंठ. तरतीब से बांधे हुए बालों के पीछे से झाँकता हुआ गेंदे का फूल ! कानों में अर्धचन्द्र बालियाँ और....भरी हुई सीधी माँग ! कहीं से बच्चे के रोने की आवाज और हर आवाज के साथ देह का सिहर उठना ! खिंचती-बैठती साँस कई अनकही बातें कहती गई !

'माँ तुम तो पहेलियाँ बुझा रही हो !'

अचानक उबलती हुई थाप का एक धक्का-सा लगा जैसे, अपनी गरदन को एक झटका दे कर वह भीतर चली गयी.

'वह गुस्सा हो गयी. तू दिल्ली क्या चला गया, सब कुछ भूल गया ! वह रामरती है, रामरती.'

किसी ने जैसे जोर से आवाज लगायी—रामरती.वह मदन महल के किले के चारों ओर चक्कर काट कर लौटने लगी. वह प्रतिध्वनि उसके समूचे अंतर को विचलित कर गई—'देख, ऐसे चोटी नहीं पकड़ा करते, मेरी चीख निकल जाए तो.'

'तो क्या ?'

'चल, हट ! लुका-छिपी खेलता है या...'

'और तभी जोर की एक तैरती आवाज—सुनीता पकड़ ली गई है, सब आ जाओ, इसकी आँखों में पट्टी बंधेगी.'

'हम फिर यहीं आ कर छिपेंगे.'

'क्यों भला, मैं यहाँ नहीं आऊँगा.'

इसके बावजूद मदन महल का वही कोना, वहाँ से गहरी खाइयों को घूरता हुआ आम और सीता फल के बेतरतीब वृक्षों की आड़ में फ्लाश के झाड़ों पर लाख के कीड़ों को पकड़ना. मध्यम-उड़ती हवा के साथ मिल कर गाना और दम तोड़ते गाने के साथ दफनायी हुई आत्माओं के श्मशान से उठता भय का अतिरेक.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसी ही किसी लुका-छिपी में रामरती की चोटी उसने कैंची से काट दी थी। वह और करता क्या, कोई बात न माने तो ?....फिर आना-जाना बंद ! लड़ाई-झगड़े और....लेकिन इनके बावजूद हर अकेले मोड़ पर एक दूसरे का चिढ़ाना और चैलेंज दिखा कर ठेंगा मारना !

एक लम्बा अंतराल ! रास्ते की धूल पर किसी ने कोलतार बिछा दिया, तो वह रामरती को कैसे पहचानता ! और जब नये सिरे से उसने उसे पहचाना तो उलाहना और उपालम्भ ! वह इतना बड़ा अफसर हो गया है. उसके लिए नये 'बिग' खरीद कर नहीं ला सका. दिल्ली में साड़ियों की कमी नहीं है, चप्पलें कई रंगों में मिलती है और वहां तो रोज फैशन बदलता है. वहां का फैशन ही उठा कर ला सकता था. उसी फैशन में उसे मदन महल नहीं ले जा सकता ?

'नहीं...' दोनों के लिए यह एक विवशता है.

उसे फुरसत भी कहाँ मिलती है ! मिलने वालों का ताँता और पिता की आवाज़ 'अरे, सुन तो,देख ये कौन आये हैं ? जब तू छोटा था न, इन्हीं के यहाँ बना रहता था. हम बुलाते थे, पर तू आता ही नहीं था. इनके पैर पड़.'

वह कैसे बताये कि समय के उस व्यतीत से अब वह बहुत दूर है. जब वह छोटा था, तब उसे सिर झुकाने में कष्ट होता था, अब वह विरोध करता है. किसी के आगे सिर नहीं झुकाया जा सकता. आदमी के पास और है ही क्या ? सिर के सिवाय और तो सब-कुछ अपने-आप दिन व रात में कितनी बार नहीं झुकता !

यह भी एक विडम्बना है,वे सब उसे अब भी एक मामूली लड़का समझते हैं. उनकी प्रशंसा वे भले करें, उनके मन में कुछ और होता है. उनके चेहरों पर उभरी हुई रेखाएं पढ़ना कठिन नहीं है. उनकी नजरों के पीछे शिकायतों की एक प्रतिध्वनि होती है. वैसी ही प्रतिध्वनि उसने अपने पिता मे देखी है. वे नया घर बनाना चाहते हैं. पुरखों की पृष्ठभूमि में ऐसा महल खड़ा करेंगे कि पड़ोसी देखते रह जाएगें. उसका वह घर गया है, हर बार उसने घर का नया नक्शा बना देखा है. पिता ने हमेशा यही कहा है कि कागजी नक्शों को रूप देने के लिए नोटों की गड्डियाँ उनके पास छोड़ी जाएं. एक बार वह ऐसा-कुछ भी करके देख चुका है. उसने कर्ज ले कर एक हजार रुपये पिता जी को दिये थे. उस समय तो उन्होंने रुपये चुपचाप रख लिये, परन्तु आज वे उसकी मां से कह रहे थे—'देखा, मैंने कहा था न, उसके पास बहुत रुपये हैं. अच्छी खासी आमदनी है. हमें ही वह नहीं देना चाहता.'

'—क्यों नहीं देगा हमें, आखिर है वह किसके लिए ?'

'हमारे लिए नहीं, पिता ने जोर देकर कहा था—'एक हजार रुपयों में क्या होगा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है. उसके लिए तो एक हाथ का मैल है, जो हर महीने जमा हो जाता है.'

उसने वह सब अचानक सुन लिया था और सुनते ही सन्न रह गया था. वह पछताने लगा था कि उसने रुपये दिये ही क्यों. कितनी बड़ी उलझन है यह—वह न दे तो परेशानी और पिता की शांति के लिए दे दे, तो यह तुर्रा ! उसका विरोधी मन कभी विद्रोह कर उठा था.

कितना भी विद्रोह हो, पिता का आखिर कुछ अस्तित्व होता ही है. जिस दिन वह अस्तित्व टूटा वह दुख से कातर हो उठा था. वह उन्हें अन्तिम बार देख भी नहीं सका. एक ओ यह दर्द और उनके देह की भस्मी ! उसे हाथ में ले कर गंगा जाते हुए उसका मन कितनी बार नहीं टूटा. वह एक सचाई को अपने हाथों में ढो रहा था. यही आदमी की नियति है और यहाँ तक पहुँचने के पहले वह क्या नहीं करता. बीते हुए क्षणों की इतिहास में बदलती सन्धि-रेखा आदमी की वास्तविकता पहचान का एक दायरा है. उसका मन हुआ, वह चिल्ला कर आवाज़ दे और अपने पिता की राख से पूछे—'तुम्हारा घर तो बन गया, फिर उसे अपने साथ क्यों नहीं ले गये.'

वह सोच भी नहीं सकता कि मृत्यु-बोझ से लदे हुए एक आदमी का अस्तित्व दूसरे के लिए एक मामूली व्यापार हो सकता है. अपने पिता को लाल रंग की पोटली में बन्द गंगा किनारे ले जाते हुए, साइकिल-सवार पंडे उसका पीछा करें, उसे बर्दाश्त नहीं. वे सब मरे हुए माँस के पीछे लगे हुए कुत्तों की तरह चिपट जाते हैं. वह तब भी जबरन मुसकराने का प्रयत्न करता है और कहता है,'पीछा मत करो, हम चुपचाप किनारों पर घूमने जा रहे हैं.' वह उत्तर पाता है,'क्या झूठ बोलते हो बाबू, तुम्हारे चेहरे से साफ नज़र आता है, तुम दुखी हो...अरे, हम कम पैसों में ही श्राद्ध करा देंगे ...अरे, हाँ, आप कहाँ से आये हैं.' ...और इसके बाद जाने-अनजाने नामों की शृंखला, व्यर्थ की बातें और चोट पहुँचाने वाले वे सारे आयाम जो खीझ कर किसी को यह कहने के लिए विवश कर दें,'अच्छा माई, चल, तू ही श्राद्ध करा दे.'

उसका मन प्रतिध्वनित होता है. उसके दुखी चेहरे को देख कर वह पंडा अपना व्यापार खड़ा करता है. उसका दुख, उसके लिए महज एक मजाक है. वह अपने मृत पिता के साथ कुछ मौन क्षण भी नहीं गुजार सकता ! वह उन्हें यह भी नहीं बता सकता कि 'जो कुछ बटोर कर तुम अपने समाज को दिखाना चाहते थे, वह वास्तव में केवल तुम्हारा तमाशा देखने का इच्छुक था. वह सुविधा पर टिका मौकापरस्त लोगों का एक समूह है. उसका लक्ष्य नितान्त वैयक्तिक आत्मलिप्सा के सिवाय और कुछ नहीं है. वे सब लोग उस कुत्ते से अलग नहीं हैं, जो बार-बार लात मारने पर भी पैरों के

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पास दुम दबा कर लोट जाता है. लेकिन नहीं....उसके पिता यदि जीते जी यह नहीं समझ सके तो अब मर कर क्या समझेंगे ! कितनी बार उसे नहीं लगा कि वह उस राख को वहीं हवा में उड़ा कर वापस लौट जाए. लेकिन जो समझौता वह नहीं कर रहा, उसे करना पड़ा; इस दर्द को वह आज भी अपने भीतर पाले हुए है. वहीं है वैसा ही सब कुछ चावलों के गोल-पिंड, कुसा और अक्षत के साथ मंत्रों का उच्चारण हाल ही पहने हुए यज्ञोपवीत के साथ ऐसा व्यवहार जैसे वह हमेशा ही पहनता है श्रद्धा से पंडे के सामने नतमस्तक. अपनी पूरी वंशावली और वंश-परम्परा का स्मरण सब कुछ ठीक वैसा ही जैसे विवाह के समय पति-पत्नी एक दूसरे की देह को खुरचने का एक नाटक करते हैं. सारे नाटक के बाद 'दक्षिणा' देने का क्षण आता है तो तब लगता है कि समूचा परिवेश केवल इसी एक क्षण के लिए ठहरा हुआ था !

■■

किसी थियेटर के एक कोने से उभरते हुए प्रकाश की तरह सूरज हल्का-सा रूप झांकने लगा था. उसने देखा, अब वह डिब्बा शान्त नहीं है. उसके तीनों सहयात्री उठ-बैठ रहे हैं. वे अपनी ही आवाजों से जैसे बातें करते हैं. कभी कोई गये हुए स्टेशन का नाम पूछता है तो आनेवाले स्टेशन को रेलवे टाइम टेबल में ढूंढ़ता है. बाहर सारी दुनिया उस छोटे से डिब्बे में बन्द हो गई है. बँधे हुए पानी की तरह समय जैसे सड़ने लगा है. उसने खिड़की खोल कर बाहर देखा तो ताजी हवा के तार से छू गये. भागता हुआ जंगल खरगोशों की तरह छलांगें भरने लगा.

वह इस समय भूल गया था कि उसका गंतव्य क्या है ? डिब्बे के सहयात्री अपनी शेष-यात्रा का लेखा-जोखा करने लगे थे. लेकिन वह वहाँ हो कर भी शायद वहां नहीं था. कितने दिनों से उसकी बहन उलाहना दे रही है. पिता की मृत्यु के बाद वह अपने शहर गया ही नहीं. श्राद्ध के अगले वर्ष का सारा संस्कार उसके छोटे भाई ने किया. इस बीच छः-सात सावन आये और चले गये. बहन राखी बांधना चाहती है! हर साल वह आँसुओं में भीगा पत्र लिखती है—वह पिता की याद दिलाती है. वे होते तो क्या वह इतनी बेगानी होती ! कोई पूछता ही नहीं उसे. सात भानजे और भानजियाँ हैं, सभी तो उसे याद करते हैं. कोई तो यह भी नहीं जानते कि उनका अपना बड़ा मामा भी है. बहन को याद है कि बचपन में राखी बाँधने में एक रुपया मिलता था. अब...?

उसकी आँखें भर आती हैं. बचपन में बहन और भाई किस तरह झगड़ते थे. किस तरह भाई के हिस्से का दूध बहन पी जाती थी और उसमें पानी मिला देती थी. पता लगने पर उसे मार पड़ती थी और तभी उसे अनुभव होता था कि लड़के और

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लड़की होने में कितना अन्तर है. उसे भाई की कमीजें रोज धोनी पड़ती थी. वह रोज गन्दा कर ले आता था. वह न धोती तो भाई चोटी पकड़ कर पीटता था, परन्तु जब घर में माँ न होती तो दोनों में मजबूत सुलह हो जाती !

सुलह के पीछे का समय कुछ और खिसक जाता, तो दोनों बरामदे में 'घर घर' खेलते नजर आते. तब बहन अपने ही भाई की पत्नी बन जाती और फिर दोनों मिल कर वे सारे किस्से दोहराते जो एक वास्तविक दुनिया से उड़ कर वहां तक आये हैं और एक नाटक की शकल में बदल गये हैं. माँ-बाप से लड़ने-झगड़ने से लेकर प्यार-मोहब्बत तक के सारे प्रतीक उन दोनों के बीच फैले हुए नजर आते. उनके साथ कपड़े की गुड़िया और उनसे भरी-पूरी जिंदगी. सब कुछ सजीव-सा, लेकिन अब कितना बेमानी. उसे इसीलिए तो चिढ़ है—क्यों बचपन से आदमी को गलत रास्ते में डाला जाता है. शादी-ब्याह, प्यार-मोहब्बत कितना कुछ उलझा हुआ है. ये सब उस जिंदगी को गिद्ध की तरह नोंच कर तब तक खाते रहते हैं, जब तक वह राख बन कर पोटली में बन्द नहीं हो जाती.

इसी रेलगाड़ी की तरह वे सारे पड़ाव छूटते चले गये और अपनी बहन का चेहरा उसके सामने आ कर अटक गया. वह चेहरा उसे गमले में उगाये गये कुकुर-मुत्ते की तरह दिखायी दिया, जिसके आसपास सात नये अंकुर और फूट आये हैं और फूला कुकरमुत्ता ऊपर उठा हुआ गर्व के साथ नये अंकुरों को घूर रहा है. जब वह उस घर में पहुँचेगा तब अब उसका स्वागत इतने सारे लोग एक साथ करेंगे. इनके साथ ही सबके चेहरे पर एक ही प्रश्न होगा—'भइया बड़ा अफसर हो गया है, मामा के पास नोट छापने वाली मशीन है. उसकी टेरलीन की बुशशर्ट जैसे हमारे ही लिए सिली है. पैंट तो एकदम फिट होता है. मामा को क्या जरूरत है कि वह तीन-तीन फाउन्टेन रखे. भाई अजीब है जो सूटकेस में दिन-रात ताला लगाये रहता है. अरे, घर में भी कोई ताला लगाता है. सिफान की बंधनी साड़ी की चलन इन दिनों कितना बढ़ गया है. भइया तो ले कर आये ही होंगे, आखिर पाँच-छः रक्षाबन्धनों का कर्जा है एक का नहीं.'

वह जानता है कि निर्लिप्त जीजा जी कितनी रहस्यमय बातें करते हैं. उन्हें इस बात का पूरा एहसास है कि सब एक ही गड्ढे के मेंढक होते हुए भी उनमें से एक ऊपर उछल कर अलग क्यों हो गया और यदि हो गया तो निरन्तर हरजाना देते रहना उसका धर्म है.

■■

उसने अनायास उठ कर अपनी अटैची खोली और टाइम टेबल ले कर उसके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पन्ने पलटने लगा. पन्ने पलटते हुए वह भूल हो गया कि वह क्या देखना चाहता था. उसे उन पृष्ठों पर अपने साथियों की आँखें चिपकी हुई दिखाई देने लगीं. वह एक साथ सारी आँखों को देख गया. शेखर की आँख दफ्तर की फाइलों में अटकी है शेखर एक स्कूल में मास्टर हो गया है. हरि ओवरसियर है. देशमुख पुलिस में दरोगा है....सविता उसने ठहर कर इसे ध्यान से देखना चाहा, कुछ भी पता नहीं चला. उस आंख की भाषा जैसे न्यूजप्रिंट में छपे उस टाइम-टेबुल ने ही सोख ली है. उसने अपने मस्तिष्क पर जोर दिया, सविता उसे कहीं नहीं मिली.उसकी याद के साथ उसे अपनी याद जरूर हो आयी, वह इन सबसे कहाँ अलग था. शायद नहीं....! फिर आई० ए० एस० में उसने बैठने का इरादा क्यों किया था ? किसने बैठाया था उसे ? और पास भी किसने किया. वह अचानक एक बड़े महकमे का डायरेक्टर बन गया. आखिर क्यों ? कैसे ?

परेशानियों का एक सैलाब उसके चारों तरफ बिखर गया. सब कुछ परम्परा से होता है, परम्पराओं के जंगल में बिजली का फूल किसने खिलने दिया.

भागती हुई गाड़ी की गति धीमी होने लगी थी. शायद कोई स्टेशन आ रहा है. उसने टाइम टेबल वैसे ही उल्टा कर अपनी सीट के पास रख दिया और बिना प्रयोजन उस डिब्बे में यहाँ होना देखने लगा. सामने की सीट पर दो यात्री बैठे थे- एक सुबह का अखबार पढ़ रहा था और दूसरा उसकी ओर देख रहा था. चारों ओर देखते हुए उसकी नज़र जब दूसरे आदमी पर पड़ कर टकरायी तो नीचे झुक कर वह तुरन्त वापस लौट आई.

उसने शीशे की खिड़की के बाहर देखा, रेलगाड़ी और धीमी होती जा रही थी. बाहर सूखे खेतों में कटी हुई फसल के डंठल खड़े थे. यहाँ-वहाँ से जमीन फट गयी थी और किसी निहायत बूढ़े आदमी के चेहरे पर पड़ी झुर्रियों की तरह वह नज़र आ रही थी. पटरी से लगे हुए पलाश के झाड़ों में लाल रंग के फूलों के गुच्छे लटक रहे थे. उसे ये फूल बचपन से ही पसन्द रहे हैं. फासफोरस की तरह वे जलते हैं और सूखे और नंगे जंगल में ताजगी का आभास देते हैं. बचपन में वह इन फूलों को तोड़ कर लाया करता था. उनका रंग निकाल कर वह उसी से होली खेलता था. बाद में यही फूल हल्के लाल रंग के चीपट रुपयों की शकल के फूलों में बदल जाते हैं और उसे अच्छी तरह याद है, उन्हीं रुपयों से वह अपने साथियों के साथ खेलता था. उस समय वे खेल की दुनिया में मुद्रा का नाम देते थे और यहीं से उसने मुद्रा की पहचान सीखी थी. सामने देखते हुए वह अनायास कई बरस पीछे पहुँच गया था, परन्तु वहाँ वह ठहर नहीं पाया. तीसरे यात्री ने टावल से अपना मुंह पोंछते हुए पूछा—'साहब,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई स्टेशन आ रहा है ?'

उसे लगा, यह प्रश्न उससे ही पूछा गया है. वह सतर्क हो कर बैठ गया और बोला—'जी हाँ, नरसिंहपुर आ रहा है.'

'यहाँ गाड़ी कितना देर रुकती है ?'

'यही कोई पांच मिनट.'

'कोई बड़ा स्टेशन आगे नहीं है ?'

'एक डेढ़ घण्टे की देर है, जबलपुर आएगा.' एक दूसरे यात्री ने बीच में जवाब दिया,'वहाँ गाड़ी बहुत देर रुकती है. क्या कीजिएगा आप ?'

'कुछ नहीं, यूँ ही नीचे उतर कर चहल-कदमी करेंगे. यहाँ-वहाँ देखेंगे. चाय पियेंगे और....' बहुत निश्चित और सैलानी ढंग से वह कहता गया.वह डिब्बे में यहाँ-वहाँ घूमने लगा,'ठहरे मिलिटरी के आदमी, ज्यादा देर एक जगह बैठ जाएं तो देह काटने लगती है...क्या खयाल हैं आपके ?'

जो आदमी अभी थोड़ी देर पहले अखबार पढ़ रहा था,उसने इस प्रश्न को झेलते हुए कहा—'मुझे तो जबलपुर ही उतरना है.'

यह उत्तर सुन कर उसका मन अचानक विचलित हो गया. उस शहर का नाम वैसे ही उसके कानों में पड़ा, तैसे ही जैसे पेड़ की फुनगी पर लगा कोई पत्ता काप उठा. उसने अपने को संयत किया और डिब्बे के फर्श की ओर नितांत रीती हुई आंखों से देखने लगा.

'सुना है यही' मार्बल राक्स हैं, बड़ी खूबसूरत जगह है.' वह फौजी आदमी जिंदा-दिल और निहायत सामाजिक था. उसके बोलने के लहजे से ही पता लगता था जैसे उससे डायलाग हो सकता है, परन्तु उसने उस चर्चा में भाग लेना ठीक नहीं समझा. वह लगातार नीचे के गंदे फर्श को देखता रहा. अपनी जन्मभूमि का नाम सुन कर आदमी का मन सचेत हो उठता है. उसे लगता है जैसे आदमियों से भरे जंगल में किसी ने उसे पहला नाम ले कर पुकारा है.अब यह नाम एक सपना है.सभी लोग उसे 'तिवारी साहब'कह कर बुलाते हैं और इसके पहले का 'शरद'नाम जैसे कहीं अंधेरे में गुम गया है. भेड़ा घाट के मार्बल रॉक में ही उसने कितने क्षण नहीं बिताये. चौंसठ जोगनी के मंदिर में रखी हुई मिथुन मूर्तियों को देखकर उसे कितनी संतुष्टि नहीं मिली. इसी मंदिर के बाहर कितनी बार उसने दाल-बाटियों का मजा नहीं लिया. यहीं कई बार कैम्प फायर की तरह रात बितायी है और उस समय के चेहरे, जब भी उसे अवकाश मिलता है, उसके आसपास घूमने लगते हैं. इसलिए कि आदमी व्यतीत में

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अगला बच्चा होने से पहले...ज़रा

सोचिये

क्या आप
पहले इस बच्चे
की सही देखभाल
करना नहीं चाहेंगे ?

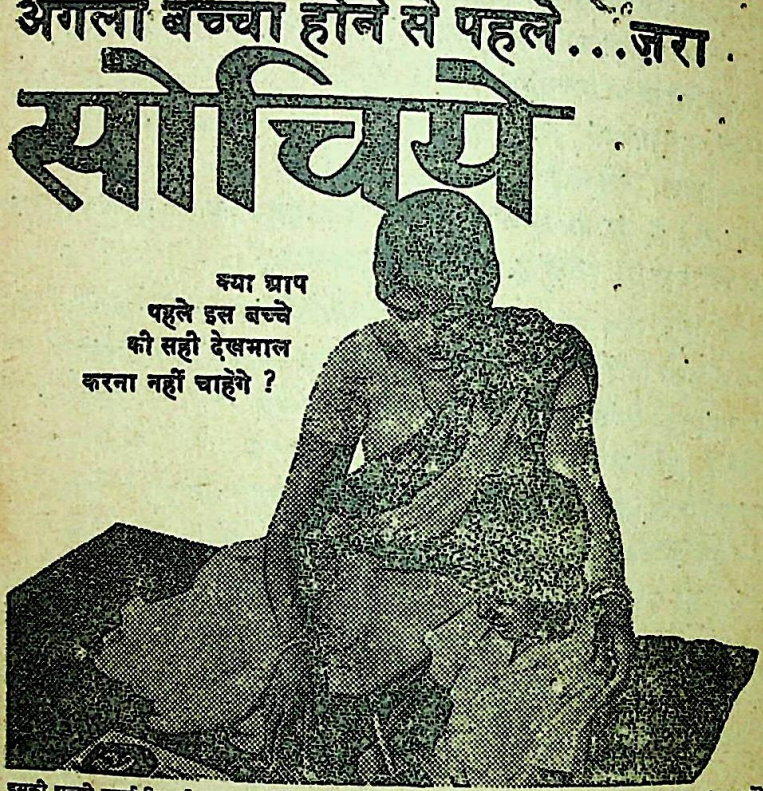

इसकी अच्छी पढ़ाई-लिखाई का इन्तजाम इसके जीवन को सफल बनाना...आप उसे पूरा लाड़-प्यार देना चाहें लेकिन अगला बच्चा जल्दी हो गया तो यह सब करना मुश्किल होगा। आप ऐसी स्थिति से जरूर बचना चाहेंगे। निरोध की सहायता से अब आप अगले बच्चे के जन्म को तब तक टाल सकते हैं जब तक उसकी पूरी देखभाल करने लायक नहीं हो जाते। निरोध पुरुषों के लिये है। यह परिवार को छोटा रखने का अच्छा और आसान उपाय है। दुनिया भर में लाखों लोग वर्षों से इस्तेमाल कर रहे हैं। आप भी निरोध इस्तेमाल कीजिये
निरोध हर जगह मिलता है। सरकारी रियायती मूल्य : केवल 15 पैसे में 3

जब तक न चाहें, बच्चा न पायें

निरोध

लाखों की पसन्द - बढ़िया और आसान

जनरल मर्चेन्ट, दवा, परचून और पान आदि की दुकानों में बिकता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहने का आदी है, वह कभी वर्तमान के साथ नहीं रह पाता.

उसने जोर से सांस ली. कितनी बड़ी विडम्बना है यह,वह वर्तमान में न जी कर किस तरह समय से कट जाता है. परन्तु वर्तमान में जीये कैसे ? उसे अनायास लगा जैसे जबलपुर उतरने वाला यात्री उसे अच्छी तरह पहचानता है. वह सबसे बता सकता है कि शरद साहब सीधे इलाहाबाद चले गये और जबलपुर नहीं उतरे. तब ?

तब चम्पू कितनी गालियां देगा उसे ? चम्पू यानी सेठ रतनलाल जैन. पुस्तकों की उसकी दूकान है. एक बार उसने लिखा था—'तुम राजधानी में हो और बड़े अफसर हो गये हो, हमें एकाध लायसेंस दिलवा दो तो यहीं कोई कारखाना लगा लें.' उसने इस खत का जवाब नहीं दिया था, क्योंकि उसके मन में कहीं कोई बात अटकी नहीं हुई थी. वह जब एम० ए० कर रहा था और चम्पू की दूकान से दो पुस्तकें उधार लेने गया था तो चम्पू ने पुस्तकें तो दे दी थीं, परन्तु परोक्ष रूप से यह भी कह दिया था कि 'मैं पुस्तकें बेचता हूँ, पुस्तकालय नहीं चलाता.' वह जानता है कि चम्पू का कहना गलत नहीं था, परन्तु तब वह पुस्तकें खरीद भी तो नहीं सकता था.

उसके सामने चम्पू का चेहरा स्पष्ट था-खुशमिजाज और रुपयों की गरमी की एक हलकी परत से चमकता हुआ. पीपल के झाड़ के नीचे पिता का श्राद्ध कराते वक्त चम्पू ने ही कहा था—'शरद भाई, तुम्हारे पिता ने इ तुम्हारे लिए क्या नहीं किया. महापात्र को सोने की अंगूठी तो देनी ही चाहिए.'

वह तिलमिला उठा था. उसके पिता ने उसे एक सामान्य क्लर्क ही बनने के लिए छोड़ दिया था. मैट्रिक पास करने के बाद ही उसे यहां-वहां ट्यूशन करना पड़ता था, ताकि आगे की पढ़ाई के लिए वह अपने पिता से रुपये न मांग सके. उसने एक बार चम्पू की तरफ देखा था और तुरन्त हाथ की अंगूठी निकाल कर महापात्र को दे दी थी. उसने अंगूठी देते हुए अपने आप दांत पीसे थे. इसके बाद सुबह से शाम तक ३०० आदमियों को उसने भोजन कराया था और इस पूरी प्रक्रिया में उसकी कमर अकड़ कर रह गयी थी. जो कुछ वह नहीं करना चाहता था, वही सब कुछ उसे करना पड़ा था.

अचानक उसके सामने अंधेरा-सा लग गया. उसने आखें बंद कर लीं तो वह कई आवाजों से घिर गया, ये आवाजें साफ नहीं थीं. खोनचे वालों से ले कर उसके रिश्तेदारों तक की आवाजें थीं वे. उसके फूफा हमेशा उलाहना देने के आदी हैं. फुआ तो जेब से रुपये ही निकाल लेती हैं. मामा सारी तलाशी लेती हैं और जो-जो कपड़े मामा के काम के हैं, वह जबरन छीन लेती है. ऊपर से प्रश्न—'सुना है, वहां तो ऊपर की आमदनी बहुत है.'

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

फोन : ६३६८१

बेबी हकर्स

मुंशी कटरा
लहुराबीर
वाराणसी

* आकर्षक व्यक्तित्व के लिए
* आकर्षक सिलाई
का
विशेष योग्यता प्राप्त प्रशिक्षण

माडेला फर्नीचर्स—बेहतरीन सजावट के लिए

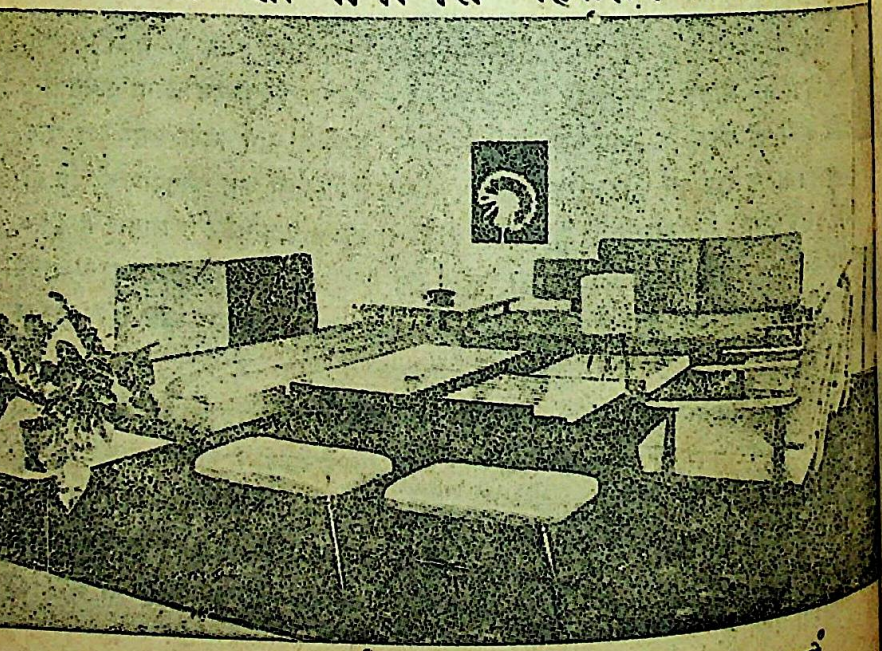

माडेला फर्निशिंग हाउस, जंगमबाड़ी, वाराणसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

'यह भी कोई पूछने की बात है. अरे, हमारा भानजा अफसर है, अफसर. सारे सेठ-सेपपुरी पतंगों की तरह चक्कर काटते हैं और फलों की टोकरी में नोट की गड्डियां छिपा कर दे जाते हैं. वे जब अपनी कारों में टोकरी ले कर आते हैं तो हमारा भानजा उन्हें हिकारत से देखता हुआ कहता है—'वहां रख दो.' वे चुपचाप हाथ जोड़ कर चले जाते हैं.'

मामा सब कुछ ऐसा कह गये जैसे ऊपर की आमदनी उन्हें ही इस तरह होती है. इसलिए उनकी बात सुन कर वह कितना तिलमिला उठा था. उसने कभी घूस नहीं ली, कभी गलत काम नहीं किया, इसीलिए उसकी इज्जत है. उसे लगा, जैसे किसी निर्दोष आदमी को जबरन चोर करार दे कर चिढ़ाया जा रहा है. वह जानता है, इन सब का कोई अर्थ नहीं है. मामा के संवाद एक ही अर्थ की ओर संकेत करते और उसकी सीमा 'अर्थ' के घेरे के बाहर नहीं है.

वह प्रश्नों के चक्रव्यूह में अभिमन्यु की तरह फंसता गया. उस क्षण उसे यह भी पता नहीं रहा कि वह एक रेलगाड़ी में यात्रा कर रहा है. उसे तब न पीछे छूटते हुए स्टेशन की आवाजें सुनायी दे रही थीं और न हथौड़े की तरह चोट करते लोहे की. उसके सामने सब कुछ यानी की परतों की तरह हिल रहा था. लायसेंस से ले कर कपड़े और रुपये तक जिन्हें छीनना है वे भले छीन लें, परन्तु यूं तो नहीं जैसे सब-कुछ एकदम आसानी से आ गया है और उसे पाना उनका वैधानिक अधिकार है. अर्थ को निरर्थक बना देना, शब्दों के साथ कितना बड़ा छल है. उसे लगा कि बचपन से ले कर अब तक वह जिन आदर्शों के लिए झगड़ता रहा है, अब वही सब मिल कर उसका मजाक उड़ा रहे हैं.

उसे एक धक्का लगा. रेलगाड़ी अचानक रुक गयी और उस धक्के से उसकी सारी तंद्रा टूट गयी. सोचने का सूत्र अचानक कहीं छूट गया. डिब्बे में हलचल हुई, कोई एक्सीडेंट तो नहीं हो गया ? किसी ने चैन तो नहीं खींच दी ?

'क्या हुआ भाई ?'

'पता नहीं.'

'लगता है, कोई शहर आ रहा है.'

उसने फिर झांककर बाहर देखा. गाड़ी सिगनल के पास खड़ी थी. वह उस सिगनल को अच्छी तरह पहचानता है. उसके दायें बायें खड़े हुए निर्जीव रेल के डिब्बे भी उससे अनजाने नहीं हैं. उनके ऊपर का खुला हुआ नीला आकाश जैसे आवाजें कस रहा है. आकश के नीचे पटरियों के बाहर दोनों ओर फैला हुआ शहर दोनों बाहें फैलाये उसे जबरन बाहर खींच रहा है. वे हाथ उसके साथ उस समूचे डिब्बे का

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सामान भी बाहर खींच रहे हैं. वह यहां से आगे कैसे जा सकता है ? उसका मन विकल हो उठा. अचानक भय के बाद भीतर की जो स्थिति होती है, वही उसकी स्थिति हो गयी. उसे लगा, समूचे शरीर के भीतर खोखली हवा चक्कर काटने लगी है. पेट में संग्रहणी के रोगी की तरह हलचल होने लगी है. उसने सामने के यात्री को देखा जो अपना सामान इकट्ठा कर रहा था. उसे देख कर उसने फिर आंखें बंद कर लीं जैसे कोई कबूतर बिल्ली को देख कर आंखें बंद कर लेता है और वहीं बैठा रहता है. आखें बंद किये ही वह उस सीट पर सीधा पसर गया और ऊपर से उसने एक चादर ओढ़ ली. अपने सहयात्रियों से कट कर उनके विपरीत करवट लेते हुए उसने अपना हाथ पूरे चेहरे पर रख लिया, जैसे किसी रेगिस्तान में तूफान का संकेत मिलते ही शुतुरमुर्ग अपनी गरदन छिपा लेता है.—सं०कादम्बिनी,हिन्दुस्तान टाइम्स,दिल्ली-।

सफेद दाग

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

हमारी दवा से तीन दिनों में दाग का रंग बदलने लगता है. एक बार परीक्षा कर अवश्य देखिए कि दवा कितनी तेज है. प्रचार हेतु एक फाइल दवा मुफ्त दी जा रही है.रोगी विवरण लिख कर दवा शीघ्र मंगा लें.

ललित आयुर्वेदिक फार्मेसी (के)
पो० कतरी सराय (गया)

सफेद बाल

खिजाब से नहीं, आयुर्वेदिक तेल से बालों का असमय में पकना रुक कर सफेद बाल काला हो जाता है. दिमाग और आँखों की कमजोरी को दूर करता है. हजारों ने लाभ उठाया है. मूल्य प्रति शीशी १० रुपया. डाक खर्च अलग.

ललित आयुर्वेदिक फार्मेसी (के)
पो० कतरी सराय (गया)

रोगों से दुःखी क्यों ?

क्या आप दुःखी हैं ? और क्या उसका कारण आपका रोग है ? यदि हाँ तो आज ही अपने अपने रोग का पूरा विवरण लिख कर हमसे मुफ्त सलाह लें. सफेद दाग, एक्जिमा, स्वप्न दोष, शीघ्र पतन, नामर्दी, स्तंभन-शक्ति की कमी, वीर्य का पतला होना, मासिक धर्म की गड़बड़ी, प्रदर रोग, बालों का झड़ना, एवं सफेद होना इत्यादि किसी भी रोग से आप दुःखी हैं तो हमें अवश्य लिखें ! हमारी सलाह एवं दवा से आपको शीघ्र ही पूर्ण लाभ होगा ?

पता—वैद्यराज ब्रज नन्दन गुप्ता (के ४५)
मेन रोड पो० कतरी सराय (गया)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथापरिचय

—विचारकेतु

आज का जन साधारण अपने आस-पास की परिस्थितियों के प्रति क्रोधित है—वह उसे यानी 'व्यवस्था' को तोड़ना चाहता है. परिवर्तन लाना चाहता है, मगर विवश है. वह क्रांति का मस्तिष्क तो बन सकता है, लेकिन उसे कार्यरूप में नहीं ला सकता. वह खीझ में और मजबूरी में चुप देखता रहता है—शायद कोई पहल करेगा.

लिहाजा, आज की कहानियाँ एक साथ आर्थिक और राजनीतिक ओवरटोन्स की कहानियां बनती जा रही हैं. वह आज के मनुष्य के संघर्ष की कहानी है. उसके पात्र व्यवस्था से जूझते हुए, हारते-टूटते हुए भी संघर्षरत हैं.

लेकिन, इसके साथ ही, व्यक्तिगत कुंठा, घुटन और यौन-ग्रंथियों को ले कर भी बकस्तूर कहानियां लिखी जा रही हैं, जिनकी जड़ें इस जमीन में न हो कर कहीं और हैं.

यह दूसरी बात है, कि उक्त दोनों प्रकारों में से कोई भी कहानी यथा स्थिति को तोड़ने के लिए पाठकों को कोई दृष्टि नहीं दे पाती. ऐसा क्यों ? यथा स्थिति के प्रति खीझ और आक्रोश उत्पन्न करना ही काफी नहीं, उसे तोड़ने की दिशा भी सामने आनी चाहिए.

■■

अब (जुलाई) गौरक्षिणी पथ, सासाराम (बिहार)

'सलाख पर घूमता आदमी' (श्रवण कुमार) में आक्रोश है, तिलमिलाहट और छटपटापट है और विवशता है—यानी इसके बावजूद उपचार की कोई नहीं सोचता, सब यही देख रहे हैं कि पहल कौन करे. निम्न मध्यवर्ग वाले बगावत का दिमाग तो बन सकते हैं, उसके हाथ-पाँव नहीं. जो हाथ-पांव बन सकते हैं,वे हमेशा हमेशा बेसिर रहते हैं. प्रस्तुत कहानी बड़ी बेरहमी से वर्तमान 'व्यवस्था' के राजनीतिक, आर्थिक प्रपंच और भ्रष्टाचार को बेनकाब करती हुई निम्न मध्य वर्ग की मजबूरी, घुटन, यातना और टूटन को उजागर करती है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथास्वर (कथा-लेखिका अंक) १२५२ देहली दरवाजा, फैजाबाद.

'आदमी जो नहीं था' (कृष्णा अग्निहोत्री) में पिता पुत्री के बीच सेक्स संबंध है—अकारण! 'यथार्थ (दीप्ति खण्डेलवाल) में सन्तप्त पुत्री को गरीब और पुराने ख्यालों वालों मां के प्रति उपेक्षा है.

कहानी (दीपावली अंक) सरस्वती प्रेस, ५ सरदार पटेल मार्ग, इलाहाबाद

'फैलते दायरे···मिटते केन्द्र' (शीला इन्द्र) में गरीबी है संबंधों और संयुक्त परिवार का विघटन है और नयी पीढ़ी का स्वार्थ है. नयी पीढ़ी अपना वर्तमान और भविष्य देखती है और उसे उचित ठहराती है जबकि पुरानी पीढ़ी कहती है—'हमने तो कभी अपना सोचा ही नहीं, न जवानी का, न बुढ़ापे का और ये अपनी जवानी का, अपने बच्चों का सोचते हैं—और एक झिझोरता प्रश्न फेकती है—'अब इस बुढ़ापे में थके हाथ-पैरों हम कहां जाएं ?' लोग अपनी परिस्थिति और स्वार्थ से समझौता कर अपना अस्तित्व भूल जाते हैं—फिर सही गलत का अंतर उन्हें दिखाई नहीं देता है

लेखकों से निवेदन

रचना भेजते समय उसकी एक प्रतिलिपि अपने पास सुरक्षित रखें ▪ केवल वही अस्वीकृति रचनाएं सुरक्षित रखी और लौटाई जा सकेंगी जिनके साथ लेखक का पता लिखा,टिकट लगा लिफाफा होगा, मात्र टिकट नहीं ▪ नए लेखक रचना के साथ अपना व्यक्तिगत एवं साहित्यिक संक्षिप्त परिचय, प्रकाशित रचनाओं, वर्तमान शगल और शौक का उल्लेख करना न भूलें ▪ 'कहानीकार' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं,उनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं.—सं०

अपने छोटे-से अंधेरे घरौंदे में डूबे रहते हैं. 'बदलता मिटता चेहरा' (अखिलेश तिवारी) का गुप्ता अस्तित्वहीन, अंधेरे में अपनी सही आकृति ढूंढ़ने की कोशिश करता है. इस अंक में कृष्ण बलदेव वैद, हृषीकेश, शैलेश मटियानी, दीप्ति खण्डेलवाल, से.रा.यात्री, बादशाह हुसेन रिजवी, रमेश चन्द्र शाह जैसे ख्याति प्राप्त कथाकारों की भी कहानियां है.

कहानीकार (जुलाई-अगस्त और सितम्बर-अक्टूबर)

'कितना अपना' (डा० विष्णु कुमार गुर्टू) रूमानी तो है, मगर अलग रंग में. कहानी में प्रेम और वासना का अंतर दिखाया गया है. मसलन मन के समर्पण या हृदय के पूर्ण मिलन के बगैर तन का समर्पण वासना है और इच्छा से शारीरिक संबंध प्रेम है. 'कहीं कोई नहीं' (चन्द्रा औलक) में असुरक्षा की भावना है, अपना-अपना स्वार्थ है और कशमकश है—गुंजाइश कहीं नहीं, खतरे से खाली कोई जगह नहीं,

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोई किसी का [illegible] बाँट नहीं सकता, लोगों को महज कौतूहल अपनी गाड़ी में [illegible] जैसा बोध लेता है या कोई जरूरत ! यही जरूरत यानी परिवार के भरण-पोषण की विवशता के कारण 'कागज की बेड़ियों' (राधेश्याम उपाध्याय) का शर्मा बाबू अपमान सहता रहता है, मगर नौकरी छोड़ नहीं पाता.

सितम्बर-अक्टूबर अंक ग्राम-कथा अंक है जिसमें आज के गांवों की 'कसमसाती जिन्दगी के एहसास को पकड़ने की कोशिश' की गयी है. 'लड़ाई' (विश्वमोहन) सशक्त कहानी है. इसमें तेजी से बदलते आ रहे गांव का चित्र है—ऐसा गांव जिसमें दलित व्यक्ति शोषण के खिलाफ आवाज उठाता है, अपना हक मांगने की अनुभूति उसमें उगती है—वहीं आपसी फूट और स्वार्थ भी पीछा नहीं छोड़ता और दोनों के बीच गांव का 'सामान्य जन पिसता है.'प्रचार' (बलवीर त्यागी) का मंगलू निःसंतान है—असह्य गरीबी से तंग आ कर वह नसबंदी करा लेता है और पत्नी को हमेशा के लिए बांझ बना डालता है. 'उसने दो कौर पराठे खाये और फिर खीर का कटोरा अपनी ओर खिसकाया. एकाएक उसे उबकाई आने लगी. लगा, मानो कटोरे में उसका निचुड़ा हुआ पौरुष लहरा रहा हो.' खीर के साथ निचुड़े हुए पौरुष की बात जुगुप्सा पैदा करती है. 'नए गांव में' (रामधारी सिंह दिवाकर) का गांव औद्योगीकरण और विद्युतीकरण के दौर में पूरी तरह बदल चुका है मगर साथ, ही, लोगों में अजनबीपन, पराएपन की भावना भी घर कर गयी है. बरसों बाद लौटे व्यक्ति को गांव की तरक्की से खुशी तो होती है लेकिन वह समझ नहीं पाता. 'गांव इतना सूना-सूना क्यों लगता है ? लोग कछुए-से क्यों बन गये हैं. कहानी अच्छी है. कथाकार 'रेणु' से बुरी तरह प्रभावित है, कथ्य में नहीं, शैली में.

भंगिमा (९, १० और ११,) रामदत्तपुर, गोरखपुर.

'मंटू की वापसी' (डा० माहेश्वर) कानूनी रुख और पुलिस के घिनौने दावपेंच के बावजूद तीखी बनते-बनते रह गयी है. 'काम-काज' (रमेश उपाध्याय) में रोजमर्रे की दिनचर्या का लेखा-जोखा है और ऊब तथा फालतूपन की खुशी और ताजगी के रूप में अभिव्यक्ति है.

'नागनाथ सांपनाथ' (कुशेश्वर) भी आम आदमी की कहानी है जहाँ आक्रोश की लड़ाई के सिपाही भी नागनाथ सांपनाथ ही साबित होते हैं. अपना अंधेरा (मदन मोहन श्रीवास्तव) का कथ्य पुराना है, जिसमें अपमान और उपेक्षा की अनुभूति है.

'विभेद' (हरिहर सिंह) पुलिस महकमे का अंतरंग परिचय देती है और इस परिचय में सामाजिक भ्रष्टाचार, पुलिस-भ्रष्टाचार, आम आदमी की अकर्मण्यता, नेताओं की बेइमानी पर से पर्दा उठता है.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सारिका (अक्टूबर, नवम्बर) टाइम्स आफ इण्डिया बिल्डिंग्स, बम्बई-1

अक्टूबर अंक में, विश्व भर की भाषाओं की चालीस चुनी हुई लघुकथाएं दी गयी हैं जिनमें आज की दुनिया के तीखे-तीखे अनुभव हैं. [illegible] (जेम्स थर्बर), दोस्ती (विलियम सरोयाँ), 'दान' (पाल राश), किरिचें (अलबर्टो मोराविया), 'न्याय' (खलील जिब्रान), 'इसे गिरफ्तार कर लो (ओ हेनरी), 'छोटा आदमी' (चाऊ शू),' बच्ची और भेड़िया' (चार्ल्स पेरॉल्ट और जेम्स थर्बर), 'पिता' लियोनार्ड फ्रैंक), 'कमजोर' (चेखव) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं. 'गर्दिश के दिन' स्तम्भ के अंतर्गत कृष्णा सोबती की आत्म रचना कहानी का मजा देती है 'बीच की शाम' (इब्राहीम शरीफ) का नायक आभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने मजे के लिए, पैसे के बल पर, गरीब बच्चों के बीच कुश्तियां कराता है. मगर, मजा एक और रह जाता है—कुश्ती सचमुच की लड़ाई में बदल जाती है—रुपये के लिए दो साथी आपस में भिड़ जाते हैं.

नवम्बर अंक में वेश्याओं के बारे में विश्व-साहित्य में लिखी चुनी कहानियां (आदिकाल से उन्नीसवीं सदी तक) दी गयी हैं. इन कहानियों से यह जाहिर होता है कि वेश्यावृत्ति शोषण पर आधारित है यानी इस संबंध में पुरुष और स्त्री दोनों की दिलचस्पी शोषण में ही रहती है—पुरुष अपने यौन-आनन्द के लिए और स्त्री उस आनन्द की कीमत पाने के लिए ■■

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चाहे आप रेल्वे स्टेशन पर मिलते हों,
मेले मे हों, समारोह मे हों,
पिकनिक मे हों, जहाँ भी हों,
आपका मनोरंजन करने के लिए

आपका सर्वप्रिय

गंगा
और
तूफान ज़र्दा

सभी जगह
सुलभ है.

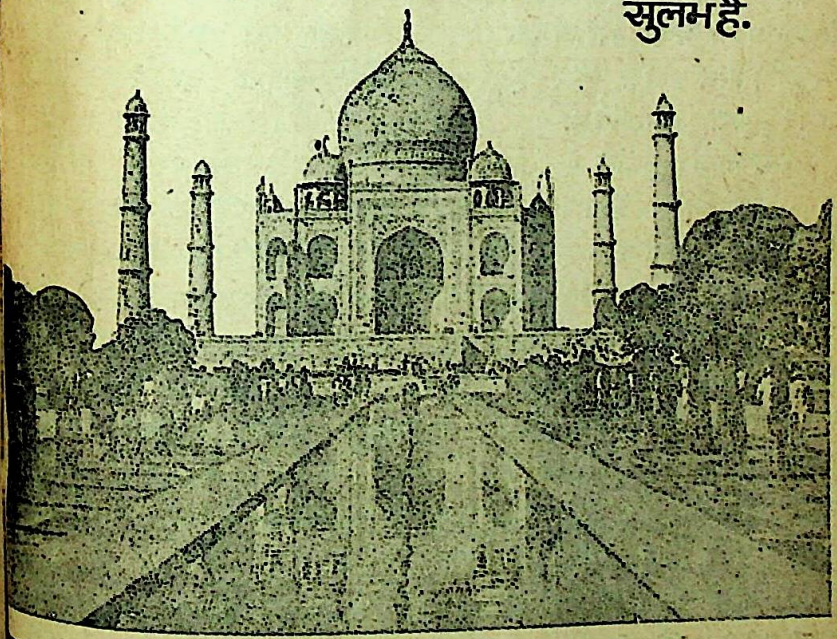

बलगूराम काशीनाथ परफ्यूमर्स • वाराणसी • फोन • ६३००५

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

('आपने लिखा है' का शेषांश)

ही सीता है. राधेश्याम उपाध्याय 'कागज की बेड़ियाँ' [illegible] आदमी की लाचारगी उतारने में सफल हैं लेकिन आज का लाचार आदमी भी कम मक्कार नहीं, अपने दायरे में सभी एक से टुच्चे हैं—अफसर से लेकर निम्न स्तरीय कर्मचारी तक... राधेश्याय उपाध्याय को कथा थोड़ी और पैनी करनी चाहिए थी. यह एक अच्छी रचना बनती...उलझाव के बावजूद चन्द्रा औलक की कहानी पसन्द आई, तड़ित की कहानी तरलता लिये हुए है

कविताओं में मीना सिंह एवं चेतन आर्य की कविताएँ मन को बीध गईं.

इस अंक के सफल रचनाकारों और सुंदर स्तरीय रेखांकन के हस्ताक्षर भाव समर्थ को बधाई !

—डा० उमेश कुमार सिंह

मेडिकल आफिसर, सामुदायिक विकास प्रखण्ड, लातेहार, पलामू (बिहार)

३६ और ३७ अंक दोनों समय पर मिले. ३६ अंक में स्वप्नतार' और 'कहीं कोई नहीं' पढ़ीं. दोनों लेखिकायें हैं—एक नई और दूसरी कुछ अनुभवी.

मृदुला गर्ग अपेक्षाकृत अच्छी कहानियों की लेखिका हैं, इसी लिए मैं चाहता हूँ कि वह अपनी भाषा को भी कुछ बदल लें. चन्द्राजी बहुत पहले दो-तीन अच्छी कहानियाँ लिख चुकी हैं. और यह कहानी उनकी महत्वपूर्ण या स्तरीय कहानियों में शायद ही स्थान पा सकती है.

'कहानीकार' पूर्णांक ३७ (ग्राम्य जीवन की कहानियाँ). इस अंक की सर्वाधिक सशक्त कहानी है 'लड़ाई'. यदि इस कहानी का अन्त 'सशस्त्र क्रांति' का संकेत न देता, तो यह कहानी मुन्शी प्रेमचन्द की लेखनी से निकली हो सकती थी. वही 'गोदान' जैसी भाषा-शैली, वही खेतिहर मजदूरों की आर्थिक सामाजिक समस्याएं, वही ग्राम-शोषकों के हथकण्डों से पिसने-कुचलने की त्रासदी; वही गाँवों की नयी उगती विद्रोह-चेतना. कहानी का अन्त 'महा विस्फोटक' होने के साथ-साथ जन-समस्याओं का व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करने के कारण सांकेतिक और स्वाभाविक ही कहा जाएगा. शायद आज मामूली आदमी के लिए यही एकमात्र मार्ग बचा रह गया है. यह एक समूची कहानी 'स्वातन्त्र्योत्तर भारत के जनसाधारण के अविरल संघर्ष के इतिहास की प्रामाणिक कहानी बन गयी है.

रतिकान्त चौधरी की 'सौगात' कहानी में बहुपत्नीत्व की चिरपरिचित समस्या तो है, पर अन्त का पहिले से अनुमान हो जाना शिल्प-कौशल में दरार का द्योतक है. कहानी फार्मूलाबद्ध है—गढ़ी-गढ़ाई-सी. 'प्रचार' कहानी का कथ्य भी अब पुराना हो गया है. हाँ, कहानी का कथ्य 'अनकहा' रख देने से वह गहन अवश्य हो उठा है, वो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कि शिल्प-कौशल [illegible] 'इस अंक के' 'तपन मेरे मन का' (अंजनी [illegible]) [illegible] याद रहने वाली एक सशक्त कहानी हैं, प्रतिमा वर्मा की कहानी 'अपनी बातें' में अंदरजी प्रोफेसर द्वारा जो 'षड्ऋतु-प्रतीक' नियोजित किया गया है वह देख कर मैं कह सकता हूँ कि प्रतिमा वर्मा समानान्तर कथा-प्रतीकों की योजना में समकालीन कथा-लेखिकाओं में आगे हैं. पद्म की 'सुरतिया' कहानी में एक अनाथ बालिका की आत्म-हत्या को पारम्परीय दृष्टि से शब्द-बद्ध करने का प्रयास है. यहाँ प्रेमचन्दीय कथा-त्रासदी का नमूना प्रेक्षणीय है. हाँ, 'दुर्घटना' कहानी का अन्त इतना स्वाभाविक और कारुणिक विवशता लिये हुए है कि दाद देनी ही पड़ेगी. कथा-नायक विजय की रुलाई और अपनी बहन के प्रेमी-संग घरसे भाग जाने की आकांक्षा का एक मात्र विकल्प मर्मस्पर्शिनी बन पड़ी है. जितने नये लेखक हैं उतनी ही तीखी कथाएं हैं.

अजित पुष्कल का आत्म-लेख सुघड़, संतुलित है. इसमें एक सत्यांवेषी किन्तु खण्डित व्यक्तित्व के बहिरन्तर संघर्षों और प्रगतिवादी विचारों की झाँकी मिलती है. अछूतोद्धार, पुस्तक प्रेम, मध्य वर्ग के अन्तर्विरोधों से घृणा, आध्यात्मिक रुझान, कहानियों में सामाजिक चेतना के स्वीकार की प्रवृत्तियाँ आदि लेखकीय व्यक्तित्व को उद्घाटित करती हैं. कहानी में 'चनकी के बाबू' (जयदेई का पति) का आक्रोश निहायत जायज जान पड़ता है, क्योंकि जयदेई के चरित्र में निश्चित रूप से फिसलन आई थी. हाँ, जयदेई की 'पति-भक्ति' में जो परिणति दर्शाई गई है, वह मुझे डॉ० धर्मवीर भारती की सशक्त कहानी 'गुलकी बन्नो' का स्मरण दिला गई है. उस कहानी की नायिका जैसा ही इस जयदेई में भी पातिव्रत है, वैसी ही करुणा है, वैसी ही दयनीयता और पवित्रता है.

समग्रतः 'कहानीकार' के इस एक अंक में जितनी अधिक सुगठित, अर्थवान और सशक्त कहानियाँ इस बार पढ़ने को मिलीं, उतनी पहले शायद ही कभी मिली होंगी !—डा० कृष्ण भावुक, ६४।४ कुदरत निवास, तोपखाना रोड, पटियाला.

[पृष्ठ ८९ का शेष]

कहानी में हर आदमी को अपनी छाप नजर आएगी. उसका अपने ही संबंधियों से निरंतर संघर्ष जैसे एक चिरंतन सत्य बन जाता है. अपने शहर से गुजरते हुए भी वह वहाँ नहीं रुकता और व्यतीत तथा वर्तमान के बीच उलझा हुआ, अंत में निर्णय वही लेता है, जो उसका स्वभाव है, यानी एक जिद्दीपन का आधार. 'अपना शहर' कहानी राजेन्द्र अवस्थी के व्यक्ति और लेखक दोनों को समझने के लिए एक अच्छा माध्यम है.

—संपादक—कादम्बिनी, हिन्दुस्तान टाइम्स, नई दिल्ली.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यूनिटें— आम जनता के लिए पूंजी लगाने का सर्वोत्तम साधन

भारत सरकार ने आम जनता को पूंजी लगाने का एक बढ़िया साधन उपलब्ध कराने के लिये यूनिट ट्रस्ट आफ इंडिया की स्थापना की है. रिजर्व बैंक और अन्य वित्तीय संस्थाओं द्वारा नियुक्त एक विशेषज्ञ 'बोर्ड आफ ट्रस्टी' का प्रबन्ध करता है. ट्रस्ट यूनिटों की बिक्री करता है और इस बिक्री से प्राप्त धन को शेयरों और सिक्युरिटियों में लगाता है. इस प्रकार लगाये गये धन से होने वाली आय प्रतिवर्ष ट्रस्ट का खर्च घटा कर उन युनिटधारियों में बांट दी जाती है, जिनके नाम ३० जून को यूनिट के रजिस्टर में होते हैं. यूनिट ट्रस्ट का लेखा वर्ष जुलाई से जून तक होता है और सभी यूनिटधारियों को, चाहे उन्होंने युनिटें कभी ही क्यों न खरीदी हों, सम्पूर्ण वर्ष का लाभांश दिया जाता है. १९७२-७३ वर्ष में यूनिट ट्रस्ट ने ८ प्रतिशत लाभांश दिया था.

यूनिट का प्रत्यक्ष मूल्य १० रु० होता है और यूनिटें १० के गुणितों में बेची जाती हैं. कम से कम १० यूनिटें खरीदनी पड़ती हैं किन्तु इसके लिये कोई ऊर्ध्व सीमा नहीं है. यूनिटें यूनिट ट्रस्ट के बम्बई, कलकत्ता, नई दिल्ली और मद्रास कार्यालयों, अधिकांश बैंकों और डाकघरों में भी प्रचलित बिक्री मूल्य पर बेची जाती हैं. इन जगहों पर यूनिटें खरीदने के फार्म मिलते हैं और यूनिट के खरीदारों को ट्रस्ट की ओर से रसीद भी जारी की जाती है. यूनिट सर्टिफिकेट रजिस्ट्री से भेजे जाते हैं. एक व्यक्ति अथवा दो, तीन अथवा चार बालिग संयुक्त रूप से यूनिटें खरीद सकते हैं. नाबालिग स्वयं यूनिटें नहीं खरीद सकता लेकिन उसकी ओर से उसका पिता अथवा माता, अगर वह उसकी कानूनी अभिभावक है. अथवा अदालती अभिभावक यूनिटें खरीद सकता है और बच्चे की नाबालिगी के दौरान यूनिटों पर सभी अधिकारों का उपयोग कर सकता है. यूनिट के मालिक किसी समय (जुलाई के महीने को छोड़ कर) अपनी यूनिटें यूनिट ट्रस्ट को प्रचलित बिक्री मूल्य पर बेच सकते हैं. इसके लिये उन्हें केवल यूनिट सर्टिफिकेटों के दूसरी ओर दिये गये फार्म को भर कर, किसी गवाह की उपस्थिति में अपने हस्ताक्षर करके, उसे यूनिट के अपेक्षित कार्यालय को भेजना होता है. ट्रस्ट हस्ताक्षर का मिलान करने के बाद यूनिट मालिक की इच्छानुसार यूनिटों का मूल्य यूनिटधारी को ड्राफ्ट, चेक मनीआर्डर द्वारा अथवा नकद भेज देगा.

डीएवीपी ७३/५२६

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्राम : डालमिया

स्वदेशी के

टायर और ट्यूब

की

दुनिया में

एक

मजबूत

और

भरोसेमन्द

नाम

लक्ष्मी सुपर

एवं

डेल्को रिक्शा

(टायर व ट्यूब)

निर्माता—

मेसर्स डालमिया ब्रदर्स

इण्डस्ट्रियल इस्टेट, आजमगढ़

फोन : १४१, १२५.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जन-शासन प्रदेश का भविष्य [illegible] कटिबद्ध

संकल्प की पूर्ति में [illegible] और [illegible]

जमाखोरी और चोर-बाजारी के विरुद्ध

चौमुखी चौकसी

- गल्ले की जमाखोरी, चोरबाजारी और मिलावट की रोकथाम के लिए अन्तरिक सुरक्षा नियम लागू.
- जिला अधिकारियों और मण्डलायुक्तों द्वारा राशन की दूकानों के निरीक्षण की व्यवस्था.
- मिट्टी के तेल, डीजेल और उर्वरकों की पूर्ति में वृद्धि

  १. मिट्टी के तेल पर कट्रोल समाप्त

  २. गेहूँ का राशन दुगुना

  डीजेल और मिट्टी के तेल का एक भाव

शासन आधारभूत आवश्यकताएं पूरी करके ही रहेगा.

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित

कमलगुप्त द्वारा कहानीकार प्रकाशन के लिए, कहानीकार मुद्रण संस्थान के. ३०/३७ अरविंद कुटीर (निकट भैरवनाथ), वाराणसी से संपादित, प्रकाशित एवं मुद्रित.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उत्तर प्रदेश के विजेता श्री शाहाबाद... ३२ वें ड्रा ... पु... रु० २,५०,०००
...लेश्वर-या ...लाटरी
के-१२ ६६०.

'प्रदेश लाटरी'

'उत्तर प्रदेश लाटरी' प्रथम पुरस्कार विजेता श्री अथालाल सांकल ...र मोदी, गुजरात ...री के ...नगर के निवासी हैं तथा वहीं की सरसपुर ...नू अम्बिका बाविन ...ने उत्तर प्रदेश लाटरी के टिकट श्री ...शीघ्र ही क्रय करना प्रा... में मिस्त्री ...विश्वास था कि भारत में यही एक ऐसी ...लाटरी है जिसके कई ...पुरस्का... बाहर निकले हैं. उनका यह विश्वास रंग ...लाया और वे तीसरी बा... टिकट क्रय करने पर ही प्रथम पुरस्कार के विजेता घोषित हुए. एक गम्भीर स्वभाव वाले श्री मोदी का विचार पुरस्कार से प्राप्त धनराशि से अपना व्यक्तिगत बाविन व्यापार आरम्भ करना तथा एक मकान बनवाने का है. उनके सुखद भविष्य का सपना सच हुआ. दो पुत्र तथा एक पुत्री के पिता श्री मोदी उन्हें अच्छी शिक्षा दिलवाने को कृत संकल्प हैं. एक अनुभवी मिस्त्री होने के नाते अपना स्वतंत्र व्यापार आरम्भ करने के लिए वे कहीं से ऋण लेने को सोच रहे थे, किन्तु बाहरे उत्तर प्रदेश लाटरी....किस्मत....रंग लाई...सपना...सच हुआ.

३५वां ड्रा दिनांक १७-३-१९७४,को लखनऊ में ■ उत्तर प्रदेश राज्य लाटरी का टिकट अवश्य क्रय कीजिए तथा विकलांगों की सहायता कीजिए. मूल्य प्रति टिकट १) रु०

निदेशालय राजकीय लाटरी उ० प्र०,लखनऊ.फोन नं० २३६४२

कहानीकार सदस्यता कूपन

दिनांक.....

व्यवस्थापक
के ३०।३७ अरविन्द कुटीर (निकट भैरवनाथ) वाराणसी-१

महोदय,

मैं 'कहानीकार' द्वैमासिक पत्रिका का ग्राहक बनना स्वीकार करता हूं।करती हूं. इस हेतु मैंने वार्षिक सदस्यता शुल्क ६) धनादेश (एम० ओ०) द्वारा, जिसकी पोस्ट रसीद संख्या.....है, दिनांक.....को भेज दिया है अथवा इस हेतु आप नए अंक की रु० ७) की व्ही० पी० पी० (वार्षिक सदस्यता शुल्क तथा डाक व्यय सहित) मेरे नाम भेज दीजिये

नाम.....

पूरा पता.....

.....हस्ताक्षर.....

इस कूपन के द्वारा सदस्य बनने पर पत्रिका के दो पूर्व प्रकाशित अंक आप को मुफ्त मिलेंगे. अतः कूपन को भर कर काट लें और पोस्ट कर दें.

कृपया अपनी कार्ड पर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रेष्ठ धुलाई
श्रेष्ठ रंगा
और
श्रेष्ठ रफू
के
द्वारा
हर प्रकार के
सूती, ऊनी, रेशमी,
टेरेलीन व टेरीकाट
वस्त्रों
में
नया जीवन
और
नया आकर्षण
पैदा कीजिए.

प्रिंस ड्राई क्लीनर्स
स्टेशन रोड, लहुराबीर, वाराणसी ● फोन : ६२२३४ पी.पी.

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

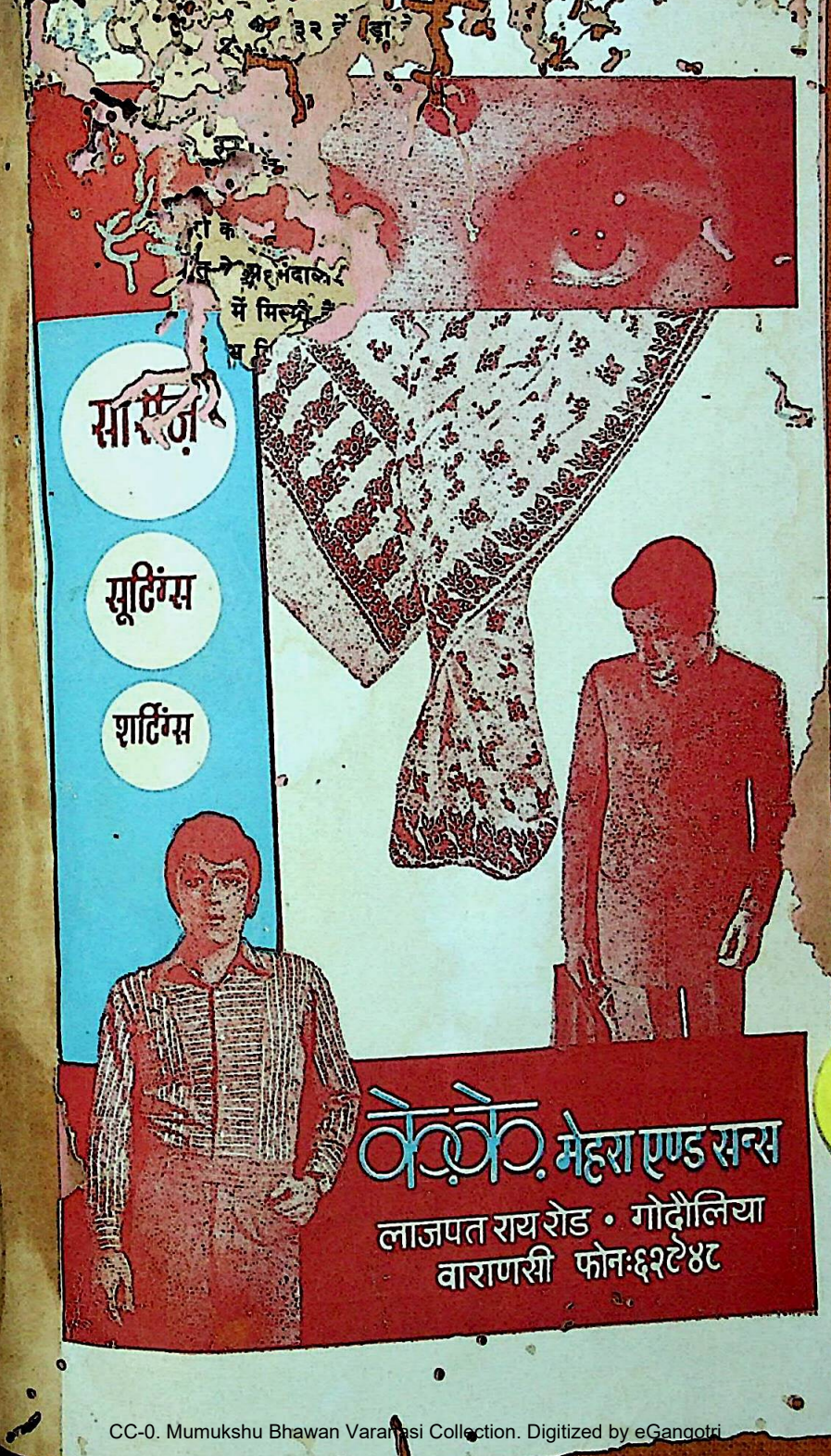

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बनारसी साड़ी

अनुपम सौन्दर्य
की
अनुपम अभिव्यक्ति

चौधरी ब्रदर्स ठठेरीबाजार, वाराणसी. फोन) शोरूम: ६२८६९ आवास: ६४५६९ के

बम्बे ब्रान्च:
चौधरी साड़ी सेन्टर
९५ बी. मेघदूत. मेरीन ड्राईव, बम्बई - २. फो. २५०३६९

मुखपृष्ठ : नायिका (कृति : श्रीमती मोहिनी महेश : १९६७)

Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
वाराणसी।
आगत क्रमांक.....२५६४.....
दिनांक.....

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
ग्रन्थालय
आगत क्रमांक...2029...
दिनांक.....

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri